

तीर्थ विधान पद्धतिः



मन्दिर श्री केदारनाथ जी



[परमेशी ब्रह्मणे ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे नम]

प्रकाशक—

ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा लाल मोहरिया

पता—

पं० विश्वनाथ नेत्रप्रसाद शर्मा

लालमोहरिया गुप्तकाशी

गङ्गा नाल उत्तर प्रदेश

प्रति १०००] श्री सम्यक् २०११ के अपाङ्क सुदी [मूल्य ६)

तीर्थ विधान पद्धतिः

समर्पणा

श्री भारत सरकार की सेवा

में

समर्पित

अतएव इस अत्रिचुत की यह शुभकामना ।
मङ्गल मय हो यही मेरी प्रार्थना है ॥

जय हिन्द

सम्बत २००११ आमाद शुद्ध

प्रकाशक—

ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा आलमोहरिया

पुणेसिग भी वेत्तनाथ जी

बु० शोमिापुर पो० गुन्नागरी

वि० ए० ए० ए० ए० ए० ए०



मुद्रक — पं० विहारीलाल शुक्ल
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस,
लायनऊ

भूमिका:

श्री गणेशाय नमः ॥ तीर्थ शब्द का सामान्य अर्थ होता है कि जिसके द्वारा पापादि से तेरा जाता है अर्थात् पापों के अथवा अज्ञानादि के फल रूप दुःख सागर में डूबने से बचा जाय। वह तीर्थ शब्द वाच्य कहलाता है। तीर्थ शब्द के अनेक अर्थ होते हैं अर्थात् तीर्थ बहु शब्द वाच्य है। यथा—अङ्गुष्ठ मूलस्य तले ब्राह्म तीर्थं प्रवृत्ते स्युनं गुली मूलेदमे देवं पित्र्यं तयो रधः ॥ मनु ॥ याज्ञवल्क्यस्मृति में भी लिखा है कनिष्ठ देशिन्यं गुष्ट मूना न्यमं करस्य च प्रजाप्रति तीर्थं। और अमभाग में देव तीर्थं और प्रदेशिनी तर्जनी तथा अङ्गुष्ठ के बीच में पितृ तीर्थकहलाता है। अतः इन इन स्थानों से ही ब्रह्मा आदि देवताओं के लिये तर्पणादि का जल छोड़ना चाहिये शंभोपासन आदि के समय ब्राह्म तीर्थ से आचमन करना चाहिये प्राजापत्य तीर्थ काशी नाम ऋषि तीर्थ है। क्योंकि कनिष्ठिका के मूल पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्ग में साढ़े तीन कोटि तीर्थ हैं। परन्तु यहां तो वर्णनीय केदारादि पृथ्वी के ही तीर्थ स्थावर मुख्य हैं। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार रस रुधिरादि सात भातुओं वाले एक ही शरीर में कोई अंग पवित्र कोई मध्यम कोई निकृष्ट माना जाता है। यथा—ऊर्ध्वं नार्धेर्ध्वं तर पुरुषः परि कीर्तितः परमात्मेध्यतगत्त्वस्यमुख मुक्त तपं भुवाः। मनु॥ अतएव पृथ्वी का कोई खास स्थान अथवा जलाशय अति पवित्र माना जाना है। अतः वही मुख्य तीर्थ कहलाता है। पृथ्वी में कहीं पापाण गृत्ति का आदि अंशों में सत्य गुणी प्रभाव है ॥ और कहीं जल में स्वच्छता पवित्रता आदि गुण हैं इसीलिये इन भूमिस्व केदारादि तीर्थों में जप तप दान स्नानं तर्पण पिण्ड भ्रातृ पट्ट रात्रि निय सादि रेतोदकगान मंत्र विनू करने का बड़ा महात्म शान्त्रों में वर्णित है। अर्थात् मत्वादि रूप धर्मों का आचरण करने से तीर्थ में ही (यात्री) उत्तम फल को पाता है। और जन्म जन्मान्तरीय कर्म बन्धनों को दूर कर निर्वाणपद (मोक्ष) को भी प्राप्त कर लेता है: गृहभी के लिये तीर्थार्थन तीर्थ सेवन ही एक ऐसा शान्ति प्रद मार्ग है जिसमें जाकर वम क्षण के लिये अपने सभी भ्रमों को भूलकर परमान्मा के चिन्तन में लग लग जाना है। तथा ममंगादि के आरण सत्य वीजना संयम पर रहना अहंमिरा भगद् भक्ति

में लौन होजाना दया शीलता क्षमता दानता आदि का होना सुलभ होजाता है । जिससे वह तीर्थ यात्री अपने सर्व प्रकार के पापों से तैर कर इस संसार सागर से भी पार होकर अन्त में स्वर्ग मुख का अनुभव करने लगता है । इन्हीं तीर्थों में मनुष्य के लिये विशेष सद्य लाभदिक फल कहे गये हैं । इसी कारण ज्ञानि महर्षियों ने तथा अवतारी पुरुषों ने तीर्थों का ज्ञान महात्म स्थापित किया है । अतः एव पूर्व काल में ही विरक्त ज्ञानी पुरुष वही केदार काशी आदि तीर्थों में यागङ्गा (हरद्वार) के एकान्त स्थान में निवास करते हैं । इन विरक्त ज्ञानी तथा उत्तम कोटि के धार्मिकों से भिन्न मध्यम कोटिके माधारण मनुष्य बहुत से हैं । उन सब के लिये तीर्थ सेवन सबसे अधिकतर उपयोगी है जिसका होना पूर्व पुराण के अनुशार स्थिर है । ब्रह्म पुराण में लिखा है कि—शो य क—श्चि चोर्थं यात्रां गच्छेत् । सु सयतः स च पूर्व गृहे स्वे वृता वास शुचि र प्रमत सं पूजयेद् भक्ति रसाद् गणेशम् ॥ देवान् पितृन् ब्राह्मणान् पूजयेच्च एवं कुर्वतस्तस्य तीर्थे यदुक्त फल तस्स्या ज्ञात्र सन्देहं एवं इत्यादि अनेक शास्त्रों से कथित तीर्थ सम्बन्धी कर्त्तव्य कर्मों की विहित ता होने से तदनुसार तीर्थ यात्रा करने से मुख्य शुभ फल मिलता है । अतः में अपनाभूत पूष लिखित तीर्थ कर्म पद्धति की पूर्व त्रुटियों को न्यूनाधिक रूप स तथा उक्त पद्धति के प्रथम संस्करण प्रकाशक महोदय ने पद्धति लेखक के अलिखित प्रमाणों से भूमिका लेखक के साथ अभिय शब्दों का उल्लेख किया उसके लिये उक्त पद्धति के लेखक को अमान्य हुये । जिसके कारण उक्त महोदय की आज्ञा का पालन कर पूर्व पद्धति की सगरी त्रुटियों को न्यूनाधिक रूप से यथा (अवशिष्ट कर्मों) विधः इस द्वितीय संस्करण तीर्थ विधान नामक पद्ध ति को विन्मत्तकिया जो सभी पुरोहितों के कर्म कराने वालों के लिये अत्यन्त ही उपयोगी रहेगी । पद्धति का प्रकाशित करने का अधिकार समष्ट कर्त्ता की ही रहेगा यद्यपि आजकल तीर्थों में प्रचलित कर्मों के करने वाली बहुत पद्धतियाँ प्रकाशित हो गई हैं और हो रही हैं किन्तु ये कोई तो विरल और कोई सत्पित्त होने के कारण कर्म कराने में नून पुरोहितादियों को विरोध स्वीकार्य नहीं प्रतीत हं ता है और अथ इस पद्धति में मुझे पूण विश्वास है कि सभी कर्म कराने वाले पुरोहितों की यह पटनाईया दूर करदी गई यदि संग्रह करते हुये तथा प्रेश द्वारा भी त्रुटियाँ रह गई हों तो विद्वजन सूचित कर समा करेंगे । यहां पर

अत्यन्त रोद से लिखना पड़ता है कि स्वर्गवाशी पं० रजोदत्त शर्मा पोस्ती तथा स्वर्गवाशी पं० तारादत्त जी शर्मा कुर्माञ्चली इन पितरों की कृपा से मुझे कुर्माञ्चल देशीय तथा अन्य देशीय पद्धति अद्धय-यनार्थ प्राप्त हुई जिनके द्वारा मुझे इस विषय पर राष्ट्र सेवा कुछ ही अंशों पर करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। और अपने मान्नीय आठ सयाना अट्टारह वीशी पञ्च पञ्चा मण्डनी का सादर अभिवादन करते हुये अपना शुभ शौभाग्य प्रकट करता हूँ कि जिनके द्वारा श्री देशरनाथ संस्कृत विद्यालय शोणित पुर में स्थापित होकर जिसके सुमंचालक तथा शिलान्यास स्वर्गीय पण्डित नारायणदत्त शर्मा शास्त्री लाल मोहरिया तथा स्व० पं० जगन्नाथ शर्मा बगवाड़ी तथा स्व० पं० विहारीलाल शर्मा सेमवाल तथा पं० रामकृष्ण जी शर्मा पोस्ती जी द्वारा हुआ इन्हीं महर्षियों की अशीम कृपाओं से इस अन्धकार मय जगत् में अपनी पूर्व संस्कृती का स्वप्न देखा जिसके फल स्वरूप ग्रन्थ संग्रह कर्ता के सम्मतीय तथा संशोधक कविरत्न पं० भोलादत्त शर्मा शास्त्री पं० हरिशंकर शर्मा त्रिपाठी व्याकरणज्ञाय तथा पं० पीताम्बरदत्त शर्मा सेमवाल शास्त्री तथा पं० रघुनाथ प्रसाद शर्मा पुरोहित शास्त्री जी द्वारा हुआ। तथा श्रीमान् पं० पुरुषोत्तमदत्त जी शर्मा बगवाड़ी वी ये यल् यल् वी। तथा पं० शिव प्रसाद जी शर्मा बगवाड़ी वी ये यल् एल् वी पं० गुणानन्द शर्मा खाली वी० ए० तथा पं० महिमानन्द जी शर्मा मेठानी शास्त्री तथा पं० तुलशीराम जी शर्मा पोस्ती तथा पं० दिवाकर दत्त जी शर्मा नेमवाल तथा पं० स्यामादत्त जी शर्मा पुरोहित प्रवृत्ति आदि शस्त्रज्ञों ने अनेक प्रकार से ग्रन्थ पुराणों द्वारा तथा विषय सूचनाओं द्वारा सहायता पहुंचाकर अनुगृहीत किया। तथा ग्रन्थ संग्रह कर्ता के सर्वोच्च सहायक श्रीमान् टा० नरेन्द्र सिंह भण्डारी एम० ए० महोदय ने श्री पं० विहारी लाल शर्मा शुक्ला प्रेसिडेंट प्रेस लखनऊ द्वारा मुद्रित कराकर सफल परिश्रम किया क्योंकि आप चपरोक्त शस्त्रज्ञों ने अपना २ अमूल्य समय नष्ट कर और मेरे इस पूज्य पितरों के स्मृति उपलक्ष्य कार्य पर महान् कृपा की जिसका कि मैं आभारी हूँ। शुभंभूयात् ॥ गच्छतः स्वर्गं कदापि भवतेव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ इति शम् ॥

लेखक-प्रचारक—

पं० विरवनाथ शर्मा लालमोहरिया
पुरोहित श्री देशरनाथ जी गढ़वाल उत्तर प्रदेश

तीर्थ विधान पद्धतिः

(ग्रंथ संशोधन कर्तुः स नम्र किञ्चिन्न वेदनम्)

अयि ह्या भावु ता पाठक महोदयाः इत्थं ब्रुवतो मम चेतसि समु
देति महान् हर्षोन्नाम । यदिय तीर्थ विधान पद्धति वाञ्छयेयी
पं० विश्वनाथ शर्मण लालमोहरियो पाह्येन शोणित पुर गुप्तकाशी
गढ़वाल मण्डल वास्तव्येन ममस्त तीर्थ कर्मा नुरागिणां पुरोहिता
नां कृते तीर्थ कर्मतया देवी पूजनादौ नवरात्र विधाना दिना द्वितीय
संस्करणे किञ्चिन्मात्र वृद्धितया विविधा गम पुराण ग्रन्थेभ्य स्तो-
थादि कर्म सम्पादनाय संगृह्य स्वर्गाय स्वोय कनिष्ठ पितृव्य श्री के०
संस्कृत विद्या लयाय प्रथम संस्थापक पण्डित श्री नारायण दत्त
शास्त्रिणां स्मृति, उपनखये । तीर्थ विधान पद्धतिः मदन्ति के च सं
शोधनाय प्रदत्तासीन् । मयायिहि नरकर कमल स्वर्णाक्षर विनिलित
तीर्थ विधान सरणि रासादितो पलभ्या द्यो पान्त यथा मति सं
शोयिता तदर्थं मेपदयालु मंडानुभावो भूयो भूयो धन्य वादाहः ।
यतो लोको पकाराय महता श्रमेण विरच्य प्रकाश्यं नीता । अतो
ग्रन्थ प्रचारायः तीर्थ कर्म प्रवर्तकाः पुरोहिता अपरे कर्म काण्ड
विशेषताः सञ्जना बहुशो यिनि वेदन्ते यत्किञ्च ग्रन्थो ऽय ममस्त
पाठशाला (विद्यालयेषु) सकल छात्राणां पाठय पुस्तकेषु निधाय
मयां पठवये प्रचारणीय स्याद्वित कर उपयोगी च प्रतीयतेनि
निवेदनम् ।

मामत्कः—कविरत्न पं० भोला दत्त शास्त्री थाला भूतपूर्व
अध्यापक माखाडी संस्कृत पाठशाला मीर घाट काशी बनारस ।

श्री के० संस्कृत विद्यालय शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल
श्री रघुनाथ कीर्ति संस्कृत विद्यालय देव श्याम गढ़वाल ।

तीर्थ विधान पद्धतिः

श्री हरिशंकर त्रिपाठी साहित्य केशरी व्याकरणाचार्य —
श्रीकैदारनाथ संस्कृत विद्यालय प्रशानाध्यापक महोदयानां

सम्मतिः

अद्य महान् प्रमोदाऽवमरोऽयं यन्मयेयं लेखनी तत्र सम्मति दानाय प्रचार्यते । यद्यं एतावन्तं कालं सर्वे पुरोहिता विद्वांसः साभिलापाः सोत्कण्ठाश्चासन् ।

मन्ये तीर्थं कर्म प्रवर्त्तकानां पुरोहितानां पाठक महोदयानां विदुषां चकृते नतादृगन्यत्कर्म काण्ड पुस्तकं यथा बहुपकारकं यथा विविध पूजा समलङ्कृतं । तीर्थ विधान पद्धति, नामकं पुस्तकं मयाः दृष्टं तत्र काल प्रभावेण कर्म काण्ड पद्धतिं लुप्तं प्रायता मुपगता । सम्प्रतिमहती दुख स्यामालोच्य लोकस्य महो पकाराय गढ़वाल मण्डलान्तर्गत गुप्तकाशि पार्श्वं वर्त्ति-शोणितपुर ग्राम वास्तव्य विद्या रसिक परिद्धत श्री विश्वनाथ शर्म वाजपेय लालमोहरिया, इत्यु पनामकेन नेपालराज्य (राष्ट्र) पुरोहितेन विरचित मतोच मनोहरं तीर्थ विधान पद्धति नामकं पुस्तकं वर्तते श्रोत—स्मार्त विधिना कर्मकाण्डो पयोगि विविध विषय मन्निवेश नमनोहरं विधिवन्व्यास-प्रतिज्ञा-मन्त्र भेद पुरस्सरञ्च वितन्वते । एतादृशां ग्रन्थ रत्नं सम्यगा लोच्य ब्रह्मानन्दः समञ्जि । अनेक ग्रन्थतः भवद्भिर्महता प्रयत्नेन सारमुद् घृत्य प्रकाश्यते । स्थले-स्थले समुपयुक्त टिप्पण्यादिभिः सर्वेषान्तु नूनमेव बहुप कृतम् । मेयं महतीन्यूनता संस्करणे नैतेन पूरितेति । संस्करण मिदं ममेपामवश्य मेवो पाठेयानां भजते । वस्तुतः परिज्ञाप्यन् महोदयैः कर्मकाण्डपरीक्षासु-मन्योऽयं नियोजितः स्यात्तर्हि नून मेव भारतीयानां महानुप कारोभवेन् । इति मदीयो विश्वासः । सर्वैरियं ग्रन्थः संप्रायः प्रचारणीयश्च । इति संश्लेष्यं विरामि ॥

जाताः पूर्वा मनेक शास्त्र कुशला विग भविष्यन्निनी,

मन्तोत्प्रेय तथापि कैरचन युधै लोको पकार समा ।

इदं तीर्थ विधान पद्धति रियं यन्नेन नो निर्मिता ।

धन्याः मन्तु मुदा न्युटा विरचिता श्री विरवनाथेनया ॥ १ ॥

परिद्धत श्री हरिशंकर शर्मा त्रिपाठी

सा० केशरी—व्याकरणाचार्यः

तीर्थ विधान पद्धति:

आर्य वैदिक धर्म समुपास का विद्वांसः । भारतेऽस्मिन् विविधानि पुस्तकानि सन्ति कानि चितु कार्यं सम्पादने विपमानिकानिचितु सरलानि तीर्थेषु गत्वा सर्वे तीर्थं कर्म कर्तारः स्व कार्याणि साव यन्ति कार्याणीतु येन केनाप्यु पायेन साध्यन्ते एव किन्तु वैदिक कर्म कर्तृणां सहृदया नां कर्णं कुहरिषु इदं तिरोहितं नभ्यात् यद् वाजपेय वंशा उपमन्यगोत्रा वर्तंसः प० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया महोदय संगृहितेमां तीर्थ-विधान पद्धति मवलोक्य नितरां मोदते मन्मनः यहि पूर्वा पेक्ष्य, न्यून विषयेभ्यः सम्पूरिता निखिल कर्म कर्तृणाञ्च सौख्याय वर्धिता अतीवा पयोगी च वर्तते तीर्थेषु वा अन्य पर्व वसरेषु यदाकदापि अनया पद्धत्यानुसारेण पूजा पाठ विण्ड तर्पणादि कर्म कारयितुं अविज्ञो पिविज्ञो भवति सर्वेषां सुपकाराय च अति परि श्रमेण संगृहिताः अतः धन्य वादा र्हाः इमे महानु भावाः लुपन् वैदिक धर्मस्य महती रक्षा कृता सर्वे तीर्थ पुरोहिताः तथा चान्य पुरोहिताः पद्धति संग्रहं कर्तुं कृत्वा वर्धन्ताम् बहु पलन्यय यितेनकिम् इति शम् ॥

श्री मत्स्य पं० पीताम्बर दत्त शर्मा शास्त्री

सेमवाल द्वि० अ० श्री के० संस्कृत विद्यालय

शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल उ० प्रदेश

श्री मान् लालमोहरियाजी मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रशन्नता हुई कि आप तीर्थविधान पद्धति प्रकाशित करने जा रहे हैं यद्यपि आप अनेक शास्त्र विशारद मेधावी पंडित हैं ही तथापि कर्मकान्ड की दृष्टी से आपका स्थान विशेष ऊचा है क्योंकि कर्मकान्ड के स्तर को उन्नत करनेके हेतु आप जो अनवरत प्रयत्नशील रहते हैं फल स्वप्न तीर्थ कर्म पद्धति आदि प्रयाप्त साक्षी हैं, यहां यह कहना आवश्यक होगा कि समय २ पर आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों ने किन् महान् श्रुतियों की पूर्ती की है विशेषतः तीर्थ पुरोहित शास्त्रियों के लिए आपकी यह महान् देन है, अस्तु

आज भी मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है भगवदनुग्रहसे आपकी नीधविधानपद्धति अवश्य ही सबके लिए उपयोगी सिद्ध बनकर कर्मकान्ड जगत्में चूडामणि की तरह देदीप्यमान होकर आपके मन कमल को विकसित करने के लिए मूर्धका रूप धारण करेगी भगवान् हमारी आशा को मफल करें यही हमारी कामना है।

भवदीय —

दिः १-४. ५४ }

रघुनाथप्रसाद पुरोहित शास्त्री

मीजा मधिप्राम पो० गुप्तकाशी, जिला गढ़वाल पीड़ी

विषयाऽनुक्रमणिका:

विषय संख्या	पृष्ठ संख्या	विषय संख्या	पृष्ठ संख्या
१ मङ्गलोच्चारणम्	१	२६ अथ शिव महिम्न स्तो०	१२६
२ अथ प्रातः स्मरणं सुक्तम्	१	३० अथ वेदो पूजनम्	१३२
३ गणेश स्तुतिः	१	३१ अथ देव्या आर्तिः-वेदोक्त	१३४
४ नमस्काराः	२	३२ अथ देव्या अथर्वशीर्षम्	१३५
५ हेमाद्रितृत स्नान सङ्कल्पः	२	३३ अथ हवन विधिः	१३७
६ अथ नद्यादौ नित्य स्नान प्र०	७	३४ अथ सूर्योपस्थान प्रयोगः	१७०
७ गङ्गा पूजनम्	१२	३५ अथ प्रायश्चित्तगोदान प्र	१७५
८ अथस्वस्ति वाचनम्	१४	३६ सर्व प्रायश्चित्तगोदान सं०	१७७
९ गणेश पूजनम्	१५	३७ प्रव प्रतिष्ठा गोदान सं०	१७७
१० अथभूत शुद्धिः	२२	३८ पापा पनोद धेनु दानम्	१७८
११ अथ गणेशाथर्वशीर्षम्	२३	३९ श्रृणा पनोद धेनुदानम्	१७८
१२ अथ सङ्कल्पम्	२५	४० अथ मोक्षधेनुदानम्	१७५
१३ दीपकलशापुरायाह वाचनम्	२५	४१ तिल दान विधिः	१७६
१४ नान्दीमुग्ध आह विधिः	३०	४२ उत्कान्ति धेनु दान :	१७६
१५ अथ नित्य आह प्रयोग	४०	४३ अथ दशदान संकल्पः	१७६
१६ अथतीर्थ आह विधिः	४१	४४ अथ गोदाने विशेषः	१७५
१७ अथ शय्यादानम्	४६	४५ अथ ब्रह्मव्रत प्रयोगः	१८६
१८ अथ भूमिदानम्	४७	४६ अथ भावणी प्रयोगः	१८८
१९ पञ्चोदित आह विधि	३८	४७ अथोत्सर्गं तर्पणम्	१६६
२० अथ पावण आह प्रयोग	५६	४८ वशानां प्रवणम्	१६७
२१ अथ गुप्त वःशी दान प्र०	७७	४९ अथ श्रुति आहम्	२०५
२२ अथ शिवायर्ष शीर्षम्	७६	५० अथोपहर्ष प्रयोगः	२०६
२३ अथ शिवा परावृत्तमापनातो	७०	५१ अथ तीर्थ भद्र विधिः	२१०
२४ अथ प्राण प्रतिष्ठाः	८२	५२ अथ पावर्षी तीर्थ आहम्	२१०
२५ अथ महासूर्यपूजनप्रमाणम्	८५	५३ भी दंमसूर्यद भद्रतीर्थ	२११
२६ अथ शिवपूजा पद्धतिः	८४	५४ अथदेवाश्रीमार्कण्डेयप्रमाणम्	२२४
२७ अथ कर्णाम्बिक प्रयोग	११६	५५ अथ रत्नोपनी पद्धिः	२२७
२८ अथ भीशिब महा नाम	११६	५६ अथ तर्पण प्रयोग	२२८

विषयाऽनुक्रमणिका:

विषय संख्या	पृष्ठ संख्या	विषय संख्या	पृष्ठ संख्या
१७ अथ श्री चक्र पूजनम्	२३५	६६ अथ श्रीशारत्कालीय नव०	२७८
१८ श्रीचक्र पूजन संव्रम्	२३७	७० अथ श्री दुर्गा सप्तशती प्र०	२७८
१९ पात्र स्थानम्	२४०	७१ श्री सर्वतो भद्र मण्डलम्	२७८
६० पीठ पूजा माह	३४८	७२ अथ महा महाष्टमीव्रत प्र०	३२८
६१ अथ उपचार पूजनम्	३३६	७४ अथ कुमारी पूजनम्	३२६
६२ अथ मन् चण्डी विधानम्	२६७	७५ अथ श्रीविष्णु अनन्तपू०	३३०
६३ अथ त्रिमूर्ति पूजनम्	२६८	७६ अथ श्री पार्वती (माघ) पू०	३५२
६४ अथ श्री बटुरु पूजनम्	२६६	७७ अथ श्री रेवतीकपान विधि	३६३
६५ अथ चण्डीविधे प्रकार मा०	२६६	७८ अथ अभिषेक विधि:	३६४
६६ श्री देव्या आर्ति:	२७०	७९ अथ आशीर्वाद मन्त्रा	३६४
६७ अथ श्री अग्नि स्थापनम्	२७५	८० अथ वंशाष्टका:	३६५
६८ अथ श्री अग्नि पूजनम्	२७६	८१ समाप्त:	३६६

श्री तीर्थ विधान पद्धत्याऽनुक्रमणिका:

विद्वज्जनानां अभिप्रायाः

नोट—पुस्तक के बृहद् हो जाने के कारण वेद मंत्र भी छूटे हैं अक्षरों में
दिखा गया ॥ समा ॥

श्री केदारनाथजी

कार्यालय श्री केदारनाथ मन्दिर कमेटी

श्री माननीय प० जी

मादर अभिवादन

आपकी तीर्थ विधान पद्धति की पुस्तक प्राप्त हुई धन्यवाद । पुस्तक बहुत सुन्दर है आपको इस प्रयास के लिये बधाई है, यहाँ तीर्थ विधान पद्धति की कमी भी आपने उसे पूरा कर दिया ।

नारायणदत्त बहुगुणा

सेक्रेटरी श्री केदारनाथ

मन्दिर, कमेटी

३१-५-५४

श्री कालीमाताजी

कार्यालय मंदिर श्री कालीमठ गढ़वाल

तत्रभवान् श्रीमान् पं० जी सादर प्रणाम् !

आज आपकी तीर्थ विधान पद्धति की १ पुस्तक उपलब्ध हुई । सधन्यवाद ! पुस्तक बहुत सुचारु हैं आपने इस प्रयास के लिए बधाई है । यहा तीर्थ विधान पद्धति की न्यूनता भी आपने उसे पूरा कर दिया ।

नारायणसिंह रामा मठ मठापति

मंदिर कालीमठ

६-६-५४

भेपक—मैनेजर श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय
शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल ।

प्रापक—श्री विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया मौजा
शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल

महोदय आपकी लिखी हुई तीर्थ विधान पद्धति विद्यालय को उपलब्ध
हुई पुस्तक प्रत्येक कर्म करने के लिये उपयुक्त एवं प्रशसनीय है ।

अतः विद्यालय की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद है आपकी शुभ
कामनाओं की सफलता चाहते हैं ।

मैनेजर राजनारायण
श्री केदारनाथ संस्कृत विद्यालय
शोणितपुर, पो० औ० गुप्तकाशी
गढ़वाल

दिनांक १६ २-५५

श्रीमान् पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया
ग्राम—शोणितपुर गुप्तकाशी गढ़वाल

आपके द्वारा प्रकाशित “तीर्थविधान पद्धति” नामक पुस्तक प्राप्त
हुई । उसको देखने से इस समय जो कर्मकान्ठ में आवश्यकता थी
उसका आपने इस पुस्तक में पूर्ण संग्रह किया । पुस्तक अत्यन्त उपयोगी
है । इसके लिये आपको हार्दिक धन्यवाद ।

भिषक् चूडामणि प० प्रेमवल्लभ शास्त्री
रजिस्टर्ड वैद्य

पो० सिगाही (खीरी)

दिनांक ३ मार्च १९५५ ई०

PRIME MINISTER'S SECRETARIAT, INDIA.

पत्र संख्या ५-६४-५४.

New Delhi-2, the 10 अगस्त १९५४.

प्रिय महोदय ,

आपका ३० जुलाई का पत्र तथा साथ में भेजी हुई 'तीर्थ विधान पद्धति' नाम की पुस्तक प्रधान मंत्री सचिवालय में प्राप्त हुई । तदर्थ धन्यवाद ।

श्री विश्वनाथ शर्मा लालनोहरिया,
पो० श्रीकेदारनाथ,
जि० गढ़वाल, उत्तर प्रदेश ।

भवदीय—
(सर्व प्रकाश)
प्राइवेट सेक्रेटरी

श्री ५ नेपाल सरकार

श्री माननीय प्रधान मंत्रीज्यूको सचिवालय

पत्र संख्या.....

नेपाल २७-७-०११

प्रिय महाशय ,

तपाईंले २०११ कार्तिक ११ प्र० मा पठाउनु भएको पत्र तथा तिर्थ विधान पद्धती सधन्य धाद, प्राप्त भये कोले सूचित गरेकोछु ।

भवदीय—

Bay सनाल,
विष्णुसिंह साद सनाल,
प्राइवेट सेक्रेटरी,
प्रधान मन्त्री, नेपाल ।

श्री विश्वनाथ शर्मा,
लालनोहरिया पंढा,
पो० गुप्तगारी,
गढ़वाल, उत्तर प्रदेश ।

श्री दर्वार पुलचोक काठमाण्डौ

इण्डियन इन्वेशी नेपाल

श्रीमान पं० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया पण्डा,

आपका कृपा पत्र तथा तीर्थ विधान पद्धति प्राप्त हुआ, जिसके लिये आपको हार्दिक धन्यवाद, हमारे यहाँ पर सभी लोग आपका प्रशंसा करते हैं।

आपका शुभेच्छु—

प्रा० से० बेंदारमणि शर्मा पाष्याय

२६-६-२४

कार्यालय सं० ग्रा० स० लि० लमगौंठी गुप्तकाशी गढ़वाल

श्री विश्वनाथजी शर्मा लालमोहरिया गुप्तकाशी गढ़वाल उ० प्र०।

आदरणीय पं० जी आपकी लिखित तीर्थ विधान पद्धति नाम की पुस्तक ग्राम सम्मति को प्राप्त हुई। पुस्तक कर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त उपयोगी है। आपने पूर्व भी कर्मकाण्ड के विषय पर एक पुस्तक लिखी थी जिसको कि परिशुद्धित कर कर्मकाण्डो जनों का महान उपकार किया, आपकी इस पुस्तक से समस्त भारतवर्ष भी परिचित है।

धर्मु फल ग्राम सं० लि० लमगौंठी आपको हार्दिक धन्यवाद देती है। और आशा करती है कि आप अपना उक्त कार्य करने रहेंगे। पत्रायन आपके निरादुषा के लिये भगवान से प्रार्थना करती है।

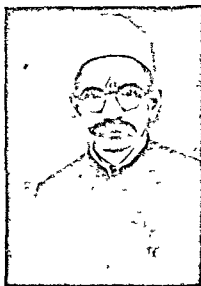
भवदीय

(मोहर) शिवकुमार बगवाड़ी

१४-६-२४

तीर्थ विधान पद्धतिः

ओं नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमो पृथिव्यै नमः ओप-
धीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमोऽग्निवे महतेकरोमि॥ प्रा० ॥



ब्राह्मण पूजनम्

ओं भू० भुव स्व ब्रह्मणे इदमासनं—स्वसनम् । ओं भू०
भुव स्व. ब्रह्मणे इदं पाद्यं—सुपाद्यम् । ओं भू० भुव स्व ब्रह्मणे
इदं मर्घ्यम् अस्त्रन्यम् । ओं भू० भुव स्व ब्रह्मणे इदमानम
नीयम् । ओं भू० भुव स्व ब्रह्मणे गन्धापान्तु-मौमङ्गल्य चास्तु ।
अक्षतापान्तु—आयुष्यमस्तुपुष्पाणि पान्तु—सौश्रियमस्तु । ताम्बूलं
पान्तु—ऐश्वर्यमस्तु० दक्षिणा पान्तु—ऋद्देय चास्तु । नमोऽस्त्र
नन्ताय सहस्र मृतये सहस्र पादाशि-शिरोरुद्राहरे । सहस्र नाम्ने
पुरुषाय शाश्वते सहस्र काटी युग वारिणेनमः ॥ सकलाराधनै-
स्वर्चित मन्तु । ब्राह्मण—अन्तु भवन्ति मितिप्रतिवन्ते ॥ म्प्रस्ति
मन्त्रार्था सफलाः सन्तु ॥ तथास्तु—इति प० ॥

प्रकाशक—

ग्रन्थकार—विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया

श्री केदारनाथजी, जिन० गढ़वाल उत्तर प्रदेश

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॐ

मङ्गलोच्चारणम् ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा ऽ स्वस्ति न ऽ पूषाविश्ववेदा ऽ ।
स्वस्ति नस्वात्सर्व्योऽअरिष्टनेभि ऽ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ
भद्रङ्गोभि ऽ शृणुयाम देवा भद्रम्पश्ये माक्षमिष्यं जत्रा ऽ । स्थिरैरङ्गै-
स्तुष्टुवा ॐ सस्तनू भिन्यंशोमहि देवहितं यदायु ऽ ॥ २ ॥ तम्पर्की-
भिरनुगच्छेमदेवा ऽ पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्ये ऽ । नाकङ्गृभ्याना
ऽ सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्टेऽअधि रोचने दिव ऽ ॥ ३ ॥

अथ प्रातः स्मरणसूक्तम्

हरि—ॐ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं ॐ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणो
प्रातरशिवना । प्रातर्वभगम्पूषणम् ब्रह्मणस्पतिम्प्रातऽसोमं सुतर्दुद्र
ॐ हुवेम ॥ १ ॥ प्रातरजितम्भगमुग्रं ॐ हुवेमवयम्पुत्रमदितेर्ष्यो विवधर्ता ।
आद्भुद् विश्वद्यम्भयमानस्तुरिश्वद्द्राजाचिद्यम्भगम्भक्षीत्याह ॥ २ ॥
भगप्पणो त्वर्भगसस्य राधो भगो मान्धिय सुदवाद दन्न ऽ । भगप्पणो
तनय गौभिरश्चेवर्भगम्प्रनृभिन्तृ व-त ऽ स्याम ॥ ३ ॥ उतेदानीम्भगवन्त
स्यामो तप्पपित्तवऽउत मद्धथे ऽ अन्नहाम् । उतोऽदिता मघवन् न्तसूर्यस्य
व्ययन्देवाना ॐ सुमतो स्यामः ॥ ४ ॥ भगऽएव भगवो ऽऽस्तुदेवास्तेन
व्ययम्भगवन्त ऽ स्याम । तन्त्वाभग सर्व्वऽइजोऽधीतिसनोभगपुरऽएताभवेह
॥ ५ ॥ समद्धरायोपसो नमन्त दधिक्रकाधेव शुचये पदाय । अर्वाचीनं
व्वसु विद्रम्भगन्नोरथमिवाश्वा व्वाजिन ऽ आचहन्तु ॥ ६ ॥ अश्वा
वर्तोर्गोमतीर्नऽउपासोव्वीरवती ऽ सदमुद्धन्तु भद्रा ऽ । घृतन्दुहाना
विश्वश्वत ऽ अपीता यूपं पात स्वस्तिमि ऽ सदा न ऽ ॥ ७ ॥ इति प्रातः
स्मरणसूक्तम् ।

गणेश स्तुति-स० चि० ।

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथं बन्धुं सिन्दूरपूर्णपरिशोभितगण्ड-
युग्मम् । उद्दण्डं विघ्नं परिग्रहणं चण्डं दण्डमारण्डलादिं सुरनायकं
घृन्दं घन्धम् ॥ प्रातर्नमामि चतुराननं घन्धमानमिन्द्रानुभूलमखिलं च
वरं ददानम् । तं तुन्दिलं दिग्गनाधिपयज्ञमूर्तं पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः
शिष्याय । प्रातर्भोजाम्य भयदं खलु भक्तं शोकं दावानलं गणविभुं

वरकुञ्जरास्यम् । अज्ञान कानन विनाशन हव्यनाहमुत्साह वर्धन मह
सुतमीश्वरस्य श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यं दायकम् । प्रातरुत्थाय
सततं यं पठेत्प्रयत्नं पुमान् ॥

नमस्काराः ।

श्री महागणधिपतये नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः ।
ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।
वाणिहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्री
चामाहेश्वराभ्यां नमः ।

हेमाद्रिकृतः स्नान सङ्कल्पः

अथ हेमाद्रिकृतं स्नान सङ्कल्प — आचम्य प्राणानायम्य ॥ श्रीमन्म
हागणधिपतये नमः । श्री गुरुभ्योनमः । श्री सरस्वत्यैनमः । वेणयनमः ।
वेदपुरुषायनमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । ग्रामदेवता
भ्योनमः । स्थान देवताभ्यो नमः । श्री वास्तुदेवताभ्योनमः । एतत्कर्म प्रधान
देवताभ्योनमः । सर्वेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणोभ्योनमः । अविघ्न
मस्तु । सुसुरत शकं दन्तश्च कपिलो गनकर्णकः । लम्बोद्गच्छ विषटो
विघ्ननाशो गणाधिपः । धूम्रकेतुर्गणध्वजोमाल चन्द्रोगनाननः । द्वादशै
तानि नामानि यं पठेच्छृणुयादपि । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संप्राप्ते सङ्घटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते । शुक्लान्नघरं शिवशिवार्णं चतु
र्भुजम् ॥ प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्वं विघ्नोपशान्तये । अभीप्सितार्थं सिद्धार्थं
पूजितोयं सुरासुरैः ॥ सर्वं विघ्नं हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ सर्वमङ्गल
माङ्गलये शिवे सर्वार्थं साधिकः । शरण्या यम्बके गौरि नारायणि नमो-
स्तुते । वक्र तुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः । निविघ्नं कुरु मे देव सर्वं
कार्येषु सर्वथा ॥ वागीशाद्यां सुमनसं सावार्थां नामुपाक्रमे । यं नत्वा
श्रुत्वा स्युम्भ नमामिगजाननम् ॥ गणनाथं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।
विष्णुं रुद्रं शिवं त्रैलोक्यं चन्द्रे भक्त्या सरस्वतीम् । स्थान क्षेत्रम् नमस्कृत्य दिन
नाथं निशाचरम् । धरणीं गर्भं मन्मथं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ देव्याचार्यं
नमस्कृत्य मूयपुत्रं शनैरचरम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यद्यारम्भे विशेषतः ।
शक्रादिदेवता सर्वानृषीश्चैव तपायनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं
पर्वतं तथा ॥ यमिष्टं मुनिं शार्दूलं त्रिश्रामित्रं च गाभिलम् । अगस्त्यं च
पुष्यम् च दशमित्रं पराशरम् । भरद्वाजं च माण्डव्यम् याज्ञवल्क्यं च
गालवम् ॥ अन्ये विघ्नस्तपोयुक्ता यः शान्तिं त्रिचक्षणाः । तान्मर्यान् प्रणि
पत्याद् शुभं कर्म समाचरे । कामं स्नेहं जयं स्नेहां सुतन्त्रया परानय । येषां

मिन्दी वर श्यामो हृदय स्थो जनार्दनः ॥ अमृतः श्री नृसिंह श्च पृष्टतो
 देवकीमुतः । रत्नतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ ॐ स्वस्ति श्रीमुकुन्द
 सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य माया शक्ति विजृम्भिता विद्या योगात्
 काल कर्म स्वाभावाविर्भूत महत्तत्त्वोदिताहङ्कारोद्भूत वियदादि पञ्च
 महा भूतेन्द्रिय देवतानिर्मितेऽण्डकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलया तन्मध्य-
 वर्ति भगवतः श्री नारायणस्य नाभि कमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्य ब्रह्मण
 सृष्टि कुर्वतस्त दुद्गरणाय प्रजापति प्रार्थितस्य समस्तं जगदुत्पत्ति स्थिति
 लयकारणस्य जगद्रक्षा शिक्षा विचक्षणस्य प्रणत पारिजातस्य अच्युता
 नन्त वीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्या परिमित शक्त्या ध्येय
 मानस्य महाजलोद्य मध्ये परिभ्रमणा नाम नेक कोटि ब्रह्माण्डा नामे कतमे
 ऽव्यक्तमहद्ब्रह्मण पृथिव्यप्ते जो वाट्वा काशा द्या वरणै रावृत्तै अस्मि-
 न्महति ब्रह्माण्ड खण्डे आधार शक्ति श्री मदादि वाराह दंष्ट्राप्रविराजिते
 कूर्मान्त वासुकि तत्र ककुलिक कर्कोटक पद्म महा पद्म शङ्खाद्यष्ट महा
 नागैर्धन्यमाणे ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुदाञ्जन पुष्पदन्त सार्वभौम
 सुप्रती काष्ठ दिग्गज प्रतिष्ठिता नाम तल वितल सुतल तलातल रसातल
 महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महोर्लोक
 जनोलोक तपोलोक सत्य लोकात्स्य सप्त लोका नामधो भागे चक्र बाल
 शैल महाबलय नागमध्य वर्तिनो महाकाल महाफणिराज शेषस्य सहस्र-
 फणानां मणि मण्डल मण्डिते दिग्दन्ति शुण्डो त्तम्भिते अमरावत्य
 शोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती कांच्यवत्य लकावती यशोवती-
 तिपुण्य पुरीप्रतिष्ठते इन्द्राग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुबेरेशानाष्ट
 दिक्पाल प्रतिष्ठिते वर ध्रुवा धर सोमया प्रभञ्जना नल प्रत्यूष प्रभापास्याष्ट
 वसुभिर्विराजिते हरत्र्यम्बक रुद्र भृग व्याधा पराजित कपाली भैर व शम्भु
 कपर्दि वृषा कपि वृदु रूपाख्यै कादश रुद्रै संशोभितेरुद्रोपेन्द्र सवितृधा
 तृत्वष्टर्यमेन्द्रे शानभग मित्र पूषास्य द्वादशादित्य प्रकाशिते यम नियमासन
 प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाध्यष्टाङ्ग निरत वसिष्ठ बाल खिल्य
 विश्वामित्र दक्ष कात्यायन, कौण्डिन्य, गौतमाङ्गिरस पाराशर्य ध्यास
 वाल्मीक शुक शौनक भरद्वाज सनक सनन्दन सनावन सनत्कुमार
 नारदादि मुख्य मुनिभिः पवित्रते लोका लोका चलवलयिते खरणे ध्रु
 समुरा सपिर्दधिहोरोद्ग युक्त सप्तार्णवपरिवृते जम्बूद्वीपे शाल्मलि पुत्रा
 कौश्व शाक पुत्रराय सप्त द्वीपयुगे इन्द्र कांस्य ताम्रगमस्ति नाग सौम्य
 गन्धर्व पारण भारतेति नद्य खण्ड मण्डिते मुर्वणगिर कर्णिको पेत
 महासरो महाकार पंचाशत्कोटि योजन विस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्या
 मथुरा माया कशा काञ्च्यवन्तिका द्वारा यतीति मत्पुरी प्रतिष्ठिते महा

किमु प्रदस्थले शाल ग्राम शम्भल नन्दि ग्रामेति ग्राम त्रय विराजिते चम्प-
 कारण्य वट्टिकारण्य वण्डनारण्य बुन्दारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य गुह्यारण्य
 जम्बुवारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षारण्य नहुवारण्य काम्यकारण्य द्वैतारण्य
 नैमिपारण्यदीनामध्ये सुमेरु निपथ कूट शुभ्रकूट श्रीकूट हेमकूट रजतकूट
 चित्रकूट त्रिकूट किण्डिन्ध श्वेताद्रिकूट हिम विन्ध्या चलानां हरि वर्ष
 किम्पुरुष वर्ष योश्च दक्षिणं नव सप्त योजन विस्तीर्णं भरतरण्डे मलया-
 चल महाचलविन्ध्या चला नामुन्तरेण स्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ सूक्तिः आचं-
 तकरमणक महारमणक पाञ्चजन्यसिंहल लंकाअशोक वत्य लकावती-सिद्ध-
 वती गान्धव वत्यादि पुण्यपुरी विराजिते नम रण्डोपद्वीप मण्डिते
 दक्षिणा वा स्थित रेणुका द्वय सूकर काशी काञ्ची कलिकाल वटेश्वर
 कालांतर महाकालेति नदी रार युते द्वादश ज्योतिलिङ्ग गङ्गा (भागीरथी)
 (गौतमी) गोदाक्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापीपयोषिणी चन्द्रभागा-
 कावेरी मन्दाकिनी प्रवरा कृष्ण वेण्या भीमरथी तुङ्ग भद्रामलायहा इत
 माला ताम्रपर्णीविशालाक्षी वञ्जुला वर्गण्यवती वेत्रवती भोगवती
 विशोका कौशिकी गण्डकी वासिष्ठी प्रमदा विश्वामित्री फाल्गुनी चित्र
 कारयपी सरयू सनेपाप हारिणी ऋतोया प्रणीता वज्रा वक्र गामिनी
 सुवर्णरेखा शोणामर नाशिनी शीघ्रगाकुश वर्तिनी ब्रह्मा नन्दा महितन-
 येत्य नेक पुण्य नदं भिविलसिते ब्रह्मपुत्र सिन्धु नदादि परम पवित्र जल
 विराजिते हिमवन्मेरु गोवर्धन धौच चित्रकूट हेमकूट महेंद्रमलय
 सङ्गन्त कीलपारि यात्राघनेक पत्रत समन्विते मतङ्ग माल्यकिण्डिन्य
 श्रुपि श्योति महाना ममन्विते अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग काश्मीर काम्योज
 सौवरी सौराष्ट्र महाराष्ट्र मगध नेपाः फर्रेल चारेल पाञ्चाल गौड़ मालव
 मत्स्य सिन्धुद्रविड कर्नाटक ललाट वरदाट धरदाट पानाट पाण्ड्य निपथ
 मागध आन्ध्र दशार्ण्य भोजपुर गान्धार विदर्भ विदेह वाहीक वर्धर
 कैकेय वाराणसिवाट शूरसेन कौकण कैरट मत्स्य सद्रथा रमिक मजूर्-
 यावन मलेच्छ जालन्धरेति सिद्धवत्यन्य देश विशेष भाषा भूमिपाल
 विचित्रते इला वृत सुरु भद्राद्वेनु मालकिम्पुरुपरमणक हिरण्यमयादि
 नव वर्षाणां मध्ये भाल नन्दे यदुल चम्पक पाटलाञ्ज पुत्राग जातिनर
 वीररमाल कद्धार केनक्यादि नानाविधि कुसुम स्तर वविराजिते फोक्न्त
 हिरण्य शंभुज्जुबुद मणि कर्णो यट शाल ग्राम मुकर मथुरा गया निष्क-
 मण लोहारगलपोतम्भ भिप्रमाम वङ्गिनि वनुदंश गुण्य यिलसिते जम्बूद्वीपे
 कुण्डेशदि सप्तम् मध्यगयायाः पश्चिमदिग् भागे कुल मेरोदक्षिणदिग्भागे
 विन्ध्यस्य दक्षिणे देशे श्री शैल्य वाक्य देशे कृष्णा वेणुयोर्मध्ये मत्स्य
 पूर्व वाराह नृसिंह वामन परशुराम रामकृष्ण सुद वरुधीति दशानवाराणां

मध्ये वौद्धावतारे गङ्गादिसरिद्धिः पाविते एवं नव सहस्र योजन विस्तीर्णं भारत वर्षे निखिल जन पावन परम भागवतोत्तम शौनकादि निवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्तक देशे सूर्यान्वयभू भृत्प्रद्विते श्री मन्नारायण नामि कमलोद्भूत सकल जगत्स्रष्टुः परार्द्ध द्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एक पञ्चासत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराह कल्पे स्वायम्भुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलि संज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टा विंशति तमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे) श्री मन्वृपविक्रमाकांत् श्री मन्वृप शालिवाहनाद्वा यथा संख्या गमेन चान्द्रसावन सौर नक्षत्रादि प्रकारेण गतानां प्रभवादि पष्टि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि संवत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनि श्री मार्तण्ड मण्डले अमुकर्तौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक राशिस्ये चन्द्रे अमुक स्थे सूर्ये अमुक स्थिते देवगुरो शोपेपु ग्रहेषु यथा यथा स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषेणविशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक शर्मणः (भार्यया सहाधिकृतस्य) ममइहजन्मनि जन्मान्तरे वा वाल्य यौवन वार्धक्या वस्थासु वाकमणि पाद पायू पस्थ घ्राण रसना चक्षुः स्पर्शन श्रोत्रमनोभिरचरित—ज्ञाता ज्ञात कामा काम महापातको-पपातकादि सध्वितानां पापानां ब्रह्मह्नन सुरापान सुवर्णस्तेयगुरु तल्यगमन तत्संसर्गरूपमहा पातकानां बुद्धि पूर्वकाणां मनो वाक्याय कृतानां बहु कालाभ्यस्तानां उपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्ट संकरो करणमलिनी करण पात्री करण जातिभ्रंश करण विहिता करण कर्मलोप जनितानां रसविक्रय कन्या विक्रय हय विक्रय गो विक्रय खरोष्ट्र विक्रय दासी विक्रय अजादि पशु विक्रय स्वगृह विक्रय नीली विक्रय अक्रेय विक्रय पण्य विक्रय जल चटादि जन्तु विक्रय स्थल चरादि विक्रय खेचरादि विक्रय सम्भूतानां निरर्थक वृत्तच्छेदेन षण्णानपा करण ब्रह्मस्वाप हरण देवस्वाप हरण राजस्वापि पर द्रव्याप हरण तैलादि द्रव्यापि हरणफलादि हरण लोहादि हरण नाना वस्तु हरण रूपाणां ब्राह्मण निन्दा गुरुनिन्दा वेद निन्दा शास्त्र निन्दा पर निन्दा भद्र भद्रणा भोऽथ भोजना चोप्य चोपणा लेह्य लेहना पेय पानास्पृ-श्य स्पर्शना श्राव्य श्रवणर्दिस्य हिंसना वन्द्य वन्दना चिन्त्य चिन्तना याज्य याजना पूज्य पूजन रूपाणां मान् पितृ तिरस्कार स्त्री पुरुष प्रीति भेदन परस्त्रीगमन विधवागमन वैश्यागमन दासीगमन चाण्डालादि हीन जाति गमन गुदगमन जस्त्रला गमन परचादिगमन रूपाणां कृत साक्षित्व पैशून्य वाद मिथ्या पवाद म्लेच्छ सम्भाषण ब्रह्मद्वेषकरण ब्रह्मवृत्तिहरण वृत्ति-

च्छेदन पर वृत्तिहरण रूपाणामिन्नवञ्चन गुरुवञ्चन स्वामि वञ्चनासत्य
भाषण गर्भ पातन पथि ताम्बूल श्वर्णहीन जाति सेवन पराङ्ग
भोजन गणान्न भोजन लशुन पलाण्डु गृञ्जन भक्षण तालवृक्ष फलभ
क्षणोच्छिष्ट भक्षणमाजारोच्छिष्ट भक्षण पर्युपितात्र भक्षणरूपाणा पक्ति
भेक्षण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा जालहिंसाद्यनेक हिंसोद्भूताना शौचत्याग स्नान
त्याग सन्ध्यात्यागौ पासनाग्नि त्याग वैश्वदेव त्याग रूपाणा निषिद्धा चरण
कुप्रासवास ब्रह्मद्रोह गुरुद्रोह पितृ मातृ द्रोह पर द्रोह पर निन्दात्मस्तुतिदुष्ट
प्रतिमह दुर्जन स सर्गरूपाणा गोयान वृषभयान महिषी यानगर्दभयानोष्ट
याना चयानभृत्याभरण स्वप्रास त्याग गोत्रत्याग कुलत्याग दूरस्थमन्त्रण
विप्राशाभेदना वन्दिताशीर्वाङ्गप्रहृत्यपतित सम्भाषणरूपाणा पतितजन
पक्तिभोत्रनाह सङ्गम वृथा मनोरथादि पापाना तथा महा पापोपपापाम्यां
नानायानिपु यत्कृतम् । दालभावेन यत्पाप जुत्तुदर्थे च यत्कृतम् ॥ आत्मार्थ
चैव यत्पाप परार्थे चैव यत्कृतम् । तीर्थेषु चैव यत्पाप गुर्वज्ञाकृतम् च
यत् ॥ रागद्वेषादि चिन्तित काम क्रोधेन यत्कृतम् ॥ हिंसानिद्रादिजपामभेद
दृष्ट्याच यन्मया ॥ देहाभि मानन पाप सर्वदा यन्मया कृतम् । भूतभव्य
च यत्पाप भविष्य चैव गौतमि ॥ शुष्क माद्र च यत्पाप जानता ऽ जानता
कृतम् । महलघु च यत्पाप तन्मे नाशाय जाह्नवि ॥ ब्रह्महायद्यप स्तेयी
तयैषी गुरुतल्पग ॥ महापापानि चत्वारि तत्ससर्गो तु पञ्चम् अति पातक
मन्यच्च तन्मयून मुप पातकम् । गोषधो घ्रात्यता स्तेय ऋणाना चानप
त्रिया अनाहिताग्निता पर्यविक्रय परिवेदनम् । इन्धनार्थे द्रुमच्छेद म्त्री
दिमौषधि जीवनम् ॥ हिंसाया प्राविधान चभृतका ध्यापन तथा प्रथमा
श्रममारम्ययत्किञ्चित्किञ्चित्प कृतम् ॥ इमि कीटादिहननयत्किञ्चित्
प्राणिहिंसनम् । माता पित्रो रशुश्रुषा तद्वाक्या करण तथा ॥ अपूज्य पूजन
चैव पूज्याना च व्यतिक्रम ॥ अनाश्रमस्थ ताग्यादि देवाप श्रुपण तथा
पर कायापहरण परद्रव्योप जीवनम् । ततोऽज्ञानकृत वापि कायिक वाचिक
तथा ॥ मानस त्रिविध पाप प्रायश्चत्तरे नाशितम् । तस्मादशेष पापेभ्य
स्नादि त्रैलोक्य पावनि । निष्पापो ऽस्म्यधुनापेवि प्रसादा त्त नान्यथा ॥

स्त्रीणां विदोष :—पाणिमहण मारम्य स्वकर्मा परिपालनम् ।

इन्द्रयाभिरति पुमु नाना योनिपुयाभयेत ॥ कृमि कीटादि हनन पक्तिभेदा
त्कि तथा सृष्टा सृष्टमनाचार मनसा दोष कल्पनम् ॥ तत्सर्वं नाशये
त्तिप्रर्गमे त्वयात्रया नया ॥] इत्यादि प्रकीर्ण पातकाना एतत्काल पर्यंत
मञ्जिताना लघुमयूल मूत्रमण्डा च निश्रोय परिहारार्थं शशावरान् दशावरान्
दशापरान् ध्यात्वासासदितान् एक विंशति पुरुषा गुदतु ब्रह्मलोकं यधि पञ्चा

शक्नोदियोजन [विस्तीर्णोऽस्मिन्भूमण्डले सप्तर्षि मण्डलपर्यन्तं बालुकाभिः
 कृतराशोः वर्षसहस्रा वसाने एकैक बालुका पकर्ष क्रमेण सर्वराश्यपकर्ष-
 समित काल पर्यन्तं ब्रह्मलोके ब्रह्म सायुज्यता प्राप्त्यर्थं कुरुत्तेत्रादि सर्व
 तीर्थेषु स्नान पूर्वकं सहस्रगोदान जन्य फल प्राप्त्यर्थं तथा ममसमस्त-
 पितृणां आत्मनश्च विष्णवादि लोक प्राप्तये अधीतानामध्येष्य माणानां
 चा ध्यायानां स्थापनविच्छेदक्रोश घोषण दन्त विवृति, द्रुवृत्तद्रुतोधारित
 वर्णानां पूर्वं सवर्णानां गलोपलम्बितविधृतोधारित वर्णानामृश्रिष्टा स्पष्ट
 वर्णं विघट्टनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यथा तथा मत्वं तत्परिहारार्थं
 अष्टत्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्या सञ्चरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छा-
 न्त्यजादे शृण्वतोऽध्ययने ऽशुचिदेशे ऽध्ययने आत्मनोशुचित्वेऽध्ययने
 अक्षर स्वराणुस्वारपदच्छेद कण्टिका व्यञ्जन ह्रस्व दीर्घ प्लुत कण्ठ तालु
 मूर्धन्योष्ठ्य दन्त्य नासिका नुनासिक रेफजिह्वा मूली यो पध्मानीयो
 दात्ता नुदात्त स्वरिता दीनां व्यतये नो आरेमाधुर्यात्तर व्यक्तीहीन त्वा
 घनेक प्रत्यवाय परिहार पूर्वकं सर्वस्य वेदस्य मवीर्यत्व सम्पादन द्वारा-
 यथाव त्फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं देव ब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायण
 सनिधौ गङ्गाभागीरथी मन्दाकिनी-अलक नन्दायां अमुक तीर्थं वा
 प्रवाहाभिमुखं स्नानमहं करिष्ये ॥ इतिसङ्कल्प स्नायान्—[यदि यजमानो
 वेदाधिकारी न स्यात्तीर्थं तेनायं संकल्पः पुराणोक्त विधिना कार्यः उपाध्या-
 येन तत्करतः कारयितव्यश्च ॥] इति हेमाद्रिकृतः सङ्कल्प प्रयोगः ।

अथनद्यादौनित्य स्नान प्रयोगः—शुचिभूत्वाकर्ता

शुभ्रां यथा देश सम्भवां वा मृदमात्रं गोमयं कुशान् विलासवान्मुरभीणि
 पुष्पाणिभस्मं चाशय तीर्थं तटे गच्छेत् । तदनन्तरंमूयामुय स्तीर्यानि-
 प्रार्थयेत् । तीर्थं प्रार्थना, नमामिगङ्गेतव पाद पङ्कजं मुगामुरै र्वन्दिव्य
 रूपम् । भुक्तिं च मुक्तिं च ददासिनित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥
 यागति योग युक्तानामुनीना मूर्ध्निरेतसाम् । सागतिःसर्व जन्तूनां गौतमी
 तीर धामिनाम् ॥ पुच्छरा यानि तीर्यानि गङ्गायाः मरिचमया ।
 आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकालेसदामम ॥ त्वं राज्ञा सर्व तीर्या नां
 त्वमेव जगतः पिता । याचितं देहिमे तीर्थं तीर्थं राजनमोऽस्तुते ॥
 अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु पसतिस्त्व । षड्गणाय नमस्तुभ्यं स्नाना
 नुशांप्रयच्छमे ॥ अधिष्ठास्य अ तीर्यानांतीर्थेषु विषरन्ति याः देवता स्ताः
 प्रयच्छन्तु स्नानाशांमम सर्वदा ॥ गङ्गे पयमुने पौत्र गोदावरि मरस्वनि ।

(१) वैशितप्रामित्ते भावनवादि नेमिचिभ्रनानेहेमाद्रि मोतंमहा
 मङ्गलंइत्यंति तीर्थस्नानदापन्त्यः कारयन्ति च ।

नवदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्तिधि बुरु ॥ इते सम्प्रार्थ्य हस्तौ
पादौप्रक्षाल्याचम्य संकल्पः—अद्यपूर्वो धारित एवं गुण विशेषण
विशिष्टां शुभ पुण्य तिर्यौ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणीक फलप्राप्त्यर्थ
मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कार्याक वाचिक मानसिक वाचिक सां
सर्गिक ज्ञाता ज्ञात रक्षां स्पर्शभुक्ताभुक्त पीतापीतादिसकल पातकनिरास
पूर्वक मासनभोजन शयन गमनादि प्वनृतभाषणादि दोष निराप द्वारा
श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थममुक तीर्थस्नानमहं करिष्ये ॥ इतिसंकल्प पश्चान्—
तीर्थाभिमन्त्राणम्—ॐ वरु ढंदि राजा व्वरुणश्चकारसूर्याय पन्यामन्न-
वेतवाऽव । अपदे पादा प्रतिघातवे करुतापवक्त्रा दृद्या विधञ्चित् ।
नमोवरुणायाभिष्टितोवरुणस्य पाशाः ॥ १ ॥ इतिमन्त्रेण न्युञ्जा झलिहस्ते-
न तोयमभिमन्त्रयेत् ॥ जलावर्तनम्—ॐ ये ते शतंवरुणये सहस्रं यद्विया
पाशा विततामहान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तुमरुतः
स्वर्काः ॥ २ ॥ पा० गु० इति पूर्णाञ्जलिनापोग्रहणम्—॥ सुमिन्त्रया
नऽआपऽओपधयऽसन्तु ॥ ३ ॥ इतिमन्त्रेणजलाञ्जलिगृहीयात् ॥ तीर्थं
तटे जन प्रक्षेपणम्—दुर्मिन्त्रियास्तस्मैसन्तुयोस्माद्वेष्टियञ्चवयन्दिष्मऽ
॥ ४ ॥ मृत्तिका लेपनम्—ॐ इदं विष्णुं चक्रमेवेद्यानिदये पदम् । समूह-
मस्य पा ढंमुरे स्वाहा ॥ ५ ॥ अश्वक्रान्ति रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
उद्गृह्णासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके ब्रह्म पृथासि वाश्यपे
नाभि वन्दिता । त्वयाहतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् ॥ मृत्तिके हरमे
पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । इतिसंप्रार्थ्य । नाभिमायंतीर्थं जलं प्रविरय
सूर्याभिमुखं स्थित्वास्नायात् । तत्रमन्त्रः—ॐ धापोऽअस्मान्मातरःशुन्ध
यन्तु धृतेन नो धृतप्यवःपुनन्तु । विश्व ढंदि रिष्मत्प्रवहन्ति देवीऽ
॥ ६ ॥ इतिमन्त्रेणनिमज्ज । पुनः—ॐ इदि दाम्बऽ शुचिरा पूतऽपमि
॥ ७ ॥ इतिमन्त्रेणद्वितीय वारं निमज्ज, पुनस्तूर्णो निमज्जोन्मज्ज्या चामेत्

(२) विष्णुस्मृतिः—ब्रह्माविष्णु श्वरुद्रश्चसर्वमो मिति शोच्यते ।
मन्वन्ते ऽमुरासंयाने नम्यतेच युगुलुभिः ॥ (३) इतिमन्त्रेण जलंदक्षिण हस्ता
ङ्गुलिभिर्दक्षिणवर्ते प्रिवार मा वर्तयेत् ॥ तत्रामयेत् ॥ (४) इतिमन्त्रेण झलिस्यं
मुदकं स्वराजन्मनषापिचिन्त्य तन्नाशयं स्वनाम मागेतं यतटे विपेत् ॥ (१)
मृत्तिका मादोष तस्याभिभागा ल्पत्वा प्रथम मागं वाम हस्ते गृहीत्वा तेन
नाभेरधः कटि प्रदेशे मनुजेरयेत् । हस्तं प्रक्षाल्य ॥ (२) पुनस्ते नेव हस्तेन
द्वितीयमातेन धस्ति उध जघे चरणी करो चप्रत्येकं तूर्णां त्रिभिरनुलिप्य पुन
हस्तं प्रक्षाल्याचम्य तीर्थोदकं नमस्तूर्णम् ॥ (३) इतिमन्त्रेण तृतीय मागेन
दक्षिण हस्तेन कृत्वाटादि नाभिपपन्तानिगाथापपुपलिन्य हस्तं प्रक्षाल्या चम्य
तीर्थो दकं नमस्तूर्णम् ॥

गोमंभलेपनम् अप्रमत्त चरन्ती ना मोषधीनां वनेवने । तासां वृषभ पत्नीनां
 पवित्रं काय शोधनम् ॥ तन्मे रोगांश्च शोकांश्च पाप मेहर गोमय । (इति मन्त्रेण
 गोमयमभिर्मन्त्र्य) । ॐ मां नस्तोके तनये मा नऽआयुषिमानो गोषु मा
 नोऽअश्वेषुरीरिषऽमानो व्धीरा ब्रुह् भाभिनो वधीर्हविष्मन्तऽऽसदमित्वा-
 हवामहे ॥ ८ ॥ भस्मलेपनम्, क्षेपकम्—जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म,
 व्योमेति भस्म, सर्वं हवाइदं भस्म, मन एतानि चक्षुषिभस्मानीति ॥ ॐ
 प्रसह्यभस्मना योनिम पश्च पृथिवी मग्ने, स ॐ सृज्य मातृभिष्टव
 ऊऽऽयोतिष्मा न्युनरासदऽऽ ॥ ९ ॥ इति क्षेपकम् मार्जनम्—ॐ इम्मै
 वरुणेशशुधी हवमदथा चमृदय, स्वामवस्युराचके । १० ॥ तत्त्वायामि
 व्रद्धमणा व्रन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिवऽअहदमानो वरुणोह
 वोद्वय रुश ॐ समानऽआयुऽऽप्रमोपीऽऽ ॥ ११ ॥ त्वन्नोऽअग्नेवरुणस्य-
 चिद्धान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाऽऽ यजिष्टो वृत्रिहतमऽऽ शोशुचानो
 द्विश्वाद्वेषा ॐ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ १२ ॥ सत्त्वन्नोऽअग्ने वमोभवोती
 नेदिष्टोऽ अस्याऽ उपसोव्युष्टौ, अर्वयद्व नोवरुण ॐ रराणोव्धीहि
 मृडीक ॐ सुहवोनऽएधि । १३ ॥ मापोमौषधीहि ॐ सीर्दाम्नो
 धाम्नो राज स्ततो वरुणानो मुञ्च । १४ ॥ नदुत्तमं वरुणपाश मस्म-
 द्नाधमं वि मध्यम ॐ श्रथाप अथाव्यय मादित्य व्रते तवानागसो
 ऽअदितये श्याम । १५ ॥ मुञ्चन्तु मा शपथ्या दथो वरुण्यादुत
 अयोनस्य पडवीशात्सर्वंस्ममा हेव किल्विपात् । १६ ॥ अवभृथनि
 चुम्पुणनिचेरुसि निचुम्पुणऽऽ १ । अवदेवेदेव कृतमेनोयासिप भवमर्त्यै
 र्मर्त्यै कृन्पुरु राव्यो देवरिपस्थाहि । १७ ॥ (इति मन्त्रैः सर्वाङ्गा-
 निमार्जयित्वा । पश्चात्तूर्णांस्नात्वाचम्य) पुनर्दमैर्मार्जनम् ॐ आपो
 हिष्टा मयोभुवस्तानऽ ऊर्जे दधातन महरेणाय चक्षसे । १८ ॥
 योषऽशिव तमो रसस्तस्य भाजयतेह नऽऽरातीरिव मातरऽऽ । १९ ॥
 तस्माऽअरङ्गमाम वो पस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जन यथा च नऽऽ
 । २० ॥ इदमांऽऽप्रवहता वहथञ्च मलञ्चयत् यथाभि दुद्वोहा नृतं
 वच शेपेऽअभीरणम् आपोमा तस्मादेनस ऽऽपवमानश्चमुञ्चतु ॥ २१ ॥
 हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्मो ऽआर्विवासति हविष्मान्देवोऽआद्धरो

४ पूर्णाञ्जलिति मन्त्रेण सोदकं गोमयं सूर्याय दर्शयित्वा तेन त्रिवार
 मङ्गानि ललाटादिपादतल पर्यन्तानि मूलेपन वदनुलिप्य क्षालयेत् ॥ १ ॥
 इति मन्त्रेण ललाटाद्यङ्गेषु भस्म लेपनं कृत्वा ॥ २ ॥ तत्र सज्जलेन कुश
 त्रयेण नाभि दक्षिण पार्श्वमारम्य गितो नीत्वा नाभि वामपाश पर्यन्तं
 मात्मानं पाषयेत् ॥

हविष्मोऽस्तु सूर्य-॥२२॥ देवीरापोऽ अयान्नपादयोऽ उर्मिर्हविष्यऽ
 इन्द्रियायान्मदि-तम । तन्देवेभ्यो देवत्रावत्त शुक्लेद्भयो येषाम्मागम्य
 स्वाहा ॥२३॥ कार्पिरसिसमुद्रस्यत्वा क्षिप्त्याऽ उन्नयामि ममापोऽ-
 अद्रित्तामत समीपरीभिरोपधीऽ२४ ॥ अपोदेवा मधुमतीरगुम्ब्य
 नूर्जस्वती राजस्वशिश्तानाऽ याभिन्मिन्ना वरुणा वन्म्यपि उन्नन्या
 भिरिन्द्रमनयन्नयरातीऽ' । २५ ॥ द्रपदादिव सुमुवान ५१ खितऽऽ क्वातो
 मलादिव पूतम्यवधिन्प्रेणै वाज्यमाप-गुन्धन्तु मैनसऽ । २६ ॥
 शन्नोदेवीरमिष्टयऽ आपोभवन्तु पीतये शय्योरभि भवन्तु नऽ । २७ ॥
 अपा ५ रस मुदयस ५ सूर्ये सन्त ५ समाहितम् । अपा ५ रसस्य
 योरसस्त व्योगह्वाम्युत्तम मुपयाम गृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टतमम्
 । २८ ॥ अपो देवो रूप शृज मधुमतीर यक्षमाप प्रजाग्य-तासा मास्थाना
 दुज्जिता मोषधयऽ सुपिपला ५१ । २९ ॥ पुनन्तुमा पितर-सोम्यास
 -पुनन्तुमा पितामहाऽ पुनन्तुप्पितामहाऽ पवित्रेण शतायुषा
 विरश्वायु र्यरनदै । ३१ ॥ अग्नऽआयू ५ विपवस आसुवो र्जमि,
 पञ्चनऽ आरे वाधख दुच्छनाम् । ३२ ॥ पुनन्तुमादेवसखऽ ५ पुनन्तु
 मनसा पिय-पुनन्तु विरश्वा भूतानि जामवेदऽ पुनीहिमा । ३३ ॥ पवित्रेण
 पुनीहिमाशुक्त्रेण देवदीहयत् अग्नेकत्र-त्त्राकक्रतू । ५२ ॥ ३४ ॥ यत्पवि
 -त्रमर्षिष्यग्ने पितत मन्तरा ब्रह्ममतेन पुनातुमा । ३५ ॥ पवमानऽसाऽ
 अदथ न- पत्रिन्त्रेण विचर्षणिऽ यऽ पीता म पुनातुमा । ३६ ॥
 उमाग्यान्व सवितऽ पत्रिन्त्रेण सवेन च माम्पुनीहिद्विश्चत- । ३७ ॥
 व्यैश्व देवी पुनती वज्यागादधश्यामिमा बह्वयस्तन्वोव्यी तप्रष्टाऽ
 तयामदन्तऽ सवमादेपुत्रय ५ श्याम पतयोरथीणाम् । ३८ ॥ (इति मन्त्रे
 मूर्जयितापश्वा दुदक स्पृशेत् ॥) तत -ॐ विचर्षतिर्मा पुनातु देवो मा
 सवितऽ पुनात्स्विद्धद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि-तस्यते पवित्रपते
 पवित्रतस्य पत्रामऽ पुनेतच्छकेयम् । ३९ ॥ वाक्कवतिर्मा पुनात्स्विद्ध
 द्रेण पत्रि-त्रेण सूर्यस्य रश्मिभि-तस्ये ० । ४० ॥ देवो मा सवितऽ
 पुनात्स्विद्धद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि-तस्ये ० । ४१ ॥ तत -ॐ
 पुनातु इमग्ने-व ० । ४२ ॥ इति मन्त्रेण ॐ पुनातु तत्त्वाया ० । ४३ ॥
 इति मन्त्रेण ॐ पुनातुस्वश्रोऽ अ ० । ४४ ॥ (इति मन्त्रेण) ॐ स्व
 पुनातु-स स्वश्रोऽ अ ० । ४५ ॥ (इति मन्त्रेण) ॐ मह पुनातु-मापो

(१) इति मन्त्रेण नामैव माजंयत् ॥ (२) इति मन्त्रेण नाम रथो
 माजंयत् ॥ (३) इति मन्त्रेण मर्वाङ्गे मा ॥ (४) अपामागैस्तथा
 दूर्वाभिमार्जनं धाववपरिर्नैमित्तिक स्नाने कुर्यान्नतु नित्य स्नाने ॥

मौप० । ४६ ॥ (इति मंत्रेण) ॐ जनः पुनातु-उद्धृष्टमम्० । ५७ ॥
 (इति मंत्रेण) ॐ तपः पुनातु-मुञ्चन्तु मा० । ४८ ॥ (इति मंत्रेण)
 ॐ सत्यं पुनातु-अवभृथ नि० । ४९ ॥ (इति मंत्रेण) ॐ तत्सवितुर्व
 । ५० ॥ सर्वं पुनातु ॥ (इति कृशैर्मार्जयित्वा) ॥ अपामार्गेण मार्जनम्
 (क्षेपकम्) ॐ अपाधमपकिल्विषमप कृत्स्यामयोरपः-अपोमार्गस्त्व
 मस्मद्वदुःखं षड्वप्यं ७ सुवः । ५१ ॥ (इति मंत्रेणापामार्गस्त्रिभि-
 र्मार्जयेत्) ॥ ततः-दुर्वाकुरेणं मार्जनम्-ॐ काण्डां स्काण्डा
 ष्णोऽन्ती परुषः परुष स्परि एवानोदूर्ध्वेऽपतनु सहस्रेण शतेन चः । ५२ ॥
 (इति क्षेपकम्) (इति मंत्रेण दूर्वाभि स्त्रिभिर्मार्जयेत्) ॥ अघमर्षणम्
 ततोवक्ष्यमाणपट् पक्षाणामन्यतमे नान्तर्जले ममोऽनुच्छद्भव सन्न घमर्षणं
 कुर्यात् तद्यथा ॐ द्रुपदादि० । ५३ ॥ (इति वात्रिः पठेत्) ॥ आयज्ञोऽ
 पृश्निरक्कमी दसदन्मातरम्पुरःऽ । पितरश्चप्रयन्स्वः । ४ ॥ (इति वात्रिः
 पठेत्) ॥ सशिरसं प्राणायामं वात्रिः पठेत् । यथा-ॐ भूः ॐ भुवः ॐ
 स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुं स्वरोम्
 । ५४ ॥ इति सप्त व्याहृति त्पूर्विकांस शिरस्कां गायत्रीं वात्रिः पठेत् ॥
 ॐ इति वात्रिः पठेत्) विष्णु ध्यानम्—यद्वापरमात्मानं विष्णुं शेष
 शायिनं सायुर्वस श्री कमेकाम मनसाध्यायेत्) एवं स्नानं कृतं स्यात् ॥
 स्नानाङ्ग तर्पणम्—ॐ ब्रह्मादयो देवा स्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्देवास्तु० ।
 ॐ भुवर्देवा स्तु० ॐ स्वर्देवास्तु० ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तु ॐ सनैकादिहै
 पायनादयो ऋषय स्तृप्यन्ताम् ॐ भूर्ऋषय स्तु ॐ भुवर्ऋषयस्तु ॐ स्व
 ऋषयस्तु ॐ भूर्भुवः स्व ऋषयस्तु० ॐ कठ्येवाड नलादयः पितर
 स्तृप्यन्ताम् ॐ भूः पितर स्तु० ॐ भुवः पितर स्तु० ॐ स्व पितर स्तु०
 ॐ भूर्भुवः स्वःपितर स्तु० ॥ (ततः आचम्य सन्ध्येन यक्ष्म तर्पणं
 कुर्यात्) । यक्ष्मतर्पणम्—यन्मया दूपितं तोयं शरीरमल सम्भवान् ।
 तस्य पापस्य शुद्धयर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥ (इति मंत्रेण तीर्थं तटे
 तिलमिश्रं जलाञ्जलिं निक्षिपेत् ॥) पश्चात् लतादिकेषु शिखोदक
 त्यागः—लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्ति मायान्तु

(१) प्रथमे देवतर्पणे पूर्वाभिमुखः सन्कुशत्रयं गृहीत्वा । तदग्रैः सभ्येन
 देवतीर्षे नोङ्कारपूर्वकं देवेभ्य एकैक मङ्गलिदद्यात् ॥ (२) द्वितीये ऋष्यादि
 तर्पणे उदगमान् दर्मान्गृत्वा तदग्रैर्निषीत्वा प्रजामति तीर्थे नोङ्कारपूर्वकं
 मृषिम्यो द्वीद्वावज्जलीदेवो ॥ (३) तृतीये पितृ तर्पणे भुगान्दक्षिणा प्रम्लान्
 दर्मान्गृत्वाप सन्ध्येन पितृतीर्षे नोङ्कारपूर्वकं पितृभ्यस्त्रीं स्त्रीनङ्गलिन्दद्यात् ॥
 इति नद्यादीनित्य स्नान प्रयोगः ॥ (४) वृक्षाः ॥

मयोत्सृष्टै शिखोदकै ॥ (इतिमन्त्रेण स्वदक्षिणभागेशिराम्भं निष्पीडयेत्
ततोद्यौते वाससी परिधाय भस्मादिधारयेत् ततो गृहे व्रजेत्) इति ॥

गङ्गा पूजनम् ।

तीर्थं गत्वा जलस्पर्शनपूर्वकं गङ्गां प्रणम्य भूतशुद्धिं सविधाय
सूर्यपूजनं कृत्वा च नारिकेलानि फलान्मूलानि चार्पयित्वा पान्थीं प्रक्षाल्य
आचम्य प्रथमयात्रया प्रायश्चित्तसकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि अमुकोऽह
द्वादशाब्दपञ्चदशसार्द्धान्द एकाब्दं वा प्राजापत्याम्नायोभूतहिरण्य
ब्राह्मणाय दास्ये इति ब्राह्मणाय सुवर्णं दत्त्वा गङ्गाम्भसि प्रविश्य
स्नात्वाचम्य कुशातिलजलान्यादाय अद्येत्यादि अमुकोऽह यावच्छ्रेयसाय
वरसो माचरुषं सहस्रान्तस्वर्गमदित्वा प्राप्तिकामो वपनं करिष्ये ॥ इति
संकल्पः । अथ मन्त्र आत्मनः शुद्धिकामो वा पितृणां मुक्ति हेतवे वपनं
चकरिष्यामिनीरेऽह तव जाह्नवि १ ॥ २ानि कानि च पापानि
जन्मान्तराकृतानि च केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशान्त्वपाम्यहम् ।
महापापोपपापार्थ केशलोमतस्त्रा द्विजा । छुरिद्विजन्तु सर्वाङ्ग
ते मे दोषा पतन्त्यन । इति जलमुत्सृज्य मुण्डनं कृत्वा ॥ अनेन
मन्त्रेण गङ्गां प्रार्थयेत् ॥ ॐ नमो देवाधिदेवाय शक्तिकण्ठाय
दिण्डिनि । रुद्राय चापहस्याय चक्रिणे वेद्यमे नमः ॥ सरस्वती
च सावित्री वेदमाता गरीयसी । सानिध्यन्तुभवत्वन्न नीर्धपाप
प्रणाशनी इति सम्प्रार्थ्यं कुशातिलजलान्यादाय ॥ ॐ विष्णु ३ ।
श्रीमद्भागवतपुराणपुरोक्तमाय श्रीमत्समस्तजगद्दुर्वतिस्थितिप्रलयकारस्य रक्ष
रिप्ता विचक्षणस्य प्रणपारिजातस्य अक्षयुतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो
महापुरुषस्य श्रीमदादिनारायणस्यावित्या परिमित शक्त्याग्रियमाण
महाजलौघमध्य परिश्रममाणस्यानेककोटिब्रह्माण्डानामेकत्रयत्ते महद्दह
कारपृथक्पत्रेजोवाचनानारायणायैरावृते ब्रह्माण्डप्रण्डयोर्मध्ये आधार
शक्तिरूपानि ताभ्यादिभ्योपरिमिते सप्तपातालस्योपरिभाग मन्त्रालो
कस्यापो भगव महत्कालशेषस्य महत्सङ्गमावमरिद्धे दिग्गन्तिदन्तशुण्ड
दृष्टेन लोकान्शंकरलिने मरणक्षुमुतामर्षिधिदुग्धक्षीरोदार्यैव परिशिते
पञ्चुप्लव्ण सालमलिकवुराम्नीय माप पुष्परसतद्दीपेदीपिते भारतवर्षे
भारतखण्डे अयोध्या मयुरामाया फारी फात्री अवनतिका द्वाराघतो कुरुनेत्रे
पुष्पादि नाना तीर्थं युगे कूर्म भूमौ मथ्यरेभ्यायां पूर्वदिग्भागीरण्या पश्चि
मतीरे सकल रूष्टिपराङ्मुख चामानां मद्भागो द्वितीयपराङ्मुख प्रथमाब्दे
प्रथममासे प्रथमादशमे अहर्निद्वितीयाय तृतीये मुहूर्ते प्रथमघटिकायां

सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे युगे कलियुगस्य प्रथमे चरणे
 बौद्धावतारेऽअमुक नाम वत्सरे महानक्षत्रे च एवं विधि पञ्चाङ्गादिके
 अमुक नाम दिवसे नक्षत्रे एवं विधि, अमुक योगेऽमुक नाम कर्णेऽमुक
 मुहुर्तेऽमुक समयेऽमुकराशिस्थितेरवौऽमुकरोशिस्थिते चन्द्रेऽमुकराशि
 स्थितेभौमेऽमुक राशिस्थिते बुधेऽमुकराशि स्थिते देवगुरौऽअमुक
 राशिस्थिते शुक्रेऽमुकऽराशिस्थिते शनौऽअमुक राशिस्थिते केतौऽमुक
 राशिस्थिते राहौ एवं गुण विरोपेण विशिष्टायां अमुकऽतौऽअमुक
 मासेऽमुक पक्षेऽमुकतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुक राशिः ॥ अमुक
 नामाहं ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा संचितानां पातकानां ब्रह्महन्तन
 मध्यपान सुवर्णस्तेय गुरुतल्प गमनतत्संसर्गकरूप बुद्धि पूर्वकानां
 मनोवाक् काय कृतानां महापातकानां बहुकालाभ्यस्तानां उपपातकानां
 स्पृष्टास्पृष्ट सकरीकर्ण अपात्रिकर्ण जाति भ्रंश करण रसविक्रय
 गोविक्रय खरोष्ट्र महिषी विक्रय अजादि पशु विक्रय ब्राह्मण दुर्भाषण
 निरर्थकद्रुमच्छेदनचमानया कर्ण ब्रह्मस्वहरण जाति भ्रंश करण
 रविदेवराज स्वापहरण ब्राह्मणनिन्दा वेदनिन्दा शिवनिन्दा अभक्ष्य
 भक्षणं अभोज्यभोज्यं अचोष्याऽऽचोषणं अपेयापानं अस्पृश्य स्पर्शनं
 अश्राव्यस्य श्रवणं अघ्ने याघ्राणम् अहिंस्याऽऽहिं सनम् अवन्ध्याऽऽवन्धनम्
 अचिन्तचिन्तनम् अयाच्याऽऽयाचनम् अपूज्यपूजनम् व्यतिक्र
 मातृपितृतिरस्करणं स्त्री पुरुष प्रतिभेदनम् परस्त्रीगमनं पशुयोनि
 गमनं अयोनिबीज व्यापनम् कुटसाक्षित्वा माद मिथ्यापवाद परद्रोह
 पर हानि चौर्य करणं म्लेच्छसं भाषणम् म्लेच्छसंज्ञासनम् ब्रह्म द्वेषणं
 स्वामी भेदनं मित्र ध्वननम् भार्यानिन्दनम् गर्भपातनम् रजस्वला
 मुख्वास्वादनम् निषिद्धकालमैथुनम् दासीगमनं वैस्या गमनम् सम्भाषण
 स्पर्शनम् परात्र भोजनम् क्रमुपात्र पात्र भोजनम् गणिकात्र भोजनम्
 निकृष्टान्नभोजनम् पंक्ति भेद कर्म त्विसहभोजनम् परशेष भोजनम्
 लघुशूल सुदमण पर्वकराहु केतु पराग निमित्त कुरुक्षेत्राधिकरण
 क्षेत्रीय संग दानक सुवर्ण मारदान जन्य फल दश गुण विध्वंशदानक
 गङ्गास्नान फल सहस्र गुण फल प्राप्ति कामः श्रुतिस्मृति वेद
 पुराणोक्त समस्त फल प्राप्त्यर्थं पूर्वोक्त प्रायश्चित्तानि निश्चित पूर्वकं
 पश्चिमवाहिन्याः श्रोगङ्गायाः चैतस्याः सचैतं स्नानमहं करिष्ये ॥ इति
 स्नात्वा तत्प्रार्थना०—॥ महापापो पपापंच नानायोनिषु यत्कृतम् । बाल
 भावादिक पापं पर द्रोहादिकौस्तथा ॥ १ ॥ देहादिः मानसं पापं
 सर्वदायन्मया कृतम् । भूतभक्ष्यं भविष्य च पापेदं देहवन्धनम् ॥ २ ॥ तस्मा
 दशेष पापोधान् किल्बिषपाशतयावह्नि, शरणागत दीनार्थं स्नादिजाह्ववि-

सर्वदा ॥ ३ ॥ गतंपापगतं दुःखं गतं मे व्याधिबन्धनम् ॥ निस्पापाष्ट-
घुनादेवि प्रसादातवनान्यथा ॥ ४ ॥ उचीर्ष्यं घौतवासांसि परिधाय
स्नान वासांसि ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ सन्ध्यावन्दननित्यकर्मादिकं कृत्वा ॥

ततो गङ्गां पूजयेत् ॥ गणपतिं नमस्कृत्य—अर्घ्यसंस्थाप्य आचप्य
प्राणायामं कृत्वा अद्येत्यादि अमुकोर्हं सकल पापक्षयपूर्वकं ।
श्रुविस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ते यथो पमिलित सालंकारैः श्रीगङ्गापूजन
महं करिष्ये ॥ ध्यानमृशितकर निपण्णां शुभ्रवस्त्रां त्रिनेत्रां, कलघृत
कलशोद्य सातरला भोत्यभीष्टाम् विविहरि रूपांसि सिन्धु कोठार चुर्वा
कलितसिनदुकूलां जाङ्घवी त्वां नमामि ॥ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वा
वयव शोभिताम्, रक्त कुम्भा सितां भोजां वरदो नलसत्कराम्, सीत
वद्भोपरीधाना मुक्तामणि त्रिमुपिताम्, एवं तत्सु सौम्यां च चन्द्रायुत
समप्रमान् ॥ २ ॥ इति ध्यात्वा गङ्गायै नमः आवाहनम्, आसनम्
भापस्नानम् मधुपर्कम् आचमनीयम्-धत्तम् सर्वं मूपादिद्वैः स्त्रीम्यैलोक
लज्जा निवारकैःममो पपादितैर्षस्त्रैस्त्रसन्ना भवमातरः ॥ पूषम्वरगङ्गां
गुग्गुलं धूपं सुगन्धिं मुमनोहरम्, आच्येथं सर्वं देवानां गृहाण
परमेश्वरि ॥ दीपम् ॥ महाण मङ्गलं दीपं घृतवर्तिं समन्वितम् ।
रुद्रनेत्रं नमोस्तुभ्यम् ब्रह्म भूर्ति नमो नमः । अथ नैवद्यम् ॥ नैवद्यं
गृह्यतां देवि नानाभक्ष्यसमन्वितम् मयोपपादितं देवि नैवद्यं प्रति
गृह्यताम् ॥ ताम्भूलम् ॥ अथद्वादश नामभिर्गङ्गां पूजयेत् ॥ ॐ नमो
भगवत्यै नमः ॥ ॐ नमो नारायण्यै नमः ॥ ॐ नमो हरायै नमः ॥
ॐ नमो गङ्गायै नमः ॥ ॐ नमो विरवमुखायै नमः ॥ ॐ नमो मृतायै
नमः ॥ ॐ नमो दहायै नमः ॥ ॐ नमः शिवायै नमः ॥ ॐ नमोरेवत्यै
नमः ॥ ॐ नमः प्रृत्यै नमः ॥ ॐ नमो नन्दिन्यै नमः ॥ ॐ नमः ॥
स्तारायै नमः ॥ इति द्वादश नामभिः सम्पूज्य अथ प्रार्थना-परदार
परद्वयपरद्रोहोपुमेमति त्रिपरसुमा भवेद्ब्रह्मे प्रसादा तव सुप्रते ॥
अर्घ्यं दद्यात् ॥ ततो मङ्गलम् ॥ अथाऽमुकोर्हं सकल पापक्षय द्वारा
श्रीगङ्गाया पूजनस्य सांगण्यं प्राप्स्यथं मिदं सुवर्णंऽमुकतीर्थवासिने
ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे अभिषेकपाठादिकं कुर्यात्

ॐ इति गङ्गापूजनम् ॐ

अथ स्यस्ति पापनम् ।

ओं स्यस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्यस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्यस्तिनस्तादर्यो अष्टि नेमिः स्यस्तिनो वृद्धस्पतिर्दधातु ॥ ॐ पयः
पृथिव्यां पय ओपयीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयन्वतिः प्रदिराः

सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्तेस्थो विष्णो
 स्यूरसि, विष्णो ध्रुवोसि । वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्नि
 देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता
 रुद्रो देवता मरुतो देवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिदेवतेन्द्रोदेवता
 वरुणोदेवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं ३ शान्ति प्रथिवी शान्ति
 राप शान्ति रोपधय शान्ति वनस्पतय शान्तिविश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्मशान्ति
 शान्ति रेव शान्ति सामाशान्तिरेधि । विश्वानि देव सवितुदु रितानि
 पराशुव । यद्भद्र तन्न आसुव ॥ शान्ति , शान्ति , शु शान्ति । भवतु ॥

गणेश पूजनम्

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णक । लम्बोदरश्च विकटो
 विघ्ननाशो गणाधिप । धूम्रकेतुर्गणध्वजो भालचन्द्रो गजानन ।
 द्वादशैतानि नामानि य पञ्चेच्छृणुयादपि । विद्यारम्भे विवाहे च
 पवेशे निर्गमे तथा । सप्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
 शुक्लाम्बरधर देव शशिवर्ण चतुर्भुजम् । प्रसन्न वदन ध्यायेत्
 सर्वविघ्नोपशान्तये । "अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितोय सुरासुरै ।
 सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नम । सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे
 सर्वार्थ साधिके । शरण्या त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमो ऽस्तुते ।
 सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषा हृदिस्थो भगवान्
 मङ्गलायतनो हरि ॥ तदेव लग्न सुदिन तदेव तारावल चन्द्रवल
 तदेव विद्यावल दैववलतदेवलक्ष्मी पते तेडि च युग स्मरामि ॥ लाभम्पेपा
 जयस्तेषा कुतस्तेषा पराजय । येषामिन्दि वरश्यामो हृदयस्थोजनार्दन ॥
 यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्यो धनुर्धर ॥ तत्र श्रीविजयो भृति ध्रुवा
 नीति मतिर्मम ॥ सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वरा ।
 देवादिरान्तुन सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दन । विनायक गुरु भानु ब्रह्म
 विष्णु महेश्वरान् सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्याय सिद्धये ।—श्री
 इति गणेश समीपे हस्तस्थ दुर्वाक्षत पुष्पाणि सस्थाप्य ॥
 तिलकुशन्तान्या दाय ॥ सङ्कल्पम् ॥ ॐ नम परमात्मने पुराण
 पुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया ।

प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे श्रीरेतवाराह कल्पे
 वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे
 भरत खण्डे भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे हिमवत्पर्वतकदेशे
 वेदारखण्डान्तर्गत मुमेरु दक्षिण पार्श्वेऽलकनन्दा मन्दाकिनी
 ममीपे पट्टि सम्बत्सराणा मध्ये अमुक नाभि सम्बत्सरे अमुकाऽयने

अमुक ऋषी अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ
 अमुक नक्षत्रे अमुक राशिरिवते चन्द्रे अमुक राशिरिवते श्री सूर्ये
 अमुक राशिरिवते देवगुरौ शेषेषु प्रहेषु यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु
 सन्तु एव गुण विशेषेण विशिष्टायाराभपुरय्य तिथौ (ममाऽत्मन)
 श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं [मम ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् ।
 प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल सरक्षणार्थम् । सकल मनईप्सितकामना
 ससिद्धयर्थम् । लोके वा सभाया राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय
 लाभादि प्राप्त्यर्थम् । इहजन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरितोपशमनार्थं ॥
 तथा च मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सप्राण्वस्य अग्निज कुटुम्ब सहितस्य
 मपशो संमस्त भय व्याधि जरा पीडा मृत्यु परिहार द्वारा आयुरारोग्यै
 श्वर्याभिवृद्धयर्थम् तथा मम जन्म राशेरग्निज कुटुम्बस्य वा जन्म
 राशौ सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादशस्थान स्थितकूर प्रहारतै
 सूचित मूचयिष्यमाण च यत्सर्वारिष्टतद्विनाशद्वारा एकादश- स्थान
 स्थित बच्चुभ भल प्राप्त्यर्थम् । पुत्रपौत्रादि सन्ततैरविच्छिन्न वृद्धयर्थम् ।
 आदित्यादि नवप्रदानुकूलता सिद्धयर्थम् । तथा इन्द्रादि दशदिक्पाल प्रस
 नना सिद्धयर्थम् । अविदेविकाऽधिभौतिकाऽध्यात्मिक । त्रिविध तापो
 पशमनायम् । धर्मार्थं काम मोक्षलाभावाप्त्यर्थं च । ॐ भूर्भुव स्व
 अमुक कर्मणि धर्मार्थकाम हेतरे (अमुक पञ्चायतन देवता प्रीत्यर्थं)
 गणपत्यादि देवता प्रीतये । एवमेव कलशस्थापन पुण्याह पावन
 कर्मणि वरादी कार्यं निविनार्थं गणपति पूजन करिष्ये ।
 (इति सङ्कल्प) शुद्ध मानसैरैकचित्तै ।—हे हे रम्ब त्वमे ह्येहि
 अभिरता शश्वत्कालेन सिद्धि बुद्धिपते यज्ञतज्ञ लाभ पितु पित ॥
 नागम्य नाग हात्य गणराज चतुर्भुज । भूपित स्वायुधैर्दिव्यै
 पाशाशुश परवधै आराह्यामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतो ।
 इहागत्य गणराज्य पूजाकर्तुं श्व रनमे ॥ आवा ह्येव गणेशन्तम् ।
 पूजात्रयं प्रपूजयेत् ॥ पनन्ते देव सपितर्यज्ञ प्राहर्षुं हस्पतये । प्रहृषेतेन
 यज्ञ मद्य तेन यज्ञपति तेन मामर ॥ मनोजूतिजुपता माज्यस्य
 वृहस्पतियज्ञमिमत्नो त्वरिष्ट यज्ञ ॥ समिम दधातु । विश्वे देवामह
 मात् यन्नामो प्रीतिष्ठेति प्रीतिष्टाप्य । ॐ गणगान्धेते अन्नापति
 ऋषियंजु ० छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने विनियोग ॥
 ॐ गणानात्त्रा गणपति ॥ इशामहे प्रियाणान्त्रा प्रियपति ॥ इशामहे
 त्रिरीतात्रा निधिपति ॥ इशामहे वसो मम आहृषन्तानिगर्भघमात्य
 मन्नाभि गर्भघम् । ॐ भूर्भुव स्व गणपते इहागन्देति । अधासनम्—
 गुणुग्राय नमस्तुम् गणाधिपतये नम । गणागामनमीशत्र विघ्नपुच्छं

निवारय । ॐ पुरुष ऽः एवेद् ६ सख्यदभूतं च्चभाव्यम् । उतामृत
 च्चस्ये शानोयदन्ने नाति रोहति ॥ इति आसनम् समर्पयामि ॥
 पाद्यम्—उमापुत्राय देवाय सिद्धम् वन्द्यायते नमः । पाद्यं गृहाण देवेश
 विष्णुराज नमोस्तुते । ॐ एतावानस्य महिमातो जयायोश्च पुरुषऽ-
 पादोऽः । स्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि । इति पाद्यम्
 समर्पयामि । अथार्घ्यम् । एकदन्त महाकाय नगयशोपवीतक ।
 गणाधि देव देवेश गृहाणार्घं नमोस्तुते । ॐ त्रिपा दूर्द्धऽऽद्वैत्पुरुषऽ-
 पादोस्त्येहा भवत्पुनः ऽः । ततो विष्वक्व्यक्रामत् साशना नशनेऽभि
 ॥ २४ ॥ इति अर्घ्यम् । समर्पयामि ॥ अथ आचमनम् । मर्वतीर्थ
 समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर
 ॐ ततो विवराद् जायत विवराजोऽअधि पुरुष ऽऽसजातोऽअ
 षपरिष्यत परचाद्भूमिमयो पुर ऽः ॥ २५ ॥ आचमनीयं समपयामि
 ॥ अथ स्नानम् ॥ गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः ।
 स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्वमे ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा
 त्सर्व्वहुत ऽः सम्भृतमृषदा ज्यम् पशून्तांश्चक्रे वायव्या
 नारण्याग्राम्या श्वये । इति स्नानं समर्पयामि ॥ [अथ स्नेपकम्]-
 अथ पञ्चमृतास्नानम्—(एक मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम् । पयोदधिघृतं
 चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
 ॐ पञ्च नद्य ऽः सरस्वतीमपि यन्ति स स्रोतस ऽः । सरस्वती तु पञ्चधा
 सोदेशोभवत् सरित् ॥ २७ ॥ इति पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि । पञ्चामृत
 स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समपयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम्
 समपयामि । अथवा पृथग्मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम् ।—सत्र पयः
 स्नानम्—कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः
 स्नानार्थमर्पितम् ॥ ॐ पय पृथिव्याम्पयऽओपधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
 पयोधा ऽः । पयस्वती ऽः षडिदिशः सन्तु मह्यम् । इति पयः स्नानं
 समर्पयामि । पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक
 स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ दधिस्नानम्—(पयः सन्तु समुद्भूतं
 मधुराम्ल शशिभम् । दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ
 दधिकृत्वाणोऽअकारिपञ्चिणोऽरश्वस्य व्याजिद् ऽः सुरभिर्नो मुग्धाकर
 ऋ प्रणऽभ्यायु ६ पितारि पन् ॥ २६ ॥ इति दधिस्नानं समर्पयामि । दधि
 स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं
 समर्पयामि ॥ अथ घृतस्नानम् । नवनीतं समुत्पन्नं सर्वं मन्तोपकारकम् ।
 घृतं नुम्यं पदायामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ घृतमग्निदे ।
 घृतमस्ययोनि घृतेभिर्नोऽघृतम्वस्ययाम अनुत्पद्यमा यद् मादयस्य रयाह

कृतं वृषम वृत्तिद्वयम् ॥३०॥ इति घृतस्नानं समर्पयामि-घृतस्नानान्ते
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
(अथ मधुस्नानम् ॥) तत्र पुष्प समुद्भूत सुखाद्गु मधुरमधु । तेज
पुष्टिर्दिव्यं म्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ मधुव्वाताऽश्रुताय ते
मधुचरन्ति सिन्धवऽ माद्वीर्न्तऽ सन्त्वोपधीऽ ॥ ३१ ॥ मधुनक्त
मुतोपसो मधु मत्वारिधेऽ रज - मधुदधोरस्तु नऽ पिता ॥ ३२ ॥
मधु मान्नो व्वनस्पति र्मधुमा २ऽ अस्तु सुर्वऽ माद्वीर् गावो भवन्तु
नऽ ॥ ३३ ॥ इति मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं-
समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ अथ
शर्करास्नानम्-इक्षार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका
दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥-ॐ अथा ७ रसस्य पीरभस्त वऽ
गङ्गाम्भ्युत्तममुपयाम गृहीतो मीन्द्रायत्त्रा जुष्टं ह्यम्येष ते योनिरिन्द्राय
त्त्राजुष्टतमम् ॥ ३४ ॥ ॐ मूर्ध्व एव गणपति देवताभ्यो नम
शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं
समर्पयामि । -अथ गन्धोदक स्नानम्-मलया चलसम्भूत चन्दनागर्भ
सम्भवम् । चन्दन देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ -ॐ गन्धद्वारा
दुराधर्षा नित्य पुष्टा करीपिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूताना तामिदोपह्वये
श्रियम् ॥ ३५ ॥ (लक्ष्मा सुक्त मन्त्र)- मूर्ध्व स्व श्रीगणपति
देवताभ्यो नम पष्ट गन्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ पष्ट गन्धोदकस्नानान्ते
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
-अथ उद्वर्तन स्नानम् ॥-नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दन रजनीयुतम् ॥
उद्वर्तन मया दत्त स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ अ ७ सुनाते । ७ शुऽ
श्च्यनाम परुषा परु । गन्धस्ते सोम भवतु मदाय रसोऽ अर्च्युतऽ
॥ ३६ ॥ ॐ मूर्ध्व स्व श्री गणपति देवताभ्यो नम चद्वर्तन स्नानं
समर्पयामि ॥ उद्वर्तन स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक
स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥ तत्र पञ्चासृतादि स्नानान्ना पूजा-
ॐ मूर्ध्व स्व श्री गणपतिदेवताभ्यो नम -यस्तोपस्त्रार्थं अक्षतान्
समर्पयामि । यज्ञोपशीतार्थंऽक्षतान् समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । नाना
पगिमल सोमाद्यं द्रव्याणि समर्पयामि । धूप दर्शयामि दीप दर्शयामि ।
-शर्करोपहार नैवेद्यम् ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अघानाय स्वाहा । ॐ
ध्यानाय स्वाहा । ॐ ममानाय स्वाहा । ॐ उद्वर्तनाय स्वाहा ॥ नैवेद्य
समर्पयामि । नैवेद्यान्ते हस्त प्रक्षालनार्थं मुद्ग प्रक्षालनार्थं जलसमर्पयामि
करोद्वर्तनार्थं पुगीकृत ताम्बूलं समर्पयामि । हिरण्यमुद्राक्षिणा
समर्पयामि कपर्दाक्षिण्य दर्शयामि । प्रक्षिणा समर्पयामि । मन्त्र पुष्प

युक्त नमस्कारं समर्पयामि ॥ विशेषार्घ्यं-रत्न रत्न गणाध्यक्ष रत्न त्रैलोक्य
रत्नकः । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् । वरद त्वं वरं देहि
वाञ्छितं वाञ्छितार्थद । अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥
प्राथनां समर्पयामि ॥ अर्पणम्-अनेन षड्वाभृतादि स्नानाङ्ग भूतपूजा-
कृतेन ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतिदेवता प्रीयन्तां नमम ॥ (निर्माल्यं
विसृज्य) पुनश्च (पञ्चायतन) गणपतिदेवताम्यो गन्धाक्षुपुष्पाणि
समर्प्य ॥ -सत्र यथा-हरिः ॐ-ॐ सइस्त्र शीर्षां ॥ ३३ ॥ पुरुषऽप०
॥ ३४ ॥ एतावनास्य० ॥ ३५ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽ० ॥ ३६ ॥ ततेविराड०
॥ ३७ ॥ तस्माद्यज्ञान्तस० ॥ ३८ ॥ तस्माद्दृष्ट्याऽऽसर्व्वहुतऽऽद्य च ऽः
सामानि जज्ञिरे । ह्यन्दा ॐ सि जज्ञिरे तस्माद्दृष्ट्युतस्मादजायत ॥ ३ ॥
तस्माद्दृष्ट्याऽ अजायन्त ये के चोभयादत्तऽःगावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा-
ज्जाताऽ अजावय ः ॥ ४० ॥ तंयज्ञम्वर्हिषि प्रौक्तन्नपुरुष ङ्जातमग्रत
ऽः । तेन देवा ऽः अजयन्तसाद्धयाऽऽऋपयश्चये ॥ ४१ ॥ यत्पुरुषं
व्यदधु ऽः कतिधाव्यकरूपयन् । मुखाङ्गिमस्यासीत्किम्वाहू किमूरुपादाऽ-
उच्येते ॥ ४२ ॥ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्वाहू राजन्य कृत ऽः उरुतदस्य
यद्वैश्य ः पद्भ्या ॐ शुद्रोऽअजायत ॥ ४३ ॥ चन्द्रमा मनसो
जातश्चक्षुः ऽः सूर्योऽअजायत श्रोत्राद्वायुश्चष्माणश्च मुखाद्ग्निरजायत
॥ ४४ ॥ नाम्न्याऽऽसीदन्त रिक्त ॐ शीर्षोर्द्वयोऽ समवर्त्तत ।
पद्भ्याम्भूमि र्दिश ऽः श्रोत्रा तथा लोको र्नाऽ अकल्पयन् ॥ ४५ ॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । व्वसन्तो स्यासी दाज्यङ्ग्मीष्मऽ
इष्म ऽःशरद्धवि ऽः ॥ ४६ ॥ सप्तास्या सन्पारिधया स्त्रिऽः सप्त समिध
ः कृता ऽः । देवा यद्दधन् तन्वाना ऽः अबव्दन्पुरुषम्पशुम ॥ ४७ ॥
यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाक
म्महिमान ः सचन्त यत्र पूर्वं साद्धया ऽः सन्ति देवा ऽः ॥ ४८ ॥ स
च यथा-ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्ति ः पृथिवी शान्तिराप ऽः
शान्तिरोपधय ऽः शान्ति ः व्वनस्पतय ऽः शान्तिर्विश्वे देवा ऽः
शान्तिर्व्रक्ष शान्ति ऽः सर्व्व ॐ शान्ति रेव शान्ति ऽः सामाशान्तिरेधि
॥ ५० ॥ यतो यत ऽः समोहसे ततो नोऽअभयङ्करु शन्नः कुरु प्रजाभ्यो-
मयन्न पशुभ्य ः ॥ ५१ ॥ ॐ सर्वेषां वाऽप्य वेदाना ॐ रसोयत्साम
सर्वेषामेवैनमेतद्देवाना ॐ रसेनाभिपिच्छति ॥ ५२ ॥ (ब्राह्मणमन्त्रः) ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः सुरान्तिर्भवतु । ॐ अमृताविपेकोऽस्तु ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः श्रीगणपतिदेवताम्यो नमः अभिपेकं समर्पयामि । (इति
क्षेपकम्) ॥ पश्चात् देवतीर्थं धृत्वा । ततो देवायाचमनम्-ॐ केरावाय
नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा-

इत्याचमन्तं समर्पयेन् ॥ हस्तप्रक्षालनम् । ॐ गोविन्दाय नमः ॥ वस्त्रम-
 सरम्भूपाधिकं सोम्ये लोक लज्जा निवारणे । मयोप पादिते तुम्य वाससी
 प्रतिगृह्यताम् ॥ -तस्माद्यज्ञात्सर्वद्वेषः ऽ ऋचः ऽ सा० ॥ १२ ॥ ॐ
 भूर्भुव स्व श्रीगणपतिदेवताभ्यो नम वस्त्रं समर्पयामि । ५ वस्त्रा-
 भावेऽक्षतान् अथ यज्ञोपवीतम्-नवमिस्तनुभिर्मुक्तं त्रिगुण देवतामथ
 उपवीत चात्तगीय गृहाण परमेश्वर ॥)-ॐ वस्त्रादस्त्रवाः ऽ अ० ॥ ४३ ॥
 -ॐ भूर्भुव स्व श्रीगणपति देवताभ्यो नम यज्ञोपवीत समर्पयामि ॥
 यज्ञोपवीता भावेऽक्षतान्) ॥ अथ गन्धम्-ॐ (श्रीखण्ड चन्दन वि-थ
 गन्धाक्षत सुमनोहरम् तिलेपनसुरश्रेष्ठ चन्दन प्रतिगृह्यताम् ॥) ॐ
 तद्यज्ञमर्हि पिप्प्लीवन्पुरुष ज्ञातमग्रतः ऽ तेन दे० ॥ १५ ॥ ॐ भूर्भुव
 स्व गणपति देवताभ्यो नम गन्धम् समर्पयामि ॥ (अथ अक्षता ॥
 अक्षतारच सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्षा सुरोमिता । मया निवेदिता भक्त्या
 गृहाण परमेश्वर ॐ अक्षतमीमदन्वद्यवभियाः ऽ अपूपत । अस्तोपत
 स्वमातरोऽत्रिप्रानविष्णुयामतियो ज्ञान्निन्दते हरि ॥ १५ ॥ ॐ भूर्भुव
 स्व गणपति देवताभ्यो नम अक्षतान्समर्पयामि इति लेपकम् । अथ
 पुष्पाणि-माल्यादानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि
 पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यत्पुरुषं च्यवदधु० ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुव
 स्व गणपति देवताभ्यो नम पुष्पाणि (सोभाग्यद्रव्य सहित व)
 समर्पयामि ॥ (देवेभ्य गन्ध सोभाग्यद्रव्यादीनि अनामिकाङ्ग गुणेन
 अर्पयेन् अथ गणेशाय दुर्वाङ्कगर्गणम् ।-विष्णुवादि सर्वदेवाना दुर्गोर्ल
 प्रीतिदा मदा । चौरसागर सम्भूते दश वृद्धि करी भव ॥)-ॐ
 काण्डाहाहाहाहात्प्रोहन्ती परुषः ऽ परुषस्परि । पशानो दुर्वे प्यतनु
 सइसेण शतेन च ॥ १८ ॥ अथ धूपम् ।-अनस्यति रसोद्गतो गन्धान्यो
 गन्ध उत्तम आग्नेय सर्वदेवाना धूपोऽथ प्रतिगृह्यताम् । ॐ व्याघ्रणोस्य
 सुप्त मामी द्वाद्राजन्म्य - कृतः ऽ (नरु तदस्य० ॥ ६४ ॥-ॐ भूर्भुव
 स्व गणपति देवताभ्यो नम धूपं दशयामि ॥ अथ धूपपुरित नीराजन
 दीपम्-(आग्न्य च यति मयुज बद्धिना योजितं मया । दीप गृहाण देवेश
 प्रेतोक्व विमिरावह ॥ ॐ अम्बु मजमो० ॥ ६५ ॥ ॐ भूर्भुव स्व
 गणपति देवताभ्यो नम धूपं पूरित नीराजन दीपं दशयामि ॥ अथ
 नैवेद्यम्) मर्गराघृत मयुक्तं मधुरं म्वाहु चोत्तमम् । उपाहार समायुक्त
 नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । ॐ नाम्न्याऽऽमीदन्न रिक्तं ५ शी० ॥ ६६ ॥
 ॐ प्राणाय म्वाहा । ॐ अजाताय म्वाहा । ॐ व्यानाय म्वाहा । ॐ
 उदाताय म्वाहा । ॐ ममाताय म्वाहा । ॐ भूर्भुव-भोगणपति
 देवताभ्यो नम नैवेद्यं समर्पयामि । शिवेष्टान्नेषा नीयम्-(पलोरीर

लवङ्गादि कर्पूर परिवासितम् ॥ प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥)
उत्तरापोशन हस्त प्रच्छालनं मुखप्रच्छालनं आचमीनयं च समर्पयामि ॥
मुख वासार्थं ताम्बूलम् (पूगीफल महद्दिव्य नागवल्ली दलैर्युतम् । एला
चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूल प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ यत्पुरुषेण ० ॥ ६० ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः ॥ ताम्बूलं समर्पयामि (अथ
क्षेपक) फलं-इदं फल मयादेवस्थापितं पुरतस्तव । तेनमे सफला
वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । ॐ या ऽः फलिनीर्घ्या ऽ अफलाऽअपुष्पा
य्याश्वपुष्पिणी ऽः । बृहस्पति प्रसूत स्तानो मुञ्चन्त्व ३ हस ॥ ६१ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः फल समर्पयामि ॥ (दक्षिणा)
हिरण्य गर्भं गर्भस्थं हेम । वीजं विभावसोः । अनन्त पुण्य फलद मतः
शान्ति प्रयच्छमे ॥) ॐ हिरण्य गर्भं ऽः सम वक्तेतां प्रे भूतस्य जात ऽः
पतिरेक ऽ आसीत् । सदाधार पृथिवी न्यामुतेमाङ्क स्मै देवाय हविषा
विवधेम ॥ ६६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः दक्षिणा
समर्पयामि ॥ अथ-कर्पूरार्तिक्यम्-कदली गर्भसम्भूत कर्पूरं च प्रदीपितम्
आरार्तिक्यमह कुर्वे परम मे वरदो भव ॥ ॐ इदं ३ हवि ऽः पञ्च ननम्मे
ऽ अस्तु दशवीर ३ सर्व्वगण ३ स्वस्तये । आत्मासनि प्रजासनि
पशुसनि लोकसन्त्य भयसनि ॥ अग्निनीः ऽ प्रजाम्बहुलाम्मेकरो
त्वन्नम्पयो रेतो ऽ अस्मा सुधत् ॥ ७० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति
देवताभ्यो नमः कर्पूरार्तिक्य दर्शयामि ॥ (इति क्षेपकम् ॥) प्रदक्षिणा-
(यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
प्रदक्षिण पदे पदे ॥) ॐ सप्तास्या ० ॥ ७१ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
श्रीगणपति देवताभ्यो नमः आर्तिक्य सहितां प्रदक्षिणा समर्पयामि ॥ ० ॥
अथ मन्त्रः पुष्प युक्तो नमस्कारः ॥ (नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा
कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलि मया दत्ता गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यज्ञेन
यज्ञ ० ॥ ७२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपति देवताभ्यो नमः मन्त्र-
पुष्पाञ्जलियुक्तं नमस्कारं समर्पयामि प्रार्थना-विष्णेश्वराय वरदाय सुर
प्रियाय लम् गोदराय सरुलाय जगद्धिताय नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ [क्षमापनम् ॥] आवाहनं नजानामि
नजानामि तवार्चनम् । पूजां चैव नजानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ गतं पापं
गतं दुःख गतं दारिद्र्य मेव च-आगता सुप्त मन्पत्तिः पुण्याश्च तवदर्शनात् ॥
अन्यथा शरणान्ति त्वमेव शरणं मम तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परम-
ेश्वर ॥ मन्त्र हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं
तदस्तुमे ॥ यदक्षरं प्रदं भ्रष्टं नात्रादीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव
प्रसीद परमेश्वर (इति क्षेपकम्) अर्पणम्-अनेना वाहना सन पाद्यार्था

चमनीय स्नानवस्त्रो पवीत गन्धपुष्प धूप दीप नैवेद्यताम्यूल दक्षिणा
प्रदक्षिणा मन्त्र पुष्प रूपैः षोडशो पचारैः अन्योपचारैश्च यथा ज्ञानेन
यथा मिलितो पचार द्रव्यैः कृतेन पूजनारब्ध कर्मणा ॐ भूर्भुवः स्वः
श्रीगणपति देवताः प्रोयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सत् ऋत्विर्गणमस्तु ॥ (इति
श्रीगणपति देवता पूजनम्) ।

अथ भूतानिशुद्धि ।

कर्ता कर्मदिवसे प्रातस्त्रयाय स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य दीपाय
गन्धाक्षतपुष्पादीन् समर्प्य आषम्य पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्—

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रमत्तवदनं ध्यायेत्
सर्वविघ्नोपशान्तये । लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय । येषामिन्दी-
वरस्यामो हृदयस्यो जनार्दनः ॥ इति विष्णवे समर्पयेत् ।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकांति समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ २ ॥ इति गणेशाय समर्पयेत् । ततोऽर्चस्थापनं
कुर्यात्, गन्धादिना—

भूमौ त्रिकोणं कृत्वा चतुरस्रमण्डलं च लिखित्वा तद्गुपरि आसनम्
आसनस्योपरि पात्रम् पात्रस्योपरि पवित्रैःस्थो वैष्णव्यौ इति पवित्रं
निक्षिपेत् “शन्नोदेवीति जलम्” अथ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु
पीतये । शंभ्योरभिस्तवन्तु नः । इति जलेनापूर्य्य “गङ्गे च यमुने चैव
गोदावरि सरस्वति । नर्मदे मित्यु कायेरी जलोऽस्मिन् सन्निधिं कुरु,
इति अङ्कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्यं गन्धाक्षतपुष्पादि तूष्णीं निक्षिप्य
अर्धपात्रं सुसम्पन्नमस्तु ३ तेन जलेन आत्मानं करिष्यमाण श्रीसूर्यादि
पञ्चदेवपूजन कर्मणि निर्विघ्नता मिद्वये मम सकलमनोरथसिद्धयर्थञ्च
भागवतः सूर्यदेवस्य प्रीतये सूर्यदेवपूजा सामर्पी च सम्प्रोद्य प्राणायामत्रयं
विधाय पुण्डरीकाक्षाय स्मराम् ।

अथ ध्यानम्—ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती । नारायणः
सरसिजामरमन्निविष्टः । केयूरवान् भकरकुण्डलवान् किरीटी हारी
द्विरणमयवपुर्धनशङ्खधरः ॥ १ ॥ ततः सूर्यमावाहयेत् “ॐ भूर्भुवः स्वः
ककिङ्कदेशोद्भव कार्यापगोत्र रक्तवर्णं भगवन् सूर्य्य इहागन्ध इह तिष्ठ
पूजार्थं स्वामावाहयामि इत्यावाह्य अर्पं दद्यात् । एहि सूर्य्य सहस्रारो
तेजोदारो जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्पं दिवाकर । ततो
गन्धाक्षतैः सूर्य्यं पूजयेत् । ॐ आकृष्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-
मृतमम्यं च । द्विरणमयेन मथिता रथेन देवो यानि मुपजानि परस्व इति

ॐ आदित्याय नमः इति मन्त्रेण च नीराजनान्तं सम्पूज्य । धूप दीपं
 नैवेद्यं पुष्पाणि च सूर्य्याय समर्पयेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ आदित्यं च
 नमस्कार ये कुर्यान्ति दिने दिने । जन्मान्तरसदृशेण दारिद्र्यं नोपजायते ।
 इति ध्यात्वा ततः सर्पपाक्षतैर्भूतोत्सादनं कुर्यात् ॥ अपक्रामन्तु भूतानि
 पिशाचः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे । अपस-र्पन्तु
 ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया,
 इति । निर्गच्छतां च भूतानां वर्त्म दद्यात् स्ववामतः । तालत्रयेण
 सर्वान्घ्नानुत्सार्य । पृथिव त्वयेति मेरुपृष्ठच्छपिः सुतलं छन्दः, कूर्मो
 देवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथिव त्वया धृता लोकाः देवि
 त्वं विष्णुना धृता । त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ ततो
 गन्धाक्षतपुष्पैः । ॐ आधारशक्त्यै पृथिव्यै नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ
 शोपनागाय नमः ॐ चित्तशक्तये नमः इत्यासनं सम्पूज्य पुनरर्घं संस्थाप्य
 च पूजासङ्कल्पं कुर्यात् 'गन्धादिना भूमौ त्रिकोणवृत्तं चतुरस्रं मण्डलञ्च
 लिखित्वा तदुपरि आसनं आसनस्योपरि पात्रम् पात्रस्योपरि पवित्रं
 पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ-इति निक्षिपेत् ।

शन्नो देवीति जलम् ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
 शंयोरभिष्टवन्तु नः । इति जलेनापूर्य्य गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि
 सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्नियं कुरु, इत्यङ्कुशमुद्रया
 तीर्थान्यावाह्य गन्धाक्षतपुष्पाणि तुष्णी निक्षिप्य अर्धपात्रं सुसम्पन्नमस्तु
 ३ तेन जलेन आत्मानं, करिष्यमाणं मुमुक्षुकर्मणि निर्विघ्नतया कार्य-
 सिद्धयर्थं सकलेषितसिद्धयर्थञ्च श्रीमहागणपतिदेवप्रीत्यर्थमिमां पूजा-
 सामग्रीञ्च सम्प्रेक्ष्य प्राणायामत्रयं विधाय पुण्डरीकाक्षाय स्मरणम् ।
 ततः प्रार्थनाभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलाभ्यां नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो
 नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः ।
 निर्विघ्नमस्तु ।

अथ गणेशार्धशीर्षम् ।

ॐ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं
 कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं र्त्तासि । त्वमेव सर्वं
 खत्रिदं ब्रह्मासि । त्व साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं
 वच्मि । अत्र त्वं माम् । अत्र भक्तारम् । अत्र श्रोतारम् । अत्र दातारम् ।
 अत्र धातारम् । अवान् चानमवशिष्यन् ॥ अत्र पश्चात्तात् । अत्र
 पुरस्तात् । अत्रोत्तरात्तात् । अत्र दक्षिणात्तात् । अत्र चौर्ध्वात्तात् । अवा-
 धरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङ्मयत्वं चिन्मयः ।

त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममय । त्वं सच्चिदानन्दो द्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं
 ब्रह्मसि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति ।
 सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽननोऽनित्यो नम त्वं चत्वा
 रिबाक् पदानि । त्वं गुणत्रयातीत । त्वं देहं त्रयातीत । त्वं काल
 त्रयातीत । त्वं वस्था त्रया तीत । त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् ।
 त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगिनां ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं
 विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं मिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म-
 भूर्भुवः स्वोम् । गणाधीनपूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तद्वनन्तम् । अनुस्वार-
 परत्वरः । अर्धेन्दुलसितम् । तारेणरुद्रम् पतत्त व मनुस्वरूपम् । गकार-
 पूर्णरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वाररचान्स्वरूपम् । बिन्दुरुत्तर-
 रूपम् । नादः सन्धानम् । स ॐ हितासन्धिः । सैषा गणेश विद्या गणक
 श्रुतिः । निचुद्गायत्री छन्दः । गणपतिर्देवता । ॐ न गणपतये नमः ।
 पद्मन्ताय त्रिदशै वक्रतुण्डाय वीमहि । तन्नोदन्ती प्रचोदयात् । एकदन्त
 चतुर्दन्त पाशमङ्कुशधारिणम् । रदन्त वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूपकध्वजम् ।
 रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तं गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः
 सुसूत्रितम् । भक्तानुक्रमितं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतञ्च
 मृदयादौ प्रकृते पुरुषात्परम् । एष ध्यायति यो नित्यं मयोगी योगिनां
 वर । नमो व्रतपतये नमो गणपतये नमः । प्रथमपतये नमस्तेऽस्तु लम्बो-
 दरायैः पद्मन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुनाय श्रीवरादमूर्तये नमः । एतदथर्व-
 शीर्षं योऽरीते । स ब्रह्ममूयाय कल्पते । स सर्वं विघ्नैर्न बाध्यते स
 सर्वं सुप्रमेचने । स पञ्च महापापात्प्रमुच्यते । माय मयीयानो दिवस
 कुन पापं नाशयति । प्रादरपीयानोरति कृतपापं नाशयति । सायप्रान्तं
 प्रमुञ्चानो अपापो भवति सर्वत्रा पीयानोऽप विघ्नो भवति धममर्थ
 कामं मोक्षञ्चविन्दति । इदमथर्वशीर्षमशिष्याय नरेयम् । यो यदि
 मोहाहास्यति । स पापिथान् भवति । मद्भ्रावर्तनाथ ये काममधीते स
 तमनेन सायेन् । अनेन गणपतिमभिषिञ्चति । स्वामी भवति ।
 चतुर्ध्यामनाश्चनरति । स त्रिद्यावान् भवति । इत्थर्वण वाक्पम् ।
 महापापराग्य विद्यान् विभेति कदा जनेति । यो दुर्गाङ्कुरैर्यजति । स
 वश्यं जीवमोभवति । यो लाजैर्यजति । स बाद्धित फलमयाप्नोति । यः
 सायप्रमेद्वियजति । स सर्वंलभते । स सर्वंलभते । ऋष्टी माहाणान्
 मध्यमाडिश । सूर्यं यजन्ती भवति । सूर्यं मद्दे महानथां प्रतिमा
 मन्त्रिणी । स त्रय्या । मिद्ध मन्त्रो भवति । महाविघ्नोत्प्रमुच्यते । महा-
 द्वापात्प्रमुच्यते महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते । स सर्वंविद्भवति । स सर्वं
 विद्भवति । य पर्येदे । इत्युपनिषत् । ॐ शान्ति शान्ति शान्ति । इति रा० ।

सङ्कल्प ।

ॐ विष्णुर्विष्णु विष्णुः श्रोमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्यत्रह्यणो द्वितीयेपार्षे भीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमै कलियुगेकलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे वेदारखण्डान्तर्गत-वद्रिकाश्रमेसुमेरु दक्षिणपार्श्वेऽलकनन्दा मन्दाकिन्योर्मध्ये (समीपे) पष्टिसंवत्सराणां मध्येऽनुकनामसंवत्सरे अमुकाऽयने अमुकशतौ अमुक-मासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषे विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रोत्पन्न-अमुकराशि अमुक शर्मा-वर्मा-गुप्तो वा-ममाऽत्मनः श्रतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् । अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थम् । प्राप्तलक्ष्म्यारिचरकालसंरक्षणार्थम् । सकलमन ईप्सितकामनासं-सिद्धयर्थम् । लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि-प्राप्त्यर्थम् । इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितो पशमनार्थं । तथा मम सभार्यस्य स पुत्रस्य सव्यन्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्व-र्याभिवृद्धयर्थम् । तथा मम जन्मराशेरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्ये केचिद्विरुद्धवतुर्थाष्टमद्वादशस्थान स्थितक्रूरप्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा एकादशस्थानस्थितवच्छुभ-फलप्राप्त्यर्थम् । पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्धयर्थम् । आदित्यादिन-वप्रहानुकूलतासिद्धयर्थम् । तथा इन्द्रादिदशदिक्पापप्रसन्नता सिद्धयर्थम् । आधिदेविकाऽआधिभौतिकाऽध्यात्मिकत्रिविध तापपशमनार्थम् । धर्मार्थ-काममोक्षफलप्राप्त्यर्थं च । ॐ भूर्भुवः । स्वः श्रीअमुकपञ्चायतनदेवता-प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथामिलि गोपचार द्रव्यैः पुरुषसूक्तेन ध्यानाऽवाह-नादिषोडशोपचारैः वा पूजनमहं करिष्ये ।

दीपकलशपूजनम् पुण्याहवाचनम् ।

ततः—अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिमाभिता ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ अप क्रामन्तु भूतानि पिशाचाः मर्षतो दिशाम् ॥ सर्वेषामविरोधेन शिवकर्म सभारमेन् । इति सर्पपाल-तान् विकीर्य, आत्मरक्षां शिववन्दनेन कुर्यान् । तत्र क्रमः ईश्वरपूजय नमः ।

पूर्वे ॥ आग्नेयेश्वराय नम आग्नेये ॥ यनेश्वराय नम ऋक्षिणे ॥ निरु-
वीश्वराय नम नैऋत्ये ॥ वरुणेश्वराय नम पश्चिमे ॥ वायवेश्व-
राय नम वायव्ये ॥ सोमेश्वराय नम उदीच्याम् ॥ ईशानेश्वराय नम
ईशाने ॥ आकाशेश्वराय नम ऊर्ध्वागाम् ॥ अनन्तेश्वराय नम पृथि-
व्याम् । सर्वेश्वराय नम । सर्वत ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ इति
मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् तत्र पूरके ॥ ३६ ॥ कुम्भके ॥ १२ ॥
रेचके ॥ १७ ॥ मन्त्रसत्या ॥ तत्र आचार्यं दीपकलशगणेशादीनां पूजां
कुर्यात् । तत्रकारश्च यथा अथ दीपपूजा । पृष्ठो दिशति प्रज्वाल्य,
ॐ पृष्ठो दिशि पृष्ठोऽग्निं पृथिव्या पृष्ठो विश्वा औपधोरानिवेश ॥
वैशानर महमा पृष्ठोऽग्नी सतो विश्वा सरिष एषातु नक्तम् ॥ नमो
स्तनन्तायेति पूजयेत् ॥ नमोस्तनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरो-
रुवाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाररते सहस्रकोटियुग धारिणे नमः ॥
नमस्ते इत्यादिनां प्रणमेत् ॥ नम कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ॥
नमस्ते केशानन्त वासुदेय नमोऽस्तुते ॥ वासनाह्लासुदेवस्य वासित भुवन-
त्रयम् ॥ सर्वभूतनिर्दामामि वासुदेय नमोऽस्तुते ॥ शुभं भवतु कल्याण
मारोग्य शुभमपद् ॥ सप्त शत्रुदिनाशाय वीरभ्योक्तिनमोऽस्तुते ॥ इति
दीपपूजा ॥)-अथ कलशास्थापनम् ॥ ईशानदिग्भागे ऽ अथ मुशोभित
वैजतं मृत्तमय वा कलशा घान्त्योपरि स्थापयेत् ॥ तत्रकारश्च यथा-
भूरमीति भूमिं मशोध्य ॥ ॐ भूमि भूमिस्त्यदितिरसि विश्वधाया
विरस्य सुभनस्य धर्मो ॥ पृथिवीं यच्छ्व इधिवीह ६ ह पृथिवी माह
६ सी वाग्धममीति घान्त्यं सत्याप्य ॥ ॐ वाग्यमसि विनुद्विदेना
न्प्राणायत्तरोदानायत्तवा ध्यानात्वा । दीर्घान्तुमितिमायुषेयान्तेरोव
सर्वना हिरण्यपाणि प्रतिगुम्पास्वन्त्रिंश्रेण पाणिना चदपेत्ता महीनां
महीना पयासि ॥ आन्त्रिमेति कलशं स्थापयेत् ॥ ॐ आजिन्न कलशां
मवात्ता निराश्विन्दन ॥ पुनर्जा निवर्ततासान महत्तंघुदरोरुधारा
पयस्वनी पुनर्मा विशता श्रिये ॥ इममे इत्यादिनां गङ्गे चेत्यादिना
पनीथत्तल प्रतिपेत् ॥ ॐ इममे घण्टश्रुधीहृदमशा च गृह्य ॥ त्वाम
यमुदाचके ॥ गङ्गे च यमुने चैव गेदापरि माश्रति । नमस्ते सिन्धु
काशेति जज्ञेभिमन्त्रियि कुरु ॥ या औपधी रिति सर्वोपधी प्रक्षिप्य ॥
ॐ या औपधी पूर्वा जाता येव्यग्नियुगं पुग । मनेनुषध्वा मरु ६०
शान धामानि भक्त च ॥ हिरण्यगर्भ इति पञ्चरत्नानि । ॐ हिरण्य
गर्भं ममयन्तामे भूतस्य तात पतिरेक आसीत् ॥ मदा गार उदियी-
न्तामुनेनाहृमैन्धाय ऋषिपा विषेम ॥ या फलिनी रिधि पत्रम् ॥
ॐ या फलिनीयां अक्षया अमुपाय पादेष पुणिनी ॥ पृथराति ममता

स्तानो मुञ्चन्त्व-ॐ हसः ॥ यवोसीति यवान् ॥ ॐ यवोसि यवया-
 स्मद्वेषो यवयागतोर्दिवेत्त्वान्तरिक्षायत्वा पृथिव्यै त्वाशुन्वन्तोऽलोकाः
 पितृसदनाः पितृपदनमसि ॥ गन्धद्वारामिति गन्धम् ॐ गन्धद्वारां
 दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपहृये
 श्रियम् ॥ कारुण्यकारुण्यप्ररोहन्ति परुषः परुषः स्वरि ॥ एवानो दुर्वे
 प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ स्योना पृथिवीति मृदः ॥ स्योना पृथिवि
 नोभवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्म सप्रथाः ॥ अश्वत्थेव इति
 पञ्चपल्लवैस्तन्मुखमाच्छद्य ॥ ॐ अश्वत्थेवो निपदनं पर्णे यो व
 सतिष्ठता ॥ गोभाज इतिकला सथयत्सनवथ पूरुपम् ॥ बृहस्पते इति
 ब्रह्मयुग्मेन वेष्टइत्वा ॥ ॐ बृहस्पतेऽअति यदयोऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतु
 मञ्जनेपु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
 उपमगृहीतोसि बृहस्पतये त्वैपतेयोनिर्बृहस्पतयेत्वा ॥ प्रजा-
 पतेनेति द्रव्यज्ञतैर्भूषित्वा ॥ ॐ प्रजापतेनत्वेता न्यन्यो विश्वारूपाणि
 परितावभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वय ॐ स्याम पतयो
 रयोणाम् ॥ पूर्णाद्वीति क्लशोपरि पूर्णपात्रं निधाय पूर्णाद्विं परापत
 सुगुणां पुनरापत ॥ वरनेव विक्रीणा वहा इपमूर्ज ॐ शतक्रतो ॥ तत्र
 तत्त्वायामिति वरुणमावाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥ ॐ तत्त्वायामि
 ब्रह्मणावन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्मिः ॥ अहं ह मानो वरुणेह
 वोदध्पुरुश ॐ समान आयुः प्रमौषीः ॥ तत्रैव सर्वे समुद्रा इति तीर्था-
 न्यावाहयेत् ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयान्तु
 यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ततः कलशं स्पृष्ट्वाऽभिमन्त्रयेत् ॥ कल-
 शस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ॥ मूले त्वस्य स्थितौ ब्रह्मा मध्ये
 मातृगणः स्मृतः ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥ ऋग्वे-
 दोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु
 सनाश्रिताः ॥ ततः कलशं प्रार्थयेत् ॥ देव दा नवसंवादे मध्यमाने
 महोदधौ ॥ उत्पन्नोसि तदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तो ये
 सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिता । त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि
 प्राणा, प्रतिष्ठिता ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
 आदित्या वसवो रुद्रा विरवेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि
 यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्नि-
 ध्यं कुरुमेदेव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

• ब्राह्मणयोग्यो नमः सम्पूज्य । अथेत्यादि० अमुकोहं मम अमुक-
 कर्मणि पुण्याद्वाचनारुच्यकर्म कर्तुमैमिर्वामोह गुलाव कासने बृहस्पति-
 देवतैरमुक्तोत्रान् अमुकसम्मणो ब्राह्मणान् पुण्याद्वाचकत्वेन युज्मान

वृणे स्वस्ति प्रतिषचनम् ॥ ॐ कारपूर्णे विप्रस्य भवेरपुण्याहवाचनम् ।
 ततोऽवनि कृतजानुमण्डल कमलमुकुलसदृश
 मञ्जलि शिरसा धारयेत् । दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूरुषकलश धारयित्वा
 अङ्गानि धारयित्वा अङ्गानि श्यशोत् । शिरसि मे सौभाग्यमस्तु मस्तके
 श्रीकान्तिरस्तु चक्षुषो सुतेजोस्तु श्रोत्रयो श्रवणेन्द्रियमस्तु इत्यङ्गानि
 स्पृशन् । ॐ दीर्घा नागानद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपद्मानि च । तेनायु
 प्रमाणेन पुण्य पुण्याह दीर्घमायुरस्तु । शिवा आप मन्तु सौमनष्य
 मस्तु अक्षत चारिष्ठम् चास्तु गन्धा पान्तु सौमगल्य चास्तु पुष्पाणि
 पान्तु सौश्रेयमस्तु । अक्षता पान्तु बहुदेय च नोस्तु शान्ति पुष्टिवृष्टी
 श्रीयशो निद्या विनयो बहु पुत्र चायुष्य चास्तु । य कृत्वा सर्व वेद
 यज्ञक्रिया करणकर्मा रम्भा शुभा शोभना प्रयतन्ते तमहमोङ्कार मार्दि
 कृत्वा ऋग्यजु सामाथर्वणाशीर्षचनं बहुश्रुतिसम्मत समनुज्ञात भवद्भिरनु
 ज्ञात पुण्य पुण्याहम् वाचयित्से, वाच्यताम् ॥ भद्र कर्णेभि श्रुणुयाम
 देवा भद्रं पर्येमाक्षभिर्यजत्रा । स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ६ सस्तनु भिन्त्यशे
 मदि देवहित यदायु ॥ ॐ देवानामत्रा सुमतिर्ऋजुयथा देवाना ६
 रातिरभिनो निवर्तताम् । देवानां ६ सख्यमुपसेदिमा यय देवान आयु
 प्रतिरन्तु जीवसे । दीर्घायुस्त ओपये खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम् ॥
 अयात्वदीर्घायुभूत्वा शत वरशापिरोहतात् ॥ न तद्रक्षा ६ सिन पिशाचा
 स्तरन्ति नेनानामोन प्रथमज ६ होतन् । यो विमर्ति दाक्षायण ६
 हिरण्य ६ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायु । ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तु-
 रस्यद्रविणोदा सनरस्य प्रय ६ सद् । द्रविणोदा वीरवती मिपनो द्रविणो
 दादा सने दीर्घमायु ॥ सविता परचात् सविता पुरस्तात् । सवितोत्तरातात्
 सवितावराचान् । सवितान सुयतु सर्वताति सवितानो रासता
 दीर्घमायु ॥ नमो नमो भवति जायमानोऽह्ना केनुरुपसामेत्यमम् ॥ भाग
 देवेषां निद्यात्याद्यन्प्रचन्द्र मास्तिरस्ते दीर्घमायु ॥ उच्चादिविद्
 विष्णानन्तो अस्थुष्यं अस्वदा सहने मूर्धेण । हिरण्यदा अमृतत्व भजन्ते
 यासोदा साम प्रतिरन्तु आयु । प्रतजपयम नियमतपस्थाभ्यायऋतुद्
 मनदानप्रशिष्टाना सर्वेषा ब्राह्मणाना मन समाधीयताम् ॥ समाहित
 मनस स्म । प्रमादन्तु भवन्त । प्रसन्ना स्म । शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तु
 तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु श्रद्धास्तु अविष्णमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु
 कमममृद्धिस्तु वेदममृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु इष्ट
 मन्पदस्तु ॥ ततो बहिरक्षतान् क्षिपेत् । अरिष्टनिरसनमस्तु । यत्पार्ष
 रोग शोऽहमकृष्याणातत्तद्दूरे प्रतिहतमस्तु । तत्र पुनर्मांर्षनम् । यद्यद्ये
 म्पदस्तु उत्तरे कर्मण्ययिन्न रम्भु मनरोत्तरमहरहरमिष्टिदास्तु । उत्तरोत्तरा

क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ॥ तिथिफरणमुहूर्तनक्षत्रप्रहङ्गना-
धिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सप्तहे सलग्ने सदैवते
प्रीयेताम् । दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीय-
ताम् । इन्द्रपुरोगा भरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः
प्रीयन्ताम् । महेश्व पुरोगाः अमामातरः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगाः
पतिव्रताः प्रीयन्ताम् । विष्णु पुरोगाः सर्वदेवा प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः
सर्ववेदाः प्रीयन्ताम् । आदित्यपुरोगाः सर्वेप्रहाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मच
ब्राह्मणारच प्रीयन्ताम् । श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामाहेश्वरी प्रीयताम् ।
भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती
तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विष्णुविना-
यकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुनदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वाभामदेवताः प्रीयन्ताम् ।
सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् । पुनरक्षताना षडिस्त्यागः । हस्ताश्च ब्रह्म-
विद्धियो हस्ताश्च परिपन्थिनः । हस्ताश्च कर्मणो विष्णुकर्तारः शत्रवः
पराभवं यान्तु शाम्यन्तु घोरानि शाम्यन्तु पापानि शाम्यन्त्वीतयः ।
पुनर्मार्जनम् । शुभानि वर्धन्तां शिवा आपः सन्तु । शिवा अतिथयः
सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा अतिथयः
सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवावनस्तयः सन्तु । शिवा ओपधयः
सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् । निकामे निरामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओपधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् । इति योग-
क्षेमो वै तत्र कल्पते यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते क्लृप्तप्रजानां योगक्षेमो
भवति ॥ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सोमसहिताः आदित्य-
पुरोगाः सर्वे प्रहा प्रीयन्ताम् । भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान्स्वामी
महासेनः प्रीयताम् । भगवान्नारायणः प्रीयताम् । पुण्यं पुण्याहं वाच-
यिष्ये ब्राह्मणा ब्रू युवाच्यताम् । ब्राह्मं पुण्यमहर्ष्यश्च सृष्टयुत्पालन-
कारकम् । वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ध्रुवन्तुनः ॥ भो ब्राह्मणाः मम
गृहे अमुक कर्मणि पुण्याहं भवन्तो ब्रू वन्तु ॐ पुण्याहं ॥ ३ ॥ पुनन्तु
मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदाः पुनीहि
मा ॥ पृथिव्यामुद्घृता यान्तु यत्कल्याणं पुरारुतम् । ऋषिभिः सिद्ध
गन्धर्वः तत्कल्याणं ब्रू वन्तु नः भो ब्राह्मणा मम गृहे अमुकर्मणि
कल्याणं भवन्तो ब्रू वन्तु ॥ ॐ कल्याणं ॥ ३ ॥ यथेमा वाचं कल्याणि
मावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्या ६५ शुद्रायचार्याय च स्वाय चार-
णाय च ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिदं भृत्यासमयं मे कामः समृद्ध-
यतामुपपादौ नमतु ॥ सागरस्य यथा ऋद्धिर्महालक्ष्यम्यादिभिः कृताः ॥
सम्पूर्णसप्रभावा च तां च ऋद्धिं भवन्तो ब्रू वन्तु ॥ ॐ ऋद्धयताम्

॥३॥ सप्तस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम । दिवम् पृथिव्या आध्या
 कदामाविदामदेवानस्वर्जोति । स्वस्तिस्तु याऽ विनाशाख्या पुण्यकल्याण
 वृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्य ताडव स्वस्ति ब्रु वन्तु न । भो ब्राह्मणा
 मम गृहे अमुककर्मणि स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ ॐ आयुष्मते स्वस्ति
 ॥३॥ ततो वरुण जलेनाम्रपल्लवगृहीतेन यजमान ब्राह्मण अभिपि
 ङ्चेयु ॥ ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्ध भवा स्वस्तिन पूषा विश्ववेदा । स्व
 स्तिनस्तादृषो अरिष्टनेमि स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । पय पृथिव्या पय
 ओपधीषु पयोदिप्यन्तरिक्षे पयोधा । पयस्वती प्रदिश सन्तु महम् ।
 त्रिष्टोत्रगणमसि विष्टोत्रनष्ट्रेष्टो विष्णो सूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि ॥
 वैष्णवमसि विष्टोत्रे त्वा । अग्निदेवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा
 देवता वसरो देवता बृहस्पति देवता रुद्रो देवतादित्या देवता मरुतो देवता
 विश्वेदेवा देवता इन्द्रो देवता वरुणोदेवता, मूर्धासिराड्ध्रु वासि-
 र्गणपयसि घरणीआयुषे त्वा वचंसेत्यः वृष्ये त्वा क्षेमाय त्वा ॥ ॐ यो
 शान्तिरन्तरिक्षे ५ शान्ति पृथिवी शान्तिराप शान्तिरोपधय शान्ति
 रनस्पतय शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं ५ शान्ति शान्ति
 रेव शान्ति सामाशान्तिरेधि ॥ विश्वानि देवसवित दुरितानि परासुव
 यद्भ्र तन्न आसुव इत्यभिषेक । ततो यजमानो वरुणदक्षिणासक्त्य
 कुर्यात् अद्येत्यादि अमुकोऽह ममामुककर्मण साङ्गफलावाप्तये तद्द-
 क्षिणार्थमिमामि सापस्कराणि सदक्षिणादिकानि तानि पूजितब्रह्मणेभ्यो
 विमज्य दातुमुत्सृजेत् ॥ इति ।

नान्दीमुख आह्वयविधिः ।

अथ नान्दीमुखआह्वयविधिः प्रारभ्यते ॥ तत्र तावद्वाह्ये मुहूर्ते
 उत्थाय, यथापदरा स्नान सध्यादि नित्यकर्म समाप्य पातरष्टो चतुरो
 वा ब्राह्मणान्निमजयेत् ॥ ततो वेद्या गणपतिसहिता गौर्यादिपडरा
 मानुषा गतिमाकृतपुञ्जलेपान्यतमेष्वधिष्ठानेषु स्थापयेत् ॥ तथाम् ॥
 कृष्ण प्रक्षालितकरचरण म्वासान्न सहस्रोपमदवाणि शुद्धासने
 प्राह्मुख उपविश्य कुरारययजलान्यादाय देराफाली सहृत्य ॥ ॐ
 अद्योमुककर्मोद्भूतगणपति सहितपोहपमापूजनमह् कृष्ये ॥ इति
 सक्त्यपयेत् ॥ तत पुनराह्वयानादाय ॥ ॐ गणानान्त्या गणपतिः
 इवामां पिय्याणान्त्या पिय्यपति ५ इवामहे निर्धनान्त्वानिधिपति ५
 इवामह् स्वामीमम ॥ आह्वयता निगर्भरमात्ममनामिगर्भराम ॥ ॐ
 धुर्भुव स्व गणपते इहावस्थ इह तिष्ठसि गणपति स्वापयेत् ॥ ५

प्रदक्षिण क्रमेण गौर्यादिस्थापनम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्गौरि इहागच्छ
इह तिष्ठ ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ २ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेवेइहा ॐ भूर्भुवः स्वः शचि इहागच्छ इह
तिष्ठ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्री हा ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः विजये इहा ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जये इहा ॥ ७ ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः देवसेने ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधे इहा ॥ ९ ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहे इहा ॥ १० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्मातर
इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ ११ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्लोकमातर इहागच्छत
इह तिष्ठत ॥ १२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः हृष्टे इहा ॥ १३ ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः पुष्टे इहा ॥ १४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्तुष्टे इहा ॥ १५ ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वदारमकुलदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
श्रीरिहागच्छ इह तिष्ठ ॥ १७ ॥ इति गणपति संहिता एता मातुः
प्रत्येकमोकारव्याहृतिपूर्वकं भावाद्यं स्थापयित्वा ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषता-
माज्यस्येति प्रतिष्ठां कृत्वा ॥ प्रणम्यदिनमोन्तेन स्व स्व नाम्ना षोडशोप-
चारैः पूजयेत् ॥ ततः केनचित्पात्रेण सगुडं विलीनघृतमादाय ॐ ऋसोः
पवित्रमसि शतधारं ऋसोः पवित्रमसि सहस्र धारं देवस्त्वा सविता
पुनानु ऋसोः पवित्रेण शत धारेण ऋवाः कामदुक्तः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण
मातृणामुपरि भित्तिलग्नः सप्त पञ्च वाधारारुत्तरोत्तरक्रमेण पातयेत् ॥
ताश्चपूजयेत् ॥ ततः ॐ आयुष्यं वर्षस्य ॐ रायस्योपमोद्भिदम् ॥ इह ॐ
हिरण्यं वर्षं स्व ज्जेत्राया विशताडुमाम् ॥ १ ॥ नतद्रक्षा ॐ सिन पिशाचा-
स्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ॐ ह्येतत् ॥ यो भिभर्ति दाक्षायण ॐ
हिरण्य स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २ ॥ यदावन्तन्दाक्षायणा हिरण्य
र्कः शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआवक्ष्णामि शत शारदायायुष्म ।
ऽज्जरदष्टिर्यथासम् ॥ ३ ॥ इति वृद्धि सूक्तं पठेत् ॥ अथ नान्दी श्राद्ध-
प्रयोगः ॥ तत्रादौ गोमयोपलिप्ते देशे श्राद्धसामग्रीं संपाद्य प्रागप्रकुशोत्त-
रेष्वा सनेषु प्राङ्मुखान् दक्षिणापेक्रमानुदगपवर्गान् पट्टदर्भवट्त्रेवेश्य
प्रत्यासनसमोपे तिलतैलेन दीप प्रज्वालयेत् ॥ ततः कर्त्ता प्रक्षालितकर-
चरणः स्यासने उदङ्मुख इषवेश्य सपवित्रोपकुशः सव्येन आचम्य
प्राणानायम्य ॥ सजघनं दक्षिणं जान्वा च्य ॥ ताम्बूनादिकमादाय ॥
ॐ अद्य करिष्यमाणामुक्तं कर्म निमित्तिकास्युदधिकं श्राद्धे अस्मन्मात्रा-
दित्रयश्राद्धसम्प्रथितः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः अनेन ताम्बूलादि

तीर्थं यात्रागमने-प्रादौघृतं श्राद्धंविधेयम् । यात्रान्ते गृहमागत्य-
पूर्ववत् दधि श्राद्धंविधेयम् ॥

द्रव्येण कुशरदुरूपा भवन्ती मया निमन्त्रिता ॥ ॐ आमन्त्रिता स्म ॥
इतिसर्पतो दक्षिणगत मात्रादिदेवदर्भं वदु निमन्त्रय एवमेव तदुत्तगौ
पित्रादि मातामहादि देवदर्भं वदु च क्रमेण निमन्त्रय तत ॐ अक्रोधनै
शौचपरैरिति पठित्वा स्वागतम् भवता सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ तत
पुनस्नाम्यूनादिप्रमादाय ॐ अद्यामुक्तगोत्राऽस्मन्मातृपितामही प्रपिता
मह्योऽमुकामुक देव्यो नान्दीमुख्य अनेन ताम्यूलादिद्रव्येण कुशरदुरूपा
भवत्यो मया निमन्त्रिता ॥ ॐ आमन्त्रिता स्म इति निमन्त्रय एवमेव
पित्रादिमातामहादि दर्भवदुद्वय क्रमेण निमन्त्रयेत् ॥ तत ॐ अक्रोधनै
शौचपरैरिति पठित्वा ॥ स्नागत भवताम् सुस्वागतमिति प्रार्थयेत् ॥ ततो
गन्धपुष्पादियुत पाद्य गृहीत्वा ॐ अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसम्बन्धिन
स्तयस्सुसप्तका विश्वेदेवा एतत्पादार्घ्यं व स्वाहा नम इति दत्त्वा एवमेव
पित्रादि मातामहादिदेव्योऽर्घ्यं दद्यात् ॥ पुन ओं अमुकगोत्राऽस्मन्माता
पितामही प्रपितामह्योऽमुकामुकदेव्यो नान्दीमुख्य एतत्पादार्घ्यं त्रेधा
विभज्य व स्वाहा नम इति मातृवर्गोऽर्घ्यं दत्त्वा, पित्रादिमातामहादि
वगद्वयऽर्घ्यं क्रमेण दद्यात् ॥ तत ओं अद्याऽस्मन्मात्रादित्रयसम्बन्धिन
स्तयस्सुसप्तका विश्वेदेवा व स्वाहा नम । इति मातृवर्गदेव्य आच-
मनाथं जल दत्त्वा एवमेव पितृवर्गमातामहवर्गदेव्योऽर्घ्याचमनं दद्यात् ॥
पुन ॐ अमुक गोत्रास्मन्मातृपितामहीप्रपिता मह्योऽमुकामुकदेव्यो
नाम्निमुख्य इदमाचमन त्रेधा विभज्य व स्वाहा नम इति मात्रादिभ्य
आचमन दत्त्वा, पित्रादिभ्यो मातामहस्यर्घ्याचमनं दद्यात् ॥ तत ओं
अत्रामध्यामेति पठेत् । इति निमन्त्रणम् ॥ तत कर्ता स्वपुरत कर्म-
पात्रं जलेनापूर्य गन्धपुष्पदूर्वादिधियक्करित कुशास्त्र निक्षिप्य ॥ ओं
कर्मपात्रं सम्पन्नमिति प्रयात् ॥ ओं सुसपन्नमित्यनुज्ञात ओं अपवित्र
पवित्रो वा० ओं पुण्डरीकाक्ष पुनात्विति पठित्वा कुशानीत जलेन आ-
न्धीपोपकरणानि प्रोक्ष्य ओं वैष्णव्यै नम ॥ ओं कार्श्य्यै नम । ओं
भूम्यै नम ॥ इति भूमिं सम्पूज्य ओं विष्णवे नम ॥ इति विष्णुं मनो-
वाक्कफायै नमस्कारं कुर्व्यात् ॥ ततो दूर्वाकुशाय वज्रान्यादाय ॥ देवा
काली महोत्थं ओं अद्यामुक्तगोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीना
ममुकामुर्देवीना नान्दीमुखीनाम् अमुकगोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपि
तामहनाममुकामुक्तरामेणा नान्दीमुख्यानाम् तथा च-अमुकगोत्रा
णामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानामुकामुक्तरामेणा सपत्नि
कानाममुक्कर्मनिमित्तं मयास्सुसप्तक- विश्वेदेवपूर्वकं सपिण्डकमां
शुश्रूषिष्वाहमं करित्ये इति संकल्प्य ॥ ॐ कुशप्रेतिप्राप्त्यानुज्ञात
समन्वयव्याहृष्टं गायत्रीं प्रोक्षित्वा विष्णुं स्मरेत् ॥ तत ॐ नमो

नमस्ते गोविंद पुराणपुरुषोत्तम ॥ इदं श्राद्धं द्विपीकेश रक्षता सर्वतो
दिश ॥ इति सर्वत्र यवान् गौरसंपवाश्च विकीर्य ॥ वाम कटि सलग्न
वस्त्रान्चले नीवींश्चनीयात् । ततः कृष्माण्ड सूक्तेन पावमानेन च
जलमभिमन्त्र्य तेन हरितैः कुशैः पार्कं प्रोक्षयेत् । अथासनादिदानम् ॥
तत्र तावदुदङ्मुखं कुशत्रयवज्रलान्यादाय ॥ ॐ अथाऽऽमन्मा-
त्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः सत्यवसुसहस्रका विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः
इति कुशत्रयरूपं सयव दक्षिणगतमासनं पूर्वाग्रमुत्सृजेत् ॥ एवमेव
पित्रादिमातामहादिदेवैः शोऽप्यासनमुत्तरोत्तरं दद्यात् ॥ ततः ॐ अथा
मुरुगोत्रास्मन्मातृपितामही प्रपितामहो नादीमुख्य इदमासनं त्रेधा विभज्य
व स्वाहा इत्युच्चार्य मातृवर्गे देवतीर्थेन पूर्वाग्रं कुशत्रयमुत्सृजेत् ।
एवमेव पित्रादिमातामहादि वर्गद्वयोरपि दद्यात् ततः ॐ सत्यवसुसहस्रक-
विश्वान्देवानावाहयिष्ये इति ब्रूयात् । आवाहय इत्यनुज्ञातं सयवकर ॥
ॐ विश्वे देवाः सऽत्रागतं शृणुतामऽइमं ॥ हवम् ॥ एदं वहिन्निपीदत
इत्यावाह ॥ ॐ यत्रोसि यवयास्मद्वेषो यत्रयारातीरित्यनेन यवान्विकीर्य,
ओं विश्वे देव शृणुतेमं ॥ हवम्मेयेऽ अन्तरिक्षेयऽ उपधविष्ठयेऽ अग्नि
जिह्वाऽ उतरायजत्राऽ आमद्याऽस्मिन् वहिंपिमादयध्वम् ॥ इति जपेत् ॥
निश्वेदेवोत्पत्तिनाम्नोरक्षाने ॥ आगच्छन्तु महाभागाविश्वे देवा महा-
वना ॥ ये यत्र योजिता श्राद्धे साधधाना भवन्तु ते ॥ इति श्लोक
पठेत् ॥ ततः ॐ नादीमुखीर्मातृरात्राहयिष्ये इत्युच्चार्य आत्राहयेत्य
नुज्ञातं सयवकर ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्यशन्त समिधीमहि । उशन्तु-
शतऽ आवहमातृर्हविषेऽ अत्तवे ॐ मातामहान्हविषेऽ अत्तवे इति मन्त्रो-
हेन यथा क्रमं पित्रादीन्मातामहादींश्चावाह ॥ प्रदक्षिणं यत्रान्विकीरेत् ॥
ततोदेवपूर्वकं पटसु स्वर्णादिपात्रेषु प्रतिपात्रं पवित्रं द्वयं पवित्रं वा निधाय
ॐ शन्नो देवीरभिष्ण्यऽ आपो भवन्तु पीतये ॥ शय्योरभिश्चवन्तुन ॥
इति प्रत्येकं पात्रेष्वपो निषिच्य ॥ ॐ यत्रोसि यवयास्मद्वेषो यत्रयाराती
रिति देवपात्रत्रयेषु यवान्निक्षिप्य यत्रोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनि-
र्मित ॥ प्रत्नमङ्घ्रिं प्रक्ष्णं पुष्टयाना दीमुखालोकान् श्रीणाहिन स्वाहा ॥
इति मन्त्रेण मात्रार्घ्यपात्रेषु यवान् क्षिपेत् ॥ तत्र सर्वत्र तृष्णीं गन्ध-
पुष्पाणि च दत्त्वा ॥ ॐ अर्घ्यपात्रं सपत्तिरस्तिवति ॥ अस्त्वर्घ्यपात्रसपत्ति
रित्यनुज्ञातो देवार्घ्यपात्रं भामहस्ते कृत्वा पवित्रे पलाशादिपात्रे पूर्वमे
विन्यस्य ॐ यादिव्या आप पयसा सवमूवुष्याऽ अन्तरिक्षाऽ उतपा-
र्थिवीर्या ॥ हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽ आप शिवा सर्तं स्योना
सुहवा भवन्तु इत्यभिमन्त्र्य कुशत्रयवज्रलान्यादाय ॥ ॐ अथाऽऽमन्मा-
त्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनः सत्यवसुसहस्रका विश्वेदेवा एव वोऽर्घ्यं नमः इति

जुहोमि स्वाहा इति ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढमस्य
पा ६ सुरे स्वाहा, इति च पठित्वा ॥ ॐ विष्णो हव्यं ठं रक्ष इत्यनया स्वा-
ङ्गप्र मयोमुखमनख मन्नेऽवगाह्यदमन्नम् इमा आपः-इदं माज्यम् इदं हवि-
रित्युक्त्वा ॥ ॐ अपहताऽअसुरा रक्षा ६ सिवेदिपद ॥ इति यवान् विकीर्य
वामकरेण पात्रं स्पृशन् कुशत्रयवजलान्यादाय ॐ अद्यास्मन्मात्रादि-
त्रयश्रावसम्बन्धिनः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा इदमन्न घृताद्युपस्कर-
सहितं परिविष्टं हव्यममृतरूपं वो नमः ॥ इति संकल्प्यासनदक्षिणा
भागे जलमुत्सृजेत् ॥ एवमेव पित्रादिमातामहादिदेवभ्योऽप्यन्नमुत्सृजेत् ॥
पुनः मात्रादिपात्रमालम्ब्य ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य
सुरेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा
निदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ६ सुरे स्वाहा ॥ इति पठित्वा, ॐ विष्णो
हव्यं ठं, रक्ष इत्यन्ने अङ्गुष्ठं निवेश्य ॐ अपहता इत्यन्नपात्रं परितो
यरांश्चिकीर्य वुशयवजलान्यादाय ॐ अमुकगोत्राऽस्मन्मातृपितामही-
प्रपितामहोऽमुकामुक देव्यो नान्दीमुख्य इदमन्न घृताद्युपस्करसहितं
परिविष्टं हव्यममृतरूपं त्रेधा विभज्य वः स्वाहा नमः इत्युत्सृजेत् ॥ एवमेव
पित्रादिपात्रं मातामहादिपात्रं च क्रमेण पात्रालम्भनादिपूर्वकं संकल्प्य
दद्यान् ततः ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्व-
मच्छिद्रमस्तु इति प्रार्थ्य नान्दीमुखान्मात्रादीन्ध्यायन् दैवपूर्वकं भोजन-
पात्रेषु किञ्चिद्विचिदपो दत्त्वा यथासुखं जुषस्वमिति श्रूयान् ॥ ततः प्राग-
प्रकुशोत्तरासनो प्रविष्टः प्रणवव्याहृति पूर्विकां सकृत्त्रिंशद्वा गायत्रीं
जपत्वा । ॐ मधु मधु मध्विति च जपेत् ॥ न मधुयाता इति व्यञ्चन
पितृमन्त्रान् ॥ ततः ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नं पृथ्वीं य्याहि राजेवामर्षो-
ऽश्मेन ॥ तृप्तीमनुप्रसितिन्द्र णानोस्तासिबिबद्धधरत्तसस्तपिष्टैः ॥ १ ॥
तत्रभ्रमासऽ आसुया पतन्त्यनुस्पृशधृपताः शोपुचानः ॥ तपू ६ द्यमे
जुह्वा पतङ्गा नसन्दितो विवस्तुज विष्णुगुल्फाः ॥ २ ॥ प्रतिस्पशो-
विसृत तृणितमा भवा पायु विंशो ऽ अस्या ऽ अदब्धः ॥ यो नो
दूरेऽ अवशर्तं, सोयो ऽ अंत्यग्ने मास्तिष्ठे व्व्यथिरा दधशान् ॥३॥ वदग्ने
तिष्ठ प्रत्या तनुष्वन्या मित्रां ऽऽ आपतास्तिग्महेते ॥ योनोऽअरातिठं,
समिधानं चक्रे नोचा तथक्षयत सन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्द्धोभयप्रतिविद्धया
स्मदा विष्णुगुण्य दैव्यान्व्यग्ने ॥ अवस्थिरा तनुहि या ॥ जूनाञ्जा मिम-
जामिप्रमृणीहि शत्रून् ॥ अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥ ॥ इति रक्षोऽन्न
सूक्तम् ॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ॥ पुनन्तु दिवश्वा,
भूतानि जातवेदाः पुनोहि मा ॥१॥ आप्यायन् समेतुते विश्वतः सोम,
वृष्यं भवा याजस्य सङ्गथे ॥२॥ शिरो मे श्रौर्यसो मुयं तिरयिः केताश्च श्म

श्रृणु ॥ राजा मे प्राणोऽ अमृतं, सम्प्राट् चतुर्विराट् श्रोत्रम् ॥३॥ जिह्वा
मे भद्र वाङ्महो मनो मन्यु स्वराट् भाम मोदा प्रमोदा ऽ अङ्गुली
रगानि मित्रर्मे सह ॥ ४ ॥ घाहू भेवलमिन्द्रियं ठं हस्तौ मे कर्म
वीर्यम् ॥ आत्मान्नत्रमुरो मम ॥ ५ ॥ पृष्टीर्मे राष्ट्र सुदरमठं, सौ श्रीवारश्च
श्रोणी ॥ ऊरु ऽ अरतिन जानुनी त्रिशोमेहानि सरित ॥ ६ ॥ नाभिर्मे
चित्त विज्ञानम्पायुर्मेऽ पचिति भसत् ॥ आनन्दनन्दा वाङ्मो मे भग
सौभाग्य पस जघाम्या पद्भ्या धर्मो ऽ स्मि विशि राजा प्रतिष्ठित ॥ ७ ॥
पय पृथिव्या पय ऽ ओपधोपु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा ॥ पयस्वती
पदिश सन्तु मह्यम् ॥ ८ ॥ इति पवमानसूक्तम् ॥ ॐ सहस्रशीर्षा
पुरुष इत्यादि षोडशर्चपुरुषसूक्तमन्यानि शिवसङ्कल्पप्रभृतीनि पवित्राणि
मङ्गलानि च जपेत् । तत सर्वव्यजनोपेतमन्त्रादय सयबमादाय वारिणा-
प्लाव्य प्रागप्रास्तुत कुशोपरि ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धा कुले
मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परा गतिमिति विकीर्य ॥ आचम्य
त्रिपणु स्मृत्या पुन किंचित्किंचिदपो दत्त्वा गायत्री मधुमधुमध्विति च
जपत्वा ॐ सम्पन्नमिति नूयात् सुसम्पन्नमित्यनुज्ञात पिण्डानहं करिष्ये ॥
इतिपृच्छेत् ॥ कुरुष्वेत्वा नुज्ञातो बालुकाभिरचतुरस्र प्राक्प्लव मुदक्प्लव
वा मण्डपत्रयं कृत्वा तन्मध्ये । ॐ अपहता ऽ असुरा रक्षाधिसि वेदिपद
इति प्रागर्ष रेखात्रयं कृत्वा प्रत्येकरेखोपरि, ॐ ये रूपाणि प्रतिगुह्य
मानाऽअसुरा सन्त स्वाहया चरन्ति ॥ परा पुरोनिपुरोये भरन्त्यग्नि
श्रौंल्लोकाऽऽप्रगुदात्यस्मादित्यगारान् भ्रामयेत् ॥ तत्र रेखात्रयोपरि समूलान्
प्राप्तानुदगप्रान्वा कुशानास्तोर्यं ॐ देमताम्य इति त्रिजपेत् ॥ ततो
नवपुत्रकेपु जलयवगन्धपुष्पाणि कृत्वा एक पुटकं वामहस्ते कृत्वा
कुशादीन्यादाय ॥ ॐ अद्यामुक्तागोत्रेऽस्मन्मातरमुक्तेषी नादीमुखि
अत्रापनेनिद्वरते स्वाहा इति धर्ममूले मात्र अवनेजनं दत्त्वा एवमेव ॥ पिता
महीप्रपितामहोऽथा मध्यामयो क्रमेण दद्यात् ॥ तत ॐ अद्यामुक्
गोत्राऽस्मदिवनरमुकशर्मन् नादीमुख्या ऽत्रापने निद्वर ते स्वाहा इति
द्वितीयमण्डलस्थितकुशात्रयमूले पित्रेऽवनेजनं दत्त्वा एवमेव पिता
माप्रपितामहश्चोस्तत्तत्पुत्रामध्याप्रयोऽथौजन दद्यात् ॥ एवमेव माता
महादिबद्धमं गूलमप्यपु दद्यात् । तत सर्वव्यजनोपेत सर्वविध
मन्नयुद्धत्य हृत शोषान्नदग्नि बदरयवे ममिरयनयपिण्डान् विन्लोप
माग्निमाय एक पिण्डं कुशाणां रक्षादाय ॐ अमुक्तागोत्रेऽस्मन्मातरमुक्तेषु
नान्दीमुखिपय दधि बदराक्षत मिश्र पिण्डस्ते नम ॥ इत्यवनेजनप्रमेणा
वनेजनस्थानेषु मात्रादिभ्य पिण्डान् दद्यात् ॥ तत ॐ अमुक्तागोत्राऽ
स्मदित्यामुक्ता शर्मन्तारी मुख्य एव दधि बदराक्षत मिश्र पिण्डस्ते नम ॥

इति पितृस्थाने दद्यात् । ततो दर्भं मूलेषु मूपाणिस्थं पिण्डलेपं विमृज्य
हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य हरिं स्मरेत् ॥ ततो मात्रादि पिण्डाभिमुखान्जलिं वृद्धा ॥
ओं अत्रमातरो मादयध्वं यथा भागमावृषायध्वमिति जपित्वा उदङ्ममुखी
भूय श्वास नियम्य प्रदक्षिणं परावृत्य, ओं अमीमदन्त मातरो यथा भागमा
वृषायिपन्, इति जपेत् ॥ एव पित्रादि पिण्डाभिमुखो भूत्वा ओं
अत्रपितरोमादयध्वमित्यादि जपित्वा मातामहादिपिण्डाभिमुखोभूत्वा ॐ
अत्रमातामहादयो मादयध्वमित्यादि जपित्वा ५ सूत्रियम्य ॐ अमी-
मदन्त पितरो यथाभागमावृषायिपत ॥ ॐ अमीमदन्त मातामहा यथा-
भागमा वृषायिपतेति जपेत् ॥ ततोऽवनेजनपात्र जलेन ॐ अमुक गोत्रे
मातरमुकदेवि नांदि मुखि अत्र प्रत्यवने निक्ष्वते स्वाहा ॥ इति मातृपिण्डो-
परि प्रत्यवनेजनं दत्त्वा ॥ एवमेव पितामही प्रपितामहीभ्यां तथा ॐ
अमुकगोत्र पितरमुकशर्मन्नांदीमुखि अत्रप्रत्यवनेजनंनिक्ष्वते स्वाहा, इति
पितृपिण्डोपरिदद्यात् ॥ एवमेव पितामहादिभ्यः पंचम्यस्तत्पिण्डोपरिद-
द्यात् ॥ ततो नीवीं विस्रंस्य आचम्य ॐ नमो वो मातरो रसाय नमो
वो मातरः शोषाय नमो वो मातरो जीवाय नमो वो मातरः स्वाहायै नमो
वो मातरो घोराय नमो वो मातरो मन्यवे नमो वो मातरो मातरो नमो
वो गृहान्नो मातरो दत्ततोवो मातरो देष्म ॥ इति मात्रादि वर्गं नम-
स्कृत्य ॥ ॐ नमो पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो
जीवाय नमो वः पितरः स्वाहायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो
मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरोदत्त सतो वः पित-
रादेषम इति पित्रादि मातामहादि वर्गद्वयं नमस्कुर्यान् ॥ ततः ॐ एतद्वो-
मातरो वास इति मात्रादि पिण्डेषु सूत्राणि दत्त्वा ॥ ॐ एतद्वः पितरो-
वास इति पित्रादि पट् पिण्डेषु प्रति पिण्डं सूत्रत्रयं दद्यान् ॥ ततो गन्ध
पुष्प धूप दीप द्राक्षांमलकमूलयवतांबूल दक्षिणादिभिः प्रतिपिण्डम-
भ्यर्च्य ॥ ॐ शिवा आपः सन्तु इति भोजनपात्रपुकिंचिकिञ्जलं दत्त्वा
ॐ सौममस्यमस्त्विति पुष्पाणि ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति यथांश्च
दद्यान् ॥ ततः ॐ नान्दीमुप्योमातरः पितामहाः प्रपितामहाः प्रीयंतामिति-
क्षीर यरोदकमक्षय्य स्थान देवः ॥ एवमेव पितरः पितामहाः प्रपितामहाः
प्रीयंतामिति पित्रादियगे ॥ मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाः
सपरितकारश्च प्रीयन्तामिति मातामहादिवर्गे च प्रत्येकमक्षय्योदकं दद्यात् ॥
ततः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत् ॥ ॐ अपोरा मातरः सन्तु ॐ अपोराः पितरः
मन्तु ॥ ॐ अपोरा मातामहाः सपत्नीहाःसन्विति चोत्सा ॥ मंत्वित्य-
नुज्ञातः ॥ ॐ गोत्रंनोवर्द्धतां दातारो नोभिवर्द्धन्ता वेदाः संततिरेव च ॥
भद्राचनो माव्यगमन् बहुदेयं चनोऽन्तु ॥ अघ्नं चनो बहुभवेदतिथारचलमे

मही । याचितारश्चन सन्तु भाचयाचिष्मकचन एता सत्याआशिप
सत्विति ब्रूयान् सत्वित्युक्ते सपवित्रान्कुशान्प्रत्येकं मात्रादित्रयपिण्डे
पित्रादित्रयपिण्डे मातामहादित्रयपिण्डे च वृत्वा ॥ नादीमुत्प्रीमातृपिता
मही प्रपितामही नान्दीमुग्रान पितृपितामह प्रपितामहान् नान्दीमुग्रान
मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाता महान् सपरिनवान् स्वाहा वाचयिष्य इति
पृष्ट्वा वाचयतामित्यनुज्ञात ॐ नान्दीमुग्रो मान् पितामही प्रपि
तामहो नान्दीमुग्रा पितृपितामह प्रपिता महा नान्दीमुग्रा
मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महा सपरिष्कारश्च प्रीयन्ता
मितिप्रार्थ्य प्रीयन्तामिति द्विजैश्च्यमानो पिण्डेषु जल निषिचेत् ॥
तत सस्रत्र पात्राण्युत्तानीकृत्य दक्षिणा दद्यात् कुशत्रय यत्रलान्या
दाय, ओं अद्यात्मन्मात्रा दित्रय श्राद्ध सत्रधि वैश्वदेविक इध
प्रतिष्ठार्थमिमा दानामलकार्द्रक मूलकादिरूपा दक्षिणा विष्णु देवत्याम-
मुक्त्रगोत्रायामुक्त्रार्थे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इत्युच्यते दद्यात् ॥
एवमेव पित्रादि मातामहादि वर्गदक्षिणा दद्यात् । तत ॐ अद्यामुक्त्र
गोत्राणा मान् पितामही प्रपितामहीना नादीमुत्प्रीना इतै तदाभ्युदयिक
श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिमा दानामलकार्द्रक मूलकादिरूपा दक्षिणा विष्णु-
देवत्याममुक्त्र गोत्रायामुक्त्रार्थे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इति मात्रादि
वर्ग दक्षिणा दद्यात् ॥ एवमेव पितृवर्ग मातामहवर्गपरि दक्षिणा च
दद्यात् ॥ तत पिण्डानुत्वापयामि इति पृष्ट्वा उत्वापय इत्यनुज्ञात
पिण्डानुत्वाप्य पात्र कृत्वाऽऽत्रायदर्भानुलमुक च वद्धौ क्षिपेत् ॥ ततो
जलदान पूर्वम् । ॐ विश्वेदेवा प्रीयन्तामित्युक्तया । प्रीयन्तामित्य
नुज्ञात स्वस्तिभयन्तो ब्रुवन्तु इति ब्रूयात् स्वस्तो ह्युक्ते प्रणिपत्य ॐ
वाचरात्रत वाचिनो नाधनेषु त्रिमाऽ अमृताऽ ऋतज्ञा ॥ अग्न्यम्भर
पित्रत मादथत्र तृष्णाथान् पथिभिर्देवथाने ॥ इति मात्रादीन् पित्रादीन्
मातामहादीश्च सिञ्चत् ॥ तत ॥ आमायाजस्य प्रमया जगम्यादेमेशा
या वृथिरीयिष्य रूप ॥ आमागता पितरा मानरा चामा मोमाऽअमृ-
तत्वेन गम्यान् ॥ इति पठित्वा प्रजापतिं कृत्य रक्षादीप निर्वापण पाणि-
भ्या कृत्या हस्तौ पादौ प्रक्षाल्यानम्य पिडात् गत्रादिभ्योऽन्वाऽ अष्टौ
पक्ष्या विप्रान्प्रभून् घृतान्नेन भोजयेत् ॥ तत उच्यते माज्जेनादि करणा-
नन्तर वैश्वदेव बलिर्धर्म कृत्या ॐ प्रमादा त्व्यन्ता धर्म इति पठित्वा
धर्मपूति कामो विष्णु इमेव । ततो वैश्वे त्रान्ने सुतभृत्यवाचरात्रिधि
संयुक्ताऽग्नीषान् ॥ इत्याभ्युदयिक श्राद्धपठति ॥ अत्र मादथिष्य नादी-
भादपठति ॥ तत्र नाथो गणपतिमहि पादशमात्वा पूजन घृतारा
पूजन च पूर्वोक्त्यन कृत्या ॐ आयुष्य परंभ्यमिति मन्त्रत्रय पठेत् ॥ तत

उद्भूय उपविश्य । आचम्यप्राणा नायम्य ॥ नेशकालौ सकीर्त्य अथ
 अर्त्तव्यामुक्त कर्म निमित्तक सात्त्विक नादीमुग्रश्राद्ध करिष्ये ॥ इति
 मरुत्पयेत् ॥ तत दक्षिणोत्तर क्रमेण ॐ सत्यशु सज्ञका विश्वेदेवा
 नादमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद व पाद्य पादावनेचन पादप्रक्षालन
 वृद्धि ॥ तत ॐ अमुक गोत्रामातृपितामह प्रपितामहो नान्दीमुग्र्य
 ॐ भूर्भुव स्व इद व पाद्य पादावनेचन पादप्रक्षालन वृद्धि ॥ ॐ
 अमुक गोत्रा भितृपितामह प्रपिता महा नादीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद व
 पाद्य पादावने चन पाद प्रक्षालनवृद्धि । ॐ अमुकगोत्रा मातामह प्रमाता
 तः वृद्धप्रमातामहा सपत्निका नादीमुखा ॐ भूर्भुव स्व इद पाद्य पादावने
 चन पादप्रक्षालन वृद्धि ॥ अथासन गानम् ॥ स परसुसन्नकाना विश्वेपा
 नेाना नान्दीमुग्रानाम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व इदमानन सुग्रासन स्वाहा
 ॥ इति कुशत्रय सर्पनो दक्षिणागत पूर्वाप्रमुत्सजेत् ॥ एव सर्पत्र ॥ ॐ
 नान्दीश्राद्ध जगोक्रियेताम् तथा प्राप्नुता भवन्ती प्राप्नुता भवन्ती
 प्राप्नुवाथ इति पठेत् ॥ तत ॐ अमुक गोत्राणा मातृपितामही प्रपिता
 महीना नान्दीमुनीताम् ॥ ॐ भूर्भुव स्व इदमाननम् सुग्रासन स्वाहा,
 ॐ नान्दी श्राद्धे क्षणे क्रियेता तथा प्राप्नुता भवन्ती प्राप्नुवाच ॥ ॐ
 अमुक गोत्राणा पितृपितामह प्रपितामहाना नान्दीमुग्रानाम् ॐ भूर्भुव
 स्व इदमासन सुग्रासन स्वाहा । ॐ नान्दीश्राद्धेक्षणे क्रियेता तथा
 प्राप्नुता भवन्ती प्राप्नुवाच ॥ ततो गन्धादिगानम् ॥ ॐ सत्यशु
 मतक्षेम्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुग्रेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इद
 गन्धाद्यर्चन स्वाहा सपचना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातृपितामही
 प्रपितामहेभ्य नादीमुग्रेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इद गन्धाद्यर्चन स्वाहा
 सपचना वृद्धि ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्य पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो
 नादीमुग्रेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदगन्धाद्यर्चन स्वाहा सपचना वृद्धि ॥
 ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्य सपत्निकेभ्यो
 नान्दीमुग्रेभ्य ॐ भूर्भुव स्व इदगन्धाद्यर्चन सपचना वृद्धि ॥ ततो
 नोचन निप्रय द्रव्य दानम् ॥ ॐ मायवमुत्सर्ग विश्वेदेवा नादी
 मुखा ॐ भूर्भुव स्व इद वायुम प्रायशभोजन पर्याप्त दास्यमान भद्र
 गतिरस्य भूत किञ्चिद्विष्णुमग्नरूपेण स्वाहा सपचना वृद्धि ॥ ॐ
 अमुक गोत्रा पितृ पितामह प्रपितामह नादीमुग्रा ॐ भूर्भुव स्व इद
 यो युग्म दास्यत ॥ तत मतीर मुदकदानम् ॐ नादीमुग्रा मत्स्यमु
 ग्राणा विश्वेदेवा प्रीयताम् ॐ अमुक गोत्रा मातृ पितामही प्रपितामहो
 नादीमुग्रा गिरिभ मह प्रपितामहा नादीमुग्रा द्वितीयगोत्रामातामह
 प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा नान्दीमुग्रा सपत्निकाश्च प्रीयताम् ॥ तत

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवा इति मन्त्रं पठेत् ॥ अथ दक्षिणा दानम् ॥
 ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदीमुखेभ्यः कृतस्य नांदी-
 श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धन्वर्थं द्राक्षा मलकयवमूल निष्कयी भूतां दक्षिणां
 दातु मह मुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्यो
 नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्धन्वर्थं द्राक्षा मलक
 यवमूल निष्कयी भूतां दक्षिणां दातु मह मुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्य
 पितृपितामह प्रपितामहेभ्यो नांदीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल-
 प्रतिष्ठा सिद्धन्वर्थं द्राक्षा मलकयवमूल निष्कयीभूतां दक्षिणां दातु मह-
 मुत्सृजे ॥ ॐ अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह
 वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्निकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नांदी श्राद्धस्य
 फलप्रतिष्ठा सिद्धन्वर्थं द्राक्षा मलकयवमूल निष्कयीभूतां दक्षिणां दातु मह-
 मुत्सृजे ॥ माता पिता महीचैव तथैव प्रपितामही ॥ पितापितामहश्चैव
 तथैव प्रपितामहः ॥ १ ॥ मातामहस्तिपितावप्रमातामहकादयः ॥ एते
 भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु सुमङ्गलम् ॥ २ ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ अस्य नांदी-
 श्राद्धस्य कर्माङ्ग देवताः प्रीयन्ताम् अस्मिन्नांदी श्राद्धेन्यूनान्तिरिक्ताया विधिः
 सोपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात्नाम्दीमुखप्रसादात्सर्वः परिपूर्णोऽस्तु अस्तुप-
 रिपूर्ण इति विधाः ॥ समाप्ताः ॥

अथ नित्यश्राद्ध प्रयोग ।

आचम्य प्राणानायम्य । ॐ पवित्रेस्थो वै० ईति मन्त्रेण दक्षिण
 वामहस्तयोरनामिकायां कुशपवित्रे घृत्वा ॥ सङ्कल्पः ॥ अद्वयेत्यादि एवं
 विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ ममाऽत्मन श्रुति स्मृति पुराणोक्त शुभ
 फल प्राप्त्यर्थं (अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां मरत्नीकानां तथा च
 अमुक गोत्राणां अमुक शर्मणां अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमाता-
 महानां सरत्नोक्तानां नित्यश्राद्ध महं करिष्ये ॥ ततः दक्षिणां दत्त्वा ।

अथ सामग्री

शेकी । मौली । गुजारी । ४० । अक्षत । रक्तवज्र गज १ । माला
 मोही । पुष्प । धूप । नेत्रेण । नागर वान । २१ । ईलायची । लीग । नेवा ।
 नानोर । घृत । कपूर । सिन्दूर । शर्षप । गुपेद गरभो । कुशा । पूर्वा ।
 पता । सोना । ४० । जव । तिल । तैल । सरार्दनग । ४० । दधि । दुग्ध
 मधु । मीठ । शर्षला । बेर । दाम्ब । अंगोष्ठा । १२ । घोनी मोहा । १० ।
 बेनर । पट्टन । जवेऊ मोहा ११ । गुण्यं दक्षिणा । १ । रत्नदक्षिणा । १२ ।
 पाक । इति नांदीमुख श्राद्ध सामग्री ॥ इति ॥

यथा, अमुकगोत्राणामस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुक शर्मणां सपत्नीकानां दक्षिणां दत्त्वा भवद्भिः प्रमादः कर्तव्यः सुकर्तव्यः । एवं मातामह प्रमातामह शुद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां गोत्रनामोच्चारपूर्वकं दक्षिणां दद्यात् ॥ ततः पित्राद्यो मातामहाश्च इदं वः पाद्यमिति पाद्य-यन्दस्वाऽऽचम्य कुशासने उदङ्मुख उपविश्य पितृणां मातामहानां चेदमासनम् ॥ पित्र्येक्षणः क्रियाताम् । प्राप्नोतु भवान् प्राप्नुवानि । पितरो मातामहाश्च एव वो गन्धः सुगन्धः । इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि । अयं धूपः सुधूपः अयं दीपः सुदीपः । आच्छादनं दत्त्वा पूर्णतां वाचयित्वा द्विगुणं मासान्नं पात्रे संस्थाप्य प्रोक्ष्य पात्रमालम्ब्य तिलान्बिकोर्यं आमन्नेऽङ्गुष्ठं दत्त्वा । पितरः इदं वः आमन्नें सोपस्करं गयेयं भूः गदाधरो विप्रः ब्रह्मरूपमिदं पितृभ्य अमुक गोत्रेभ्यो-अमुक शर्मभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः स्वधा मातामहादिभ्य रचेदमा-मन्नें स्वधा सम्प्रघतां नमः । दत्तमाभान्नं मङ्गल्यमस्तु । अस्तस्त्वक्षयम् । श्रीगयागदाधरः प्रीतो भवतु । ब्रह्मार्पणमस्तु । ॐ मधुच्वाताऽ ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवऽः । माद् धीर्नऽः सन्त्वोषधीऽः ॥१॥ मधुनक्त मुहो पसो मधुमत्पार्थिव ३ रजः । मधुद्वयौ रस्तुनऽः पिता ॥२॥ मधुमात्रो ब्वनम्पतिम्मधुमाँ २ ॥ऽअस्तुसूर्यः । मादीर्गावो भवन्तु नऽः ॥३॥ (इति मन्त्रा ब्रह्मणेन पठनीयाः) ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् । शिवा आपः सन्तु । सन्तु शिवा आपः । सौमनस्य-मस्तु । अस्तु सोमनस्यं । अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अस्तु अक्षतं चारिष्टं च । दीर्घमायुःश्रेयः पितरः ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः । स्वधानमः । पितामहेभ्यः । स्वधायिभ्यः । स्वधानम् । प्रपिता महेभ्यः । स्वधायि-भिः । स्वधानमः । अन्नपितरो ममिदन्त पितरो वीतृपन्व पितरऽः पितरऽः शुन्यदम् ॥५॥ इति मन्त्रेण स्वस्तीति ब्रूयात् कुशापवित्र त्यागः) अर्पणम्-अनेन मयाकृतेन । नित्यभाद्र कर्मणा मम पित्रादि स्वरूपी-जनादनं वामुदेव प्रीयताम् ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति नित्यभाद्र प्रयोगः ॥

अथ तीर्थाद् विधिः ॥

तत्र क्रमः । आसनम्पिण्डदानं च पुनः प्रत्यत्रनेजनम् दक्षिणा-

सङ्कल्प गिरुषामुदकादिकं तत्रन्वगुहमप्यवर्ता पितृतीर्थनरेदम् ॥ ४ ॥ पूर्वप्रयोगवद् ॥ —अत्र गिरुषः गोरीचन्दन तिलाक्षरवैत गुग्गुलि च पुष्पाणि सगन्धि पुष्पाणि वलनीच भद्ररादीनिगिरुषां देवानि ॥

चान्न सङ्कल्प्य स्तीर्थं श्राद्धेष्वयं विधिः ॥ अर्घमावाहनञ्चेवद्विजाह्
गुणनिवेशनम् । तृप्तिं पश्च च विकिरं तीर्थं श्राद्धे विवर्त्तयेत् । नावा
हन नदिगवन्ध्यो न दोषो दृष्टिः सम्भवः सकारुण्यञ्च कर्त्तव्यं तीर्थश्राद्ध
विचक्षणैः । तीर्थं श्राद्धे धूरि लोचनं विश्वेदेवा पूर्वकं अमुकतीर्थं प्राप्ति
निमित्तकं श्राद्धं करिष्ये । इति सङ्कल्प इति तीर्थस्नानं विधिः । अथ
तीर्थोपनाससङ्कल्पः । अथ हेत्यादि अमुकशर्माह सकलपापक्षयार्थं अमुक
तीर्थे क्षेप्रोपवासं व्रतमहं करिष्ये । अद्यस्थित्वा निराहारं सर्वभोग
विवर्त्तितं भो मोक्षे पुण्डरीकाक्षं शरणं मे भवाच्युत इति पठेत् । अथ
श्राद्धम् । यः ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परमं प्रधानं पुरुषस्तथान्ये विश्वो
द्रते कारणमाश्रयन्त्या तस्मै नमो विष्णुविनाशानाय ॥ शुक्लावरधर
विष्णु शशिवर्ण चतुर्भुजम् प्रसन्नं वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
इति नमस्कृत्य दक्षिणं भागं भूमौ चन्दनेन शखचक्रं लिखित्वा तत्रासनार्थं
कुशत्रयं घृत्वा तत्रासनार्थं तत्र कर्मपात्रे संस्थाप्य पात्रे पवित्रम् । ॐ
पवित्रेऽस्यो वैष्णव्यौ सवितुर्व्यं - असवऽ उत्पुनाम्यं द्वि
द्वद्रेणपत्रिद्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः - तस्यते पवित्रं पते पवि
त्रं पतस्यत्कामं पुनेतच्छक्रेयम् ॥ इति मन्त्रेण कर्म
पात्रे । पवित्रं निधाय, स्वदक्षिणं हस्ता नामिकाया कुश
पवित्रीमन्त्राख्येत् ॥ शन्नो देवीति जलम् । ॐ शन्नो देवीर
मीष्टयो आपो भवन्तु पीतये रश्म्यौ रश्मि अन्तुन ॥ इति जलम् । इति
मन्त्रतः । तिलोपी सोमं त्वत्यो गोसरो देवनिर्मितं प्रत्नभङ्गि पृच्छ
स्वयया पितृल्लोमान्प्रप्रीणादिनं स्वाहा । इति तिलान्क्षिप्त्वा । यावो
सिति यवान् ॥ ॐ यरोसि यत्रयास्मद्वेपो यवया रातीद्वित्वान्तरिक्षा
यत्वा पृथिव्यैत्वा शुन्यता ल्लोका पृत्रिपदना पितृपदनमसि । इति
यवान् क्षिपेत् ॥ तत्र वरुणानाहनं कुर्यात् ॥ ॐ आवाहयाम्यहं देवां
गात्वा त्रैलोक्यमातरम् । यस्यास्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणासनम् ॥ ॐ भू
सुर्व स्व वरुणोऽथेवता इहागन्ध इहातिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।
गन्धाक्षतं श्रेतपुष्पाक्षतादि तूर्णानि क्षिप्य । कमपात्रं मुं सम्पन्नमस्तु ।
अस्तु मुसम्पन्नम् । तेन चनेनात्मानं सर्वाश्राद्धसामर्प्यां सम्प्रोक्षयेत् ।
तद्यथा । अपवित्रम् । प्राणानायम्य । ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः । ३ ॥
अपसव्येन नीवीबन्धनम् । सोमस्य निविरसि विष्णो शर्माशि शर्म
यनमानस्येन्द्रस्य योनिरसि शुपस्या कृषीच्छुधो इति निविवन्धनम् ॥
वामकस्यामारोपयेत् । ततः सव्येन । ॐ देवताम्यपितृभ्यः महायोगेभ्य एव च
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः । इति त्रिर्नपेत् । अपसव्येन ।
ॐ श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गणाधरम् । मनमाच पितृन्

ध्यात्वा तीर्थश्राद्धं समारभेत् ॥ इति स्मृत्या । सव्येन । प्रतिज्ञा संकल्पः ॥
 अथेत्यादि देशकालौ सङ्गकीर्त्य अमुकगोत्राणां अस्मत्पितृपितामह
 प्रपितामहानां अमुकाऽमुके शर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य
 स्वरूपाणां तथाअस्मन्मातामह प्रमाता मद वृद्ध प्रमाता महानां
 अमुकाऽमुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अक्षय
 तृप्रत्ययं पावर्णं श्राद्ध त्रिधानेन धूरिलोचन संज्ञक विश्वेदेवा पूर्वकं अमुक
 तीर्थं प्राप्ति निमित्तकं सपिण्डकमामात्रतीर्थं श्राद्धं करिष्ये । कुरु चेति
 प्रत्युक्तिः । सव्यम् । ततः विश्वेदेवा आसनदानं । अथेत्यादि अमुक
 गोत्रोऽस्मत्पित्रादिव्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां तथा स्मन्मातादिव्रय श्राद्ध-
 सम्बन्धिना धूरिलोचन संज्ञकानां विश्वेषां देवानां इदमासनमस्तु । ॐ
 भू भुवः स्वः इदमामनमास्यतामास्ये । अपसव्यं कृत्वा । अमुक गोत्राणा-
 मस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यः
 स्वरूपाणां इदमामनमस्तु भू भुवः स्वः इदमासनमास्यतामास्ये इति
 आसनं दत्त्वा । अस्मन्मातृपितामही प्रपितामहीनां अमुकामुकी देवीनां
 वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां इदमासनमस्तु । भू भुवः स्वः इदमासनमास्य-
 तामास्ये । इति आसनं दत्त्वा । अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह
 वृद्धप्रमाता महानां अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य-
 स्वरूपाणां इदमासनमस्तु । ॐ भू भुवः स्वः इदमासनमस्तु । ॐ भुभुवः
 स्वः इदमासनमास्यतामास्ये । इति आसनं दत्त्वा । ततः सव्यं कृत्वा ।
 विश्वेदेवा पूजनम् ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये [सहस्रपादाक्षि-
 शिरो रुवा हवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटि युगधारिणे
 नमः । इति मन्त्रेण पाद्य गन्धाक्षतैश्च सम्पूज्य, अपसव्येन । पितृवा-
 द्याणं सम्पूज्य ॐ पितृभ्य इत्यादीनां पितृणां ओं नवो वः इत्यादीनां
 मातामहानां च पूजनं कुर्यात् । वेदां कृत्वा । अपसव्यं कृत्वा । ॐ
 अपहृताऽअसुरा रक्षा धृ सि वेदिपद् इति रेग्याग्रयं कृत्वा । प्रथम रेग्या-
 मने अथेत्यादिअमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मन् वसु स्वरूपपिण्डा-
 सनेऽश्नेनित्त्व ॥ अथः अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् रुद्र-
 स्वरूप पिण्डासनेऽश्नेनित्त्व । अथ, अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह
 अमुक शर्मन् आदित्यस्वरूप पिण्डासनेऽश्नेनित्त्वः । द्वितीय रेग्यामने ॥
 अथ अमुक गोत्रः अस्मन्माता अमुकि देवि वसुस्वरूपे पिण्डासनेऽश्ने
 नित्त्व । अथ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामही अमुकि देवि रुद्र स्वरूपे,
 पिण्डामनेऽश्नेनित्त्व । अथ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक
 शर्मन् आदित्यस्वरूप पिण्डामनेऽश्नेनित्त्वः । द्वितीय रेग्यासने ॥ अथ
 अमुक गोत्रः अस्मन्माता अमुकि देवि वसुस्वरूपे पिण्डामनेऽश्नेनित्त्व ।

अथ अमुक गोत्रः अस्मत्पितामही अमुकि देवि रुद्र स्वरूपे पिण्डासने-
 ऽवने निक्ष्व । अथ अमुक गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि अमुकि देवि आदित्य
 स्वरूपे पिण्डासनेऽवने निक्ष्व । तृतीय रेखा सने । माता महादीनां
 अवनेजनानि दत्त्वा । सञ्चयेन । भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदान
 मह करिष्ये । अपसञ्चयं कृत्वा । स मोटकं तिल गुड़ पिण्ड वायवान् पिण्डं
 गृहीत्वा । अथेत्यादि अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मन् वसुस्वरूप
 अस्मिन् तीर्थं श्राद्धे एवं तिल गुड़ पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्तेस्वधा । ॐ
 अमुक गोत्राय अस्मत्पित्रे अमुक शर्मणे वसु स्वरूपाय । इति प्रथम रेखा
 मूलेऽवनेजनो परिपिण्ड दद्यात् । अमुक गोत्रः अस्मत्पितामह अमुक
 शर्मन् रुद्रस्वरूप अस्मिन्तीर्थं श्राद्धे एवं तिलगुड़ पिण्डोऽमृत कल्पो
 महत्तस्ते स्वधा । अमुकगोत्रः अस्मत् प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्य
 स्वरूपः अस्मिन्तीर्थंश्राद्धे एवं तिल गुड़ पिण्डोऽमृत कल्पो महत्तस्ते
 स्वधा । इयं भूमिर्गयातुल्या इदंमुदकं गाङ्ग-द्वितिय रेखामूले-अमुक
 गोत्रोऽस्मत् माता अमुकी देवी वसुस्वरूपस्मिन् तीर्थंश्राद्धे एष तिल
 गुड़ पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते स्वधा०-इयं भूमिरिति-अमुक गोत्रो
 अस्मत् पितामही अमुकी देवीरुद्रस्वरूपं स्मिन् तीर्थंश्राद्धे एष तिलगुड़
 पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते ते स्वधा । इयं भूमिरिति । अमुक गोत्रोऽस्मत्
 प्रपितामही अमुकी देवी आदित्य स्वरूपा अस्मिन्तीर्थंश्राद्धे एष तिल गुड़
 पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते स्वधा । इयं भूमि रिति० ॥ त्रितयि ॥ रेखासने
 मूले-अमुक गोत्राय अस्मिन् मातामह अमुक शर्मन् सपत्निक वसु-
 स्वरूप अस्मिन् तीर्थंश्राद्धे एष तिल गुड़ पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते
 स्वधा । इयं भूमिरिति अमुक गोत्राय अस्मत्मातामहाय अमुक शर्मणे
 रुद्रस्वरूपाय सपत्निकाय एष तिलगुड़ पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते स्वधा ।
 इयं भूमि रिति० ॥ अमुक गोत्र अस्मत् बृद्धप्रमातामह अमुक शर्मन्
 आदित्य स्वरूप सपत्निकाय एष तिलगुड़ पिण्डोऽमृतकल्पो महत्तस्ते
 स्वधा-इयं भूमिरिति० ॥ श्रीं लेपभागिन भय भागोस्तु इति लेपभाग्न्य
 प्रतिपत्तिलेप भाग्न्य चदद्यात् । सञ्चयेनाचम्य पुण्डरीकाक्षं स्मरन् ततः
 अपसञ्चयेन । प्रत्यवनेजनम् । अमुक गोत्रः अस्मत् पिताअमुक शर्मन्
 वसुस्वरूप अस्मिन् तीर्थं श्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्
 पितामह अमुकशर्मन्रुद्र स्वरूप अस्मिन् तीर्थं श्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने
 निक्ष्व । अमुकगोत्रः अस्मत् प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्य स्वरूप
 अस्मिन् तीर्थंश्राद्धेपिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुक गोत्रः अस्मत् माता
 अमुकी देवी वसुस्वरूपे अस्मिन् तीर्थंश्राद्धेपिण्डे प्रत्यवने निक्ष्व । अमुक
 गोत्रः अस्मत् प्रपिता मही अमुकी देवी रुद्रस्वरूपा अस्मिन्तीर्थं श्राद्धे

पिंडे प्रत्यवने निद्व । अमुक गोत्रः अस्मन् मातामह अमुक शर्म्भन्
सपत्निक वसु स्वरूप अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने, निद्व ॥ अमुक
गोत्रः अस्मन् प्रपितामहीअमुकी देवी आदित्य स्वरूपे अस्मिन्तीर्थ श्राद्धे
पिंडे प्रत्यवने निद्व । अमुक गोत्रः अस्मत् प्रमाता मह अमुक शर्म्भन्
रुद्रस्वरूप सपत्निक अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निद्व । अमुक
गोत्रः अस्मत् वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्म्भन् सपत्निक आदित्यस्वरूपे
अस्मिन् तीर्थश्राद्धे पिंडे प्रत्यवने निद्व । गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप वस्त्रा-
दिभिर्पिण्डं सम्पूजयेत् । ॐ पितृपितामह प्रपितामहीभ्यो नमः । ॐ
मातृ पित्तमही प्रपिता महीभ्यो नमः । ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता-
महेभ्यः सपत्निकेभ्यो नमः । निविंसृज्य । सव्यं कृत्वा दक्षिणां दानं देव
द्रव्यं सम्पादाय सम्पूज्यः ॥ ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रः पित्रादित्रय
तथा मातादित्रय तथा अमुक गोत्र मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां
धूरि लोचन संज्ञकानां विश्वेपां देवानां प्रीतये कृतेत देश देविकं पूर्वकं
तीर्थप्राप्तनिमित्तकं श्राद्धकर्मणां सांगतासिद्धये इमां सुवर्णं निष्कृत्यं
ब्राह्मणं दास्ये । ॐ तत्सन्न मम तथा अमुक गोत्राणां पितृपितामह प्रपिता
महानां अमुकामुक शर्म्भणां तथा मातृ पितामही प्रपितामहीनां तथा
अमुक गोत्राणां अस्मत्माता मह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाय अमुकाऽमुक
शर्म्भणां सपत्निकानां वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थश्राद्धनिमित्तकं इदं
रजत निष्कृत्यं ब्राह्मणान्दास्ये ॥ तत्सन्न मम ॥ विश्वेदेवाग्ने अन्नं संस्था-
प्य । ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्रः पित्रा दित्रय तथा मातामहादित्रय
श्राद्धसम्बन्धिभ्यो धूरिलोचन विश्वेभ्यो देवेभ्यो इदमात्रं सोदकं सोप-
स्करं निषिद्ध वज्रं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्तिपर्य्यन्तं यथा विभाग
वः स्वया ॥ यथा सुरेण भुङ्क्त्वं भुङ्क्महि । अपसव्यम् । ॐ येचेह
पितरो येच नेहयांश्च विद्यायां २ उचन प्रविद्यत्वंवेत्थ यतिते जात वेदः
स्वधामिर्यज्ञ १५ सकृतन्ञुपस्व इति पठित्वा । मधु ३ । अद्येह अमुक
गोत्रेभ्यः अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुक शर्म्भेभ्यः स-
पत्निकेभ्योः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तीर्थश्राद्धे इदमामात्रं सोदकं सो-
पस्करं निषिद्ध वज्रं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्ति पर्य्यप्तं यथा विभागं
वः स्वया । तथा अमुक गोत्रेभ्यो मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्योः
अमुकाऽमुक शर्म्भेभ्यः सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः इदं मामान्नं
सोदकंसोपस्करं निषिद्धवज्रं अमृत स्वरूपं ब्राह्मणस्य तृप्ति पर्य्यप्तं
यथा विभागं वः स्वया । सव्येन । पितृ गावर्णां जपेत् - देव वाम्य-इति
त्रिषारं जपेत् । अपसव्य अक्षयोदक दानं ॥ अद्येह अमुक गोत्राऽस्म-
त्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां तथा अमुक गोत्रा स्माता महादित्रय

श्राद्ध सम्बन्धिना धूरिलोचनसज्ञ काना विश्वेपा देवाना तीर्थप्राप्ति निमित्तक श्राद्धे इदमन्नोदकादियद्दत्त तदक्षय्यमस्तु ॥ अस्त्वक्षयम् । एव पितामह प्रपितामहयो । अद्यामुक्त गोत्रस्थास्मन्मातामहस्य अमुक शर्मण्य सपत्निकस्य वसुस्वरूपस्य अस्मिन् तीर्थश्राद्धे इदमन्नोदकादि यद्दत्तं तदक्षय्यमस्तु । अस्त्वक्षयम् । एव प्रमातामहयोरपि । सव्येन । अधोरा पितर सन्तु सन्तु गोत्रन्नो वर्द्धन्ता २ सन्ततिवर्द्धता वेदा वर्द्धन्ता वर्द्धन्ता दातारो नोपि वर्द्धन्ता वर्द्धन्ता श्राद्धाचनो मास्यव्यगमन्मागात् । अन्नवचनो बहुभवेत् । भवतु अतिधीञ्चलभेमही कमध्व या चितारवचन सन्तु सन्तु, मास्मयाचिष्मकञ्चन मायाचिया इत्याशिप प्रविशुद्ध । स्वतिलरु सत्यानुष्ठान सम्पन्ना सर्वदायज्ञवृद्धय पितृमातृ परारचेत्र सन्त्रस्मत्कुलजगिरा इति पठित्वा । देवताभ्य इति त्रिर्जपा ॥ इदं श्राद्ध विसर्जयेन् । अद्येह अमुक गोत्राणा इति उच्चार्य्य धूरि लोचन विश्वेदेवा पूर्वक इदं श्राद्ध, तीर्थश्राद्ध विधिहीन श्राद्धाक्रिया रहित वस्तु कृतमस्तु यन्न्यूनान्तिरिक्त तत्सवविष्णो प्रसादात् ब्राह्मणवचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु अस्तुपरिपूर्णम् ॥ उत्तिष्ठ ब्राह्मणस्पते इति पठित्वा विसृज्य आमा वाजस्येति प्रदक्षिणीकृत्य नोर्विसृज्य । आचम्य यस्य स्मृत्येति पठेन् अच्युताय नम इति तीर्थश्राद्ध विधि । तीर्थवासी ब्राह्मणो यजमान चन्दन पितृप्रसादाञ्च दद्यात् । पुन कर्ता अयोध्या मथुरामाया का० ॥ इति ॥

अथ शय्यादानम् ।

दीप प्रज्वालयाचम्य गणेशपूजा कृत्वा दक्षिणोत्तरा शय्या स श्याप्य—तत्रादौ सारदारुमयीं दृढा दन्तपत्रे हेम-पट्टयै रलकृता हसतूली प्रतिच्छन्ना गुध्रगण्डोपधानिका प्रच्छादनपट्टी युता गन्धधूपादि वासिता पुष्प ताम्बूल कुकुम कर्पूरागदचन्दनदीपकोपानच्छत्रचामरव्यजनासन मत्तघान्यघृतपूर्णं कुम्भादिसहिता शय्यामासाद्य, तत्रा हेम काञ्चन-पुरुष स्थापयेत् । तत्र पूर्वाभिमुखं बद्धमुखो वा उपविरय । आचम्य प्राणानायम्य । अद्येत्यादिनेशकाली सकीर्त्याऽमुकोह यथोक्त फला वाप्तये । इष्टदेवताया प्रीतये शय्यादानं करिष्ये । (इति सकल्प) । पुन शय्यादानप्रतिपदार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये इति सकल्प्य भूमि देवाय जन्मासिन्ध्वं विप्र पुरुषोत्तम प्रत्यङ्ग यज्ञपुरुष अर्घ्यं प्रति गृह्यताम् । गन्वादिभि सम्पूज्य । एभिर्गन्वात्तन् पुष्पपूगीफल द्रव्यवासो न्करणादिभि करिष्यमाण शय्यादान प्रतिपदार्थं त्याग्य कृषे । घृतो

स्मीति प्रत्युक्ति ततो लक्ष्मीनारायणप्रतिमा पूजन कुर्यात् । अथेह अ-
मुकोऽहकरिष्यमाण शय्यादानकर्मण पूर्वागत्वेन सुवर्णप्रतिमाया
लक्ष्मीनारायणयो पूजनमहं करिष्ये । प्रतिमा मन्व्युत्तारण पूर्वक-पञ्चा-
मृतैः संस्नाप्य । एतन्त इति प्रतिष्ठा ॥ ध्यानम् । दक्षिणाधः करे पद्म-
शय मूर्द्ध करे न्यसेत् । वामोर्द्धे च भवेद्दक्ष लक्ष्मी पृष्ठे कर पर ।
दक्षिणास्तु भुजे दिव्या पृष्ठे देवस्य चक्रिण वामेप्येक गतालक्ष्मी रत्न-
पात्रकराभवेत् । इति ध्यात्वा षोडशोपचारे सम्पूज्य ॥ ततो लक्ष्मीनारायण
प्रतिमा शय्यो परिस्थापयित्वा-शय्या सपूज्य कृताञ्जलि पुटो भूत्वा,
शय्या प्रदक्षिणीकृत्य प्रमाण्यदेव्योनम । इति चतुर्दिशं प्रणम्य, सकल्प
कुर्यात् । अथेहाऽमुकोहं ययोक्तफलवाप्ति कनकोल्वल नानारत्न सम-
कीर्णं नानाद्रव्योपसंयुक्तं नानादिव्यापसनमेव्य विमान रोहण पूर्वक
पष्टि सद्मन्त्रपं पर्यन् इन्द्रलोकवासत्प्राप्तिकाम, इष्ट देवताया
प्रीतये, इमा शुभ गण्डोपधानिका प्रच्छादनपटयुतां गन्धपुष्पादिवासिता
सुपूजित लक्ष्मीनारायण प्रतिमायुता । उच्छीर्षक स्थापित घृतकुम्भपूर्ण-
ताम्रकलशोपिता, पार्श्वस्थापित ताम्बूल कुंकुम मृगमद कपूरगण्डचन्दन
जातापत्र जाताफल लग्नपूगीफन नालिकर दापिकोपानह छत्रचामर
दशादुरपस्करवतीं पाकादि पात्रान्नादुरपस्करवतीं सालकारा चतुष्कोणेषु
यथा क्रम संस्थापित घृतकुंकुम गोधूम जलपूर्णपात्र युता, प्रजापति
देवता, अमुक गोत्राय । अमुक वेदाध्यायिने अमुक शम्भणे ब्राह्मणाय
तुम्यमहं सप्रददे । ॐ तत्सन्न मम दानवाक्य, यथान कृष्ण शयन
शून्यं मागरजातया शय्या ममाप्य शून्यास्तु शय्या जन्मनि जन्मनि ।
ब्राह्मण शय्योपरि स्थित्वा, प्रतिगृह्यात् । कृतस्य शय्या दानस्य मागता
सिद्धयर्थ इह सुवर्ण अग्नि देवत ब्राह्मणाय तुम्यमहं सप्रददे । तत्स
न्नममे । ततो भूयसी सकल्प । ब्राह्मणान् । भोनयित्वा । प्रणिपत्य विस-
र्जयेत् ॥ इति शय्यादानविधि ॥

अथ भूमिदान विधिः ॥

ताग्रभात्रे देयभूमि सम्बन्धि मृत्पिण्ड संस्थाप्य विधि ना अथं
संस्थाप्य सकल । अथेत्यादि-अमुकोऽहं ययोक्त फलावाप्तये भूमिदान
करिष्ये । भूमिदानकर्मण पूर्वागत्वेन भूमे ययामिलितोपचारैः पूजन-
महं करिष्ये । ध्यानम् ॥ शुक्लवर्ण महाकाया, दिव्याभरणभूषिता । चतु-
र्भुजासौम्यवपुरघन्द्रामुप्त दशरामा । रत्नपात्र शय्यपात्रं पात्रम्मोषधि-
मयुतम् । पद्मशेरत्त कर्त्तव्यं मूयो यासद् चन्दन, दिग्नामाना चतुर्णा-

प्लाकार्यां तृष्टगतामहो, इतिध्यात्वा, भूम्यै नमः ॥ इति गन्धाक्षत पूष्यै
संपूज्य । दान संकल्प । अद्येहाऽमुकोहं सकलपाप क्षयपूर्वकं यथोक्त
कृत्वा प्राप्तये, इमां सुपजिताभूमिं लयोत्पत्तियोग्या विष्णु देवत्या अमुक
गोत्रायऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय दास्ये । तत्सन्न मम ॥ दान वाक्यम् ।
यथा भूमि प्रदानस्य, कलानाहंन्ति षोडशी, दानान्यन्यानि मे शान्ति
भूमिदानाद्भवत्विह । कृतस्य भूमिदानस्य साङ्गता सिद्धयर्थं इदं सुवर्णं
अग्निदेवतं दान प्रतिष्ठात्वेन तुभ्यं संप्रददे । तथा इमां दक्षिणा भूमिं दान
कर्मण -साद् गुण्यार्थं । ब्राह्मणेभ्यो त्रिविमज्य दास्ये, तथा माधव प्रीतये
सिद्धानेन आमन्नेन वा यथा सख्याकान् ब्राह्मणान्भोजयिष्ये इति
संकल्प अग्निदेवतिलक मन्त्र पाठादिकं कुर्यात् । इति भूमिदानम् ॥

एकोदिष्ट श्राद्ध विधिः ॥

अथैकोदिष्ट श्राद्धविधि । तत्र पास्कर सूत्रम् ॥ अथैकोदिष्ट
मेकोर्धं एकं पवित्रमेकं । पिण्डोना वाहन नाग्नौ करण नात्र विश्वेदेव ।
स्वदिवमिति तृप्ति प्रश्न सुखदितमितिइतरे । अयुरुपतिष्ठतामित्यक्षय स्थाने-
ऽभिस्मृतमिति विसर्गोभिरमतास्म इति तरे ॥ तत्र मध्याह्ने स्नात्वा,
घौतवाससो परिधाय श्रद्धाङ्ग तर्पणं कृत्वा, श्राद्धदेवे गत्वा, दीप प्रज्वा-
लयाभ्यम् । पवित्रपाणिभूर्त्वा पिण्डुं सम्पूज्य, इक्षीं सहतीकृत्वा ।
ॐ यन्ब्रह्मवेदान्तविद्रो वदन्ति पर प्रधान पुरुष तयान्ये । विश्वोद्भूते
कारणमोक्षरम्भा तस्मै नमो विष्णुप्रितारानाय । अमीप्सितार्थसिद्धयर्थं
पूज्यते । त्रिदशैरपि । सर्वविष्णुद्धिदेवस्मै गणाधिपतये नम । इति पुष्प-
ञ्जलि दत्त्वा, ब्राह्मणं तैलाम्यगं कारयित्वा सस्नाप्य । कुशोरि कुश-
पुत्रोसि । ब्राह्मणा निर्मितपुरा । त्वय्यर्चिते सोचितोस्तु यस्याइं नाम
कीर्तये । एतन्त इति पठित्वा । ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यंशम्प्राहू वृहस्पतय ।
ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेनयज्ञ पठिन्तेन मामव मनाजूति ऋषिपता मान्यस्य,
वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्ववृष्टि व्यज्ञ धं समिगन्दधातु विरयेदेवासऽ
इहमाद्यन्तोभोम् प्रतिष्ठु । ॐ भूमुं व स्व भित्तमान्, सम्प्रन्धि ब्रह्मन्
सुप्रविष्टितो भव । तवोऽपसन्ध्यम्विधाय । विलान् गृहीत्वा, अद्ये इत्त्याद
अमुक गोत्रस्या स्मरित्तु अमुक शर्मणो वसुस्वरूपस्य सावत्सरोक्तेकां-
दिष्टयथाऽऽश्राद्धे ब्रह्मन् भवान् भवानिभन्त्रित । निमन्त्रितोऽस्मीति
इत्युषं । इह्ना सदनौ कृत्या । अत्रोघने शौच परे सततं ब्रह्मचारिभिः,
भक्तिर्य भवद्भिर्य मया च श्राद्धधारिणा । सर्वापास विनिमुक्तेः
शामन्नोय विरग्नितै भयितव्यः । भव ऋणोपतने श्राद्ध कर्मणि सव्यन ।

आगतवः सुस्वागतम् । अपसव्येन, एतद्वः पाद्यमस्तु । इत्युक्तं कपि-
लादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्ये तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ विप्राणां-
पाद शौचने । इति पठित्वा । पादपूजायां अत्र सुगंधं अक्षताः पुष्पाणि
तुलसीदलानि च समर्प्य । पादारघदानम् सव्येन ॥ भूमौ शंखचक्रादिकं
लिखित्वा आसनं आसने पात्रं, पात्रे पवित्रं, पवित्रेस्थौ वैष्णव्यौ ।
शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पोतये । शय्योरभिस्रवतुनः । इति
जलम् । तिलोसि सोम दैवत्यो गोसवो देव निर्मितः प्रत्नमद्भिः षड्भुक्तः
स्वधया पितृलोकान् प्रोणाद्दिनः स्वाहा । इति तिलान् प्रक्षिप्य । गन्ध-
पुष्पाङ्गतादि प्रणयेन तृष्णीं वा यथाधिकारं निक्षिप्य । भो ब्राह्मणाः
पादारघपात्र सम्पत्तिरस्तु । अस्तु सम्पत्तिः । इति प्रत्युक्तिः । अपसव्येन ।
पितृब्राह्मण पादारघनं विधाय त्रं नमः गन्धोस्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि
तुलसीदलानि नमः । अद्येह अमुका गोब्राह्मणपितुः अमुक शर्मन्
वसुस्वरूप अद्यकर्तव्ये साम्बन्सरीकैकोदिष्टज्ञयाद् भ्रात्रे ब्रह्मन्नेपते
पादारघोऽस्तु । पादारघदानाचमनम् । सव्येन । स्वयमाचम्य अपसव्येन ।
ब्राह्मणमाचामयेत् । सव्येन । श्राद्धदेशोपवेशनं इत्युदङ्मुखं उपवेशयेत् ।
ततः कर्मपात्र पूरणम् । ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया
व्विरस्यस्य भुवनस्यधर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथिवीं इ ऽ ह पृथिवी म्मादि ऽ ह
सोः । भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा । आसनं आसने पात्रं पात्रे
पवित्रम् । पवित्रस्थौ वैष्णव्यौ, शन्नो देवीरिति जलम् । यद्योमियव यागम
द्वेषो यवयारातिर्द्विचत्त्वान्त रिज्ञायत्वा । पृथिव्यैत्वाशुन्धन्तांल्लोभाः
पितृरदनाः पितृपदनमसि । तिलोसीति तिलान् । गन्ध पुष्पाङ्गतादितुष्णीं
निक्षिप्य । कर्मपात्रं सुमंपन्नमस्तु, अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन जलेनात्मानं
संप्रोक्ष्य प्राणायामं विधाय । पुण्डरीकाक्षाय नमः ॥ अपवित्रः पवित्रो
वा सर्वायस्थां मनो पित्रा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाहाभ्यन्तरः
शुचिः । हस्तौ संहर्तौ कृत्वा । दैवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिम्यग्रेव च ।
नमः स्वाहायै म्वायै नित्यमेव नमो नमः । इति त्रिः पठित्वा ३ ।

स्नान सङ्कल्पः । सर्वकुशत्रलान्पादाय । ॐ विष्णु ३ अद्ये इत्या-
द्युच्चास्यांनुकगोषोऽनुक राशिरनुक शर्मन् । अपसव्यं विधाय । तिल मोट-
कगदित्वा अमुक गोपस्यात्पितुरमुकशर्मन्ः यमुस्वरूपायाः अमुक गोत्राया अस्म-
न्मातुः, अमुकी देव्याः यमुस्वरूपायाः अद्य तुलिकात्मनाय साम्बन्सरीकैकोदिष्ट
ज्ञयाद् भ्रात्रापिचार मिद्वर्ष आत्मनः कायशुद्धये गप्याद् स्नानमहं करिष्ये,
कुरुष्व । अमुक गोत्रायाः अस्मन्मातुः अमुकी देव्याः यमुस्वरूपाया यः सुरैरिति
व्यसिदित्यपि पाठोऽल्पमेव ।

सप्तव्याधादशाणेषु मृगा कालं जरे गिरौ । चक्रवाका मरुद्वीपे हसा
सप्तमानमे । वेपिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगा । प्रस्थिता दीर्घ
मध्यान यूय निमवसीन्थ । श्राद्धकाले गया ध्यात्वा ध्यात्वा देव गदाधर
इति पठित्वा । अपसव्य विधाय मनसा च पितृन्मातृ) ध्यात्वा । तत
अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितु अमुक शर्मणे वसुस्वरूपस्य सावत्सरीकैकोदिष्ट
क्षयाद् श्राद्ध समारमे इति पठेत् । मध्येन पचक्रोश गयाक्षेत्र क्रोशमेकं
गयाशिर । यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितृणां दत्तमक्षयम् । ततोऽपसव्येन ।
तिलमाटकं गृहीत्वा वामहस्ता । ॐ सोमस्य नीविरसि त्विष्णो
शर्मासि शर्मयानमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुमस्या वृषीव वृधी इति
नीवां वध्या । ततोदिग्बन्धनम् । मोटकान् गृहीत्वा । अग्निप्रात्ता
पितृगणाः प्रार्थारक्षतु मेदिशम् तथा रक्षिष्व पातु यामी येपितरव्या ।
प्रतीची मात्र्यपा पातु उदीची मयि सोमपा । विदिशश्चगणा सर्वे
रक्षन्तुध्व मृतो पिवा रनोभूत पिशाचेभ्यस्तथै वासुर दोपत । मर्षतश्चा
विरस्तेषा यमोरक्षा करोतुमे । तिलारक्षतु इति । जान्दभारक्षन्तु राक्षसान्
पर्कि वैश्रोत्रियो रक्षेदिति सर्वरक्षन् । अध ऊर्ध्वं चकाणेषु हविष्मतश्च
सर्वदा । तत सव्येन सामान् कुशान् गृहीत्वा । वमं पात्रस्थ जलमभि-
लोडयेत् । ॐ यदेवादेव हेडज वेवासश्च वृमाव्वयम् । अग्निर्मात्तमा
देन सो विश्वानमुचत्यध्वस यदि दिवा यदि नक्षत्रेणा ध्व सिचवृमाव्व
यम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुचत्वध्वस याद जाप्र यदि-
स्वप्नध्वनाध्वसिचवृत्रयम् । सूर्योमातस्मा देनसो विश्वान् मुचत्वध्वस ।
गायत्र्याया । ततो दर्भतिलयुत तञ्जल गृहीत्वा, पितृानमुतार्थ्यं । शूद्रदि-
ष्टिद्रूपित पाकं पूनोऽस्तु । गायत्र्याया सरोक्ष्य । प्रतिघ्ना । ॐ विष्णु
३ नम परामात्मने श्री पुराण पुरूपोत्तमाय । अत्र । पृथिव्या जम्बूद्वीपे
भरतग्रन्थे, आर्यावर्ते पुष्पक्षेत्रे । हिमवत्पर्वतैकदेशे । ब्रह्मणे द्वितीय
पराद्धे । श्रीवेणुवाराहकल्पे वैत्र प्रसन्नप्रन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे
वृत्रप्रेता द्वापराते कलियुगस्य प्रथमचरणे पञ्चान्दाना मध्य, अमुकनाम
मरुतरे, अमुकायने, अमुकतो, अमुकामे, अमुक पक्षे तिथो अमुक
गोत्रोत्तम, अमुक राशि, अमुक शर्माह, अपसव्य । अमुकगोत्रस्या
ऽस्मत्पितु अमुक गमणो वसुस्वरूपस्य अक्षय तृपि काननया अर्घ्यपिण्ड
सहित, एव द्रिष्टव्याद् श्राद्धविधिना परवान्नेन सावत्सरीकैकोदिष्ट
क्षयाद् श्राद्ध करिष्ये । ॐ कुरुष्व । इति प्रत्युक्ति । तत आसन ।
तिलमोटकं गृहीत्वा । अत्रे अमुक गोत्राभ्याऽस्मत्पितु अमुक शर्मणो
वसुस्वरूपस्य - अस्मत् सावत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाद् श्राद्धे इदमासनमस्तु ।
मयन । भूर्भुव स्व इत् मासतमाभ्यता मास्ये । ततो हस्तार्घ्यं संपातनम् ।

भूमौ शंख चक्रादिकं लिखित्वा आसनं आसने, पात्रं पात्रे, पवित्रम् पवित्रेस्थौ वैष्णव्यौ० शन्नो देवो रिति जलम् । तिलोसीति तिलान् गन्ध पुष्पाक्षतादि तूष्णीं निक्षिपेत् । भो ब्रह्मन् पितृर्घपात्रं सम्पन्नमस्तु अस्तु सपन्नम् । इत्याद्यं । सव्येन । पवित्रं गृहीत्वा । विप्रहस्ते समर्प्य, सपवित्रेषु हस्तेषु ॐ यादिष्वया आपः पयसा संभवुवूर्था ऽ अन्तरिक्षा ऽ उतपाथं-वोर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽ आप. शिवाः शं ३ स्यो नाः सुहवा भवन्तु । अद्येह, अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मन् । वसुस्वरूप, अस्मिन् साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्धे, एपतेहस्तार्घोऽस्ति । पुनः प्रत्यर्घ्यं च । अर्घोदकं श्रियं दद्यात्पुत्र पौत्रादि वर्द्धनम् । यस्मात्स्माच्छिवं-मेस्यादिह लोके परत्र च । इति मूर्ध्नि अभिषिञ्च्य । अपसव्येन, पितृ वामभागे । कुशानास्नीर्य्य । तदुपरि सपवित्रम् अर्घपात्रम् । पितृभ्यः स्थानमसीतिन्युवर्जं कृत्वा तदुपरिस्वधा वाचनीयान् स पवित्रान् प्रीन्-कुशान् दक्षिणाप्रान् संस्थाप्य । आचारात् शुन्धन्तां लोकाः पितृपदना पितृपदन मसीति संप्रोक्ष्य । पितृभ्यः स्वधायिभ्य इति पूजनम् । ततोऽगुष्टं पवित्रे त्यक्तवा । पितृब्राह्मणार्चनंविधावन्नमः ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः, प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षत्र पितरो मीम-दन्त पितरो तीनृपन्त पितरः पितरः शुंधध्वम् । गन्धोऽस्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि । धूप दीप वस्त्र भूषण ताम्बूलादि दत्त्वा पुनः पवित्रे करे कृत्वा । अद्येह अमुक गोत्रः । अस्मिन्पितः । अमुक-शर्मन् । वसुस्वरूप अस्मिन्साम्बत्सरीकैकोद्दिष्ट क्षयाह श्राद्ध विप्रार्चन विधाधिमानि गन्धाक्षत, पुष्प, तुलसीदल दीप, वासो भूषण ताम्बूला-दीनि महत्तानि ते स्वधा । विप्रार्चन विधेः सर्वपरिपूर्णमस्तु । अस्तु परि-पूर्णम् । गन्धादि दानाचमनम् । सव्येन । स्वयमाचम्य । अपसव्येन । ब्राह्मणमाचामयेत् । सव्येन । अच्युत स्मरणम् । ततो विष्णवे नैवेद्यं परिवेशय समर्पयेत् । नाव्या ऽ आसीदन्तरिक्षं ३ शीष्णोद्यौः समवाचत पद्भ्यां भू० ॥ इति नैवेद्यं । अपसव्यं विधाय । यथाचक्रायुधो विष्णुस्त्रै-परिरक्षति । एवं मण्डलमस्माकं सर्वभूतानिरक्षतु । इति मन्मना चतुष्कोण मण्डलं विधाय । तदुपरि भोजनपात्रं संस्थाप्य । सव्यंप्रणिधाय । अन्नं परिवेशय । गायत्र्या अन्नं संप्रोक्ष्य । अपसव्येन । अन्याचितवाम जानृः ।

अमुक गोत्रायाः अस्मत्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः × अमुक गोत्रायाः अस्मत्मातुः अमुकी देव्याः वसुस्वरूपायाः × अमुक गोत्रे अस्म-त्मातः अमुकी देवि वसुस्वरूपे ।+

स्वस्तिका कृतिना उद्धमुग्नेन । दक्षिणो परिस्थितेन । वाम हस्तेन ।
मधु मधु इतिपात्रमालम्ब्य जपति । पृथिवीत्ते पात्रं । द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य
मुग्ने । अमृतेऽमृतं जुहोमि । विष्णो कव्य ६ रक्ष अप्रा दाक्षिण्येन
तिलान्विकीर्य्य । अग्रहता ऽसुरारक्षा ६ सि व्येदिपदः । अंगुष्ठमहणम् ।
इदं विष्णुविषकमेत्रेवा निदधे पदम् समूदमस्य पा ६ सुरे । इदमन्नं
इमा आपः इदमाज्यं इदं शाकादिकं सर्वं कव्यम् । अचेह अमुक गोत्राय
अस्मिन्पित्रेऽमुक शर्मणे वसुस्वरूपाय साम्बत् मरीकैकोदिष्ट च्याह
श्राद्धे । इदमन्नं इमा आपः । इदमाज्यं इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं ।
यत्परिवेष्ट्यमाणं ब्राह्मणास्यात्पितृ पर्यन्तं । ब्राह्मणेभ्य आत्पितृदास्यमान
मन्न च अमृतस्वरूपं महत्तं तेष्ववा । ॐ येचेह पितरो येच नेह योष्व
विद्मयां २५ उचनप्र० इति पोशानदत्त्वा । भो ब्राह्मणा यथा सुरेन
भुङ्क्ष्वम् । सुंजममहे । ततः सन्न्येन अणव व्याहृति पूर्विका । गायत्री
मध्विति मधुमती ऋक् त्रयञ्च पठेत् । ॐ मधु ३ मधुवाताऽ ऋतायते ।
मधुत्तरन्ति सिन्धवः । माध्वी० ॥ ॐ मधु ३ यथा शच्या पितृ शुक्तं,
आयुः शिशान० इत्यादि पूरुप सूक्तं सप्तदशर्चोरुचित्स्वादीनशनतसु
ब्राह्मणेषु पठेन् । ततस्तुलसी शर्करा गव्यदुग्धात्तम मधुतिल गङ्गाजल-
युतमन्नंताम्रादि पात्रे कृत्वा । कर्मपात्रोदकं विष्णुनिघेदितं भक्तमपि-
दत्त्वा । अपसन्न्येन पिण्डनिर्माणं । विकिरदानं । नैऋत्यां दिशि कुशत्रय
भूमौ क्षिप्त्वा आसनं । असंसृष्ट प्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनां ।
वच्छिद्यभागधेयानां द्रमेपुविकिरासनम् । इत्यासनम् दत्त्वा । सजल
तिलमोटक युतमन्नं विकिरेत् । अग्निदग्धाश्चयेजीवा येष्य दग्धाःकुलेमम
भूमौइत्तेन तृप्यन्तु तृप्त्वा यातुं परांगतिम् । येषानं पचते माता येषानं पचते
पिता । वच्छिद्यं ये च काञ्चन्ति । तेभ्योऽन्नं दत्तमक्षयम् । वच्छिद्य
भागधेयेभ्यो नमः । इति गन्वात्त पुष्पैः पूजनं । अंगुष्ठ पवित्रे त्यक्त्वा ।
हस्तां पादौ प्रक्षाल्य । सन्न्येनाचम्य । ततः श्राद्ध देशमागत्य । अन्येऽंगुष्ठ
पवित्रे करयोः कृत्वा चमेन् । अपसन्न्येन । ब्राह्मणहस्ते सकृदयो दत्त्वा ।
सन्न्येन । पूर्ववद्गायत्रीमधुमती मध्विति च जपित्वा । भो ब्राह्मणा
अस्मिन् पाकमध्ये यत्किंचिद्रोचने तत्प्रतिगृह्यताम् । सुवदितं । शेषान्नेन
कि क्रियताम् । इष्टैः सहसुज्यतां । अपसन्न्येन । पिण्डदानार्थं वेदिका
लेपनं गोमयेन अग्रहताः असुरारक्षा ६ सिव्वेदिपदः । इति रेखा करणं
कुरोत । तलमुकमूधारणम् , ॐ येरूपाणि प्रतिमुञ्चमानाः । असुग संत-
म्बधया चरन्ति परापरो निपुरो ये भरत्यग्निष्टां त्त्रोकात्प्रणादात्यस्मात् ।
अपनेजनम् । सतिनमोटक जलं गृहीत्वा । अचेह अमुक गोत्रः ।
अस्मदिगतः अमुक शर्मन् । वसुस्वरूप । अस्मिन्साम्बत्मरीकैकोदिष्ट

क्षयाह श्राद्धे पिण्डासने अग्नेनिच्य तत उपमूल लूनकुशास्तरणम् ।
 सव्येन । पदस्मरणम् ईशानं विष्णुकमलासनं कातिक्यं वह्नितार्कं
 रजनीशं गणेश्वराणां, क्रौंचामरेज्यं कलशौद्धवकाशयपानां पादान्नमामि
 सततं पितृमुक्तिहेतोः । गङ्गागयाग्नीनं मस्मृत्यं । गङ्गायै नमः गयायै
 नमः । गदाधराय नमः । कुरुक्षेत्राय नमः । श्रीतीर्थराजप्रयागाय नमः ।
 पितृस्वरूपं ध्यात्वा । भो ब्राह्मणं युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदानमहं करिष्ये ।
 ॐ कुरुष्व तनोपसव्येन । तिलमोटकयुतं । पिण्डं गृहीत्वा । वाम
 जान्वाच्यं । अद्येह अमुकं गोत्रं अस्मत्पितॄणां । अमुकं शर्मन् वसुस्वरूपं ।
 अस्मिन्सांस्वत्सरीरैकोद्दिष्टं क्षयाह श्राद्धे । एषाऽन्नं पिण्डोऽमृतं स्वरूपो
 महत्तस्ते स्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या । इदमुदकं गाङ्गा गङ्गोदकेऽसति
 गङ्गाजलं तुल्यं वा अमुकं गोत्राय 'गोत्रायै' अस्मत्पित्रे । (अस्मिन्मात्रे)
 अमुकं शर्मणे (अमुकीदेव्यै) वसुस्वरूपाय वसुस्वरूपायै । आचाः ।
 लेपं भागिनाभयं भागोऽस्तु । इति लेपं भागं पिण्डपार्श्वे दद्यात् ।
 पिण्डास्तरणं कुरोप । करोन्मार्जनं कृत्वा । हस्तं प्रच्छालनम् । सव्येन ।
 उदङ्मुनेन मरुन्नियमनं । ततः परावृत्त्यं । अपसव्येन । अमीमदन्तं
 पितरो यथा भागं मां वृषायिपतॄणां । ततः प्रत्यवने जनम् । अद्येह - अमुकं
 गोत्रं अस्मत्पितॄणां । अमुकं शर्मन् वसुस्वरूपं अस्मिन् सांस्वत्सरीरैकोद्दिष्टं
 क्षयाह श्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निच्यं । किञ्चिन्नो विविस्त्रं सनम् । नमो व इति
 पङ्कजलिकरणम् । ॐ नमो व पितॄणामाय नमो व पितॄणां पोषाय ॥
 त्रिगुणितं सूत्रदानम् । एतद् पितॄणां वासं आघत्तं । उर्जकरणं
 कर्मपात्रोदकेन । ॐ ऊर्जं हन्तीरमृतं घृतं पयं कीलालं परिश्रतम्
 स्वधास्थं तर्पयत मे पितॄणां । सव्येन । देवताभ्यं इति त्रिर्लेपं भो ब्राह्मणा
 युष्मदनुज्ञया पिण्डार्चनमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्वेति प्रत्युक्तिः । ततः
 अपसव्येन । पिण्डार्चा । पिण्डार्चनविधावन्नमः । गन्धोस्तु स्वधा ।
 अक्षता पुत्राणि तुलसी दलानि । पितृभ्यं स्वधायिभ्यं स्वधानम
 पितामहेभ्यं स्वधायिभ्यं स्वधानमप्यपिता ॥ वस्त्रं । धूपं, दीपं, नैवेद्यं,
 ताम्बूलं भूषणं च समर्प्यं । अद्येह अमुकं गोत्रं अस्मत्पितॄणां अमुकं शर्मन्-
 वसुस्वरूपं अस्मिन्सांस्वत्सरीरैकोद्दिष्टं क्षयाह श्राद्धे । पिण्डार्चनविधि-
 विमानं गन्धाक्षततुलसीदलवासो धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं भूषणानि

अमुकगोत्रं अस्मत्मात्रं अमुकीदेवाय वसुस्वरूपं - अमुकगोत्रे अस्मत्मात्रं
 अमुकीदेवाय वसुस्वरूपं ।

अनुद्वयं प्र अस्मत्मात्रं अमुकीदेवाय वसुस्वरूपे - अमुकगोत्रे अस्मत्मात्रं
 अमुकीदेवाय वसुस्वरूपं ।

मंदतानि तस्वधा । सव्येन । पिएढार्चन विधेः सर्वपरिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ततः पिएढाम भूमौ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् । शिवा आपः सन्तु २ । विप्रकरे जलदानं । अपांमध्ये स्थिता देवाः सर्वमस्तु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणस्य करे न्यस्तः शिवा आपो भवन्तु मे । सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु । लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । लक्ष्मीर्वसति सदा गोष्ठे सौमनस्यं सदास्तुमे । अक्षता चारिष्टं धन्तु । अक्षतं चास्तु मे नित्यं शाति पुष्टिकरं परम् । यद्यच्छेयस्करं लोके । तत्तदस्तु सदा मम । ततः कुशैः कर्मपात्रोदकेन । मूर्द्धन्याभिपेकं धुष्यात् । मम कुले दीर्घमायुःस्तु । अस्तु शान्ति रस्तु । अस्तु पुष्टिरस्तु अस्तु वृद्धिरस्तु । यच्छेयस्तदस्तु । यत्पापं रोगः शोको दुःखः दारिद्र्यं तत्प्रतिहतमस्तु, अमृताभिपेकोऽस्तु । ततोऽक्षयोदक दानम् । अक्षय्यन्तु विप्रकरणं अपसव्येन । अघेह + अमुक गोत्रस्य अस्मत्पितुः अमुक शर्मणो वसुस्वरूपस्य । अस्मिन्साम्बत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं यदत्तं तदक्षयमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । सव्येन प्रार्थनाशीघ्रदणम् । अघोराः पितरः सन्तु २ । गोत्रन्नो वद्धंतां । दातारानोभि वद्धन्ताम् । वेदाः वद्धन्ताम् वद्धन्ताम् । सन्तदि वद्धन्ताम् । श्रद्धा च नोमा द्यगमत् मागाः । बहुदेयं चनोऽस्तु । अस्तु अन्नं चनो बहुभवेत् भवतु । अतिथि ऋचलभेमहि लभध्वम् । याचितारश्चनः सन्तु मास्मयाचिष्मक्रंचन मायावेथाः एता एव आशिषः सत्याः सन्तु २ । ततः स्वधावाचनम् । सव्येन । भो ब्राह्मणः युष्मदनुज्ञया स्वधां वाचयिष्ये वाच्यताम् । अपसव्येन । स्वधावाचनीयान् व्रीन् कुशान् पिएढो परि संस्थाप्य । तिलमोटकंजलञ्च गृहीत्वा । अघेह + अमुक गोत्रेभ्यो ऽ स्मत्पितृभ्यो ऽ अमुक शर्मण्यो वसुस्वरूपेभ्योऽस्मिन् साम्बत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धे । ब्रह्मन् मधु स्वधोच्यताम् अस्तुस्वधा । स्वधावाचनीये ध्वपोनिपं चति । ॐ उर्ज्ववह्नितरमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रतम् । स्वधास्य तर्पयत मे पितृन् । दुग्धेनापूर्जकरण माचारात् । केचिन्मते नीराजनम् । उत्तानं पात्रं कृत्वा ॥ पितरः स्वर्गलोके प्रस्थिता भवन्तु । सव्येन दक्षिणामकल्पः । अघेह अमुक गोत्रस्य । अस्मत्पितुः अमुक शर्मणे वसु स्वरूपस्य । अक्षय तृप्ति प्राप्त्यर्थं कृतस्यास्य । साम्बत्सरीकैकोदिष्ट क्षयाह श्राद्धस्य । साज्ञता सिध्यर्थं न्यूनातिरिक्त परिप्रत्यर्थं इदं रजतं वा

अमुक गोत्रायाः ऽ अस्मन्कातुः अमकी देव्याः वसुस्वरूपायाः ॥
अमुक गोत्रयाः अस्मन्कातुः अमकी देव्याः वसु स्वरूपायाः ॥ गोत्राभ्यः
मन्मातृभ्यः अमकीदेवीभ्यः वसुस्वरूपाभ्यः ।

रजतनिपक्रयिणीं इमां दक्षिणा श्राद्धभोक्तृ ब्राह्मणेभ्योऽन्येभ्योपि विभज्य
 दानुमुत्सृजे । ॐ तन्सन्नमम । सत्यानुष्ठान सम्पन्ना. सर्गदायज्ञ-
 युद्धय पितृमातृपरारचैव । सत्त्वस्मन् इज्जनानरा, अज्ञता., पान्तु स्वार्सितु
 भवन्तो ब्रवन्तु । स्वस्तीतिविप्रोक्ति । विशेष पूजाः । पित्रिभ्य
 स्वधायिम्य इति । आयु प्रजाधनं विद्या । स्वर्ग
 मोक्षसुखानिच । प्रयच्छन्ति तथा राज्य नृणां प्रीता पितामहा । आयु-
 पुत्रान् यशः स्वर्ग । कीर्तिपुपुष्टिवलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्य
 प्राप्नुयां पितृपूजनात् । ततोपसन्धेन । पिण्डमुत्थाप्य । सव्येनाब्राह्म
 अपसव्येन । पात्रान्तरेनिधाय । पिण्डस्थाने शंखचक्रादिक लिखित्वा ।
 गन्धपुष्पपाक्षतै पूजयेन् । पिण्डस्थाने अन्ननम गन्ध अक्षता पुष्पाणि ।
 सव्येन तत्र दीपं सस्थाप्य । पट ऋतून् पूजयेत् । ॐ वशन्ताय नम ।
 ॐ प्रीष्माय नमः । ॐ वर्षाम्यो नम । ॐ शरदे नम. । ॐ हेमन्ताय
 नमः । ॐ शिशिराय नम. । ततो हस्तौ संहतौ कृत्वा । पातु पितृगणा.
 सर्वे यस्मात्स्यानादुपागता । सर्वे ते हृष्टमनस सर्वान् कामान्ददन्तुमे ।
 ये लोका दानशीलाना । येलोका पुण्य कर्मणाम् । सम्पूर्णांसर्वभोगैस्तु ।
 तान् ब्रजध्वसुपुष्कलान् । इहास्माक शिर्शातिरायुरारोग्यसम्पद. । वृद्धि
 मन्तानवर्गस्य जायनामुत्तरोत्तरा । दीपस्थाने दीप । अपसन्धेन । पिण्ड-
 स्थाने पिण्डा । अमञ्जरम भुक्ष्य । य कश्चित्पितृरूपेण । तिष्ठते
 परमेस्वर । सोऽयंश्राद्ध प्रदानेन तृप्तिं यायतु शाश्वतीम् । गयाया पितृ-
 रूपेण स्वयमेको जनार्दन । यं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्ष मुन्यते च षष्ठ-
 त्रयान् । पञ्चमोश गथानेत्रं । कोशमेक गयाशिर । यत्रयत्रस्मरिष्यामि
 पितृणा दत्तमक्षयम्, शमीपत्रममाणेन पिण्ड दद्याद्गयाशिरे, उद्वरेत्सप्त
 गोत्राणा कुलमेकोत्तर शतम् । पितु शत गुणंपुण्यं महत्त्वं मातु रुच्यते ।
 भगिन्या शतमाहस्रं, मौद्व्ये दत्तमक्षयम् । सव्येन । अद्यदिने अपरमपि
 आमं पश्चिमिरेण्यं उद्यास्तमर्च्यन्, यदत्तं यदास्ये तन्मृगं द्वारे अमृतौ भूतते
 स्वधा । देवताभ्य पितृभ्यश्च, महायोगीभ्यश्च । नम स्वहायै । नित्य
 नेव नमो नम । त्रि पटित्वात्मन व्याधा दशाक्षेपु । मृगा कालजरेगिरी
 चक्रपाका मरुद्वीपे, हस्ता मरुमिमानमे । तेभि जाता कुक्षेत्रे, माह्वणा
 वेदपारगा । प्रम्यितादीर्घमध्वानं यूयं किंमवमीदथ । श्राद्धकाले गयां
 ध्यात्वा ध्यात्वादेवगदाधरम् । मनसा चपितग्ध्यात्वा । मानरं वा ततो-
 पसव्येन । अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितु अमुकगर्भणो । वसुवर्षस्य
 माम्बन्तुमुदीरैकोदिष्टयाद् भाद्रं विमृते । सव्यम् । इदंश्राद्धमया
 विधिहीनं-कालहीनं, वाक्यहीनं, अर्थाहीनं, दक्षिणाहीनं, भायन्तहीनं
 यत्कृतं तान् मुद्गन्तमस्तु । प्रमादात्तौभाङ्गयादयाभ्रष्टं तन् विष्णो प्रमाणात् ।

ब्राह्मण वचनात्सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । अपमन्व्येन । कुशेन
 विप्रस्पर्शः । उक्तिष्टेति ब्राह्मणमुत्थापयेत् । ॐ उक्तिष्टब्राह्मणस्पते देवयं
 तत्वेमहे । उपयन्तुमरुतः स्वधानवऽइन्द्रोप्युशर्मं वाचा । इति ब्राह्मण-
 मुत्थाप्य । स्थानान्तरे निधाय । अभिरम्यताम् । इतिविसर्जयेत् । अभि-
 रतारम् । इति प्रत्युक्तिः । सव्येन । कर्मपात्रं गृहीत्वा । आमावाजस्ये
 त्वनुब्रज्य । प्रदक्षिणी करणम् । ॐ आमाव्वाजस्यप्रसवो जगम्या ।
 देमेद्यावा पृथिवीद्विश्वरूपे । आमागन्ताम्पितरा मातरा चामासोमोऽ-
 मृतत्वेनयस्यात् इत्यनुब्रज्यप्रदक्षिणीकृत्वा नमस्कुर्यात् । कर्मपात्रं विप्रपा-
 दाग्नेनिनीत्वा । अपसव्येन । कुशब्राह्मणस्यशिरवा मोचनंकृत्वा । नीवीं
 विसृज्य पाणिना दीपं निर्वाप्य सव्येनाचम्य । यस्यन्मृत्वा च नामोक्त्या ।
 तपोयज्ञ क्रियादिषु न्यूनं सम्पूर्णांतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम् । ॐ
 अच्युताय नमः ३ कायेनत्रासचा मनमेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वानु सृतिः
 स्वभावान् । करोमि यत्सकलंपास्मै नारायण्येति समर्पयेत् । चतुर्भिश्च
 चतुर्भिर्य द्वाभ्यां पञ्चभिरेवच हूयनेच पुनर्द्वाभ्या तस्मैयज्ञात्मनेनमः ।
 अद्यमे सफलं जन्म-अद्यमे सफलं तपः । अद्यमे गोत्रजाः सर्वे यातावोऽ-
 नुप्रहादिवम् । पत्रशाकादि दानेनकलेशिता युयमी दृशः ४ तत् क्लेशमिह
 संजातं विमृत्यन्तुमर्हथ । सूक्तस्तोत्र जपं त्यक्त्वा । पिण्डाघ्राणञ्चदक्षि-
 णाम् । आह्वानंस्वागत्तंचार्घं विना च परिवेषणम् । विसर्जनं सौमनस्य ।
 माशिपं प्रार्थनं तथा । पित्रामन्यन् प्रकर्त्तव्यं प्राचीना वीतिनासदा ॥
 इति एकोदिष्टश्राद्धविधिः ।

अथ पार्वणश्राद्धप्रयोगः ।

तत्रा पराहोस्तात्वा । मध्याह्न सङ्कल्पः । यवकुश जलान्यादाय ।
 ॐ विष्णु ३ । नमः परमात्मने श्रीब्रह्मपुराण पुरुषोत्तमाय तत्सदिह
 पृथिव्यां जन्मृद्वीपे भरतरण्येष्टे आप्यावर्त्ते पुण्यक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे
 ब्रह्मणो द्वितीचपराद्धे श्रीश्वेत वाराहनाम्निकल्पे कृतत्रेताद्वापरान्ते अष्टा-
 विंशति मे कलियुगे कलियुगस्य प्रथमचरणे वैवस्वतनाम मन्वन्तरेप-
 ष्ठद्वानाममध्येऽमुक नाममन्वत्सरे दक्षिणायने शरदत्तो (धाद्रश्चेत्
 षष्ठां श्रुतौ) आश्विनमासे कृष्णपक्षे यथानाम नक्षत्र योग करण मुहूर्त
 वारान्वितायामुक वारान्वितायांगमुषपुण्यतिथौ । अमुकगोत्रोऽन्नोऽमुक-
 राशिऽमुकशर्माऽऽत् । अपमन्व्यं कृत्या तिलमोटकमहितं जलं गृहीत्वा ।
 अमुक गोत्राणामम्मन्विषितामह प्रविषामहानाममुकामुक शर्मणां-
 मपनीकानां यमुकद्रादित्यस्वरूपाणामक्षयन्धि प्राजिकामनया पुरुरवो-

द्रवसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं सकलपापक्षयार्थं पार्वणश्राद्ध विधिना ऽ
 मुकपार्वणश्राद्धाधिकार सिद्धयर्थमात्म शुद्धयर्थं ॥ मध्याह्नस्नानमहं
 करिष्ये ॥ ॐ कुरुष्वेतिप्रसन्नयुक्तिः ॥ इति सङ्कल्प्य ॥ घौतवामसी परि-
 धाय तर्पणं कृत्वा ॥ श्राद्ध देशो गत्वा । दीपं प्रज्वालत्याचम्य पवित्रपाणि-
 भुंत्वा । शुक्लां वरधर विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदन ध्याये
 त्सवविष्णोपशान्तये । इति विष्णु सम्पूज्य हस्तौ संहतौकृत्वा । ॐ यं
 ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुराणं स्तथान्ये । विश्वोद्गतेःकारण
 मोश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय । अभीप्सोतार्थसिद्धयर्थं पूज्यते +
 त्रिदशैरपि सर्वविघ्नच्छिद्रे तस्मै गणाधिपतये नमः । इति पुष्पाञ्जलि-
 दत्त्वा । ब्राह्मणान् तैलाम्यङ्गपूर्वकमण्डलाद्बहिः संस्ताप्य प्रतिष्ठा । एतन्ते
 देवसवितर्यज्ञम्राहुवृंहस्पतये ब्रह्मण्येतेन यज्ञ मवतेनयज्ञरतिन्तेन मानव
 मनोजूतिञ्जुपतामाञ्ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ३ समिमं
 द्यातु । विश्वेदेवासऽइहमादथनतामो २ म्प्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवः ।
 वैश्वदैविक कुशब्राह्मण सुप्रतिष्ठितो भव । एवं पैतृक ब्राह्मणादीनामपि ।
 ॐ एतन्त इति पठित्वा । ॐ भूर्भुवः । पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धि
 कुशब्राह्मण सुप्रतिष्ठितो भव । कुशोसि कुशपुत्रोसि
 ब्रह्मणा निर्मितः पुरा । त्र्यारचिते सोर्चितोस्तु यम्याहं नामकीर्तये ।
 एव मातामह ब्राह्मणस्यापि प्रतिष्ठा । मातामह सम्बन्धि कुशब्राह्मण
 सुप्रतिष्ठितो भव । कुशोसिकुशपुत्रोसीति पठित्वा । यवान् गृहीत्वा
 अद्यहेत्यादि । अमुकसम्बत्सरे । दक्षिणायने । शरदृतौ अश्विन मासे ।
 महालयपरपक्षे कन्यांगते सवितरि । (भाद्रे सिंहस्थिते इति पठेत्) अमु-
 कतिथौ । अमुकगोत्राऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां । अमुकगोत्रा-
 स्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसम्बन्धिनां । पुरुषो मारुवसंज्ञकानां ।
 विश्वपाण्डेयानां । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । वैश्वदैविक कृत्ये ।
 कुशब्राह्मण त्वं मया निमन्त्रितः निमन्त्रितोऽस्मीति प्रत्युक्तिः । हस्तौ-
 मंहतौकृत्वा अक्रोचनैः शोचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः । भवितव्यं भव-
 द्विरच मयाच श्राद्धकारिणा । सर्वायास विनिर्मुक्तैः कामक्रोध विव-
 र्जितैः । भवितव्यं भवद्विर्नोद्यतने श्राद्धकर्मणि आगतं वः सुस्वगतम् ।
 एतद्बः पाद्यमस्तु । यत्फलं कपिलादाने कार्त्तिकयां ज्येष्ठपुष्करे । तत्फलं
 पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणाम्पादपूजने । ततोपसव्येन । तिस्रान् गृहीत्वा ।
 अद्य अमुक सम्बत्सरे दक्षिणायने शरदृतावाश्विने मासि । महा-
 लायापरपक्षे । कन्यांगते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्राणां । अस्म-
 न्पितृ पितामहप्रपितामहानां । अमुकामुक्तं गार्भ्याणां । सपत्निकानां
 बसुहृदादित्य स्वरूपाणां । अद्य कर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे, पित्रा-

दित्रय श्राद्धवृत्त्ये कुशत्रहान् त्वमया निमन्त्रित निमन्त्रितोऽस्मि । इति प्रयुक्ति । बहुव्येते भो नारायण भवतो मया निमन्त्रिता निमन्त्रिता स्म । अक्रोधनैरिति पठित्वा । सव्येन । आगतव सुस्वागतम् । अपसव्येन । एतद् पाद्यमस्तु । पत्फलमिति पठेत् । ततो मातामहाना । अपसव्यम् । अद्येहेत्यादि अमुक गोत्राणा । अस्म न्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमाता महाना । अमुकामुक शर्मणा सपत्निकाना । वसुन्द्रादित्य स्वरूपाणा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । मातामहादिवत्रय श्राद्धवृत्त्ये । कुशत्रहान् त्वमया निमन्त्रित ॥ निमन्त्रितोऽस्मि । इति प्रयुक्ति ॥ अक्रोधनैरिति पठित्वा । स येन । आगतं सुस्वागतम् । अपसव्येन । एतद् पाद्यमस्तु । यत्फलमिति पठेत् । सव्येन पादार्घ्यं सपाद्यगन्धपुष्पात्त वादि तूष्णींनिश्चिप्य । पादार्घ्यपात्र गृहीत्वा । अद्येह अमुक सम्वत्सरे । अमुकायने । अमुकर्त्तौ । अमुकमास । अमुकपक्षे । अमुक तिथौ । अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रा दित्रय श्रामन्वन्धिन् । अमुकगोत्राऽस्मन्मतामहादिवत्रय श्राद्धसम्बन्धिन् । पुरुखो मार्द्रव सन्नक विश्वेदेवा + अद्यकर्त्तव्ये अमुक पार्वणश्राद्धे । वैश्वदेविक ब्रह्मन्नेपते पादार्घ्योऽस्तु । तत पैतृककर्म । अपसव्येन । पादार्घ्यं सपाद्य । हस्ते गृहीत्वा । अद्येह अमुक सम्वत्सरे दक्षिणायने । शरद्वतीवारिवने मासे । महालयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि । अमुक तिथौ । अमुक गोत्रा अस्मत्पितृ पितामहप्रपिता मह । अमुकामुक शर्मणा सपत्निका । वसुन्द्रादित्यस्वरूपा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे पित्रादिवत्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशत्रहान्नेपते पादार्घ्योऽस्तु । अद्येह । अमुक सम्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद्वती वारिवने मासे । महालया परपक्षे कन्यागते । सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्रा । अन्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा । अमुकामुक शर्मणा सपत्निका । वसुन्द्रादित्य स्वरूपा । अद्यकर्त्तव्ये । अमुक पार्वणश्राद्धे । मातामहादिवत्रय श्राद्धसम्बन्धि कुशत्रहान्नेपते पादार्घ्योऽस्तु । पादार्घ्यदाना चमतम् । सव्येन । स्वयमाचम्य । विश्वेदेवा नाचामयेत् । अपसव्येन । पितृनाश्रण मातामह ब्रह्मणानाचामयेत् । सव्येन । श्राद्ध देशोपदेशानम् । ब्रह्मन्नुत्तिष्ठ । अत्रोपविश्यतामिति । प्राङ्मुखं । वैश्वदेविक ब्राह्मणम् । अपसव्येन । उद्ङ्मुखं । पित्रादि ब्राह्मणेनुपदेशयेत् सव्येन । तत कर्मपात्रपूरणम् । भूमिं शृशेत् । भूमिं भूमिरस्यदितिरस्य विश्वरघाया त्रिवरस्य सुवनस्य धर्त्री प्रथित्री प्यच्छ प्रथित्री द ६५ द प्रथित्री म्मादि ६ मी । भूमौ गच्छत्कादिर्त्तं लिगित्वा । आसन आसने पात्रम् । पात्रे

पवित्रम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ ० ॥ शन्नो देवीरिति जलम् । शन्नो देवीरभिष्टयऽ
 आपो ० । यवोसि यवयास्म द्वेषो यत्रया राती द्विवेत्वान्तरिक्षा यत्त्वापृथि-
 व्यैत्त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृपदनाः पितृपदनमसि । इति यवान्क्षिपेत् ।
 तिलोसि सोम दैवत्यो गोपत्रो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः प्रङ्क्ः ; स्वधया
 पितृल्लोकान्प्रीणाहिनिः स्वाहा । गन्धपुष्पाक्षतादि तृष्णां निक्षिप्य । कर्मपात्रं
 सुसम्पन्नमस्तु । अस्तु सुसम्पन्नम् । तेन जलेनात्मानं सम्प्रोक्ष्य । श्राद्ध-
 सामग्रीश्च सम्प्रोक्ष्य । प्राणायामं विधाय । पुण्डरीकाक्षाय नमः ३ ।
 ॐ अपवित्रः पवि ० । हस्तो संहृतो कृत्वा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च ।
 महायोचोगीभ्य एवच । नमः स्वहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः । इति
 त्रिः पठित्वा ऽ सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः फालं जरे गिरो चक्रवाकाः
 सरद्धीपेहंसाः सरसि मानसे तेषि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः ।
 प्रास्थिता क्षीर्षं गन्धानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा-
 देवं गदाधरम् । मनसा च पितृभ्यात्वा । ततोऽपसव्येन । अद्येहत्याद्युल्लिख्य ।
 अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामहं प्रपितामहानां । अमुकामुक शर्मणां
 सपत्नीकानां वसुरुद्रा दित्यस्वरूपाणां । तथाऽमुक गोत्राणां अस्मन्माता-
 महं प्रमातामहं वृद्धप्रमातामहानां । अमुकामुकशर्मणां सपत्निकानां
 वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां । अक्षयतृप्तिं प्राप्त्यर्थं पुरुखो मार्द्रं व सङ्करं
 विश्वेदेव पूर्वकम् । अमुक पार्वणश्राद्धं समारभे । सव्येन । पञ्चकोशं
 गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गयाशिरः । अनन्त गर्भिणीं साधं क्रौशं द्विदलं मैवच,
 प्रादेशमात्रं त्रिज्ञेयं पवित्रं यत्रङ्गत्रचित् । सप्तव्याधा दशार्णेष्विति पठ-
 नेष्यऽपसव्यमस्ति कुत्र चित् । यत्रयत्र स्मरिष्यामि । पितृणां दत्तमक्षयम् ।
 ततोऽपसव्येन । तिलमोटकं गृहीत्वा । वामं कट्याम् । आरोपयेन् ॐ
 सोमस्य नीविरपिष्विष्णोः शर्मासि शर्मन् यज्ञमानस्येन्द्रियस्य योनिरसि
 सुसत्याः कृपीस्त्रुधि । इति नीवीं बध्वा ततो दिग्ग्रन्थनम् । मोटकान-
 गृहीत्वा । अग्निध्वाताः पितृगणाः प्रार्चयन्तु मे दिशम् । तथा वहिपदः
 पान्तु यामीये पितरस्तथा । प्रतीचीं माज्यपापान्तु । ऊदीचीमपि सोमपाः ।
 विदिशश्च गणाः सर्वैरक्षन्तुर्द्धमधोपिवा । रक्षोभूतपिशाचेभ्यस्तथैवा
 सुरदोपतः, सर्वतरचाधिपस्तेषां, यमोरक्षां करोतुमे । तिलारक्षन्तु दिति-
 जान्दभारक्षन्तु गक्षसान् । पक्तिं वैश्रोत्रियोरक्षेदीतिथिः सर्वैरक्षकः । अत
 ऊर्द्धं च कोणेषु हविष्मं तरच सर्वदा । ततः सरव्येन । सामान्कुरान् गृही-
 ह्या । कर्मपात्रस्यं जलमभि लोडयेत् । ॐ यद्देवादेः संहृदं देवामश्चक्रमा-
 व्ययम् । अग्निर्मा तस्मादेन सो त्रिश्वान्मुञ्चस्व ३ ह्रमः । यद्विदि-
 वायदि मैना ३ सिचकृमाव्ययम् । व्रयुर्मा तस्मादेनसो त्रिश्वान्मुञ्चस्व
 ३ हसः । यद्विजायदप्रदिश्व प्रऽपना ३ सिचकृमा व्रयम् । मूर्ध्नी

मातस्मा देनसो विवश्वान्मुञ्चत्वा ३ हसः । गायत्र्याच । ततो दर्भतिल
युतम् । तज्जलं दिग्बन्धे । सव्यमस्ति । एकेवाम्पुस्तके ।) गृहीत्वा ।
पाकविधानमुत्तार्य्य । शूद्रादि वृष्टिदूपिन् पाकपूतोस्तु श्राद्धयोग्यो भवतु !
इति गायत्र्यान्न सम्प्रोक्ष्य । अथ प्रनिष्ठा । यवकुश जलान्यादाय । ॐ
विष्णुः ३ नमः परमात्माने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय । अत्र पृथिव्यां
जन्मूद्दीपे भरतखण्डे । आर्यावर्तेपट्टथाद्वानां मध्ये । अमुकनामसंस्वत्सरे ।
दक्षिणायने शरदृतौ (भ्राद्र्पेण वर्षा ऋतौ ।) आश्विन मासे । महालया
परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्रोत्पन्नः । अमुक
राशिः । अमुक शर्माहं । अपसव्यम् । तिलमोटकञ्चगृहीत्वा । अमुक-
गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुक शर्मणां
सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां । तथामुकगोत्राणां । अस्मन्मातामह
प्रमातामह वृद्धप्रमात महानां अमुकामुक शर्माणां सपत्निकानां । वसु-
रुद्रादित्य स्वरूपाणां । अक्षय तृप्तिकामनया पुरुरवो मार्द्रव सन्नक
विश्वेदेव पूर्वकं अर्घपिण्डसहित पक्वान्नेन पावणश्राद्ध विधिनामुक-
पार्षणश्राद्धं करिष्ये । ॐ कुरुष्व इति प्रत्युक्तिः । ततः सव्येनासनम् ।
ऋजु कुराद्वय यवानादाय । अद्येहेत्येयादि । अमुक नामसंस्वत्सरे ।
दक्षिणायने शरदृत्तौ आश्विन्य मासे महालयापरपक्षे । कन्यागते
सवितरि । अमुकतिथौ । अमुक गोत्राऽऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसंस्वन्धिना ।
तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्धसंस्वन्धिनां पुरुरवो मार्द्रवसंज्ञ-
कानां । विश्वेषां देवानां इदमासनमस्तु । ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनभा-
ष्यताम् आसामहे । तयोपसव्येन तिलमो टकं गृहीत्वा । पैतृकं कर्म ।
अद्यहेत्यादि । अमुक नाम संस्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद ऋतौ
आश्विन मासे । महा लयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि अमुक तिथौ ।
अमुक गोत्राणां । अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहानां । अमुकामुकशर्मणां ।
सपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अमुकपार्षणश्राद्धे पित्रादित्रय
श्राद्धसंस्वन्धिना कुशप्रदान् । इदमासनमस्तु । सव्येन । भूर्भुवः स्वः इदमासन
भाष्यताम् । आमे । अपसव्यम् । पुनरितिलमोटकम् गृहीत्वा । अद्येह ।
अनुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां । अमुकामुक
शर्माणां । भवदिकानां । वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां । अमुक पार्षण-
श्राद्धं । मातामहादित्रय श्राद्धसंस्वन्धि कुशप्रदान् । इदमासनमस्तु ।
सव्येन भूर्भुवः स्वः इदमासन भाष्यताम् । आमे ततः आवाहनम् ।
सव्य विधाय । कुराद्वययवान गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रा
ऽऽस्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसंस्वन्धिनः तथामुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय
श्राद्धसंस्वन्धिनः पुरुरवो मार्द्रव ऋतुकाश्विन्यश्राद्धेनहमावाहयिष्ये ।

ॐ आवाहय इति प्रत्युक्तिः । ॐ विश्वदेवास ऽ आगत ऋणुताम् ऽ इमं च हवम् । एदंर्वर्हिन्नपीदत । इत्यावाह्य प्रदक्षिणं यवान विकीर्य । ॐ विश्वेदेवाः गृणुतेमं च हवम्मे येऽअन्तरिक्षे य ऽ उपविष्ट । येऽअग्निजिह्वाऽ उतवा यजत्राऽ आसद्यास्मिन्वर्हिपि भादयध्वम् । आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवामहाबलाः । ये यत्र विहिता श्राद्धे सावधाना भवन्तुते ॐ आगच्छत । ततोपसव्येन पितृनावाहयेन् । तिलमोटकं गृहीत्वा । अघेह । शरद् ऋतौ । अश्विनमासे महालयापरपक्षे कन्यां गते सवितरि । अमुक-
 तियो । अमुक गोत्रान् । अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुका अमुकशर्मणः सपत्निका नावसुरुद्रादित्य स्वरूपान् पितृन् । आवाह-
 यिये । ॐ आवाहय । ॐ वसन्तस्त्वा निधि मद्यु शंतः समिधीमहि । उशन्तु शतऽआवह पितृन् हविषेऽअत्तवे । इत्यावाह्याऽ प्रदक्षिणं तिलान् विकीर्य-आयन्तुनः पितरः सोम्या सोग्निध्वात्ताः पथिभिर्हे-
 वयानैः । अस्मिन्द्यज्ञे स्वधया मदन्तोफिञ्चन्तुतेव चन्त्वस्मान् । ये मया निमन्त्रिताः पूर्वं पितरः पितृपक्षगाः । आश्रित्य पितृ कार्येषु साव-
 धाना भवन्तुते । आगच्छन्तु । इति जपेत् । मातामहानावाहयेत् । अपसव्येन । तिलमोटकं गृहीत्वा । अघेह । शरद्ऋतौ । आश्विनमासे महालया परपक्षे । कन्यांगते सवितरि अमुकतियो । अमुकगोत्रान् । अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहान् । अमुकासु क शर्मणः सपत्निकान्वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणाम् मातामहानावाहयिये । ॐ आवा-
 हय । वसन्तस्त्वेत्य नया वाह्याऽप्रदक्षिणं । तिलान् विकीर्य । आयन्तुनः इति जपेत् । आगच्छन्तु । ततः सव्येन । हस्तार्धस्थापनम् । देवाप द्वावेकवा । ततो भूमौ शंखचक्रादिकं लिखित्वा । आसनम् आसने पात्रं । पात्रे पवित्रम् । पवित्रे स्यौ ऋष्येण्यौ सवितुर्व्वः असव ऽ उत्पुनाम्यच्चिद्दहेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । इति पवित्रम् निक्षिपेत् । शन्नोदेवीरभिष्ठयऽ आपोभवन्तु

(यमः) समूहस्तु भवेद्दर्मः पितृणा भद्रकर्मणि । मूलेत लोकाञ्ज-
 यति शकस्यतु महात्मनः । (व्यासः) तर्पणादीनि कार्याणि पितृणा यानि कानिच तानित्युद्दिगुं हर्मसप्तपत्रोवपेपतः । अथ षड्याः कुराः श्राद्ध प्रदीपे । पियडार्या स्तरयेच तर्पणविधौ त्याजानिबुक्ताः कुराःशद्गर्भाः अस्ता-
 यताथ्य पथियेभुक्तौ मलोत्तर्जने । नो वो ब्रह्मगुणो मयास्थित परे दग्वास्तया बन्दिना इति षड्याः । दर्मादीन्स्वयमा हरेत्तद्वृषलानौते स्तुकायां क्रिया ।
 कृपाभावेकाराः । अम्योपि सन्ति विस्तरमयात्र लिखितम् ।

पीतये । शय्योरभिश्रवन्तुन । इति जलम् । चत्रोसीति यवान् गन्धपुष्पा-
 च्छतादि प्रणवेन तूर्णानि वा यथाधिकार निक्षिप्य । एवं रीत्या
 त्रीणि पित्रार्घ्यं पात्राणि । आसनं । आसने पात्रं पात्रं पवित्रम् । पवित्रे-
 स्थीव्येष्णव्याविति । शन्नोदेवीरिति जलम् । तिलोसीति तिलान् ।
 गन्धं पुष्पाक्षतादि प्रणवेन तूर्णानि वा निक्षिप्य । ततः भो ब्राह्मण-
 देवार्घ्यं पात्रपरिपूर्णंस्ताम् । इति प्रत्युक्तिः । एकाघ्यं देवार्घ्यं पात्रं
 परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । ॐ एवं रीत्या पित्रादीनामपि ।
 पित्रर्घ्यं पात्राणि परिपूर्णानिसन्तु । सन्तु यथा माता महाघ्यं पात्राणि
 परिपूर्णानि सन्तु । २ ततः सव्यंविधाय । पवित्रं गृहीत्वा । विप्रहस्ते
 समर्प्य । सपवित्रेषु हस्तेषु ॐ यादिव्याऽ आपःपयसा संवभूवुर्याऽ
 अन्तरिक्षाऽ उत पार्थि वीर्याः हिरण्य वर्णा यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः
 शंथ स्योनाः सुहवा भवन्तु । अद्येह अमुक सम्बन्धरे । दक्षिणायने ।
 शरद् ऋतौ आश्विनमासे महालयया परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुक
 तियो अमुक गोत्राऽस्मत्पित्रादित्रयं श्राद्धं सम्बन्धिनः । तथामुक
 गोत्रास्मन्मानामहादित्रयं श्राद्धसम्बन्धिनःपुरूर वाद्रं व सन्नकविश्वेदेवाः ॐ
 अमुक पार्वणश्राद्धे एषवो हस्तार्घ्योऽस्तु । पुनः प्रत्यर्घ्यं च । पैतृकं कर्म ।
 सव्येन । सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । अर्घ्य-
 पात्रं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्र । अस्मत्पितः अमुक शर्मन्
 सपत्निक वमुस्वाऽप । अमुकपार्वणश्राद्धे एषते हस्तार्घ्योऽस्तु सव्येन ।
 पुनः प्रत्यर्घ्यं च । पुनः सपवित्रेषु हस्तेषु या दिव्या इति पठित्वा ।
 अपसव्यं विधाय, अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रः । अस्मत्पि-
 तामह । अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्र स्वरूप । अमुक पार्वण श्राद्धे ।
 एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन पुनः प्रत्यर्घ्यं च । पुनः सपवित्रेषु या दिव्या
 इति पठित्वा । अपसव्येन । अर्घ्यपात्रं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्र ।
 अस्मत्पिनामह । अमुक शर्मन् सपत्निक । आदित्य स्वरूपं । अमुक
 पार्वणश्राद्धे । एषते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन पुनः प्रत्यर्घ्यं च । सपवित्रेषु
 हस्तेषु या दिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । हस्तार्घ्यपात्रं गृहीत्वा ।

अथ विश्वेदेवाःतत्र शब्रहृहरतिः । इष्ट श्राद्धेभ्यन् दक्षी मत्सोनादी
 त्वेवम् । नेत्रिकि कैफा एकाकीका मेनधुगिलाचनौ । पुरूरवो भार्गवश्च पार्वणे
 ममुदाहृत्य । यत्र यनेषा नाम न शयने । तत्र श्लोका उच्यन्तारणीयः ।
 आगन्धान्धिति ।

ॐ विश्वेदेव विषय शंख दृहरति यन्नं पूर्वशुक्तं तत्र पुरूरवो
 भार्गवश्चेति पाठे पुरूरवनाद्रवश्चेति वेदितव्यम् ।

अद्येह अमुक गोत्र । अस्मन् मातामह । अमुक शर्मन् सपत्निक
 वसुस्वरूप । अमुक पार्वणश्राद्धे एपते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन । पुनः
 प्रत्यर्घ्यं च । सपवित्रेषु हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अप-
 सव्येन । हस्तार्घ्यपात्रं गृहीत्वा अद्येह । अमुक गोत्रः अस्म-
 न्मातामह । अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुक
 पार्वणश्राद्धे एपत हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन । पुनः प्रत्यर्घ्यं च सपवित्रेषु
 हस्तेषु यादिव्या इति पठित्वा । अपसव्येन । हस्तार्घ्यं पात्रं गृहीत्वा ।
 अद्येह । अमुक गोत्र । अस्मद्बृद्धप्रमातामह अमुक शर्मन् सपत्निक ।
 आदित्यस्वरूप । अमुक पार्वण श्राद्धे एपते हस्तार्घ्योऽस्तु । सव्येन ।
 पुनःप्रत्यर्घ्यं च । ततः सर्वान् संश्रवान् प्रथमे पितृ ऋ पात्रे समवनीय ।
 अर्घ्योदकं श्रिय दद्यात्पुत्रपौत्रादि वद्धनम् । यस्मोत्तस्माच्छिवं मेस्या दिह
 लोके पस्त्रच । इति मूर्द्धनि अभिषिच्य । अपसव्येन । पितृधामभागे
 कुशानास्तीर्य । तदुपरि सपवित्रं पित्रर्घ्यपात्रं मातामहार्घ्यपात्रं च पितृभ्यः
 स्थान मसीति न्युवर्जं कृत्वा । तदुपरि स्वधावाचनीयान् सपवित्राम
 त्रीन्कुशान्दक्षिणाग्रान् संस्थाप्य । आचारत् । ॐ शुन्धतांल्लोकाः
 पितृपदनाः पितृपदन मसीति संप्रोक्ष्य । पितृभ्यः स्वधायिभ्य इतिपूजनम् ।
 ततोङ्गुपुत्र पवित्रे स्यक्तवा सव्येन पूजनं । विश्वेषां देवानाम् अर्चनवि-
 धावत्रं नमः । इति विश्वेदेव ब्राह्मणहस्ते जलं दत्त्वा । नमोस्त्वनंताय
 सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिसिरोरुवाहवे । सहस्र नान्ते पुरुषाय शारवते
 सहस्रकोटि युगधारिणे नमः । अनेन गन्धादिभिःपूजनम् । गन्धोऽस्तु
 स्वाहा । यवाः पुष्पाणि । तुलसीदलानि अपसव्येन । पितृणाम् ।
 संविन्धकुशविप्रस्य । अर्चनविधावत्रंनमः । ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः
 स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधा-
 यिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरो मीमदन्तपितरो तीतृपन्त पितरः पितरः
 शुंघच्छम् । अनेनपितृणाम् पूजनम् । नमो वः पितरो रसायेति माताम-

* अत्र श्राद्ध माध्यम् । प्रथमे पात्रे संश्रवान् समवनीय । पात्रं न्युवर्जं
 कृत्य पितृभ्याः स्थानं मसीति पात्रेण ततः प्रथमं पात्रं न्युवर्जं करोति भूमौ ।
 तिल कुशान्दक्षिण मूलाक्षिदिप्य तेषां मुपरिन्यवर्जं मधोमुखं करोति गन्ध्या-
 दिभिः पूजयेदित्युगनाः वैश्यदैविक पात्र संभवा अपि प्रथमे पात्रे निक्षिप्यन्ते-
 एवं मातामह प्रथम पात्रेऽपि संश्रवान् समवनीय न्युवर्जं कृत्वा बक्ष्यमाणं
 कुर्यात् । अत्र प्रथम पात्रं दैवरात्र माहुः । तदयुक्तम् । पितृरात्रं तदुत्तानं
 कृत्वा । विप्रान्विसर्जयदिति । आश्रुतास तत्रतिष्ठति पितरः शौनकी ब्रवीत ।
 सं भव शब्देनार्घ्यं पात्रलग्नापावयवाऽभिधीयन्त नहस्तदन्तच्युताः ।

हानां श्राद्धसम्बन्धि कुशविप्रार्चनविधावत्र नमः शेषं पूर्ववत् । गन्धास्तु स्वधा । अक्षताः पुष्पाणि तुलसीदलानि । धूप दीपौ पुनः पवित्रकरे कृत्वा । सव्येन । यत्र कुशान् जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्रा-
स्मत्पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः तथाऽमुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः । अमुक पार्वणश्राद्धे । पुरुरमादंय संज्ञकाः विश्वेदेवाऽर्चन-
विधाविमानि गन्धाहत् पुष्पतुलसीदल धूपदीपवासोभूषणादीनि महत्तानि यथा विभागं वः स्वाहा । विश्वेदेवसम्बन्धि कुशविप्रार्चन विधेः सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् । तलोपसव्येन । तिला-
मोटक युतं जलं गृहीत्वा । अद्येह । अमुक गोत्राः । अस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महाः । अमुकामुक शर्मणः सपत्निका वसु-
रुद्रादित्य स्वर्गपाः । अमुकपार्वणश्राद्धे । कुशविप्रार्चन विधा-
विमानि जलगन्धाक्षतपुष्पतुलसीदलधूपदीपवासोभूषणादीनि महत्तानि यथा विभागवः विप्रार्चन विधिस्मर्त्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परि-
पूर्णम् । गन्धान् दिदानाचमनम् । सव्येन स्वयमाचम्य । विश्वेदेवब्राह्मण-
माचामयेत् । अपसव्येन-पित्रादिब्राह्मणा माचामयेत् मातामहादि-
ब्राह्मणानप्याचामयेत् । सव्येन । अच्युतस्मरणम् । ततः यथा चक्रायुधो विष्णुश्चैलोक्यम्परिरक्षति । एवमण्डलभस्मां क सर्वभूतानि रक्षतु । इति विश्वेदेवब्राह्मणसमीपे । अपसव्येन । पितृमानामहन्नाह्मणसमीपे भस्मना मण्डले कार्ये । भस्मना चतुष्कोणमण्डलानि विधाय ॐ तेषामुपरि भोजनपात्राणि संस्थाप्य । पितृद्विजसमीपे जलपात्रं संस्थाप्य । धृताक्-
मन्नं पिहितमादाय वद्धत्य सम्प्रोक्ष्य पृच्छति । भो ब्राह्मणा युष्मदनुक्षया जज्ञे, अग्नी करणमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । विप्रपाणी जलेवाग्नीकरण-
होमः । ÷ अपहोमः ÷ अपसव्येन । तिलमोटकयुतमन्नं गृहीत्वा । ॐ आनमये कव्यवाइनाय म्याहा । इदमन्नये कव्य वाइनाय । ॐ सोमाय पितृमते म्याहा । इदं सोमाय पितृमते । किञ्चिद्धतशेषं पित्रादि-
ब्राह्मणेषु दत्त्वा । शेषं पिण्डार्थं रथापयेत् । ततः सव्येन । परिवेषणम् ।

ॐ अग्नीकव्यहोमश्च वसंभ्य उपधीतिना । अपसव्येन वा काव्यो दद्यात् । अग्निमुनेन वा । इति छन्दोगपरिशिष्टे । कभीपानां त्वसव्यमेवविष-
रिगुपस वदपु भुवेति सर्वातिदेशात् । सव्यं तु छन्दोगपरम् । छन्दोगा शुद्धुः सव्येनारसव्येन वाहुपः । इति वृहपाञ्चनस्योक्तेः । अगोपूरं च वच्छाद्दं मापन्द्गुनिरिन्नम् । तिलतेनेन रक्षितं वृत्तमप्यकृतम्गायेत् । चतुष्कोणं द्वि-
बापरय विदोष दारिपस्यद् । मरुत्तापृतिपैरस्य राहस्याम्मुक्षयं गृहम् । इति मनुः ।

प्रथमं विष्णवे नैवेद्यम् । ॐ नाम्याऽआसीदन्तरिक्ष ७
 शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ ॥
 अकल्पयन् । विष्णो साङ्गसपरिवार सवाहन इदं अमृतस्वरूपन्नैवेद्यं
 गृहाण स्वाहा इति निवेद्य । ततो वैश्वदैविकपूर्वकं सुशीतजलसहितो-
 षणान्न परिवेषणम् । रजतादि पात्रेषुकुर्यात् गायत्र्या अन्नसम्प्रादय ।
 अन्वाचितदक्षजानुः स्वस्तिकाकृतिनाऽधोमुखेन वामोपरि स्थितेन दक्षि-
 णहस्तेन ॐ मधु३ इति पात्रमालम्ब्य जपति । पृथिवी तेपात्रं द्यौर-
 पिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमितेऽमृतं जुहोमि । विष्णो हव्यं रक्ष ।
 इति प्रादक्षिण्येन यवान् विकार्य । अपहताऽअसुरा रक्षांसि श्वेदिषदः
 अङ्गुष्ठप्रहरणम् । ॐ इदं विष्णुर्विवचक्रमे त्रेधान्दिषे पदम् । समूढमस्य-
 पाठंसुरे । इदमन्नम् । इमा आपः इदमाज्यम् । इदं शाकादिकं
 सर्वं हविः । अघो हः अमुकसम्बत्सरे । दक्षिणायने शरद ऋतौ अश्वि-
 नमासे महालयापरपक्षे । कन्यागते सवितरि । अमुकर्तिथौ । अमुक-
 गोत्रास्मत्पित्रादित्रय श्राद्धसम्बन्धिन्यः तत अमुगोत्रा अम्मन्मातामहा-
 दित्रयश्राद्धसम्बन्धिन्यः पुरुर्वार्द्रवसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्योऽस्मिन्
 अमुकपार्वणश्राद्धे इदमन्नं इमा आपः इदमाज्यं इदं शाकाः दिकं
 यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं ब्राह्मणस्यातृप्तिपर्यन्तं अमृतस्वरूपं महत्तं
 यथाविभाग वः स्वाहा । इति भूमौ जलं प्रदद्यात् । ब्राह्मणहस्तदानै
 प्रत्यवायः । ॐ ये देवासो दिव्यौकादसस्यपृथिव्या मद्भ्ये कादशस्थ ।
 अपसु क्षितौ महिनैकादशस्थ तेदेवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् । इति
 पठित्वा । विप्रहस्ते जलमपंयेत् नमो देवेभ्यः । तथा गायत्र्याऽन्नं
 सम्प्रादय । अपसव्यम् कृत्वा । अन्वाचितवामजानुः । स्वस्तिकाकृतिना
 ऊर्ध्वमुखेन दक्षिणोपरिस्थितेन वामहस्तेन मधु३ । इति पात्रमालम्ब्य
 जपति पृथ्वीते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृतं । अमृतं जुहोमि ।
 विष्णो कव्यं रक्ष । अप्रादक्षिण्येन तिलान्विकीर्य । अपहताऽअसुरा-
 रक्षांसि श्वेदिषदः । अङ्गुष्ठप्रहरणम् इदं विष्णुरिति पठित्वा । इदमन्नम् ।
 इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं शाकादिकं सर्वं कव्यम् । अघो हः ।
 अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृपितामह प्रपितमहेभ्यः । अमुकामुकशर्मभ्यः
 सपत्निकेभ्यो वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नं ।
 इमा आपः । इदमाज्यं । इदं शाकादिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं

ॐ देवे तु चानहस्ताभ्याः उचानाम्यान्तु पैतृके । देवे सम्यमपः कृत्वा अपसव्यन्तु-
 पैतृके इति वचनात् ॥—॥ पृथ्वीपात्रमिति पात्रभिन्नत्रणम् । इत्वेदं विष्णुरि-
 त्येने द्विजाङ्गुष्ठं निवेशयेत् । (स्मृतिस्ङ्गरेष) २) १) या,

ब्राह्मणस्यात्पिपर्यन्तं ब्राह्मणेभ्य आत्पिदास्यमानमन्नंचमृत स्वरूपं
मदत्तं यथाविभागं वः स्वधा । ॐये चेह पितरो येचनेदयांश्चविवद्
मया ३ ॥५ उचन्नप्रविदमत्थं ज्वेत्थ यतिते जातधेदस्वधामिर्द्यज्ञं
मुहुर्न जुपन्व । इति पितृब्राह्मणहस्ते । आपोशानं, दत्वाः पुनः माता-
महपात्रे । उक्तानाम्यां पाणिभ्यां । मधु ३ इति पात्रमालभ्य जपति । पृथिवी
ते पात्रमिति । विष्णोक्तव्यं रत्न । इति । आप्रादक्षिण्येन तिलान्वि-
कीर्य । अपहृताऽअसुरा रत्ना ६ सि ज्वेदिपदः अङ्गुष्ठमहणं इदं विष्णु-
रिति पठित्वा । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यं । इदं शाकादिकं सर्वं
कव्यं । पुनः । तिलमोटकं जलञ्च गृहीत्वा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्यः ।
अम्नन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः । अमुकाअमुक शर्मभ्यः ।
सपत्निकेभ्यो वसुकद्रादित्यस्वरूपेभ्यः । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नं ।
इमा आपः । इदमाज्यं । इदंशाकादिकं यत्परिविष्टं यत्परिवेष्यमाणं
ब्राह्मणस्यात्पिपर्यन्तं ब्राह्मणेभ्य आत्पिदास्य मानमन्नं च । अमृत-
स्वरूपं मदत्तं यथाविभागं वः स्वधा । येचेह पितर इति पठित्वा इति
मातामहब्राह्मणहस्ते । आपोशानं दत्वा यथासुखेन मुङ्घ्वम् । इत्याज्ञां
दद्यात् मुङ्घ्वहे । इति विप्रोक्तिः ततः सव्येन । प्रणवव्याहृतिपूर्वकं
गायत्रीन्मधुमतीञ्चकव्यं च पठेत् । ॐमधु ३ । मधुज्वाताऽ-
ञ्चतायने मधुत्तरति सिन्धवः माध्वीनः सन्त्वोपधीः । मधुनक्त-
सूनोपमो मधुमत्पार्थिव ६ रजः मधुचौरस्तु नः पिता । मधुनाञ्चोञ्चनस्प-
तिर्ममधुमाः ॥५ अस्तु मूर्ध्या । माध्वीर्गावो भवन्तुनः मधु ३ यथाशक्त्या
पितृसूक्तं आगुः शिशान इत्यादि सप्तदशार्चां रुधिरतवादीनश्स्तु विप्रेषु
पठेत् ततः शुलसीशार्करागव्यदुग्धाज्यमधुविलगंगाजलयुतमन्नंतात्रपात्रे
कृत्वा । कमस्योदकं विष्णुनिषेदितमक्तमग्नी करणान्नशेषमपि दत्त्वा ।
अपमच्येन । विषहान्निर्मा .य । विकिरदानम् ॥ नैश्च त्यान्दिशि कुश-
त्रयं भूर्मा क्षिप्त्वा । आसनम् । असंस्कृतप्रमोतानां त्यागिनां कुलभागि-
नाम् । अचिद्धभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् । इत्यासनं दत्त्वा ।

आपोशानं काममागे सुगवानसमस्यवेत् । दत्तमागे तु षः कुर्यात्पो-
मगानसलं लभेत् । + (प्रचेताः) आवांशानमप्रदोषाय सावित्री त्रिंशदेष ।
मधुशता इति श्रुचं मध्विन्देवतृ विक्रम्यया । + प्रचेताः मुन्जानेषु तु
विप्रेषु श्रुदधुमासलक्षम् । जपेदभिसुक्तं भूत्वा विष्मन्चेव विरोपतः ।
इत्य मीनिः । आद्रंमल्लमवाशेषु विषहान् कुर्यान् पार्षणे । विषहोपपाते
अग्निमाशोर मृगक रगो विषडे च विरजी इते पुनः विषहा प्रदत्तव्या न्नेन
पार्षेन लक्ष्म्याम् ।

सजलतिलमोटकयुतमन्नं विकिरेत् । अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः
कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् । येषान्न पचते
माता येषान्न पचते पिता । उच्छिष्टं ये च काञ्चन्ति तेभ्योऽन्नं दत्तमक्ष-
यम् । उच्छिष्टं मागधेयेभ्य नमः । इति गन्धाक्षतपुष्पैः पूजम्न । अङ्गुष्ठ-
पत्रे त्यक्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षल्य । सव्येनाचम्य । ततः श्राद्धदेशमा-
गतय । अन्ये अङ्गुष्ठ पत्रे करे कृत्वाचमेत् । अपसव्येन । पितृपूर्वं ।
सकृत्सकृदापो दत्त्वा । सव्येन । विश्वेदेवब्राह्मणहस्तोऽपि चुलुकदानम् ।
पूर्वमद्गायत्रीं । मधुमतीं मध्वितिं च जपित्वा भो ब्राह्मणा अस्मिन्पाक-
मध्ये यत्किञ्चिद्वोचते तत्प्रतिगृह्यताम् । तृप्ताः स्थः । तृप्ताः स्मः ।
शेषान्नेन किं क्रियताम् इष्टैः समुज्यताम् । अपसव्येन पिण्डदानार्थं
वेदिकालेपनं गोमयेन । अपहता इति रेखाकरणं कुशेन + ॐ अपहतोऽ-
असुरा रक्षा ॐ सिञ्चेदिपदः । उल्मुकधारणम् । ॐ येरूपाणि
प्रतिमुञ्चमानाऽसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परा पुरा निपुरो ये
भरंयग्निस्तोऽङ्गोकात्प्रणुदात् त्यस्मात् सतिलजलमोटकं गृहीत्वा । अघोह ।
अमुकसम्बत्सरे । दक्षिणायने शरदश्रुतौ आश्विन मासे । महालया
परपक्षे कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रः अस्मत्पिता ।
अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूपः । अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डासने
अवनेनिक्ष्व । अघोह । अमुकगोत्रः । अस्मत्पितामहः । अमुक-
शर्मन् सपत्निकरुद्रस्वरूपः । अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डासने
अवने निक्ष्व । अघोह । अमुकगोत्रः । अस्मत्प्रपितामहः ।
अमुकशर्मन् सपत्निक आदित्यस्वरूपः अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डा-
सने । अवनेनिक्ष्व । ततः । उपमूललूनकुशास्तरणम् ÷ । सव्येन ।
पदस्तरणम् । ईशान विष्णुकमलाशनकार्तिकेयवह्नत्रपार्करजनीश-
गणेश्वराणां क्रौंचामरेज्यकलशीद्ववकाश्यपानां पादन्नमाभि सततं पितृ-

ॐ (क) ततस्सर्वाशनं पात्रे गृहीत्वा विविधं धूपं : । तेषामुच्छेपण-
स्थाने विकिरं निदिपेद्भुवि । (कात्यायनः) विकिरोतर गायत्र्यादि-
जपं तृप्तिप्रश्नं चाह । (आश्वलायनः) सव्येन लेत्रमुल्लिखेत् । अपहता
असुरा इज्जासिञ्चेदिप्रद इति । ब्राह्मणपुराणे विशेषः । निहन्मि सर्वयदमेध्य-
मंत्रहताश्च सर्वे । सुरदानवा मया । रक्षासि यक्षाश्च पिशानसद पा हता
मया यातुधानाश्च सर्वे । एतन्मन्त्रेण मुसंयतात्मा दर्मेण 'देवी' विलिखे
दिति । नियदपितृयज्ञे कात्यायनः) दक्षिणेनोल्लिखत्पहता । इत्यरे-
ण वा । अमपेदाया दक्षिणात्वेन पुरस्ता करोति ये रूपाणीति । आश्वलायनः)
४ सदाच्छिन्नैरवस्तोर्येति ।

मुक्ति हेतो । गङ्गा गया गदाधरादीन् संस्मृत्य । गङ्गाय नमः । गदधराय नमः । कुरुक्षेत्राय नमः । ॐ श्री तीर्थराजाय प्रयागाय नमः । पितृस्वरूपं ध्यात्वा । भो ब्राह्मणा युष्मदनुज्ञया पिण्डप्रदानामहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । ततोऽपसव्येन । तिलमोटकयुतं सजलं पिंडं गृहीत्वा । वामजान्वाच्य । अघेह । दक्षिणायने । शरदश्रुतौ आश्विनमासे । महालयापरपक्षे । कन्या गते सवितरि । अमुकतिथौ अमुकगोत्रः । अस्मत्पितः । अमुकशर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महतस्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या । इदमुदक गाङ्गम् । गङ्गोदके ऽसति गङ्गाजल तुल्यं वा । अमुक गोत्राय । अस्मत्पित्रे । अमुकशर्मणं सपत्निकाय वसुस्वरूपाय । अघेह । अमुक गोत्र । अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महतस्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक 'गाङ्ग' (गङ्गाजलतुल्यं) वा । अमुकगोत्राय । अस्मत्पितामहाय अमुकशर्मणे । सपत्निकाय । रुद्रस्वरूपाय । अघेह अमुकगोत्र । अस्मत्पितामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक । आदित्यस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महतस्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्ग (गङ्गाजलतुल्यम्) वा । अमुकगोत्राय । अस्मत्पितामहाय । अमुकशर्मणे । सपत्निकाय । आदित्यस्वरूपाय । अघेह । अमुकगोत्र । अस्मन्मातामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृत स्वरूपो महतस्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्ग' (गङ्गाजलतुल्यम्) वा । अमुकगोत्राय । अस्मन्मातामहाय । अमुकशर्मणे सपत्निकाय वसुस्वरूपाय अघेह । अमुकगोत्र । अस्मन्मातामह । अमुकशर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे । एषोऽन्नपिण्डोऽमृतस्वरूपो महतस्तेऽस्तु । इयं भूमिर्गयातुल्या इदमुदक गाङ्ग' (गङ्गाजलतुल्य) वा । अमुकगोत्राय । अस्मन्मातामहाय । अमुकशर्मणे सपत्निकाय रुद्र स्वरूपाय । अघेह अमुकगोत्र । अस्मत् वृद्धप्रमातामहाय । अमुकशर्मणे सपत्निकाय । आदित्यस्वरूपाय । लेपभागिनामयं भागोऽस्तु । इति लेपभागं पिण्डापार्षे दद्यात् । प्रतिपिण्डं प्रतिर्गं वा कुन्वाचारात् । पिण्डास्तरणकुर्यो करोन्मार्जनं कृत्वा हस्तप्रक्षालनम् । सव्येन ।

× (दर्मास्तरणान्तरमाह सुममन्तुः) अमत्रिषु नित्त्वेति पुरुष पुरुषप्रति । विभिरेकेन हस्तेन विदधोतावनेजनम् । कात्यायनेन बर्हिस्तरण स्वर्यमवनेजन-मुकप्रम् । तत्र यथा शंभुवधवध्या ।

पिण्डदानाचमनम् ॐ करे पुष्पाणि संगृह्य । उदङ्मुखेन । अपसव्येनात्र
 पितर इति जपः । ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मा वृषायध्वम् ।
 उदङ्मुखेनैव । सव्येन । मरुन्नियमनम् । ततः परावृत्य । अपसव्येन ।
 अमोमदन्त पितरो यथा मागमावृषायीसत । पिण्डोपरि पुष्पं दत्त्वा । ततः
 प्रत्यवनेजनम् । अद्येह अमुकनाम सम्बत्सरे दक्षिणाधने । शरद् ऋतौ
 आश्विनमासे । कन्यागते सवितरि । महालयारपरपक्षे । अमुकतिथौ ।
 अमुकगोत्र । अस्मत्पितः अमुकशर्मन् सपत्निक वसुस्वरूप । अमुक-
 पार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निद्व्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्पितामह ।
 अमुकशर्मन् सपत्निक । रुद्रस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने
 निद्व्व । अद्येह अमुकगोत्र । अस्मत्प्रपितामह । अमुकशर्मन् सपत्निक ।
 आदित्यस्वरूप । अमुकपार्वणश्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निद्व्व । अद्येह ।
 अमुकगोत्र । अस्मन्मातामह । अमुकशर्मन् । सपत्निक वसुस्वरूप ।
 अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने निद्व्व । अद्येह अमुकगोत्र ।
 अस्मत्प्रमातामह । अमुकशर्मन् सपत्निक रुद्रस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे ।
 पिण्डे प्रत्यवने निद्व्व । अद्येह । अमुकगोत्र अस्मह वृद्धप्रमातामह । अमुक
 शर्मन् सपत्निक । आदित्यस्वरूप अमुकपार्वणश्राद्धे । पिण्डे प्रत्यवने
 निद्व्व । किञ्चिन्नीवीविस्रंसणम् । नमो वः इति पङ्कजनीकरणम् । ॐ
 नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय
 नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो भन्व्य वे
 नमो वः पितरः पितरो नो वो गृहान्न पितरो दत्त सतो वः पितरोः मेतद्गः
 पितरो व्वासः ॥ सूत्रदानम् ॐ एतद्गः पितरो वास इति । उर्ज्जकरणकर्म-
 पात्रोदकेन । ॐ ऊर्ज्जं व्यहन्तिरमृतं घृतं पयः कीलालं परिष्कृतम् ।
 स्वधास्व तर्पयेन् मे पितृन् । सव्येन । देवताभ्य इति त्रिजपेत् । भो
 माह्वण युष्मदनुत्तया पिण्डार्चनमहं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । अपसव्येन ।
 पिण्डार्चां पिण्डार्चनं विधावत्रं नमः । गन्धास्तु स्वधा । अक्षताः ।

ॐ मनु-युष्पपिण्डा स्ततस्तां सुप्रपतो विधिपूर्वकम् ॥ तेषु दमेषु ते
 हस्तं विमृश्यातेपमागिना ॐ मनुः) आचम्योदक पराश्रुत्य त्रिराचम्य शनै
 शनै । गद्गुश्चन मुस्तुयात् पितृन् नैवचमन्त्वावित ।

* (भादचिन्तामणौ नाम्ने) एतद्गः वास इति अस्मन् पृथक् पृथक् ।
 अमुकगोत्रे तत्तुम् वासः पठेदनुपः (वज्र नाम्ने) शीरोर्षं चोमकार्गं
 दुर्लं महतं तथा भादे श्वेतानि यो दद्यात् शमनारीत चोत्तमान् । (व्यास)
 गन्ध पुष्पाणि धूपरश्च । दोरश्च विनिरेदयेत् (देवश्च) दक्षिणां सर्व-
 भोगश्च । (मतिरियद्वशरयेत्) ।

पुष्पाणि तुलसीदलानि । ॐ पितृभ्यः । स्वधायिभ्यः । स्वधानमः ।
 पिताहेभ्यः ॥ स्वधायिभ्यः । स्वधानमः । प्रपितामहेभ्यः । स्वधा-
 यिभ्यः स्वधानमः । अक्षन् पितरो मीमदन्त पितरो तीतृपन्त
 पितरः । पितर. शुंघध्रम । वक्षम् । धूपदीपो नैवेद्यम् ।
 ताम्बूलम् । भूपणञ्च समर्प्य—तिलमोटकं जलञ्च गृहीत्वा ।
 अथेह । अमुकगोत्राः । अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः । अमुकामुक-
 शर्मणः । सपत्निकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः । तथामुकगोत्राः । अस्मन्मा-
 तामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः । अमुकामुकशर्माः । सपत्निकाः । वसु
 रुद्रादित्यस्वरूपाः । पिण्डार्चनविधाविमानि गन्धाक्षतपुष्पतुलसीदल-
 वासोवृग्दीपनैवेद्यताम्बूलभूषणानि तुलसीपत्राणि च महत्तानि यथा-
 विभाग यः स्वधाः । पिण्डार्चनविधेः सर्वं परिपूर्णमस्तु अस्तु
 परिपूर्णम् । सव्येन । पिण्डापभूमौ सुप्रोक्षितमस्तु । अस्तु सुप्रोक्षितम् ।
 शिवा आपः सन्तु सन्तु । विप्रकरे । जलं अपां मध्ये स्थिता देवाः
 सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणस्य करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु
 मे । सौमनस्यमस्तु । अस्तु सौमनस्यम् । लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति
 पुष्करे । लक्ष्मीर्वस्ते सदागोष्ठे । सौमनस्य सदास्तु मे । अक्षताश्चारि-
 ष्ठभन्तु । अक्षतञ्चक्षस्तु मे नित्यं शान्तिपुष्टिकरं परम् । यद्यक्ज यस्करं
 लोके तत्तदस्तु मदा मम । ततः कुरीः कर्मपात्रोदकेन मूर्द्धाभिपेकं कुर्यात् ।
 ममकुले दीर्घमायुरस्तु । अस्तु शान्तिरस्तु । अस्तु पुष्टिरस्तु । अस्तु
 वृद्धिरस्तु । अस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु । यत्पापं रोगः शोको दुःखं दारिद्र्यं ।
 तत्प्रतिहतमस्तु । घृताभिपेकोऽस्तु । ततोऽक्षय्योदकदानम् । अक्षय्यन्तु ।
 विप्रकर एव ॐ अपसव्येन तिलमोटकसहितं जल गृहीत्वा ।
 अथेह । अमुकमन्वत्सरे । दक्षिणायने । शरद् ऋतौ । आश्विनमासे ।
 महालयारपत्ने । कन्यागते सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रस्य ।
 अस्मत्पितुः । अमुकशर्मणः । सपत्निस्य । वसुस्वरूपस्य । अमुकपार्वण-
 थाद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यदत्तं तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।
 अथेह । अमुकगोत्रस्य । अस्मत्पितामहस्य । अमुकशर्मणः । सपत्नि-
 कस्य । रुद्रस्वरूपस्य । अमुकपार्वणथाद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यदत्तं ।
 तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यं । अथेह । अमुकगोत्रस्य अस्मत्पि-
 तामहस्य । अमुकशर्मणः । सपत्निकस्य । आदित्यस्वरूपस्य । अमुक-
 पार्वणथाद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यदत्तं तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।

(इदं धातुतम.) गितृष्ण नामगोत्रेण करे देयं तिलादकम् । मध्येकं
 गितृतीयेन अनाम्यमिदमस्तीति ।

अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मन्मातामहस्य । अमुक शर्मणः । सपत्निकस्य
वसुस्वरूपस्य । अमुक पार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । यद्दत्तं । तद-
क्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्म
प्रमातामहस्य । अमुकशर्मणः सपत्निकस्य । रुद्रस्वरूपस्य । अमुकपार्वण-
श्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं । मद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् ।
अद्येह । अमुकगोत्रस्य । अस्मद्बृद्धप्रमातामहस्य । अमुकाऽमुकशर्मणः
सपत्निकस्य । आदित्यस्वरूपस्य । अमुकपार्वणश्राद्धे । इदमन्नोदकादिकं ।
मद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु । अक्षय्यम् । सव्येन । यवकुश
जलमादाय । अद्येहाऽमुकगोत्र । अस्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां ।
तथाऽमुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनां पुरुरवो भ्रातृवसंज्ञ
कानां । विश्वपां देवानां अस्मिन् पार्वणश्राद्धं वैश्वदेविककृत्ये ।
इदमन्नादकादिकम् । यद्दत्तं । तदक्षय्यमस्तु । अस्तु अक्षय्यम् । इति
ततः प्रार्थना शीर्षहणम् । अघोरा पितरः सन्तु । सन्तु । गोत्रज्ञो वद्ध-
ताम् । वद्धताम् दातारो नो भिवद्धन्ताम् । वद्धन्ताम् । वेदाः वद्धन्ताम् ।
वद्धन्ताम् । सन्तति वद्धताम् । वद्धताम् श्रद्धाचनो माव्यगमत् । मागाः
बहुदेवं च नोस्तु । अस्तु । अन्नञ्च नो बहु भवेत् । भवत् । अतिर्योश्च
लभेमहि । लभध्वम् । याचितारश्च नः । सन्तु । सन्तु । मास्मयाचिष्म
कञ्चन । मा याचेथाः । एता एव । आशिपः । सत्याः । सन्तु । सन्तु ।
ततः स्वधा वाचनम् + भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया स्वधां वाचयिष्ये ।
वाच्यताम् । अपसव्येन । स्वधावाचनीयात् शीन् कुशान् । पिण्डोपरि
संस्थाप्य । सजलतिलमोटकं गृहीत्वा । अद्येह । अमुकनामसम्यत्सरे ।
दक्षिणायने । शरहतौ । आश्विनमासे । महालयपरपक्षे । कन्यागते ।
सवितरि । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृभ्योऽमुकशर्मभ्यः ।
सपत्निकेभ्यो वसु स्वरूपेभ्यः । अमुक पार्वण श्राद्धे । ब्राह्मणा । मधु मधु
स्वधोन्यताम् । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्यः । अस्मत्पिता-
महेभ्यः । अमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यः । रुद्रास्वरूपेभ्योः ऽमुकपार्वण-
श्राद्धे । ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुक-
गोत्रेभ्योऽस्मत्पितामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यः । आदित्यस्वरु-
पेभ्योऽमुकपार्वणश्राद्धे । ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां । अस्तु स्वधा ।
अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मन्मातामहेभ्योऽमुकशर्मभ्यः । सपत्निकेभ्यो

(गोभिलः) अघोराः पितरः सन्त्विष्युक्ते स्वधा मानयिष्ये इति
पृच्छति । पितृभ्यः स्वधोच्यतामित्युक्तेऽस्तुत्वधेत्यु च्चमानो धारा दद्यात् उर्जं
म्भारिमुतं मिति ।

रुद्रस्वरूपेभ्यो ऽमुकपार्वणश्राद्धे ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां अस्तु
 स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्प्रमातामहेभ्योऽमुकशर्मन्भ्यः । स-
 पत्निकेभ्यो रुद्रस्वरूपेभ्यो ऽमुकपार्वणश्राद्धे ब्राह्मणा मधु मधु स्वधोच्यतां ।
 अस्तु स्वधा । अद्येह । अमुकगोत्रेभ्योऽस्मद् वृद्धप्रमातामहेभ्योऽमुकश-
 र्मन्भ्यः । सपत्निकेभ्य आदित्यस्वरूपेभ्योऽमुकपार्वणश्राद्धे । ब्राह्मणा मधु
 मधु स्वधीच्यताम् । अस्तु स्वधा । स्वधावाचनीयेष्वमोनिर्पंचति । ॐ ऊर्जं
 ब्रह्मन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिश्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् ।
 दुग्धेनाप्यूर्जकरणमाचारात् । केचिन्मते नीराजनम् । उत्तानं पात्रं कृत्वा
 + पितरः स्वर्गलोके प्रस्थिता भवन्तु । सव्येन । दक्षिणा-
 सङ्कल्पः । देयद्रव्यं सम्प्रोच्य पूजनं कार्यम् । हिरण्यगर्भ-
 गर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।
 अद्येह । अमुकसंभ्रवत्सरे । अमुकायने । अनुकर्तो । अमुकमासे । अमुक-
 पक्षे । अमुकतिथौ । अमुकतिथौ । अमुकगोत्रोत्पन्नः । अमुकराशि ।
 अमुकशर्माहं । अमुक गोत्राणाम् । अस्मत्पितृ पितामहं प्रपिताम-
 हानां । अमुकामुकशर्मणाम् । सपत्निकानाम् । वसुरुद्रादित्यस्वरू-
 पाणाम् । तथामुकगोत्राणाम् । अरमन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमाताम-
 हानाम् । अमुकामुकशर्मणाम् । सपत्निकानां । वसुरुद्रादि यस्वरू-
 पाणाम् । अक्षयतृप्तिप्राप्तयर्थं । पुरुखोमाद्रवसंज्ञक विश्वेदेवापूर्वकं ।
 कृतस्यास्य अमुकपार्वणश्राद्धकर्मणः । साधु गुण्यार्थम् । इदं रजतं ।
 सोमदेवतं रजतनिष्कयिणां दक्षिणाम् । वा श्रद्धभोक्तृभ्यान्नाक्षणाऽन्ये-
 भ्योऽपि दातुमुत्सृजे । ॐ तत्सन्नमम् । पुनः सुवर्णं सम्प्रोच्य । हिरण्य-
 गर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं
 प्रयच्छ मे । इति सम्पूज्य । यत्रकुशानादाय । अद्येह । अमुकगोत्राऽ-
 स्मत्पितादित्रयश्राद्धसम्बन्धिनानां । तथामुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्ध-
 सम्बन्धिनानां । पुरुखोमाद्रवसंज्ञकानां । विश्वेपां देवानां प्रीतये ।
 वैश्वदेविक कर्मणः । साधुगुण्यार्थम् । इदं सुवर्णम् अग्निदेवतम् ।
 मनसोपदिष्टां दक्षिणां वा ब्राह्मणेभ्यो दातुमुत्सृजे । ॐ तत्सन्न-
 मम् । स्वस्ति भवन्तो भ्रुवन्तु । स्वस्तीति विप्रोक्तिः । विश्वेदेवाः
 प्रीयन्ताम् । ऋतिं गृहीति । विश्वेदेव ब्राह्मणा ध्योपणा प्रीयन्तां यो
 विश्वेदेवाः स्वविलकं सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः । सर्वदा यज्ञयुद्धयः ॥ पितृ-

(नागलक्ष्मणे) उत्तानं मर्ष्याचस्तु कृत्वा दद्याच्च दक्षिणम् । हिर-
 ण्यपन्त्रेवतानांचपितृणां रजतन्तया (कालिकायामाचार्यः) दद्याद्यज्ञोपवीत्ये
 यताम्बूलं दक्षिणा तथा ।

मातृपरश्चैव ॥ संत्वस्मत् कुलजा नराः ॥ अक्षताः पान्तु ॥ अशौ-
 र्भ्रह्मणमितित्राह्मणार्पणपुत्राणि सङ्गृह्य ॥ विशेषपूजनं ॥ सव्येनैव ॥
 पितृभ्यः ॥ स्वाघायिन्य इति ॥ आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं
 सुखानि च । प्रयच्छन्ति तथा राज्यभूणां प्रीताः पितामहाः । आयुःपुत्रान्
 यशः स्वर्गं कीर्तिम्पुष्टिं बलं श्रियम् । पशून् सुखं धनं धान्यं
 प्राप्नुयां पितृपूजनात् । ततोऽपसव्येन । पितामहपिण्डमत्थाप्य ।
 सव्येनाघ्राय । पात्रान्तरे निधाय । पिण्डस्थाने शङ्खचक्रादिकं
 लिखित्वा । गन्धपुष्पाक्षतैः ॥ षड्भूतन्पूजयेत् । पिण्डस्थाने अत्रनमः
 सुखन्ध । अक्षताः पुष्पाणि । सव्येन । तत्र दीपं संस्थाप्य । ॐ
 वसन्ताय नमः । ॐ प्रीष्माय नमः । ॐ वर्षाभ्यो नमः । ॐ शरदे नमः ।
 ॐ हेमन्ताय नमः । ॐ शिशिराय नमः । हस्तौसं हतौ कृत्वा । यान्तु
 पितृगणाः सर्वेयस्मात् स्थानादुद्यताः । सर्वेने हृष्टमनसः सर्वकाम-
 प्रपूर्काः । ये लोका दानशीलनां ये लोकाः पुण्यकर्मणाम् । सम्पूर्णान्
 सर्वभोगैस्तु तान्ब्रजध्वं सुपुकलान् । इहास्माकं शिवं शान्तिरायुमारोग्य-
 संपदः । वृद्धिः सन्तानवर्गस्य जायतामुत्तरोत्तरा । दीपस्थाने
 दीपः अपसव्येन । पिण्डस्थाने पिण्डः । असंचर मभ्युक्ष्य कुर्यात् । यः
 कश्चित् त्रितुरूपेण तिष्ठते परमेश्वरः । सोऽयं श्राद्धप्रदानेन तृप्तिं लभतु
 शाश्वतीम् । गयायां पत्नरूपेण स्वयमेको जनादर्दनः । यं दृष्ट्वा पुण्डरी-
 काक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात् । पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रं क्रोशमेकं गया-
 शिरः । यत्र यत्र स्मरिष्यामि पितृ गान्दत्तमक्षयम् । शमीपत्र-
 प्रमाणेन पिण्डेन्दद्याद्गणेशिरे । उद्धरेत्सप्त गोत्राणां कुलमेकोत्तरं
 शतमम् । पितुः शतगुण पुण्यं सहस्रं मातुरुच्यते । भगिन्यां शतसाहस्रं
 सोदर्यै दत्तमक्षयम् । सव्येन । अद्य दिने अपरमपिश्रामं पक्वं हिरण्यं
 उदयास्तमयपर्षन्तं यद्दत्तं यहास्ये । तत् स्वर्गद्वारे । अमृतौभूयवः
 स्वधा । देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै
 स्वधायै नित्यमेव नमो नमः३ । सप्त व्याधा दशाण्येपुमृगाः कालंजरे
 गिरौ । चक्रवाकाः सरद्वीपे हंसाः सर्गति मानसे । तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे
 ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ । श्राद्ध-
 काले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । मनसा च पितृन् ध्यात्वा ।
 ततोऽपसव्येन । अद्य हेत्याशुचवाच्यं अमुकगोत्राणाभस्मत्पितृपितामह-
 प्रपितामहानाम् । अमुकानुकगोत्राणां सपत्निकानां । वसुरुद्रादित्यस्व-
 रूपाणां । तथा अमुकगोत्राणां । अस्मन्मातामह । प्रमातामह । वृद्ध-
 प्रमातवामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्निकानां । वसुरुद्रादित्य-
 स्वरूपाणां । अक्षयनृप्यर्थं पुरुरवोमाद्रवसंक्षक । विश्वेदेद्रवपूर्वकं ।

अर्घपरिण्डसहित । अमुकपार्वणश्राद्ध । विसृजे । सव्यम् । इदममुक
 पार्वणश्राद्ध । त्रिधिनीन । कालहीन । वाक्यहीन । श्रद्धाहीन । दक्षिणा
 हीन । यत् कृत । तत् कृतमस्तु । प्रमादाह्लोभाद्भयाद्वा यत्रकृत । तत्
 श्रीभगवद्विष्णो ब्राह्मणपचनात् । सर्वं परिपूर्णमस्तु । अस्तु परिपूर्णम् ।
 कुशेन विप्रस्पर्श । पितृब्राह्मणपूर्वम् । ब्राह्मणानुस्थापयेत् । पितृमाता
 महब्राह्मणयोरपमव्यनोत्थापनम् । सव्येन । वैश्वदैविकब्राह्मणस्य । ॐ
 उत्तिष्ठ ब्राह्मणस्पते देवयन्त्रस्वमेहे । उपमयन्तु मस्तु सुदानवऽइन्द्रप्रा
 शुभयासचा । इति । ब्राह्मणानुस्थाप्य पात्रान्तरे निधाय । ॐ स्वाजेवा
 जेवतव्याजिनो नोनधनेषु विप्र्राऽमृताऽमृतज्ञा अस्थमध्व पिवत मादय
 ध्वनृप्तायातपथिभिर्हेबयानै । इति विसृज्य ६ कर्मपात्र गृहीत्वा
 आभावाजस्यैत्यनुग्रज्य । प्रदक्षिणीकरणम् । ॐ आभावाजस्यैतसवो
 जगम्यान्मे द्यावापृथिवीध्वश्वरूपे । आमागताम्पितरामातराचामासो
 मोऽमृतत्वेनगम्यात् । इत्यनुग्रज्य । प्रदक्षिणीकृत्य । नमस्तुर्यात् । कर्मपात्र
 विप्रपादाग्रे निनीय । अथसव्येन । नीर्वा विसृज्य । पाणिना दीप
 निर्वाप्य । त्रान् समुद्रान् समस्तपन् स्वर्गान्पाम्पतिवृत्पत्रऽइष्टकानाम् ।
 पुरोपव्वसान सुकृत्यलोके तत्र गच्छ यत्र पूत्रेपरता सव्यं विधायोचम्य ।
 हस्ते जल गृहीत्वा । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
 न्यून सम्पूरता याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् । ॐ अच्युताय नम ३ ।
 चतुर्भिरच २ द्वाभ्या पचभिरेव च हृयते च पुनद्वाभ्या तस्मै यज्ञात्मने नम ॥
 प्रमादात्कुर्यता कर्म प्रचययेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव ताद्विष्णो
 सम्पूर्णं प्यादिति श्रुति ॥ अथ मे सफल जन्म अथ मे सफलं
 तप । अथ मे गात्रं च सर्वं याता वेनुमहादिवम् ॥ पत्रशाकादि
 दानेन क्लेशिता यूयमीदृश । सत्वक्लेशमिह संघात विसृत्य
 चन्तुमर्हथ । मूतोस्तोमजय त्यक्त्वापिण्डाग्राणं च दक्षिणाम् । आहारं
 स्वागतं चाधं विना च परिवेषणम् ॥ विसर्जनसौमनस्य आशिषप्रार्थन
 तथा । पितृमन्यतश्चैतं य प्राचीनावानिना सदा ॥ देवपूर्वमिदं श्राद्ध
 पितृपूर्वमिसर्जनम् । सर्वकर्मसव्येन दक्षिणाग्नश्चितम् ॥ इति ॥

गुप्तकाशी गुप्तदान प्रयोग

गुप्तशरणा पुरातनं तीर्थस्थानशया गुमा । 'शरवनायनिवामव्य

ॐ (पाल्भ्य) वाचनाम् इति अथनुश्रामेषु विमजया (प्रोत्ता)
 भागिण्यापत्त इत्या पितृपूर्वमिसर्जनम् । (इत्येवैवै) आमागाति मय
 दुर्गटना च प्रदक्षिणम् ।

लोकमन्त्रलदायकम् ॥ १ ॥ कर्णयामि समासेन सावधानेन वै शृणु ।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापानि विलय यान्ति यात्रिणाम् ॥ २ ॥ पुराणवचन चेत्थ
शिवाराधनमानसै ॥ सिद्धैस्त स्थापनं पूर्वं कृत सिद्धाश्रम तत ॥ ३ ॥
केचिद्दन्त्याधुनिना विश्वनाथस्य सङ्गते । यदा यवनराजोऽसौ काशी
गन्तु प्रचक्रमे ॥ ४ ॥ तदाजान्तर्हितो देवो गुप्तकाशी तत स्मृता । न
चेत्तद्विना शक्य स्थानारयान भवेद्दिदम् ॥ ५ ॥ कुन्तलश्यामलो मन्ये
विनाशयानेन वै कथम् । न वा पूर्वप्रणीतेषु ग्रन्थेष्वित्यपि दृश्यते ॥ ६ ॥
तस्मान्मन्ये शङ्करेण गगायमुनयोरिह । गुप्ति रूप सुविज्ञाय यदा कृत्वा
च मन्दिरम् ॥ ७ ॥ प्रतिनष्टाप्य च भूगाथ तदारयायि ततस्त्रिदम् ।
अन्यथा पूर्वग्रन्थेषु कथ नाम न दृश्यते ॥ ८ ॥ स्थानमासाद्य लोकेन
धामिकेण तथाविध । गुप्तदान च कर्त्तव्य यथाविभवनिस्तरै ॥ ९ ॥
स्वर्णवस्त्रसु त्रैस्त्रैर्नारिकेलादिभि फलै । गुप्तदान प्रकर्त्तव्य यात्रासफल
मानसै ॥ १० ॥ आदौ कायिःशुद्धयर्थं धेनुदानमपि फलम् । चोत्तम
मुनिभि प्रोक्त सर्वदा शुभकर्मणि ॥ ११ ॥ एव कृत्वैव यात्रार्थी समा
राध्य च विश्वम् । यथादेवं ततो द्रष्टुं केदारं वर्यो तत ॥ १२ ॥ एव
कृत्वैव यात्रार्थी केदारे लभते शिवम् । निर्धूय सर्वपापानि कृपया शङ्करस्य
च ॥ १३ ॥ ततो गुप्तदानकर्त्ता यात्रार्थी (र्थिनी वा) सामग्रीं (?)
सम्यक् सम्पाद्य प्रत्यूपे च तत्र गङ्गायमुनयोर्धाराद्वयेन पूजनपूर्वक
सङ्कल्पस्तान कुर्यात् । शुद्धमन्त्र परिधाय श्रीविश्वनाथाय नम नम
केदारेश्वराय नदीश्वराय चेति नमस्कृत्य मन्त्रिप्राङ्गण एवोपविश्व तीर्थ
पुरोहितः सङ्कल्प्य विष्णु ३ त्रिराचम्य सिद्धम् ३ ॐ अपवित्र पवित्रो
वा सर्वावस्था गतोऽपि वा । य स्मरेत्पुण्येकाक्ष स यात्राम्यन्तर शुचि ॥
इत्यनेन वामहस्तचलमभिमन्य शिरसि निक्षिपेत् । ॐ अपसर्पन्तु ते
भूता ये भूता भूमिसरिथता । येभूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिराज्ञया ।
इति भूतशुद्धि सविधाय । अस्य श्री आसनमन्त्रस्य मेट्ठ ऋषि सुतल
द्धर्म कूर्मो देवता आसने विनियोग । ॐ हिरण्यवर्णा सुभगा
हिरण्यकश्यपुर्मही तस्या हिरण्या दापये सत्या अकरं नम । इत्यक्षतान्
ॐ भूर्भुव स्व पृथ्वि ? इहागच्छेह तिष्ठ पाशाणीनि समर्पयामि पृथिव्यै
नम सम्पूज्य । ॐ पृथिव त्वया धृता लोका ऋषि त्व विष्णुना धृता ।
त्व च धारय मा मद्रे पवित्र कुरु चासनम् ॥ इति साम्प्रथ्यं जलपूजन
पूर्वकं सूर्यं पूजयेत् ततो गणपतिं नमस्कृत्य च शरीरशुद्धयर्थं गोदान

[१] मानसी मुक्ता, रत्न, तावदन माना, घ नी, माता, स्वर्णराज
तदभाव रत्न, तदभावे कल्पराज, अभाष ताम्रराज, ग : पुष्पादि ।

कुर्यान् अथवा गोप्रत्याम्नायीभूत् द्रव्यं तीर्थपुरोहिताय दत्त्वा तत्कुर्यात् ।
 ततो गुप्तदानसामग्रीं पाद्यगन्धाक्षतपुष्पधूपादिभिस्तत्तन्मन्त्रोच्चारणपूर्वकं
 समर्प्य सङ्कल्पं कुर्यात्-ॐ नमः परमात्मने पुराणपुरुषोत्तमाय श्री-
 मद्भगवतो महापुरुषस्य त्रिष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये
 प्रहरार्धे श्रीशैलेधाराहस्त्ये वैश्वस्यतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे
 प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतग्रहेते भारतपर्षे आर्याक्तान्तिर्गतगुप्तजागणस्त्रा
 क्षेत्रे हिमस्त्वर्त्तैःदेशे केदाररत्नगटान्तगतसुमेरुद्रक्षिणपार्वे म दा-
 ङ्गिन्यास्तटे समीपे वा पश्चिम्बल्लराणा मध्येऽमुकनाम्नि संवत्सरे अमुका-
 यनेऽमुकता अमुकमासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगे च अमुकराशि-
 रियते सूर्ये चन्द्रे भास्मे बुधे गुरौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एव गुणवशे-
 पण्यत्रिंशष्टाया तिथौ-अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकराशि अमुकवेदाध्ययी
 अमुकवेदशास्त्राप्रवरसूत्रादिभियुत अमुकपुरोऽमुकपौत्रोऽमुकदेशप्राम-
 वास्त्रव्योऽहं अमुकशर्मा वर्मा वा गुप्तो वा श्रीकेदारवदरीश्वदादि
 देवदर्शनार्थी यात्री ममात्मनः सफलदुरितोपशमनार्थं तथेह जन्मनि
 जन्मान्तरे वा कृतकाम्यिकमानसिक्वाचिकपापनिवारणाय त्रिविधता-
 पोषशमनार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसत्कलावाप्तये सूर्यादिनवग्रहजनितसर्वा-
 रिष्टनिवृत्तये राजद्वारे सभादिषु सर्वत्र विजयहर्षादिमनोवाञ्छितप्राप्तये
 पुत्रपौत्रादिआयुरारोग्यलाभाय च धनधान्यादिममृद्धये श्रीकेदारवदरीश्वर-
 प्योत्तराग्रहयात्रायामस्याम गुप्तवाताणस्याञ्चात्र यात्रा सफलीकरणाय
 गुप्तदानरूपेणोद्द हिरेण्यमग्निदेवत्यं रजतं चन्द्रदेवतं ताम्रमर्कटदेवतं त्रिष्णु
 देवतं वा कारयन्तीशदेवत्यं नारिकेलं वनस्पतिदेवत्यं वस्त्रादिभू तत्त
 देवत्य अमुकपुरोहिताय तुभ्य संप्रददे-इति संकल्प्य तद्दानं
 तत्रत्य तीर्थपुरोहिताय दत्त्वा तदाशीर्वाचनं मोभिषेकं लज्जा च विश्वनाथं
 पौत्रोपचारं पञ्चोपचारैर्षा मन्पूज्य भक्त्या प्रणम्य क्षमा याचयेन्
 त्रि परिक्रमेन्चेति शुभम् । इति गुप्तदान ।

प्रयोगविधि अत्र शय्यादानकरणमपि मन्त्रफलम् । अतः शय्या-
 दानकरणार्थिभिर्यात्राभिस्त-प्रयोगविधिरस्यामेव पद्धती-अन्यत्रालोक-
 नोय इति ।

अथ शिवाभर्षशीपेम् ।

(शिव उपनिषत्) ॐ देवाह र्धं श्वर्गलोकमायामे रुद्रमकृन्दन
 षो भवानिति । सोऽश्वशोदकमेव प्रथममामोदं नानि च मान्य

करिचन्मत्तो व्यतिरिक्त इति । सोऽन्तरादन्तर प्राविशत्सोऽह नित्यनित्यो
व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्माह प्राञ्च प्रत्यञ्चोऽह दक्षिणाञ्च उदञ्चोऽह म
ध्वञ्चोर्ध्वश्चाह िशश्च प्रतिदिशश्चाह पुमानपुमान् स्त्रियश्चाह सावित्र्यह
गायत्र्यह त्रिष्टुबृजगत्यनुष्टुप्चाह छन्दोऽह सत्योऽह गार्हपत्यो
इक्षिणाग्निगहवनीयोऽह गार्ह गौर्यह मृगह यजुरह सामाहमथर्वाङ्घ्रि
रसोऽह ज्येष्ठोऽह श्रेष्ठोऽह वारिष्ठोऽहमापोऽह तेजोऽह शुभोऽहमण्योऽ
हमक्षरमह क्षरमह पुष्करमह पत्रिमहमुप्रञ्च वलिश्च पुस्ताज्ज्योति
रित्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्व समो यो मा वेद स देवान् वेद
सर्वाँव वेदान् साङ्गा नपि ब्रह्मब्राह्मणैश्च गा गोभिर्ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन
हविर्हविषा अत्युरायुषा सत्य सत्येन धर्मेण धर्मं तर्पयामि ऽप्येन तेनसा ।
ततो ह वै ते देवा रुद्रमप्रच्छन् ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्ययान्
ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्र स्तुवन्ति ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्र स भगवान्
यश्च ब्रह्मा तस्मै धे नमो नम ॥ १ ॥ ॐ यो वै रुद्र स
भगवान् यश्च विष्णो तस्मै वे नमो नम ॥ २ ॥ ॐ यो वै रुद्र स
भगवान् यश्च स्कन्दस्तस्मै धे नमो नम ॥ ३ ॥ ॐ या वै रुद्र स
भगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै ॥ ४ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्चाग्निस्तस्मै ॥
॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च वायुस्तस्मै ॥ ६ ॥ यो वै रुद्र स
भगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै ॥ ७ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च सोम
स्तस्मै ॥ ८ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् येऽष्टौ प्रहास्तस्मै ॥ ९ ॥ यो
वै रुद्र स भगवान् ये चाष्टौ प्रतिप्रणस्तस्मै ॥ १० ॥ या वै रुद्र स
भगवान् यश्च भूस्तस्मै ॥ ११ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च
भुवस्तस्मै ॥ १२ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च स्वस्तस्मै ॥ १३ ॥
यो वै रुद्र स भगवान् यश्च महस्तस्मै ॥ १४ ॥ यो वै रुद्र स भगवान्
या च पृथिवी तस्मै ॥ १५ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्चात्तरिक्त
तस्मै ॥ १६ ॥ या वै रुद्र स भगवान् या च द्यौस्तस्मै ॥ १७ ॥
यो वै रुद्र स भगवान् यश्चापस्तस्मै ॥ १८ ॥ यो वै रुद्र स भगवान्
यश्च तेजस्तस्मै ॥ १९ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च जालस्तस्मै-
॥ २० ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च यमस्तस्मै ॥ २१ ॥ या वै रुद्र
स भगवान् यश्च मृत्युस्तस्मै ॥ २२ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च मृते
स्तस्मै ॥ २३ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्चाकारा तस्मै ॥ २४ ॥
यो वै रुद्र स भगवान् यश्च त्रिर्च तस्मै ॥ २५ ॥ यो वै रुद्र स भगवान्
यश्च स्थूल तस्मै ॥ २६ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च सूक्ष्म तस्मै ॥
२७ ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यश्च शकल तस्मै ॥ २८ ॥ यो वै रुद्र
स भगवान् यश्च दृष्ट्यस्तस्मै ॥ २९ ॥ या वै रुद्र स भगवान् यश्च

दृष्टं तस्मै० ॥ ३० ॥ यो वै रुद्र स भगवान् यच्च सत्य तस्मै० ॥ ३१ ॥
 यो वै रुद्र स भगवान् यच्च सर्वं तस्मै० ॥ ३२ ॥ ० ॥ भूस्ते आदि-
 मध्यं नुरस्ते स्तंती शीर्षं त्रिस्वरूपोऽसि ऋद्धौ कस्त्व द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्व
 शान्तिस्त्व पुष्टिस्त्व हुतमहुत दत्तमदत्ता सर्वमसर्षं विश्वमधिरां कृत-
 मवृत्त परमपर परायण्यय त्वम् । अपामसोमममृता अभूमा गन्म ज्योति
 रविदाम देवान । किं नूनमस्मान् कृणवदराति किमु धृतिरमृत मर्त्यस्य
 सोमसूर्यं प्रस्तात्सूक्ष्मं पुरुष । सर्वं जगद्धित वा एतद्दक्षर प्राजापत्य
 सौम्यं सूर्मं पुरुषं प्राह्यमघाह्येण भार्यं भावेन सौम्य सौम्येन सूक्ष्म
 सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन असति तस्मै महाप्रासाय वै नमो नम ।
 इतिस्था देवता सर्वा इदि प्राणा प्रतिष्ठिता । इदि त्वमसि यो नित्य
 तिम्रो मात्रा परस्तु म । तत्योत्तरत शिरो दक्षिणत पादौ य उत्तरत
 म ओङ्कार य ओङ्कार स प्रणव य प्रणव स सर्वव्यापी य सर्वव्यापी
 सोऽनन्त योऽनन्तस्तत्तारं यत्तार तच्छक्त यच्छक्त वत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्म
 तद्दुष्टं यद्दुष्टं तत्पर ब्रह्म यन् पर ब्रह्म स एक य एक स रुद्र यो
 रुद्र स ईशान य ईशान स भगवान् महेश्वर ॥३॥ अथ कस्मादुच्यते
 ओङ्कार । यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते
 ओङ्कार । अथ कस्मादुच्यते प्रणव । यस्मादुच्चार्यमाण एव श्वग्जु
 सामाथर्वाङ्गिरस ब्रह्मनाह्येभ्य प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते
 प्रणव । अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी । यस्मादुच्चार्यमाण एव यथा
 स्नेहेन चलनपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिसत्तरच तस्मा
 दुच्यते सर्वव्यापी । अथ कस्मादुच्यतेऽनन्त । यस्मादुच्चार्यमाण एव
 तीर्थगुह्यं मधरनाञ्चान्यान्तो तोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्त । अथ कस्मा
 दुच्यते तार । यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भं जन्मव्याधिजरा मरणसंसार-
 महाभयात्तारयति प्रायते च तस्मादुच्यते तारम् । अथ कस्मादुच्यते
 शुक्ल । यस्मादुच्चार्यमाण एव कलन्दते क्लान्तयति च तस्मादुच्यते
 शुक्लम् । अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं । यस्या दुच्चार्यमाण एव
 सूक्ष्म भूत्वा शरीराद्यधिष्ठिति सर्वाणि चाङ्गान्यमिमूरयति तस्मादुच्यते
 सूक्ष्मम् । अथ कस्मादुच्यते वैश्वतम् । यस्मा दुच्चार्यमाण
 एव व्यक्ते महति तमसि द्योतयति तस्मा दुच्यते वैश्वतम् ।
 अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म । यस्मान् परमपर पराय
 ण्यय पृष्टद्व हत्या पृष्टयनि तस्मादुच्यते परं ब्रह्म ।
 अथ कस्मादुच्यते एकं य तत्तान् प्राणान् सम्भदय
 सम्भरणेनान् संमृजति विमृजति वीर्यमेके प्रजन्ति वीर्यमेके दक्षिण
 त्वयस्य रुद्रश्च प्राञ्चोऽभिप्रचम्येके तेषा सर्वेषामिद् सङ्गति साकं

स एकोऽभूदन्तरवर्ति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः । अथ कस्मादुच्यते रुद्रः । अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वाण्डेवा २ । नीशते ईशानी-भिर्जननीभिश्च शक्तिभिः । अभित्वा शूर नो नुमो दुग्धा इव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वर्द्धशमीशानमिन्द्रतस्थुप इति तस्मादुच्यते ईशानः । अथ कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः । यस्माद्भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्णाति च वाचं संसृजति विसृजति च सर्वान् भावान् परित्यज्यात्मज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः । तदेतद्रुद्रचरितम् ॥ ४ ॥ एषोऽह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पुर्वोऽह जातः स उ गर्भे अन्तः स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जना तिष्ठति सर्वतोमुपः । एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमंल्लोकानीशत् ईशानीभिः । प्रत्यङ् जना तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोत्वा ॥ यो योनि योनिमधितिप्रत्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम् । तमीशानं वरदं देवमीड्यनिचाय्ये मां शान्तिमत्यन्तमेति । क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे । रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमुर्जेण पशवोनुनायन्तं मृत्युपाशान् । तदेतेनात्मन्नेतेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति पशुपाशविमोक्षणं या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्षावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद्ब्रह्मपदम् । या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद्द्वैषण्यं पदम् । या सा तृतीया मात्रा ईशानदेवत्या कपिलावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेद्देशानं पदम् । या सार्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्याऽव्यक्तीभूता एवं विचरति शुद्धा स्फटिकसन्निभवर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यम् स गच्छेत्पदमनामयम् । तदे तंदुपासीत मुनयो वाग्वदन्ति न तस्य प्रहणमयं पन्था विहित उत्तरेण येन देवा यान्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरं परायणं चेति । वालामहमात्रं हृद्द्रस्य मध्ये विश्वं देवं जातस्त्वं वरेण्यम् । तमात्मस्थ येऽनुपरयन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्मयति नेतरेषाम् । यस्मिन् क्रोधं याञ्च तृष्णां क्षमाञ्चाक्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुः रुद्रो हि शाश्वतेन वैर्जे पुराणे नेपमुर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म व्योमेति भस्म मर्त्यं इया इदं भस्म मन एतानि चतुर्षु यस्माद्भवति पाशुपतं यद्भस्म । नाहानि भंशूरोन् तस्माद् ब्रह्म तदेतस्याशुपतं पशुपाराविमोक्षणाय ॥ ५ ॥ योऽनी रुद्रोपोऽप्यन्तर्यं शोषपीर्षीक्य आविसेत् । य इमा विरवानुरनानि चस्त्वेषे तस्मै रुद्राय नमोऽन्तर्नये । यो रुद्रोऽनी यो रुद्रोऽप्यन्तर्यो रुद्र शोषपीर्षीक्य आविसेत् । यो रुद्र इमा

विश्वा सुवनानि चक्रुः तस्मै रुद्राय वै नमो नमः ॥ यी रुषोऽप्यु
यो रुद्र औपवीपु यो रुद्रो वनस्पतिपु । येन रुद्रेण जगद्ध्वं धारिवं
पृथिवीं द्विवा त्रिवा धर्त्ता धारिता नागा येन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमो
नमः । मूर्धानमस्य संसेव्य प्यथर्वा हृदयस्य यत् । मस्तिष्कादूर्ध्वं
प्रेरयत्यव मानोऽधिशीर्षतः । तदा अथर्वणशिरो देवकोशः समुज्जित ।
तन् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः । न च दिवो देवजनेन गुप्ता
नचान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः । यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं
तस्मादन्यत्र परं किञ्च नास्ति । न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं
नोत भव्यं यदासीत् । सङ्मन्नादेरुमूर्ध्ना व्याप्तं स ए वेदमावरोवर्ति
भूतम् । अक्षरान् सञ्जायते कालः कालान् व्यापक उच्यते । प्यापको हि
भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रमन्दा सहार्यते प्रजाः । उच्छ्र-
वमिते तमो भवति तमस आपोऽरबद्भुल्या मथिते मथितं शिशिरे शिशिरं
मथ्ययमानं फेनं भवति फेना दण्डं भवत्यण्डाद्गङ्गा भवति ब्रह्मणो वायुः
वायोरोङ्कारः ओङ्कारात्मात्रित्री माविद्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति ।
अर्चयन्ति तप. मन्यं सपु क्षरन्ति यधद्रुवम् । एतद्वि परमं यपः । आपो
ज्योति रमोऽमृतं ब्रह्म भूमूर्ध्वः स्वरो नम इति ॥ ६ ॥ य इदमथर्वणशिरो
ब्राह्मणोऽसीते । अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति । अनुपनीत उपनीतो भवति ।
मोऽग्निपूतो भवति । स वायुपूतो भवति । स सूर्यपूतो भवति ।
स सोमपूतो भवति । स सत्यपूतो भवति । स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो
भवति । स सर्वैर्देवैरुध्यातो भवति । स सर्वेषु तर्षेणु स्नातो भवति ।
तेन सर्वैः क्रतुमिरिष्टं भवति । गायत्र्या पष्टिमःस्त्राणि जातानि भवन्ति ।
प्रणयानामयुक्तं जप्यं भवति । स चतुषः पङ्क्ति पुनाति । आसप्तमात्
पुरुषपुगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वणशौग. मरुत्प्रपर्वव शुचिः स पूतः
कर्मण्यो भवति द्वितीयं जपत्या गणाविपत्यमवाप्नोति । तृतीयं जप्यव-
सेवानु प्रविशत्यो शत्यो मत्यमो मत्यमो मत्यम् ॥ इति ॥

अथ शिवापरधत्तमापनस्तोत्रम् ।

अथ कर्मप्रसंगारालयति कतुपं मागृष्टो मियत माविस्त्रा-
मैग्यमप्ये कथयति नितरां जाठरो जाठवेदा ॥ यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथ-
यति नितरां जकयने केन वक्तुं सतत्यो मेऽपराप. शिव शिव शिव भो
श्रीमहादेव नमो ॥ १ ॥ यन्ने दृग्गान्निरेगान्मन्तुमितवपुः स्तन्यपाने
विताप्ता भोगपरवेष्टियेग्यो भवगणजनित्वा जंतयो मां नृदति ॥ नाना-
शोभादिदुःखाद्दन्तरावशाः शंकर न भगामि संशयो मेऽपराधः

शिव ३ भी श्रीमहादेव शंभो ॥२॥ प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः
 पञ्चभिर्मर्मसंधौ दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवति स्वाधु सौख्ये निप-
 ण्णः ॥ शौवी चिंताविहीनं मम हृदयमहो मनगर्भाधिरूढं क्षंतव्यो मेऽप-
 राधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शंभो ॥३॥ वार्धक्ये चेन्द्रियाणां
 विनतगतिमतिश्चाधिदैवाधितापैः पापै रोगैर्वियोगैस्त्वन्नवसितवपुः प्रौढि-
 हीनं च दीनम् ॥ मिथ्या मोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
 क्षंतव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥४॥ नो शक्यं स्मार्तकर्मप्रतिपद्
 गहन प्रत्यवायाकुलास्यं श्रौते यार्ता कथमं द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे
 सुरारे ॥ ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निधिध्यासितव्यं चन्त-
 व्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव० ॥५॥ स्नात्वा प्रत्यूपकाले स्नपनविधि-
 कृते नाह्वतं गांगतोयं पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्प्रण्डविल्वीदलानि ॥
 नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पैस्त्वदर्थं क्षंतव्यो मेऽपराधः
 शिव शिव शिव० ॥६॥ दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितमहर्तैः स्नापित नैव
 लिंगं नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितं पूजितं न प्रसूनैः ॥ धूपः कपूर-
 दीपैर्विधिधरमयुतैर्नैव यद्योपहारैः क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥७॥
 घ्यात्वा चित्ते शिवाख्यप्रचुरतरधनं नैव दत्तां द्विजेभ्यो हव्यं ते लक्षसंख्ये
 हुतवहवदने नापितं बीजमत्रैः ॥ नो तप्तं गांगतीरे प्रतजपनियमै रुद्र-
 जायैर्न वेदैः क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥८॥ स्थित्वा स्थाने
 सरोजे प्रणवमयमरुतुण्डले सूक्ष्ममार्गे शान्ति स्वान्ते प्रलीने प्रकटित
 विभवे ज्योतिरूपे पराख्ये ॥ लिंगह्ने ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न
 स्मरामि क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव० ॥९॥ नग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुण-
 विरहितो घ्नस्तमोक्षांधकारो नासाधे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः
 कदाचित् ॥ उन्मन्यावस्यया त्वां विगतकलिमलं शंकरः न स्मरामि
 क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव० ॥१०॥ चन्द्रोद्भासिनसेखरे स्महरे गंगाधरे
 शङ्करे सर्पभूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोस्थ ये वानरे ॥ दंतित्यं कृतमुद्गां-
 वरधरे त्रैलोक्यसारे हरे मोक्षार्थं कुरु चित्तावृत्तिमविलामन्यैः शुक्र
 कर्मभिः ॥११॥ किं यानेन धनेन याजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं किं वा
 पुत्रकलत्रमित्रपुत्रभिर्देहेन गेहेन किम् ॥ शाल्वैर्नतृगुणमंगरं मयदिरे
 त्याज्यं मनो दूरतः स्वात्नार्यं गुरुवाक्यतो भक्तपत्तं भीषार्थतीव्रमम ॥१२॥
 प्रायुर्नश्यति परयतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम् प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न
 दिरसाः दाना जगद्भक्तकः ॥ लक्ष्मीस्तोयतरंगमंगवपला विशुच्यन्तं
 जीविनं लम्भाफ्नां शरणागर्नं शम्भुदत्तं रक्ष रक्षाधुनाः ॥१३॥ कश्चरन्-
 कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा भय जननजं वा मानसं वाऽपराधम् । विहित-
 मविदितं वा मयमेतत्कृतस्य जय जय करुणाद्ये श्री मन्नादेव जन्मो

॥ ४० ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं ' शिवापराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥८॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा :

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य । ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि । जगत्सृष्टिः प्राणशक्तिर्देवता । आं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्रौं कीलकम् । प्राणप्रतिष्ठापने विनयोगा—ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दोग्यो नमः—मुखे । जगत्सृष्टये प्राणशक्त्यै नमः—हृदये । आं बीजाय नमः लिङ्गे । ह्रीं शक्त्यै नमः—पादयोः । क्रौं कीलकाय नमः—सर्वाङ्गेषु । एवं न्यासकृतेषु । ॐ अ, कं, रं, गं, घं, ङं, ऑ—पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने-अङ्गुष्ठाभ्यां—नमः । ॐ इं, च, छं, जं, झं, ङं, ईं—शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां—नमः । ॐ उं, टं, ठं, डं, ढं, एं, ॐ त्वक्चक्षुःश्रोत्रोजिह्वाघ्राणाऽत्मने मध्यमाभ्यां—नमः । ॐ एं, तं, थं, दं, धं, नं, एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः । ॐ औं, प, फं, वं, भ, भं, औं, वचनादानगमनानन्दविसर्गात्मने नमः । कनिष्ठिकाभ्यां—नमः । ॐ अं, य, र, लं, व, शं, पं, सं, हं, क्षं, अः—मनोबुद्धयहङ्कारचित्तविज्ञानाऽत्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां—नमः । एवं हृदयादि । (नामेदारम्यपादीन्तम् । आं, इति, पोशपोजम् । हृदयाहारम्य नाम्थन्तं ह्रीं, इति, शक्तिबीजम् । (मस्तकादारम्य हृदयान्तम् 'क्रौं' इति, अङ्गुष्ठांवीजमून्यमेत् ॥ अथध्यानम्—रक्ताम्बोधिस्यपोतोलसदंरुणसरोजाधिरूढाकराब्जे. पार्श्वे कोदण्डरिक्तुङ्कचमथ गुणमत्यङ्कुरा'पञ्च बाणान् विभ्राणाङ्ककालं त्रिनयनभसिता पीनवक्षोरहाह्वया देवीं बालार्कषणीं भवतु सुखकरो प्राणशक्तिः परा नः ॥ (शिरसि तथा हृदि करं दत्त्वा)—ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, पं, सं, हं, सः—सोऽपम् प्राणा इह प्राणाः । ॐ, आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, पं, सं, हं, सः—जीव इह रियवः । ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, पं, सं, हं, सः—मर्षेन्द्रियाणि याव मनस्यक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायुपरधानोद्देशाग्न्य सुग' विर तिष्ठन्तु स्वाहा ॐ१, ॐ२, ॐ३, ॐ४, ॐ५, ॐ६, ॐ७, ॐ८, ॐ९, ॐ१०, ॐ११, ॐ१२, ॐ१३, ॐ१४, ॐ१५, इति प्रणवस्य पञ्चदशपृष्ठी. (श्रुत्वा) अनेन मम देहस्य' पञ्चदश संख्याः सम्पद्यन्ताम् । इत्युक्त्या पञ्चपात्रं (ॐ नमो भगवते ऋषये)

इति त्रीन्प्राणायामान्कृत्वा ॥ यथा पर्वतधातूनां दोषान्दहति पावकः ।
एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दहते ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ।

अथ महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः ।

सङ्कल्प.—अद्येत्यादि पूर्वोच्चारित एषं गुणविशेषेण विशिष्टायां
शुभपुण्यतिथौ मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्ताफलप्राप्त्यर्थं यजमानस्य
शरीरेऽमुकपीडानिगश-द्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय-
देवताप्रीत्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये—ॐ अस्य श्रीमहा-
मृत्युञ्जयमन्त्रस्य । वसिष्ठ ऋषिः । श्रीमृत्युञ्जय रुद्रो देवता । अनुष्टुप्
छन्दः । हौं बीजम् । जूं शक्तिः । सः कीलकम् । मृत्युञ्जयप्रीत्यर्थं
जपे त्रिनियोगः । न्यासाः—वसिष्ठऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे
नमः, मुखे । श्रीमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदये हौं बीजाय नमः
गुह्ये । जूं शक्तये नमः पादयोः । सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु ।
ॐ त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठान्यां नमः । ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः । ॐ
सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात्
अनामिकाभ्यां नमः । ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ
मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि ॥ ध्यानम्—चन्द्रो-
द्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं महद्वस्त्राञ्जेन दधन्सुदिव्यममलं
हास्याभ्यपङ्कं रुहम् । सूर्येन्दुग्निलोकनं कर्तलैः पाशाक्षसूत्राङ्कुशां
भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ॥ १ ॥ मानसोपचारैः
सन्पूज्य ॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । ॐ हं आकाशात्मकं
पुष्पं समर्पयामि । ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि । ॐ रं तेजआत्मकं
दीपं दर्शयामि । ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि । ॐ सं सर्वात्मकं
मन्त्रपुष्पं समर्पयामि ॥ मन्त्रोद्धारः—ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः
ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॥ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ
भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ । उत्तरन्यासं कृत्वा ॥ गुह्यातिगुह्यगोप्य-
त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रासादान्महेश्वर ॥
मृत्युञ्जय महारुद्र ग्राहि मो शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारोगैः
पोडितं कर्मबन्धनैः ॥ अर्पणम्—अनेन महामृत्युञ्जयपाठ्येन कर्मणा
श्रीमहामृत्युञ्जयः—प्रीयतां न मम ॥ अथ पट्प्राणवयुक्तं मृत्युञ्जय-
महामन्त्रः—सङ्कल्पं पूर्ववत् । ॐ हौं जूं सः ॐ भूभुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं
यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ सः
जूं हौं ॐ स्वः भुम्भूः ॥ अर्पणम्—पूर्ववत् ॥ इति पट्प्राणवयुक्त-

मृत्युञ्जयमहामन्त्रः ॥ एवं जपानन्तरं देवपूजनं कृत्वा ॥ प्रार्थना—
मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम् । जन्ममृत्युजरारोगैः पीडित
कमपन्थनैः ॥ तावकस्त्वद्गतप्राणारत्वर्धितोऽ इं सदा मृष्ट । इति
विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं तु इत्यन्वकम् ॥ जपनिवेदनम्—जपसाङ्गता-
सिद्धयर्थं यथाकामनया द्रव्येण दर्शांशहोमतर्पणमार्जनवाह्यभोजनानि
कुर्यात् ॥ इति धदामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः ॥

अथ शिवपूजापद्धतिः ।

अथ मन्त्रोद्धारः ॥ अनुक्त कल्पेयंत्रं तु लिखेत्पद्मदलाष्टकम् ।
पदकोण कर्णिक तत्र वेद द्वारोपशाभितम् । अथ मन्त्रोद्धारः । नमस्कारं
समुद्घृत्य चामनेत्र समन्वितम् । चारुणं सुरबृहत् च यामुं ललाट
संयुतम् । अनूप वाहरं मन्त्रं पञ्चाकाम फल प्रदम् । प्रणवादिर्विदा-
देवि तदा मंत्रः पङ्क्तः इति । अथ मन्त्रः ॥ ओ३म् नमः शिवाय, इति
मूलमन्त्रः । अथ पूजाप्रयोगः । सामग्रीसंपाद्य नित्यकर्मविधाय, नव-
वस्त्रं परिधाय ओ३म् विष्णुर्विष्णुर्हिः ३ त्रिपुत्रम्य ॐ सिद्धं ३
ॐ नमो भगवते रुद्रायैति प्राणानायम्य, कर्मपात्रजले, गङ्गाशावहनं
कुर्यात् । गन्धपुष्पाक्षते रचसम्पूज्य तेन जलेनाऽऽत्मानं सम्प्रोक्ष्य ॥ ॐ
अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां ॥ ॐ परहरीकाक्षम्पुनातु ३ । नम-
स्कारः । दक्षिणे ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ शंखनिधये नमः । वामे, ॐ
लक्ष्म्यै नमः । ॐ पद्मनिधये नमः । आसनशुद्धिः । ॐ पृथ्वीत्वयेति-
मन्त्रम्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मद्विषता, आसनोपरेशने विनि-
योगः ॥ ॐ हिरण्यवर्णां सुभगा हिरण्यकशिपुमंदि । तस्या हिरण्यदापये
सत्या अकरं नमः । इत्यक्षतान् क्षिपेत् । पुनः ॐ विरवशक्तये नमः । ॐ
महाशक्तये नमः । ॐ कूर्मासनायु नमः । ॐ योगसनाय नमः । ॐ
अनन्तासनाय नमः । ॐ विमला सनायनमः । मध्ये, ॐ परम मुत्यास-
नाय नमः । ॐ भ्रुवस्वः आत्माननाय इति मन्त्रेण पुष्पादिनाऽऽत्मन
आत्मनदानम् ॥ पाशादिभिर्भूमि, आसनं च सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥ ॐ
प्रथितवषा गृताः लोका देवित्यं विष्णुना घृता । त्वं च धारय मां देवि
पथित्रं वृषवासनम् ॥ ॐ वृद्धिर्भ्यै नमः ॥ ततः शिवायंज्जोयान् ॥ ॐ
उर्ध्वं देशिविस्वाधि मां शोणित भोजने । विष्ट देवि शिवायाम्ये, चा-
मुष्टेपा पराजिते । विष्णोर्नाम मरधैरु, शिखाबन्धं करोम्यहम् ॥
अथदिग्बन्धनम् ॥ ॐ अपमर्षन्तुते भूता ये भूताः सुवि मंस्यिताः । ये
भूता विनवृत्तारस्तेनश्यन्तु शिवाय ॥ इति भूतादीनुत्सार्थं ॥ ॐ

सबभूतानिधारकाय, शौर्गाय सशराय सुदर्शनायास्त्रराजायट्ट फट् स्वाहा ॥
इति तालत्रयकृत्वा ॥ तत स्वदक्षिणभागे पुष्पाक्षते । ॐ गुरुभ्यो नम ।
ॐ परमगुरुभ्यो नम । ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नम । ॐ पूर्वासिद्धिभ्यो
नम । ॐ आचार्येभ्योनम । तत स्ववामभागे ॥ ॐ गणेशाय नम ।
ॐ दुर्गायै नम । ॐ क्षेत्रपालाय नम । ॐ योगिनीभ्यो नम । ॐ क्षेत्रे
शाय नमः । पुनर्दिग्वन्धनम् ॥ ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वं
तोदिशम् सर्वस्वद्विरोधेन ब्रह्म कर्म समारभे ॥ वाम हस्तेन भूमिं
त्रिवार ताडयेत् ॥ अथ भूशुद्धि ॥ ॐ भूरसीत्यस्य प्रजापति ऋषि
मातृका देवता, प्रस्तारपक्तिञ्छन्द, भूशुद्धौ विनियोग । भूमौ हस्तौ
कृत्वा । ॐ भूरुमि भूमिरस्य दितिरसि विप्रश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य
धत्री । पृथिवीयन्त्र प्रथिवीट ॐ इ पृथिवीं माहिँसि । भैरव नमस्कार ॥
ॐ भूतानामित्यस्य कौडिन्यऋषि, नारायणो देवता, अनुष्टुप्छन्द,
भैरव नमस्कारे विनियोग ॥ पुष्पाजलिषष्वा ॥ ॐ यो भूतानामधिप
तिर्यस्मिँल्लोमाऽ अधिश्रिता यऽईशो महतो महास्तेन गृह्णामि त्वामहं
मयि गृह्णामित्वामहम् ॥ ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पात दहनोपम ॥
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञादातु महंसि ॥ इति भूतशुद्धि । ॐ नम शिवा
येति प्राणायाम त्रय कृत्वाऽऽचम्य । ॐ सुशान्तिर्भवतु ॥ ॐ स्वस्तिनऽ
इन्द्रो वृद्ध श्रवा स्वस्तिन पूषा विरज वेदा स्वस्तिनऽस्तात्स्योऽ अरि-
ष्टनेमि स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु । ॐ भद्र वर्णमि सृणुयामदेवा भद्र
पर्ये माक्ष भिर्यत्रा । स्थिरैरगैक्षुष्टुवाठं मस्तनूभिर्व्यस महि, देवहित
यदायु ॥ त पत्नी भरनुगुच्छेमत्वा पुत्रं व्भान्त् भिरुत्वाहिरण्यै ॥ नाक
गृभ्णाना सुहृत्स्य लोके तृतीये ऋष्टे अधिरोचने दिव ॥ अथ नम-
स्कारा । आविष्मनाशिने मगल मूर्तये नम । श्रीस्त्रेष्टदेवताभ्यो नम ॥
श्रीप्रामदेवताभ्यो नम । श्री स्थानदेवताभ्यो नम । श्री वास्तुदेवताभ्यो
नम । श्री वा ीहिरण्यगर्भाभ्या नम । श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यांनम ।
श्री उमामहेश्वराभ्या नम । श्री शचीपुरदराभ्या नम । श्री मातृपितृ-
चरणरुमलोभ्या नम । ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो नम । ॐ सर्वेभ्योब्राह्मणे
भ्यो नम ॥ निविन्धमस्तु ॥ ॐ श्रीपितृस्यै मिद्विधयपू जतोय मुग
सुरै । सर्वविघ्न ह्यग्तस्मै श्री गणाधिपतयेनम । ॐ सर्व मगत मागल्ये
शिपे सर्वार्थसाधके । शरण्येभ्यम्ब्रके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ ॐ
लाभतेषा नयस्तेषा कुतस्तेषा परानय । येषामिन्दीवर श्यामा हृदयस्थो
जनार्दन । ॐ लम्पोदर नमस्तुभ्यं सतत मोदक प्रिय । अधिष्णु वर
मे देव सर्वकार्येषु मया ॥ ॐ तत्त्वत्परमपुण्ये नम ॥ तत सकल्प
कुर्यात् ॥ ॐ विष्णुविष्णुर्हृदिर्हृदि ॥ त्रिराचम्य । ॐ नम परमात्मन

पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो० एवं गुण विसेषणविशिष्टायां शुभ-
 पुण्यतिथौ । अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं ममात्मनः वा, आमुष्क
 यजमानस्य श्रुति स्मृति पुराणैतिहासोक्त सत्फल प्राप्तये सकलैश्व-
 र्याभिः वृद्धयर्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, प्राप्तलक्ष्म्याशिवरसं
 रक्षणार्थं, सकल मनेप्सित कामना संसिद्धयर्थं, लोके वा सभायां, राज
 द्वारे वा । सर्वत्र यशोविजय लाभानि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनिजन्मान्तरेवा,
 सकल दुरितोपशमनार्थं, तथा मम सभार्यस्य, सपुत्रस्य, सत्रांधवस्या-
 खिलकुटुम्बसहितस्य, सपशोः समस्तभयव्याधिजरापीडात्मृत्यु परिहार
 द्वारा, आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं । तथा, ममाखिल कुटुम्बस्य जन्म-
 राशेः सकाशाद्येकेचिद्विरुद्ध, चतुर्थाष्टम, द्वादशस्थान स्थितकूरग्रहास्तैः
 सूचितं, सूचयिष्यमाणां, यत्सर्वारिष्टं, तद्विनाशद्वारा, एकादशस्थानस्थित,
 वच्छुभफलप्राप्तये, पुत्रपौत्रादिसंततेरिवच्छिन्न वृद्धयर्थं आदित्यादि-
 नवग्रहानुशूलतासिद्धयर्थं, तथा, इन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिद्धयर्थं,
 आधिदेविकाविभौक्तिकाध्यात्मिक, त्रिविधतापोपशमनार्थं, धर्मार्थकाम-
 मोक्षकृतप्राप्त्यर्थं च, ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाम्बसदाशिव प्रीतये, पङ्क-
 न्यांसपूर्वकं यथा ज्ञानेन, यथा लब्धे नोपचारेण श्री साम्बसदाशिव-
 पूजनकर्माहं करिष्ये ॥ ततः ॐ अस्य श्री शिव पञ्चाक्षर मन्त्रस्य वाम-
 देव ऋषिः, पंक्तिच्छन्दो, श्रीसाम्बसदा शिवोद्देवता, ॐ बीजं, शंशक्तिः,
 शिवायेति कीलकं, चतुर्वर्ग फलावाप्तये जपे विनियोगः । ॐ शिरसि
 वामदेव ऋषिः नमः । मुरे, ॐ पक्तिरत्नन्दने नमः । हृदि ॐ साम्बसदा
 शिवाय नमः । गुह्ये, ॐ बीजाय नमः । पादयोः ॐ शंशक्तये नमः ।
 सर्वाङ्गे, ॐ शिवायेति कीलकाय नमः ॥ ततः ॐ हृदयाय नमः ।
 नै शिरसे स्वाहा । मँ शिवायैवपट् । शि कवचायहुम् । वाँ नेत्रत्रयाय-
 घोपट् । यँ अस्त्रायफट् । ततोऽध्यायेत्—ॐ पञ्चब्रह्मा दशभुजो सर्व
 देवोत्तम प्रभुः । वेदोपगीतः सर्वज्ञः सोम सूर्याग्नि लोचनः ॥ गौरीभूपति
 वामांगो कल्याण गुणसागरः । सर्वलोकपतिः श्रीमान् सर्व देवानिर्तो
 विभुः ॥ निष्कलोपिगुणो नित्यो निर्मलो निरुपादिकः । निरञ्जनो
 निराकारो निरवन्धो निरामयः ॥ ज्योतिः स्वरूपो विमलो चिद्वचनः
 सकलात्मकः । एकः पूर्णः शिवः शान्तो मायावीतोऽक्षरो वः । इति
 हृदये-ध्यात्वा । ॐ नमः शिवायेति दशधाजप्त्वा ॥ अर्घ्यं स्थापन
 कुर्यान् ॥ भूमौ रक्तचन्दनेन त्रिकोणं घृतं चतुरस्रं मण्डलं विलिख्य ।
 ॐ ऐं ध्यापकं मण्डलाय नमः । इति सम्पूज्य । ॐ मँ वह्निमण्डलाय
 दश कलात्मने नमः । शिवायैवपाराय नमः । इति आधारं सम्पूज्य
 ॐ पट् इति अर्घ्यं पात्रपञ्चालनम् ॥ ततोऽर्घ्यं पात्रमाचारोपरि मँस्थाप्य

ॐ अं अर्कमण्डलायद्वादशकलात्मने शिवार्घ्यं पात्राय नमः । इत्या-
 धारो परि पात्रं सम्पूज्य ततः ॐ नमः शिवायेति मूलमन्त्रेणार्घ्यं पात्रं
 वारिणा परिपूर्य्य ॐ गङ्गे च यमुने चेति० । ततः ॐ संसोममण्डलाल
 षोडशकलात्मने श्रीशिवाद्यामृताय नमः । इति सम्पूज्य नम इति ।
 गन्धम् वपट् इति पुष्पम् । अक्षतारचक्षिपेत् ॥ अंकुश मुद्रया सूर्य
 मण्डलात्तीर्थानिवाह्य, मत्स्यमुद्रयाऽऽद्याधेनुमुद्रया धृ मृतीकृत्य योनि-
 मुद्रयापरमीकृत्य सुगन्धाद्रि द्रव्यं च निःक्षिपेत् । तेनार्घ्योदकेन
 सर्वासामर्षी सन्प्रोक्ष्य, आपोहिष्टेति मन्त्रेण, आत्मानं चाभिसि-
 ङ्चयेत् ॥ ततः घण्टा पूजयेत् ॥ ॐ आगमार्थं तु देवानां
 गमनार्थं तु रक्षसाम् । सर्वभूतहितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम् ।
 इति वादयित्वा घण्टां प्रपूजयेत् ॥ ॐ सुपर्णो सि० ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः घण्टास्थ गरुणायनमः—आवाहयामि तंसर्वोपचारार्थैः पाद्य
 गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि घण्टा मुद्रां च प्रदर्शय ॥
 ततो वामे धूपपात्रं ॥ दक्षिणे दीपपात्रं संस्थाप्य, पाद्यादीनि समर्प-
 यामि, गन्धर्वदेवाय धूपपात्राय नमः । बन्धि देवत्याय दीपपात्राय
 नमः । सम्पूज्य । आदौ गृह वास्तु पुरुषं पूजयेत् । गृहाभिर्चौ, वा,
 भूमौ, अक्षतैः । ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशो अनभीवो
 भवानः । पे यत्वेमहे प्रति तन्नो जुपस्वः शन्नो चवद्विपदेशं चतु-
 प्पदे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, गृह वास्तु पुरुषाय नमः । पाद्यादिभिः
 सम्पूज्य नमस्कारः । ॐ पूजयोऽसि मयावास्तो होमोद्यैर्चनैः शुभैः ।
 प्रसीद वह्निदेशे देदि मे गृहर्जं सुखम् । ॐ वास्तु पुरुषाय नमः ॥
 ततः पीठ पूजां कुर्यात्पूष्पाक्षतैः ॐ मण्डूकायनमः । ॐ कालाग्नि
 रुद्रायनमः । ॐ आधारशक्तये नमः । ॐ आनन्दकन्दाय नमः । ॐ
 प्रपञ्चदाय नमः । ॐ कूर्माय नमः । ॐ शेषाय नमः । ॐ वाराहाय
 नमः । ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ सुधार्याय नमः श्वेत द्वीपाय नमः ।
 ॐ मणिमण्डपाय नमः । ॐ फलपृक्षाय नमः । ॐ स्वर्णसिंहासनाय
 नमः । ॐ सितक्षत्राय नमः । ॐ श्वेतचामर्यय नमः । ॐ धर्माय
 नमः । ॐ ज्ञानाय नमः । ॐ वैश्याय नमः । ॐ ऋषेभ्यो नमः ।
 ॐ अनन्ताय नमः । ॐ सवित्रलायनमः । ॐ प्रकृतिमयपत्रे म्योनमः ।
 ॐ विकारमयकेशेभ्यो० । ॐ पञ्चाशद्वर्ण बीजाक्षय कणिकायै नमः ।
 ओं सं सत्वाय नमः ॥ ओं रं रजसे नमः । ओं तं तमसे नमः ॥ ओं
 मायायै नमः । ओं विद्यायै नमः । ओं सूर्येन्दु वह्निमण्डलेभ्यो नमः ।
 ओं आत्मने नमः । ओं अन्तरात्मने नमः । ओं परमात्मने नमः । ओं
 ज्ञानात्मने नमः । ओं मायातत्त्वाय० । ओं विद्यातत्त्वाय० । कलातत्त्वाय० ।

ओं परतस्वाय नमः ॥ ततः पूर्वातिक्रमेण । ओं वामदेवाय नमः । ओं
 ज्येष्ठाय० । ओं रुद्राय० । ओं कालाय० । ओं कालविकरणाय० । ओं
 यलाय० । ओं बलविकरणाय० । ओं वज्रप्रमथिने० । ओं सर्वभूतद-
 मनाय० ओं मनोन्मनाय । मध्ये, ओं नमो भगवते सकल गुणात्मने
 अनंत पीठात्मने नमः ॥ अथावाहनम् ॥ ओं आगच्छ देवदेवेशलि-
 ङ्गेऽस्मिन् सुस्थिरोभव । स्थिरोभूत्वा महादेव पृजां गृह्ण नमोऽ-
 स्तुते ॥ श्रीसांवसदाशिवाय नमः ॥ ततः नूतनमूर्तीनां प्राणप्रतिष्ठां
 कुर्यात् ॥ तद्यथा । ओं अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णु
 महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामथर्वाणि छन्दासिक्रियामय वपुः प्राणा-
 ल्या देवता ओं यीजं ह्रीं शक्तिं क्रौं कीलकं आसां नूतनमूर्तीनां
 प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अनामिकाङ्ग प्रयोगेन । पञ्चगव्येन
 पञ्चामृतेनवा । ॐ ओं ह्रीं क्रौं यं रं ल वं शं पं सं सोऽहं हंसः एपां
 शिवस्य नूतन लिङ्गानां प्राणा इहप्राणाः ॥ पुनः अनेनैव मंत्रेण
 एपां शिवस्य नूतनलिङ्गानां जीव इह स्थितः ॥ पुनः एवै । शिवस्य
 सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि एपां शिवस्य नूतनलिङ्गानां
 सर्वेन्द्रियाणि । वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण
 पाणि पाद पाय पस्थानि इहैवागत्य सुप्रचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥
 पुनर्वैदोक्तः मन्त्रेण । ओं एतन्तेदेव सवितुर्यज्ञं प्रादुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन
 यज्ञमनेनयत्रपतितेन मामत्र । त्र्यो मनांजूति० ॥ पश्चात्संस्कारसिद्धये
 पञ्चदश प्राणवातृतीः कारयेत् ॥ यथा ओं ओं ओं इति पञ्चदश वार
 १५ पठेत् ॥ अनेन आसां नूतनमूर्तीनां जातकर्मगर्भाधानादि पञ्चदश-
 संस्कारान्मपाद्यामि । इति वदेत् ॥ प्रायना । ओं स्वागतं देवदेवेश
 मङ्गाग्यात्मिद्रागतः । सानिर्घ्यंतु महादेव स्यार्चायां परिकल्पय ॥ अनेन
 प्राण प्रतिष्ठादि कर्मकृतेनश्रीसाम्बसदाशिवोदेवता प्रीयतां नमम ॥ ततः
 प्रतिव्रजे प्रत्येक पञ्चामृतेनाभिषेकं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ दुग्धेन ओं
 आप्याय स्येति गोक्षम ऋषि पयोदेवता ऊर्ध्ववक्ष्णे ईशानाय क्षीरस्नाने
 विनियोगः ॥ ओं कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम । पावनं यज्ञ
 हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ ओं पयः पृथिव्यां० ॥ स्नानार्थं दुग्धं
 समर्पयामि श्रीसांवसदाशिवाय नमः । एषः गन्धः ॥ एतानक्षतान् ।
 दमानि पुष्पाणि समर्प० । धूपमाध्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्य-
 निवेद्यामि श्रीसां० ॥ ततोऽननेः ओं ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः
 सर्वमूनानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणेऽविपति शिवांमे अमुं सदाशिवोम ॥
 तन्मगुदोदरम् । ओं आपो आमन्निति ब्रह्मागोन्म ऋषिन्निष्पुष्कन्दः
 विश्वे देवादेवता आपः स्नाने विनियोगः । ओं आपो अस्मान्मातरः

शुन्ध्यन्तु घृतेन नो घृतपत्रः पुनन्तु विश्व ठँ हिरि प्रं प्रवहन्तिदेवी
 रुद्रदादिभ्यः शुचिरा पूतयेमि । दीक्षातंपसस्तिनुरसि त्वां तां शिवा ओं
 शगमां परिदधेभद्रं धर्णपुष्यन् स्नानार्थे शुद्धोदकं समर्पयामि श्रीसाम्ब-
 सदा० ॥ एवं सर्वत्र । ततः दधिस्नानं ओं दधिक्राव्येति वामदेव ऋपि
 रनुष्टुप्छन्दः दधिदेवता पूर्ववक्त्रे वामदेवाय दधिस्नाने विनियोगः । ओं
 दधिक्राव्ये अकारिषं जिप्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयु
 ठँ पितारिपत् ॥ ओं पयसस्तु समुद्भूतं ॥ स्नानार्थे दधिं सम०
 श्रीसाम्बस० एष गन्धः । एतानक्षतान् इमानि पुष्पाणि स० धूपमाघ्रा-
 पयामि । दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः ।
 ततः शुद्धोदकं पूर्ववत्, वा, ॐ असोयस्ताम्रो० । दधिस्नानान्तरं शुद्धो-
 दकं समर्पयामि ॥ ततो ऽक्षतः । ॐ वामदेवायनमोज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठा-
 यनमोरुदाय नमः काल यनमः कलधिकरणाय नमोवलविकरणायनमो ॥
 ततो घृत् ॥ ओं घृतंमिमीक्षेतिगृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः दक्षिण
 वक्त्रेअघोरायघृत्स्नाने विनियोगः । ओं घृतंमिमीक्षे घृतमस्ययोनि घृते-
 श्रितो घृतंवस्यधाम । अनुष्टुप्छमावहमादयस्य स्वाहा घृतं वृषभ व्यक्षि-
 ह्वयम् । ओं अत्रनीत सगुत्पन्नं० स्नानार्थे घृतं सम० श्रीसांब० ।
 एव गन्धः । एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि । धूपमाघ्रापयामि ।
 दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । श्रीसाम्बशिवाय नमः । अक्षतैः
 ओं अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोर । तरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वं सर्वेभ्यो
 नमस्तेऽअस्तुरुद्र रूपेभ्यः ॥ शुद्धोदकम् । ओं असोपस्ताम्रोऽ
 अ० । घृत स्नानानन्तरं शुद्धोदकं सम० । श्रीसाम्ब० ॥
 अथ मधुस्नानम् । ओं मधुवातेति गोत्तमऽपि गायत्रीद्वन्दो मधुदेवता
 परिचमवक्त्रे तत्पुरुपाय मधुस्नाने विनियोगः । ओं मधुवाताऽऽत्तायते
 मधुक्षरन्तिसिधवः माध्वीर्यः सन्त्वोपधीः मधुनक्तमुतोपसां मधुमत्पार्थिव
 ठँ रजः मधुघौरस्तुना पिता मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तुसूर्य माध्वी-
 गाँवो भवन्तुनः । ओं तरुपुत्र समुद्भूतं० । स्नानार्थं मधु स० । श्री-
 सांब० ॥ एष गन्धः । एतानक्षतान् । इमानि पुष्पाणि । धूपमा० ।
 दीपं दर्श० । नैवेद्यं निवेद० । श्री साम्बशिवाय० ॥ अक्षतैः ॥ ओं०
 तत्पुरुपायविद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयान् । शुद्धोदकं०
 ओं असोय० । मधुस्नानानन्तरं शुद्धोदकं सम० । श्री साम्ब० ॥ अथ-
 शर्करास्नानम् । ओं अपाँ रसमित्यस्य इन्द्रवृहस्पति ऋषी अनुष्टुप्छन्दः
 उत्तपवक्त्रे सद्यो जाताय शर्करास्नाने विनियोगः । ओं अपाँ ठँ रस मुद्बय
 स ठँ सूर्ये संतँ समाहितम् । अपाँ ठँ रसस्य योरस स्तवोगृहोम्म्युचम-
 मुपयाम गृहीतो संद्रायत्वा जुष्टं गृहाम्येपते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टानं ॥

ओं इत्तु सार समु० । स्नानार्थे शर्करां सम० श्री साम्ब० । एष गन्धः ।
 एतान्क्षतान । इमानि पुष्पाणि । धूपमा० । दीपं दर्श० । नैवेद्यं नि० ।
 श्री साम्बसदाशिवाय० । अक्षतैः ॥ ओं मद्योजातं प्रपद्यामि मद्यो जाताय
 वैनमः । भवे भवे नाति भवे भवस्य मां भवद्भवाय नमः । पुनः शुद्धो-
 दकं । ओं असोयस्ताम्रोऽश्र० । शर्करास्नानानन्तरं शुद्धोदकं मम० श्री
 साम्बसदाशिवाय० ॥ ततः पुनरावाहनादि षोडशोपचारैश्च पूजयेद्यथा ॥
 (उत्तमं शिवपूजनम्) अथपुष्पांजलिगृहीत्वाऽऽवाहनं कुर्यात् । ओं आ-
 गच्छ भगवन्तदेव स्थानेचात्र स्थिरोभव । ओं नमः शम्भवाय० । इत्यावाह्यं
 ओं भूमिवः स्वः मांग सपरिवार सायुध सशक्तिक भोसाम्बुशिवे हाग
 च्छेहृ तिष्ठ इहसु प्रतितितो वरदोभव । अथासनम् । ओं रम्यं सु शोभन
 दिव्यं सर्वसोप्यकरं शुभं । आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर । ओं
 यातेरुद्रशिवा० इत्यासनार्थे, पुष्पाणि समः श्री साम्ब० ॥
 अथपाद्यम् । ओ३म् उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतं । पाद-
 प्रक्षालयनार्थायदत्तं ते प्रतिगृह्यताम् । ओं यामिपुंगिरि शं० । इदं पाद्यं
 सम० श्रीसाम्ब० । अथाध्यंम् । ओं अद्य गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः
 सह । करुणा करमेदेव गृहाणार्ध्यं नमोऽस्तुते ॥ ॐ शिवेनवचसात्वा०
 अर्घ्योदकं मम० श्रीसाम्ब० ॥ अथाचमनीयम् । ॐ सर्वतीर्थममायुक्तं
 सुरभिर्निर्मलं जलम् । आचम्यतां मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ओं अद्य
 वोचदधि० । इदमाचमनीयं सम० श्री साम्ब० । अथस्नानम् । ओं
 गंगा सरस्वतीरेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः स्नापितोसि मयादेव तथा शांति
 कुरुष्वमे । ओं असोयस्ताम्रोः । इदं जल समर्प० श्रीसाम्ब० । अथ
 गन्धोदकम् । ॐ मलय पलसं भूतं चन्दनागदु सम्भवम् । चन्दनं देव
 देश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ओं गन्धद्वारां दुराय० । गन्धादकं समर्प०
 आसावसदा० । पुनः शुद्धोदकं च ममर्प० ॥ श्रीसाम्ब० । अथ हरिद्रादि-
 चूर्णम् । ओं नाना मुग्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् । उद्धतं न
 मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ उद्धतं नार्थमिदं हरि ओ३म् अट् शहः
 गुनाने अट् शुहः श्यनापरुणापरुः । गन्धस्ते सोमरतु मदाय
 सोऽश्च्युतः । पुनः शुद्धोदकं सम० श्रीसाम्ब० अथ पञ्चामृतम् ।
 ओ३म् पयोदधिपृतं चैव मधुच शर्करायुतम् । पञ्चामृत मयानीतं
 स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ओ३म् पञ्चनद्यः सरस्वती० । स्नानार्थं पञ्चा-
 मृत मः० श्रीसाम्ब० । पुनराचनीयं । ओ३म् पुनराचनीयं चर्दीयने
 तव मुष्ट्यंगृहाणदेवदेवेश ममत्रो भय वैप्रभा । ओ३म् अमोयोत्रसर्पति० ।
 पुनराचनीयं मम० श्रीसाम्ब० । एतः पुरुष सूक्तेन, ओ३म् मद्ग्र-
 जोर्षेतिः मद्दानिपेकं कुर्यात् ॥ ओ३म् अमृतमिपकोऽु ३ र्ति प्रियार

वदेत् ॥ अथयज्ञोपवीतम् । ओ३म् नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणदेवतामयम् ।
 उपवीतं चोत्तारोयं गृहाण परमेश्वर । ओ३म् नमोस्तुनील० । यज्ञोपवीतं
 सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथवस्त्रम् ॥ ओ३म् सर्वभूताधिके सौम्ये लोक-
 लज्जानिवारणे । मयोपपादिने तुभ्यं वाससो प्रतिगृह्यताम् । ओ३म्
 प्रमुचधन्वन० । वस्त्रं समर्प० श्रीसाम्ब ॥ अथगन्धम् । ओ३म्
 श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं
 प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् विज्येधनु—क० ॥ इदं गन्धं सम० श्रीसाम्ब-
 सदा० ॥ अथाक्षतान् ॥ ओ३म् अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठकुंभमाक्ताः
 सुशोभिताः । मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर । ओ३म् परिते-
 धन्वनोहेनि० अक्षतान्निवेद्यामि श्रीसाम्ब० ॥ अथपुष्पाणि ॥ ओ३म्
 माल्यादीनि सुगन्धिनि मालत्यादीनि वैप्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि
 पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ओ३म् यातेहेतिन्मीदुष्ट० ॥ पुष्पाणि सम०
 श्रीसाम्ब० ॥ अथविल्वपत्रम् । ओ३म् त्रिदलं त्रिगुणाकार त्रिनेत्रं च
 त्रियायुधम् । त्रिजन्म पाप संहारमेकविल्वं शिवार्पणम् । ओ३म्
 शिवभव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः । माद्यावा पृथिवीऽअभिशी-
 पीर्मातरिच्चं भावनस्पतीन् ॥ विल्वदलानि सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथपुष्प-
 यालां ॥ ओ३म् नाना सुगन्धिभिर्युक्तं ऋतुजैः कुसुमैः शुभैः । मया या
 प्रथिना मालां गृहाण त्व सुरेश्वर । ओ३म् यद्यरोप्सरस्ता ॥ इमां पुष्प-
 माला मम० श्रीसाम्ब० ॥ अथसौभाग्यद्रव्यम् ॥ ओ३म् हरिद्रां कुङ्कुमं
 चैव सिद्धूरं कज्जलान्वितम् सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाणा-
 न्विक्रया सह । ओ३म् अहिरिषभोगै पर्य्येति० । सौभाग्यद्रव्यं
 सम० श्रीसाम्ब० ॥ अथदूर्वाकुराणि ॥ ओ३म् हरिताः श्वेत वर्णा वा
 पञ्चत्रिपत्रं संयुताः । दूर्वाकुराः मयादत्ताः गृहाण भवनायक । ओ३म्
 वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोयं
 प्रतिगृह्यताम् । ओ३म् अवतत्त्व धनु० ॥ धूपमग्रापामि श्रीसाम्ब० ॥
 अथदीपम् ॥ ओ३म् आज्यं सद्गतिं संयुक्तं वह्निमायो जितंमया दीपं
 गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह । ओ३म् नमस्तेआयुधाया० ॥ दीपं
 दर्शयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथनैवेद्यम् ॥ ओ३म् शर्कराघृत संयुक्तं
 मधुरं स्वादुचोत्तमम् । उपहारं समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । ओ३म्
 मानामहान्तं मुक्तं । ओ३म् प्राणाय स्वाहा०, ओ३म् अपानाय
 स्वाहा, ओ३म् व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ओ३म् सामानाय स्वाहा,
 एभिर्पञ्चभिर्मन्त्रैः प्राममुद्राः प्रदर्श्य । इदं नैवेद्यं निवेद्यामि श्रीसाम्ब० ।
 मध्ये मानोयम् ॥ ॐ पलोमीर लवंगादि कपूरं परिधामितम् । प्राशनार्थं
 कृतं तोयं गृहाण परमेस्वरं ॥ ॐ वनहृन्म्योत्तं० ॥ पुनर्जलम् ॥ ओ३-

माधारण जलं सूयंकरस्थानि विशुद्धये । सततदेवदेवेश गृहाण मम
 भक्तिः । ॐ शन्नोदेवीर भी० । उत्तरोपामनार्थं करसुर प्रक्षालनार्थं
 पुनजलसम० श्रीसाम्ब० । अथताम्बूलम् । ॐ पूंगीफल महादिव्य
 नागवल्लीदलैर्युतम् । एलाचूर्णादिमयुक्त ताम्बूल प्रति गृह्यताम् ॐ
 पत्पुष्पे० । मुर शोभनार्थमिदं ताम्बूलसम० श्रीसाम्ब० ॥ अथ
 फलानि ॥ ॐ नानात्रिधानिषक्वानि फलानि षट्तु जानिच गृहाण देव
 देवेश प्रसन्नोभवैरैविमो । ॐ या फलानिय्याऽफ० ॥ एतानिफलानि-
 सम० ॥ श्रीसाम्ब० ॥ अथदक्षिणाम् ॥ ॐ हिरण्य
 गर्भगर्भस्थं हेम वीचं त्रिभावसो । अनन्त पुण्यफलदमतः शान्ति प्रय-
 न्द्रमे ॥ ॐ हिरण्यगर्भ सम० ॥ इमादक्षिणा सम० ॥ अथकपूरा
 र्त्तिक्यम् ॥ ॐ बदलीगर्भसभूत कपूरं च प्रदीपितम् । आरात्ति
 क्यमह कूर्वे पर्यमेवरदोभव ॥ ॐ इदं हृदि प्रजन० ॥ इदं कर्पू-
 रार्त्तिक्यं दर्शयामि श्रीसाम्ब० ॥ अथप्रदक्षिणा ॥ ॐ यानिकानिच
 पापानिजन्मान्तर कृतानिदे । तानिसर्वाणि मश्यन्तु प्रदक्षिण पदे
 पदे । ॐ मानस्तोमेत्तनये० । सर्व पापा पनुत्तये प्रदक्षिणा करोमि
 श्रीसाम्ब० ॥ अथ पुष्पाञ्जलिम् । ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि
 यथाशालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिमयादत्ता गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ
 नमस्तऽआयुधा० । इमापुष्पाञ्जलिसम० श्रीसाम्ब० तत सफला
 र्थम् ॥ ॐ रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानाग
 भयंतां त्रातामह भवार्थवान् ॥ वरदत्वं वरदेहि वाञ्छितं-
 वाञ्छितार्थं ॥ इति मन्त्रेणार्थस्थं पूगीफलं देवता सम्मुखे निवेद्य ॥
 ॐ अनेन सफलाध्यैणफलदोन्मुमदामम । इत्यर्गेदकेनदेवताम्नापयेन् ॥
 अथ प्रांना ॥ ॐ भूत्यालेपनभूषित प्रविलमन्नेत्राग्निदीपातुर
 कण्ठेपरतगुणपदाम सुमगो गङ्गा जलं पूरित । ईपनाप्र जटाप्रपल्लव-
 पुनोन्मन्त्रोत्तगन्मणहपे शम्भुमङ्गल कुम्भता मुरगतो भूयात्मवाश्रेयसे ।
 श्रीसाम्ब शिवाय० । ततो रामारत्तेन पुष्पाङ्गनैःष्टमूर्त्तिन्पूजयेन् ॥
 ॐ मर्षायचित्ति भूत्तयेनम ॥ ॐ मर्षायजन्मूर्त्तयेनम ॥ ॐ मृ-
 यागिनमूर्त्तयेनम । ॐ उमाशययुनूत्तये नम । ॐ भीमायाशारामू-
 नयेनम ॥ ॐ पद्मपत्रयेनमान मूर्त्तये० । ॐ महादेवाय मोम
 मूत्तये० । ॐ ईशानाय मूर्त्तये० ॥ तत पूं ॐ वामदेवाय
 नम । दक्षिणे ॐ अशोराय नम । पश्चिमे ॐ तत्पुरुषाय नम ॥
 उत्तरे ॐ ईशानाय नम । मध्ये-ॐ साम्ब मन्त्र शिवाय नम ॥
 पापादिभिर्नैषगन्त मपूज्य ॥ पुष्पं गृहीत्वा ॐ देव देव
 महादेव मन्तानुग्रह पर । अनुमतिदिदेषेण परिधारार्पनायमे ॥

इमामावरणां पूजां गृहाण सुमुखोभव ॥ श्रीसाम्ब० ॥ अथ मधुप-
 कर्केण, वा शिवाभ्यामृतेन पुष्पाक्षत युतेः तर्पयेत् ॥ अष्टदलेप्रागादि-
 क्रमेण ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥ इहागच्छेहतिष्ठ । नन्दीश्रीहादुकांपूजया-
 मितर्पयामि नमः । ॐ महाकालाय नमः । इहागच्छेहतिष्ठ । महाका-
 लंश्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः । ॐ गणेश्वराय नमः । इहाग० ।
 गणेश्वरं श्रीपादुका० । ॐ वृषाभाय नमः । इहागच्छे० । वृषभश्री-
 पादुकां० । ॐ भृगिरिदिनेनमः । इहाग० भृगिरिति श्रीपादु० । ॐ
 स्कंदायनमः । इहाग० स्कन्दंश्रीपा० । ॐ वीरभद्रायनमः । इहाग०
 वीरभद्रंश्रीपा० । ॐ चण्डीश्वरायनमः । इहाग० । चण्डीश्वरं
 श्रीपादु० । ततोऽर्घ्यामृतम् ॐ अभीष्टसिद्धिस्मेदेहि शरणागतवत्सल ।
 भक्त्यासमर्पयेत्तुभ्यमिदमारणार्चनम् ॥ इदमाव रणार्चनं श्रीसाम्बस-
 दाशिवस्यदक्षिणहस्ते समर्पयामि । इति प्रत्यावरणार्चने । ततः पाद्य-
 दिभिर्नैवेद्यान्तं सम्पूज्य । पुनस्तर्पयेत् ॥ मध्ये—ॐ ईशानायनमः ।
 इहागच्छेह० ईशानं श्रीपादुकांपूज० । ॐ अघोरायनमः । इहाग०
 अघोरंश्रीपादु० । ॐ सद्योजातायनमः । इहाग० सद्योजातंश्रीपा० ।
 ॐ अनन्तायनमः । इहाग० अनन्तंश्रीपादु० । ॐ सूक्ष्मश्रीपा० ।
 ॐ शिवाय नमः । इहाग० शिवश्रीपा० । ॐ एकपतयेनमः । इहाग०
 एकपतिश्रीपा० । रुद्रायनमः । इहाग० ॥ रुद्रंश्रीपा० । ॐ त्रिमूर्त्तये-
 नमः । इहाग० त्रिमूर्त्तिश्रीपा० । ॐ श्रीकण्ठायनमः इहाग० श्रीक-
 ण्ठंश्रीपा० । ॐ सत्पतये नमः । इहाग० । सत्पतिं श्रीपादु० ।
 ॐ शान्त्यै नमः । इहाग० ॥ शान्तिं श्रीपा० । ॐ विद्या-
 यैनमः इहागच्छे० । विद्यांश्रीपा० । ॐ निवृत्त्ये-
 नमः । इहाग० निवृत्तिं श्रीपा० । ॐ प्रतिष्ठायैनमः । इहाग०
 प्रतिष्ठांश्रीपा० ॐ वामदेवायनमः । इहाग० वामदेवं श्रीपा० । ॐ
 ज्येष्ठायनमः । इहाग० । ज्येष्ठं श्रीपा० । ॐ श्रेष्ठाय नमः ।
 इहाग० । श्रेष्ठं श्रीपा० । ॐ रुद्रायनमः । इहाग० रुद्रंश्रीपा० । ॐ
 नालायनमः । इहाग० कालंश्रीपादुकां० । ॐ कलविकरणायनमः ।
 इहा० कलविकरणं श्रीपा० । ॐ बलायनमः इहाग० बलश्रीपादु० ।
 ॐ बलविकरणायनमः ॥ इहाग० बलविकरणंश्रीपा० । ॐ बलप्रमथिने-
 नमः ॥ इहाग० बलप्रमथिनंश्रीपा० । ॐ सर्वभूतदमनायनमः । इहाग० ।
 सर्वभूतदमनंश्रीपा० । ॐ मनोन्मनायनमः । इहाग० मनो न्मनंश्रीपा० ॥
 ततोऽर्घ्यामृतम् ॥ ॐ अभीष्टसिद्धिस्मेदेहि शरणाग० ॥ ततः पाद्या-
 दिभिर्नैवेद्यान्तं संपूजयेत् ॥ पुनस्तर्पयेत् पूर्वं ॐ हृदयायनमः । इहाग०
 हृदयंश्रीपा० । अग्नयं नंशिरसेस्वाहा । इहाग० शिरः श्रीपा० ।

ईशाने मं. शिखायै वषट् । शिखांश्रीपा० । नैऋत्यां शिखवाय-
 हुम् । कवचंश्रीपा० वायव्ये वा नेत्रत्रयाय वीषट् । नेत्रत्रयं श्रीपा ।
 मध्ये—यै यन्त्रायफट् । अन्त्रं श्रीपा० ॥ ततः परितं ॥ ओं अणि-
 मायै नमः । इहाग० अणिमांश्रीपा० । ओं महिमायै नमः ।
 इहाग० महिमांश्रीपा० । ओं लविमायै नमः । इहाग० ल-
 विमांश्रीपा० । ओं गरिमायै नमः । इहाग० गरिमांश्रीपा० । ओं प्रा-
 न्त्यै नमः ॥ इहाग० प्राण्तिश्रीपादु० । ओं प्राकाम्यै नमः । इहाग० प्राणार्मा-
 श्रीपा० । ओं उपितायै नमः । इहाग० उपितांश्रीपा० । ओं वसितायै-
 नमः । इहाग० वसितांश्रीपा० । ओं ब्राह्म्यै नमः । इहाग० ब्राह्मांश्रीपा० ।
 ओं माहेःवश्यै नमः । इहाग० माहेःवरीं श्रीपा० । ओं कौमार्यै नमः ।
 इहाग० न्दे० नीमाराश्रीपा० । ओं वैष्णव्यै नमः । इहाग० वैष्णवीं श्रीपा० ॥
 ओं वाराह्यै नमः । इहाग० वारह्मीश्रीपा० ॥ ओं रुद्रायै नमः ॥ इहाग०
 रुद्राणीश्रीपा० ॥ ओं चामुण्डायै नमः ॥ इहाग० चामुण्डांश्रीपा० ॥ ओं
 षण्डिकायै नमः ॥ इहाग० ॥ चण्डिकांश्री० । पुनः प्राणादिक्रमेण ॥
 ओं अस्तितागमैःवायनमः ॥ इहाग० अस्तितागमैःश्रीपा० । ओं न्-
 मैःवायनमः ॥ इहाग० न्मैःश्रीपा० ॥ ओं चण्डमैःवायनमः । इहाग०
 चण्डमैःश्रीपा० ॥ ओं क्रोधमैःवायनमः ॥ इहाग० क्रोधमैःश्रीपा० ।
 ओं उन्मत्तमैःवायनमः ॥ इहाग० उन्मत्तमैःश्रीपा० ॥ ओं कालमैःवाय-
 नमः ॥ इहाग० कालमैःश्रीपा० ॥ ओं भीषणमैःवायनमः ॥ इहाग० ॥
 भीषणमैःश्रीपा० । ओं महारमैःवायनमः ॥ इहाग० महारमैःश्री-
 पा० । तत्रोऽर्घ्यांशुनम् ॥ ओं अभीष्टमिष्टिमैःदेहिशा० ॥ पाद्यादिभि-
 नैःवैद्यान्तं पूज्येत् ॥ अथच । ओं मवायनमः ॥ इहाग० ॥ भवंश्रीपा० ॥
 ओं ईशानायनमः इहाग० ईशानं श्रीपा० । पशुपतये नमः । इहाग० ।
 पशुपति श्रीपा० । ओं रुद्रायनमः । इहाग० । रुद्रंश्रीपा० । ओं उमाय-
 यम् । इहाग० । उमंश्रीपा० ॥ ओं भीमायनमः । इहाग० । भीमं श्रीपा० ।
 ओं महादेवायनमः । इहाग० ॥ महादेवंश्रीपा० । ओं अनन्ताय नमः ।
 इहाग० अनन्तंश्रीपा० । ओं वामुकिनेनमः । इहाग० वामुकिनेंश्रीपा० ।
 ओं उषकायनमः । इहाग० उषकंश्रीपा० । ओं वृक्षीरवायनमः । इहा-
 ग० न्दे० । वृक्षीरंश्रीपा० । ओं कर्कोटकायनमः । इहाग० कर्कोटकंश्रीपा० ।
 ओं शङ्खपाषाणायनमः । इहाग० शङ्खपाषाणंश्रीपा० । ओं पद्मलायनमः ।
 इहाग० पद्मलंश्रीपा० । ओं ननुवायनमः । इहाग० ननुवंश्रीपा० । ओं
 वैतनायनमः । इहाग० वैतनंश्रीपा० । ओं वृत्तियै नमः । इहाग० वृत्ति-
 श्रीपा० । ओं देव्यायनमः इहाग० । देव्यंश्रीपादु० । ओं अनुनायनमः ।
 इहाग० अनुंश्रीपा० । ओं मातृनायनमः । इहाग० मातृंश्रीपा० ।

ओं भर्त्रेणमः । इहाग० भर्त्रेश्रीपा० । ओं नलायनमः । इहाग० नल-
 श्रीपा० । ओं रामायनमः । इहाग० रामश्रीपादु० । ओं हिमवतेनमः ।
 इहाग० हिमवन्तश्रीपा० । ओं निपदायनमः । इहाग० निपदश्रीपा० । ओं
 ध्यानायनमः । इहाग० ध्यानश्रीपा० । ओं माल्यवृत्तेनमः । इहाग० ।
 माल्यवन्तश्रीपा० । ओं परिजातायनमः । इहाग० पारिजातश्रीपा० । ओं
 हेमकूटायनमः । इहाग० हेमकूटश्रीपादु० । ओं गन्धमादनाय
 नमः । इहाग० ॥ गन्धमादनं श्रीपादुकां० । ततोऽर्घ्यामृतम् ।
 ओं अभीष्टसिद्धिमेदेहिशा० इदमावरणार्चनम् । श्रीसाम्ब-
 शिवस्य दक्षिणहस्ते निवेदयामि ॥ ततः पाद्यादिभिः सम्पूज्य
 पुनरावरणम् ॥ ॐ इन्द्रायनमः ॥ इहाग० इन्द्रश्रीपा० ॥ ओं अग्नये-
 नमः । इहाग० अग्निश्रीपा० । ओं यमायनमः । इहाग० । यमश्रीपा० ।
 ओं निऋतयेनमः । इहाग० । निऋतं श्रीपा० ॥ ओं वरुणायनमः ।
 इहाग० वरुणश्रीपा० । ओं वायवेनमः । इहाग० । वायुश्रीपा० ।
 ओं कुबेरायनमः । इहाग० कुबेरं श्रीपा० ॥ ओं ईशानायनमः ।
 इहाग० ॥ ईशानां श्रीपा० । ओं ब्रह्मणेनमः । इहाग० ब्रह्माणं
 श्रीपा० । ओं अनन्ताय नमः । इहाग० अनन्तश्रीपा० ॥ पुनः प्रागा-
 दिक्रमेण ॥ ओं वंवाय नमः । इहाग० । वज्रश्रीपा० । ओं शंशक्त-
 येनमः ॥ इहाग० शक्तिश्रीपा० ॥ ओं दं दण्डायनमः ॥ इहाग०
 दण्डश्रीपा० ॐ खं खगायनमः ॥ इहाग० खङ्ग श्रीपा० ॥ ॐ पं
 पाशायनमः ॥ इहाग० पार्श्वश्रीपा० ॥ ॐ अंकुशाय नमः । इहाग०
 अकुशश्रीपा० ओं ग गदायैनमः ॥ इहाग० गदाश्रीपा० ॥ ओं शं
 शूलायनमः ॥ इहाग० ॥ शूलश्रीपा० । ओं पद्मायनमः इहाग० पद्म-
 श्रीपा० । ओं चक्रायनमः ॥ इहाग० चक्रं श्रीपादु० ॥ पुनस्त ॥
 त्क्रमेण ॥ ओं ऐरावतायनमः ॥ इहाग० ऐरावतं श्रीपा० ॥ ओं
 मेपायनमः ॥ इहाग० । मेपश्रीपा० ओं महिपायनमः इहाग० महि-
 पश्रीपा० ॥ ओं प्रेतायनमः ॥ इहाग० प्रेतश्रीपा० ॥ ओं मकराय-
 नमः ॥ इहाग० मकरश्रीपा० ॥ ओं मृगायनमः ॥ इहाग० मृगश्रीपा० ॥
 ओं नृपभायनमः ॥ इहाग० नृपभंश्रीपा० ॥ ॐ नरायनमः ॥
 इहाग० नरश्रीपा० ॥ ॐ गरुडायनमः इहागच्छ गरुडश्रीपा० ॥ ॐ
 हंसायनमः ॥ इहाग० हंसश्रीपा० ॥ पुनः पूर्वादिदिक्षु ॥ पूर्व-विप्रवर्ण
 श्वेताभसद्वस्त्रफलं युतशेषायनमः ॥ इहाग० शेषश्रीपा० । अग्नये
 वैश्ववर्णं नीलाभ पञ्चशतं फलयुत तक्ष्णायनमः ॥ इहाग० तक्ष्णश्री-
 पादुकां० दक्षिणे-विप्रवर्णं कुङ्कुमाभ सद्वस्त्रफलं युत अनन्तायनमः ।
 इहाग० अनन्तश्रीपा० ॥ नैऋत्यां-क्षत्रियवर्णं रक्ताभसप्तशत फल-

युतवासुकिने नम ॥ इहाग० वासुकिन श्रीपा ॥ पश्चिमे विप्रवर्ण
पीताभपञ्च शतफणयुतशालपालायनम ॥ इहाग० शङ्खपाल श्रीपादु० ॥
वायव्ये—वैश्वर्यनीलाभ शतफणयुत पद्मायनम ॥ इहाग० पद्म
श्रीपा० ॥ उत्तरेशुद्धवर्णश्वेतामत्रिशत फणयुतकर्कोटकायनम ।
इहाग० । कर्कोटक श्रीपा० ॥ ततोऽर्घ्यामृतम् ॥ ॐ अभीष्टसिद्धिमे
दहि शर० ॥ इदमावराणाचनम् । ओं तत्त्वत्सत्साम्बसदाशिश्य
दक्षिण हस्ते समर्पयामि ॥ पुन पूर्ववत्पाद्याभिनेवेद्यान्त पूजयेत् ॥
तत गन्धपुष्पाद्गतयुत जलेनतर्पयत् ॥ ओं भव देव तर्पयामि ॐ
शिशुदेवतर्पयामि । ओं ईशानदेव तर्पयामि । ओं पशुपतिदेवतर्पयामि ।
ॐ रुद्रदेवतर्पयामि ओं उग्रदेवतर्पयामि ओं भीमदेवतर्पयामि । ॐ
महान्तदेव तर्पयामि । ॐ देवदेव तर्पयामि ॥ तत ॥ ॐ उग्रठाय-
यनम इतिजलम् । ओं श्रेष्ठायनम इतिनधुपक्कम् । ओं
कालायनमइतिगन्धम् । ॐ फत्रत्रिकरणायनम इति दीपम् ।
ॐ भवोद्भवायनम इति शैवेद्यम् ॥ ततोऽष्टपुष्पाञ्जलिनि-
वेद्येत् ॥ ध्यानपूर्वकम् ॥ ओं भवायदेवायनम ओं
सर्वायदेवायनम । ओं ईशानायदेवायनम । ओं पशुपतयेदेवायनम । ओं
रुद्रायदेवायनम । ओं उग्रायदेवायनम । ओं भीमायदेवायनम । ओं
महतेदेवायनम ॥ तत ॥ ओं भवस्यदेवस्यपत्न्यैनम । ओं सरस्य देवस्य
पत्न्यैनम । ओं ईशानस्यदेवस्य पत्न्यैनम । ओं पशुपते देवस्य पत्न्यै-
नम । ओं रुद्रस्यदेवस्य पत्न्यैनम । ओं उग्रस्यदेवस्यपत्न्यैनम । ओं
भीमस्य देवस्य पत्न्यैनम । ओं महतोदेवस्यपत्न्यैनम ॥ तत धूप दीपनी
राजनचामरादिभि सम्पूय ॐ प्रार्थयेत् ॥ ओं वन्दे महेश सुरसिद्ध सेवित
भक्तद्रुमं पूजित पादपद्मम् । विद्याप्रदभक्तजनैक वन्द्यायाचेच्छिष्यैरामदुर्घ-
मदेशम् । योयोगमाया प्रतितोहिपुंसा ज्ञान विवक्ते खिलयस्तुनिष्टम् ।
तं विरयनाथं कलिबलमपन्नध्यायनिष्ठं लिङ्गगत चन्द्रम् ॥ श्रीमत्साम्ब-
सदा । शिवार्पणमस्तु ॥ ततोऽष्टोत्तरशत श्री नम शिवायेति महामन्त्र-
प्रत्यय । पुष्पाञ्जलिकुर्यात् ॥ ओं नम ओं पाभरूपाय नमोऽष्टार षु
धृते । नमोनादात्मने तुभ्यनमो विन्दुकलात्मने । ॐ नमस्ते लिङ्गरूपाय
नानारूपायतेनम । त्व मातासर्वलाक्षणा त्वमेव जगत्कारिता । ॐ
त्वधात्वा स्वं मुद्गमिप्रसूर्यप्रिय प्रपितामह । नमस्ते भगवन् ऋ भारहर
मितेजसम् । ॐ भीमाय त्वोग रूपाय परगुणपादोनमः । नक्षत्रेवाय
मोगाय ऋगुणाय नमस्तुभे । ॐ त्रयाय धर्मभागाय नमो । कर्मरूपिणे

लिङ्गानांशिवरूपाणां यन्मया पूजनंकृतम् । तेन त्वं भगवान् रुद्र वाञ्छित-
 तार्थं प्रयच्छमे । ॐ तत्सत्साम्बसदाशिवार्पणमस्तु । ततः उत्थाय पुष्प-
 पूरितांजलिं कृत्वा ॥ ओ३म् यज्ञेनयज्ञ मयजन्त देवास्तानिधर्माणि
 प्रथमान्यासन् । तेहनाकं महिमान सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ॥
 ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने, नमो ययन्वै श्रवणाय कुर्म हे ।
 समेकामान् काम कामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणो ददातु । कुबेराययश्रव-
 णाय महाराजायनमः ॥ ओं स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं दैराज्यं
 पारमेष्ट्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यं मयं समन्त पर्याधीस्यात् । सार्वभौम
 सार्वायुषे आन्तादापराद्धात् । श्रुधिव्यै समुद्रपर्यन्ता या एक राडिति । तदप्येष
 श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिविद्यारोमरुतस्यावसन् गृहे । आधिपतस्य
 काम प्रेविश्वेदेवाः समासदः ॥ ओं विश्वत शचक्षुरुतः विश्वतो मुखो
 विश्वो तो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्याहुभ्यां धमति सम्पतः न्रैर्द्यावा-
 भूमौ जनयन् देवऽएकः ॥ ओं साम्बसदा शिवायनम इति पुष्पाञ्जलिं
 समर्प्य ॥ प्रदक्षिणांकुर्यात् ॥ ओं सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः
 देवायद्वयज्ञं तन्धानाऽश्रवन्द्वन्पुरुपंपशुम् । ओं यानिकानिच० ॥ अथ-
 क्षमापनम् ॥ ओं आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजांचैव
 न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ अन्यथाशरणं नास्ति त्वमेव शरणंमम ।
 तस्मात्कारुण्यं भावेनक्षमस्वजगदीश्वर गतं पापं गतं दुःखं गतंदारिद्र्यमेवच ।
 आगता सुख सम्पत्तिः पुष्टरायाश्च तद्यदर्शनात् ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधि-
 हीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे ॥ यद्दक्ष पद्भ्रष्टं मात्रा-
 हीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतादेव प्रसीद करुणांनिधे ॥ ओं करचरण
 कृतंवा कायजं कर्मजंवा श्रवणं नयनजंवा मानसं वापराधम् । विहित-
 मविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाव्ये श्रीमहादेव शम्भो ॥
 ओं त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव भ्राता च सखा त्वमेव । त्वमेव-
 विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेवदेव ॥ ओं साम्बसदाशिवाय-
 नमः ॥ ततः जलसंप्रोक्षणम् ॥ ओं शतं भवति शतायुर्वैपुरुषः शतद्रि-
 यरैवेन्द्रियं वीर्यं मात्मघत्ते ओं स्वस्ति मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु । आ-
 राध्यदेवताः । सुप्रसन्नाः वरदाः भवन्तु । इच्छितमनकामना संसिद्धिरस्तु ।
 प्राङ्मणाम्बु युस्तथास्त ॥ —इतिशिवपूजनम् ।

नीराजनम् ।

ओं जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीश, शिव० त्वन्मां पालय
 निस्वयं, कृपया जगदीश ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥१॥ कैलाशे-

गिरिसिखरे, कल्पद्रुम विपिने शिव० ॥ गुञ्जति मधुकर पुञ्जे बुञ्जवने
 गहने ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥२॥ कौकिल कृजित मञ्चति
 हंसावन ललिता शिव० ॥ विदधति कला पलास्यं मोदान्मद सहिताः ॥
 शिव ओं हर हर महादेव ॥३॥ तस्मिल्ललित सुदेशे, शालामणि
 रचिता, शिव० ॥ तन्मद्धे हरनिकटेगौरी मुद सहिता ॥ शिव ओं हर हर
 हर महादेव ॥४॥ भूपण भूपितदेहा रमयति निज रमणम् ॥ शिव० ॥
 प्रहोन्द्रादि सुरेश राधित सधरणम् ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥५॥
 विबुध चधूबहु नृत्यति, हृदया ह्लादायुतम् ॥ शिव० ॥ गायति किन्नर-
 राजः सप्तस्वर रचितम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥६॥ धिनकत धै
 धै धिनकत मृदङ्ग भारभते, शिव० ॥ क्वणकण ललितं वेणुं मधुरं
 नादयते ॥ शिव ओं हर हर हर महादेव ॥७॥ रुणु रणु वरणे रचयति,
 नृपुसुञ्जलितम् ॥ शिव० ॥ चक्रावतं भ्रमयति कुरते तां धिकताम् ॥
 शिव ओं हर हर महादेव ॥८॥ तां तां लुप चुप तालं पादयते ॥ शिव० ॥
 अङ्ग गुण्डाङ्ग गुलिनादं तास्यं कृतं कुरते । शिव ओं हर हर महादेव । ६॥
 कपूर्युति गौर पञ्चानन सहितम् । शिव० ॥ त्रिनयन शशिघर मोलिं,
 विपथर कण्ठ युतम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥९०॥ सुन्दर जटा
 कलापं, पावक युत भालम् ॥ शिव० ॥ डमरु त्रिशूल पिताकंकर घृत
 नृक पाकम् । शिव ओं हर हर महादेव ॥११॥ शङ्ख निनादं कृत्वा,
 मङ्गरि मारभते ॥ शिव० ॥ नीराजयते ब्रह्मा वेदार्थं चि ते ॥ शिव ओं
 हर हर महादेव ॥१२॥ इति मृदु वरणे सरोजे, हारकमले घृत्वा ॥ शिव० ॥
 अवलोक यति मदेशं काभादिं दिव्वा ॥ शिव ओं हर हर हर
 महादेव ॥ १३ ॥ मानवकपाल मालं पन्नगधर फलितम् ॥
 शिव० ॥ वामं विभागे गिरिजा, रूपं बहुलितम् ॥ शिव
 ओं हर हर महादेव ॥ १४ ॥ सुन्दर शीरे
 शिरशिख, कृतभम्माऽऽभरणम् ॥ शिव ॥ इति घृपमध्वजरूपं तापत्रय
 दरणम् ॥ शिव ओं हर हर महादेव ॥ १५ ॥ ध्यानं सन्ध्या ममये शुधि
 हृदये श्रुत्वा ॥ शिव० श्यागुं गिरिजानाथं गिरिशं ह्यभि नत्वा ॥ शिव
 ओं हर हर महादेव ॥ १६ ॥ प्रति दिन मेव पठनं भक्तया यः कुरते
 शिव० ॥ शिव भावुष्यं गुरुनि भक्त या यः श्रुणुते ॥ शिव ओं हर हर
 महादेव ॥ १७ ॥ ओं इद् ६ हृदिः प्रजननम्येऽध्यस्तु दशव्यीर ६ मर्त्य-
 गण ६ रक्तये ॥ आत्म मनि प्रत्रामनि पशुमनि लोक मन्वय मयसनि ॥
 अग्नि ६ प्रजाम्बटुलाग्ने करो त्यत्रं पर्यारेतोऽधम्मासुपत्त ॥ १८ ॥
 ओं भूर्भुवः स्वः श्रीगाम्वागशमिवाय नमः आरानिकर्यं दर्शयामि । ओं
 सज्जाराया मन्त्ररिचयश्चिः मन्त्र समिधः कृताः देवायपद्य न्मन्त्रानाऽ-

अवधन्पुरुषम्पशुम १ पापानि सर्वाणि पदेपदे या हरत्यहो तत्क्षणमेव नृ-
णाम् । प्रदक्षिणां तांपरि भक्ति भावात् समाचरेदेव १ मयि प्रसीद
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसाग्दसदाशिवायनमः प्रदक्षिणां समाचरामि—इति ॥

श्रीमद्रुद्राऽभिषेकप्रयोगः ।

आचम्य प्राणनायम्य शान्तिसूक्तं पठित्वा सुमुखरचेत्यादि गण-
पतिस्मरणं कृत्वा सङ्कल्प-अद्येत्यादि० एवं गुण विशेषण विशिष्टायां
शुभपुण्यतियो ममाऽऽत्मनः यजमानस्य वा श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल-
प्राप्त्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा कंटिति सर्वव्याधिनिरासपूर्वकं
सर्वाप्रीष्टसिद्धयर्थं ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रदेवता
प्रोत्यर्थं यथाज्ञानेन यथामलितोप चारद्रव्यैः षडङ्गन्यासपूर्वकं पुरुषसू-
क्तेन ध्यानाऽवाहनादि षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च सृष्टरुद्रावर्त्त-
नेनाभिषेक (रुद्रं महारुद्रमतिद्रं वा) पूर्वकं पूजनमहं करिष्ये ॥

षडङ्गन्यासाः—मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहतीच्छन्दः
बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ मनोजूनिजुपतामाज्ययस्यबृहस्पतिर्यद्दमिमन्तनोत्वरिष्टयत्त ॐ
समिमन्न्धातु ॥ त्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो म्प्रप्रतिष्ठ ॥ ओं
हृदयाय नमः ॥ १ ॥ अबोद्धग्ग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः
त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरोन्यासे जपे विनियोगः ॥ ओं अबोद्धग्-
ग्निः ॐ समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुपासम् ॥ युहाऽइववप्पव-
यामुब्जिहाना ॐ प्रभानव ः सिञ्चतेनाकमच्छ ॥ ओं शिरसे
स्वाहा ॥ २ ॥ मूर्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः
अग्निर्देवता शिखान्यासे जपे विनियोगः ॥ ॐ मूर्धा नन्दिबोऽश्व-
रतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कवि ॐ सम्भ्राजम-
तिथिञ्जनानामासन्नापाऽत्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ ओं शिरसायै वषट् ॥ ३ ॥
मर्माणित इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः विराट्छन्दः मर्माणि देवता
कवचन्यासे जपे विनियोगः ॥ ॐ मर्माणितेवैर्मर्माणाच्छादयामिसोम-
स्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् । श्रोत्र्वरीयोव्वरुणस्ते कृणोतुजयन्त्वानु-
देवा मदन्तु ॥ ओं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ विश्वतरचत्तुरिति
मन्त्रस्य त्रिरवकर्मा देवता नेत्रन्यासे जपे विनियोगः ॥ ओं ओं विश्वतर-
श्चत्तु रुत विश्वरवतो मुरो विश्वतो धाहुरुत विश्वतस्पान् ॥ सन्धाहु-
न्ध्यान्धमतिसस्पतत्रै र्थावाभू मीजनयन्देवऽएक ः ॥ ओं नेत्रत्रयाप
वौषट् ॥ ५ ॥ मानरतोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः जगतीछन्दः एकहरो

देवता अन्नन्यासे जपे विनियोगः । ओं मानस्त्रोके तनयेमानऽध्यायुषिमा-
नोगोपमानोऽअश्वेषुरीरिपऽः ॥ मानोन्वीरान्नुद्रभामिनो ध्वधीर्द्विदम्न-
न्तऽः सदमित्वा हृशामहे ॥ ओं अघ्नाय फट् ॥६॥

इति न्यासान् कृत्वा षोडशोपचारैः सान्द्रशिवं सम्पूज्य पुष्पा-
ञ्जलिं समर्प्य (रुद्रमन्त्रैः) अत्रिच्छिन्नजलधारया अभिषेकः कार्यः ॥
क्षमापनम्—आवाहनं न जनामि न जनामि तवार्चनम् पूजां चैव न
जानामि क्षमस्य परमेश्वर ॥ अर्पणम्—अनेनावाहनादिषोडशोपचारैः
अन्योपचारैश्चरनयथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्वयैः कृतेन पूजनाख्येन
कर्मणा ओं भूर्भुवः स्वः श्रीभवानीशंकरदेवताः प्रीयन्ताञ्ज मम ॥ ओं
तत्सद्ब्रह्मक्षारणमस्तु ॥

अभिषेकविचारः—

‘वेदावेदाद्विरामश्च रामद्विकैकम् । द्वौ द्वौ पृथभिन्त्रैस्तु नम-
कारचमकाः स्मृताः ॥ वाजश्व सस्यमुक्त्वा रमाचाग्निर्गुणं तथाग्निकः ॥
एका चैव चतस्रश्च त्र्यथिर्वाज इति क्रमः ॥ एवं चमकानेकादशधा वि-
मस्य एकैकमार्गं नमस्केषु संयोज्य पठेत्स ‘रुद्र’ ॥ तैरेकादशरुद्रैः ‘लघुरुद्रः’
तैरेकादशगुरौः ‘महारुद्रः’ ॥ तैरेकादशावृत्तैः ‘अतिरुद्रः’ । इति ॥

रुद्रोसंपद्याफलं देवि श्युष्व वदतो मम ।

एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥

संकल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सहृत् सहृत् ।

स्नात्वा पञ्चासृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥

बालप्रहोपरान्त्ययमेकावृत्तिमुदीरयेत् ।

अपमगौररान्त्ययं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥

प्रहोपरान्त्ये कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने १

मशामये समुरपन्नो सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥

नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।

राजवश्ये विभूर्त्यं च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥

रुद्रेभिः याममिद्विर्वैरिहानिश्च जायते ।

रुद्रैः पक्षभिः शत्रु र्ष तथा स्त्री यश्यनामियात् ॥ ६ ॥

रुद्रैः सप्तभिः भोक्तव्यं ग्याच्छिद्रवमाप्नोति मानवः ।

नवरुद्रैः पुत्रपौत्रवनधान्यमुत्पान्वितः ॥ ७ ॥

राजभोनिधिनागाय धैर्यदोषाटनाय च ।

धर्मायैकामयःशार्णा सघनाय ततः परम् ॥ ८ ॥



अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रिये ।
 राजवृद्धप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ ६ ॥
 विभिदचैत्र महारुद्रैरसाध्यसाधनाय च ।
 पञ्चभिरचमहारुद्रैः राध्यकामः प्रसाध्यते ॥ १० ॥
 सप्तभिरचमहारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
 नवभिरच महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ ११ ॥
 अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वां प्राप्नुयान्नरः ।
 ङाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १२ ॥
 भूतश्रेत पिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
 प्रहृदोपदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १३ ॥
 च्चरातिसारदोषादौ वानपित्तकफादिषु ।
 सर्वरोगापशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिन्न सशयः ॥ १४ ॥
 सर्वार्थसाधनयैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
 शसाध्य रोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥
 अल्पमृत्युविनाशाय तथारोगाय वै पुनः ।
 सर्वशान्तिर्भवेत्तन्त्र रूद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥
 शास्ता तपः-पद्मै का दक्षिणीरुद्री ।
 रुद्रएकादशरुद्रतः एका दशभिरे वागि महारुद्रस्य कथ्येते ।
 एकादश महारुद्रैः रतिरुद्र इति स्मृतः ॥ १७ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ हरिः-श्रीं ॥ गुणानान्त्रागुणपतिं ६ हवा-
 महे प्रियाणान्त्राप्रिय पतिं ६ हवामहे निधीनान्त्रानिधिपतिं ६
 हवामहेवसोमम ॥ आहमंजानिगन्ध्यामा स्वमंजानिगन्ध्याम् ॥ १ ॥
 गायत्रीकिञ्चिद्गुणान्त्रागुणपतिं ६ क्तयामुह ॥ वृद्धयुष्णिहां क कुत्सुवीभिः-
 शम्पन्तुत्वा ॥ २ ॥ द्विपंजा याश्चतुष्पदाग्निपंजायारश्चपद पंदा ऽः ॥
 त्रिचन्द्रान्द्रायाश्चसचन्द्रा ऽः सूचीभिः- शम्पन्तुत्वा ॥ ३ ॥ सुह-
 स्तोमा ऽः सुहचन्द्रसऽ आवृत्तं सुहप्रमा ऽऽर्पय ऽः सप्तदैव्या ऽः ॥
 पूर्वेषाम्पन्थामनुहरयधीरांऽऽन्वालेभिरेत्त्यो नरम्मीन् ॥ ४ ॥ ॐ
 यज्ञाप्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुषुपवस्यार्थवेति ॥ दूरद्वययोतिपाञ्चयो-
 त्तिकेकन्तन्मेमने- शिवसंकल्पमस्तु ॥ ५ ॥ येनरुम्माएयपसोमनी-
 पिणोयमेन कृएवन्तिद्विदधेपुशीरा ऽः ॥ यदपूर्वप्यसन्त ऽः प्रजानान्त-
 न्मेमने- शिव संकल्पमस्तु ॥ ६ ॥ यज्ञान्तमुवचेतोभृतिग्नय

उपोतिरन्तरमृतमज्ञस्तु ॥ यस्मान्नष्कृतेकिञ्चनन्कर्मकिञ्चयतेतन्मे-
मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ ७ ॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परि-
गृहीतममृतेन सर्वम् ॥ येत्यजस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसंक-
ल्पमस्तु ॥ ८ ॥ यस्मिन्नृचः ५ः गामयजू ६ः पियस्मिन्प्रतिष्ठि-
ठवारधनाभाविवाः ५ः यस्मिंश्चिरेत्त ६ः सर्वमोर्तम्प्रजान्तान्तन्मेमनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ ९ ॥ सुपारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेमीशु-
भिव्याजिनः ५ इव ॥ इत्यतिष्ठथेयन्दजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसंक-
ल्पमस्तु ॥ १० ॥ इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

हरिः ॐ ॥ सहस्रशीर्षापुरूपः ५ः सहस्राक्ष सहस्रपात् ॥ सभूमि ६
सर्व्वतस्त्वान्यतिष्ठददशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषः ५ः एवेद ६ः सर्व्व-
व्यङ्गु तय्यचभाष्यम् ॥ उतामृतस्वस्येशानोयदन्ने नातिरोहति ॥ २ ॥
एतावानस्यमहिमातोऽज्यापीशश्च पुरुषः ५ः पादोस्यविवरवाभूतानि
त्रिपादम्यामृतनिद्वि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वः ५ः त्रैरुपुण्ड्रः ५ः पादो-
स्येहार्धवपुनः ५ः ततो विव्यवह व्यक्रामत्सारानानशनेऽ अभि
॥ ४ ॥ ततो विवराहजायतविवराजोऽश्रधिपुरुषः ५ः ॥
सजातोऽश्रत्यरिच्यतपरचाङ्गु मिमयोपुरः ५ः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञा स्सर्व्व-
हृत् ५ः सम्भृतमृषदाज्यम् ॥ पशुं श्नाश्चक्रेवायुच्छ्यानातरण्याग्राभ्या-
श्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहृत् ५ः सामानि जज्ञिरे ॥ छन्दा ६
सिजज्ञिरेनस्नाद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्रवाऽश्रजायन्तये-
केचोभयादतः ५ः गावोइ जज्ञिरेतस्मात्तास्मात्सजाताऽश्रश्रवयः ॥ ८ ॥
तैत्यज्ञश्चिर्हिपिप्रौक्तन्पुरुषच्छातमग्रतः ५ः ॥ तेन देवाऽश्रय जन्त साह-
ध्याऽश्रपयश्चये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं लयश्चु ५ः कतिशाळ्यरूपयन ॥
गुह्यद्विमस्यामोतिश्चाहृषिमूर्त्प्रादाऽऽश्चयेते ॥ १० ॥ त्राक्ष्णोस्य-
मुष्ण मासोदवाह्राजन्त्यः ५ः ॥ उरुतदुस्ययदुद्वैरयः ५ः पदुषी ६
गुदोऽश्रजायत ॥ ११ ॥ घन्त्रमामनमो जातश्चवा ५ः सूर्योऽश्र-
जायत ॥ शभोदवाह्रापुररवप्रणररचमुग्नादतिरवायत ॥ १२ ॥
नाश्रवाऽऽश्रामोदुन्तरिण ६ शीष्योऽश्री ५ः मम युशानः ॥ पदुष्याम्भि-
रिः ५ः भोदवाचपाश्रीवां २ श्रवणयन् ॥ १३ ॥ यत्पुण्ड्रेणद्विपा-
देवायममवन्वत ॥ यमन्तोऽश्रामीशायं ५ मोक्षः ५ इष्य ५ श्र-

द्वयि ऽः ॥ १४ ॥ सप्तवास्यासन्परि धयन्ति ऽः सप्तसमिधं ऽः कृताऽः ॥
 देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽन् अर्धन्तन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेनेयज्ञमयज-
 न्तदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्त्र्यास्तन ॥ तेहृनाकम्महिमानं ऽः सचन्त
 यत्र पूर्वेमाद्वाया ऽः सन्ति देवा ऽः ॥ १६ ॥ अद्भ्य ऽः सम्भृत ऽः
 पृथिव्यैरसाञ्चविविश्वं कर्मण ऽः समवर्त्तताग्ने ॥ तस्यत्त्वष्ट् वाविद-
 धंद्रूपमेतितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ने ॥ १७ ॥ वेदा हमेतम्पुरुषम्मु-
 हान्तमादित्यवर्णान्तमंस ऽः पुरस्तात् । तमेवविदिच्चाति मृत्युमेतिना-
 न्य ऽः पन्थाव्विद्यतेयनाय ॥ १८ ॥ प्रजापतिश्चरतिध्वंश्च अन्तर-
 जायमानो बहुधाव्विजायते ॥ तस्ययोनिम्परि पश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हृत्-
 स्तुब्धुर्वना निव्विश्वा ॥ १९ ॥ यो देवेभ्यंश्च आतपंतियो
 देवानाम्पुरोहितः ॥ पूष्टोयोदेवेवेभ्यो जातो नमोरुचायुभ्राह्मणे ॥ २० ॥
 रुचम्राद्वाज्जनयन्तो देवाश्चग्नेस्त दंशु वन् ॥ यस्तवैवम्राह्मणोव्विद्या-
 त्तत्पदेवा ऽश्चसन्वशे ॥ २१ ॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्कन्या बहो-
 रात्रे पाशर्वे नक्षत्राणि रूपमशिश्वनौक्यात्तम् । इच्छणान्निपाणामुम्म
 ऽइपाणसर्व्वलोकर्मण्डपाण ॥ २२ ॥ इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
 हरिः ॐ ॥ आशु ऽः शिशानोव्वृषभोनमीमोर्धनापुन ऽः क्षोभेणश्च-
 पणीनाम् ॥ सड् क्रन्दन्तोनिमिष ऽ एक वीर ऽः शतं सेना ऽ अज-
 यत्साकमिन्द्रं ॥ १ ॥ सड् क्रन्दनेनानिमिषेणाजिष्णुनायुक्कारेणदु-
 शच्यवनेन धृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयतत्सहस्रं वयुधान् ऽ इपुं हस्ते-
 न्ब्रह्मणा ॥ २ ॥ सड् इपुं हस्ते ऽः सनिशङ्गिभिर्ब्रह्मीस थ क्ष्ण्टासयुधं
 इन्द्रोऽग्रेण ॥ सथ सृष्टजित्तो मृपावाहृशद्भुग्म धन्नचाप्सति
 हिताभिरस्ता ॥ ३ ॥ वृहस्पतेपरिदीयारथेन रक्षोऽमित्रां-
 २ ॥ ऽअपुवार्यमान ऽः ॥ प्रभृजन्तसेना ऽः प्रभृणोयुधा-
 जयन्तस्माकमेद्रभित्तरथानाम् ॥ ४ ॥ वलविष्णुयस्यविर-
 ऽः प्रवीर ऽः सहस्वान्वाजी सहमानऽ वृग्म ऽः ॥ अभिर्वीरोऽ भृमिसत्त्वा
 सहोजाजैश्चमिन्द्ररथमातिष्ठठगोविन् ॥ ५ ॥ गोत्र भिदंज्ञोविद्वज्ज-
 वाहुञ्जयन्तमंज्मप्रभृणन्तमोजमा ॥ इम थ सजाताऽ अन्वोरथद्व-
 मिन्द्रं सत्पायो ऽ अनुस थ तरभद्वम् ॥ ६ ॥ अभिगोत्रारि सहसा
 गार्हमानोदयोवीर ऽः शतमन्युरिन्द्रं ॥ दुरच्यवन ऽः घृतनापाडं युद्ध

पोस्तमाह ६ सेनाऽश्नत्तु अयुत्सु ॥ ७ ॥ इन्द्रोऽ आसान्नेता बृहस्पति-
 दक्षिणायज्ञ ६ पुऽपंतुसोमं ÷ देवसेनानामभिमञ्जतीनाञ्जयन्तीना-
 म्मरुतोयत्त्वामम ॥ ८ ॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राक्षोऽ आदित्या-
 नास्मरुता ६ शद्धं दुर्मम ॥ इहामनसाम्भुवनचचयवानाहोषां देवानाञ्ज-
 यन्तामुदस्यात् ॥ ९ ॥ उद्वपयमचवत्रायुषान्नुत्सत्सचवनाभामुक्कानाम्मना ६
 सि ॥ उद्वृष्ट्रहन्वाजिनां वाजिनान्पुद्गानाञ्जनयताञ्च्यन्तुघोषां ६
 ॥ १० ॥ अस्माकमिन्द्रोऽ समृतेपुद्ग्वजेत्स्माकंय्याऽइषं वस्ताजयन्तु ॥
 अस्माकंवीराऽउत्तरेभवन्त्वस्मां २ ॥ ११ ॥ अवेवाऽ अवेवाहवेपु ॥ ११ ॥
 अमीपाञ्जिप्रचम्प्रतिलोभ यन्तीगृणाङ्गान्प्येपरेहि ॥ अभिष्येहिनिर्दं
 हृत्सुरोकेरुध्रे नामिन्द्रास्तमसासचन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टापरापवशरं
 वष्येप्रभ स ६ शिते ॥ गच्छामिन्द्राण्य पशसुमामीपाकव्यनोक्लिष ६
 ॥ १३ ॥ प्रेताजयतानरइन्द्रोऽ शर्म यच्छतु इमारं + सन्तुवाह
 वोना भृष्यायथासंख ॥ १४ ॥ असौयामेनामस्तु ६ परे पामन्यै तितऽ
 ओजसास्पदंस्माना ॥ ताष्टं गृह्णतमुसापंवरतेनयथामीऽ अन्न्योऽ अन्न्य-
 न्नजानन ॥ १५ ॥ यत्रवाप्याऽ सम्पन्तिऽमाराव्विशिवा इव ॥ तन्नऽइन्द्रो
 बृहस्पतिरदिति ६ शर्मयच्छतु विरश्वाहा शर्मयच्छतु ॥ १६ ॥ मर्माणि-
 तेऽमर्माच्छादयामिसामस्ताराजा मृतेनानुवरताम । उरोऽवरीयो चरुण-
 स्तेऽष्टोऽमयन्तुत्वाऽनुदेवामन्तु ॥ १७ ॥ इति ऋते तृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

हरि = ॐ ॥ विष्णुश्चात्बृहस्पतिर्वतुसोम्यस्मद्वायुर्दवद्यज्ञपता
 वविन्दुतम ॥ चार्जुतोयोऽ अमिरत्तित्मनाऽपुजा ६ पुपोपपुग्धाविरा-
 जति ॥ १ ॥ उद्वयत्तवरेदमन्देवैव्याहन्ति वेतव ÷ ॥ द्येऽनिरररांय-
 सूर्यम् ॥ २ ॥ येना पावचक्षुमा भुरण्यन्तुऽजनां ० ॥ ३ ॥ अतु ॥ त्वं म्य-
 ण्यपरयति ॥ ३ ॥ देव्यामप्यययुऽआगत ६ र्भेनुसूर्यत्वचा ॥ गद्ववायुश
 ६ समञ्जसः । तम्भुक्तया ऽय्येनरिरचमन्नेवानाम् ॥ ४ ॥ तम्भुक्तया
 पुत्रं योऽत्रि वयेमयोऽयेऽतातिर्बहिषदं ६ म्यरिदम् ॥ प्रतीषोनेऽवृ-
 न-दोऽरेऽभिमाऽगुजं रन्तुमनुयामुपदं ॥ ५ ॥ अयःवेनरयोऽयुऽनित-
 टमंगयोतिऽनंतपूरतसोऽिनुमाने ॥ इममुपा ६ सांमेऽय्यं शिशुञ्ज
 विष्णोऽमृतिभोऽिऽग्या ॥ विष्णुऽयानागुऽगुऽदनीऽ न्यत्तुमिऽम्यऽय्येऽण
 म्यामनेऽ ॥ चारुणायाऽपुषीऽ अन्तरिऽयुऽय्यं ऽऽऽय्यमार्गजतुऽय्यु-

पंशच ॥ ७ ॥ आनुऽइडाभिर्विन्दुशस्तिव्विश्वानरऽः सवितादेवऽ
 एतु ॥ अप्रिययायुवानोमत्सथानो व्विश्वेज्जगदभिपित्वेमे
 नीपा ॥ ८ ॥ यद्दक्षकष्व्वुत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्त-
 दिन्द्रतेव्वरो ॥ ९ ॥ त्रिणिव्विश्वददर्शतोज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ विश्व-
 माभासिरोचनम् ॥ १० ॥ तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मुदथाकः
 त्तोचित्तुऽः सञ्जभार ॥ यदेदयुक्तं हरितः सधस्तथादादद्राञ्चीवा-
 सस्तनुतेसिमस्मे ॥ ११ ॥ तन्मिच्छस्यव्वरुणस्याभिचक्षेससूर्य्योरुपक
 कृणुतेघोरुपस्त्ये ॥ अन्नन्तमन्त्रदृशदस्यपार्जः कृष्णमन्त्र्यद्वरितुऽः
 सन्भान्ति ॥ १२ ॥ वराणमहो २ऽ असिसूर्य्यषडादित्यमहो २ऽ
 असि ॥ महस्तेसुतोमहिमापनस्यतेद्वादेवमहो २ऽअसि ॥ १३ ॥ बटू-
 सूर्य्यश्रवंसामहो २ऽ असिसुत्रादेवमहो २ऽअसि ॥ मन्हादेवानाम-
 सूर्य्यः ॥ पुरोहितोव्विभुज्योतिरदाव्यम् ॥ १४ ॥ श्राय-
 न्तऽइवसूर्य्यव्विश्वेदिन्द्रस्यमत्त ॥ व्वसूनिजुनेजनमानुऽओजसाप्रति-
 भागन्नदीधिम ॥ १५ ॥ अदथादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरऽईसऽः पिष्ट-
 तानिरव्वदथात् ॥ तन्नोमिन्त्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिऽः सिन्धुःपृथि-
 वीऽ बुदघोऽः ॥ १६ ॥ आकृष्णेनरजसाव्वत्तमानोनिवेशयन्नमृत-
 म्मत्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवन्नानिपश्यन् ॥ १७ ॥
 इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

हरिः ॐ ॥ नमसोरुद्रमन्त्र्यव्वऽइतोतऽइपेनमः वाहुव्यामु-
 ततेनमः ॥ १ ॥ याते रुद्रशिवाननूरघोरापोपकाशिनी ॥ सयान-
 स्तन्वा शन्तमयागिरिशन्तामिचाकशीहि ॥ २ ॥ यामिपुङ्गिरिशन्त-
 हस्तेविमप्यंस्तेवे ॥ शिवाङ्गिरिऽरुमादि ॥ ३ ॥ पुनंपञ्चगत
 ॥ ३ ॥ शिवेनव्वचसात्वागिरिशाब्जाव्वदामसि ॥ ययानुऽः सर्व्व-
 मिज्जगदयुक्तम् ॥ सुमन्ताऽअसत् ॥ ४ ॥ अद्वयवोचदधिवक्-
 क्ताप्रथमोदैव्योभिपक् ॥ अदीर्रसव्वीक्ष्मभयन्तसव्वीर्रजयातुपा-
 न्नयोधराचीऽः परासुव ॥ ५ ॥ अतीदस्ताम्नोऽ अरुणऽउतव्वभु
 ऽः सुमद्गलः ॥ येचैन ॥ रुद्राऽ अभितोदिच्छ्रिताऽः संहृशो
 वेपा ॥ ६ ॥ इहेऽइमेहे ॥ ६ ॥ असोयोऽमर्षतिनीलांग्रीवोव्वि-
 लोहितऽः ॥ इनेनहोपाऽ अन्दरुन्नदरुनुदहाय्यऽः

सहृष्टोमृदयातिन ऽः ॥ ७ ॥ नमोस्तुनीलंग्नीवायसहस्राक्षायमीदुपे ॥
 अथोये ऽ. अस्यसत्त्वानो हन्तेच्योकरत्नम ÷ ॥ ८ ॥ प्रमुञ्चधन्व-
 नस्त्यमुमयोरात्कन्योर्ज्याम् ॥ याश्चतेहस्त ऽ इपत्र ऽः पराताभग-
 वोव्वप ॥ ९ ॥ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्लयोबाणवाँ २ ॥
 ऽत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइपवऽआभुरस्यनिपद्दधि ऽः ॥ १० ॥ यत्ते
 हेतिर्मादुष्टमहस्तेषुभूवतेधनु ÷ ॥ तयास्मान्निचरत्स्त्वमत्रुद्धम-
 यापरिभुज ॥ ११ ॥ परितेधन्वनेहेतिस्मान्दृष्टुविशरवत ÷ ॥
 अथोय ऽइपुविस्तवारेऽ अम्मन्निर्घेहितम् ॥ १२ ॥ अथतत्त्यधनु
 एव ६ सहस्राक्षशतेषुधे । निशोच्यशाल्यानाम्मुखशिबोन ÷ सुम-
 नाभय ॥ १३ ॥ नमस्तऽ आयुधानाताताय धृष्टये ॥ उभा-
 च्यामुवतेनमोवाहुम्यान्तबुधन्वने ॥ १४ ॥ मानोमहान्तमुतमानोऽ-
 अर्भकमान्ऽ उन्नतमुतमान ऽउज्जितम् ॥ मानोवधी ऽः पितर-
 श्वोतमात्स्मानं ÷ प्रियास्तन्त्रोरुद्ररीरिप ऽः ॥ १५ ॥ मानस्तोके
 तनेयेमान्आयुपिमानोगोपुमानो ऽः अश्वेपुरीरिप ऽः ॥ मानोव्वीरा-
 न्द्रु द्राभामिनोऽवधीविष्मन्त ऽः सदाभित्वाहवांमहे ॥ १६ ॥ नमोहि
 रण्यराहवे । सेनान्ये दिशारषपतये नमो नमो वृक्षेभ्योहरिकेशेभ्य
 ऽः पशुनाम्पतये नमोनम ÷ शृण्विर्जरायत्तिर्षीमने पथीनाम्पतये नमो
 नमो हरि केशायोपवीतने पुष्टानाम्पतये नमोनमोऽभ्युशाय ॥ १७ ॥
 नमोवद्वुशाय । व्याधिनेऽर्नाम्पतये नमो नमो भवस्येहेत्यैजगता-
 म्पतयेनमोनमो रुद्रायां ततायितेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनम ÷ नम ÷
 सूतायाहेन्त्यैवनाम्पतये नमोनमोरोहिताय ॥ १८ ॥ नमोरोहिताय-
 स्यपतयेवृक्षानाम्पतयेनमो नमो मुवन्तयेपरिवृत्तायोपधीनाम्पतयेन-
 मोनमोमन्त्रिणेष्वपिजायराणाम्पतये नमो नम. ऽत्रुचेर्षोपायाकृ-
 न्दयेन पथीनाम्पतयेनमोनम ÷ वृत्तायुव्या ॥ १९ ॥ नमःऽवृत्तायुव्या ॥
 पाषातेमर्षनाम्पतयेनमोनम ऽ मर्दानादनिद्याधनेऽ आख्यापि
 नीनाम्पतयेनमोनमोभिष्किं कष्टुभार्यमानात्पतयेनमोनमो-
 निपेरुपरिवृत्तायारण्यानाम्पतयेनमोनमोऽव्यः ॥ २० ॥ नमो वद्वर्ष-
 तेपिष्मन्तेम्यायुनाम्पतयेनमोनमो निष्किणं ऽ इपुधिपतेस्वराणा-
 म्पतयेनमोनमःऽ शृण्विभ्योऽर्षी ६ मग्धोमुष्णताम्पतये नमो नमो

सिमद्भ्योन कृद्भरद्भ्योऽन्वित् कृन्तानाम्पतयेनमः ÷ ॥ २१ ॥ नमः ऽः उष्णी-
 पिणे ॥ गिरिचरायंकुलज्वानाम्पतयेनमो नमः ऽशु मद्भयोधन्वायिष्य-
 रश्चयोनमोनमः आतन्वानेभ्यः ÷ प्रतिदधानेभ्यश्चयोनमोनमः
 आयन्द्भ्योऽस्यद्भ्यश्चयोनमोनमोऽविषसृजद्भ्यः ÷ ॥ २२ ॥ नमोऽवि-
 सृजद्भ्योऽविद्भ्यश्चयोनमोनमो नमः ÷ स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चयोनमो-
 नमः ऽः शयानेभ्यः ऽभ्यामीनेभ्यश्चयोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योऽधार्वाद्भ्यश्च-
 योनमोनमः ÷ सुभाभ्यः + ॥ २३ ॥ नमः ÷ सुभाभ्यः ÷ सभापतिभ्य-
 रश्चयोनमोनमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्चयोनमोनमः ऽआभ्ययाधिनीभ्यो-
 विप्रिद्धयन्तीभ्यश्चयोनमोऽनुमः ऽगणाभ्यस्तु ५ हृतीभ्यश्चयो-
 नमोनमोऽगणेभ्यः ÷ ॥ २४ ॥ नमोऽगणेभ्यो । गणपतिभ्यश्चयोनमो-
 नमोऽभ्रातेभ्योऽभ्रातपतिभ्यश्चयोनमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च-
 योनमोनमोऽद्विरूपेभ्योऽद्विरूपेभ्यश्चयोनमोनमः ऽः सेनाभ्यः ऽः
 ॥ २५ ॥ नमः ऽः सेनाभ्यः ऽः । सेनानिभ्यश्चयोनमोनमो रथिभ्यो
 ऽअथेभ्यश्चयोनमोनमः ÷ चतुर्भ्यः ÷ समूहीभ्यश्चयोनमोनमो
 मुद्भ्यो अभ्युक्तेभ्यश्चयोनमः ÷ ॥ २६ ॥ नमस्तर्क्ष्यो । रथकारे-
 ष्वश्चयोनमोनमः ऽः कुलातेभ्यः ऽः कुम्भारैभ्यश्चयोनमोनमोनिषा-
 नेभ्यः ÷ पुञ्जिष्टेभ्यश्चयोनमोनमः ÷ श्वन्तिभ्योऽगुण्यभ्यः श्वयो
 नमोनमः ऽः श्वभ्यः ÷ ॥ २७ ॥ नमः ऽः श्वभ्यः ऽः । श्वपतिभ्यश्चयो-
 नमोनमोऽभवायं चरुद्राय चनमः ÷ श्वर्वायं चपगुपतये चनमोनोऽङ्गमीवाय-
 चशिविष्टाय चनमः ÷ कर्णिके ॥ २८ ॥ नमः ÷ कर्णिके च्च्युप्तके
 शाय चनमः ÷ महामाद्यं चरातपन्वने चनमो गिरिशायं च
 शिविष्टाय चनमो मोदुष्टमाय चपुमते चनमोऽह्म्याय ॥ २९ ॥
 नमोऽह्म्याय । च्चवामनाय चनमो द्रुते च्चवर्षाय च नमोऽवृद्वायं चम-
 यं च नमोऽवृद्वायं च नमोऽवृद्वायं चनमः ऽः ॥ ३० ॥ नमः ऽः आशर्वे ।
 चात्रिरायं चनमः ऽः शीघ्राय च नशीच्यायं चनमः ऽः ऊर्माय च्चस्व्या-
 यं चनमोनोऽदुयायं च्चोऽदुयायं च ॥ ३१ ॥ नमो गृत्सेभ्यः । च कृत्ति-
 ष्टायं च नमः + पृथ्व्यायं च पृथ्व्यायं चनमोनमोऽदुयायं च्चपगुप्त-
 यं चनमोऽजपन्वायं च्चुज्जनाय चनमः ऽः सोभ्याय ॥ ३२ ॥ नमः
 सोभ्याय । च्चपनिभ्यायं च नमोऽपन्वायं च च्चुज्जनाय चनमः ऽः रतो-

क्यायवा वसन्न्यायचनम् ऽरुव्वंर्यायचल्लयायचनमोच्छन्न्याय ॥ ३३ ॥
 नमोन्न्याय चकद्व्यायचनम् ÷ श्रवायचप्रतिश्रवायचनमऽश्राशुपेया-
 यचाशुरथायचनम् ऽ शूरायचाधमेदिनेचनमीविल्मिने ॥ ३४ ॥
 नमोविल्मिने । चकवचिने चनमाज्यमिगोचव्वरुचिनेचनम् ÷ श्रु-
 तायचश्रु तसेनायचनमोदुन्दुदुदयायचाहतन्यायचनमोवृष्टणवे ॥ ३५ ॥
 नमोवृष्टणवे । चप्रमृशायचनमोनिपुद्भिगेचेपुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेपेवेचा-
 युधिनेचनम् ÷ स्वायुधायचमुभन्वनेच ॥ ३६ ॥ नमः सुत्याय ।
 उपर्यायचनम् ऽ काट्यायचनीप्यायचनम् ऽः कूह्यायचसत्याय-
 चनमोनावेयाय चवैशान्तायचनम् ऽः कूप्याय ॥ ३७ ॥ नमः ऽः
 कूप्याय । चाषट्पायचनमोव्वीध्रद्व्यायचातप्यायचनमोमेध्यायच-
 विद्वद्यायचनमो च्वप्योपचवानुप्यार्यचनमोव्वात्याय ॥ ३८ ॥
 नमोव्वात्याय । यश्चरेध्यायचनमोव्वास्तुव्यायचम्बारास्तुपायचनम् ऽः
 सोमाय परुद्व्याय चनमस्ताम्नार्यवाहृणायचनम् ÷ शङ्खे ॥ ३९ ॥
 नमः ÷ शङ्खे । चप्युपतयेचनमऽवृम्यार्यदमीमायचनमोममेवधा-
 र्यचद्वरेवधायचनमोद्वेष्टेष्टनीयसे च नमो वृष्टेध्या हर्बिशेध्या
 नमोव्वात्याय ॥ ४० ॥ नमः ÷ शङ्खे । चमयोभवायचनम् ÷
 शङ्खार्यनमयस्करायचनम् × शिवायनाशिवतराय च ॥ ४१ ॥
 नमः ऽ पाप्याय । चावाप्यायचनम् ÷ प्रतरणायचोत्तरणाय चनम-
 मीत्यायचकृत्त्यायचनम् ÷ शप्त्याय चपेन्वायचनम् सिवुत्याय
 ॥ ४२ ॥ नमः ÷ सिवुत्याय । चप्रयाद्व्याचनम् ÷ कि ६
 शिवायचस्युषायचनम् ÷ कपदिनेनपुस्तयेचनम् ऽ इरि रयायचप्र-
 र्थायचनमोव्वाद्याय ॥ ४३ ॥ नमोऽत्रगोय चमोप्याय
 चनमल्ल्यायगोद्व्यायचनमोद्वुद्व्यायचनिरेप्यायचनम् ऽः काट्या-
 यपगद्वरेष्टायचनम् ऽ शुच्याय ॥ ४४ ॥ नमः ऽः शुच्याय ।
 चद्वित्यायचनम् ÷ पा ६ सूत्र्यायचरज्यायचनमोकोत्यायचोत्र-
 त्यायचनम् कृत्त्यायचमृत्त्यायचनम् ÷ प्रथार्य ॥ ४५ ॥ नमः +
 प्रथार्य । चपणशदायचनम् ऽ उद्वुरमांगायचनमिधतेचनम् ऽ
 चाभिदुतर्णाप्रिदुतेचनम् ऽ इपुद्व्यायचुद्व्यायचनमो नमोव
 ऽः सिवुत्यायचनम् ६ हर्बिशेध्यायचनमोव्वाद्यायचनमोव्वाद्याय-

न्तुतेयन्दिग्मोयश्वतोद्वेष्टितमेपाञ्जम्भेदम् ॥ ५ ॥ ६४ ॥ नमोस्तु-
 रुद्रेभ्योययेन्तरिक्षेयेपाञ्चात् ५ इषवः ५ तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणा
 दशपृथ्वीचीर्दशोर्दीचीर्दशोर्ध्वाः ५ ॥ तेभ्योनमोऽभस्तुतेनोऽवन्तुते
 नोमृष्टयन्तुतेयन्दिग्मोयश्वतोद्वेष्टितमेपाञ्जम्भेदम् ५ ॥ ६५ ॥
 नमोस्तु । रुद्रेभ्योययेन्तरिक्षेयेपाञ्चात् ५ इषवः ५ तेभ्योदशपृथ्वी-
 चीर्दशदक्षिणादशपृथ्वीचीर्दशोर्दीचीर्दशोर्ध्वाः ५ ॥ तेभ्योनमोऽभस्तु
 तेनोऽवन्तुतेनोमृष्टयन्तुतेयन्दिग्मोयश्वतो न्तु द्वेष्टितमेपाञ्जम्भेदम्
 ५ ॥ ६६ ॥ इति रुद्रे परचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

हरिः ÷ ॐ ॥ वय ६५ सोमस्तुतेतवमनस्तुनूपुविश्वतः ५ ॥
 प्रजावन्तः ५ संचेमहि ॥ १ ॥ एतै रुद्रभागः ५ महस्वस्त्राम्बि-
 क्तानञ्जुयस्वस्वाहिते रुद्रभागः ५ आशुस्तेषु ५ ॥ २ ॥ अथ
 रुद्रमदीमह्यवेदेवन्त्यम्बकम् ॥ यथा नोऽव्यसम्भकर द्यवांश्च ५
 श्रेयसप्रकद्वयथानोऽव्यवमाययान् ॥ ३ ॥ संप्रजममि मेपुजन्न-
 वेशवायुपुरुषायभेपुजम् । सुखभेपायमेष्ट्ये ॥ ४ ॥ अयम्बकंयजामहे
 सुगन्धिर्वसुष्टितवर्द्धनम् । उत्रांरुक्रमिउचन्धनान्मृत्योर्मुंहीयमासृतात् ॥
 अयम्बकंयजामहेसुगन्धिर्वसुष्टितवर्द्धनम् ॥ उत्रांरुक्रमिउचन्धनादितोमुंही-
 यमासृतात् ÷ ॥ ५ ॥ एतत्ते । रुद्रात्रमनेन परे मूर्जव्रतांतही ॥ अर्बतत
 धन्वापितृकवासः ५ कृत्तिवासाऽअहि ५ मग्नः ५ शिबोर्दीहि ॥ ६ ॥
 अ्यायुपञ्जमर्दग्नेः ५ कृयपस्य अ्यायुपम् ॥ यदेवेषुअ्यायुपन्तनोऽभस्तु-
 अ्यायुपम् ॥ ७ ॥ शत्रोनामीमिश्चर्वितस्तेपितानमग्नेऽभ अस्तुमामीहि ६५
 मीः ५ ॥ निरत्तयाभ्यानुप्रायाय अजनेनायशायणोपायसुप्रजाम्वा-
 यंसुवीर्यार्थ ॥ ८ ॥ इति रुद्रे पठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

हरिः ÷ ॐ ॥ उग्रमन्त्रं । भीमरश्चदुध्वात्वररषुनिर्दग्मासृहो
 र्वाभियुक्तार्षदियुक्षिपुः ५ स्वाहा ॥ १ ॥ अग्नि ६५ हर्दयेनाशानि ६५
 एदणामेष्टेषुवर्तिष्टु ६५ हर्दयेनमृगंयुक्ता ॥ शत्र्यंमनन्नाच्यामीशा-
 नमृग्युक्ता महादेरु मन्त्रः ५ पशुंय्येनोमृष्टेयवनिष्टुदुनांजमिष्टुदनुः
 शिङ्गीनिहोरयात्तयाम् ॥ २ ॥ उग्रमन्त्रोदितेनमिष्टु ६५ सोऽव्येन
 रुद्रोदीर्घैरेनेष्टमप्रक्षीरेनमरुतोपनेनमादुद्रयान्प्रमुदां ॥ मृग्यु-
 क्त्वात् ६५ रुद्राणांत् ५ पाश्यांमहादेवस्य ५ अथ्यंयवनिष्टुः ५

पशुपतेऽः पुरीतन् ॥ ३ लोमन्म्यः ऽः स्वाहा लोमन्म्यः ऽः स्वाहात्वचे
 स्वाहात्वचेस्वाहालोहितायस्वाहालोहितायस्वाहामेदोम्यः ऽः स्वाहा मेदोम्यः
 ऽः स्वाहा । मा ध सेम्यः स्वाहामा ध सेम्यः ऽः स्वाहास्त्रावम्यः ऽः
 स्वाहास्त्रावम्यः ऽः स्वाहा स्थम्यः ऽः स्वाहा स्थम्यः ऽः स्वाहाम्
 उजम्यः ऽः स्वाहा मज्जम्यः ऽः स्वाहा रेतेस्वाहापायवेस्वाहा ॥ ४ ॥
 आयासाय स्वाहा पायासायस्वाहासंख्यासायस्वाहा त्रियासायस्वाहाद्या-
 सायस्वाहा ॥ शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहाशोचमानायस्वाहाशोकायस्वाहा ॥ ५ ॥
 तपसेस्वाहा । तप्यते स्वाहातप्यमानायस्वाहा । तप्याय स्वाहाधम्माम्य
 स्वाहा । निष्कृत्येस्वाहाप्रार्यशिक्ष्ये स्वाहा भेषजास्वाहा ॥ ६ ॥ यमाय-
 स्वाहान्तनायस्वाहामृतमे स्वाहा ॥ अक्षणेस्वाहाब्रह्महत्याय स्वाहा
 विवशवेभ्योदेवेभ्यः ऽः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ध स्वाहा ॥ ७ ॥ इति
 रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

हरि ÷ ॐ । ठ्वाजंश्च । मेप्रसवश्चमेप्रयतिश्च मेप्रसितिश्च-
 चमेधीतिचश्चमेअक्रुर्नुश्चमेस्वश्चमेव मेरलोकरश्चचमेश्चश्चमेश्चुति-
 रश्चमेज्योतिश्चमेस्त्रश्चमेयज्ञेन कल्पितान् ॥ १ ॥ प्राणश्च ।
 मेपानश्चमेअयानश्चमेमुश्चमेचित्तश्चमे ऽ आधीतश्चमेववाक्चमे-
 मन्श्चमेचक्षुश्चमेअरन्श्चमेअर्चमेदक्षरश्चमेवल्त्रचमेयज्ञे न कल्पन्ताम् ॥
 ओजंश्च । मेसद्श्च । ऽ आत्मार्चमेतनुःश्चमे शर्म्वमेव्वर्म्ममेवमेत्ता-
 तिचमेस्पीतिचमेपर्धु ध धिचमेरातीराणि चमेऽआयुश्चमेज्जार्चमेयज्ञे
 नकल्पन्ताम् ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यश्च । आधिपत्यश्चमेमृत्त्युश्चमेमार्मश्च-
 मेमश्चमेमश्चमे जेमाचमेमहिमार्च मेव्वरिमार्चमेअधिमाचमेवप्रिमाच-
 मेदृद्रापिमाचमेवृद्धश्चमेवृद्धिश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ४ ॥
 (१०) ॥ सत्यश्च । मे अद्दृष्टाचमेजगन्मेषनेचमेविचमेवमेमईच-
 मेकीडाचमेभोद्वश्चमेजानश्चमेतनिष्प्येनाणश्चमे मृत्तश्चमेसुरूतश्च-
 मेयज्ञे नकल्पन्ताम् ॥ ५ ॥ सुतश्च । मेसुतश्चमेयुजश्चमेनामश्चमेकीवा-
 तुरश्चमेदीर्घायुश्चमेन निन्त्रश्चमेमंयज्ञे सुग्रश्चमेशार्यश्चमेसुम्या-
 रश्चमेमुदिनेचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ सुन्तश्च । मेधृत्तार्चमे
 चेर्मश्चमेधृतिश्चमे विष्णुश्चमे महश्चमे सुधिवश्चमे शात्यश्च
 मेमृश्चमेमृश्च मेमीरश्चमेतयश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ७ ॥

शर्द्ध । मेमपरचमे त्रिपुयञ्चमे ह्यमशर्द्धमेकामररचमेमौमनसशर्द्धमेमर्ग-
 ररचमेद्विद्विणञ्चमेमद्रञ्चमेद्वेयश्चमेव्वसीयञ्चमेमर्शररचमे यज्ञेनकल्प-
 न्ताम् ॥ ८ ॥ (न०) । उक्त्वं । मे सुनृतांचमं पर्यञ्चमेरसरञ्चमेघृतञ्च
 मेमधुंचमेसगिंचरचमे सपीतिञ्चमेऽपिशर्द्धमेद्वृष्टिञ्चमेऽर्त्तञ्चमऽश्रीङ्गि-
 यञ्चमेघृत्तञ्चमेकल्पन्ताम् । ९ ॥ रयिरर्द्ध । मेरायररचमेपुष्टएचमेपु-
 ष्टिरचमेऽत्रिभुचमेप्रभुचमेपूष्णञ्चमेपूष्णं तरञ्चमेकुचं वक्षुमर्चितञ्चमेऽर्त्तञ्चम
 सुभमेयज्ञेऽकल्पन्ताम् ॥ १० ॥ ठिञ्चञ्चं । मेऽवैराञ्चमेभूतञ्चमेमविष्य-
 चमे सुगञ्चमेसुपलयञ्चमऽशुद्धञ्चमऽशुद्विरश्चमेकृतञ्चमेकलृष्टिरश्चमेम-
 तिञ्चमसुमतिरश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ११ ॥ छ्रीहयश्च । मेयराश्चमेसा-
 परश्चमेतिलाश्चमेमुद्गारश्चं मेवहल्वारश्चमे प्रियङ्गुपरश्चमेणवश्चमे रया-
 माकाश्चमेनीवारश्चमेगोधूमाश्चमेमुसुराश्चमेयज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १२ ॥
 (न०) अर्द्धमाच । मे मृत्तिकाचमेगिरयश्चमे पर्वताचमेसिकंता- ररच-
 मेऽवनुश्चमेऽर्तयञ्चमे हिरण्यश्चमेवश्चमेरयामञ्चमे लौहञ्चमेसोसञ्चमेत्व-
 पुचमेऽज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १३ ॥ अग्निरर्द्ध । मेऽघापर्श्चमेऽवीरुपर्श्चम
 ऽओपरायश्चमेऽट्टश्चश्चमेऽकृष्टपृच्छारश्चमेऽग्राम्याश्चमेऽपुष्वंऽघा-
 रण्वारश्चमेऽत्रिचश्चमेऽत्रिचिरश्चमे भूतञ्चमेभूतिरश्च मेऽज्ञेनकल्पन्ताम्
 ॥ १४ ॥ ऋभुञ्च । मेऽसुसतिरश्चमेऽकल्पमंश्चमेऽशक्तिरश्चमेऽररश्चम
 ऽपररश्चमऽऽघार्चमेगतिरश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ (न०) ॥
 अग्निरर्द्ध । मे ऽऽन्द्रश्चमेमोनरश्चमऽऽन्द्रश्चमे सवितांचमऽऽन्द्र-
 रश्चमेसंसवती चमऽऽन्द्रश्चमेपूषार्चमऽऽन्द्रश्चमेऽहस्पतिरश्चमऽऽन्द्रश्च
 मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १६ ॥ मित्तरश्च । मेऽऽन्द्रश्चमेऽवर्ण
 रश्चमऽऽन्द्रश्चमे धानार्चमऽऽन्द्रश्चमेऽश्वत्थांचमऽऽन्द्रश्चमेमरुतरश्चमऽऽन्द्र-
 रश्चमेऽररश्चमे देवाऽऽन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १७ ॥ पृथिवीचं ।
 मेऽऽन्द्रश्चमेऽन्नरश्चमऽऽन्द्रश्चमे यीशरचमऽऽन्द्रश्चमेसमारश्चम-
 ऽऽन्द्रश्चमेनर्षाणि चमऽऽन्द्रश्चमेऽदिशरश्चमऽऽन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्प-
 न्ताम् । १८ ॥ [न०] ॥ अथशुरर्ष । मेऽग्निमररश्चमेऽर्द्धाय
 रश्चमेऽपितरश्चमऽऽग्ना ऽथ शुररश्चमेऽन्वामररश्चमऽऽन्द्रवापुश्च-
 मेऽशवावृणश्चमऽऽमारिश्वनश्चमेऽप्रविशश्चान्श्च मेऽग्निरश्चमेऽन्धीचं-
 मयज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १९ ॥ आग्नेयश्च । मेऽश्वरश्चमेऽश्व-

वशरचमे वैशरवा नुरशरचमऽपेद्रागिनरशरचमे महावैशरवदेवशरच
 मे मरुत्वतीयाशरचमेनिघ्नकेवलयरशचमे सावित्रशरचमेसा
 रभ्रुतरशचमेपात्कनोवनशरच मेहारियोजनशरचमेयुजेनकल्पन्ताम् ॥ २० ॥
 स्रुचशरच मे चमत्सारशचमे व्वायुव्यानिः चमेद्रोगकलशशरचमे ग्पावाण-
 शरचमेधिपत्रंगेचमेपृतभ्रुचवमऽआववुनोर्यशरचमेवदिरचमे वृहिशरचमेवभ्रुय-
 शरचमे स्वगाकारशरच मेमज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ २१ ॥ [न०] ॥ अग्निशरच ।
 मेघम्भशरचमेकर्कशरचमेसूर्यशरचमेप्राणशरच मेशश्वमेघशरचमेपृथिवीचमे
 द्वितिशरचमे दितिशरचमेघोरशरचमेड गुर्लयऽ शक्यवरयोदिशशचमे युजे न
 कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्रतञ्च । मऽऋत वरचमे तर्पणचमे सवत्सर-
 शरचमेहोरात्रेऽऋगंष्टीवै वृहद्रथन्तरेवमेयुजे नकल्पन्ताम् ॥ ३ ॥
 [न०] । एकाच । मेनिस्त्रशरचमे निस्त्रशरचमेपञ्चचमेपञ्चचमेसुप्तचमे
 सुप्तचमेनर्वचमे नर्वचमुष्कादशचममुष्कादशचमे त्रयोदशचमे त्रयो-
 दशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमेमुत्तदशचमे सुतदशचमे
 नर्वदशचमेनर्वदशचमुऽएकत्रिंशऽ शतिशरचमुऽएकत्रिंशऽ शतिशरचमेत्र-
 योविंशऽशतिशरच मेत्रयोविंशऽ शनिशरचमेपञ्चविंशऽ शतिशरचमेपञ्च
 शतिशरचमेसुप्तत्रिंशऽ शतिशरचमे सुप्तत्रिंशऽ शतिशरचमे नर्वत्रिंशऽ
 शतिशरचमेनर्वत्रिंशऽ शतिशरचमऽएकत्रिंशऽ शरचमुऽएकत्रिंशऽ शरचमे-
 त्रयोविंशऽ शशमेयुजे नकल्पन्ताम् ॥ २४ ॥ [न०] ॥ चर्तस्त्र-
 रच । मेघोचमेघोचमे द्वादशचमे द्वादशचमेपोडशचमेपोडचमेविंशऽ शति
 शरचमेविंशऽ शतिशरचमेचतुर्विंशऽ शतिशरचमे चतुर्विंशऽ शति-
 शरचमेष्टाविंशऽ शतिशरचमेष्टाविंशऽ शतिशरचमेद्वात्रिंशऽ शरच
 मेद्वात्रिंशऽ शरचमेपटत्रिंशऽ शरचमेपटत्रिंशऽ शशमेचत्वारिंशऽ
 शरचमेचत्वारिंशऽ शशमेचतुर्दशत्वारिंशऽ शशमेचतुर्दशत्वारिंशऽ
 शशमेष्टाचत्वारिंशऽ शशमेयुजे नकल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ [न०] ॥
 त्रयोविंश । मेत्रयोविंशमेदित्त्रयोवाट्चमेदित्त्रयोदशमेपञ्चविंश
 चमपञ्चविंश-
 चमेत्रिवृत्सरचमे त्रिवृत्सारचमेतुर्दशवाट्चमेतुर्दशवाट्चमेयुजेनकल्पन्ताम् ॥
 २६ ॥ पुष्टवाट्च । मेपट्टोहीचमऽउत्तार्च मेवशाचमऽअभ्रशरचमेव्ये-
 हरचमेनुद्वोरचमेधेनुरशरचमेयुजेनकल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ [न०] व्याजाय
 स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजायस्वाहाक्र त्रैस्वाहावर्मत्रैस्वाहाहुर्पतयेस्वाहा

हान्हेमुग्घाय स्वाहामुग्घार्यञ्चैन ५ शिनाय स्वाहाञ्चिन ५ शिनं ५
 आन्त्यायनाय स्वाहान्त्यायभीवनाय स्वाहा भुवनस्यपतयेस्वा हाधिपतये
 स्वाहाप्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराणिम्मत्तायेयेनतासियमनऽऽज्जेत्वावृ-
 ष्ठ्यैत्वाप्रजानान्त्वाधिपत्याय ॥ २८ ॥ आर्युर्यज्ञेन । कल्पताम्प्राणो-
 यज्ञेनकल्पताञ्चक्षुर्यज्ञेनकल्पता ५ श्रोत्रयज्ञेनकल्पताञ्चवाग्यज्ञेन
 कल्पताम्मनोयज्ञेनकल्पता मात्कमायज्ञेनकल्पताम्ब्रह्मजायज्ञेन कल्पता-
 ञ्चयोतिर्यज्ञेनकल्पता ५ स्वय्यज्ञेनकल्पताम्पुष्टयज्ञेनकल्पतायज्ञोयज्ञे-
 नकल्पनाम् ॥ स्तोमरक्षयजुश्च ५ ऋक्चसामंचवृद्धैरथन्त रक्ष ॥
 स्वैववाऽअगन्तमाशुताऽअभूमप्रजापते ५ प्रजाऽअभूमद्वेत्स्वाहा ॥
 २९ ॥ इति रुद्रे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

हरिः ३० । ऋचंवाचमप्रपद्येमनोयजु ५ पपद्ये
 सामप्राणमप्रपद्येचक्षु ५ श्रोत्रमप्रपद्ये ॥ वागोर्जःसहो ज्ञो
 मयिप्राणापानो ॥ १ ॥ यन्मेद्विदूचक्षुषोर्द्वयस्यमनसो-
 च्चातितुगाम्बृहस्पतिर्मूर्तवर्धातु ॥ शन्नोभश्नुभुवनस्ययस्प-
 ति ÷ ॥ २ ॥ भूवभुवुः ५ रक्ष ÷ । तस्सवितुर्ध्व रेण्यम्मर्गा देवस्यधी
 महि ॥ धियोयोर्न + प्रषोदयात् ॥ ३ ॥ कयानरिरश्च अऽआमुवदूती-
 मुदावृष्ट ५ सखा ॥ कयाशधिष्ठयावृता ॥ ४ ॥ कस्वा । सत्योमर्वा-
 न्नाम् ५ हिंस्रोमस्तद्वंस ५ ॥ इडाधिदासुजेवसु ॥ ५ ॥ अमीपुण ५ ।
 सर्वातामविताञ्जस्ति णाम् ॥ श्रतम्र्मवास्युतिभिं ÷ ॥ ६ ॥ कयात्सम-
 ऽकृत्याभिप्रमन्दसेवृषन् ॥ कयास्तोतुव्यऽप्रभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोच्चि-
 ररथम्यरात्रि ॥ शन्नोऽअस्तुद्विद्वपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमिन्द्र ५
 शंच्चरेणु ५ शन्नोभवस्वर्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रोवृहस्पति ५ शन्नोच्चिष्णु-
 कर्ककृम ५ ॥ ९ ॥ शन्नोच्चाव ÷ । पत्रता ५ शन्नस्तपतुसूर्यं ÷ ॥
 शन्न ५ कनिकरुद्रेव ५ पार्जन्योऽभ्रमिर्षपंतु ॥ १० ॥ अर्हानिशम्म-
 वन्तुन ५ श ५ रात्री ५ अतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्रागनीर्षवताम-
 वोमि ५ शन्नऽइन्द्राव्यरंणारातर्द्व्या ॥ शन्नऽइन्द्राप्यणाच्चाजसाती-
 रामिन्द्रामोर्मासुवितायराथ्यो ५ ॥ ११ ॥ शन्नोदेवीरभिष्टंयुऽआपोभवन्तु-
 धीवये ॥ शन्नोर्भिस्रं वन्तुन ५ ॥ १२ ॥ म्योनाप्रधिदि । मोभवान्नुप्रा-
 त्रिपेरानो ॥ यन्दांन ५ गर्भंनुप्रया ॥ १३ ॥ आपोदि । प्रामयोभुव-

स्तान्ऽऽर्जुर्देधातन ॥ गह्वरेषामययत्से ॥ १४ ॥ योर्व + शिवत्तमोस्-
 स्तस्यमाजयतेहनं ÷ ॥ घृशुषीरिवमातरं ÷ ॥ १५ ॥ तस्माऽधरंमाम-
 योदस्यक्षयायजिन्न्येध ॥ अपोऽज्ञनयेथावनऽः ॥ १६ ॥ दशौऽः शान्ति-
 इन्तरिक्षं ध शान्तिं ÷ पृथिवीशान्तिरापऽः शान्तिरोर्षधयऽः शान्तिं
 ÷ ॥ वनस्पतयऽः शान्तिर्विश्वदेवाऽः शान्तिर्विश्वशान्तिऽः सर्वं ध
 शान्तिऽः शान्तिरेवशान्तिऽः सागाशान्तिरेधि ॥ १७ ॥ हतेह ध हमा-
 मिन्द्रस्यमाचक्षुपासर्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ मिन्द्रस्याइवक्षुपा
 सर्वाणि भूतानिहृदीते ॥ मित्राम्यचक्षुपा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ हतेह ध
 हमा । ज्योतिर्कमन्दृशिजीव्यसुञ्च्योऽं केसुन्दृशिजीव्यारम् ॥ १९ ॥
 नर्मस्तेहरंशोधिपेनमस्तेऽभ्ररुर्बिप ॥ अग्न्याँस्तेऽभ्रस्मत्तपतन्तुहेतयः
 पात्रकोऽभ्रस्मन्न्यऽ शिवोर्भयऽ ॥ २० ॥ नर्मस्ते अस्तुविद्युतेनर्मस्तेस्तन-
 यित्वे ॥ नर्मस्तेमगवन्नस्तुयऽः स्य ÷ समीक्षसे ॥ २१ ॥ यतोयवऽः
 समीक्षसेततोऽभ्रमयङ्कुरु ॥ शन्नं ÷ कुरुष्वजाभ्योर्भयन्तऽः पशुभ्य
 ÷ ॥ २२ ॥ सुमित्रियान्ऽभ्रापऽभ्रोर्षधयऽः सन्तुदुन्निद्रियास्तस्मै
 सन्तुयोस्मान्द्वेष्टिटयऽः चर्व्वयन्दिष्टिगम् ॥ २३ ॥ तर्षुर्देवहि-
 तम्पुरस्ताच्छुक्रगुर्षरत् ॥ परयेमशरत् ÷ शतञ्जीवेनशरदं ÷ शतं ध
 अणुयामशरदं ÷ शतम्पञ्चमशरदं ÷ शतमदीनाऽः स्वामशरदं ÷ श-
 तम्भूयश्चशरदं ÷ शतात् ॥ २४ ॥ इति रुद्रे शास्त्यध्यायः ॥ ६ ॥

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः

हरि ÷ ओं स्वस्तिनऽः द्रोष्टुर्द्रश्रवाऽः स्वस्तिनं ÷ पूषादि-
 श्रववेदाऽः ॥ स्वस्तिनस्ताज्योऽभरिष्टनेमिऽः स्वस्तिनो
 इष्टस्वतिर्देधातु ॥ १ ॥ ओं पर्यं ÷ पृथिव्याम्पव-
 ऽभ्रोर्षधीपुपयोर्दु व्यन्तरिक्षेपयोवाऽः ॥ पर्यंखवी स्पदि-
 शं ÷ सन्तुमर्षयम् ॥ २ ॥ ओं त्विष्णोराटमन्निष्विष्णोऽः
 म्नास्त्रेद्योविविष्णोऽः स्युरसि त्विष्णोर्दुष्णोसि ॥ त्विष्णुवर्ष-
 तिष्विष्णोवेस्वा ॥ ३ ॥ ओं अग्निर्देवताव्यतोरेवतागूर्यो देवता
 चन्द्रमादेवतावर्षोदेवताहृद्गदेवता दित्या देवतामरुतोदेवताविवरये-

देवादेवताद्गृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवताञ्चरगणोदेवता ॥ ४ ॥ ॐ सुषोजाव-
 प्रपद्यामिसुषोजातायवैनमो नमः ॥ भवेमंत्रेनातिभवेभवत्तन्ममोद्भवा-
 यनमः ॥ ५ ॥ वामदेवायनमोऽष्टायनमः ॥ श्रेष्ठायनमोऽष्टायनमः
 ऽः क्वालायनमः ऽः कर्तव्यरग्यायनमोऽवधिहरणायनमोऽवलीयनमोऽवली-
 प्रमथनायनमः ऽः सर्वभूतप्रमथनायनमोऽमोऽनोऽननायनमः ऽः ॥ ६ ॥
 अधोरेम्योर्ध्वोरेम्योर्ध्वोरेम्योऽः ॥ सर्वेभ्यः ऽः मन्त्राश्वेभ्योऽनम-
 स्तेऽः अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ऽः ॥ ७ ॥ सत्पुरुषायत्रिधाहंमहादेवार्थमीमहि ॥
 तन्नोऽमृतः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ इशान् ऽः मूर्ध्निविद्यान्नामीररुचरः सर्वा-
 भूतानाम् ॥ अक्षाधिपतिर्जगत्पतिर्ब्रह्माशिवोमेऽः अस्तुसदाशिवोम्
 ॥ ९ ॥ ॐ शिवोऽनामिन्सर्वित्स्तेपिता नमस्तेऽः अन्तुमामाहि ॐ
 सी ऽः ॥ निर्वृत्तंयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननापरादत्पोषायतुप्रजास्त्वार्य-
 मुवीर्य्याय ॥ १० ॥ ॐ विश्वान्तिदेवसवितद्दुःखितानि परासुव ॥
 यद्दुःखन्तुऽः आमुव ॥ ११ ॥ ॐ शौ ऽः शान्तिरन्तरिक्षे ॐ
 शान्तिं ॥ पृथिवीशान्तिरापः ऽः शान्तिरोऽप्ययः ऽः शान्तिं ॥ चन्द्र-
 पतयः ऽः शान्तिर्विरवेन्द्राः ऽः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः ऽः सव्याधिशान्तिः
 ऽः शान्तिरेवशान्तिः ऽः मामाशान्तिरेधि ॥ १२ ॥ ॐ सर्वेषांवा-
 येकस्वेदाना ॐ रमोऽयमाममूर्ध्निगामेऽमेनतद्देवाना ॐ रसेनाभिपिन्वति
 ॥ १३ ॥ इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः सुरान्तिर्भवंतु । सर्वाणिष्टशान्तिर्भवतु ॥
 अनेन कृतेन रुद्राभिपेककर्मणा श्रीमशानीशद्वर- महाकठः प्रीयताम मम ॥
 ॐ सदागिवापंगमस्तु ॥ इति ॥

अथ श्रीशिवरहस्यनाम द्वारभ्यते ।

ध्यामं कथाय ॥ एकदा मुनयः सर्वे द्वारिकं द्रष्टुमागताः ॥
 बामुरेवं च मोक्षंटाः कृष्णदर्शनलाभमाः ॥ १ ॥ तदास्तु भगवान्
 प्रीतः पूजं चक्रे यथाश्रिये ॥ तेषामाशीगतो मृग्य चद्रमानपुःसरम् ॥ २ ॥
 तेः पृष्टः कथयामास कुमारप्रभृमं च यत् ॥ अरितं भूमिभारत्तं लोकातन्द-
 करं यत् ॥ ३ ॥ माहं पश्येयमुग्गाः सर्वे माप्याद्विद्विषोऽस्त्रिणाः ॥
 कृष्णः रत्नामयो वरुं मृदाचुव कुम्भादिभि ॥ ४ ॥ सर्वोपरयानमन्त्या

च स्मृतिधर्ममनुस्मरन् । शिवपूजां ततः कृष्णो गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥
 ५ ॥ चकार विधिवद्भक्त्या नमस्कारयुतां शुभाम् ॥ जय शङ्कर सोमेश
 रक्ष रक्षेति ध्यात्रवीत् ॥ ६ ॥ जजाप शिवसादृशं मुक्तिमुक्तिप्रदं विभो ।
 अनन्यमानसः शान्तः पद्मासनपरः शुचिः ॥ ७ ॥ ततस्ते विस्मयापन्ना
 दृष्ट्वा कृष्णविचेष्टितम् ॥ मार्कण्डेयोऽवदत्कृष्णं बहुशो मुनिपुङ्गवः ॥ ८ ॥
 मार्कण्डेय उवाच ॥ त्वं विष्णुः कमलाकांतः परमात्मा जगद्गुरुः ॥
 तव पूज्यः कथं शम्भुरेतत्सर्वं वदस्व मे ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ अथ
 ते मुनयः सर्वे मार्कण्डेयं समर्चयन् ॥ वचोभिर्वासुदेवस्य श्रुतं साधु
 त्वयेति च ॥ १० ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ साधु साधु मुने प्रष्टं हिताय
 सकलस्य च ॥ अज्ञातं तव नास्त्येव तथापि च वदान्यहम् ॥ ११ ॥
 दैवतं सर्वदेवानां सर्वकारणकारणम् ज्योतिर्यत्परमानन्दं सावधानमतिः
 श्युः ॥ १२ ॥ विश्वसाधनमीशानं गुणातीतमजं परम् ॥ जगतस्तस्थुषो
 ह्यात्मा मम मूलं महामुने ॥ १३ ॥ यो देवः सर्वदेवानां ध्येयः पूज्यः
 सदाशिवः ॥ स शिवः स महादेवः शङ्करश्च निरञ्जनः ॥ १४ ॥ तस्मा-
 आन्यपरो वेदस्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ सर्वज्ञः सर्वगः शम्भुः सर्वात्मा
 सर्वतोमुखः ॥ १५ ॥ पठयते सर्वं वेदान्ते मिद्धान्ते यो मुनीध्वरैः ॥
 तस्मिन्भक्तिर्महादेवे मम धातुश्च निर्मला ॥ १६ ॥ महेशः परमं ब्रह्म
 शान्तः सूक्ष्मः परात्परः ॥ सर्वान्तरः सर्वसाक्षी चिन्मयस्तमसः परः ॥
 १७ ॥ निर्विह्वलो निराभासो निःसङ्गो निरुपद्रवः ॥ निर्लेपः पुरुषाध्यक्षो
 महापुरुष ईश्वरः ॥ १८ ॥ तस्य चेच्छ्रावणवत्पूर्वं जगत्स्थित्यन्तकारिणी ॥
 वामाङ्गादभवत्तस्य सोऽयं विष्णुरिति स्मृतः ॥ १९ ॥ जनयामास
 धातारं दक्षिणाङ्गात्सदाशिवः ॥ मन्वतो रुद्रमीशानं वाजाल्मा परमेश्वरः ॥
 २० ॥ तपस्तपन्तु भो यत्सा अन्नदीदिति वाञ्छवः ॥ ततस्ते
 शिवमात्मानं प्रोचुः संयतमानसाः ॥ २१ ॥ स्तुत्वा तु विविधैः स्तोत्रैः
 प्रणम्य च पुनः पुनः ॥ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋचुः ॥ तपःकेन प्रकारेण
 कर्त्तव्यं परमेश्वर ॥ २२ ॥ ब्रह्मि सर्वमरोपेण स्वात्मानं श्रेत्सि नापरः ॥
 शिव उवाच ॥ कायेन मनसा वाचा ध्यान-पूजाजपादिभिः ॥ २३ ॥
 कामक्रोधादिरहितं तपः कुर्वन्तु भो सुराः ॥ देवा ऋचुः ॥ स्वया
 यत्कथितं शम्भो दुर्ज्ञेयमजितात्मभिः ॥ २४ ॥ सौम्योपावमतो ब्रह्मन्
 घट कारुण्यवारिधे ॥ शिव उवाच ॥ सहस्रनाममद्विषां जपन्तु
 ममसुव्रताः ॥ २५ ॥ यथा मंसारमन्वानां मुक्तिर्भवति शाश्वती ॥
 शृण्वन्तु तद्विधानं हि महापावकनाशनम् ॥ २६ ॥ पठतां श्रवतामनो
 मुक्तिः श्यादनपायिनी ॥ ब्रह्मचारी कृगन्वानः शुक्लवासा जितेन्द्रिय
 ॥ २७ ॥ मन्मथारी मुनिर्मानो पद्मामनममन्वितः ॥ श्यान्वा मा ब्रह्म-

घोश निराकार मुनीवरम् ॥ २८ ॥ पावतीसहित शर्प जटामुकटमण्डि
 तम् ॥ वमान चम्भ वैयात्र चन्द्रार्द्धकृतशेखरम् ॥ २९ ॥ यन्वक्र द्वि
 वृषान्त कृत्तिवाससमुज्ज्वलम् ॥ सुरचितपदद्वन्द्व दिव्यमोग सुसुन्दरम्
 ॥ ३० ॥ विभ्राण सुप्रसन्न च कृठार च वरामयम् ॥ दुर्द्धर्ष कमलासीन
 नागपद्मापरातिनम् ॥ ३१ ॥ विरवकाय चिदानन्द शुद्धमन्त्रमव्ययम् ।
 सहस्रगिरस शम्भुननन्तकरसयुतम् ॥ ३२ ॥ सहस्रचरण दिव्य साम
 सुयाग्निलोचनम् ॥ च शोनिमञ्ज ब्रह्म शिखामाद्य सनातनम् ॥ ३३ ।
 ऋद्धाकपाल दुर्द्धेद्र न्यूकाटिममप्रभम् ॥ निशाकरकलानान्त भेषज
 मन्तरागिणाम् ॥ ३४ ॥ पिनाकम त्रिगालाक्ष पशुना पतिमीश्वरम् ॥
 कालात्मान कालकाल ऋधेव महेश्वरम् ॥ ३५ ॥ ज्ञानवैराग्यसम्पन्न
 योगानन्दमय परम् ॥ शारङ्गवैश्वयसम्पन्न महायोगीश्वरेश्वरम् ॥ ३६ ॥
 समस्तशक्तिसयुक्त पुण्यनाथ दुरामदम् ॥ तारक ब्रह्म सम्पूर्णमणीयास
 महत्तमम् ॥ ३७ । यतीना परमं ब्रह्म यताना तपस फलम् ॥ सयमिह
 त्समासीन तपस्विपनमम्पन्म् ॥ ३८ ॥ विभीन्द्रविष्णुनमित सुनिसिद्ध
 निपेयितम् ॥ महात्स महात्मान ऋवानामपि ऋवतम् ॥ ३९ ॥ अथ शिव
 कवचप्रारम्भ ॥ शान्त पत्रिमोक्षार ज्योतिषा ज्योतिष्ठतमम् । शङ्कर
 मे शिर पातु ललाट भाललोचन ॥ ४० ॥ विरवचक्षु द्वशी पातु रट्टी
 मम ध्रुवावपि ॥ गण्डी पातु महगान श्रुतौ रक्षतु पूवन ॥ ४१ ॥ कपाली
 मे महात्स पातु नामा महाशिव ॥ सुग पातु इन्द्रिभौषा श्रोष्ठी पातु
 महेश्वर ॥ ४२ ॥ दन्तान् रत्नान् ऋवन्स्त्रालु सोमकलावर ॥ रसना
 परमानन्द पातु गल्लो शिवाप्रिय ॥ ४३ ॥ चिबुक पातु मे शम्भु रम
 धून् शत्रुविनाशक । कूर्च पातु मम कण्ठ नीलकण्ठोऽत्रतु ध्रुवम्
 ॥ ४४ ॥ स्कन्धो स्कन्धपतिवाह बह्वृक्षधर महा ॥ उग्रवाह महानाथ्यं
 करो विबुधमन्त्राम् ॥ ४५ ॥ अह गुला पातु पञ्चास्य पत्राणि च सहस्र
 पातु ॥ हृदय पातु सर्वात्मा स्तनो पातु पितामह ॥ ४६ ॥ उदर इतमुक्पातु
 मध्य मे मध्यमेश्वर ॥ कुक्षी पातु भवानीशा पृष्ठ पातु बुलेश्वर ॥ ४७ ॥
 प्राणान्मे प्राणद पातु नाभि भाम कटि बिभु ॥ सकियर्ता पातु मे मगा
 जानुनी जनकाधिप ॥ ४८ ॥ जङ्घे पुररिपु पातु चरणी भवनाशान् ॥
 शान् पातु मे शर्षा बाह्यनाम्यन्तर शिव ॥ ४९ ॥ इन्द्रियाणि हर
 पातु सयत्र चयवर्द्धन ॥ पूर्वे पातु मूढ पातु दक्षिणे यममूर्तन ॥ ५० ॥
 बाह्यणा मन्त्रितापीश दीक्ष्या मे महाश्वर ॥ ईशान्या पातु भूतेश
 ग्रामन्या रविश्र चन । ५१ । निश्च त्या मूत्रमूपातु वायव्या वलयवर्द्धन ॥
 ऊर्ध्व पातु मन्त्रपा अथ संसारनाशन । ५२ ॥ सर्वत्र मुखद पातु युधि
 पातु म गोचन । एव न्याम्दिक एवशा माकाश्वम्भुन्या भवन् ॥ ५३ ॥

नमो हिरण्यवाहवे इति पठेन्मन्त्रं तु भक्तितः ॥ नमो हिरण्यवर्णाय
 हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये पशुपतये नमो नमः ॥ ५४ ॥
 मद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे
 भवस्वमां भवोद्भवाय नमः ॥ ५५ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः
 श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरण्याय नमो बलविकर-
 णाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो
 मनोन्मनाय नमः ॥ ५६ ॥ अघोरेभ्योऽघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
 सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्य ॥ ५७ ॥ ॐ तत्पुरुषाय
 विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ५८ ॥ ईशानः
 सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ ५९ ॥ सद्यो जातादिभिर्मन्त्रैर्नमस्कुर्व्यात्सदा-
 शिवम् ॥ ततः सहस्रनामेदं पठितव्यं मुमुक्षुभिः । ६० ॥ सर्वकार्य-
 करं पुण्यं महापातकराशनम् ॥ सर्वगुह्यतमं दिव्यं सर्वलोकहितप्र-
 दम् ॥ ६१ ॥ मन्त्राणां परमं मन्त्रं भवदुःखपह्नुर्मिदम् ॥ अथाङ्ग-
 न्यासः ॥ ॐ नमः शिवायेति षडङ्गन्यासः । ॐ नमः शम्भवाय च
 हृदयाय नमः ॥ ॐ नमो भवाय च शिरसे स्वाहा ॥ ॐ नमः
 शङ्कराय च जिह्वायै वषट् ॥ ॐ नमो मयस्कराय च कवचाय हुम् ॥
 ॐ नमः शिवाय च नेत्रत्रयाय धीपट् ॥ ॐ नमः शिवाय शिवक-
 राय च अस्त्राय फट् ॥ नमोऽस्तु स्थाणुरूपाय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने ॥
 चतुर्भुविषु स्याय भूषिताङ्गाय शम्भवे ॥ ॐ अस्य श्रीवेदसाराख्य-
 परमदिव्यशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण श्रुपिण्डुपुण्ड्रः ॥
 सदाशिवो देवता ॥ ॐ नमः इति वीजम् ॥ शिवायेति शक्तिः ॥
 चैतन्यमिति कीलकम् ॥ सदाशिवप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथव्या-
 नम् ॥ ॐ कोटिसूर्यप्रतीकाश त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ॥ शूलदङ्कगदाचक्र-
 कुन्धपाशधरं विभुम् ॥ ॐ नमः पराय देवाय शङ्कराय महात्मने ॥
 कामिने नीलकण्ठाय निर्मलाय वषट्तिने ॥ १ ॥ निर्विकल्पाय शान्ताय
 निरहङ्कारिणे नमः ॥ अनर्थाय विशालाय शूलहस्ताय ते नमः ॥ २ ॥
 निरञ्जनाय शर्पाय निःशंकाय परात्मने ॥ नमः शिवाय भर्गाय
 गुणाढीताय वैद्यने ॥ ३ ॥ महादेशाय पीठाय पार्यशीपतये नमः ॥
 केशव्याय महेशाय विदुद्धाय युवात्मने ॥ ४ ॥ वैश्याय सुपेराय
 निरुद्धाय स्वरूपिणे ॥ नमः सोमाय भूगाय पालायामितेजसे । ५ ॥
 अन्नराय जगत्पित्रे जनराय पिनाबिने ॥ निराधाराय सिंहाय माया-
 तोताय मे नमः ॥ ६ ॥ वीजाय सर्वभूताय पशूनां पश्ये नमः ॥
 पुरन्दराय भ्राय पुरुषाय महात्मने ॥ ७ ॥ महासन्तोषरूपाय ज्ञानिने

शुद्धबुद्धये ॥ बुद्धाय बहुरूपाय ताराय परमात्मने ॥ ८ ॥ पूर्वाणाय
 मुग्धेशाय ब्रह्मणेऽनन्तमूर्तये ॥ निरक्षराय सूक्ष्माय कैलासपतये
 नमः ॥ ९ ॥ निरामथाय कान्धाय निराकाराय ते नमः ॥
 मलिलात्मस्वरूपाय सोऽह तत्त्वाय ते नमः ॥ १० ॥ नि-
 लम्बाय नित्याय नित्याया पतये नमः ॥ आत्मारामाय
 ऋच्याय पूज्याय परमेष्ठिने ॥ ११ ॥ विकर्तनाय भीमाय
 शम्भवे विश्वरूपिणे ॥ ईसाय हसनाथाय प्रसिद्धाय नमो नमः
 ॥ १२ ॥ परात्पराय रुद्राय भवायालङ्घ्यशक्तये ॥ इन्द्रहन्त्रे
 निवीर्याय कालहन्त्रे मनश्चिने ॥ १३ ॥ विश्वमात्रे जगद्भात्रे जग-
 न्नेत्रे नमो नमः ॥ जटिलाय विरोगाय पवित्राय मृडाय च ॥ १४ ॥ निरवद्याय
 धीराय निरातङ्गाय ते नमः ॥ नादाय रविनेत्रायव्योमवेशाय ते नमः ॥
 चतुर्भोगाय साराय योमिनेऽतन्तमायिमे ॥ १५ ॥ धर्मिष्ठाय वरिष्ठाय
 पुरप्रयविधातिने ॥ गिरिष्ठाय गिरीशाय वरदाय नमो नमः ॥ १६ ॥
 व्याघ्रचर्माम्बरायाय दिशान्ध्याय ते नमः ॥ परमार्थाय मानाय प्रमथाय
 स्त्रचक्षुषे ॥ १७ ॥ आचाय शूलहस्ताय शितिकण्ठाय तेजसे ॥ उमाय
 वामदेवाय श्रीकरायाय च ते नमः ॥ १८ ॥ विश्वेश्वराय सूर्याय गीरीशाय
 वगाय च ॥ मृत्युञ्जयाय वीराय वीरभद्राय ते नमः ॥ १९ ॥ विरुपाक्षाय
 त्रियये वह्निनेत्राय ते नमः ॥ जालन्धरशिरच्छेद्ये हृत्रिये दितकारिणे
 ॥ २० ॥ महाकालाय वैद्याय द्युसूरोराय ते नमः ॥ नमः ॐ कारूपाय
 मोमनाथाय ते नमः ॥ २१ ॥ रामेश्वराय शुचये भीमेशाय नमो नमः ॥
 त्र्यम्बकाय निरीडाय केदाराय नमो नमः ॥ २२ ॥ गङ्गाधराय वयये
 नागनाथाय ते नमः ॥ भीमप्रियाय महसे रश्मीशाय नमो नमः ॥ २३ ॥
 पूर्णाय भूतपतये सर्वेशाय दयालवे ॥ धर्माय धनदेशाय जगधर्माम्बराय
 च ॥ २४ ॥ भालनेत्राय यक्षाय श्रीशैलपतये नमः ॥ कुरानुरेतसे
 नीलजाहिवाय नमो नमः ॥ २५ ॥ अन्वकामुरहन्त्रे च पावनाय यनाय
 च ॥ पैतन्याय त्रिनेत्राय दक्षनाशक्याय च ॥ २६ ॥ नमः सहस्रशिरसे
 जपत्प्राय ते नमः ॥ सहस्रचरणाय च योगिहृत्कृञ्जपासिने ॥ २७ ॥
 मद्योजनाय वन्द्याय सर्वत्रेयमयाय च ॥ आमोनाय प्रगल्भाय गायत्री
 जन्माय च ॥ २८ ॥ वयोनाकाराय विप्राय नमो विप्रप्रियाय च ॥
 अघोराय मुग्धेशाय स्वस्त्याय ते नमः ॥ २९ ॥ विद्वत्तमाय वदाय
 प्रियमासाय नन्दिने ॥ अधर्मशत्रवे तापहन्तुभीमवनाय च ॥ ३० ॥
 च ॥ नागशत्रये गुन्ये जगद्वान्नाय ते नमः ॥ नमो मङ्गलिच्छेत्रे पञ्चशक्याय
 वद्विने ॥ ३१ ॥ हरिहोराय विमये पञ्चशक्याय वद्विणे ॥ नमः
 पञ्चाङ्गायाय गोवर्द्धनगनाय च ॥ ३२ ॥ प्रमये जनकीनाय कालभू-

विपादिने ॥ सिद्धेश्वराय सिद्धाय सहस्रवदनाय च ॥ ३३ ॥ नमः
 सहस्रहस्ताय सहस्रनयनाय च ॥ सहस्रमूर्तये तुभ्यं विष्णवे जितशत्रवे
 ॥ ३४ ॥ काशीनाथाय गोत्रे ते नमस्ते विश्वासाक्षिणे ॥ हेतवे सर्व-
 वीजानां पालकाय नमो नमः ॥ ३५ ॥ जगत्संहारकाराय त्रिधावस्थाय
 ते नमः ॥ एकादशस्वरूपाय नमस्ते बहुमूर्तये ॥ ३६ ॥ नरसिंहमहादर्प
 घातिने शरभाय च ॥ भस्माभ्यक्ताय तीर्थाय जाह्नववीजन काय च ॥ ३७ ॥
 देवदानवदैत्यानां गुणैस्ते नमो नमः ॥ दलितोब्जनभासाय नमो वायु-
 स्वरूपिणे ॥ ३८ ॥ नमः स्वच्छस्वरूपाय प्रसिद्धाय नमो नमः ॥ वृषध्व-
 जाय गोष्ठ्याय जगद्यन्त्रप्रवर्तिने ॥ ३९ ॥ अनाथाय प्रजेशाय विष्णुशर्व-
 हराय च ॥ हरिविधातृकलहनाशकाय नमो नमः ॥ ४० ॥ गदाहस्ताय
 वटवे गगनाय नमो नमः ॥ कैवल्यफलदात्रे ते परमाय नमो नमः ॥ ४१ ॥
 ज्ञानगम्याय ज्ञानाय घण्टारवप्रियाय च । पद्मासनाय पुष्टाय निर्वाणाय
 नमो नमः ॥ ४२ ॥ अयोनये सदेहाय ह्युत्तमाय नमो नमः ॥ अन्तःका-
 लाविपतये विशालाक्षार ते नमः ॥ ४३ ॥ कुण्डलान्वये तुभ्यं सोमाय
 सुरिने नमः अमृतेशाय सौम्याय रोचराय च घन्विने ॥ ४४ ॥ प्रियं-
 यदाय दक्षाय घन्दिने विमवाय च ॥ गिरीशाय गिरित्राय गिरिशान्ताय
 ते नमः ॥ ४५ ॥ पारिजाताय वृहते पञ्चयज्ञाय ते नमः ॥ तरुणाय
 विशिष्टाय बालरूपधराय च ॥ ४६ ॥ जोषितेशाय पुष्टाय पुष्टानां पतये
 नमः ॥ भवहेत्ये हिरण्याय कनिष्ठाय नमो नमः ॥ ४७ ॥ मध्यमाय विधात्रे
 च शुभाय सुभगाय च ॥ आदित्यठापनाथाय पुण्यश्लोक्याय ते नमः ॥ ४८ ॥
 महादद्याय दृष्ट्याय वामनाय नमो नमः ॥ नमस्तत्पुरुपायाय चतुर्भुजाय
 मायिने ॥ ४९ ॥ नमो धूर्जटये तुभ्यं जगद्देशाय ते नमः ॥ जगन्नाथाय
 महमे लीलाविप्रधारिणे ॥ ५० ॥ अभयाय नमस्तुभ्यममराय नमो नमः ॥
 अताप्राय नमस्तुभ्यमक्षयाय नमो नमः ॥ ५१ ॥ लोकाध्यक्ष नमस्तुभ्यम-
 नादिनिधनाय च ॥ व्यक्तीश्वराय व्यक्त्राय नमस्ते परमाणवे ॥ ५२ ॥ सपथे
 स्फूलरूपाय नमः परशुधारिणे ॥ नमः गङ्गाद्गदस्ताय नागदृष्टाय ते
 नमः ॥ ५३ ॥ परदामयस्ताय परदाहस्ताय ते नमः ॥ परमराय नमस्तुभ्यम-
 जिताय नमो नमः ॥ ५४ ॥ अग्निमादित्यगोशाय पद्मपद्ममणाय च ।
 पुत्रवन्ताय गुह्याय बन्धनमथनाय च ॥ ५५ ॥ पुण्योदकाय पद्माय विभुकाय
 नमो नमः ॥ उदाराय विषित्राय विषित्रगतये नमः ॥ ५६ ॥ बाणिशुद्धाय
 गिरिपे निगुणाय नमो नमः ॥ परमेशाय रोषाय नमः परशराय च ॥ ५७ ॥
 मोहनाय सुरतोषाय करवीरिणाय च ॥ महापरावमादाय नमस्ते कर-
 क्शिणे ॥ ५८ ॥ विष्टवमे लोचनपूषासनाय ते नमः । गङ्गाते चतुर्भुजाय
 करुणाय नमः च ॥ ५९ ॥ अनापाय शोदकाय वष्टव्याय ते नमः ॥

परमज्योतिषे पद्मगर्भाय सलिलाय च ॥६०॥ तत्त्वाधिकाय तत्त्वाय नमो
दीर्घाय रङ्गिणे ॥ नमस्ते पाण्डु रङ्गाय गौराय ब्रह्मचारिणे ॥६१॥ अण्वे
निष्कलायाथ सामगानप्रियाय च ॥ नमोऽक्षपाय क्षेत्राय नमस्ते पुण्य
मूर्तये ॥६२॥ कलाधराय पूज्याय पञ्चाभूतात्मने नम ॥ निर्वाणाय च
तथ्याय पापनाशकराय च ॥६३॥ विरवत्तरश्चक्षुषे कालयोगिनेऽनन्त
रूपिणे ॥ सिद्धसाधकरूपाय नमो भेदनिरूपिणे ॥६४॥ अगण्याय प्रता
पाय मुधाहस्ताय ते नम ॥ श्रीवटलभाय निबन्धे स्थाणुं मधुराय च ॥६५ ॥
उपाधिरहितायम्य नम सुहृतराशये ॥ नमो मुनीश्वरायाथ शिवानन्द्याय
ते नम ॥६६॥ रिपुघ्नाय नमस्तेचोराशयेऽनुत्तमाय च ॥ चतुर्मूर्तिनप-
स्थाय नमो बुद्धीन्द्रियात्मने ॥६७॥ उपद्रवहरायाथ प्रियसदर्शनाय च ॥
भूतनाथाय भूताय वीतरागाय ते नम ॥६८॥ नैष्कर्म्याय निरूपाय षड-
पत्राय विशुद्धये ॥ कुलशाय भूतभूते मुनेशाय ते नम ॥६९॥ हिरण्य
वाह्वे जीवपरदाय नमोनम । आदिदेवाय भर्गाय चन्द्रसजीवनाय च ॥७०॥
हराय बहुरूपाय प्रसन्नाय नमो नम ॥ श्रानन्दभारतायाथ कूट्याय नमो
नम ॥७१॥ नमो मोक्षफलायाथ शाश्वताय विरोगिणे ॥ यज्ञभोक्त्रे सुपे-
णाय दत्तयज्ञविधातये ॥ ७२ ॥ नम सर्वात्मने तुभ्य विरपपालाय ते
नम । निरवगर्भाय गर्भाय वेदगर्भाय ते नम ॥७३॥ ससारार्णव मग्नाना
दुःखससारहेतवे ॥ मुनिप्रियाय जीवाय मूलप्रकृतये नम ॥ ७४ ॥ समस्त
वधने तेजोमूर्तये ते नमो नम ॥ आश्रमस्थापकायाथ वरिणे सुन्दराय
च ॥ ७ ॥ मृगशरणार्पणायाथ शारदावल्लभाय च ॥ विचित्रभायिने
तुभ्यमलङ्कृरिष्णवे नम । ७६ ॥ बहिर्मुखमहादर्पमथनाय नमो नम ॥
नमोऽष्टमूर्तये तुभ्य निष्कलङ्काय ते नम ॥ ७७ ॥ नमो ह्य्याय भोज्याय
यत्ननाथाय ते नम ॥ नम ॥ नमो मध्याय मुख्याय वसिष्ठाय नमो नम
॥ ७८ ॥ अश्विक्वपतये तुभ्य महादन्ताय ते नम ॥ सत्यप्रियाय स्वत्याय
प्रियनृत्थाय ते नम ॥ ७९ ॥ नित्यनृप्नाय वेदित्रे मृगहस्ताय ते नम ॥
ऋद्ध नादीश्वरायाथ हुटारयुतपाण्ये ॥ ८० ॥ वराभयप्रदात्रे ते बहुरूपाय
ते नम ॥ मर्त्याय मुमत्त्राय कीर्तिस्तम्भाय ते नम ॥ ८१ ॥ नम
कृतगमायाथ यदान्तपट्टिनाय च ॥ अत्राताय ध्रुतिमते बहुश्रुतितराय च
अप्रणाय नमस्तुभ्य गन्दाश्रमऋक्षारिणे । पाण्डिनाय षोडश संव्रगणय
नम ॥ ८३ ॥ अक्षय जननपाय नमस्तुभ्य चिदात्मने ॥ रम्याय
नमस्तुभ्य रमनारहिताय च ॥ ८४ ॥ अमूर्त्याय मृताय मदसम्पत्तये
नम ॥ त्रिभिन्श्याय षष्ठ्याय परज्योति म्बरूपिणे ॥ ८५ ॥ नमस्ते
मर्षणाय नमादिषत्रे द्यालय ॥ मर्षण्यतिविनाशाना कर्त्रे ते प्रेरणाय
च ॥ ८६ ॥ नमोऽन्तर्धामिने मर्षण्दिग्याय नमो नम ॥ पञ्चमण्डके ते

पुराणाय नमो नमः ॥ ८७ ॥ वामदक्षिणपार्श्वाय लोकेश हरिशालिने ॥
 नमः सकलकल्याणदायिने प्रसवाय च ॥ ८८ ॥ स्वभावी मारुतीराय
 सूत्रकाराय ते नमः ॥ विषयार्णवमग्नानां समुद्धरणसेतवे ॥ ८९ ॥ अस्ने-
 हस्नेदरूपाय वार्ताविक्रान्तवर्तिने ॥ यत्र सर्वयतः सर्वं सर्वं यत्र नमो नमः
 ॥ ९० ॥ नमो महार्णवायाय भास्कराय नमो नमः ॥ भक्तिगम्याय
 भक्तानां सुलभाय नमो नमः ॥ ९१ ॥ दुष्प्रवर्षाय दुष्टानां विश्वेयाय
 विवेकिनाम् ॥ अलौकिकाय लोकाय ह्यलोकाय नमो नमः ॥ ९२ ॥
 पूरयित्रे विशेषाय कुशलाय शुभाय च ॥ नमः कर्पूरगौराय सर्पहाराय ते
 नमः ॥ ९३ ॥ नमः संसारपाराय कमनीयाय ते नमः ॥ वह्निदर्पविघाताय
 वायुदर्पविघातिने ॥ ९४ ॥ जरातिगाय धीर्याय वेद्याय व्यापिने नमः ॥
 सूर्यकोटिप्रकाशाय निष्क्रियाय नमो नमः ॥ ९५ ॥ चन्द्रकोटिसुशीताय
 कपिलाय नमो नमः ॥ नमो गूढस्वरूपाय निरचलाय पराय च ॥ ९६ ॥
 नमः सत्यप्रतिज्ञाय नमस्ते सुसमाधये ॥ एकरूपाय धून्याय विश्वनाभि-
 हृदाय च ॥ ९७ ॥ पर्वोत्तमाय लोकाय प्राणाय सुहृदे नमः ॥ नमः
 परायणायाय चिन्मात्राय नमो नमः ॥ ९८ ॥ ध्यानगम्याय ध्येयाय
 ध्यानरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते शास्वतैश्वर्यविभवाय नमो नमः ॥ ९९ ॥
 नमः प्राणेश्वरायाय सर्वशक्तिभराय च ॥ धर्माधाराय धन्याय पुष्कलाय
 नमो नमः ॥ १०० ॥ प्रतिष्ठायै धर्मगोप्त्रे निघनायामजाय च ॥ योगेश्वराय
 योगाय योगगम्याय ते नमः ॥ १ ॥ महेंद्रोपेन्द्रचन्द्रार्कनमिताय
 नमो नमः ॥ महर्षिवन्दितायाय प्रकाशाय सुधर्मिणे ॥२॥ नमो हिरण्य-
 गर्भाय नमो हिरण्यमाय च ॥ जगद्धीजाय हाराय सेव्याय क्रतवे नमः
 ॥३॥ आधिपत्याय कामाय स्वराय यरासे नमः ॥ नमः प्रचेतसे ब्रह्म-
 थाय सकलाय च ॥४॥ नमस्ते रुक्मवर्णाय नमस्ते ब्रह्मणेनये ॥ योगा-
 त्मनेऽचिन्तिनाय दिव्यनृत्याय ते नमः ॥ ५ ॥ जगतामेकनाथाय माया-
 बीजाय ते नमः ॥ सर्वहृत्तन्त्रिविष्टाय ब्रह्मनाक्रभमाय च ॥६॥ ब्रह्मा-
 नन्दाय भवते ब्रह्मण्याय नमो नमः ॥ भूमिभारतिसंहर्त्रे भवसारथये
 नमः ॥७॥ हिरण्यगर्भपुत्राणां प्राणसंरक्षणाय च ॥ दुर्वाससे षड्विकार-
 रदिताय नमो नमः ॥८॥ नमो देहाद्दकान्ताय षड्भिरहिताय च ॥ प्रकृत्यै
 भवनाशाय ताम्राय परमेष्ठिने ॥९॥ अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकाय नमो
 नमः ॥ एकाकिने निर्मलाय द्रविणाय दमाय च ॥१०॥ नमस्त्रिलोचना-
 थाय शिपिविष्टाय बन्धये ॥ त्रिविष्टपेश्वरायाय नमो व्याघ्रेश्वराय च
 ॥११॥ त्रिश्वेश्वराय दात्रे ते नमश्चण्डेश्वराय च ॥ व्यामेश्वराय धुधिने
 कण्डुवेश्वराय ते नमः ॥१२॥ योगेश्वराय च नमो दिव्येश्वराय च ॥
 नागेश्वराय न्यायाय न्यायनिर्वाहकाय च ॥ १३ ॥ शरण्याय मुपात्राय

कालचक्रप्रवर्तिने ॥ विचक्षणाय वंष्ट्राय स्वैतारवाय नमो नमः ॥११॥
 नीलजीमूतदेहाय परात्मज्योतिषे नमः ॥ शरणागतपालाय महाबलपराय
 च ॥१५॥ सर्वपापहराय महानादाय ते नमः ॥ कृष्णस्य जयदात्रे ते
 विष्वक्कोशाय ते नमः ॥ १६ ॥ दिव्यमोगाय इण्डाय कोविदाय नमो
 नमः ॥ कामपालाय चित्राय विचित्राय नमो नमः ॥ १७ ॥ नमो मात-
 मह्याय नमस्ते म.तरिवरने । निःसङ्गाय मुनेशाय विष्णेशाय जयाय च ॥
 १८ ॥ व्याजसंमर्दनायाय मध्यस्थाय नमो नमः ॥ अगुष्टरिरसा लंका-
 नायदर्पहराय च ॥१९॥ व्याघ्रप्रनिवासाय नमः सर्वेश्वराय च ॥ नमः
 परावशेशायजगत्स्थावरमूर्तये ॥२०॥ नमोऽप्यणुप्रमेयाय शाङ्गिणे विष्णु-
 मूर्तये ॥ नारायणाय वामाय सुदीपाय नमो नमः ॥२१॥ नमो ब्रह्माण्ड-
 मालाय गोभराय वरुधिने ॥ घण्टानादाय सूत्राय नमः पातालवासिने
 ॥२२॥ नमस्ताराधिनाथाय वार्गोशाय नमो नमः ॥ सदाशाय गौराय
 पुराणपुरुषाय च ॥२३॥ संसात्मोचकायाय वर्णिने लिंगरूपिणे ॥ सच्चि-
 दानन्दरूपाय पापराशिहराय च ॥२४॥ अतर्क्यायामेयाय प्रमाणाय
 नमो नमः ॥ कलिपासाय भक्तानां मुक्तिमुक्ति प्रदायिने ॥२५॥ गजारसे
 विदेहाय त्रिलिङ्गरहिताय च ॥ नमो राजाधिराजाय चैतन्यविभवाय च
 ॥२६॥ नमः शुद्धात्मन ब्रह्मज्योतिषे स्वतिदाय च ॥ मयोमवे च दर्शाय
 समर्थाय च यज्ञने ॥२७॥ चक्रेश्वराय रुचये नमो नमः ॥ अत-
 र्यनाशकायाय मम्मलेपकराय च ॥२८॥ सदानन्दाय विदुषे सगुणाय
 विरोधिने ॥ दुर्गमाय शुभाङ्गाय भृगुव्याघ्राय ते नमः ॥२९॥ प्रियाय
 यर्म्यान्ने ते प्रयागाय विमागिने ॥ आद्यायामृतशानाय मोमपाय
 तपस्त्रिने ॥३०॥ नमो विचित्रवेपाय पण्डिसंबद्धनाय च ॥ चिरन्तनाय घटुपे
 स्वविराय धुनाय च ॥३१॥ नित्यमायाप्रणयाय व्योमावाताय ते नमः ॥
 संवत्सराय लोभ्याय स्थानदाय स्वविष्णवे ॥ ३२ ॥ व्यावमाय फला-
 न्ताय महाकर्त्रे प्रियाय च ॥ गुणत्रयस्वरूपाय नमः सिद्धिस्वरूपे
 ॥ ३३ ॥ नमो नमःस्वरूपाय स्वच्छाय पुरुषाय च ॥ कालान्तराय
 वेदाय नमो ब्रह्माण्डरूपिणे ॥ ३४ ॥ अनित्यनित्यरूपाय तदन्तर्वर्तिने
 नमः ॥ ममभार्याय शुकलाय पुण्याय पश्ये नमः । ३५ ॥ पञ्चलन्मात्र-
 रूपाय पद्मधर्मन्द्रियात्मने ॥ विशृङ्खलाय पूर्णाय नमस्ते विषयात्मने
 ॥ ३६ ॥ अनपचाय शम्भाय स्वतन्त्रायामृताय च ॥ नमः प्रौढाय
 प्राज्ञाय योगारूढाय ते नमः ॥ ३७ ॥ मन्त्रहाय प्रभाषाय प्रीति-
 विमलाय च ॥ शिरःशामाय दशाय वेदनिःरुमिनाय च ॥ ३८ ॥
 यज्ञाङ्गाय मुनीराय नागचूडाय ते नमः । व्याघ्राय बाणहस्ताय
 मन्त्राय पण्डिणे नमः ॥ ३९ ॥ शंभुहाय रक्षाय स्वस्याय च

वरीयसे ॥ गहनाय विरामाय सिद्धान्ताय नमो नमः ॥ १४० ॥
 महीधराय होत्रे ते वटवृक्षाय ते नमः ॥ ज्ञानदीपाय दुर्गाय सिद्धान्त-
 न्तिरश्चयाय च ॥ श्रीमने मुक्तिबीजाय कुशलाय विलासिने ॥ ४१ ॥
 प्रेरकाय विशोकाय हविर्द्वानाय ते नमः ॥ गम्भीराय सहायाय भोज-
 नाय सुभोगिने ॥ ४२ ॥ महायज्ञाय तीक्ष्णाय नमस्ते भूतचारिणे ।
 नमः प्रतिष्ठितायाथ महोत्साहाय ते नमः ॥ ४३ ॥ परमार्थाय शिशवे
 प्रांशवे च कपालिने ॥ सहजाय गृहस्थाय सन्धानाथाय जिष्णवे
 ॥ ४४ ॥ पद्भुभिः सुपजितायाथ त्रिदलामुरघातिने ॥ जनानन्दाय
 योग्याय कामेशाय ऋरीटिने ॥ ४५ ॥ अमोघविक्रमायाथ नग्नाय
 दलघातिने ॥ सप्रामायुः नरेशाय शुचिहास्याय ते नमः ॥ भूतिप्रियाय
 भूम्ने ते श्येनाय मधुराय च ॥ ४६ ॥ मनुष्यब्राह्मगतये कृतज्ञाय
 शिखण्डिने ॥ निर्लेपाय जटाद्राय महाकालाय भीरवे ॥ ४७ ॥
 नमो विरूपरूपाय शक्तिगम्याय ते नमः ॥ नमः सर्वाय सदसत्पराय
 सुव्रताय च ॥ ४८ ॥ नमो भक्ति प्रियायाथ श्वेतरक्षापराय च ॥
 सुकुमारमहापापहराय रथिने नमः ॥ ४९ ॥ नमस्ते धर्मराजाय धना-
 ध्यज्ञाय सिद्धये ॥ महाभूताय कल्पाय कल्पतरुहिताय च ॥ १५० ॥
 ख्याताय जितविश्वाय गोकर्णाय सुचारवे ॥ श्रोत्रियाय वदान्याय
 दुर्बलाय कुटुम्बिने ॥ ५१ ॥ विरजाय सुगन्धाय नमो विश्वम्भराय
 च ॥ भवातीताय पष्ठाय नमस्ते सामगाय च ॥ ५२ ॥ अद्वैताय
 द्वितीयाय कल्पराजाय भोगिने ॥ चिन्मयाय नमः शुक्लज्योतिषे
 क्षेत्रगाय च ॥ ५३ ॥ सर्वभोगसमृद्धाय साम्बाय च नमो नमः ॥
 नमस्ते स्वप्रकाशाय स्वच्छन्दाय सुतन्त्रवे ॥ ५४ ॥ सर्वज्ञमूर्तये तुम्यं
 हिरण्यरेतसे नमः ॥ शौरदाय सुशीलाय कौशिकाय धनाय च ॥ ५५ ॥
 अभिरामाय तत्त्वाय व्यक्तकल्पाय ते नमः । अरिष्टमथनायाथ
 सुप्रतीकाय ते नमः ॥ ५६ ॥ आशवे ब्रह्मगर्भाय वरुणायेन्दवे नमः ॥
 नमः कालाग्निरुद्राय श्यामाय सुजनाय च ॥ ५७ ॥ अहिर्बुध्न्या-
 याजराय गुह्येशाय सशान्तये ॥ नमः समयनाथाय सोमपाय
 गुहाय च ॥ ५८ ॥ निर्मलाय नमस्तुम्यं छन्दसाराय दंष्ट्रिणे ॥
 ज्योतिर्लिङ्गाय पित्रे च जगत्सुहृत्कारिणे ॥ ५९ ॥ नमः
 काह्लयनिधये श्लोकाय जयशालिने ॥ ज्ञानोदराय बीजाय जनविधा-
 महेतवे ॥ ६० ॥ अत्रधृताय शिष्टाय छन्दसां प्रधवे नमः ॥ नमः फेण्याय
 गुहाय सर्वबन्धविमोचिने ॥ ६१ ॥ इन्दारनीर्तये शरवत्प्रसन्नवदनाय च ।
 वसवे वेदकाराय नमो भ्राजिष्णुविष्णवे ॥ ६२ ॥ चक्षिणे देवदेवाय गदा-
 हस्ताय सुत्रिणे ॥ नमस्ते पारिजाताय गणाधिपतये नमः ॥ ६३ ॥ सर्वशाग्ना-

धिपत्ये प्रजनेशाय ते नमः ॥ सूक्ष्मप्रमाणमूर्ताय सुरपार्वगताय च ॥
 ६४ ॥ अशरीराय शुक्राय सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ सुकेशाय सुपुष्पाय श्रुत्ये
 पुष्पमालिने ॥ ६५ ॥ मुनिष्येभ्यः मुनये बीजस्थाय मरीचये ॥ चामुण्ड-
 जनकायथ नमस्ते कृतिवासये ॥ ६६ ॥ व्योमकेशाय योग्याय धर्मपीठाय
 ते नमः ॥ महावीर्याय दीप्ताय बुद्ध्याय शानये नमः ॥ ६७ ॥ शिष्टेष्टाय मघ-
 वते केतवे करुणाय च ॥ कारणाय भगवते वाणदर्पहराय च ॥ ६८ ॥
 अनीन्द्रियाय रम्याय ज्ञानानन्दकराय च ॥ सदाशिवाय धीश्याय चि-
 न्त्याय चन्द्रमौलिने ॥ ६९ ॥ नमस्ते जातुकर्णाय सूर्याध्यक्षाय ते नमः ॥
 व्योतिषे कुण्डलीशाय घादायाचलाय च ॥ ७० ॥ वसन्ताय सुरभये जया-
 रिमथनाय च ॥ प्रेतपुरञ्जयायाथ पृषद्शवाय ते नमः ॥ ७१ ॥ रोचिष्णवे
 सुरजिते श्वेतपीठाय ते नमः ॥ नमस्ते चञ्चरीकाय तमिस्रमथनाय च ॥
 ७२ ॥ प्रमाथिने निदाघाय चित्रगर्भाय ते नमः ॥ शिवालयाय स्तुत्याय
 तीर्थदेवाय ते नमः ॥ ७३ ॥ निरुद्धाय दानाय विचित्रशक्तये नमः ॥
 नमस्तुल्याय महमे वितानपतये नमः ॥ ७४ ॥ अहङ्कारस्व-
 रूपाय मेधाधिपतये नमः ॥ विक्रमाय स्वतन्त्राय स्वतन्त्रगतये नमः
 ॥ ७५ ॥ अपाराय तन्त्रविदे क्षयद्वीराय ते नमः ॥ पञ्चास्याय
 यदान्याय विश्वप्राणेश्वराय च ॥ ७६ ॥ अगोचराय सूक्ष्माय
 क्षीयाय बहवाग्नये ॥ फेर्याय पद्महस्ताय नमस्ते जमदग्नये ॥ ७७ ॥
 अनाघृताय मुक्ताय मान्कापतये नमः ॥ नमस्ते बीजकोशाय तीव्रा-
 नन्दाय मुक्तये ॥ ७८ ॥ नमस्ते विश्वदेवाय शान्तरागाय ते नमः ॥
 विज्ञोचनाय तोयाय हेमगर्भाय ते नमः ॥ ७९ ॥ अनाघन्ताय
 चण्डाय मनोनाथाय ते नमः ॥ ज्ञानस्कन्धाय तुष्टाय कपिलाय
 महर्षये ॥ ८० ॥ नमस्त्रिकाग्निशालाय देवसिंहाय ते नमः ॥ नमस्ते
 मणिपूराय चतुर्वेदाय ते नमः ॥ ८१ ॥ स्वभावाय सुवासाय ह्यन्त
 ज्ञायते ते नमः ॥ नमस्ते शिवधर्माय महाधर्माय ते नमः ॥ ८२ ॥
 प्रमन्नाय नमस्तुभ्यं सर्वान्तर्यामिणे नमः ॥ रावन्मुवे कुलेशाय यज्ञ-
 राक्षममन्त्रे ॥ ८३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ जपन्तु सततं देवा
 नाम्नां दशशतीभिन्नाम् ॥ मम चातिप्रियकर्ता महामोक्षप्रदायिनीम्
 ॥ ८४ ॥ संभामे जयदात्रीं च सर्वाभिद्धिमयीं शुभाम् ॥ यः पठेत्पुण्य-
 यादाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ८५ ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रं राज्यकामस्तु
 राग्यताम् ॥ प्राप्नुणत्वया भक्त्या धनधान्यादिकं यद् ॥ ८६ ॥ शिवालय
 नदीतीरेऽथमूले विशेषतः ॥ प्रजपेत्सिद्धिदां देवाः शुचौ देशे शमीतले
 ॥ ८७ ॥ धनकामस्तु जुष्ट्यादृष्ट्वापतेर्विन्वपत्रकैः ॥ मोक्षकामस्तु
 मध्येन पृथेन प्रतिनामसः ॥ ८८ ॥ पुत्रकामस्तु जुष्ट्यात्

विपनये प्रजनेशाय ते नमः ॥ सूक्ष्मप्रमाणमृतोय सुत्पारर्वगताय च ॥
 ६५ ॥ अशरीराय शुक्लाय सर्वान्तिर्मांमिष्ये नमः ॥ सुकेशाय सुपुष्पाय श्रुतये
 पुष्पमालिने ॥ ६६ ॥ मुनिष्येभ्यो मुनये बीजस्थाय मरीचये ॥ चामुण्ड-
 जनकायाय नमस्ते कृतिवासये ॥ ६६ ॥ व्योमकेशाय योग्याय धर्मपीठाय
 ते नमः ॥ महावीर्याय दीप्ताय बुद्ध्याय शनये नमः ॥ ६७ ॥ शिष्टेष्टाय मध-
 यते केतवे कङ्कणाय च ॥ कारणाय भगवते वाणदुर्गहराय च ॥ ६८ ॥
 अनीन्द्रियाय रम्याय ज्ञानानन्दकराय च ॥ सदाशिवाय धीम्याय चि-
 न्त्याय चन्द्रमौलिने ॥ ६९ ॥ नमस्ते जातुकर्त्याय सूर्योध्यन्ताय ते नमः ॥
 व्योतिषे कुरङ्गलीशाय वरदायाचलाय च ॥ ७० ॥ वसन्ताय सुरभये जया-
 रिमथनाय च ॥ प्रेतपुरञ्जयायाय पृषदश्वाय ते नमः ॥ ७१ ॥ रोचिष्णवे
 सुरजिते श्वेतपीठाय ते नमः ॥ नमस्ते चञ्चरीकाय तमिस्रमथनाय च ॥
 ७२ ॥ प्रमाथिने निदाघाय चित्रगर्भाय ते नमः ॥ शिवालयाय स्तुत्याय
 तीर्थदेवाय ते नमः ॥ ७३ ॥ निरवद्याय दानाय विचित्रराक्तये नमः ॥
 नमस्तुल्याय महामे वितानपतये नमः ॥ ७४ ॥ अहङ्कारस्व-
 रूपाय मेधाधिपतये नमः ॥ विक्रमाय स्वतन्त्राय स्वतन्त्रगतये नमः
 ॥ ७५ ॥ अपाराय तत्त्वविदे क्षुब्धीराय ते नमः ॥ पञ्चास्याय
 वदान्याय विश्वप्राणेश्वराय च ॥ ७६ ॥ 'अगोचराय सूक्ष्माय
 श्लेषाय वडवाग्नये ॥ फेरयाय पद्महस्ताय नमस्ते जमदग्नेय ॥ ७७ ॥
 अनावृताय सुक्ताय मातृकापतये नमः ॥ नमस्ते बीजकोशाय बीजान-
 न्दाय मुक्तये ॥ ७८ ॥ नमस्ते विश्वदेवाय शान्तरागाय ते नमः ॥
 विलोचनाय तोयाय हेमगर्भाय ते नमः ॥ ७९ ॥ अनाद्यन्ताय
 वण्डाय मनोनाथाय ते नमः ॥ ज्ञानस्कन्धाय तुष्टाय कपिलाय
 महर्षये ॥ १८० ॥ नमस्त्रिकाग्निकालाय देवसिंहाय ते नमः ॥ नमस्ते
 नखिपूराय चतुर्वेदाय ते नमः ॥ ८१ ॥ स्वभावाय सुवासाय ह्यन्त
 द्वायव ते नमः ॥ नमस्ते शिवधर्माय महाधर्माय ते नमः ॥ ८२ ॥
 प्रसन्नाय नमस्तुभ्यं सर्वान्तिर्भ्योतिषे नमः ॥ रावन्मुवे कुलेशाय यक्ष-
 राक्षसमन्मह ॥ ८३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ जपन्तु सर्वतं देवा
 नाम्नां दशशतीनिमाम् ॥ मम चाविप्रियकरां महामोक्षप्रदायिनीम्
 ॥ ८४ ॥ धंमामे जयदार्त्रं च सर्वासिद्धिमर्थं शुभाम् ॥ यः पठेच्छृणु-
 याद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ८५ ॥ पुत्रकामो लभेत्पुत्रं राज्यकामस्तु
 राज्यवाम् ॥ प्राप्नुवातरत्या भक्त्या धनधान्यादिकं बहु ॥ ८६ ॥ शिवालये
 नदीतीरेऽपत्यमूले विशेषतः ॥ प्रजपेत्सिद्धिदां देवाः शुचीं देशं रामीवले
 ॥ ८७ ॥ धनकामस्तु जुहुयाद्द्यूवाक्त्वेर्नित्वपत्रकेः ॥ मोक्षकामस्तु
 गन्धर्वेन पृथेन प्रतिनामतः ॥ ८८ ॥ पुत्रकामस्तु जुहुयात्

श्रीगणेशायनमः ॥ चापेयगौराद्ध शरीरकाये कपूरगौरार्धशरीर-
 काय ॥ धमिल्लकायै च जटाधाराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥
 रणत्वणत्कंकणनूपुरायै मिलत्कण्ठाभासुरनूपुराय ॥ हेमांगदायै भुज-
 गांगदाय नमः शिवायै ॥२॥ कास्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै चिन्तारजःपुञ्जविज-
 चर्चिताय ॥ सुकुण्डलायै फणिकुण्डलाय नमः शिवायै ॥३॥ मन्दारमाला-
 कुलितालकायै कपालमालाङ्घ्रि तशेखराय । दिव्या म्वरायै च दिगम्बराय
 नमः शिवायै ॥ ४ ॥ प्रोत्फुल्लनीलोत्पललोचनायै विकासपङ्के रहलोच-
 नाय ॥ समेक्षणाय विषभेक्षणाय नमः शिवायै ॥ ५ ॥ अम्भोरुहरयामल
 कुन्तलायै तडित्प्रभाभासजटाधराय ॥ जगज्जनन्यै जगदेर्कापत्रे नमः शिवायै
 च नमः शिवाय ॥ ६ ॥ सदा शिवानां प्रियभूषणायै सदा शिवानां प्रिय
 भूषणाय ॥ शिवान्विताये च शिवान्विताय नमः शिवायै ॥ ७ ॥
 प्रपञ्चसुखवासदायै त्रैलोक्यसंहारकृतान्तकाय ॥ कृतस्मरायै त्रिकृत-
 स्मराय नमः शिवायै ॥ ८ ॥ नमस्ते भगवद्द्रुमास्करामिततेजसे ॥
 नमो भवाय देवाय शिवाय परमात्मने ॥६॥ शन्याय च्छित्तिरूपाय सदा
 सुरभिदे नमः ॥ ईशानाय नमस्तुभ्यं स्पर्शमात्राय ते नमः ॥१०॥ महा-
 देवाय सोमाय अमृतेशायु ते नमः ॥ उग्राय यज्ञमानाय नमो मीढुष्टमाय
 ते नमः ॥११॥ नमोऽस्तु ते शंकर शान्तिमूर्ते नमोऽस्तु ते चन्द्रकलावतंस ॥
 नमोऽस्तु ते कारण कारणाय नमोऽस्तु ते कारणवर्जिताय ॥१२॥ स एव
 धन्यस्तव भक्तिभाजां तवाचको यः कुरुते सदैव ॥१३॥ मन्त्रहीनं कि-
 याहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥१४॥

इति श्रीस्कन्धपुराणे शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

श्रीगणेशाय नमः

शिवमहिम्नस्तोत्रम् ।

श्रीपुण्ड्रवन्दनवाच ।

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशो स्तुतिर्भङ्गादी नामपि
 तद्वसज्जास्त्वयि गिरः ॥ अधावाच्यः सङ्घः स्वमतिपरिग्रामावधिगृणन्
 ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परि करः ॥१॥ अतोतः पन्थानं तव च
 महिमा वाङ्मनसपारतद्व्यापृत्या यं चकित्तममिधत्ते म्तिरपि ॥ स
 कस्य स्तोतव्यः कठिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्षापीने पतति न मनः

नस्य न रच ॥२॥ मधुस्कीता वाच परमममृतनि मितवतस्त्वव ब्रह्मन् किं
 वानपि सुरगुरोर्विहयपदम् ॥ मम त्वेता वाणीं गुणकथनप्रत्येन भवत
 पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनद्युद्धिव्यवसिना ॥३॥ तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुद-
 परज्ञापलयन्तु त्रयोऽस्तु व्यस्त तिस्रुषु गुणभिन्नासु तनुषु । अमन्याः
 नमस्मिन् वरद रमणीयामरणीं विहन्तु व्यात्राशी विदधत इहैके जड-
 धिय ॥४॥ किमीह किं काय स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो
 धावा नृचति किं पादान इति च ॥ अतर्क्यैश्वर्ये त्वद्यनवसरादु स्यो हतधिय
 दुसर्गोऽपि कारिचन्सुरारयति मोहाय जगतः ॥५॥ अजन्मानो लोका-
 किमययन्तोऽपि जगताभयिष्ठावार किं भयविधिनाइत्य भवति ॥
 अनीशो या कुर्याद्भननजनने क परिकरो यतो मन्वास्त्वा प्रत्यमरवर
 सशेषे इमे ॥ ६ ॥ त्रयो सारथ्य योग पशुपतिमत वैष्णवमिति प्रभिन्ने
 प्रस्थाने परधिदमद् पथ्यमिति च ॥ रुचीना वैचित्र्यान्नुकुटिलनाना
 पथजुषा नृणामेको गम्यस्तानसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥ महोत्स-
 रत्नराजं परगुरजिनं भस्म फलिनः कपाल चेतोयत्तव वरदन्त्रोपकर-
 णम् ॥ सुरास्ता नामृद्वि विदधति भनदध्रु प्रणिहिता न हि स्वात्मा-
 रामं विपयवृगृह्या भ्रमयति ॥ ८ ॥ ध्रुव कश्चित्सम सकलमपरस्व-
 द्धुधमिदं परो प्रीव्याप्रीये जगति गदति व्यतविषये ॥ समस्तेऽप्ये-
 वस्मिन् पुरमवन वैविस्मित इव स्तेयन् जिह्वे मि त्वा न खलु ननु धृष्टा
 सुभरता ॥ ९ ॥ तवैश्वर्यं यत्नाश्चदुपरि विरिञ्चो हृदिष्य परिच्छेत्तु
 पातावनिलमनलस्कन्धयपुष ॥ ततो भक्तिरद्व्याभरगुरुगृह्यन्त्या गिरिश
 यन् स्वयं तस्त्रे ताभ्यो तत्र किमनुवृत्तिनं फलति ॥ १० ॥ अयत्नाद्वा-
 पयं त्रिभुवनमपेरव्यतिकरं दशास्वी यददाहूनभृतरणकण्डूपरवशान् ॥
 शिरःपद्मश्रेणोरेचितचारुणाम्भोरुद्वले स्विरायास्तदुक्तेस्त्रिपुरहर विस्त-
 नितमिशम् ॥ ११ ॥ अगुप्य त्वत्मेरासनविगतसार, भुजगर्त वनात्कैला-
 सेऽपि त्वद्विषसतो विजययन् ॥ अलभ्यापातालेऽप्यल चलिवाङ्गुष्ठ-
 शिपि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्भु वमुपाचितो सुप्रति मल ॥ १२ ॥ यदद्वि-
 स्तृ म्या नद्वपमोचरेरपि मतीमयत्तके वाच परित्रनविधेयमिभुवन ॥
 न तेषर तस्मिन् वरिर्वसिनरि त्वमरगुयोर्न कस्याप्युत्तयै भवति शिर-
 मस्तर्ष्ययन्ति ॥ १३ ॥ अहाहहन प्राण्डवय र्दिव्येऽनुसुरेष्ठाविधेयस्या-
 ऽमोघश्चिनयन विष सद्धयन ॥ स कलनाप, कण्ठे तव न धुरुते न
 भिननडा विहारोऽपि म्नाप्यो भुवनमयभङ्गव्यसनिन ॥ १४ ॥ असि
 द्वागं नैर काचिदसि सद्गसुत्तर निरर्तनं नित्यं जगति अयिनो यस्य
 निशिना । म पण्यप्रीडा स्वामितरमुत्साधारणमभूर्भर समतव्यात्ना
 न वि धनागु, श्व्य, परिभर ॥ १५ ॥ मदीपादापातात्त्रजति मद्सा

संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघेरुष्णमहगणम् ॥ मुहुर्द्यौर्दोर्ध्वं
यात्यनिर्भृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि नतु वामैव विभुता
॥ १६ ॥ वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो चारां यः
पृषत्तलघुदृष्टः शिरसि ते ॥ जगद्वृद्धीपाकारं जलधिक्लृप्तं तेन कृतमित्य-
नैवोन्नेयं धृतमहिमादिव्यं त्व वपुः ॥ १७ ॥ रथः क्षोणी यन्ता शतधृति-
रथेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्को रथ- चरणपाणिः शर इति ॥ दिघक्षोस्ते
कोऽयं त्रिपुरवृणमाडम्परविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलुः परतन्त्राः प्रभु-
धियः ॥ १८ ॥ हरिस्ते साहस्रं कमलवलिमाधाय पदयोर्देकोने तस्मा
न्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ॥ गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां
रक्षायै त्रिपुरहर जागति जगताम् ॥ १९ ॥ क्रतौ सुप्ते जाग्रत् व्यमांस
फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ॥ अतस्त्वां
संप्रेक्ष्य क्रतुपु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु-
जनः ॥ २० ॥ क्रिडादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्षिर्व्यं
शरणद सदस्याः सुरगणाः ॥ क्रतुम्रपस्त्वत्तः ऋतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं क्रतुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥ प्रजानाथ नाथ
प्रसभमभिक स्वां दुहितरं हतं रोहिदभूतां रिरमयिपुमृष्यस्यपुषा । धनुष्पा-
णैर्यातं दिवमपि सपत्राकृतमभुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध-
रभसः ॥ २२ ॥ स्वलावण्याशांसा धृतथनुपमहाय नृणवत्पुः प्लुष्टं दृष्ट्वा
पुरमथनपुष्पायुधमपि । यदि स्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनादवैति
स्वामद्धा वत वरद मुग्धा तुवतयः ॥ २३ ॥ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर
पिशाचाः सहचराश्चितामस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥ अमङ्गल्यं
शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तृणां वरदे परमं मङ्गलमसि
॥ २४ ॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधेमवधयात्तमरुतः प्रहृष्यद्रीमाणः प्रम-
दसलिलोसारितदृशः ॥ यदालोक्याल्हादं हृद् इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्त-
स्वत्वं किमपि यमिनस्तत्किल धवान् ॥ २५ ॥ त्वमर्कस्त्व सोमस्त्वमसि
पवनस्त्वं हुतवहस्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च । परि-
च्छिन्नमेवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरं न विद्मस्तत् तत्वं वयमिह तु
यत्त्वं न भवसि ॥ २६ ॥ त्रयीं तिस्रो वृत्तीरित्रभुवनमथो त्रोनपि सुरान-
काराद्यैर्वैष्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ॥ तुरीयं ते धाम स्वनिभिरभिसन्धा-
नमाणुभिः समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणास्योमिति पदम् ॥ २७ ॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोमः सह महोस्तथा भीमेशानावि-
ति यदभिधानाष्टकिदम् ॥ अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव भ्रतिरपि
प्रियायास्मै घाम्ने प्रणिहितनमस्योऽरिम भवते ॥ २८ ॥ नमो नैदिषाय
प्रियदव दवीषाय च नमो नमः क्षोदिषाय स्मरहर महिषाय च नमः ॥ नमो

वपिंशाय त्रितयनं यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदि दमिति शवाय च
 नमः ॥ २६ ॥ वहलजले विरवोत्पत्तौ मवाय नमो नमः । जनसुखकृते
 सप्तत्रिंशो मृदाय नमो नमः प्रमहसि पदे निखौ गुण्ये शिवाय नमो नमः
 ॥ २७ ॥ कृशापरिणतिचेतः क्लेशावाप्यं क्वचेर्दं क्व च तव गुणसीमोल्लं-
 घिनी शरवदृद्धिः ॥ इति चकितममन्दीकृत्य .मां भक्तिराधाद्वरद वरण-
 योस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥ असितगिरिसमं स्यात्कञ्जलं सिन्धु-
 पात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनीं पत्रमुर्वीं ॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा
 सवकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥ असुरसुरसु-
 नोन्द्रैरचितयेन्दुमालेप्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥ सङ्गतगुण-
 वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तेः स्तोत्रमेतच्चकार
 ॥ ३३ ॥ अहरहरनवधं धूर्जटेः स्तोत्रमेतन् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः
 पुमान् यः ॥ स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतधनायुः पुत्रवान्
 कीर्तिमौख ॥ ३४ ॥ महेशाज्ञापरो देवो महिम्नो नापरा
 स्तुतिः ॥ अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं . गुरोः परम् ॥ ३५ ॥
 दीक्षादानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ॥ महिम्नस्तस्य
 पाठस्य कलां नाहन्ति पोडरीम् ॥ ३६ ॥ कुसु-
 मदशननामा सर्वगन्धर्वराजःशशिधरवैरमौलेर्देवदेवस्य दासः ॥ स खलु
 निजमहिम्नो भ्रष्ट पवास्य रोपास्तवनीमद मकार्पीहव्यदिव्यं महिम्नः ॥
 ३७ ॥ सुरवरसुनिपुण्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राब्जलि-
 नान्प्रचेताः ॥ त्रपति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्ववतमिदममोषं
 पुष्पदन्तप्रणोतम् ॥ ३८ ॥ श्रीपुष्पदन्तमुखर्षकजनिर्गतेन स्तोत्रेण क्विचि-
 पदरेण ह्यप्रियेण । कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति
 भूतपतिर्महेशः ॥ ३९ ॥ इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ।
 अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४० ॥ इति स्कन्दपुराणे पुष्प-
 दन्तगन्धर्वराजविरचिते श्रीसदाशिवमहिम्नाख्ये स्तोत्रे संपूर्णम् । श्रीसदा-
 शिवार्पणमस्तु । श्रीरस्तु ॥

देवीपूजनम् ॥

अथ ध्यानम् । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः नमः
 प्रकृत्यै भगव्यै नियताः प्रणवाः स्यताम् ॥ ॐ मनसः ऽ काममाकृति-
 व्याय ऽ मस्य मरीच । मगूना ऽ रूपमस्य रमोवरा ऽ भी ऽ अय-
 तान्मयि स्नाहा ॥ अथ आवाहनम् ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण-

रजतलजाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१॥ अथ आ-
सनम् ॥ तामऽश्वावह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं
विन्देय गामरव पुरुपातहम् ॥२॥ अथ पादम् ॥ अश्वपूर्णां रथमध्यां
हस्तिनादप्रमोदिनीम् । श्रिय देवोमुपह्वये श्रीर्मा देवो जुपताम् ॥ ३ ॥ अथ
अर्घ्यम् ॥ काँसोस्मितां हिरण्यप्राकारामात्रीं ज्वलन्तीं तृप्तां तपयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥ अथ आचमनी-
यम् ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीर्मां शरणमहं प्रपद्ये -अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वावृणोमि ॥ ५ ॥
अथ स्नानीयम् ॥ आदित्य वर्णे तपसो धिजातो वनस्पतिस्तव वृत्तोऽथ
विल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायाश्च वाह्याऽअलक्ष्मीः
॥ ६ ॥ अथ पञ्चाशतस्नानम् ॥ तत्रादौ पयसा—ॐ पयपृथिव्यांम्पय
ओपधीपु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशाः
सन्तु मह्यम् ॥ अथ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपोपु -अस्मान्
मातरः सुन्धयन्ते घृतेन नो घृत्वः पुनन्तु ॥ विव्वश्वध
हिरिष्म्रवहन्ति देवीरुद्रिदाभ्यः शुचिरापूतधृष्टमि ।—अथ दध्ना ॥ ॐ
दधि काव्योश्वस्य वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणु आयुधं प्रितारिपित् ॥
अथ शुद्धोदक स्नानम् ॥ आपो अस्मान् ० ॥ अथ घृतेन ॥ ॐ घृतमिमन्वे
घृतमस्य योनिघृतेभियोघृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्वस्वाहा
कृतं वृषभव्वत्तिहव्यम् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मां ॥ अथ
मधुस्नानम्—॥ ॐ मधुव्वाता ऋताय ० ॥ शुद्धोदकस्नानम् ० ॥ ॐ आपो
अस्मान् ० ॥ अथ शर्करास्नानम् । ॐ अपा ध रसमुद्वयस ध सूर्ये
सन्त ध समाहितम् ॥ अपा ध रसस्य यो रसस्तम्बो गृहणा न्युत्तम
मुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येपते योनिरिन्द्रायत्वा
जुष्टतमन् ॥ शुद्धोदकस्नानम् ॥ ॐ आपो अस्मान् ० ॥ गन्धोदकस्नानम् ॥
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीपिष्ठीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतां
कामिहोपह्वये श्रियम् ॥ उद्वर्तनस्नानम्—ॐ अथशुनाते अथ शुः प्रच्य-
ताम्पहः ॥ गन्धस्ते सोममवतु मदायसोऽअव्युतः ॥ पुनः शुद्धोदकस्ना-
नम् ॥ ॐ आपो अस्मान् ० ॥ वतः ॐ धो जगदम्भार्ये नमः ॥ इति
नाममन्त्रेण रक्तगन्धाक्षतरक्तपुष्पधूपरीपनैवेद्यानि समर्प्य ॥ वस्त्रं सम-
र्पयेत् ॥ उषेतु मा देवसखः कीर्तिरच मणिना सह । प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रे-
स्मिन् कीर्ति वृद्धि ददातु मे ॥ ७ ॥ यज्ञोपवीतम् ॥ च त्विपासामलां
ज्येष्ठामलक्ष्मीं नारायाम्यहम् । अभूतिमसर्षट् च सर्वां निर्गुं द मे गृहान्
॥ ८ ॥ रक्तचन्दनम् ॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीपिष्ठीमईश्वरीं
सर्वभूताना तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ अथतम् ॥ ॐ अथन्न मीम-

दन्त ह्यप्रिया अधूपत् ॥ अस्तोपतस्व भानवो-विविप्रा नविष्णुया मती-
योजान्विन्द्रते हरिम् ॥ पुष्पाणि ॥ मनसः । काममाकृतिं वाचः सत्यमशी-
महि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥ धूपम् ॥ कर्द-
मेन प्रजाभूतामयि सम्भ्रमकर्म । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म-
मालिनीम् । ११ दीपम् ॥ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मेगृहे
निचदेवी मातरं श्रियं वासय मे कुले । १२ । नेवेद्यम् ॥ आर्द्रा पुष्क-
रिणां पुष्टि सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्यया लक्ष्मीं जातवेदो ममा-
वह ॥ १३ ॥ दक्षिणाम् ॥ आर्द्रां यः करिणीयष्टिं पिङ्गलां पद्ममालि-
नीम् । चन्द्रां हिरण्यया लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ १४ ॥ प्रदक्षिणाम् ॥
तामऽआरङ् जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूर्ति
गात्रो दास्योश्वान्विन्देय पुरुषानाम् ॥ १५ ॥ पुष्पाब्जलिमन्त्रम् ॥ यः
शुचिः प्रयतो भूया जुहुयादाज्यमन्त्रहम् । सूक्तं पञ्चदशार्चनच श्रीकामः
सततं जपेत् ॥ १६ ॥—सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्ध-
माल्यशोभे । भगवति हरिवलभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद
मह्यम् । १७ । धनमग्निर्धनं वायून्सूर्यो धनं वसुः । धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरु-
णं धनमश्विनौ ॥ १८ ॥ येनतेय सोम पिव सोमं पिवतु
वृत्रहा । सोम धनस्य सोमनो मह्य ददातु सोमिनः ॥ १९ ॥
न क्रोवो न च सात्सर्यं न क्रोभो नाशुमा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां
भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ २० ॥ पद्मानने पद्मरु पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि यन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ २१ ॥ विष्णुपत्नीं क्षमां
देवीं माधवीं माधवप्रियम् । विष्णु सप्रतीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्
॥ २२ ॥ महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमही । तन्नो लक्ष्मीः
प्रचोदयात् ॥ २३ ॥ पद्मानने पद्मत्रिपदापत्ने पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनानुकूले त्वत्पादपद्मे मयि सन्निधस्व ॥ २४ ॥
आनन्दकर्दभः श्रीदक्षिचिक्लीत् इति विप्रवाः । ऋषयः श्रियपुत्रारच
मयि श्रीर्देवी देवता ॥ २५ ॥ ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापच अपमृत्यवः ।
भवशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ २६ ॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्य-
माविधाच्छ्रीममान महीयते । धनधान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतमर्तरीर्ष-
माप्नु ॥ २७ ॥

देव्या धार्तिः—वेदोक्त-

प्रारानोरनिवासिनि निगमप्रतिराधे पाराचारविहारिणी नारायणि

दृष्टे । प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये ॥
जय देवि जय देवि जय देवि जय मोहनिरूपे । मामिह जननि समुद्धर
पतितं भवकूपे ॥ १ ॥ दिव्यमुधाकरवदने कुन्दोज्वलरदने पद्मनखजनजिति
मदने मधुकैटभकदने । विकसितपङ्कजनयने पन्नग पतिशयने खगपति-
वहने गहने सङ्कटवनदहने । जय देवि० ॥ २ ॥ मञ्जीराङ्कितचरणे मणि-
मुक्ताभरणैकिंचिद्वस्त्राचरणे वक्राम्बुजधरणे शक्रामयभयहरणे भूसुरमुष्य
करणे करुणां कुरु मे शरणे गजनकोद्धरणे ॥ जय देवि० ॥ ३ ॥ छित्वा राहु-
धीवां पासि त्वं त्रिवुधान् ददासि मृत्युमनिष्टं पीयूषं त्रिवुधान् । विहरसि
दानवच्छद्धान्समरे संसिद्धान् मध्वमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान् ॥ जय
देवि० ॥ ४ ॥

अथ देव्या अथर्वशीर्षम् ।

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्व महादेवी । सात्रदीदहं
ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुपात्मकं जगत् । शून्यं चा शून्य अहमा-
नन्दानानन्दो अहं विज्ञानाविज्ञाने अहं ब्रह्मात्रहणी द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये ।
इति वाथर्वणी श्रुतिः । अहं पञ्च भूतानि अहं पञ्च तन्मात्राणि अहमपितृलं
जगन् वेदोद्भवदेशम् विद्याहमयिद्याहम् अजाहम् नजाहम् अधश्चोर्ध्वं च
तिर्यक्बाहम् अहं रुद्रेभिवसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः अहं
मित्रावरुणावुभौ विभर्मि अहमिन्द्राग्नी अहमश्विना उभा अहं सोमं
स्वष्टारं पूषणं भगं दशामि अहं विश्णुसुरुक्रमम् ब्रह्माणमुत्पजरपति दशामि
अहं दशामि द्रविणं हविष्मते सुभाष्ये यजमानाय सुव्रते अहं धराज्ञी
सङ्गमनी वसुनाम् चिकितुषी प्रथमायज्ञयानाम् अहं सुवेपितर मरुय
मूर्धनमम योनिरप्स्वांतः समुद्रेय एवं वेद सदैवो हं सम्पद माप्नोति देवा
अनुवन् । नमो देव्यै महादेव्ये शिवायै सततं नमः । नम, प्रकृत्यै
भद्रायै निरताः प्रणताः स्मताम् ॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती
वैरोचनी कमफलेषु जुष्टाम् । दुर्गा देवी शरणं प्रपद्यामहेऽसु-
रान्नाशयिष्ये ते नमः देवी वाचमजनयन्तदेशास्तां विश्वरूपाः पशवो
वदन्ति । सा नोमन्त्रेण मूर्जदुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुश्रुतेतु ॥ काल-
रारीं ब्रह्मन्तुतां यैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वतीमदित्तिदक्षदुहितरं
नमामः पावनां शिवाम् । महालक्ष्म्यै च विद्याहे शर्वशाक्त्यै
च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् । अदितिर्हंजनिष्ठ दक्षया दुहित्वा
त्व । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृत चन्धपः ॥ कामे योनिवद्भ-
पाणिगुहा हंसा मातलिश्याभ्रमिन्द्रः पुनर्गुहा सरुला मायया

चापृथक् क्लेशा विश्वमातादि विद्याः ॥ एषात्मशक्तिः । एषा
 विश्वमोहिनी पाशाङ्कशधनुर्वाणधरा । एषा श्री महाविद्या । य
 एवं वेद स शोकं तरति । नमस्ते भगवति मातरम्भाम्पाहि सर्वतः
 सैषा वैष्णवा वसवः सैवैकादशरुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा
 विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा चातुधाना असुरा रक्षांसि
 पिशाचयक्षसिद्धा सैषा सत्वरजस्तमांसि सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी
 सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः सैषा महानक्षत्रज्योतिष्कला काष्ठादि विश्व-
 रूपिणी तामहं प्रणोमि नित्यम् । पाशापहारिणी देवी भुक्तिमुक्ति-
 प्रदायिनी । अनन्तां विजया शुद्धा शरण्यां सर्वदा, शिवाम् ॥
 विपदाकारसेयुक्त बीतिहोत्र समन्वितम् । अर्द्धेन्दुलसितं देव्या
 बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ एवमेकाक्षरं मन्त्रं यतयः शुद्ध चेतसः ।
 ध्यायन्ती परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः वाङ्मया ब्रह्मभूतस्मात् पृ-
 थक्कसमन्वितम् ॥ सूर्यो वाम श्रोत्रविन्दु संयुक्ताष्ट तृतीयकम् ॥
 नारायणेन संमिश्रो वायुशधरायुक्तयः ॥ विद्ये नवार्णं कोणस्य
 महानानन्ददायकः ॥ हरपुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् ।
 पाशाङ्कशधरां सौम्यां वरदाभयदस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रां रक्तवसनां
 भक्तकामवृद्ध भजे । भजामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनि ॥
 महादारिद्र्यशमनी महाकारुण्यरूपिणी । यस्याः स्वरूपं ब्रह्माप्यो
 न जानन्ति ॥ तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते
 तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या लक्षं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्षा ।
 यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मा दुच्यते अजा । ऐकैव सर्वत्र
 वर्तते तस्मादुच्यते ऐका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते एतेका
 अतपवोच्यते ऽक्षेयानन्तालक्ष्मणैकानेका । मन्त्राणां मातृकादेवी
 शब्दानां ज्ञानरूपिणि । ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसा-
 क्षिणी ॥ यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता । तां दुर्गां
 दुर्गमां देवां दुर्गाचारविधातिनीम् । नमामि भवभीतोऽहं संसारार्ण-
 वहारिणीम् ॥ इदमथर्वशीर्षम् योऽधीते । सपञ्चाद्यर्षशीर्षफलमाप्-
 नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्या योर्वाऽस्थापयति । रातलक्षं प्रजप्तापि
 नार्चा शुद्धिं च विन्दति । रातमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः
 सूत्रः । दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापः प्रमुच्यते । महा-
 दुर्गाणि हरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ सायमधीयानो दि-
 पमहर्षं पापं नारायणि । प्रातरधीयानो रात्रिहृतं पापं
 नारायणि । सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपायो भवति निशीघ्रे तुरीयसंभ्यायां

जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति । नूयनायां प्रतिमाया जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति । भौमाशिवन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति स महामृत्युं तरति । य एवं वेद इत्युपनिषत् ॥

हवनविधिः ॥

तत्र कर्त्ता शुभदिने ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय शौचादिविधिं कृत्वा स्नानं सभ्यावन्दनादिनित्यं कर्म विधाय नमस्कृत्य वासः परिधाय सर्वा यज्ञसामग्रीं सम्पाद्य प्राङ्मुखः स्वासने उपविश्य ॐ विष्णुर्विष्णुर्हरिर्हरिः त्रिराचम्य स्थानदेशतागणेशादि पञ्चाङ्गदेवता सर्वलोभद्रमण्डनदेवता पूजनं विधाय शान्तिस्तवं पठित्वा ॥ ततः कर्मपात्रजले गंगाद्यावाहनं वा अर्घपात्र स्थापनं कुर्यात् । यथा-भूमौ जलेन गन्धेन वा त्रिकोणपट्कोणवृत्तचतुरस्र मण्डलं विलिख्य तदुपरि त्रिपादिकां तदुपरि ताम्रमयार्घपात्रं संस्थाप्य तत्र जलं दद्यात् । ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ ॐ इम्ममे गङ्गे यमुने सरस्वति शद्रस्रोमं सवता पशुण्या । असिक्त्या मरुद्वृधे वितस्त-याज्जोकीये शृणु ह्यासुपोमया इति तीर्थान्यावाह्य ॥ यत्राक्षता-न्दिपेत्-ॐ दशकलात्मने धर्मप्रदं हिमण्डलाय नमः । ॐ द्वादशकलात्मने ऽर्घ्यप्रदसूर्यमण्डलाय नमः । ॐ षोडशकलात्मने कामप्रदचन्द्रमण्डलाय नमः । सँ सत्त्वाय नमः । रँ रजशे नमः । अँ अन्तरात्मने नमः । मँ परमात्मने नमः । धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छ्राय योनिमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः अर्घस्था गङ्गादिसप्तसरित इहागच्छत, इह तिष्ठत सर्वतीर्थात्मकार्यार्घपात्राय नमः सन्पूज्य । ॐ नमो त्रिस्तुते ब्रह्मन्भास्वते विष्णु तेजसे । जगत्सवित्रे शुचये सदसप्तकज्ञदायिने । इति वारत्रय सूर्यार्घजलं दत्त्वा ॥ अत्रशिष्टजलेन सर्वा यज्ञसामग्रीं सिक्त्वा ॥

अग्निनामानि—

लौकिकः पावको अग्निः प्रथमः परिकल्पितः ।

अग्निस्तु मास्तौ नामा गर्भाधाने विधीयते ॥ १ ॥

जगन्ते प्रत्यहं मन्त्री होमयेत्तद्दशरतः । तर्पणञ्चाभिषेकञ्च विप्रभोजनमाचरेत् ॥ अथवा सर्वपूतौ च होमादिकमथाऽऽचरेत् ॥ (होमाप्रशक्ती) -

पुंसवने चान्द्रमसः भङ्गाकर्मणि शोभनः ।

सोमन्ते मंगलो नाम प्रगल्भी जातकर्मणि ॥ २ ॥

यद्यदङ्गं भवेद्भग्नं तत्संख्यादिगुणो जपः । होमाभावे जप, कर्षो होमसंख्या

प्राणायामं कुर्यात् । तत्रादी यरणविधिः ॥ पाद्यादीनि सगर्पयामि
स्त्रणांगुलीयसहितवासोम्यो नमः । इति वरणद्रव्यं सम्पूज्य ॥ वरणं
कुर्यात् ॥ आचार्यो वदेत् आस्ये ॥ ततो यजमानः ॐ नमोस्त्वनन्ता
येत्यादि मन्त्रैः पादप्रक्षालनं विधाय—ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्र-
मूतये सहस्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शास्वते
सहस्रकोटियुगधारिणे नमः । ॐ आपद्घनध्वांसहस्रभानवः समी-
हितार्थार्पणकामधेनवः ॥ अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणप्राद-
रेणवः ॥ इ यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ॥ तत्फलं पादव-
श्रेष्ठ विप्राणां पादघावने । ॐ भूमिदेवाग्नेत्यर्थं दत्त्वा ॐ गन्धद्वारेति
गन्धविज्ञेपनं कृत्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य ॐ यदश्वायेति वक्षम्, ॐ देवेभ्य
इति मुहुटकृद्गणकुण्डलादिभिः सम्पूज्य ॥ वरणसामग्रीं करे गृहीत्वा ॥
अद्येहेत्यादि करिष्यमाणासुकुहोर्मणि एभिर्गन्धाक्षतपुष्पपूगीफलपञ्चोप-
वीतस्वर्णांगुलीयवासोलङ्करणादिभिरग्निवृहस्पत्यादिवैतैराचार्यकर्म कर्तुं
आचार्यत्वेनासुकुहोत्रमसुकुशर्माणमसुकुवेदाध्यायिनं ब्राह्मणं त्वामहं
वृणे ॥ इति वरणद्रव्यं आचार्यहस्ते दद्यात् । वृतोस्मीत्याचार्यो वदेत् ।
ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोतीति पठेत् ॥ अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि त्वं मे
आचार्यो भव ॥ अहं भवानीति प्रत्युक्तिः ॥ आचार्यं प्रार्थयेत्—ॐ
आचार्यस्तु यथा स्वर्गं शक्रादीनां वृहस्पतिः ॥ तथा त्वं मम यज्ञे-
ग्निप्राचार्यो भव मुन्नत ॥ ॐ संसारभयं इति सम्प्रार्थ्य ॥ ततो यज-
मानो ब्रूयात् । यथाविहितं कर्म कुरु । करवाणि इत्याचार्यो वदेत् ॥
अथ ब्रह्मवरणम्—पूर्ववत्सम्पूज्य ॥ अद्येहेत्यादि० असुकुहो ममासुकयज्ञ-
कर्मणि ममसरेक्षणाय कृताकृतविक्षणाय ब्रह्मकर्मकर्तृभेभिः स्वर्णाङ्गु-
लीयवासोभिरग्निवृहस्पति देवतैरसुकुहोत्रमसुकुशर्माणमसुकुवेदाध्यायिनं
ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । इति वरणद्रव्यं ब्रह्मणे दत्त्वा प्रार्थ-
येत्—यथा षतुमुंरो ब्रह्मा वेदशास्त्रविशासदः । तथा त्वं मम यज्ञे ५-

चतुर्गुणः । विप्राणां चत्रियाणान्तु रससंख्यागुणः स्मृतः ॥ वैश्यानां वसु-
नाम्नि वै पार्थिवो अग्निः प्राशने तु शुचिः स्मृतः ।

सध्वनामाय चूडे तु अतारग्ने समुद्रवः ॥ ३ ॥

आख्याकमेवाध्वीयामयं विधिः ॥ एषां ब्राह्मणानिदामिश्रयः ॥ ब्राह्मणवत्पु-
नारमेव ब्राह्मणादिस्त्रीयामपि विधि रितिशावः ॥ अप्राप्यशकौ तु 'होमकर्म-

गोदाने एषं नामा च केशान्ते अग्निदन्त्यते ।

वैश्यानां विधौ तु विवाहे योजकः स्मृतः ॥ ४ ॥

संप्रकृता विप्राणां द्विगुणो नमः । इतरैर्यान्तु यथानां त्रिगुणादिः समीरितः ॥

स्मिन्भव ब्रह्मा द्विजोत्तम । अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव ॥
 अहं भवानि ० ॥ यथाविहितं कर्म कुरु ॥ करवाणि ॥ अथ ऋत्विग्वर-
 णम्—ब्राह्मणान्पूजयेत् अद्यहेत्यादि० अमुकोहं ममामुकनाम्नि महायज्ञे
 सर्वतः क्षेमाद्युपलब्धये ऋग्वेदपठनायं, उत्तरद्वारे, एभिर्वासोगुलीयास-
 नफलैर्बृहस्पतिवह्निवनस्पतिदेवतैः मुक्कगोत्रानमुकशर्म्मणो ब्राह्मणान् होम-
 कर्त्तृत्वेन युष्मान् वृणे ॥ पुनश्च ॥ तद्ब्रह्मव्या यज्ञसम्बन्धि—शान्ति-
 पाठवाचकेभ्यो गणेशगायत्र्यादिजापकेभ्यो रुद्राभ्यायविष्णुसहस्रनाम-
 चण्डोपाठकेभ्यो तथा भ्रामदेवतास्थानदेवतादीनां पूजकेभ्यः
 साचार्यपुराणशास्त्रादिवाचकेभ्यः, अमुकनामगोत्रान् ब्राह्म-
 णान् युष्मानहं वृणे इति तेभ्यो वरणद्रव्याणि दत्त्वा ॥ वृत्ताः
 स्म इति ते प्रतिव्रुः ॥ यथाविहितं कर्म कुरु इति कर्त्ता वदेत् ॥
 करवाम इति ब्राह्मणा वदेषुः ॥ प्रार्थना—अस्य यज्ञस्य होमकर्मणि यूयं मे
 ऋत्विजो भवन्तु ॥ वयं भवाम इति प्रत्युक्तिः ॥ अथ रक्षाबन्धनं कुर्यान्-
 ॐ गणाधिप नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णु रुद्रं श्रियं देवीं
 वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ १ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशा-
 कर्म । धरणोगर्भसन्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ २ ॥ इत्यादि मंत्रैः
 सर्पपाक्षैः स्वरक्षां कृत्वा कङ्कणमभिमन्त्र्य दक्षिणकरे बध्नीयात् । बन्धन
 मंत्रः । येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वामभिवक्षामि
 रक्षे मा चल मा चल । इति वृत्वा । विधिना मधुपर्कं कृत्वा वैश्वानर
 लक्षणं वाचयेत्—यज्ञपुरुषो वैश्वानरः कपिलो वर्णो ब्रह्मा ऋषिर्विष्णुश्चन्द्रो
 रुद्रो देवता चतुर्वेदा ऋषयो होमं विनियोगः ॥ १ ॥ पूर्वान्नस्थितरचाग्नि
 ऋत्विजः पूर्वदिङ्मुखाः । पूर्वं च देवताः सूर्याः कथन्तु प्राङ्मुखो
 भवेत् ॥ २ ॥ पूज्यपूज्यकयोर्ममध्ये प्राचीदिक् सा स्मृता युधे; । आवाह-
 येत्ततो ह्यग्निं मन्त्रपूतेन वारिणा ॥ ३ ॥ अनलः सजलं दृष्ट्वा भोत्वा
 प्रत्यङ्मुखो भवेत् । अत एवान्नौ विद्मद्भिर्जलस्पर्शो न कारयितव्यः ॥ ४ ॥
 नारद उवाच—पाव इत्येव किं रूपं लक्षणं चैव कीदृशम् । शिखा ह्यदर-
 जिह्वाश्च चक्षुः श्रोत्रं मुखं कथम् ॥ ५ ॥ ब्रह्मोवाच—पावकोद्विजरूपस्तु
 त्रिनेत्रः त्रिशिरस्तथा । पञ्चलक्षणसंयुक्ताः सप्तजिह्वाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

(अथ कुयडलस्थण्डिलविचारः) तत्राष्टविधानि कुर्यानि—चतुरस्रं कोनिरदं-
 चतुर्ष्यां तु शिन्वी नाम धृतिरग्निस्तयाररे ।
 श्रावस्ये भवो क्षेमो वैश्वदेवे तु पावकः ॥ ५ ॥
 ब्रह्मा वै गार्हपत्याग्निरोश्वरो नक्षिणस्तथा ।
 विष्णुराश्वनीयश्च अग्निदेवो प्रयेज्जनपः ॥ ६ ॥

त्रिभागे तन्मुखं ज्ञेयं ब्रह्मावन्ते च मध्यके । उत्तरास्ये स्थितो विष्णुर्दक्षि
 णास्ये प्रजापति ॥ ७ ॥ मध्यमके शिवो ज्ञेयो ह्येव ब्रह्मा जगाद हे ।
 मूर्ध्नि स्थितोऽहं ब्रह्मा वै मुखे चैत्र तु शङ्कर । ८ ॥ जिह्वाया च स्थितो
 विष्णुर्दृष्टामे तु ब्रह्मा स्थिता । घ्राणे तु देवता सर्वाश्चक्षयो शशि-
 भास्करो ॥ ९ ॥ हृदये यस्य ऋग्वेदो माहुस्थाने यजुस्तथा । उदरे कट्या
 च शिरसे वा सामवेद प्रकीर्तित ॥ १० ॥ अथर्व पादयोर्जङ्घे
 प्रोवाया प्रणवस्तथा । पृष्ठभागे तु गायत्री एव रूपं बुधं, स्तनम् ॥ ११ ॥
 नारद उवाच कस्य पुत्रो वैश्वानर कस्मिन्कुले चोत्पन्न का माता क
 पिता ॥ १२ ॥ ब्रह्मोवाच—शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिलीत्र शाण्डिल्या
 सितदेवलेति त्रिप्रवर अरुणो माता वरुण पिता ॥ १३ ॥ अग्नि
 स्थापन सङ्कल्प कुर्यात् । ॐ नमः परमात्मने पुराणपुरुषो
 त्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्यत्र-
 ह्णाणां द्वितीये पार्ष्णे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंश-
 तितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे नम्बुद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्याव-
 र्चातर्गतक्षेत्रे हिमवत्पर्वतैकदेशे केदारखण्डे बदरिकाश्रमे इह स्थाने
 श्रीविष्णुप्रभृति अमुकवताया पुण्यतमक्षेत्रे बौद्धावतारे अस्मिन् वर्त
 मां अमुकनाम सम्बन्धरेऽमुकायनेऽमुकतांविमुकमानंऽमुकपत्ने
 ऽमुकविद्यावमुकनासरेऽमुकनक्षत्रेऽमुकयोगेऽमुककरणेऽमुकशशौ स्थिते
 रणे, चन्द्रे, भौमे, बुधे, गुरौ, शुके, शनौ राहौ, केतौ, सन्निर्दिष्टसमये-
 ऽमुकगोत्रो० मुद्राशि सपत्नीक सपुत्रादिपरिवारोऽमुकशामर्हि मम
 यत्नमानस्य ज्ञाताज्ञातमनोवाक्यायकमजनितनिरिजलाघस्तोमनिरसनपूर्वा-
 धिप्रीतिक्राधिदैविक्राध्यात्मिकसमुत्पन्नवापनयापनोदायदु स्वप्नदु शकुनदु-
 विचिन्तितानि विप्रत्युद्बुद्ध्यर्थमथितदुर्षद्वाधोपलिप्तदारिद्र्यदु सन्निधि

लक्ष्मणे वदन् नामा वटिशोमे हृताशन ।

अत्रं न्यम् मुञ्चु लम् । पदम् पङ्कजाकारतप्टासुं तानि नामत ॥ सर्वविदि-
 ष्टर कुण्ड चतुरस्रमुदाहृतम् । पुनप्रद वाङ्मिहृवदमर्षेन्द्राम शुभप्रदम् । शत
 प्रापश्चित्त विधिरुचैव पाक्यशेषे वाहस ॥ ७ ॥

दवाना इभ्याहस्तु रितृषां काव्याहृतम् ।

पूषाभूत्या मृदा नाम शान्तिश्च वरदस्तथा ॥ ८ ॥

षोष्ठिक बलदरुचैर कागनिर्वाभिन्नागिक ।

वश्यार्षे कामदा नाम उनदाह तु यधन ॥ ९ ॥

वृषभर न्यम् चतुस्र शान्तिर्कर्मणि । उदमारयथा कुण्ड पदम् पद्मवन्निभम् ।
 वृषिद रामरुमन इवहमप्यासुनासिम् । (वरुं भदन कुण्डभेद.)—विप्राणा

नमद्व्याण्डवर्तिचराचर चतुरशीतिलक्ष्योनिस्समुद्रू तनानाविधात्तङ्कसमुदायदू-
रीकरणमुखदीर्घायुष्यनैरुज्यवलपुष्टिप्राप्यनन्तरं सार्वजनीनदृढगतचर्मगतम
स्निग्धकवामयसंशोधनोत्तरकालिकवर्म्मार्यकाममोक्ष प्रतिबन्धकसमस्तान्त-
ररायक्षपणसाधनकर्त्तव्यभौमांतरिक्षमहोत्पातेतिभयमूलसमुच्छेदनमूलकचतु-
र्वर्गतिद्विकोशोद्घाटकसर्वनिगमागमोक्तशु र्भफनप्राप्तयेऽमुकयज्ञपूर्वाङ्गतया
यजुःशास्त्रीयपद्धत्युक्तप्रकारेणाग्निस्थापन करिष्ये ॥ कुशैर्हस्तमात्रमितांभूमि
परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां दिशि परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमू-
लेन प्रजापतिभागगृहीतेन यथोरं तिस्रोरेखा विलिख्यल्लेखनक्रमेणानामि-
कांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्यपूर्वं क्षिप्त्वा जलेनाभ्युक्ष्य पीठं पूजयेत् कुशाक्षतैः ।
ॐ रत्नमल्दिराय नमः ॐ चतुर्द्वारमंडलाय नमः, ॐ रत्नवेदिकायै नमः,
ॐ श्वेतच्छत्राय नमः, ॐ रत्नसिंहासनाय नमः, ॐ वैराग्याय नमः
ॐ ऐश्वर्याय नमः, ॐ अधमाय नमः, ॐ अज्ञानाय नमः, ॐ अवैराग-
ग्याय नमः, ॐ अनैश्वर्याय नमः ॥ इति पञ्चभूसंस्कारान्कृत्वा ॥ ततः
कात्यादिपात्रे पैपलत्वादिरशम्यारणिज सूयकाक्षज श्रीत्रियागारजं वाऽग्नि
संस्थाप्य, अग्नि संस्कारं कुर्यात् । ॐ मीयगृह्णाम्यग्ने अग्नि
रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ इति षडणम ॥ ॐ
गर्भो अस्योपीना गर्भो वनस्पतीना गर्भो विश्वस्य भूतस्थग्निगर्भो अपा-
मसि ॥ इति गर्भाधानम् ॥ ॐ विवस्वानादित्येप ते सोमपीथ तस्मिन्मत्स्य-
श्रदस्मै नरो वर्चसे दधातन ॥ यदाशीर्दादिन्पतिर्विमिश्रतः पुमान्पुत्रो

कोष्ठे तु जाठराग्निः स्यात्कृष्यादोऽमृतमक्षणे ।

समुदे वाडबो ज्ञेयः क्षये संवर्त्त को भवेत् ॥ १० ॥ इति ॥

ब्राह्मण्यलक्ष्यन्-

ब्राह्मण्यार्च कुलीनार्च वेदवेदाङ्गः ।

पट्कर्मनिरताः शुद्धाः स्वाध्याये चैत उत्तराः ॥ १ ॥

चतुस्रं स्वाद्राज्ञा वतु लमिष्यते । वैश्यानामर्धचन्द्राभं शूद्राणां न्यस्तमोरितम् ।

चतुरस्रन्तु सर्वपाकेनिदिच्छ्रान्त ताविद्याः ॥ (दुर्गाहोमे त्रिकोणकुमर्दं स्थान्)

त्रितेन्द्रिया जितक्रोधा अग्निहोत्रपरायणाः ।

पनहीना निर्विषया सत्यशीचपरायणा ॥ २ ॥

उभयोः कुलयोः शुद्धा ये/शुद्धा वाचकाः स्मृताः ।

कुटम्बिनो महाभागास्ते विप्राः कलदायकाः ॥ ३ ॥

नूकान्च शशिरात्रेण पद्धताः श्यामदन्तकाः ।

‘होमार्थं चैवं कर्तव्यं कुचङ्गचैव त्रिकोणान् । स्पष्टितं वा द्रव्यं त्रिकोण-
मानता-राम्भू’-इति तद्विधाने दशोभागवत्प्रथमनात् शरदाजिलकादिशर्वत-त्र-

जायते विदते वस्वधा विश्वाहा २थ एधते गुहे ॥ इति पुंसवनम् ॥ ॐ
 कस्त्वा सत्यो मदानामधर्हिष्टो मत्सदंधसः द्वाचिदारुजे वसुः ॥ इति
 सोमन्तोन्नयनम् ॥ ॐ अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना
 पयः ॥ गोजीरराधहमाणः परन्ध्रथा ॥ इति जातकर्म ॥ ॐ यदापि
 एष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन् एतदग्ने अनृत्यो भवान्यहं ती
 पितरी मया सम्प्रचरुस्वां सन्मा भद्रेण पृक्तो विपृचस्यविमपाप्मना
 गृह्ण ॥ इति नामकर्म ॥ ॐ पूषा पञ्चाक्षरेण पच दिश उदजयतो
 उज्येथ ॥ सविता पञ्चरेण पङ्क्तुनुदजयत्तानुज्येपम्भरुतः सप्ताक्षरेण सप्त
 माम्यान्पशुनुदजय ॥ स्तानुज्येपं बृहस्पतिश्छाक्षरेण गायत्रीमुदचयत्ता-
 मुज्येपम् ॥ इति निष्क्रमणम् ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्य नो घेह्नमीवस्य
 शुष्मिणः प्रपदातारं तारिष ऊर्जं नो घेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ इत्यन्न-
 प्राशनम् ॥ ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोषा
 सत्सि बर्हिषि ॥ इति चूडाकर्म ॥ ॐ भर्तृ कर्णोभिः श्रृगुयाम देवा भर्तृ
 पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवाद्भसस्तनूभिर्व्यरोमहि देवहितं
 यद्वायुः ॥ इति कर्णवेद्यः ॥ ॐ अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयद्यमुज्येप-
 मन्विनीदचक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतान्तानुज्येपं विष्णुस्त्र्यक्षरेण
 ब्रह्मोक्तानुदजयत्तानुज्येपं सोमश्चतुर्क्षरेण चतुष्पदः पशुनुदजयत्तानुज्ये-
 पम् ॥ इत्युपनयनम् ॥ ॐ अश्वस्यान्नस्य सम्पत्तिः पुत्राणामभिसम्पदे ॥
 आयुर्बलश्रियाद्दन्त्वा सा न एहि रुन्धति ॥ इति वेदारम्भः ॥ ॐ प्रतं
 कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ॥ देवी धियं मनामहे समृतीका-
 मभिष्ट्ये वचो धायत्तवाहसधसुतीर्यानो असहशे ये देवा मनोजाता
 मनोयुजो दक्षकृतेवस्ते नोवन्तु ते नो यन्तु तेभ्यः इति समावर्तनम् ॥
 ॐ गाय उपावतावतं यज्ञस्य रभुदा उभा कर्णा हिरण्यमया ॥
 इति गोदानम् ॥ ॐ भग पव भगवो अस्तु देवास्तेन वर्य
 भगवन्तः स्याम त्तरा भग सर्व इज्जोहवीति म नो भग पुर
 एवामवेद् ॥ इति विवाहः ॥ ॐ अतावानं वैश्वानरमृतस्य

प्रवादी च परद्रेषा भ्रष्टाचारः शठस्तथा ॥ ४ ॥

नित्यममृतकारी च शतेरं क्रूरकर्मणि ।

पाक्षयदनिरतो यश्च देवत्राक्षणेनिन्दकः ॥ ५ ॥

गोलकाः कुपयन्त्येव निन्दकाः प्रेतमानसाः ।

रात्रतेषां पय विद्या यज्ञकर्मणि बन्दिताः ॥

प्रत्येकं नु चतुस्रस्यैव प्राणस्यगुह्यम् । समस्तकुपयन्निधानप्रतिरादकनिरन्त्ये-
 ध्येदेवे, एवं सर्वाण्यपि देशाचारेण वा व्यवस्था । (कुपयन्त्येवम्)—

ज्योतिष्मती असृङ्ग्वर्ममीमहे ॥ इति चतुर्थीः॥ अथावाहनम्—ॐ उपयाम
 गृहीतोस्यन्ने त्वा वर्चस एष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे अग्ने वर्चस्विन्
 वर्चस्वाँस्त्वं देवेष्वसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम् ॥ इति षोडशसंस्कारा-
 न्कृत्वा ॥ अग्नि वेद्यां वा कुण्डे स्वाभिमुखं स्थापयेत् ॥ ॐ वैरवानरो न
 उत्तय आप्रयातु परावतः अग्निर्नः सुष्टुती रुष ॥ ॐ अग्नि दूतं ॥
 इत्यग्निं संस्थाप्य ॥ तत्रं यक्षियकाष्ठानि ॐ त्वामद्य ऋषय आप्येति
 मन्त्रेण संस्थापयेत् ॥ ॐ अग्निमूर्द्ध्वेति मन्त्रेणाग्निं प्रञ्चालयेत् ॥ अनामि-
 कांगुष्ठयोगेन प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्—ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये
 ब्राह्मणे ॥ तेन यज्ञं तं तेन मामव । ॐ मनो जूतिर्जु पतामाज्यस्य
 वृहस्पतिर्ब्रह्ममिमं नोत्वरिष्टं यज्ञं ॥ सभिमं दधातु विरवे देवास इह माद-
 यन्तामोम्प्रतिष्ठ ॥ ॐ तदस्तु मित्रां ॥ ॐ भृभुवः स्वः भो अग्ने इहागच्छं
 इह तिष्ठ ॥ अथ ध्यानम्—ॐ शक्तिं स्वस्ति कामीति मुच्चैर्दोर्षदोर्भिर्द्वा-
 र्पामंजपाभम् । हेमाकल्पं पद्मसंघं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥
 कुशकंडिकाक्रमः—यजमानोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्ध मासनं दत्त्वा तदुपरि
 प्रागप्रान्कुशानास्तीर्य, अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव, भवानीति, तयस्त-
 स्मिन्नासने कृताग्निपरिक्रमं ब्रह्माणमुदङ्मुखे उपवेशयेत् । प्रणीतापात्रं
 पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्ने-
 रुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्, एकाशीतिदर्भानादाय विंशतिमान्नेयादीशा-
 नान्तम् । विंशतिं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं विंशतिं नोर्द्ध्वत्यादायव्यान्तम्, विंशति-
 नैर्द्ध्वत्यादायव्यान्तम्, विंशतिमग्निगतः प्रणीतापर्यन्तं परिस्तीर्य कुशम-
 वशिष्टमेकं स्वदक्षिणतः लुवस्थापनार्थं स्थापयेत् । अग्नेरुत्तः पश्चिमशि-
 पवित्रहरणार्थं साप्रमनन्तर्गभं कुशत्रयं, पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्,

आसनानि न्यासः—

कीशेय कम्बलं चैव अजिनं पटमेव च ।

दाहजं तालव्रं वा आसनं परिकल्पयेत् ॥

कृष्णाजिने शानसिद्धिर्भो वर्षाभ्यां चर्माप ।

वंशाजिने न्याभिनासः कम्बले दुःशमोचनम् ॥

प्राच्यां शिरः समारत्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः । उदरं कुशदक्षिणुक्तं योनिः

पादौ च पश्चिमे च यावत्पुण्डस्य विस्तारः खननं तत्रदीगितम् । कुशदानां

अभिनासं नीलवर्णं रक्तं वरयादिह्रनपि ।

शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः कर्षोपां चित्रकम्बलम् ।

पद्मारजिः कृष्णैर्जमा ॥ त्रयोदशकुण्डः उच्यते नतः ।

कुशद्वयं मध्यमं पार्ष्णमग्नेरास्यं प्रधीतिह्रम् ।

प्रोक्षणीपात्र आश्रयाली, चन्द्रस्थाली, सम्मार्जनकुरा. पञ्चकुरा,
 त्रेणीरूपोपयमनकुरा सप्त, पलाशसमिधस्तिष्ठ, स्रव, आयम्, पट्
 पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशतद्वयान्च्छिन्न तण्डुलपूर्णपात्रं मद्दक्षिणम्, एतानि
 सर्वाणि पत्रि च्छेदनकुराना पूर्वपूर्वदिशिक्रमणासादनीयानि स्थापनी
 यानि] च्छेदनायैककुरात्रयेण माप्रमन-तर्गर्भकुराद्वय द्वित्वा सपत्रिदक्षि-
 णकरेण प्रणीतोदकं त्रि प्रोक्षणीपात्रे निवाय, व्यस्तम्, द्वान्यामनामिकारु-
 ष्टान्यामुत्तराप पत्रि घृत्वा तेन प्रोक्षणीजलस्य त्रिस्त्रयत्र कुर्यात्
 प्रोक्षणीपात्र वामहस्ते घृत्वा, दक्षिणानामिकारुष्टाभ्या पत्रि गृहीत्वा
 तेन प्रोक्षणीजल त्रिदक्षिण्य, प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षण विधाय,
 प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुमचर्चं कृत्वा, अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्र
 निदध्यात् आय्यस्थाल्यामाज्य निरूप्य, अधिधित्य [तापयित्वा]
 वल्लुल्लुकेन प्रदक्षिणक्रमेण इतिषेष्टयित्वा वही तत्रक्षिपेत्, स्रव-
 मधोमुख्य प्रतप्य सम्मार्जनकुरानामधेन्तरतो - लैबक्षित सृज्य,
 प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य, पुन प्रतप्य, तद्दक्षिणतो धृतकुरोपरि निदध्यात्,
 अत्रि दक्षिणक्रमेणाभ्यमग्नेरववाप्राप्तो निदध्यात् प्रोक्षणीवन् त्रिदक्षि-
 यावेक्ष्य, सत्यपद्रव्ये तत्रिरस्य, पूर्ववद्योक्षण्युत्पन्न कुर्यात् त्रेणीरु-
 पोपयमनकुरान् (उपप्रहार्थीयान्कुरान्) वामहस्ते घृत्वा त्रिदक्षिण्य
 प्रजापति मनसा ध्यात्वा घृत्वाक् पालाशसमिधस्तिष्ठ समिद्धतमे

यस्मिन् सर्वाणि वापाणि वाधनीयानि नित्यम् ॥ १ ॥

वारण रूप मेखलानाञ्च वादरान् ॥ (होमप्रमाणेन कुरहमानम्)—मुष्टिमा

प्रमित कुण्ड रतायै स्रवक्षते । रावहामभितस्तिमान हस्तमात्र सद्गुके ।

यज्ञानाकृत्य काताये—

आश्रयाली तेजधी वा मून्मयी वा प्रकीर्तिता ।

शादराश्रुतविस्तीर्णा प्रादेशोचया शुभा तृता ॥ १ ॥

आश्रयस्थाली स्या नैव चरथाती प्ररस्यते ।

प्रणीता वारणा माश्रा द्वादशाश्रुतसम्मिता ॥ २ ॥

द्विदक्षिण्युते लक्ष चतुरस्रमुदीरितम् ॥ (कुरहमानने मखलामानम्)—

कुषडाना मन्त्रादिस्ता मुष्टिमात्रे तु वा, कमात् । उत्तेषामामतो च वा

वातन दग्धलवदाकृत्वा पञ्चस्रवत् ।
 पुरोवास्त्य पात्री तु चतुस्त्रया समानत ॥ ३ ॥
 वातेन वदुंक्षनेव युवा पञ्च प्ररस्यते ।
 वादिरा वादुनापनु दुदु स्रवक्षते सव ॥ ४ ॥
 प्ररनिमाया ह्वात्वा वक्ष्णीयाऽप्यु श्रयंताः ।

ऽनौ तूष्णीं जुहुयान् ॥ उपविश्य ॥ सपवित्रप्रोक्षणयुदकेन प्रदक्षि-
णक्रमेणाग्निं पयुञ्च्य, प्रणीतापात्रे पवित्रं निधाय पावित्तद-
क्षिणजानुब्राह्मणान्धारब्धः (ब्रह्मणो दक्षिणहस्तेन दक्षिणस्थ-
कुर्येन वा अनुसृष्टः) समिद्धत्मेऽग्नावाज्याद्भृतीः स्रुवेण दद्यात्,
प्रजापत्यादिद्वादशाहुतिपर्यन्तं स्रुवावस्थितइतरोपघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे
प्रक्षीयः कार्यः ॥ अथाहुतयः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये,
इति पूर्वद्वारहोमः । ॐ इंद्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय, इत्यग्निमध्ये
उत्तरद्वारहोमः । ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये, इत्याधारी दक्षिण-
पूर्वाद्धि ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय इत्याज्यभागौ, उत्तर-
पूर्वाद्धि । इति चतुर्द्वारहोमः ॥ अथ व्याहृतयः ॥ ॐ भूः स्वाहा,
इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा, इदं
धे सूर्याय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वाः स्वाहा, इदं सवित्रेभ्यः ॥ एता
महाव्याहृतयः ॥ अथ पञ्चवारुणी (प्रायश्चित्त) होमः ॥ ॐ
त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्टाः ॥
यजिष्ठो यद्धितमः शोशुचानो विरवा द्वेषा धे सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा,
इदमग्नीवरुणाम्याम् ॥ १ ॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेवमो भवोतीनेदिष्टो अस्या
उपसो न्यष्टो ॥ अवयद्व नो वरुण धे रराणो वीदि मृदीक धे
सुहसो न पधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाम्याम् ॥ २ ॥ ॐ
अयारचाम्नेस्यनभिशस्तपारव सत्वमित्त्व मया असि ॥ अयानो यज्ञं वहा-
स्ययानो धेहि भेषजधेस्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ३ ॥ ॐ ये ते शतं वरुण
ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा पितृता महान्तस्तेभिर्नो अथ सविर्वीत
विष्णुर्विश्वे मुञ्च मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे

द्रयेहायंजुलसम्मिताः । विवस्मिन्ने कुण्डे वेदाग्निनयनागुलाः । कुण्डे
द्विहस्ते ता ज्ञेया रसवेद्युणागुलाः । चतुर्हस्तेषु कुण्डे वसुतक्युगागुलाः ।

अपंपवंश्याख्या च युक्तो नासाकृतिर्भवेत् ॥ ५ ॥

उपभृन् स्रुकुम्बास्रुकु च पुष्करस्रुकुपेव च ।

अग्निहोमस्य इवपी तथा बैरुहृतः स्रु वः ॥ ६ ॥

पवित्रप्रमाणम् ।

द्वयङ्गुलं मूलतत्परं मन्यरेकाङ्गु निर्भवेत् ।

नेत्रज्ञानां भवेदग्ऽऽः परितो नेभिरंगुलान् । एकहस्तस्य कुण्डस्य नभ्येषुलक्षणा-
स्तुषोः । विस्तारोत्तरेतो ज्ञेया नेत्रज्ञ्य सर्वतो बुधैः । इन्द्राग्ने योनिराद्यानु-

ननुस्रुकुलमम स्वात्पवित्रस्य प्रमाणकम् ॥ १ ॥

द्वयङ्गुलं चित्तं पापं परङ्गुलं म्यासमभं कम् ।

विष्णवे विश्वेश्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः ॥ ४ ॥ ॐ उदुत्तमं
 वरुणपाशममद्वाधम विमध्यम ६३ अथाय अथा वयमादित्यत्रते तवा-
 नागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायदितये ॥ ५ ॥ अधाग्नि-
 पूजनम्—ऋग्वेदं स्थापयेत्पूर्वं यजुर्वेदंनु दक्षिणे । पश्चिमे सामवेदंनु
 उत्तरे च ह्यथवर्णम् ॥ इति चतुर्दिक्षु पाद्यादिभिर्वेदान्सम्पूज्य ततोग्निजिह्वा-
 पूजनम्—ॐ काल्यै नमः, ॐ कराल्यै नमः, ॐ मतोजवायै नमः, ॐ
 सुलोहिनायै नमः, ॐ सुधूम्रवर्णायै नमः, ॐ स्फुलिङ्गिन्यै नमः, ॐ विश्व-
 रुचये नमः, ॐ लोलायमानायै नमः सप्तजिह्वामुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः
 स्वः सप्तजिह्वा इद्भागच्छत इह तिष्ठत पाद्यादीनि समर्पयामि सप्त
 जिह्वाभ्यो नमः सम्पूज्य ॥ अधावाहनम्—ॐ तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वा-
 युस्तद्दु चन्द्रमाः ॥ तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥ १ ॥
 सर्वे निमेषा जह्निरे विद्युतः पुरुषादधि ॥ मैत्रमूर्ध्वं न तिर्यञ्चन्न
 मध्ये परित्रप्रभत् ॥ २ ॥ न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः ॥
 हिरण्यगर्भं इत्येषः मा मा हिंसीदित्येषा यस्मान्न जात इत्येष ॥ ३ ॥
 एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वापूर्वां ह जातः स उर्गर्भे अन्तः स एव
 जातः ॥ स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्गं जनांस्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥ ४ ॥ चत्वारि
 श्रृङ्गास्त्रयमयो अस्व पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य त्रिधा वृद्धो
 वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या आचिवेश ॥ ५ ॥ रुद्रेकल्पे—रुद्रतेज
 समुद्रभूतं ॥ इत्यावाहनम् ॥ ॐ पुरुष एवेद् ६३ सर्वं यद् भूतं यच्च
 भाव्यम् ॥ उतामृततत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति इत्यासनम् ॥ आस-
 नार्थं, पुष्पं समर्पयामि श्रोमदग्नये नमः ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय

॥ समन्तात्प्रवृत्तं मूर्ध्नि पंचपात्रमिति स्मृतम् ॥ २ ॥

पौष्टिके पंच दर्भाश्च चतुर्दर्भाश्च शान्तिके ।

पैत्रिके तु पिदमाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि ॥ ३ ॥

पर्यश्वत्पत्रवत् ॥ नृप्यसल्पे कृष्टतानां कुयडाना योनिराश्रिता । पटवत्पुंगु-
 लायाम वेस्तारोन्नतिशालिनी ॥ एकगुलान्तु योन्वमं कुर्यादीपिदधोमुखम् ।

मार्कण्डेयः—

चतुर्दिर्भं पिज्जलेभंसस्य पवित्रम् ॥

पदेकन्यूनमुदिष्टं वयो यपाक्रमम् ॥ ४ ॥

अग्निः—

अनाभिष्णामूलदेशे पवित्रं पारयेद् द्विजः ।

एकगुलतो योनि कुयडभन्वेतु वर्षयेत् । यययत्रकमेव योन्वममपि वर्ष-
 देत् ॥ स्पज्ञादात्प नाल स्यापोन्व मर्षं परम्भकम् । नार्वंयकुयडकोयेपु

आपो भवन्तु पीतये शंखोरमित्थवन्तु नः । इति पाद्यं समर्पयामि ॥
 श्रीमद्भय्ये नमः ॥ ॐ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोत्पेदाभव-
 र्दुनः ॥ ततो विष्वक् म्यक्रामत्साशनानराने अभि ॥ इत्यर्घं
 समर्पयामि ॥ ॐ वरुणेश्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कंभ-
 सर्जनीश्वो वरुणस्य ऋतसदृन्त्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य
 ऋतसदनमासीद् ॥ इत्याचमनीय सम० ॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुहः सन्भृतं
 पृषदाज्ज्यम् । पशूँस्तान्चक्रे वायव्यानाराण्यामाम्याश्च ये इनि स्नायीय
 सम० ॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्तिस स्रोतसा सरस्वती तु पञ्चधासौ
 देशोभवत्सरित् ॥ इति पञ्चामृत सम० ॥ ततः पञ्चामृतस्नानानानन्तरं
 शुद्धोदकं सम० ॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उभ्रेयान्भवति
 जायमानः ॥ तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्त ॥ इति
 वस्त्रं सम० ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥
 आयुष्यमायं प्रतिमुञ्च शुभ्रंयज्ञोपवीतं बलमरु तेजःइति यज्ञोपवीतं सम० ॥
 ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽलङ्करणं भूयाः ॥ इति भूषणाभावे रजतादि द्रव्यं
 समर्प० ॥ ॐ अ ध-शुना ते अ धशुपृच्यतां परुषा परुः ॥ गन्धस्ते
 सोममवतु मदाय रसो च्युतः ॥ इति चन्दनं सम० ॥ ॐ अक्षन्मीमदन्त
 ह्यप्रियाऽ धूपत ॥ अस्तोषण स्वभानवो विप्रान्तविष्ठयामती योजान्विन्द्र
 ते हरी ॥ इत्यक्षतान्सम० ॥ ॐ याहरद्यमदग्निश्रद्धायै कामायेन्द्रि
 याय ता अहं प्रतिगृह्णामि यरासा च भगेन च । इति पुष्पाणि स० ॥
 ॐ धूसि धूर्ध्वं धूर्ध्वन्तं धूर्ध्वं तंयोस्मान्धूर्ध्वति तं धूर्ध्वं यं वयं धूर्ध्वमः । देवा
 नामसि बह्वितमं धृ सस्तिनतमं पप्रितमं जुष्टमं देवहूतमम् ॥ इति धूपमाघ्रा-
 पयामि ॥ ॐ चंद्रमा मनस इति दीपं दर्शयामि ॥ ॐ अन्नपतेन्तस्य नो
 धेह्यन्नमीत्रस्य शुष्मिणः ॥ प्रप्रदातारं वारप ऊर्जं नो येहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

अग्निनियमस्तु संभवे-

उत्तमोऽरणि जस्योग्निरुत्तमः सूर्यकान्तिजः ।

उत्तमः श्रोत्रियागारान्मध्यमः स्वयहादपि ॥ १ ॥

अथ समिधाहोममन्त्राः—

ॐ समिधाग्निं दुवस्यत धृतैर्बोधयतातिपिम् ।

योनिं ता तन्ववितमः ॥ कुपडानां कल्पयेदन्तर्नामिमम्बुजसन्निभाम् । तत्त-
 ङ्कुरडानुसुपं वा मानमस्य निगद्यते ॥ मुष्टपरत्न्येकहस्तुना नाभिरुत्तेषता-

अस्मिन्हम्या जुहोतना स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ सुप्रमिडाप शोषिषे धृतं तीर्णं जुहोतन ।

अग्नये जापवेदसे स्वाहा ॥ २ ॥

इति नेवेद्यं निवेद्यामि श्री० ॥ तृषा दूरीकरणार्थमिदं जलं समर्प० ॥
 ततः करमुग्रप्रक्षालनार्थं च जलं समर्प० ॥ मुखवासार्थं पूगीफलताम्बूलं
 समर्प० ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताम्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥
 स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ इति दक्षिणा
 सम० ॥ कपूरारार्तिक्यं दर्शयामि ॥ ॐ प्रतिपदसि प्रेतिपदेत्वाऽनुपदसि
 नृपदे त्वा सम्पदसि सम्यदे त्वा तेजोसि तेजसे त्वा ॥ इति परिक्रमणम् ॥
 ततो नमस्कारः । ॐ नमस्ते देव देवेश नमस्ते वरद प्रभो ॥ वैश्वानर
 नमस्तेस्तु सर्वदा मङ्गलं कुठ ॥ इति षोडशोपचारेण अग्निपूजनम् ॥
 अथ पञ्चगव्यहोमः-सायैः सप्तपत्रैर्हरितैः कुरीदंशाहुतोर्जुहुयात् ॥
 तत्र मन्त्राः-ॐ इरावतीधेनुमतीहि भूत ध्रुसूयवासिनी मनवे दरास्या ॥
 व्यरुद्रा रोदसी विष्णवे ते दार्यः पृथ्वीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥
 इदं पृथ्व्यै ॥ १ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदवे पदम् ॥ समूह-
 मस्य पांशुसुरे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे ॥ २ ॥ ॐ मानस्तोके तनये मा न
 आयुषि मा नो गोपु मा नो अश्वेषु रीरिपः ॥ मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
 वधीर्हविषमन्तः सदभि त्वा हवामहे स्वाहा, इदं रुद्राय ॥ ३ ॥ ॐ ब्रह्म
 यज्ञानं प्रथमं पुस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ॥ सुबुध्या उपमा
 अर्ष्ये विष्ठाः सतरच योनिमसतरच विवः स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे ॥ ४ ॥
 ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये ॥ ५ ॥ ॐ सोमाय स्वाहाः इदं सोमाय
 ॥ ६ ॥ ॐ तत्सवितु० इदं सूर्याय ॥ ७ ॥ ॐ प्रजापते न त्वदेतान्य-
 न्न्यो निश्ना रूपाणि परिता वभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमरतत्रो अस्तु
 वयधस्याम पतयो रयीणां स्वाहा इदं प्रजाहृतये ॥ ८ ॥ ॐ स्वाहायै
 ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये खिष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये खिष्टकृते ॥ १० ॥
 पुनरर्च ॐ देवकृतं ॥ इति पञ्चगव्यहोमः ॥ अथ यनादिहोमव्यष्ट-

ॐ तन्त्रा समिद्धिरङ्गिरो ध्येन वदंयामसि ।

वृहत्तोत्राय विष्टय स्वाहा ॥ ३ ॥

रतः । द्विधिवंदागुलोपेता कुपडेभ्यन्त्येषु वर्धयेत् ॥ यवद्वयकमेणव नामि
 पृथगुदाकरः । योनि कुपडे योनिमन्त्रकुपडे नामि विवर्जयेत् ॥ कुपडविकृतौ

ॐ उग्रगतेर्हविषमर्तृष्टान्चोर्पन्तु इत्यंत ।

जुपस्य समिधो मम स्वाहा ॥ ४ ॥ इति समिधाहोमः ॥

गद्याभिरतये देवा प्रथमा तु वराहृतिः ।

अग्नये विरुलं कर्म वेदेनेतद्विनिरिवतम् ऐ

दे मायं चक्रमाणम्—

अशुभां पवाहृत्वा द्विभामं चाग्नयेव च ।

प्रोक्षणम्—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशः आदिशो विदिश उदिशो दिम्भ्यः
स्वाहा ॥ ॐ तेजोसि शुक्रस्यमृतमसि धामनामसि प्रियं देवानामनाघृष्टं
देवयत्नमसि ॥ इति हेमद्रव्याजयेकीकृत्य पश्चात् ॐ आपो द्विष्टेतादि
मन्त्रैः सम्प्रोचयेदर्षजलेन ॥ हवनीयद्रव्याय नमः सम्पूज्य, एष गन्धः
एतान्नान् इमानि पुष्पाणि धूपमात्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं
निवश्यामि, दक्षिणां समर्पयामि ॥ प्रहसमिभः अर्कः पलाशः स्वदिरो
ह्यगामार्गोऽथ पिप्पलः ॥ औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः
क्रमात् । समिधाम्भो नमः पाद्यादानि समर्पयामि इति सम्पूज्य ॥ ततः
तमिन् चनादिहोमद्रव्ये यजमानो ब्राह्मण एव वा संकल्प कुर्यात् ॥
यवकुशजलतेनान्यादाय ॥ अद्यहेत्यादि० अमुकशर्माहं ममात्मनो वा
अमुक्य यजमानस्य श्रुयिस्मृतिपुराणोक्तिहासोक्तसत्फलप्राप्तयर्थ
[वा अमुकमामवासिनां] सर्वैश्वर्याभिवृद्धयर्थ सकलमनर्ह-
प्सितकामनासंसिद्धयर्थ लोके वा समायां राजद्वारे वा सर्वत्र
यशोविजयलाभादि—ऽप्यर्थ, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदु-
रितोपशमनार्थं समस्तभवव्याधिजरापीडाल्पमृत्युपरिहायद्वार आयुमारोग्यैश्व-
र्याभिवृद्धयर्थं सकलदुष्टमहजनितानिष्टफलनिराकरणार्थं सर्वोपश्रंवादि-
नाराहेतवे; आदित्यादिनवग्रहानुकूलवासिद्धयर्थं आधिदैविकाधिभौतिका-
ध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकामादिचतुर्वर्गफलवाप्तये अमुक-
ज्ञेत्वेवा तीर्थे, करिभ्यमाणे अमुकनाम्नि महायज्ञे पूर्वाङ्गतयागणपत्या-
दिचतुर्देवानां प्रीतये ऋग्वेदादिचतुर्वेदानां संप्रीत्यर्थं, अधिप्रत्यधिदेव-

दोषः) खातेऽधिके भवद्रोहिनी-हीने-धेनु धमदयः—वक्रकुण्डे तु सस्तापो, मरणं
भिन्नमेखले । मेखलारहिते शोकोऽप्यधिके विचरन्तयः । भार्यविनाश्रमं प्रोक्तं
कृष्णास्तिताम्रभागं च ह्येकभागं च तप्यदुक्तम् ।

शर्करावाश्चार्द्रकागं हवनस्य विधित्वम् ॥ १ ॥

अन्यञ्च—

तिलं घृतं समं कृत्वा यवान्नं द्विगुणी कृतम् ।

तददं तप्युजा देवा होमतामान्यकर्मणि ॥ २ ॥

कुण्डे योन्या विना कृते । अस्त्य ध्वंसनम्रोक्तं कुण्डं यत्कपठवर्जितम् ।
तदेवं कुण्डनिर्माणस्यातीव तुष्करतया ध्यूनाधिकताञ्च दोषभवणात्कुण्ड-

अपि च—

चतुर्भागं तिलान्नं च द्विभागं चान्यमेव च ।

यवाद्यन्तु त्रिभागं स्थाभ्यागमेऽन्तु तप्युक्तम् ॥ ३ ॥

तासद्वितसूर्यादिनवग्रहदेवदानां वैदिकमन्त्रैर्घृताभिधारितवत्समिधाभिः
 तथा पंचलोकपालाभरणपत्यादीनां, अष्टलोकपालानां च [इन्द्रादिदिशदि-
 कपाल] अगस्त्यध्रुवपृथिवीवास्तुर्कर्मज्ञे त्रपालादिदेवानां असन्नतायं तथा
 च विष्णुसर्पकूर्मांडीश्रियो मेधायाश्च रक्षोघ्नीगायत्रीजातवेदेति मन्त्रैः
 श्रीलक्ष्मीनारायणयज्ञपुरुषप्रोक्त्यर्थं च सतिलयवतंडुलाज्यैर्नृगीमुद्रानिर्दि-
 ष्टैर्यथाविधिना होमं करिष्ये ॥ तथा च सन्वत्साराभ्य होमपूर्वोत्तरा-
 ङ्गपूर्णाद्विपर्यन्तं चरत्यालीपाकेन वा होमं करिष्ये ॥ तदङ्गत्वा
 विरवेदेवाचंनपूर्वकनान्दीमुखश्राद्धं वा धृतच्छ्रायञ्च करिष्ये ॥ इति
 सङ्कल्पं होमद्रव्यादी त्यक्त्वा ॥ अथ पूर्वादिप्रतिचरणे विरवेदेवापू-
 जनम् ॐ विष्णुर्विष्णुर्हृदिर्हृदिः त्रिराचम्य ॥ अञ्जलिं वध्वा-ॐ आगः
 च्छन्तु महाभागा विरवेदेवा महाबलाः ॥ यज्ञकर्मणि ये देवा साव-
 धाना भवन्तु ते ॥ ॐ विरवे देवान्भवत्सु आवाहयिष्ये ॐ आवाहय,
 इत्यावाहनमुद्रां प्रक्षर्य पुष्पाक्षतैः—ॐ विरवेदेवास आगत शृणुता
 मइम १ इवम् ॥ एदम्बर्हिनिपीदत ॥ ॐ भुर्भुवः स्वर्विरवेदेवा
 इशगच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सुप्रिविष्टिता वरदा भवन्तु ॥ ब्रह्मवि-
 ष्णुशिवात्मकेभ्यो विरवेभ्यो देवेभ्यो नमः सम्पूज्य पार्श्वं समर्पयामि,
 एष गन्धः, एवानुचवात्, इमानि पुष्पाणि, धूपमाघ्रापयामि, दीपं दर्शयामि,
 नैवेद्यं निवेदयामि, इच्छिणां समर्पयामि, ॐ विरवेभ्यो देवेभ्यो नमः (यव-
 कुशाजलान्यादाय ॥ अमुकयज्ञे आभ्युदयिकश्राद्धे सत्यवसुसंज्ञकानां विर-
 वेपां देवानामेष हिंशुनापादार्घ्यो वो नमः स्वाहा ॥ १ ॥ गणपत्यादिदेवेभ्यो
 नवग्रहेभ्य इन्द्रादिदिकपालेभ्यः पञ्चलोकपालेभ्योऽरिवन्याघट्टाविरा-
 तिन च्छ्रेभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष एष हिंशुनापादार्घ्यो वो नमः स्वाहा ॥२॥

फलम्—

आयुर्नाशं घृताधिक्ये पुत्रनाशं तिलाधिके ।
 स्थाने स्पष्टिकमेव कुप्यात् । वदुक्तम्—नित्यं नैमिषिकञ्चाम्यं स्पष्टिकले वा सता-
 चरेत् । इस्तलाशेषे तत्कुर्याद्वास्तुकाभिः सुरोभनम् । कुप्यन्त्येसला कृत्वा योनिं
 धनधान्यसमुद्दिः स्थापनाधिक्ये न संशयः ।
 तद्वदुलाधिक्ये हानिः शक्रेणाधिक्ये नमः ॥ ४ ॥
 अथ—प्रायश्चित्तं वा ॥
 अथ होमद्रव्यदोषे मुद्राकलत्रम्—
 मृगी कुक्कुटी हंसी वृक्षी च मृगी तथा ।
 कुररा वयः परम् । सोऽपान नवे शोक्तं स्पष्टिकञ्चनुरञ्जघ्नम् । शिरःकुलम्भवेक-
 ददग्नाशेषे च चर्मं यथा ॥ (अग्नेः सप्तविधाः)—काली काली च मनोऽवा

मेवादिद्राशराशिभ्य उग्रप्रहेभ्योऽन्येभ्योऽपिमहमण्डलसंस्थेभ्यो देवेभ्यो
 नान्दीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्षो वो नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ अग्रस्त्यादिभ्यो
 ध्रुवदिभ्यो नान्दीमुखेभ्यः एष हिंगुलापादार्षो वो नमः स्वाहा ॥ ४ ॥
 कुजदेवताभ्यो वास्तुपुरुषक्षेत्रपालादिभ्यो नान्दीमुखेभ्य एष हिंगुलापादार्षो
 वो नमः स्वाहा ॥ ५ ॥ सत्यवसुसुंज्ञकृभ्यो देवर्षिपितृमनुष्येभ्यो नांदि-
 मुखेभ्य एष हिंगुलापादार्षो वो नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ इति विश्वेदेवामे
 दद्यात् ॥ ॐ आब्रह्मन्निपि मंत्रेणार्घजलेन विश्वेदेवानामभिषिञ्चनं
 कुर्यात् ॥ इति नान्दीमुखश्राद्धम् अथ घृतच्छायाविधानम् । तैजसे पात्रं
 घृतं प्रक्षिपेत्-ध्रुवोसीति प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो ध्रुवो देवता घृतच्छा-
 यायां विनियोगः ॥ ॐ ध्रुवोसी ध्रुवोयं यज्ञमानोस्मिन्नायतने प्रजया
 पशुभिर्भूयात् ॥ घृतेन द्याया पृथिवी पूर्यथामिन्द्रस्य च्छदिरसि विश्वजन-
 स्यच्छाया स्वाहा ॥ इति वारत्रयं कृत्वा ॥ शेषं घृतं-ॐ जयंती मगला
 कालो भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा त्रया शिवा धात्री स्वाहा स्वधा
 नमोस्तु ते स्वाहा ॥ इति ब्रह्मै प्रक्षिपेत् ॥ ॐ यानि कानीति परिक्रमणं
 कृत्वा ब्रह्माचार्यस्विगादिभिर्त्राम्णैराशिषं गन्धाक्षतारच गृहणीयात् ॥
 समिद्धोमं विधाय ॥

अथ यथादिशोमद्रव्याहुतिः प्रारम्भः ॥ आदौ गणपत्यादि चतुर्देवहोमः-
 हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ
 हवामहे निधीनात्वा निधिपति ॐ हवामवे वसो मम ॥ आहमजानि
 गर्भधमाच्छमजासि गर्भधं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ता-
 द्वितीमतः सुठवो वेन आवः ॥ सबुध्या उपमा अस्य विष्ठाः सतरच
 योनिमसतरच विवः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ विष्णोररट्मसि विष्णोः रनप्रे स्थो
 लिष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवे त्वा स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः

पञ्च मुद्रा विजानीयादोमद्रव्यमहे बुधः ॥ १ ॥

भ्युञ्जेन पाणिना द्रव्यं तजनीरहितेन यत् ।

क्रियते हवनं विप्रैर्मयूरी ता विदुर्बुधा ॥ २ ॥

अङ्गुष्ठरहिताः सर्वा अङ्गुल्योतानलचिताः ।

हवनं क्रियते ताभिः कुक्कुरी वा प्रकीर्तिता ॥ ३ ॥

च सुतोहिता चैव मुधुस्रवर्णा । स्फुलिङ्गिनो विश्वरुचिस्त्वथा च चलायमाना
 इति सप्तत्रिंशद्वाः ॥ ॥ एताश्चोक्ता विशेष्येण शतम्या ब्राह्मणेन तु ॥ (होमे
 सूक्री करसङ्कोची मृगी मुक्तकनिष्ठिका ।

हंसी स्यात्तर्जनी मुक्ता त्रिधा मुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ४ ॥

शान्ति के च मृगी श्रेया हंसी पौष्टिककर्मणि ।

शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय
 च शिवतराय च स्वाहा ॥ ४ ॥ एततः पञ्चगव्याभिषेकः प्रतिहोमान्ते कर्त्त-
 व्यः ॥ यथा-ॐ यथावाणप्रहाराणां कवचं वारणं भवेत् ॥ तद्वह्नौषध
 तानां शान्तिर्भवति वारणम् ॥ १ ॥ यथा समुत्थितं यन्त्रुं यन्त्रेण प्रतिहन्यते ॥
 तथा समुत्थितं घोरं शीघ्रं शान्त्या प्रशाम्यति ॥ २ ॥ प्रहा गात्रो
 नरेन्द्रारच ब्रह्मणाश्च विशेषतः ॥ पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते निर्दहन्त्यप-
 मानिताः ॥ ३ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ३ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
 शान्तिरोपधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म
 शान्तिः सर्वं ३ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥-४ ॥
 विखानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ ५ ॥
 ॐ शान्तिः ३ ॥

अथ चतुर्वेदहोमः ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्
 ॥ होतारं रत्नघातमं स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव-
 स्थ देवो वः सविता प्रार्प्यतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायभ्रमगम्या
 इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा गावस्तेन ईशत मापशं सो
 ध्रुवा अस्मिन् गोपती स्यात् बह्नीर्यजमानस पशान्पाहि स्वाहा ॥ २ ॥
 ॐ अग्न आयाहि वीतयेगृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि
 चर्हिषि स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पातये
 शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ४ ॥ पूर्ववदभिषेकः ॥ ४ ॥ पूर्ववद-
 भिषेकः ॥ इति ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणहोमः

अथादिप्रत्यधिदेवतासदितनेवप्रहाणां होमः । हरि ॐ अग्निं द्रुतं
 पुरोदधे हव्यवाहमुपप्रवे ॥ देवां आसादयादिह स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ
 आङ्गुष्प्येनरजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता

अभिषारे सूकरी स्वादिद्रेपोच्चाटनादिप ॥ ५ ॥

मुद्राहीनं तु यं भोए ॥ ६ ॥ जारमारण्यं कुक्कुटी ॥ इति ॥

मुद्राः) — मयूरी कुक्कुटी, हंसी सूकरी च मृगो, तथा । पञ्च मुद्रा विजानी
 यादहोमद्रव्यप्रदे बुधः ॥ न्युञ्जेन पाणिना द्रव्यं वर्जनीरहितेन यत् । — क्रियते
 अथाग्निलक्षणाणि शारदायम्—

यत्र काष्ठं तत्र भोषं यत्र धूमस्तत्र नासिका ।

यत्राल्पवज्रलनं नेत्रं यतो भस्म तवः शिरः ।

यत्र मन्त्रनिती बहिस्तन्मुखं जातयेदतम् ॥ १ ॥

हवनं विमैर्मयूरी ता विमुकुटाः ॥ अंगुडपन्थिता, वरा अंगुल्योघान्नाक्षिताः
 हवनं क्रियते पाभिः कुक्कुटी या मञ्जीरिका ॥ पिबनिदा तु हंसी स्यान्मुकुटा

रथेना देवो यातु भुवनानि पश्यन्स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुञ्चोय मामृता-
त्स्वाहा ॥ इदं हविरादित्याय स्वाहा ॥ ॐ अप्सवने सधिष्ट वसो-
पधीरनुरुद्धयसे गर्भे सञ्जायसे पुनः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ इमन्देवा
असपत्न ॥ सुवर्ध्वं महते सत्राय महते ज्येष्ठयाय जानराज्यायेन्द्रस्ये-
न्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा
सोमोस्माकं ब्रह्मणाना ॥ राजा स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ जातवेदसे सुनवा-
मसो ममरातीयतो निद्रहाति वेदः । स नः पर्यदतिदुर्गाणि विश्वा-
नावेव सिन्धुन्दुरिता त्यग्निः स्वाहा ॥ ६ ॥ इदं हविश्चन्द्रमते
स्योनापृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म
सप्रथाः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ अग्निम्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः
पृथिव्या अयम् ॥ अपा ॥ रेता ॥ सि जिन्वति स्वाहा
॥ ८ ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथम जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीपात् ॥
रथेनस्य पक्षा हरिणस्य बाहु उपस्तुत्य महिजातन्ते अर्वन्स्वाहा ॥ इदं
हरिर्भौमाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेवा निदधे पदम् ॥
समूढमरय पाधसुरे स्वाहा ॥ ॐ उद्वुद्धयस्वाम्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते
सधसृजेधामयं च अस्मिन्सधस्थे अद्भ्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमा-
नरच सीदत स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ विष्णोरराटम ॥ १२ ॥ इदं हविर्वुं-
धाय स्वाहा ॥ ॐ महो २ इन्द्रो वज्रहस्तः । षोडशी शर्म यच्छतु हन्तु
पाप्मान योस्मान्द्वेष्टि उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैप ते योनिमहे-
न्द्राय त्वा स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ बृहस्पते अतियदयो अर्हा शुमद्विभाति

फलम्—

वैश्वत्यत्वं कर्णहोमे नेत्रेऽन्वत्वमवाप्नुयात् ।

नासिकाया मनः पीडा शिरोदोमो हि रज्जदः ॥

अधोमुख ऊर्ध्वपादः प्रादमुखो हन्यवाहनः ।

तिष्ठत्येव स्वभावेन आहुतिः कुत्र दीयते । १ ॥

सूक्ष्मी मता । मध्यमानामिकागुष्टिर्मुंगी चैशेनलक्षिता ॥ फलमूलयजो शेया

मुद्रा श्रेष्ठा शिखरिडनी । जारमारणकत्तंभ्ये कुक्कुटी तु प्रकीर्तिता ॥ वश्यो

सर्वित्राम्बुहस्तेन वह्नेः कुर्यात्पदक्षिणा ।

हन्यवाट् सलिलं दृष्ट्वाहो बिभेति सन्मुखो भवेत् ॥ २ ॥ इति भुतेः ॥

अथ सुवचारणविधिः—

अग्ने धृत्वार्यनाशाय मध्ये चैव मृतप्रजा ।

मूले न क्षियते होता सुवस्थान इय भवेत् ॥ १ ॥

ऋणुमञ्जनेषु । यद्दीद्यच्छचपस ऋतप्रजात तद्दस्मासु त्रिविण्णधेहि चित्रं
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ० ॥ १५ ॥ इदं हविर्दृहस्पतये स्वाहा ॥
 ॐ शुक्रज्योतिरश्च सत्यज्योतिरश्च ज्योतिरमौरश्च ॥ शुक्रश्च ऋतपार-
 चात्यधहाः स्वाहा ॥ १६ ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्तत्रं
 पयः सोमं प्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्यभिन्द्रियं विपानं धं शुक्रमन्वस
 इन्द्रम्येन्द्रियं मिदं पयोमृतं मधु स्वाहा ॥ १७ ॥ ॐ त्रातामिन्द्रध्रुवे
 हवे मुहव धं शूरमिन्द्रं ह्यामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र धं स्वस्ति नो मयवा
 धातिन्द्रः स्वाहा ॥ १८ ॥ इदं हविः शुक्राय स्वाहा ॥ ॐ प्रजापतेन
 त्वदेतान्यन्यां विश्वारूपाणि परिता वमूव यत्कामास्ते तु जुहुमस्तन्नो
 अस्तु पय धं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ शन्नो देवी०
 ॥ २० ॥ ॐ यमाय त्वा मगाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवात्त्वा
 सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः सधस्यरास्वाहि ॥ अर्विरसि शोचिरसि
 तपोसि स्वाहा ॥ २१ ॥ इदं हवि शनैरश्चराय स्वाहा ॥ ॐ नमोस्तु
 सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये अंतर्दिचे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो
 नमः स्वाहा ॥ २२ ॥ ॐ कया नश्चित्र आमुव दृती सदावृषः सदा ॥
 कया शविष्टया वृता स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ कापिरसि समुद्रस्य त्वाहित्वा
 उन्नयामि । समापो अद्भिरग्गत समोपधीभिरोपधीः स्वाहा ॥ २४ ॥
 इदं हविः राहवे स्वाहा ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणी ब्रह्मवर्चसी जाय-
 तामाराष्ट्रे राजन्यः शूर द्रपव्य तिव्याधो महारथो जायतां
 दाम्भ्रो धनुर्वेदानह्वानाशुः सप्तः पुरन्ध्रयोपा जिष्णु रयेष्ठाः समेयो
 युवास्य यजमानस्य धीरो जायताग्निरामे निकामे नः पर्जन्यो अभिवर्षतु
 फलवृषो न ओपवयः पच्यन्तां योषहो मो नः कल्पतां स्वाहा ॥ २५ ॥ ॐ

चराटनर्वाणा कर्मणा सुकरी मता ॥ शान्तिके पीष्टिके कार्ये मृगी हंसो तपो-
 चना ॥ (शाकल्यप्रमाणम् — विलास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चक्षेत्रे सर्वदा ।
 अग्रमध्याश्च यन्मर्त्यं दूतमध्याच्च मर्षितः ।

- सुवं धारयते विद्वान् ऋतं च सदा जुषेः ॥ २ ॥
- तवनी च बहिः कृत्वा कनिष्ठाः च बहिस्तथा ।
- मध्यदानामिकाश्रुष्टेः सुवं धारयते द्विजः ॥ ३ ॥
- चतुर्दश परिश्रव्य परशु लनधाति वा ।

अथ शुद्धया वचागिरिभे परमाग्ने धनव्ययः । सर्वकामसमृद्धयर्षे तिलापिर्षं
 सदा हि ॥ (शाकल्यनिर्माणे तिलादीनां म.नन्) वास्तुप्रतिष्ठासंग्रहे यथा—
 करेण मूलमाचक्षाय धारयेच्छुद्धसमुद्रया ॥ ४ ॥
 अग्निः सोमश्च सूर्यश्च इन्द्रश्चैव प्रजापतिः ।

केतुङ्कश्यन्तकेतवे पेशोमया अपेशसे ॥ समुपाङ्कुरन्नायथाः स्वाहा ॥ २६ ॥
 ॐ इन्धानास्त्वा शत १३ सर्गिणीमहि वनध्वन्तो वयस्कृत १३ सह स्वन्त-
 सहस्कृतं अग्ने सपत्नदपदं भनामदध्यासो अदाम्यं चित्रावसो स्वस्ति ते
 पारमशीय स्वाहा ॥ २७ ॥ इदं हविः केतवे स्वाहा ॥ अभिपेकः ॥

अथ पञ्चलोकपालहोमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा० इदं गणपतये
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ जातवेद से० इदं दुर्गायै स्वाहा ॥ २ ॥ वाता वामतो
 वा गन्धर्वाः सप्तवि १३ शतिः ॥ ते अयेरवमयुं जँस्ते अस्मिञ्जवमादधुः
 स्वाहा ॥ इदं वायवे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ यावाङ्कुशा मधुमत्यस्विना सूनृता-
 वती ॥ वया यज्ञमिमिच्छतम ॥ उपयामगृह्णातोत्यस्विभ्यान्त्वेप ते योनि-
 माँघ्वीभ्यान्त्वा स्वाहा ॥ इदमाकाशाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अस्विनोभैपज्येन
 तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिपिञ्चामि सरस्वत्यै भैपज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिपि-
 ङ्चामी-द्रस्येन्द्रिण्यवलाय श्रियै यशसेऽभिपिञ्चामि स्वाहा ॥ इदमस्विभ्यां
 स्वाहा ॥ ५ ॥ पूर्ववदभिपेकः ॥

अथ गणपत्यादीनामष्टलोकपालानाञ्च होमः । हरिः ॐ नमो गणे-
 म्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
 गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विरवरूपेभ्यश्च वो नमः
 स्वाहा ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥ ॐ मूपकाधिपतये स्वाहा । ॐ परशु-
 चाणाय स्वाहा [ॐ ईश्वराय स्वाहा ॥ ॐ सर्वोत्पातप्रशमनाय स्वाहा ॥
 ॐ दिव्ये स्वाहा ॥ ॐ तिथिदेवतायै स्वाहा ॥ ॐ धामच्छद्गनिरिन्द्रो
 ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ॥ सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञ प्रावन्तु नः शुभे स्वाहा ॥
 एवं सर्वत्र] ॐ गणपतये मूपकाधिपतये परशुचाणाय इदमग्नये स्वाहा । १ ।

पठन्तु यज्ञदैवत्य देवतास्तु सुवे सदा ॥ ५ ॥

यमभाग त्यजेन्मूल घोडशाङ्गुलमप्रतः ।

प्रजाभागे सुबो धार्यः, सर्वकर्मप्रसिद्धये ॥ ६ ॥

चतुर्भागास्तिलाः कार्यास्त्रिभागन्वाज्यमेव च । श्वेता यवा द्विभागाः स्युस्तदर्थं
 तण्डुलाः स्मृताः । तदर्थं शर्करा शेयेत्यादि येषु शर्कराऽऽज्यञ्चेत्यपि त्वचि-
 फलम—

स्रवामे वा।ते बह्विर्बिभागश्चतुरङ्गुलः ।

अग्निस्थानेऽग्निमन्तापः सोमे बलेरा उदाहृतः ।

सूर्ये पशुविनाशः स्याद्रीद्रे रौद्रभयं भवेत् ।

प्रजापतौ प्रजावृद्धिर्यमे मृत्युभयं भवेत् ॥ एतिसुवधारणविधिः ॥

दुपलभ्यते । एव शास्त्रसम्मतत्वेऽपि निर्घना यजमाना महर्षत्वादाज्यस्य भाग-
 द्वयं तत्राप्यशक्तावेकभागमेवाऽऽदशीरत्न तु भागपयमेव । देशकालरात्रानुरूपं

ॐ इन्द्रायेन्दु ॐ सरस्वती नरा रा ॐ सेन नग्नहुम् ॥ अयोतामश्विनो
 मधुमेपर्जं भिपजासु ते स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ शचीपतये स्वाहा ॥
 ॐ वज्रवाधाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ॐ इन्द्राय
 शचीपतये वज्रवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अग्नि दूतं पुरो ॥
 ॐ अग्नये स्वाहा ॥ ॐ मेपाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ ज्वालवाणाय स्वाहा ॥
 ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ अग्नये मेपाधिपतये ज्वालवाणाय इदमग्नये
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ यमेन दत्तं त्रित एतगायुनगिन्द्राय प्रथमो अद्वय-
 तिष्ठत् ॥ गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूराइश्व वसवो निरतप्ट स्वाहा ॥
 ॐ यमाथ स्वाहा ॥ ॐ प्रेताधिपतये स्वाहा ॥ ॐ दंडवाणाय स्वाहा ॥
 ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ॐ यमाय प्रेताधिपतये दंडवाणाय
 इदमग्नये स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ असुन्वन्तमथजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विदि
 तस्करस्य ॥ अन्यममदिच्छसात इत्यातमोदे विनिश्चति तुभ्यमस्तु स्वाहा ॥
 ॐ वैश्रवणाय स्वाहा ॥ ॐ यज्ञाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ रङ्गवाणाय
 स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ वैश्रवणाय यज्ञाधिपतये स्वङ्ग-
 वाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य
 ऋतसदनमासीद् स्वाहा ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ॐ मकराधिपतये
 स्वाहा ॥ ॐ पाशवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ
 वरुणाय मकराधिपतये पाशवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ वातो
 वामनो वा ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॐ अन्तरिक्षाधितये स्वाहा ॥ ॐ
 ध्वजवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ॐ वायवे अन्तरिक्ष-

कर्मविशेषे नियमाः—

पादेन पादमाकम्प्य जप नैव तु कारयेत् ।

शिरः प्राकृत्य वक्ष्येण ध्यान नैव प्रशस्यते ॥ १ ॥

न शायिपादकपलो न नेत्रचपलो द्विजः ।

न च प्राकृत्यपलरवेव जपन्निष्ठदिमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

धर्मस्यवस्थितेः । समृद्धास्तु शास्त्रनिर्देशानुरूपमेव समाचुरेयुः । तिलानाम्
 सर्वाधिर्यं सर्वेषामेव समृद्धानामावश्यकमेव, अन्यथा प्रत्यवायभव-

यास्तत्त्वसहितायाम्—

मन्त्रो हीनः स्वगतो वर्णतो वा

मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह ।

न वा एतन्ना यन्मानं दिनसि

यमन्द्रशत्रुः स्वस्तोऽपराधात् ॥

धिपतये अत्रवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं सोमो धेनु ॐ सोमो
 अर्वन्तमाशु ॐ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति सादन्यं विदत्थ्य ॐ समेयं
 पितृभ्रवणं यो ददारादस्मै स्वाहा ॥ ओं भोमाय स्वाहा ॥ ओं नक्षत्रा-
 धिपतये स्वाहा । ओं अमृतवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वरायेति पूर्ववत् ।
 ओं सोमाय नक्षत्राधिपतये अमृतवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं
 विष्णोरशट् ॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥ ओं लक्ष्मीपतये स्वाहा ॥ ओं
 चक्रवाणाय स्वाहा ॥ ॐ ईश्वराय स्वाहेति पूर्ववत् ॥ ओं विष्णवे
 लक्ष्मीपतये चक्रवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ ईशावास्यमिदं ॐ
 सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्याज्जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः
 कस्यस्विद्धनं स्वाहा ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥ ओं उमापतये
 स्वाहा । ओं त्रिशूलवाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं
 ईशानाय, उमापतये त्रिशूलवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ १० ॥ ओं
 ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ ओं ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ओं ब्रह्माधिपतये
 स्वाहा ॥ ओं कुशावाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वरायेति पूर्ववत् ॥ ओं ब्रह्मणे
 ब्रह्माधिपतये कुशा [पाणये] वाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं
 पातालाधिपतये स्वाहा ॥ ओं विषवाणाय स्वाहा ॥ ओं ईश्वराय स्वाहेति
 पूर्ववत् ओं सर्गाय पातालाधिपतये विषवाणाय इदमग्नये स्वाहा ॥ १२ ॥
 अभिषेकः ॥ इत्यष्टलोकपालहोमः ॥

अथागस्त्यादिर्क्षेत्रपालहोमः । हरिः ओं अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः
 प्राजापत्यबल मोक्ष्यमाणः ॥ उभावर्णाष्टपिरुष पुषोष सत्या देवेष्वाशिपो
 जगाम स्वाहा ॥ १ ॥ ओं ध्रुवन्ते राजा वरुणो ध्रुवन्तेवो बृहस्पतिः ॥
 ध्रुवन्त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवं स्वाहा ॥ २ ॥ ओं स्योना
 पृथिवी ॥ ३ ॥ ओं वास्तोष्पते प्रति जानाद्यस्मान्स्ववेशो अनमीवो भवः
 न ॥ यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे

यात् ॥ (द्रव्यभेदेनाऽऽहुतिप्रमाणम्)—कर्ममात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः
 स्मृतम् । गुडं पत्रामानं स्याच्छर्कराणि तथा मता ॥ ब्रीहयो मुष्टिमात्राः

सकारे सूतकं नाम हकारे नृत्यसूतकम् ।

अक्षरद्वयसंयुक्ता आहुतिः कस्य दीयते ॥ १ ॥

सकारे शङ्करश्चैव हकारे हरिश्च्यते ।

अक्षरद्वयसंयुक्ता आहुतिस्तस्य दीयते ॥ १ ॥

कुपडस्य पूर्वदिग्भागे काली जिह्वा प्रकीर्तिता ।

स्युर्मुदगमापा यवा अणि । तपडुलः स्युस्तदर्भाशरचक्रमाठार्धमेक च ॥
 आख्ययत्रादितभ्याधि लुवेण, समिधो, मूलवो द्रव्यगुलं विहाय मध्यमाना-

स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्द्धया त्वम् ॥ तस्मै
 देवा अविन्नरत्रयञ्च ब्रह्मणस्त्विति स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं क्षेत्रस्य पतिना
 वयं हि तेनेव जयामसि ॥ ग मरुव पोषयित्वा सन्नोमृतातीक्ष्णो स्वाहा
 ॥ ६ ॥ पूर्वदभिषेक इति क्षेत्रपालहोम ॥

अथ विष्णुहोम हरि ओं त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा
 अदाभ्य ॥ अतो धनाणि धारयन्स्वाहा ॥ १ ॥ ओं तद्विमासो विषन्धवो
 जागृताधस समिन्धते विष्णायत्परम पद स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अतो
 देवा अरन्तु नो यतो विष्णुविचक्रमे ॥ पृथिव्या सत्त्व धामभि स्वाहा
 ॥ ३ ॥ अभिषेक ॥

अथ सपहाम । हरि ओं नमोस्तु सर्वेभ्यो ॥ १ ॥ ओं या इषवा
 यातुधानाना ये वा वनस्पतोध्रन्तु ॥ ये वावटेपु शोस्ते तेभ्य सर्वेभ्यो
 नम स्वाहा ॥ २ ॥ आ ये वामी राचने दिवा ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ॥
 येहामप्सु सदहृत तेभ्य सर्वेभ्यो नम स्वाहा ॥ ३ ॥ अभि ० ॥

अथ कूष्माण्डहोम । हरि ओं यदेवा देवहेडन
 देवासरश्चक्रमा वयम् ॥ अग्निर्मा तस्मान्नेनसो विश्वान्मुञ्चत्वधइस
 स्वाहा ॥ १ ॥ ओं यद्दि दिवा यदि नक्तमेना ध सि चक्रमा वयम् ॥
 यायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चन्त्वधइम स्वाहा ॥ २ ॥ यदि
 नाप्रद्यद्दि भ्वन् एनाधसि चक्रमा वयम् ॥ सूर्यो मा तस्मिन्नेनसो
 विश्वान्मुञ्चत्व धइस स्वाहा ॥ ३ ॥ अभिषेक ॥

अथ भियो मधायारव्य होम । हरि ओं सदस्सस्वितिमद्भूतस्त्रिय
 भिन्द्रस्य काम्यहम् ॥ सनिभेधामयाभिषधस्वाहा ॥ १ ॥ ॐ यान्
 मेधा देवगणा पितरश्चोपासते ॥ तथा मामद्य मेधयान्मे मेधाविन

आग्नेये तु करालाख्या दक्षिण तु मनाजवा ॥

मुक्तोदिता च नैऋत्ये धूमवर्षा तु वाक्य ।

स्फुलिनिनी तु वायव्ये साम्ये विरवश्चित्तरथा ॥ १ ॥

आपुतवदराहोममथा —

गायत्र्याग्ने शतं कृत्वाऽथो शत इवम्भवेन च ।

मिषोपुष्टेऽङ्गुयात् । चरु पाषणम हाणिनेव जुह्यात् । प्राधार्थं वरुमित्त्वये ।

आभ्यं सत्रेणैव तदभावे यज्ञिपराऽग्नयेन जुह्यात् । तिस्रभिर्दूर्वाभिरकाहुवि,

वती महादिमन्त्यैश्च जुह्यादष्टापेयात् ॥

द्वप्रस्वरतिमप्रथ शतपयमथोभवते ।

शतपयस्य कूष्माण्डैरेकादशशतत च ॥

कुरु स्वाहा ॥ २ ॥ ओं मेधान्मे चरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजा.
पतिः मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्वाता ददातु मे स्वाहा ॥ ३ ॥
ओं इदम्मे ब्रह्म च तत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ॥ मयि देवा दधतु
श्रियमुत्तमान्तस्यै. ते स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं श्रोश्च ते लक्ष्मीश्च पत्या-
वहोरात्रे पार्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इण्णन्निपाण मुम्भ
इपाणु सर्वलोकम्भ इपाणु स्वाहा ॥ ५ ॥ अभि०

अथ रक्षोघ्न । हरिः ओं [ओं त्र्यम्बकं यजा० ॥ ओं काण्डात्
काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ॥ एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण
शतेन च स्वाहा ॥ ओं या शतेन प्रतनोपि सहस्रेण विरोहसे
तस्यास्ते देवीपुत्रे विधेम हविषा वयं स्वाहा । ओं यास्ते अग्ने
सूर्ये. रुदो विदमा तन्वन्ति रश्मिभिः ॥ तामिर्नो अथ सर्वाभी
रुचे जनाय नस्कृधि स्वाहा] कृष्णुष्व पाजः प्रसित्तिन्न पृथ्वां
पाहि राजे या मवोर इमेन तृष्वमनु मसित्तिन्द्रणानोस्तासि विद्वधरस-
स्तपिष्टैः स्वाहा ॥ १ ॥ ओं तव ध्रमास आमुया पतन्त्यनुस्पृश
धृतता शोशुचानः ॥ तपृथ्वग्ने जुह्वा पतद्धा न सन्दिता विस्तृजविष्-
वशुल्ककाः स्वाहा ॥ २ ॥ ओं प्रतिस्पशो विस्तृज तूर्णितमो भवा
पायुर्विशो अस्या अद्भवः ॥ यो नो दूरे अवराधसो यो अन्त्यग्ने
मा धिष्टे व्यथिराद्वर्षीस्वाहा ॥ ३ ॥ ओ उदग्ने तिष्ठप्रत्यावतनुष्वन्य-
मित्रो ओपता तिग्महेते ॥ यो नो आरति ध समिन्ना न चक्रे नीचार्तं
वक्त्रतसन्न शुष्क स्वाहा ॥ ४ ॥ ओ ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्धयाद्धमदावि-
ष्कृष्णुष्व देव्यान्वग्ने ॥ अवस्थिरा तनुहि या तु जूनां जामि-
मजामि थमृणीहि शत्रुन् अग्नेष्टवा तेजसा सादयामि स्वाहा ॥ ४ ॥ अभि०
अथ दिशहोमः । हरिः ॐ प्राच्यै दिने स्वाहाऽवांच्यै दिशो स्वाहा

मीदृष्टेति मन्त्रेण रक्षोघ्नेः शतपञ्चम् ।

रक्षोघ्नाविश्ववर्षणजुहुयात्क नक शतम् ।

केषु विभक्तेषु । (पूर्वे द्रव्यपरित्यागः)-आदौ द्रव्यपरित्यागः पश्चादहोमो
विश्ववर्षणः । प्रत्याहृतिद्रव्यत्यागस्त कुम्भशरत्वादादौ द्रव्यत्यागः । (पश्चि-
मस्य जातवैशति काण्डात्काण्डात्पर्यव च ।

पश्चतं भंश्च तेनेष निशय शकदेवतैः ॥

एतन्नु दशगाहस दुत्या स्नान समाचरेत् ॥

इत्यमुत्तमस्यामन्याः ॥

दृशाः)-शानोराशान्मयीपस्तपयेद्ब्रह्मादराः । अथवाप, दुम्बरो वित्त्वश्चन्दनः
मालस्यथा । शालरव देवशरव अदिर्ययेति पाठिकाः । (मन्त्रिः)-(१)-

दक्षिणायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे
स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहा ॥ १ ॥
पूर्ववदभिषेकः ॥

अथ गायत्रीहोमः । ॐ तत्सवितुर्व रेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो
यो नः प्रचोदयात्स्वाहा ॥ इति जपित्वाष्टोत्तरशतवारं जुहुयात् ॥ अभि-
षेकः ॥ तथैव-ओं जातवेदसे० इत्यष्टाविंशत्यधिकशतवारं पठित्वा होमं
कुर्यात् । अभिषेकः ॥ इति यथादिहोमद्रव्याहुतिं दत्त्वा । सूर्यमन्त्रैः
पूजिताग्नी घृतवारां कुर्यात् ॥ उत्थाय तत्र मन्त्रा-आदित्यं गर्भं पयसा-
मंग्घिसहस्रस्य प्रतिमा विश्वरूपम् ॥ परिवृग्धि हर सामाभिर्मं धं स्थाः
शतायुषं कृष्णुहि चीयमानः स्वाहा ॥ ओं विश्वतश्चक्षु रत विश्वतो मुक्तः
विश्वतो बाहुभूत विश्वत विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धर्मति सन्पतत्रैर्दवा-
वाभूमी जनयन्देव एकः स्वाहा ॥

अथ सन्वत्सरोहोमः । श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ओं मीढुष्टम
शिब्रतम शिवो नः मुमना भव ॥ परमे वृक्ष आयुधग्निवाय कृत्ति वसान
आचर पिताकं विभ्रदागहि स्वाहा । १ ॥ ओं अश्वावती धं सोमावठीमू
जंयन्तीमुदोजसम् ॥ आवत्सि सर्वा ओपधीरत्मा अरिष्टाततये स्वाहा ॥ २ ॥
ओं सन्वत्सरोसि परिवत्सरोसीदावत्सरोसीद्वत्सरोसि वत्सरोसि ॥ उपसस्ते
कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासाप्ते कल्पन्ताम्मासास्ते कल्पन्तामृत
वस्ते कल्पन्ता धं सम्कृत्सरास्तेः कल्पन्ताम् ॥ प्रेत्या एत्यैसञ्चार्चं च प्रच-
सास्य सुपर्णाचिदमि तथा देवतयाङ्घ्रिस्वद्भुवः सीद स्वाहा ॥ ३ ॥
अभिषेकः ॥

अथ ऋतुहोमः । हरिः ओं वसंतेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुवाः ॥

जनसंख्याहोममन्त्राः-

गायत्र्या दशवहस्रं मानस्तोत्रेन पद्गुणम् ।

त्रिशदमहादिमन्त्रेश्च चत्वारि विष्णुदेवतेः ॥ १ ॥

नागुष्ठादिभिः कायां समित्पूलतया क्वचित् । न विपुक्ता च्चत्वा चैव न सक्रीडा
न पाटिता । प्रादेशमात्रा संयोग्या समित्चत्वारं नाभिका ॥ (समिदादीनामा-

रूमायडेडुं ह्यास्य० ॥

इत्यादि मन्त्रैः लक्षसंख्याहोममन्त्राः ॥

पूर्वं प्रवृत्तितो ह्यग्निर्दिव्यं मुमुक्षुर्व्रतं ।

वृथो निर्गमनिर्गाला मृशग्निः परिधीर्तितः ॥ १ ॥

नयनम्) गमित्पुष्पदुशादीनि प्रत्ययः रचयामरेत् । रात्रानोतेः क्रमशीतेः क्रमं
कुरन् नवत्यपः ॥ समिदं एव होम्यन्-योऽभिपि जुहोत्यग्नी च्यग्नारिषि

स्त्रिंशोमृतास्तु ताः ॥ सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः
॥ ६ ॥ अभिषेकः ॥

अथ मासहोमः [ओं नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरा-
त्रेभ्यः स्वाहार्द्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहार्त्त-
वेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा चन्द्राय
स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः
स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा
मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा
फलेभ्यः स्वाहापृथिवीभ्यः स्वाहा ॥ ॐ एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यांस्वहा
शताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा ॥ ॐ हिरण्यगर्भः
समवर्त्ततामे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधार पृथिवी
द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम स्वाहा] अर्द्धमासाः परुंश्चपि
ते मासा आच्छन्तु शम्यन्तः ॥ अहो रात्राणि मरुतो विलिष्टं सूदयन्तु
ते स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा
शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहा ईषाय स्वाहा-
र्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय
स्वाहाऽहसस्पतये स्वाहा ॥

अथ पक्षहोमः । हरिः ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पक्षिणौ याम्या
ऽं रक्षाऽंश्चपहंश्च्यग्ने ॥ ताभ्याम्पतेमसकृतामुलोकं यत्र ऋपयो जग्मुः
प्रथमजाः पुराणाः स्वाहा १ अभिषेकः ॥

अथ तिथिहोमः । हरिः ॐ अग्नैः पक्षतिर्वायोर्निपक्षतिरिन्द्रस्य
तृतीया सोमस्य चतुर्थ्यदित्ये पञ्चमीन्द्रायै षष्ठी मरुताऽंसप्तमी
वृद्धस्तेरष्टम्यर्ष्यम्ये नवमी धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी

सूक्तविचारः—

व्रतशुक्लवाहेषु भाद्रे होमेऽर्चने जपे ॥

आरब्धे सूक्तं न स्यादनारब्धे तु सूक्तम् ॥ १ ॥

मारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कलो व्रतसत्रयोः ।

नान्दीभ्राद्रे विवाहदौ श्रद्धे पारुपरिक्रिया ॥ २ ॥

च मानवः । मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्चैव जायते ॥ भवेदन्धः सधूमे तु
बुद्ध्याद्यो हुताशने । तस्मात्समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कदाचन ॥ (अग्निव-

पैठीनसिस्मृतेः—

विवाहदुर्गायज्ञेषु यात्राया तीर्थकर्मणि ।

न तत्र सूक्तं उद्धत् कर्म यथादि कारयेत् ॥ ३ ॥

यमस्य त्रयोदशी स्वाहा १ ॐ नन्दायै स्वाहा, ॐ भद्रायै स्वाहा,
 ओं जयायै स्वाहा, ओं. श्रों रिक्तायै स्वाहा, ओं पूर्णायै स्वाहा ॥
 इति ॥ त्रिवारमुच्चार्य जुहुयात् ॥ अभिषेकः ॥

अथ सप्तवारहोमः । हरि ॐ आकृष्णेन रजसा० इति सूर्याय ॥
 ओं इमन्देवा अस० इति चन्द्रमसे एव सर्वेषां मन्त्रैर्जुहुयात् ॥ ओं
 कार्पिरसि समुद्रस्य त्वात्तित्या० ॥ इति च क्वचित् ॥ अभिषेकः ॥

अथ राशिहोमः । हरि ओं अश्वस्तूपरोगो मृगस्ते
 प्रजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयोरराटे पुरस्तात्त्वारस्वतीनेष्पध-
 स्ताद्धन्वोरश्वधोरामौ वाहोः सोना पौष्णः स्यामो नाम्याधसौर्य-
 यामो श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्राष्ट्री लोमशसक्स्थौ सक्स्थोर्वा-
 यव्यः श्वेतपुच्छ इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः स्वाहा ॥ १ ॥
 ओं प्रेतु वाजो कनिकदन्नानदद्रासभः पत्वा भरन्नग्निभुरीय्यमापाद्यायुषः
 पुरा ॥ वृषानि वृषण्मभरन्नपाङ्गर्भं ध्र समुद्रियं अग्न आयाहि वीतये स्वाहा
 ॥ २ ॥ ओं अयं वेनस्त्वोदयत्वरिनगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसो विमाने ॥
 इममपाध सन्नमे सूर्यस्य शिशुन्न विषा मविभी रिहन्ति उपयाम गृहीतो
 सिमर्काय त्वा स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं कनिकदब्जनुषं प्रत्रवाण इयति
 वाचमरिते वना वयम् ॥ सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मत्वा का दभिमा-
 विरव्या विदित्वादा ॥ ४ ॥ ओं याव्यात्र विपू चिकोमो वृकं च
 रक्षति ॥ स्येनं पत्रिण ध्र सि ध्र ह ध्र सम पात्व ध्र हसः स्वाहा । ५ ॥
 ओं कोशत्करमा अदात्कामोदात्कामायादान् ॥ कामो दाता कामः प्रति-
 गृहीता कामैवसै स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं वीभत्सायै पौलकसं वर्णाय हिरण्य-
 कारं तुलायै वाणिजं परचाहीपाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिम्भलं
 भूस्ये जागरणमभूत्यै स्वपनमात्यैजनवादिन वृद्ध्या अप्रगल्भं सध
 शराय प्रच्छदं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं नमोस्तु सर्पे ॥ ८ ॥ ओं विज्यं

मनम्) — न चक्रपातुना कुर्वात्याणिराजंस्तु वादिभिः । न कुर्यादग्निघनन कदा-
 चिद् व्यजनादिना । गुरोर्नेव धमेदग्नि घमन्वा वेणुजातया ॥ मुखादेव भ्य-
 अथ संख्याहोममन्याः—

ओं नमो वः किरिकेभ्यो देवाना हृदयेभ्यो नमो विचित्रत्वेभ्यो नमो
 विवेकभ्यो नमो अनिर्द्वेष्यः स्वाहा ॥ आ र्चोहा विश्वचर्षणिरभिषोनि-
 मया हते ॥ दोये एवस्थमासदस्वाहा ॥ ओं आनी निपुद्भिः शक्तिनीभिर-
 ष्वर । वृषिणीभिदम्याहि यशुम् ॥ वापो अरिगन्धने मादयस्य मूर्धं पत
 स्वस्तिनिः सदा ना स्वाहा ॥ इति ॥

त्रापठ — इति चतुष्पादस्थाने पाठान्तरम् । (२११ प्रोक्तमेव चतुष्पादम्)— १६२

धनुः कपर्दिनो विशाल्यो वाणवाँ २ उत ॥ अनेशन्नस्यया इषव आमु-
रस्यनिर्षं गथिः स्वाहा ॥ ६ ॥ त्वामवस्युराराचस स्वाहा ॥ १० ॥ ओं
वायव्यौ वायव्यान्याप्नोति शतेन द्रोणकलशाम् ॥ कुम्भीभ्यामभृणौ सुते
स्थालोभिः स्वालीराप्रोति स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि-
यन्तिस द्योतसः सरस्वती तु पञ्चघासौ देशे भवत्सरिस्वाहा ॥ १२ ॥
अभिषेकः ॥

अथ नक्षत्रहोमः । हरिः ओं अश्विन पूतेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती
वीर्यम् ॥ वाचेन्द्रो वलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियं स्वाहा ॥ १ ॥ ओं यगाय त्वा
मखा० ॥ २ ॥ ओं अग्नि मूर्द्धादि० ॥ ३ ॥ ओं प्रजापतेनत्वाद्दत्ता ॥ ४ ॥
ओं सोमो धेनुधंसो० ॥ ५ ॥ ओं नमस्ते रुद्र मन्वयव उतोत इषवे
नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं अदितिर्द्यौं
रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ॥ विश्वेदेवा
अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वं स्वाहा ॥ ७ ॥
ओं वाचस्पतये पवस्व वृष्णो अ धं शुभ्या गमस्तिपूतः ॥ देवा देवेभ्यः
पवस्व येषां भागोसि स्वाहा ॥ ८ ॥ ओं नमोस्तु सर्वे ॥ ९ ॥ ओं पितृभ्यः
स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधा-
यिभ्यः स्वधा नमः ॥ अन्नन्वितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः
शुन्धध्वं स्वाहा ॥ १० ॥ ओं भग एव भगवाँ २ अस्तु देवास्तेन वयं
भगवन्त स्याम ॥ तन्त्वा भग सर्व इज्जोहवीति सानो भग पुर एता भवेद्
स्वाहा ॥ ११ ॥ ओं अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय । वाचं विष्णुं धं
सरस्यती धं सवितारञ्च वाजिनं धं स्वाहा ॥ १२ ॥ ओं सवित्रा प्रसवित्रा
सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुमिरिन्द्रेणांस्ते बृहस्पतिना ब्रह्मया

सप्तजिह्वामुदा—

मध्यमे संहते धार्ये मिलिताङ्गुष्ठयोरधः ।

— रोषा अङ्गुष्ठयो मुक्ता मुद्रेयं सप्तजिह्विका ॥ १ ॥

वा स्वच्छोक्तं यस्य कर्म प्रकीर्तितम् । तस्य तावति शास्त्राये कृते सर्वं कृत
भवेत् ॥ (द्रव्यप्रतिनिषयः)—ययोक्तवस्त्वर्षपचौ मास्य तदनुकारि यत् ।

स्कान्दे—

अन्नहीनो दहेद्राष्ट्रं मन्त्रहीनश्च श्रुत्विजः ।

यजमानमदाक्षिप्यो नास्ति यशसमो रिपुः ।

श्रुत्साममन्त्रा उच्चैर्याजुषा मन्त्रा उपाराधः ॥

यावानामिव गोधूमा व्रीहियामिव शालवः ॥ दध्यलामे पयः कार्ये मध्यलामे
तथा गुदः । धृतप्रतिनिधिं कुर्यात्तयो वा दधि देा रुर ॥ आग्रहोनेषु सर्वेषु

वरुणेनौजसाम्निना तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना देशन्या देवतया प्रसूतः
 प्रसर्पामि स्वाहा ॥ १३ ॥ ओं त्वष्टावीरन्देवकानं जजान त्वष्टुरवा जायत
 आशुरश्वः ॥ त्वष्टदं विश्वं भुवनं जजान वहोः अर्त्तारमिह यक्षि होतः
 स्वाहा ॥ १४ ॥ ओं वातो वामनो ६ ॥ १५ ॥ ओं इन्द्राग्नी आगत ६
 सुतङ्गीभिर्नर्भो वरेण्यम् ॥ अस्य पातं धियोपिता स्वाहा ॥ १६ ॥ ओं
 मित्रस्य चर्पणीधृतो वो देवस्य सानसि ॥ युम्नं चित्रः कवस्तमं
 स्वाहा ॥ १७ ॥ ओं त्रातारमिन्द्र ० ॥ १८ ॥ ओं असुन्वन्त ० ॥ १९ ॥ ओं
 अप्सवग्नेसधि ० ॥ २० ॥ ओं विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे
 भवन्त्वग्नेयः समिद्धाः विश्वे नो देवा अवमा गमन्तु विन्मस्तु द्रविण
 वाजो अस्मे स्वाहा ॥ २१ ॥ ओं ब्रह्मजज्ञानं ० ॥ २२ ॥ ओं विष्णो-
 राट ० ॥ २३ ॥ ओं वसुभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा संज्जानाथान्वावापृथिवी
 मित्रावरुणौ त्वा वृष्टथावताम् ॥ न्यन्तु वयोक्त ६ रिहाणा मरुताम्पृथी-
 र्गच्छ वसा पृष्णिभूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह ॥ चक्षुष्या
 अग्नेसि चक्षुर्भो पाहि ॥ २४ ॥ ओं वरुणस्योत्तर्ह ॥ २५ ॥ ओं अयो-
 द्यग्निः समिया जनानां प्रविधेनु मिवायतीपासम् ॥ २६ ॥ ॐ उत
 यवानामिव गोधूमा ब्रीहियाथिव शालयः ॥ दध्यलाभे पयः कार्ये मध्यलाभे
 तथा गुडः । धृतपीतिनिधि कुर्यात्पयो वा दधि वा नृप ॥ आज्यहंमेपु मवेषु
 नोदियुध्न्य शणोत्वज एरुपात्पृथिवी समुद्रः ॥ विश्वेदेवा ऋतावृथा
 हुवानास्तु मन्त्राः कविशास्ता अवन्तु स्वाहा ॥ २७ ॥ ओं पृपन्त्व व्रते
 वयन्न रिष्येम कदाचन ॥ स्तोतारस्त इह रस्मसि स्वाहा ॥ २८ ॥ अभि-
 येरुः ॥ इति नक्षत्रहोमः ॥

अथ विष्णुम्भादियोगहोमः ॥ हरिः ओं ॐ योजे योगे
 वपस्तरं वाजे वाजे हवामहे ॥ सत्याय इन्द्र मूर्त्तये स्वाहा ॥ १ ॥
 ओं विष्णुम्भाय स्वाहा ॥ एवं प्रत्येकं जुहुयात् ॥
 अथ समुद्रहोमः ॥ हरि ओं [ओं सप्त ऋषयः प्रतिहिताः

पठनीयाः स्वशास्त्रीवी अन्वयाऽनर्थभाग्नः ॥

अथ ब्राह्मणभोजनम्—

गर्भाधानादिष्वेव ब्राह्मणाम्भोजयेद्दश ।

आवस्ये पतुर्विशदग्न्याधाने शतात्यरम् ॥

गन्धमेव पूतं भवेत् । तदभावे महिष्पास्तु आज्यमाविक्रमेव च ॥ (इन्द्रदेवत-
 योरनुष्ठी ध्ययस्या)—आज्यं द्रव्यमनादेशं श्रोतविषु विधीयते । मंत्रस्य देवता
 आयायणे च प्रायश्चित्ते निषान्दस्य पञ्च वा ।

गृहसं भात्रयेद्योगे ब्राह्मणानां शतं पशो ।

शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपितो लोकमोयुस्तत्र
जाप्रतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ स्वाहा ॥ ओं पितृभ्य स्वधा० ॥
ओं पावका नः सरस्वती वाजोभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञ वष्टु धिया
वसुः स्वाहा ॥ ओं मातेव पत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निं च स्वै योनाव-
भारुपा ॥ ताभ्य श्वैर्दे वे ऋतुभिः सविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा
विमुञ्चतु स्वाहा समुद्रोसि नभस्था नार्द्रदानुः शम्भूर्मयो भूरभिमा-
वाहि स्वाहा ॥ मारुतोसिमरुताङ्गणः शम्भूर्मयो भूरभिमावाहि स्वाहा ॥
मारुतोऽसि मरुताङ्गणः शम्भूर्मयोभूरभिमावाहि स्वाहा ॥ वस्यूरसि
द्रुवस्वाञ्जम्भूर्मयोभूरभिमावाहि स्वाहा ॥ १ ॥ ओं आपो अस्मान्मातरः
शुन्ध्यन्तु घृतेन सो घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वं हि रिप्रम्ववहन्ति
देवीरुदिदाभ्यः शुचिरातूत एभिर्दीक्षा तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवां च
शम्भाम्परिदधे भद्र वर्णम्पुष्यन्साहा ॥ २ ॥ ओं समुद्रज्येष्ठाः
सलिलस्य मध्यात्पुनानायन्त्यनिविशमानाः इन्द्रो या वत्री
वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा ऊत वा याः स्वयंजाः
समुद्रार्थाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥ ४ ॥
ओं यासां राजा वरुणा याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम् ॥
मधुश्रुतः शुचयो या पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा
॥ ५ ॥ ओं यासु राजा वरुणो यासु सोमं विश्वे देवा या
सूर्यं मदन्ति ॥ वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह माम-
वन्तु स्वाहा ॥ ६ ॥ ओं नदीभ्यः पीडिजष्टमृत्तीकाभ्यो नैपादं
पुरुषं व्याघ्राय दुर्मदं गधर्वासरोभ्यो ब्रात्यं प्रयुग्भ्यः उन्मत्तं च
सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदनयेभ्यः उन्मत्तं च सर्पदेवजनेभ्यो प्रतिपदनयेभ्यः
कितवमीर्यता या अकितवम्पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्यः

चातुर्मास्येषु चत्वारि शतानि च सुरामखे ।

अयुतं वाजपेये च अश्वमेधे चतुर्गुणम् ॥

चापि प्रजापतिरिति स्थितिः ॥ (काम्यहोमादौ वह्निनिवासादिविचारः) -- षेका
तिर्वांस्युवा कृताप्ता रोषे गुणोऽध्रे भुवि बहिवासः । सौख्याय होमे, शशियु-
ऋत्विग्निपमः--

कन्दमूलफलाहारा दधिदीराशिनोऽपि वा ।

दिनादं हवनं कुर्युः संकीर्ताः धिरजोम्बराः ॥ १ ॥

अथ मण्डपान्नायादीनां दक्षिणानिपमः--

मन्त्रेण प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ शुक्लादिनो वर्धमानतिथिरेकाधिक

ऋष्टकोकारं स्वाहा ॥ ७ ॥ ओं इमन्मे गङ्ग यमुने सरस्वति
 शतद्रु स्तोमं सचता पृथुष्यया ॥ अक्स्व्या मरुद् वृधे वितस्तया-
 र्जाकीये शृणुद्यासु मोपया स्वाहा ॥ ८ ॥ (केपुचित्तुस्तकेषु पर्वहोमः-
 ॐ प्र पर्वतस्य वृषभस्म वृष्टान्त वश्चरन्ति स्वसि च इयानाः ॥ ता आव
 वृत्रन्नघरागुदका अद्भिर्बुध्न्यमनुरीयमाणः ॥ विष्णोर्पिक्रमणमसि
 विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि स्वाहा) ओं यथावाणप्रहारणं
 क्वचं० इत्यादि मन्त्रैः पूर्ववदभिषेकः ॥ इति यथादिहोमद्रव्याहुति
 दत्त्वा द्वितीयवारं सूर्यमन्त्रैः पूर्ववत् घृतघारां कुर्यात् ॥ ओं शारदा
 मातरः प्रोक्ता मघश्च सागरास्तथा । ततश्च देवताहोमं क्षेत्राद्याः
 कुलदेवताः ॥ असख्याताः सहस्राणि स्वरांमर्त्ये च भूतले । रुद्रजाप्यंततः
 कृत्वा स्वस्ति कुर्यात्ततः परम् ॥ इति संवत्सरादिसमुद्रहोमः समाप्तः ।
 ततश्चर्वादिद्रव्यैः स्थालीपाकहोमं कुर्यात् । संख्यामन्त्रैः संख्यायोक्त-
 विधानेन जुहुयात् ॥ पश्चादेवं वरिरुद्र, वैष्णवी, आदित्य, विघ्नादि,
 पञ्चभद्र, आदिहोमं कृत्वा ॥

अथोत्तराङ्गहोमः ॥ तत्रादी सकल्पः ॥ ओं अथोहेत्यादि० अमुक-
 होमकर्मणि मया कारितस्य ब्राह्मणद्वारा नवप्रहादिमन्त्राङ्गहोमकर्मण
 उत्तराङ्गसिद्धये होमं करिष्ये ॥ व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिर्ष्वपिर्गायत्र्युष्णि-
 गनुष्णुष्वदांसि अग्निवायुमूयां देवता उत्तराङ्गहोमे विनियोगः ॥ ओं
 भूः स्वाहा इदमग्नये । ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥ ओं स्वः स्वाहा
 इदं सूर्याय ॥ ततः ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ओं अग्नये
 स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ॥ इति स्विष्टकृद्धोमः ॥ संभवं
 कृद्धोमाः ॥ संभवं प्रारभ्य पूर्णपात्रं सद्दक्षिणं ब्रह्मणे दद्यात् ॥ पाद्यादिभिः
 पूर्णपात्रं मंपूज्य ॥ अथोहेत्यादि० मया कारितस्य ब्राह्मणद्वारा, अमुक-
 कर्माङ्गहोमकर्मणः साङ्गफत्रप्रालये साद्गुणयार्थं च इदं तदनुत्तपूर्णपात्रं
 सद्दक्षिणं प्रजापतिदेवतमनुकगोत्राय, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमर्ह

पञ्चमानसारेण षड्विंशति चतुर्मिर्विभक्तभ्या, त्रिशेषे सत्यशेषे च भुवि वासः
 स्वर्णे रोष्यं च ताम्रं तद्वतरमपि यदक्षिणा ॥

स्यात्तदेवाऽऽपारायांशामर्षं भागं तदनुमद्रकृतादारणानां तददंम् । १ ॥

अथ्यामेष्यो यद्दोस्तवं मुहचिवहनभूपथानि प्रदद्याहीनभामप्रच रन्धु-
 ष्णु विहवविमतीस्तरयेदधरेऽम्नेः ॥ २ ॥

शुभा, पश्चिमदिशि कर्मादिभि भूतभे वागोऽशुभ र्त्वर्यः । एवंभात् त्रिक्रमे
 चन्द्रे एवंविन्दुत्तरक्षः । चन्द्रारेणामुशिमिनो नेष्टा होमाद्गुतिः भले । अयं-
 चन्द्रे एवंविन्दुत्तरक्षः । चन्द्रारेणामुशिमिनो नेष्टा होमाद्गुतिः भले । अयं-

सम्प्रदरे ॥ ओं अकन्कमेति दत्त्वा ॥ स्वतीत ब्राह्मणः प्रतिब्रूयात् ॥
 अथ पूर्णाहुतिहोमः ॥ अद्येहेत्यादि अमुककर्मांगहोमवर्माणः साग-
 फलप्राप्तये न्यूनातिरिक्तपरिपूर्त्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये ॥
 पाद्यादिभिर्मृद्वाग्निं संपूज्य ओं सुवश्च मे चमसाञ्च मे वायव्यानि च
 मे द्रोणकलशश्च मे प्रावाणश्च मे ऽधिपवणे च मे पृतभृच्च मे अधव-
 नीयश्च मे वेदिश्च मे वह्निपश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥
 इति रक्तसूत्रेण सुत्रं वेष्टयित्वा संपूज्य ॥ सुवपात्रे सयज्ञद्रव्यं पीतव-
 स्त्राच्छादितं घृताभिधारितं नारिकेलपूगीफलादिफलं संस्थाप्य तत्पात्रं
 वामहस्ते धृत्वा उत्थाय यजमानदक्षिणहस्तेन—पूर्णां दर्शति हिरण्यगर्भ-
 ऋषिभ्रष्टुष्वन्दो महावैश्वानरो देवता मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिहोमे विनि-
 योगः ॥ ओं पूर्णां दिर्वि परापत सुपूर्णां पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणा-
 वहा इपपुजं ॐ शतक्रतो स्वाहा ॥ १ ॥ ओं सप्त ते अग्ने समिधः सप्त-
 जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धाम प्रियाणि सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त
 योगीराष्ट्रं स्वधृते स्वाहा ॥ २ ॥ ओं पुनस्त्वादित्या रुद्राः वसवाः
 समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः ॥ घृतेन त्वन्तन्वन्वद्धयस्व सत्याः
 सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या
 वैश्वानरमृतं ज्ञातमग्निम् ॥ कवि ॐ सम्राजमदिथिञ्जनानामासन्नापात्रं
 जनयन्त देवा स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं जयन्ती मङ्गला ० ॥ ५ ॥ इति घृतदिग्धं
 पीतभृवस्त्राच्छन्नं सुकूपुटितं नारिकेलादिफलं प्रज्वलितेऽग्नौ घृतावच्छि-
 न्नधारया सह जुहुयात् ॥ ततः ओं वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे
 प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे लोकरश्च मे सुवश्च मे
 ध्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वरश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् [वा० पुराणमन्त्रैः]
 इति पठन्तः सुवहस्तेनाज्यसहिता यजमानब्रह्माऽर्चयित्वादिब्राह्मणाः

कात्यायनः—

ब्राह्मणे दक्षिणा देया या यत्र परिकीर्तिता ॥ इति ॥

होमकर्माद्यशक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः ।

इतरेषाम्नु वर्णानां त्रिचतुःपञ्चसंख्यया ॥ १ ॥

वित् बुधः, पंगुः शनिः, आरः भौमः, इज्यः गुरुः, अगुः राहुः, शिली वेतुः ।

कचिदग्निवासादिविचारमाधो निर्ययसिधौ]-नित्ये नैमित्तिके दुर्गाहोमादौ न

होमद्विगुणजापेन संपूर्णं तर्पणं भवेत् ।

अकृते मार्जने प्रोक्तं तर्पणाद् द्विगुणो जपः ॥ २ ॥

प्रत्याम्नाये ब्रह्मभोज्यो न कुत्रापि मया भूतः ।

सर्वथा भोजयेद्विप्रान् इतथाह्वत्तद्वये ॥ ३ ॥

अग्नेर्देवतायाश्च प्रदक्षिणाचतुष्टयं कुर्युः ॥ अथान्यालम्भनम्—ओं
तन्या अग्नेसि तन्यं मे पाहि ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मै देहि ओं वचोदा
अग्नेसि वर्धो मे देहि ॥ ओं सुमित्रिया न आप ओपधयः सन्तु इति
सपवित्राभ्यां हस्ताभ्यां प्रणीताज लेन शिरः सम्मुज्य द्रुमित्रियास्तस्मै सन्तु
योस्मान्द्वेष्टि यं च । ययं द्विष्मः इतिप्रणीतापात्रमैशान्यां न्युञ्जीकुर्यात् ॥
ओं देवा गातुं वित्वा मातुमितमनसस्पत ॥ इमं देवयज्ञं ध्रुवाद्वा
वातेधाः ॥ इति वहिर्होमः ॥ अथ व्यायुकरम्—ॐ मानस्तोके तनये मा न
आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रोरिपः ॥ मा नो वीरानुद्र भामिनो
वधीर्द्विष्मन्तः सदमित्वा हमावहे ॥ ओं इमं ध्रुवस्तनमूर्जस्वन्तः ॥ इति
नारिकेलफलस्य वा यज्ञद्रव्यस्य विभूतिं गृहीत्वा त्र्यायुषमिति नारायण
अपिसृष्टिण्क ह्यन्दः शिवो देवता त्र्यायुषकरणे विनियोगाः ॥ ओं घृतमि-
मिन्ने घृतमस्य योनि घृते श्रितो घृतं वस्य धाम अनुष्वधमावहं मादधस्व
स्वाहा कृतं घृपभ वक्षि हव्यम् ॥ इति घृतालोडनम् ॥ तत्रादौ देवतायास्त्र्या-
युषकरणं कृत्वा पश्चाद्यजमानं दद्यात् ॥ ओं त्र्यायुषं जसद्गनेः इति ललाटे-
ओं कश्यपस्य त्र्यायुषं इति धीवायाम् ओं यद्देवेषुं, इति हृदि ॥ ततः अर्द्धां
मेवां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं बलं श्रियम् ॥ आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे
हव्यवाहन ॥ इति प्रणम्य ॥ यज्ञदशांशं तर्पणम्, तर्पणदशांशं
मार्जनम्, मार्जनदशांशं ब्राह्मणभोजनम्, ततो यज्ञदक्षिणासङ्कल्पम् ॥
अद्यदेत्यादि० अमुकशर्माहं मया ब्राह्मणद्वारा कारितस्य अमुक
(संख्यक) होमनवप्रहरान्तिमखकर्मणः साङ्गफलावाप्ते इमां सुवर्ण-
रजतवाप्रादिदक्षिणां, अन्यादिदेवत्यां, अमुकामुकगोत्रेभ्यो अत्विभ्यो
तथा शान्तिपाठत्राचकेभ्यो गणेशगायत्र्यादिजापकेभ्यो रुद्राभ्यायविष्णु-
सहस्रनामपाठकेभ्यो ऋग्वेदादिचतुर्वेदोक्तचारणकारकेभ्यो तथा ग्रामदेव-
तास्थानदेवतादीनां पूजकेभ्यः साचार्यपुराण-शास्त्रादिवाचकेभ्योऽमुका-

विचारयेत् ॥ अन्यच्च—दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधान
विधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु । मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संदका-
यज्ञैकान्ठानि मङ्गपुराण-

पलाशाश्वत्थन्यमोधप्लक्ष्मैककतोरुवाः ।

शमी चोदुम्बरो बिल्वश्चन्दनं सरलस्तथा ॥

शालश्च देवदारश्च खदिरश्च प्रयोदश ॥ १ ॥

तदभावे ऋतकवन्यं इति ॥

रैमित्तिके होमे नित्यमये न दोषकथनं चकद्र वद्देरपि ॥ जरायुगहोमेऽपि न
दिनं शोष्यं तस्य स्मरणकालत्वाभावादिति । (होमे प्रथमाहुतिर्गणपतेः—

मुक्तामन्यो पूर्वपूजितकर्मकारकत्राहणोभ्यो वस्त्राभरणदिकं च विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ ॐ तत्सन्न मम ॥ तथा भूयसीं दक्षिणां, अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॥ इति ब्रह्माचार्यद्विजादिब्राह्मणान्सुवर्ण-वस्त्रादिदानेन संतोष्य ॥ ततोऽग्निं विसर्जयेत्—ओं गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ भो भो वह्ने महाराक्ते सर्वकर्मप्रसाधक । कुम्भान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय माकिकाम् । इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥ ओं यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां य्योनिं गच्छ स्वाहा एष ते यशो यज्ञपते सह सूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुपस्व स्वाहा ॥ ओं धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । स चेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥ अथाभिषेकं कुर्यात् ॥ ओं अत्त यमं वैवश्वतं मनो जगाम दूरकं ॥ तत् आवर्त्तयामसि अक्षयाय जीवसे ॥ १ ॥ ओं यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं मनो जगाम ॥ ३ ॥ ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेरिचनो बाहुभ्ययां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यत्रिये दधामि बृहस्पतये त्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥ ४ ॥ ओं अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता विश्वेदेवादेवता बृहस्पतिर्देवता इन्द्रो देवता बरुणो देवता ॥ ५ ॥ ओं द्यौः शान्तिः ॥ ६ ॥

अथ यज्ञारम्भमुद्घृतः-

सूर्य के उत्तरायण में तथा तीनहूँ उत्तरा, रोहिणी, विशाखा, कृत्तिका, रेवती, मृगशिर, ज्येष्ठा, पुष्य नक्षत्रों में रिक्तातिथि छोड़ यज्ञारम्भ करना परन्तु आहुति में वह्निवास लगनदान शुद्धि भी देखनी चाहिये ॥ गणधाधिपतये देवा प्रथम तु चराहुतिः । अन्यथा विफलं सर्वं भवतीह न संशयः । इवञ्च प्रथमाहुतिं पञ्चवाक्यी [प्रायश्चित्तसंज्ञक] होमान-आहुति-सूर्य के नक्षत्र से ३ । ३ करके चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त क्रम से सु०, दु०, शु०, श० चं०, मं०, वृ०, ग०, के०, के मुख को आहुति होती है पापमह की शुभ नहीं है ॥

वह्निवास-वर्तमान तिथि में ३ जोड़ के चार जोड़ना ४ से शेष करना ० । ३ रहे तो पृथ्वी में अग्नि का वास है होम में सिद्धि होगी २ । १ शेष रहे तो अग्निवास पृथ्वी में नहीं होमादि कर्म में प्राणधनादि नाश हो ॥
न्तरक्रियमाणहोमस्याऽऽदिभूतेति 'ज्येष्णम् । पञ्च नक्षत्राणां होमस्तु गणध-तेरपि प्रागेव भवतीति वात्पर्यम् ॥ इति परिमाण्यां सामान्यभागः ।

ओं अमृताभिपेकोऽस्तु ३ इत्यभिपेकः ॥ ततः कङ्कणं मोक्षयित्वा गोदानं
विधाय गणपत्यादिदेवता विसृज्य । यजमानं तिलकदूर्वाभिराशिपदद्यात् ॥
ब्रह्माचार्यऋत्विग्ब्राह्मणादीन्भोजयित्वा स्वयमपि भुञ्जीत ॥ शुभम् ॥

अथ सूर्योपस्थान-प्रयोगः ॥

आचम्य प्राणानायम्य ॥ सङ्कल्पः—अथ पूर्वोच्चारित्त वर्तमान-
एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ समाऽत्मनः श्रुतिस्मृति
पुराणोक्त क्रतु प्राप्त्यर्थं श्री सविता सूर्यनारायण प्रीत्यर्थं सूर्योपस्थान
महं करिष्ये । कुश पवित्रधारणम्—ओं पवित्रोऽथो व्वैष्णव्यो सवि-
तुर्व्वं ÷ षसवऽवत्पुनाम्य्याच्छ्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि ÷ १
तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्काम ऽः पुनेतच्छक्रेयम् ॥ १ ॥ इति
मन्त्रेण दक्षिण वाम हस्तयो रनामिकयोः कुश पवित्रं धार्यम् ॥ सूर्यपूजनम्—
ओं उदुत्पञ्जात् वेद सं० ॥ २ ॥ सूर्यमुदीक्षन्—ओं उद्वयन्तमस्र० ॥ ३ ॥
ओं उदुत्पञ्जा० ॥ ४ ॥ ओं चित्रन्देवाना० ॥ ५ ॥ ओं तच्चक्षुर्द०
॥ ६ ॥ ओं तस्सवितु० ॥ ७ ॥ अनुवाकः—ओं विभ्राइ० ॥ १७ ॥
पुरुपसूक्तम्—ओं सहस्र शीर्पा० ॥ १६ ॥

शिव सङ्कल्पः—ओं यजामंती० सुपारथि रश्वान्तम् ॥ ६ ॥
एते मन्त्रारुद्ध्ययेद्रष्टव्याः, मण्डल ब्राह्मणम्,—ओं यदेतन्मण्डलं
तपति तन्मह दुक्यन्ताऽष्टव ऽः स ऋचा लोकोधपदे तद चिर्दीप्यते
तन्महा व्रतं तानि सामानि स साम्नो ल्लोकोथ य ऽएष ऽएत
स्मिन्मण्डले पुरुष ऽः सोमिस्तानियजू ध पि सयजुपां ल्लोक ऽः
॥ १ ॥ सैषा व्रयेव विद्या तपति तद्वैतुदप्य विद्या ध स
आहुस्त्रयी वा ऽएषा विद्या तपतीति वाम्यैव तत्परयन्ती व्वदति ॥ २ ॥
स ऽएष ऽएव मृत्युर्य ऽएष ऽएवास्मि न्मण्डले पुरुषो धे तद
सुतं यदे तदधि दीप्यते तस्मान्मृत्युर्न म्रियतेमृतेर्ह्यन्तस्तस्माद् न दृश्यते
मृतेर्ग्रन्त ऽः ॥ ३ तदेव रलोको भवति—अन्तरं मृत्योरमृत मित्य वर
धे ह्येतन्मृत्यो रमृतमृत्या वमृत माहित मित्ये तस्मिन्दि-पुरुष
ऽएतन्मण्डलप्रतिष्ठितं तपति मृत्युर्व्यवधन्तं वस्तऽइत्यसौ वा ऽआ-

(१) इति मन्त्रेण सूर्ये गन्धाक्षत पुष्पैः सम्युज्य (२) दक्षिण वाम
पादयो द्वौ द्वौ सामदक्षिणगन्धाक्षत श्वेत पुष्प तुलशीदल सहितौधृत्वा
पश्चादेते मन्त्राः पठनीयाः ॥

(इदं एषोपस्थानं धारण्यां तथा भाद्रदिने कुर्वानि ॥)

दित्यो विवस्वा नेपग्रहोरात्रे विवस्वस्ते त मेप वस्ते - मूर्ध्वतोहोनेन
परिवृतोमृत्यो रात्मा विवस्वती त्ये तस्मिन्नि मण्डलऽएतस्य
पुरुष्या त्मैत देप श्लोको भवति ॥ ४ ॥ तयोर्द्धा ऽएतयोरुभयोर
रेतस्य चाचिपऽएतस्य च पुरुषस्यैतन्मण्डलं प्रतिष्ठा तस्मान्महः दुकथ
न्परस्मै न श ऽ सेत्रे देतांप्रतिष्ठां द्विनदा ऽइत्येताः ओं ह स प्रतिष्ठां
द्विन्तेऽवो मह दुकथ परस्मैराः ऽ सति तस्मा दुकथ श सम्भूयिष्टं
परि चक्षतेप्रतिष्ठा द्विन्नोहि भवतीत्यधि देवतम् ॥ ५ ॥

अथाधि यज्ञम्.—यदेतन्मण्डलं तपस्य य ऽ स रुक्मोथपदेत
दर्विर्हीष्यत ऽइदं तत्रपुष्करपर्णं प्रापोहोताऽत्राप ऽ.पुष्कर पर्णः मथय
ऽएष ऽएतिस्मिन्मण्डले पुष्पो यमेव स वोय ऽ हिरण्यमय ऽः
पुरुषस्तदेतदेवैतत्रय ऽ संस्कृत्ये हो पधत्तेतद्यज्ञ स्यै वानु स ऽ स्था
मूर्धं मुत्क्रामति तदे तम प्येतिय ऽएष तपति तस्मादग्नि न्नाद्रियेत
परि हन्तुम मुत्र होष तदा भवतीत्यु ऽएवाधियज्ञम् ॥ ६ ॥ अथा-

ग्नात्मम् यदे तन्मण्डल तपति यश्चैप रुक्मऽइदं तच्छुक्त मक्षत्रथ
यदेतदर्विर्हीष्यनेयश्चैतःपुष्कर पर्णं मिदं तच्छुण मक्षत्रथ य ऽएष
ऽएनास्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चैप हिरण्यमय ऽः पुरुषो यमेव सयोयं
दक्षिणे क्षन्पुरुष ऽः ॥ ७ ॥ स ऽएष ऽएव लोकं पृणता मेव सवर्षोभि
राभि सम्यद्यते तस्यै तन्मिथुन यो य ऽ सध्येत्तन् पुरुषोर्द्धं महै
तदात्मनो यन्मिथुनं यदा वै सह मिथुने नाथ सवर्षोथ कृत्स्न
ऽः कृत्स्न तापैतद्यत्रेद्वै भवतो द्वन्द्व ऽ हि मिथुनम्प्रजननं तस्मा-
द्द्वे द्वे लोकं वृणे ऽउपधीयेते तस्मा दुद्वाभ्यां द्वाभ्यांचित्तिम्प्रण यन्ति
॥ ८ ॥ स ऽएष ऽएवेन्द्र ऽः यो यं दक्षिणेत्तन् पुरुषोथेयमिन्द्राणी
तान्यां देवा ऽएतां विधृतिमकुर्व त्र सिक्कान्तस्मा ज्जायाया अन्ते

नारनीया द्वीर्यं वान्हास्मा जायते वीर्यं वन्त मुह साजनयति
यस्या ऽअन्ते नारनाति ॥ ९ ॥ तदेत देवव्रत ऽ राजन्य वन्धवो
मनुष्याणां मनुवमांगोपायन्ति तस्माद्दुः तेपु वीर्यं वा जायते मृत-
वाका वयसा ऽ सा क्षिप्रयेन जनयति ॥ १० ॥ तो हृदयस्या
काशं प्रत्यवेत्य मिथुनी भवः तस्ती यदा मिथुनस्यान्तःक्ष्णत्तोथ
है तस्युरुष ऽः स्वपिति तद्यथा है वेदस्मानुपस्थ मिथुनस्यान्त-
ङ्गत्वा संविदः ऽइव भयत्येव ऽ है वैतद संविद्
ऽइव भवति देव ऽ ॥ ह्येतन्मिथुनम्परमो ह्यैष ऽअनन्द ऽः
॥ १५ ॥ तस्मा देवं वित्स्यप्यात् ॥ योक्थ्य ऽ है वेऽएव्रतदेवते मिथुनेन-
प्रियेणधाम्नासमर्द्धयति तस्माद्दुह स्वपन्तधुरेवः न धोधयेन्नेदेते देवते
मिथुनी भयन्त्यौ दिनसानीति तस्माद्दु है तस्युस्तु पुष ऽः श्लेष्मण मिव

मुखम्भवत्येते ऽ एव तद्देवतेरेत ऽः सिञ्चतस्तस्मा द्रेतसऽइदं ऽ सर्वं ऽ
सम्भवति वदिदं किञ्च ॥ १२ ॥ स ऽ एष ऽ एव मृत्युं ऽ ॥ य ऽ एष
एतस्मिन्मण्डले पुरुषो वश्चा यन्दक्षिणे चन्द्रपुरुष स्तस्य हैतस्य हृदये
पादावतिहतौतीहै तदाच्छिद्योत्क्रामति स यदोत्क्रामत्यथ हैतपुरुषो
श्रियते तस्मा दुहै तत्प्रेतमाहु राच्छेद्य स्येति ॥ १३ ॥ एष ऽ उऽएव प्राण
ऽः । एव हीमा ऽः सर्वा ऽः प्रजा ऽः प्रणयति तस्यैते प्राणा ऽः स्वा
ऽः स यदा स्वपित्यथैन मेते प्राणा ऽः स्वाऽश्रपियन्ति तस्मात्स्वाप्यथ
ऽः स्वाप्यथोह्वैतं ऽ स्वप्नऽइत्या चक्षतेपरोक्षन्परोक्षकामाहि देवा ऽः
॥ १४ ॥ स ऽ एतै ऽः सुप्तो न कस्य च न ब्वेदन मनसा सङ्कल्पयति
न ब्राह्मन्स्य रसंविजानाति न प्राणेन गन्धं विजानाति न चक्षुषा-
पर्यन्ति न श्रोत्रेण शृणोतेतं ऽ ह्येते तदापीताभवन्ति स ऽ एषऽ एक
सन्प्रजामु बहुधा व्याविष्ट स्तस्मा देका सती लोकम्पृणा सर्व-
मग्निमनु विभवत्यथ यदेक ऽ एव तस्मा देकः ॥ १५ ॥ तदाहु ऽः !
ऽएको पुरुषुर्वहवऽइत्येकश्च बहवश्चेति ह्यत्र याद्यदिहा सायमुत्र तेनैकोय
यदिह प्रजामु बहुधाव्याविष्ट स्तेनो बहवः ऽः ॥ १६ ॥ तदाहु ऽः ।
ऽअन्तिके मृत्युर्दूराऽइत्यन्तिके च दूरे चेतिह त्रयाद्य दहाय मिहाध्या-
त्मन्ते नान्तिकेय यदसा वमुत्र तेनो दूरे ॥ १७ ॥ तदेष श्लोको भवति ।
अन्ये भात्यश्रितो रसानां ऽ संचरे मृतऽइतियदेतन्मण्डलं तपति तदन्न-
मथ य ऽ एष ऽ एतस्मिन्मण्डले पुरुषः ऽः सोत्ता स ऽ एतस्मिन्नन्ने
पशितो भातीत्यभि देवतम् ॥ १८ ॥ अथाध्यात्मम्—इदमेव शरीर
मन्नमुथयोयं दक्षिणे चन्द्र पुरुष ऽः सोत्ता स ऽ एतास्मिन्नन्ने पशितो भाति
॥ १९ ॥ तमेत मग्निरित्यध्वर्षन्नऽउपासते ॥ यजुरित्येष हीदं ऽ सर्वं-
पुनक्ति सामेति छन्दोगाऽएतस्मिन्हीदं ऽ सर्वं ऽ समानमुक्तमिति-
वद्धृचाऽ एष हीदं ऽ सर्वं सुत्याप यति यातुरिति यातुविदऽएतेन
हीदं श्यो सर्वं यतं विवपमिति सर्पा ऽः सर्प ऽइति सर्पं विद
ऽऽर्गिति द्वा र्यरिति मनुष्या मायेत्य सुरा ऽः स्वघेति पितरो
देवजन ऽइति देवजन विदो रूपमितिगन्धर्वा गन्ध ऽइत्यप्सर
सस्त यथा ययो पासते तदेष भवति तद्धैतान् भूत्वा वति, तस्मा
देन मेवं विरमये रेषैते कपासीत सर्वं ऽ हैतद्ववति सर्वं ऽ
हैनमेतद्भूत्वा ऽवति ॥ २० ॥ स ऽ एष शीष्ट कोष्णि षडंगेका
यजुरेका सामेकावद्याह्वा; ऽवात्रर्षोप दधाति रुक्म ऽएव तस्या
ऽआयत नमथ यां यजुषा पुरुष ऽएवतस्या ऽआवतनमथ श्यो साम्ना-
पुष्कर पर्णमथ तस्याऽआयतन मेवंत्रिष्टक ऽः ॥ २१ ॥ ते वाऽएते
ऽऽर्भे ऽएष च रुक्मऽएतं पुष्कर पर्णं मेतमपुरुषमपतिऽऽर्भे

क्वामे यजुरपतिऽएवम्बेकेष्टक ऽः ॥ २२ ॥ स ऽएयऽएवमृत्यु ऽः
 ऽएय एतस्मिन्मण्डले पुरुषो याचायं दक्षिणे च्चन्पुरुष ऽः सऽएय
 ऽएवं विद् ऽः आत्मा भवति स यदेवं विदस्मो लोकात्प्रैत्य
 येत मेवा त्मान मभि सम्भवति सो मृतो भवति मृत्युर्हस्यात्मा
 भवति ॥ २३ ॥ तेन वाऽऽदमये सदासी त्रैव सदासीत्
 ॥ मण्डल ब्रह्मणम् ॥

तदाहुः ऽः—किञ्छन्द ऽः कादेवतामे ऽः शिरऽइति गायत्री
 छन्दोऽग्नि देवताशिर ऽः ॥ १ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता प्रीवा
 ऽइत्युष्णिक् छन्द ऽः सविता देवताप्रीवा ॥ २१ ॥ किञ्छन्द ऽः
 का देवता नूक मिति बृहती छन्दो बृहस्पति देवता नूकम् ॥ ३ ॥
 किञ्छन्द ऽः का देवता पत्ताविति बृहद्रथन्तरे छन्दो यावा पृथिवी
 देवते पत्तौ ॥ ४ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता मध्य मितित्रि-
 ष्टुप् छन्द ऽइन्द्रोदेवता मध्यम् ॥ ५ ॥ किञ्छन्द ऽः का देवता
 श्रोणीऽइति जगती छन्दऽआदित्यो देवता श्रोणी ॥ ६ ॥
 किञ्छन्द ऽः का देवता यत्मादिदं प्राणा त्रेत ऽः
 सिञ्च्यत्ऽइत्यत्तिच्छन्द ऽछन्दऽप्रजापतिर्देवता ॥ ७ ॥ किञ्छन्दऽका
 देवता योय मवाङ् प्राणऽइति यज्ञायज्ञियं छन्दो वैश्वानरो देवता ॥ ८ ॥
 किञ्छन्दऽका देवतोरुदस्य जुष्टम् छन्दो विश्वे देवादेवतोरु ॥ ९ ॥
 किञ्छन्दऽका देवताष्टी वन्ता विति पंक्तिरछन्दी मरुतो देवताष्टीवन्तौ
 ॥ १० ॥ किञ्छन्दऽका देवता प्रतिष्टेऽइति द्विपदा छन्दो विष्णुं देवता
 प्रतिष्टे ॥ ११ ॥ किञ्छन्दऽका देवता प्राणऽइत्तिविरछन्दऽछन्दो व्यायु
 देवता प्राणाऽ ॥ १२ ॥ किञ्छन्दः का देवतो नातिरिक्ता नीति न्यूना-
 क्षरा छन्दऽआपो देवता नातिरिक्तानि सैपात्म विद्यै वैतन्मयो हैवैता
 ऽएतमात्मा नमभि सम्भवत्ति न हात्रान्या लोक्यत्ता याऽआशीरास्ति
 ॥ १३ ॥ धीरोह शातपर्णेयः ॥ ब्राह्मणम् ॥

ॐ अयं वाऽइदनामरूपं कर्म तेया नाम्नां वागित्येतदेया मुक्य
 मत्तोहि सर्वाणि नामान्युतिष्ठन्त्ये तदेपाऽसामैतद्वि सर्वैर्नामभिऽसममेतदेपां
 ब्रह्मै तद्वि सर्वाणि नामानि विभर्ति ॥ १ ॥ अथ रूपणाम्—चक्षुरित्येत
 देवा .मुक्यमतो हि सर्वाणि रूपाण्यु चिन्त्येत देवाऽसामैतद्वि सर्वै
 रूपैऽसममेत देपां ब्रह्मै तद्वि सर्वाणि रूपाणि विभर्ति ॥ २ ॥ अथकर्म-
 णाम्—आत्मेत्येतदेया मुक्य मतो हि सर्वाणि कर्माण्यु त्रिष्ठन्त्येतदेपा
 ऽसामैतद्वि सर्वैऽकर्माभिऽसममेतदेपां ब्रह्मै तद्वि सर्वाणि कर्माणि

रमति तदेन त्रयधपदेक मयमात्माऽएकऽसग्नेतत्रयं तदेतदमृतदा
सन्त्येन धन्न प्राणोऽऽश्रमृत नामरूपेसत्यन्ताभ्या मयं प्राणारद्धनऽ
राज्ञणम् ॥ ३ ॥ दृष्टानालाङ्घ्रिर्वा नूवानो गार्ग्यऽश्वास—भूमिरन्तु रिक्त
चौरिति अष्टा पक्ष राख्यप्राञ्चरधहनाऽएकम् । गायत्र्यै पद्मेन दुहास्था-
ऽरतत्स पापरेषु लोकेषु तापद्ध जयति योस्याऽएतदेव पद् वेद ॥ १ ॥
सूचोयनूधपिसामा नीत्यष्टा वक्षराख्यष्टा चरधहनाऽएक गायत्र्यै
पद्मेत दुहे वास्याऽएतत्सपावतीयं त्री विद्या तावद्ध जयति योस्याएत-
देव पद् वेद ॥ २ ॥ प्राणोऽयानो न्यानऽइत्यष्टा वक्षराख्यष्टाचर
धहना एक गायत्र्यै पद्मेतदुहे वास्याऽएतत्स पावदिदप्राणि तापद्ध
जयति योस्याऽएतदेव पद् वेद ॥ ३ ॥ अथास्याऽएतदेवतुरीयं दर्शतं पद्
परोरजायऽएव तपतिपद्मै चतुर्थतन्तुरीयं दर्शतं पद्मिति दक्षराऽइत्येव
परोरजायऽइति सर्गमुद्येप रजऽउपर्युपरितपत्येवधहेव श्रिया व शसा तपति
यास्याऽएव देवं पद् वेद ॥ ४ ॥ सैषा गायत्र्ये तार्क्षिस्तुरीये दर्शते पदे परो
रमि प्रतिष्ठाता तद्वै तच्छत्येप्रतिष्ठताचक्षुर्वै सत्य चक्षुर्हि वैसत्य तस्माद्यदि
दानोन्दी त्रिवदमाना धेयात्तामह मद्रा ॥ अमह मश्रीपमिभियऽएवं
मयाद् हभद्राश्च मिति तस्माऽएव श्रद्धयाम ॥ ५ ॥ तद्वै तस्सय
उत्ते प्रशिष्टतम् । प्रणोवै चल तत्प्राणे प्रतिष्ठत तस्माद्वाहु-
वलधमन्त्याशो जीयऽएत्ये वन्वेपा गायत्र्यध्यात्म प्रतिष्ठता ॥ ६ ॥
‘भा ह्येवा गवास्तत्रे,—प्राणा वैगर्वास्तत्प्राणास्तत्रे तद्यद्गवास्तत्रे तस्मा
द्गायत्री नाम स तामेवा भूमन्वाहैवैव सासयस्माऽअन्वाह तस्य प्राणा
स्त्रायते ॥ ७ ॥ ‘ताधहेके—सावित्री मनुष्युभमन्वाहुर्वाग नुपुद्देवत द्वाप
मनु अमऽइति न तथा कुर्वा द्गायत्री मेवानु त्र्याद्य दिह वाऽअपि
वक्ष्ये प्रति गृह्णाति न शैव तद्गायत्र्याऽएकरच न पद्मं प्रति । ८ ॥
स षडदमां आन्लोकाण्यूर्णन्प्रतिगृह्णीयात्सोस्याऽएतत् त्रयमम्पद्नाद्रुमा-
दवयात्रातीयंत्रयी विद्या यत्ता यत्प्रतिगृह्णीयात्सोस्याऽएत द्वितीयम्पद्
माद्रु यादव्यास्याऽएतदेवचतुरीयदर्श तंपद्परोरजायऽएवतपतिर्नैवकेन अनाप्य
कुनऽउपना उत्तमि गृह्णीयात् ॥ ९ ॥ तस्या उपरवापनम्—[कथाय]—
गायत्र्यस्येवपरी द्विपरी त्रिपरी चतुष्पय पदसि नदि पलासे । नमस्ते
तुरीयायदर्शताय पत्राय परो रजसे मा वशोमाश्रा पक्षितियद्विध्या दसा
यामे कामो मा ममर्द्धोति या न हेनामैमकामऽममृष्यते यस्याऽएव-
मुपनिष्ठतेहृद्मऽप्रापमिति या ॥ १० ॥ एतद्धै तन्ननको वैश्वेहो पुडिल
मानवतारिय मुग्राय—यन्तु होतद्रायप्रो सिद् मयाऽअय कवधऽधर्मीभूतो
पद्मी । मुग्राधस्याऽ मम्रायण दिश च करेति होराच ॥ ११ ॥ तस्याऽ
अधिरय मुगन् । याद् दशा अपि यक्षी रागना यस्या र्थाति मयंमव

नत्सदहत्येव ॐ हे वै वं त्रिचक्षपि बहोव पापं करोति सर्वं मेव तत्संसाय
 गुद्धः पूतो जरोऽऽमृतः सम्भवति ॥ १२ ॥ ब्राह्मणम् ॥ श्वेतकेतुर्हवाऽ
 श्राकण्येयऽऽप्रदक्षिणी कृत्य नमस्कृत्योपविशेत् ॥ १३ ॥ इति मण्डल
 ब्राह्मणम् ॥ (वायुगृहीत कुशानां कुशपवित्रयोश्च पूर्वस्थां दिशि त्यागः
 कर्तव्यः) ॥ अर्पणम्—अनेन यथा शक्त्या कृतेन सूर्योपस्थान कर्मणा
 श्रीभगवान् सविता सूर्यनारायणः प्रीयतां नमः ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणसस्तु ॥
 इति सूर्योपस्थान प्रयोगः ।

अथ प्रायश्चित्तादि गोदान प्रयोगः ।

कुशतिल जलमादाय अद्येत्यादि श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्ति
 कामो गोदान कर्माहं करिष्ये । गोदान निमित्तक ब्राह्मण वरणार्थं चंदना-
 दिक्रमादाय ब्राह्मणमभ्यर्च्य अद्यकर्तव्यगोदाने एभिर्चंदनाक्षतपूंगोफलतां-
 वूलद्रव्यवस्त्रालकारैरभ्यर्च्य अमुक शर्माणां ब्राह्मणम् एभिर्द्रव्याक्षत पूगी-
 फले, गोदानमहितत्वेनचाहं वृषोष्टोस्मीतिप्रति वचनम्, अनेनदीक्षामाप्नोति
 दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते ।
 ततो गोदान सामर्षां सम्प्रोक्ष्य गां सवत्सां पूज्येत् ॥ गवां मगोपुतिवृन्ति
 सुवनानि चतुर्दश ॥ यस्मात्तस्माच्छ्रवमेस्यादिह लोके परत्र च । गोभ्यः
 आसनम् । पाद्यम् अर्घ्यम् आचमनं स्नानम् ॥ मन्त्रवित् ॥ वस्त्रम्—
 आच्छादनं मया सम्यक् शुद्धं चैव सुनिर्मलम् । सुरभी वस्त्रदानेन
 प्रीयतां परमेश्वरी । इति वस्त्रेण गामाच्छाद्य ॥ गावो मे चाप्रतः
 सन्तु गावो मे सन्तु प्रुष्टतः ॥ गावो मे हृदये सन्तु गवांमध्ये
 वसाम्यहम् ॥ इति मन्त्रेण अक्षत पूजा प्रार्थना पंच गावःसमुत्पन्ना
 मध्य माने महो दधौ ॥ तासां मध्ये तथा श्रेष्ठा तस्यैधेन्वै नमो नमः ॥ इति
 मन्त्रेण गन्धाः दिभिः पूजयेत् ॥ पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता ॥
 सुरभि हरमे पापं यन्मया दुष्टं कृतम् पुष्प माला ॥ नमो गोभ्यः
 श्रीमतीभ्यः सौरभे योभ्य एव च ॥ नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो-
 नमः ॥ सुरभि त्वं जगन्माता नित्यं विष्णु पदे स्थिता ॥ मातृगृहाण मे
 दत्तं गोमातृस्वातुमर्हसि ॥ इति मन्त्रेण गोभ्यो नैवेद्यम् ॥ धूपदीपादिकं
 दत्तं फलानि विविधा निच ॥ गृणाणाध्वं मया दत्तं देहि मे वाञ्छितं
 फलम् ॥ रूपं देहि जयं देहि भाग्यभवति देहि मे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि
 सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ इति मन्त्रेण अर्घ्यं दत्त्वा । ततो ब्रह्म पूजा ॥ पुष्टे ब्राह्मणे
 ब्रह्मणे नमः । गले विष्णवे नमः । मुखे रुद्राय नमः । रोमकूपेषु सर्वे-
 भ्यो महर्षिभ्यो नमो नमः पुच्छे सर्ष्वं नागोभ्यो नमः । स्तनेषु चतुस्समुद्रेभ्यो

नमः । सुराग्नेऽष्टकुल पर्वतेभ्यो नमः । नेत्रयोः शशिमा कराभ्यां नमः ।
 रागयोर्मध्येसर्वतीर्थेभ्यो नमः मूत्रे गगादि सर्व नदीभ्यो नमः । गोमये
 लक्ष्मै नमः । कर्णयोरश्विनी कुमारभ्यां नमः । जिह्वायां सरस्वत्यै
 नमः नासा पुटयोः सुमुखायनमः उदरे पृथिव्यै नमः । दक्षिण पार्श्वे
 कुबेराय नमः । वामपार्श्वे वहण्याय नमः । ह्रू—कारे सर्व वेदेभ्योनमः ।
 इति अंगपूजा ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च ॥ तानि
 तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ अथप्रार्थना ॥ पृष्टे ब्रह्मा गले विष्णुर्गुरो
 रुद्रः प्रतिष्ठितः ॥ मध्ये देवगणाः सर्वे रोमरूपे महर्षयः । नागाः पुच्छे
 सुराग्नेषु वेचाष्टी कुज पर्वताः ॥ मूत्रे गगादयो तद्यो नेत्रयो शशि भास्करी
 पते यस्यास्तनो देवाः साधेनुर्वदास्तु मे ॥ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च
 देवेभ्यश्चस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पाप व्यपोहतु ॥ विष्णो
 र्दक्षिणि या लक्ष्मीः स्वाहा याच विभावसोः ॥ चन्द्राकं शक्र शक्तिर्या
 सा धेनुर्वर दास्तु मे ॥ चतुर्मुखस्यया लक्ष्मी लक्ष्मीर्या धन
 दस्य च ॥ वा लक्ष्मी लोकरा पालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ या
 स्वधा पितृमुखायां स्वाहा यज्ञ भुज स्वधा ॥ सर्वे पाप हराधेभुः
 सामे शक्ति प्रयच्छतु ॥ मनोमे तर्पयेत् चक्षुः, मत्तर्पयेत् । श्रोत्रं
 मे तर्पयेत्, प्रजान्मे तर्पयेत् गणान्मेतर्पयेत् मिति गोपुच्छ तर्पणं
 इति सर्वाङ्ग तर्पयेत् ॥ ततः सकृत्पुण्यः - पूर्वं सकृत्पुण्य सिद्धि
 रस्तु देश जालो सबहुक्त्य—

मम ब्रह्म जन्मनि जन्मांतरे वा अज्ञान वशतः प्रकृति वियोगा च
 गुणत्रय कारण मनोवाक् काय कल्पितत्रिविध समस्त पाप संघट्टन
 परदारभिमर्षण ब्राह्मण हनन मद्यपान गुरु वृष्य गमनेभ्य नाथ
 द्रुम च्छेदन स्त्री हिसौपथ जीवन सवित्री त्रिधवा दामी वेरयाभि
 गमन रहस्य पातको पपातका गम्या गमनाभक्ष्या भक्षण लेहना
 लेष्या चोप्या चोषणा भोज्या भोजना रस्य स्पर्शानानिन्द्राभोजन
 पक्ति भेद वेदविक्रय ह्य विक्रय गुट्ट संसर्ग देवता हराण कजादि
 हराणाजनित सफल पातका पनोदन पूर्वक मायुरारोग्य धनधान्य
 मं प्राप्त्यर्थम् इमां गां रुद्र दैवत्या वस्त्र द्रव्यान्धनां स्वर्णं शृंगी
 रोप्य त्वरां रत्न पुच्छी वाद्य प्रदां पंटा चामर मंयुतां कारव
 दोहनी श्री विष्णोः श्रीत्वर्थम् अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्म-
 णाय मूर्तिजाय नृभ्यमहं संपदं, नमम इति, ब्राह्मणम्—प्रति—
 गृहामि—स्वग्नि—होदोन् मिति अर्थं पठेत् ॥ अविज्ञे सर्व देवाना
 पूजनीयाणि रोहिणीम् । तीर्थं देव मयागममा दक्ष शान्तीं प्रयच्छ ॥
 दानप्रतिष्ठा—अथ उनेत् श्री परमेश्वर श्रीवये नृभ्य यन्किञ्चिन्

सालंकारादि गोदान प्रतिष्ठार्थं रौप्यं चन्द्र दैवतं हिरण्यम् अग्नि
दैवत अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे,
ओं तत्सत् न मम इति प्रदक्षिणां कृत्वा, गांनत्वा, ब्राह्मणां नत्वा,
भूयसीं दत्त्वा स्तुवीत । गावः पश्याम्यहं नित्यं गावः पर्यन्तु मां
सदा ॥ गावोस्माकं वयं शान्तिः यतो गावस्ततो वयम् ॥
गावःपवित्राः परमं गावो मंगल मुत्तमम् ॥ गावः स्वर्गस्य सौपानं
गावोधन्याः सनातनाः ॥ घृत चीर प्रदा गावो घृत योन्यो
घृतोद्भवाः । घृत नद्यो घृतवसा स्तामे संतु सदागृहे ॥ अनेन
गोदानेन श्री गोविन्दः प्रीयताम् द्यौः शान्तिवितिअभिरोष ॥

सर्व प्रायश्चित्त गोदान सङ्कल्प

अद्येह ऽमुक गोत्रः अमुक प्रवरः अमुक शर्मा मयाजन्म प्रभृति
अद्य यावत् आचरितस्य समस्त पातकस्य अकृत प्रायश्चित्तस्य
आमरणान्तं पापापनोद कामः इमां वस्त्र द्वययुतां स्वर्णं शर्मा
रौप्यं खुरां रत्न पुच्छीं ताम्र पृष्ठां घंटा चामर संयुतां कांश्य दोहनीं
कपिलां धेनुं रुद्र दैवतां (तत्प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य खण्डं
अमुक दैवतं) विष्णोः प्रीत्यर्थंप्रायश्चित्त त्वेन अमुक गोत्राय
अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे । न मम-
इति । गो प्रार्थना । प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्नष्कृता क्वचित्
तस्य पापस्य शुद्धयर्थं धेनुमेवां ददामिते ॥ १ ॥ गोदान प्रतिष्ठा—
अद्यकृतैवत् श्री—परमेश्वर प्रीतये कृतस्य यत्किंचिसालं कारादियुत
प्रायश्चित्त गो (प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्यदान कर्मणः) दान-
प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवताकं अमुक गोत्राय इत्यादि ॥

व्रत प्रतिष्ठा गोदान सं० ॥

मम भ्रुतु स्मृत् पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्य-
र्थम् एकादश्यादि तत्तद्धत कर्मणः प्रतिष्ठार्थम् इमां गां रुद्रदैवतां
(तत्प्रत्याम्नायीभूतं रजतं चन्द्र दैवतां ताम्र खण्डं श्री सूर्य दैवतं)
यथानाम गोत्राययथा नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे ॥
एकादश्यादि तत्तत् व्रतकर्मणः प्रतिष्ठार्थं गोप्रत्याम्नायीभूतानि द्रव्याणि
तत्तत् दैवतानि नानानाम गोत्रेभ्यो नाना नाम शर्मणे ब्राह्म-
णेभ्यः संप्रददे ॥

पाप पनोद धेनुदानम् ॥

ॐ तत्सत् पूर्वं संकल्प सिद्धि रस्तु अद्येह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम मनोवाचताय कर्मभिराजन्मोपार्जित पापापनोदार्थम् इमां कृष्णां पापापनोद धेनुं रुद्रदैवत्यां (तत्प्रत्याम्नायीभूतं रोष्य खण्डं चन्द्रदैवतं) अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे नमम इति । प्रार्थना मन्त्र ।

आजन्मो पार्जितं मनोवाक्काय कर्मभिः । तत्सर्वं नाशमायातु पाप धेनु प्रदानतः ॥ दानप्रतिष्ठा—अद्य कृतैतत् पापापनोद धेनुं । प्रत्याम्नायी भूत अमुक द्रव्यदान कर्मणः] दानप्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय द्वान प्रतिष्ठा त्वेनतुभ्यमहं संप्रददे ।

ऋणापनोद धेनुदानम् ॥

ॐ तत्सत् पूर्वं संकल्प सिद्धिरस्तु अद्येह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम आजन्मो पार्जितैहि कामुष्मिक समस्त ऋण जन्यपातक छेद काम इमां ऋणापनोद धेनुं रुद्र दैवतां [तत्प्रत्याम्नायी भूत अमुक द्रव्य खण्डं अमुक दैवतं] अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददेन मम इति प्रार्थना—एहि कामुष्मिकं यच्च, सप्त जन्मार्जितमृणम् । तत्सर्वं नाशमायातु, गामे कां ददतोमम ॥ दान प्रतिष्ठा—अद्य कृतैतत् ऋणापनोद [प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः] दान प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक दैवतं ॥ इत्यादि ॥

अध-मोक्षधेनु दान —

मोक्षधो वासु देवस्तु । वेद शास्त्रैस्तु गीयते ॥ तत्प्रीतये द्विजाम्नाय, मोक्ष धेनुं ददाम्यहम् ॥ ॐ तत्सत् पूर्वं सङ्कल्प सिद्धिरस्तु अद्येह अमुक गोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुक शर्मणो मम ममस्त पापक्षय पूर्वक मंसार मोक्षा याप्ति कामः पापा मह महा विष्णु प्रीति कामरथ इमां—मोक्षधेनुं रुद्रदैवत्यां [तत्प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य खण्डा अमुक दैवतं] अमुक अमुकगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय तुभ्य महं संप्रदो । न मम इति । मोक्षधेनु प्रार्थना मन्त्रः ।—मोक्षं देहि लीकेरा । मोक्षं देहि जनार्दन ॥ मोक्ष धेनु प्रदानेन मममोक्षोऽनुयोगतः ॥ दान प्रतिष्ठा अ० कृ० मो० धे० । प्रत्याम्नायीभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः] दान प्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक दैवतं इत्यादि ॥

तिल दान विधिः ॥

काँश पात्र कृष्ण तिल सुवर्ण सहित-संकल्प्य ॥—

मम जन्म प्रभूतिं भरणान्तं कृतं नाना विधपाप नाशं नार्थं सहिरण्यं
तिल पात्रं सोम दैवतम् अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय सुपूजि-
ताय तुभ्य महं अंप्रददे । तिलाः पुण्याः पवित्राश्च तिलाः स्वर्गकाराः
स्मृताः ॥ शुक्ला वायुदिवा कृष्णा ऋषिगोत्र समुद्भवाः ॥ यानि कानि
चपापानि ब्रह्म हत्या समानि च ॥ तिल पात्र प्रदानेन तानि नार्थं तु
सर्वदा महर्षि गोत्र संभूताः करयपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मात्ते पां प्रदा-
नेन मम पापं व्यपोहतुं ॥ इति कुश जलान्दत्त्वा ॥ दान प्रतिष्ठा-अद्य
कृतैतत् सहिरण्यं तिलक पात्र दानं प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं दक्षिणां हिरण्यं
अग्निदैवतं [तन्मूल्योप कल्पितं द्रव्यम् अमुक दैवतं] यथा नाम गोत्राय
इत्यादि ।

उत्क्रान्ति धेनु

मम मुखेन प्रणीत्कर्मणार्थं श्री नारायण प्रीतये इमांस्तु फ्रान्ति धेनु
रुद्रदैवत्यां [तत्प्रत्याम्नानी भूतरजतं चन्द्र दैवतं ताम्रखंडं श्री सूर्य
दैवतं] यथा नाम गोत्राय यथा नाम शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसंप्रदे
प्रार्थनामृत्युत्क्रान्तीप्रवृत्तस्य दुःखोत्क्रान्तिनिवृत्तयोः तुभ्यं संप्रदेनाम्नां
गांसमुत्क्रान्ति संज्ञिकाम् ॥ दान प्रतिष्ठा अद्यकृतैतत् उत्क्रान्तिधेनुप्रत्या-
म्नायोभूत अमुक द्रव्य दान कर्मणः दानप्रतिष्ठार्थं अमुक द्रव्यं अमुक
दैवतं इत्यादि ।

दशदान संकल्पः

मम श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गो-
भू-तिल-हिरण्य-आज्य-वास-धान्य-गुड-रौप्य लवण प्रत्याम्नायी भूतानि
इमानि रौप्य खण्डानि नाना नाम गोत्रोभ्यो नाना नाम शर्मभ्यो ब्रह्म-
णेभ्यः संप्रददे दान प्रतिष्ठा-अद्यकृतैतत् दश दान कृतप्रत्याम्नायी भूत
कर्मणः प्रतिष्ठा सांगता सिद्धयर्थं यथोक्त फलप्राप्तये श्री नारायणप्रीतये
इमानि रजत खण्डानि चन्द्र दैवतानि गोभूइत्यादि दशदान प्रत्याम्ना-
यद्रव्य दान प्रतिष्ठात्वेन अहं संप्रददे ॥

कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता चाप्य जानता, मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं
पंचत्व मागतम् ॥ १ ॥ धर्माधर्मं समायुक्तं लोभमोहं समावृत्तम् ॥ दहेयं
सर्वं गोत्राणि दिव्याँल्लोकात्सगच्छतु ।

अथ वृहद्गोदानविधिः

सर्वाधनाशनं पुण्यं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ।
 स्वर्गापवर्गदं चाथ वक्ष्ये गोदानमाह्वरम् ॥ १ ॥
 अथने विपुत्रे याते वैश्वती सूर्यसङ्घ क्रमे ।
 क्षीणेन्दौ पौर्णमास्यां वा द्वादश्यां राष्ट्रपर्वणि ॥ २ ॥
 मन्वादी च युगादौ च जन्मर्त्तं पुत्रजन्मानि ।
 यात्राकाले प्रदोत्पाते दुःस्वप्नेऽद्रुमुत्तदर्शने ॥ ३ ॥
 व्रते यागे प्रतिप्रासु गाधो देया शिवाधिना ।
 तीर्थे देवालये गोष्ठे सङ्गमे यज्ञमण्डपे ॥ ४ ॥
 शालग्रामशिलामे च शिवलिङ्गस्य सन्निधौ ।
 इत्यादिशुभदेशेषु स्वगृहे वा पयस्विनोम् ॥ ५ ॥
 दद्यादास्तिक्युद्धया वां सहेसां द्विजपुङ्गवे ।
 कुलीनाय सुशीलाय वेदवेदाङ्गनादिने ॥ ६ ॥
 सद्वृत्तायाप्रमत्ताय दान्ताय कुशवृत्तये ।
 क्रोधहिंसाविहीनाय सदा सन्तोषजीविने ॥ ७ ॥
 पितृमातृगुरूणां च भक्त्या प्रियवादिने ।
 अनिष्टदेशजाताय सांगाय व्रतचारिणे ॥ ८ ॥
 जपस्वाभ्यासनिष्ठाय तथा सत्यपराय च ।
 परस्वारनिवृत्ताय बहिसे वारताय च ॥ ९ ॥
 सर्वदानानि देयानि विष्णुवत्त विचिन्तयेत् ।
 अपराधाधमक्लेशां स्वयत्नेनार्जितं धनम् ॥
 स्वल्पं वा विपुलं वापि देयमित्यमिधीयते ॥ १० ॥

तत्र दाता सुस्नातः गोदानसामार्थं स्वागतः संपाद्य सुलिप्ताया भूमौ
 सपत्नीकः स्वासने उपविश्य यथोक्तलक्षणं सबस्तां गा प्राङ्मुखी-
 मवस्थाप्य वदङ्मुखं ब्राह्मणं संस्थाप्य गणेशं नत्वा स्वागतः गन्धा-
 दिना अर्घ्यं सह्याप्य कुरातिलजलयवान्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात् ॥
 ३ विष्णुः ३ अथेह अनुकगोत्रोऽमुकगणेशिरमुकराम्ना सपत्नीकोऽहम्
 भूतिस्मृतिपुराणोक्तभावाप्तये सकलमनोरथसिद्धये च कृतेतद् श्रीयज्ञ-
 पुरुषप्रोक्तं गोदानं करिष्ये तत्रप्रतिप्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वर-
 णञ्च अरिष्ये ।

उद्गुप्तं ब्राह्मणं अर्घ्यादिभिः सम्पूज्य वरणसामर्थ्यं करे कृत्वा,
 पविर्गन्वाद्युत्पुष्पमालावक्षोपवीतमन्त्रफलादिभिः गोदानप्रतिप्रहार्थं अनुक-
 गोत्रमनुकवेदाभ्यायितनमुकरामार्थं ब्राह्मणं त्वामहं वृणो । पूतोऽस्मीति

ब्राह्मणो वदेत् ॥ ततः पुष्पमालादिभिर्ब्राह्मणं चालंकृत्य तत्र मंत्राः ॐ
या अहरदिति भरदाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमाला-
प्रहणे विनियोगाः ॥ ॐ या अहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामयेन्द्रियाय
अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च ॥ ॐ यद्यशोप्सरसमिाते भार-
द्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमालावन्धने विनियोगः ।
ॐ यद्यशोप्सरसाभिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु तेन संप्रथिताः सुमनसाः
आवध्नामि यशो मयि । ततो ब्राह्मणं प्रार्थयेत् । यद्चर्नं कृतं विप्र
तव विष्णुस्वरूपिणः ॥ तत्सर्वं मम दीनस्य विष्णवेऽस्तु समर्पणम् ।
ततः स्वपुरतः षड्मुखीं गां सवत्सामवस्थाप्य तदुत्तरतो न्यस्य
पूजयेत् ॥ तत्र सकलसः ॥ ॐ विष्णुः ३ अघेहेत्यादि अमुक
गोत्रोऽमु रुपाशिरमुकशर्माहं गोदानपूर्वाङ्गत्वेन सवत्सायाः गोः यथामि-
लितोप चारैः पूजनं करिष्ये । आवाहनम् । आवाहयाम्यहं देवो
गां त्वां त्रैलोक्यमातरम् ॥ यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते
॥ १ ॥ त्वं देवी त्वं जगन्माना त्वमेवासि वसुन्धरा । गायत्री
त्व च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती ॥ २ ॥ तृणानि भक्ष्यसे
नित्यममृथं स्रवसे प्रभो ॥ भूतप्रेतपिशाचोश्च पितृदैवतमानुषान् ।
सर्वांस्तारयसे देवि नरकात्पापसंकटान् । इत्यावाह्य पूजयेत् ॥ सर्व
देव० इत्यादी

सवरसायै गवे नमः पाद्यं स्नानं समर्पयामि । पुष्पं गृहीत्वा ॥
नमो विश्वमूर्तिभ्यः विश्वमातृभ्य एव च । लोकाधिवासिनोभ्यश्च
रोहिणीभ्यो नमो नमः ॥ गोः अग्रपादाभ्यां नमः ॥ गोः पश्चात्पा-
दाम्यां नमः ॥ देहस्था या च रुद्राणां शङ्करस्य सदा प्रिया ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ गोरास्याय नमः ॥
विष्णोर्वक्षसि या देवी स्वाहा या च विभावसोः । चन्द्रार्कशक-
शक्तिर्या सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ गोः शृङ्गाभ्यां नमः गोः कर्णाभ्यां
नमः । चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनदस्य च लक्ष्मीर्या लोकापालानां
सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ गोः शृणाय नमः । स्वधात्वं पितृमुष्यानां स्वाहा
यज्ञभुजां तथा । सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे ॥ गोः
पुच्छाय नमः ॥ वक्षम् ॥ आच्छादनं मया दत्तं सम्यक् शुद्धं
सुनिर्मल । सुरभिवंशदानेन प्रीयतां परमेश्वरि ॥ गन्धम् ॥ सर्वदेव-
प्रियन्देवि चन्दनं कुङ्कुमान्धतम् ॥ कपूरादिसमायुक्तं गौर्गन्धः
प्रतिगृह्यतामः ॥ अक्षताः ॥ अक्षता अतिशुभ्राश्च कुङ्कुमाक्षाः सुरो-
भनाः । मयानोता प्रियार्थं तान् गृह्याण त्वं गवेष्वरि ॥ पुष्पाणि
पुष्पमाला ॥ धूपम् ॥ आनन्दकृतं सर्वलोके देवानाञ्च सदा

प्रिये । गोस्त्वं पाहि जगन्माता धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम् ॥
साय्यं सद्भित्संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृह्याण देवेशि
सर्वं तस्मिन्मिरापहम् ॥ गोप्रासः ॥ सुरमिस्त्वं जगन्माता, नित्यं
विष्णुपदे स्थिता ॥ गोप्रासं च मया दत्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
भूपणार्थं द्रव्यम् ॥ घण्टां चामरञ्च समर्प्य ॥ (क) एतो गोदेह-
तीर्थान् पूजयेत् ॥ अत्रत्रिवारं प्र०

गन्धाक्षतपुष्पैः— शृङ्गमूले ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । शृंगाग्रे सर्वती-
र्थेभ्यो नमः । शिरोमध्ये महादेवाय नमः । लालटेगौर्य्यै नमः ।
नासरन्ध्रे परमुखाय नमः । नासापुटयोः कम्बलास्वतराम्यां नमः ।
दन्तेषु वायवे नमः । जिह्वायां बरुणाय नमः । ह्रूँकारे सरस्वत्यै
नमः । गण्डयोः मासपक्षाम्यां नमः । ओष्ठयोः सन्ध्याद्रव्याभ्यां
नमः । ग्रीवायां रक्षोभ्यो नमः । कुक्षौ साध्वेभ्यो नमः । जंघासु
धर्माय नमः । सुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः । सुराग्रे कुलपर्वतेभ्यो
नमः । सुरपरिचमामेषु अप्सरोगणेश्वर्यो नमः । षष्टे एकादश रुद्रेभ्यो
नमः । सर्वसन्ध्या वसुभ्यो नमः श्रोत्रयोः पितृगणेश्वर्यो नमः । पुच्छे सोमाय
नमः । पुच्छकेरोषु सूर्यरश्मिभ्यो नमः । गेभूषे गङ्गार्यै नमः गोमये यमुनायै
नमः । क्षीरे सरस्वत्यै नमः । दक्षिणर्मदायै नमः । घृते वह्नये नमः ।
रोमसु कोटिदेवेभ्यो नमः । उदरे पृथिव्यै नमः । स्तनेषु चतुःसागरेभ्यो
नमः । एते यस्याः स्तनी देवा सा धेतुर्वरदा मम । स्वर्गाश्रुंगी रौप्यलुप्यं
ताम्रपृष्ठां मुक्ताफलसमपितलांगूलतां कांस्यगोदोहनिकां विधाय प्रार्थयेत् ॥
नमो गोमयः श्रीमतीम्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च
पवित्राभ्यो नमो नमः । ततः सकुराक्षतत्रयं गोपुच्छं गृहीत्वा ॥ प्राङ्-
मुखी यजमानो देववीर्षेण देवांस्तपयेत् ॥ ॐ वा नन्दिनी सुरीलायाः
कामदारश्चैव धेन्वः । ताः सर्वाः पुच्छतो येन तपितास्तर्पयन्तु माम् ॥
ब्रह्मा विष्णुर्महादेवः कार्तिकेयो गणाधिपः । पुष्पचापो महेश्वरश्च भग-
वानच्युताम्रजः ॥ देवाः समस्ताः सगणाः सत्त्वाहन परिच्छदाः । वस-
वोऽष्टौ द्वादशार्का रुद्रा एकादशैव तु ॥ विश्वेदेवाश्च साध्याश्चाष्टीः
महतो मातरस्तथा । गन्धर्वा गुह्यकारश्चैव सागराः सरितस्तथा ॥ राक्षसा
यक्षपतालाः पूतनाः पर्वता द्रुमाः । तीर्थान्यप्यप्सरसश्चैव पशवः पन्नगाः
रणाः ऋचाणि राशयो योगा मासवर्षतुवासरा । व्यन्ते च युगाः कल्पाः
तथा मन्वन्तराणि च ॥ भुवनानि दिशीकारश्च तथा सर्वेन्द्रियाणि च ।
ॐ कारश्चैव गायत्री छन्दान्यंगानि चैव हि ॥ वेदारश्च स्मृत्यरश्चैव पुरा-

एानि तथैव च । आयुर्वेदो धनुर्वेदो गन्धर्वो मन्त्रगद्दरः ॥ ओषधयो वनसं
भूता ग्राम्याश्चत्र सुपिप्पलाः । सानुगा देवताश्चैव मुनयः सगणास्तथा ॥
ऋषयः ऋषिपत्न्यश्च सिद्धाश्च सगणास्तथा ॥ प्रजा प्रजापतिश्चैव येऽन्ये
विघ्नविनायकाः ॥ विद्याधराश्च दैत्याश्च आचार्या गुरवस्तथा ।
डाकिन्यः क्षत्रपालाश्च भैरवाश्चाष्टसंख्यकाः ॥ स्थावरा जंगमाश्चैव
भूतप्रामश्चतुर्विधः । अक्षयेनामृतेनैव मंगलेन सुवारिणा ॥ गोपुच्छाम्र
च्युतेनेह महत्तैव हितेऽखिलाः । शाश्वती तृप्तिमायान्तु दीर्घयुक्तवरप्रदाः
सूर्यः सोमा कुलः सौम्यो गुरुः शुक्रः शनैश्चरः । प्रहाराश्च तृप्तिमायान्तु
राहुकेतुसमन्विताः ॥ इन्द्रो वह्निर्यमा रक्षः पारशी वायुर्यनाधिपः । ईशोऽ-
नन्तस्तथा ब्रह्मा सर्वे ते तर्पिता मया ॥ सावित्र्या सप्त लोकेशः सलक्ष्मी
करचतुर्भुजः । महेशश्चोभया सार्द्धं तृप्तिमायान्तु शाश्वतीम् ॥ अश्वि-
शिष्टो भृगुगौतमो च मरीचिदक्षौ पुलहः पुलस्त्यः । प्राचेतसः काश्यपवि-
श्वमित्रो भरद्वाजसंज्ञो यदमग्निरेव ॥ अन्ये च सर्वे मुनिपुंगवाश्च
गृह्णन्तु दत्तं जलमद्य तुष्टाः । जीवत्पितृकस्य तर्पणे निषेधोऽतस्तेन
तन्न कार्थ्यम् ॥ ततो यज्ञोपवीतं कण्ठावरोहणं कृत्वा साक्षतकुरीः मनुष्य
तीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् ॥ सनकः सनन्दनश्चैव सनातनस्तथैव च । कपिल-
श्चासुरिश्चैव बोधुः पश्चशिखस्तथा । ते तृप्तिमखिलायान्तु गोपुच्छोदक
तर्पणे ॥ ततोऽपसव्यं विधाय । द्विगुणि तदुशतिलजलैः पितृस्तर्पयेत्
कव्यवाडनलः सोमो यमश्चैवार्य्यमा तथा । अग्निष्वात्ताः सोमपाश्च
तथा वह्निपदरचये ॥ तर्पितास्तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणे ।
यमाय धर्मराजाय मृत्यवे धान्तकाय च ॥ वैवस्वताय कालाय
सर्वभूतक्षयाय च । श्रोत्रुश्चराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने ॥ वृकोद-
राय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥
मातापितामही चैवतथैव प्रपितामही । मातामहः प्रमातामही वृद्धप्रमाता मह-
स्तथा । मातामही प्रमातामही वृद्धप्रमातामही तथा अक्षयान् तृप्तिमायान्तु गो-
पुच्छोदकतर्पणे ॥ ये मृगा वै पितृव्याश्च मातुलाः स्वगुरास्तथा । आचार्य्य-
गुरुमित्राद्या गृह्णन्त्येवं जलं मुदा । ये च सन्बन्धिनोऽपुत्रा षड्विंशतिविव-
जिताः । अपमृत्युमृता येचते गृह्णन्तुगुर्भजलमपृत्रव शोमृतायेच मान् वंशेष
येमृताः । गुरुश्चगुरवभूतां ये चान्ये बांधवा स्मृताः ॥ येने कुले तुष्टपिंढा
क्रियालोपगतारचये । विरूपा भ्रामगभार्षद्गता स्मृताः कुले मन ॥ ते सर्वे
तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणे ॥ इत्थं तर्पणं विधाय सर्व्येनाचम्य ॥
गाम् उदङ्मुभ्यो गाम् उदङ्मुत्सो विप्रः पुच्छदेरो स्वयं ग्थित्वा आन्य
गामं मतिनं कनधेन (मुरसेन) अन्वित्रं (युक्तं) प्रगृह्य गोपुच्छं
वत्साये निधाय दानसंकल्पं कुर्यात् ॥ ॐ विष्णुः ३ अगोदेत्वादि उपायं

अमुकनामसवस्तरे अमुकायने अमुकतो अमुकामने अमुकपत्ने अमुक
 रासरे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशि-
 स्थिते सूर्ये अमुकरास्थिते देवगुरौ रागेषु पक्षेषु यथायथ राशिस्थान
 स्थितेषु सत्सु पूर्वगुणविशेषेण विशिष्टाया शुभपुरुषयतिथौ मनात्मन
 दुनिस्मृति पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिरुद्धयर्थम्, सकलमनईप्सित
 कामनासिद्धयर्थम्, लोके वा सभाया राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय
 लाभान्निप्राप्त्यर्थम्, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपराहनाय,
 तथा मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सवा-यवरय अग्निजकुटुम्बसहितस्य सपशौ
 समस्तभयश्याधिनरापीडा मृत्युपरिहार द्वारा आयुराग्यैश्वर्याभिरुद्धयर्थम्
 तथा मन चन्द्रमशोरखिल कुटुम्बस्य वा चन्द्रमशो सकाशाद्यो केचिद्विद्व
 वतुर्वाप्तम् द्वादशस्थान स्थित क्रूरपहास्तै सूचित सूचयिष्यमाणैव
 यत्सर्वांरिष्ट तद्विनाशद्वारा एकादश स्थान स्थित वच्छुभफल प्राप्यर्थम्,
 आदित्याग्निवमहानुकूलवासिद्धयर्थम् तथा इन्द्रादिवशदिक्तालप्रसन्नता
 सिद्धयर्थम्, आग्निदेविन्-आग्निभौतिक-आभ्यात्मिकत्रिविधतापोपशम
 नार्थम्, अमार्थकामभोज फलावाप्त्यर्थमथ यद्योक्तफलावाप्तये अमुकोपशय
 अमुकनेदाध्यायिनेऽमुकशमणे ब्राह्मणाय तुभ्यमह सप्रददे । दानवाप्स्यन् ।
 यज्ञसावनभूता या विश्वस्थापविनाशिनी । विश्वरूपधरो देव प्रीयता
 मनया गवा ऋषिभे सव देवाना पूजनीया शिरोहिणी । वीर्यं देव मयादत्ता
 तस्माच्छान्ति प्रियच्छ्रमे । इत्युक्त्वाप्यं सकुरागोपुच्छ विप्रइस्ते दद्यात्
 विप्रोऽपि ॥ ॐ योस्त्या ददानु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु ॥ ॐ देवस्य
 त्वा सप्रितु प्रसंगेरिवनोत्र्याङ्म्याम पूष्यो हस्ताम्याम् । ॐ कोदात्
 कामाऽ अदान् कामोदात् कामा दाता काम प्रतिगृहीता कानैवर्त्त ॥
 स्वस्तीति यदेत् ॥

दानप्रतिष्ठा सकल्प ॥ ॐ विष्णु ३ अक्षोहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकरा-
 शिरानुभ्रशम्माऽऽ दृवैतद्गोदानप्रतिष्ठासिद्धयर्थम् इह सुवर्णमग्निदैवत यथा
 परिमितमात्रयत्नतश्चि मादद्यात्वाद्यस्ये ॐ वरमत् ॥ इति दद्यात् ॥ ब्राह्मण
 पुत्र्यादङ्गनाभिषेकं कुर्यात् ॥ ॐ शान्ति ॐ शोः शान्तिरन्तरिक्ष
 शान्ति प्रथिरीशान्तिरान्तराप शान्तिरोपधय शान्तिर्व्यनस्पतय शान्तिर्वि
 रयद्वा शान्तिश्च शान्ति सर्वं शान्ति शान्तिरेव शान्ति सामा
 शान्तिरेव ॥ ॐ विष्णोः शान्ति देव सवितर्दुरितानि परामुष यद्द
 तन्नऽन्नासुर ॥

यस्य गृ या चनामाय पावोतश्चिपा 'पु,
 -पुन ५५५५ ७० यावि मपो नदे वन-भुवत् ॥ अष्टगुणयनम ।

इत्यभिपेकं कृत्वा, मन्त्राशिपं च दद्यात् ॥ ततो यजमानः ब्राह्मणेन समन्विता गां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य ॥ प्रदक्षिणामन्त्रो ॥ नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ ततो दक्षिणां भूयसीं च दद्यात् । ॐ विष्णुः ३ अथेह अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माहं गोदानकर्मणः साङ्गफलवाप्तये सादगुण्यार्थं च इमां दक्षिणां ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रदे तथा भूयसीं दक्षिणाम् अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये ॐ तत्सन् । तथा यद्योपपन्नेनान्नेन ब्राह्मणांश्च भोजयिष्ये ॥ (क) ततो ब्राह्मण आशिपं दद्यात् मन्त्रपाठः ॥

ॐ गोमो धेनु सोमो ऽश्र्वन्तमाशु सोमोर्व रङ्गर्मण्यन्ददाति ॥ सादन्यं विदस्वथ सभेयम्पितृश्रवणं यो ददाश दानै ॥ १ ॥ ब्राह्मणयुक्तगां त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य गोमतीं पठित्वा ततो गोदानं प्रतिष्ठाभूयसीसं कल्पं कुर्यात् । गोमती अमे द्रष्टव्या ।

गोदाने विशेषः

त्रिकं मातामहाद्यं च मातामह्यादिकं त्रयम् । ते च तान्य प्रदत्तं मे स्वीकुर्वन्तु जलं मुदा ॥ १ ॥ गोत्रे मदीये विमुता मृता ये गोत्रे च मातुर्मम ये विपन्नाः । गर्भंयुताः श्राद्धविवर्जितारश्च तेभ्यः स्वाधानेन जलेन कृत्वा ॥ २ ॥ भृग्वग्निवज्जादिजलादिशस्त्रैर्विपाणदन्तेनंखरैर्भुजङ्गैः । पञ्चत्वभाषं विगतारश्च ये च तेभ्यः प्रदत्तं शिवमस्तु तोयम् ॥ ३ ॥ ये रौरवादी नरके निमग्नाः क्रियाविलुप्तारश्च कृतपकाराः । जन्मान्तरे ये मम दासभूतास्तेऽप्यक्षयां तृप्तिमिहाभजन्तु ॥ ४ ॥ ये रांधरा अरांधरा येऽन्यजन्मनि यान्यराः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुत्रोत्तृष्ट्यारिभिः ॥ ५ ॥ धेनुपुच्छे करं कृत्वा तपणं च करोति यः । आरुनातं तारयेद्विप्रो दरापरान् दरापरान् ॥ ६ ॥ सन्तपिता मया ये च गोपुच्छोद दतपणैः । आयुश्छि तथा तुष्टि मेधां प्रशां च सन्तः तिम ॥ ७ ॥ अराग्य घनलाभं च मन्तुष्टान् । ददन्तु मे ॥

गोमतीं पठेत्-गाय. सुभयो नित्यं गात्रो गुग्गुलुगन्धिरा । गायः पतित्रा भूतानां गात्रः स्वस्वयनं मठन् ॥ १ ॥ पावनं सर्वभूतानां

(६) ॐ क्लृप् दक्षिणा दत्ता-पत्र-सुभेत्वादि प्रा अन्तुत्वारनमः इति विष्णुं स्मरेत् ।

क्षिन्ति च नहन्ति च । हरिषा मन्त्रपूतेन
 तर्पयन्त्यमरान्दिशि ॥ २ ॥ ऋषीणामग्निहोत्राणां गावो होमे
 प्रतिष्ठिता । सर्पणामेव भूतानां गात्रं शरणमुत्तमम् ॥ ३ ॥ गान् स्वर्गस्थ
 सोपानं गात्रो वन्या सवाहना । गात्रं पवित्रं परमं गावो महलसुत्तम्
 ॥ ४ ॥ नमो तोभ्य श्रीमतीभ्य सौंभ्येशीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुता
 म्यश्च पवित्राभ्यो नमो नम ॥ ५ ॥ ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा
 कृतम् । एकत्रमत्रास्तिष्ठन्ति ॥ ६ ॥ गात्रो मामुपतिष्ठन्तु हेमश्रृङ्गश्च
 पयोमुच । सुभ्य सौंभ्यश्च सरित् सागरास्तथा ॥ ७ ॥ गाव
 पश्याम्यहं नित्यं गात्रं परयं तु मां सदा । गावोऽस्माकं वयं तासां यतो
 गावस्ततो वयम् ॥ ८ ॥ घृतक्षीरप्रदां गात्रां घृतयोऽन्योऽघृतो द्रवा । घृतस्यो घृ
 तानर्त्तात्ता मे सन्तुमदा गृहे ॥ ९ ॥ गात्रो ममागतसन्तु गात्रो मे सन्तु प्रष्टव ।
 गात्रो मामुपतिष्ठन्तु गवा मध्ये वसाम्यहम् ॥ १० ॥ एव रात्रौ दिवा रात्रि
 समेषु विषमेषु च । भयेषु च नरो नित्यं कीर्तयन्मुच्यते भवान् ॥ ११ ॥ इत्या
 यञ्च नपन्नात सार्यं वा पुन्यन्तथा । ब्रह्मण्या कुरुते पापवद्वायं प्रचिसु
 ह्यते । यद्ब्रह्मा कुरुते पातं तद्ब्रह्मा प्रतिसुच्यते ॥ १२ ॥

अथ ब्रह्मयज्ञ प्रयोगः ॥

(सूर्यापस्थानां नन्तरं प्रसृजिणीं कृत्य नमस्कृत्योपविशत् । दर्भेषु
 परिश्य दर्भवाणिभूत्वा स्वाध्यायं च यथा शक्त्या दावाभ्यनन्दम्)
 आचम्य प्राणानायम्य ॥ कुशपवित्रं धारणम् — ॐ पवित्रेभ्यो वैष्णव्यो
 सत्रितुः प्राप्तं उद्युताग्निद्वारेण पवित्रेण सूर्यस्य राक्षिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रं पूतस्य वत्सकामं पुनं तद्धोत्रयम् ॥ १ ॥

सङ्कल्प — अथ पूर्वाचारित एव गुण विशेषणं विशिष्टाया शुभं पुण्यं
 दिव्यो ममाऽऽत्मन ध्रुवि स्मृति पुण्योक्तं फलं प्राप्यं ॐ वत्सन् परमेस्वर
 श्रीत्यर्थं यथाशक्ति ब्रह्मयज्ञोनाऽहं यज्ञे । अथाता ब्रह्मयज्ञं न्यास्या
 स्याम — द्वितीयं सङ्कल्प — इत्येतादिषु मन्त्रेषु यत्र ब्रह्मन्तेषु दश प्रणव
 सहितेषु क्रिया क्रिया स्तत्र विस्तारं तुरि प्रनापति दशता । सर्वाणि
 यन्त्राणि सर्वाणि सामानि प्रतिलिङ्गतां कृता । ब्रह्म यज्ञे त्रिनियोगः ॥
 ब्रह्म यज्ञात्मन यमं त्रिधिसनात्ता दन्दं पुदपऽशरीरं न्यसन् । तिर्यग्वि-
 लस्य यमऽऽत्मं बुधं दन्दं पुदपस्य च ॥ न्याता — ॐ गीतमं भद्रा
 जाम्या नम नेत्रयो । ॐ विश्वामित्रं प्रमदग्निभ्या नम नामिभ्यो ।
 ॐ अत्रये नम त्रि । ॐ गायत्राग्निभ्या नम शिरसि । ॐ उद्विष्यस

वितृभ्यांनमः श्रीवाचाम् ॐ बृहती बृहतिभ्यां नमः-अनुके । (हनौ) ॥ ॐ
 बृहद्रथन्तरयात्रा पृथिवीभ्यां नमः-वाहोः । ॐ त्रिष्टुंबिन्द्राभ्यां नमः—
 नाभौ । ॐ जगत्पादित्याभ्यां नमः-श्रोणयोः । ॐ अतिरुद्धन्दा प्रजा-
 पतिभ्यांनमः-लेङ्गे । ॐ यज्ञा याज्ञे वैश्वानाभ्यां नमः—गुदे । ॐ अनुष्टु-
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः—ऊर्ध्वोः । ॐ पङ्क्ति वरुद्योतमः जान्धोः । ॐ द्विपदा-
 विष्णुभ्यां नमः—पादयोः । ॐ विरुद्धन्दा वायुभ्यां नमः । नांसापुटस्थ
 प्रणेपु । ॐ न्यूनाक्ष्णो ह्यन्दोभ्यो नमः—सर्वाङ्गेषु ॥ एव मेवाह्वानि-
 योजयिस्वा वेदमयः सम्पद्यते । [न कुत्तारिचङ्कयं विन्दते । शापा नुग्रह
 सामर्थ्यं ब्राह्म तेजश्च वर्द्धते । स्वर्गं लोकं पर साधनम् । धर्मार्थं काम
 मोक्षस्य च । तस्य दारिद्र्यं दुःख शोक रोगमयं नभवति । ऋषि देवता
 रुद्धा ॐ सिधित्वाः ऋमयो यजुर्मयः साममयोऽथर्वमयोऽमृतमयो
 विश्णु रिदं कात्यायनस्य च ॥ ॐ भूर्भुवःस्वःतत्स वितु० ॥ २ ॥ ॐ
 इपेत्तोरः ॥ वायवस्व देवो वःसविता प्रार्थयतु श्रेष्ठ तमाय
 कर्मणःऽआप्यायध्वमन्वयाइन्द्राय भागम्प्रजा वतीर नमीवाऽअयदम्मा
 मा वस्तेनऽईशत् माचर्शं ॐ सो धुवाऽआस्मिन्नोपवी स्यात् वरुहोर्यज-
 मानस्य पशून्पाहि ॥ ३ ॥ वसोऽपवित्रम् ॥ हिरण्यमेन पात्रेण सस्यस्या-
 ऽपिहितम्सुरवम् । पोसावादित्ये पुरुषऽसो सावहम् ॥ ॐ ३म् ।
 खम्ब्रह्म । व्रतमुपै ख्यनन्वरेणा हवनीयञ्च गार्ह पत्यञ्ज प्राङ्किष्टन्नपऽ-
 उप स्पृशति तद्यदऽउपस्पृशत्य मध्यो वै पुरुषो यद् नृत्तम्बदति तेन
 पूति रन्तरतो मेध्यावाऽआपो मेधयो भूत्वा व्रत मुपायानीति पवित्रम्
 वाऽआपऽपवित्रं पूतो व्रत मुपायनीति तस्माद्वाऽअपऽउपस्पृशति ॥ १ ॥
 सोऽग्नि मेवा भोक्तृमाणो व्रत मुपैति ॥ [ॐ पूर्णं मवऽपूर्णमिदं पूर्णा-
 त्पूर्णं मुदुच्यते । पूर्णस्य पूर्णं मादाय पूर्णं मेवा वशिष्यते । ॐ खं
 ब्रह्मा । ॐ खं पुराणम् ॐ वायुरेव ख मिति स्माह कौर व्यायणी
 पुत्रो वेदय ब्राह्मण विदुर्वेदेन न यद्वेदितव्यम्] ॥ ॐ प्रारणी पुत्रादा-
 सुरि वासिनःऽप्रारणी पुत्रऽआसुरायण दासुरायणऽआसुरोसुरि वासि-
 ल्कऽयाज्ञवल्क्य उदालकाऽदुदालकोऽरुणाऽरुणऽउर्येशो रुच्येशिः कुशे-
 ऽहृभित्रीज श्रसो वाजभवाऽजिह्वावतो वाभ्योगाऽजिह्वावान् वाभ्योगाऽसि-
 वाद्वार्षगणाऽसितो वार्षगणो हारि तान् कश्यपाद्धरितःऽशिलाऽरुच्यप

[१] एते मन्त्राः स्वर पूर्वकं पटनीया इति केशाखिन्नु मत्ते । परं च
 हलापुत्रः एवंति प्राङ्मुखः प्राग्मेव कुशोऽपविश्य वान इत्त जले कुश
 पवित्रे [शीदमो] कृत्वा तदुपरिदक्षिण इत्त यपो मुखं कृत्वा ॐ हार पूर्विका
 गावत्री तथा चतुरो वेदादीन् पठेत् ॥ [२] इदं यजुर्वेदोत्पत्तयत् ॥

च्छिपः ऽकरयः ऽकरयपात्रे ध्रुवे ऽकथ्यपोने अग्निर्वाचो रागभिर्दद्या
 ऽअग्निर्दद्या दित्या दादित्या नासानि शुक्लानि यन् ध पि रायसने
 यन याज्ञवल्क्ये ना रयन्ते ॥ २ ॥ (इत्युक्तं बृहदारण्यो पति
 पदि] ॥ ॐ अग्नि माले पुराहित यज्ञस्य इवमृत्पत्रम् । होतार एत
 पात मम् ॥ ॐ अग्नेऽआर्थाद् वातये गृणानो हव्य दातये । निहोता
 ससेत रद्विष ॥ २ ॥ ॐ राज्ञो इरीर भिष्ट्यऽआपोभवन्तु पातय । श
 पारभिस्त्रैनु न ऽ ॥ ६ ॥ अनुपेदान्तर यज्ञानि पठेत् अथानुवाकान्
 चशानि । मरुत्क दक्षिण मणि इदयम् । अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामि, अग्रातो
 ऽविकार फल युक्तानि क्रमोणि । अवातो गृन्त्वातोपाकाना क्रमदृष्टि
 देच । समान्ताय समान्तात् मय एतत्तद्वत्तत्तम सर्वितम् । पञ्च सम्बन्
 सर मये युगायत्तम् । गौग्ना अग्रातो धर्म चिह्नासा अग्रातो नक्ष
 चिह्नासा रागीत्वरं चाद्यरत्न्य । नारायण नमस्तृप्त्यइति । चिह्नायो
 यानिःपानिर्विपुराहित । रायन्ते नाचितो देव श्रीयता मे जनाइत ।
 (एत नञ् यज्ञिप्राय पाण्योगृहीत कुराना कुरा पवित्रस्य न उत्तरसा
 राग कुर्यात्) अर्णम्— अनेनरज्ञ यज्ञाह्येत कर्मणा श्री भगवान् परमे
 श्वर प्रायता न मम ॥ ॐ वरुत्तन्नापंथ्य मस्तु ॥ यस्यस्मृत्या० इति नक्ष
 यज्ञ प्रयोग ॥ शुभम् भगत् ॥

अथ श्रावणी प्रयोगः ॥

अथ श्रावणी प्रयोग [एतत्र श्रावणस्य पूर्णिमादिकाले प्रात
 स्नान सन्ध्यादि नित्यकर्म विवाय गुरु शिष्यगणै सह प्रामाददि
 प्राच्यामुदीच्या वानद्योदि रम्ये जलाशय गत्वात्तारे शुभ्रा चया
 दश सम्भवा वा मृदमार्द गोभर्ष मसम कुरान् तिलाचूतान् सुर
 नापि पुण्याणि पूराङ्कुरवामाग यज्ञोपनीतादि सर्वा श्रावणी सामर्थी
 मन्वाग अग्निस्वापनार्थपीठ (एते वस्त्ररम्भापत्र वा) पूनार्थगन्ध
 पुण्याणि पूतास्त्रमार च मन्वाग मल्लेपन पूरकं प्रचालित इत
 पाद प्रातः सुप्त उदङ्मुखा ना सपवित्र करो गुरु कृतपक्षी
 चादिशुत गिन्य महात्म्य प्राणा नायम्य दशरथीसद्वोर्त्य सर्वे
 मद् सद्वर्षे युवान् ॥ यथा— सद्वर्षे,—अधीतानामध्यप्यमाणाना
 वाग्वायना श्रावणविन्दुद कोश धापन्तन्ति इति दुर्ध्वं श्रुती
 धारित गणा तपूत्रमरणाता गता पत्न्यान्वितुनोधारित यज्ञाना

(१) इदं श्रावणप्रयोगः (२) इदं श्रावणप्रयोगः (३) इदं श्रावण
 प्रयोगः ॥

श्लिष्टा स्रष्ट वर्णविघट्टनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यथातयामत्वं
 तत्परि हागर्थं अष्टत्रिंशदन्ध्याया ध्ययनेरध्यारञ्चरतः शूद्रस्य शू-
 वतोऽध्ययनेम्लेच्छान्त्य जादेः शूद्रवतोऽध्ययने अशुचिदेशेऽध्ययने
 आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने अक्षरस्वरानुस्वार पदच्छेद कण्डिका व्यञ्-
 जनहस्य दीर्घानुन कण्ठ तालु मूर्धन्योऽथ दन्त्य नासिका
 तुनासिक रेफ जिह्वामूलीयो पद्मा नीयो दात्तानुदात्त स्वरितादीनां
 ०० ये नोचरे माधुर्यात्तर व्यक्ति हीनत्वाधनेक प्रत्य वाय परि
 हार ०० सर्वस्य वेदस्य स वीर्यत्वसम्पादन द्वारा यथावत्फलप्रा-
 प्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं सशिष्योऽहं शुक्तयजुर्वेदोत्सर्गोपा करणं
 करिष्ये इति सङ्कल्प्य, गुरुः शिष्यैः सह उभाकवीत्युच्चैः' पठेत् ॥
 तथा—ॐ उभाक वीशुवा नो धर्मः पारतत् । परिसत्र्यानि धमिणां
 विसरथ्यानि विसृजामहे ॥ इतिमन्त्रं पठित्वा यथा क्रमेण सर्वे गुरो
 रभिवादनं कुर्युः । (पुनश्चदेशकालौ स्मृत्वा सङ्कल्पयेद्यथा)
 सङ्कल्पः—अध्यायोत्सर्गं कर्म निमित्तं गण स्नानं महं करिष्ये ।
 पुनश्च इषेत्वादि ॐ खं ब्रह्मान्तेषु याः क्रिया स्त्रत्रविस्वान् ऋषिः
 सर्वाण्युजु ॐ विसर्वाणि ह्रन्दा ॐ सि प्रजापतिलिङ्गोक्ता देवता
 स्नानादि सर्वं कर्मसु विनि योगः इत्युक्त्वा स्नाना नुजां प्रार्थयेत् ।
 यथा—नमोऽस्तु देव देवाय शिति कण्ठाय वेधसे । रुद्राय चाप
 हस्ताय इण्डने चक्रिणे नमः । सरस्वती च गायत्री वेदमाता गरी
 यसी । सन्निधात्री भव त्वं च सर्वपाम प्रणाशिनी ॥ यद्वा सागर
 निर्घोष दण्ड इस्ता सुरान्तक । जगत्स्रष्टर्जगन्नित्र नमामि त्वां
 रान्तक । तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त इहोपम । भैरवाय
 नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातृमर्दासि ॥ नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं
 मुरा सुरेर्वेन्दितदिव्यरूपम् ॥ मुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यंभाया
 नुसारेण सदा नराणाम् ॥ (इमं मन्त्रं समुच्चार्य तीर्थ स्नानं
 समाचरेत् । अन्वया वत्कृत स्यार्थं तीर्थेणोहरति धूमम्, उत्तिष्ठन्तु
 महाभूता ये भूतानुमि वासिनः ॥ भूता नाम विरोधन स्नान कर्म
 समारम्भे ॥ अपसपन्तु ते भूता ये भूता स्तीर्थदूषकाः । येभूता
 विघ्न कर्तार स्ते नरयन्तु शिवाइत्यथ । पुष्पा यानि तीर्थानि गङ्गाया
 सरितस्तथा ; आगच्छन्तु पवित्राणि स्नान काले सदा मम ॥ अपा

अपानार्गं निमित्ते स्थिभि रिवभिः कुर्युः पृथक् पृथक् गायत्रीं पठित्वा
 ब्रह्म प्रपि मुक्ताः स्रष्टर्यं दार्याः । ते च पीठे नवं स दशं पीठं वरुं रभा
 रवं वा प्रथमं वास्तिनन्प्रमागता उदगता वास्याप नीयाः । । ।

मावि पति स्व च तीर्थेषु नसतिस्तत्र । वरुणाय नमस्तुभ्य स्ना-
नानुज्ञामपच्छमे ॥ अधिष्ठात्र्यञ्च तीर्थाना तीर्थेषु विचरन्ति वा ।
त्रेवतारता प्रयच्छन्तु स्नाताज्ञानम संपदा ॥ गङ्गे च यमुने चैव
गोदाररि मरस्वति । नवदेसिन्षु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
तत' ॐ उरु छ हि राजा वरुणा नकार० इति मन्त्रेणा तोयमभिम
न्येत् ॥ शेष स्नानविधिः प्रयाग वत्सर्तव्य ॥ तत धीत वा
सप्तो परिषाच दर्मा सनादी प्राङ्मुख उड्डृत्यो वो पविश्य
भस्म गोवी चन्द्रनादि धृत्वा पत्रिण पोणि राभ्य माध्याह्न सन्ध्या
दुयात् । तत्र सूर्यो पस्थान मण्डलं त्राक्ष्य च सम्प्राय । तत्र
वह्न यज्ञ देवापि मनुष्य पितृ तर्पण च कुर्यात् । अथ ऋषि
पूजनम्—तत्रादौ ऋष याच मिति सूक्त सर्वे पठनीयम् । (इदं सूक्तं
नर शान्त्याध्याये द्रष्टव्यम्) । ऋषिप्रतिष्ठा—ॐ मनो नूतिज्ञुपता
माङ्ग्यस्य तृहसतिर्ष्वमिमन्तनो त्ररिष्टिष्ठ प्यञ्च छ ममिमन्दातु ।
विश्वे देवासऽइह मा दवन्ता मोरेऽप्रतिष्ठा । १० । एष वै प्रतिष्ठा
नामयज्ञो अत्रे तेनयज्ञेन यजन्ते सत्र मेव प्रतिष्ठितं मस्तु ॥ इति
मन्त्रेण ऋष्युपरि अक्षतान् नित्तिपेत् ॥ ऋषि आवाहनम्— ॐ भू
सुर्वे स्व कश्यपाय नम कश्यप आवाहयामि भोरुस्यप इह
गच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाणमम स मुख सु प्रसन्नोऽरदो भव ॥ १ ॥
ॐ भूसुर्वे स्व भरद्वाजाय नम भरद्वाज आवा हयामि भो भर-
द्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण ममसमुख सुप्रसन्नो वरदो भव
॥ २ ॥ ॐ भूसुर्वे स्व गौतमा य नम गौतम आवाहयामि ।
भागीतम इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण ममसमुख सुप्रसन्नो वर-
दाभय ॥ ३ ॥ ॐ अरये नम अत्रि आवाहयामि भा अत्रे इहागच्छ
इहातिष्ठपूजागृहाण ममसमुख सुप्रसो वरदो भव ॥ ४ ॥ ॐ भूसुर्वे स्व
त्रम द्यमय नम यमदग्नि आवाहयामि भो यमदग्ने इहागच्छ इह
विष्ठ पूजागृहाण ममसमुख सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ५ ॥ ॐ भूसुर्वे स्व
रसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठपूजागृहाण मम संमुख सुप्रसन्नो वरदो भव
॥ ६ ॥ ॐ भूसुर्वे स्व त्रिषामित्र नम आवा हयामि । भा त्रिषा
मित्र इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम समुख सुप्रसन्नो वरदो भव
॥ ७ ॥ ॐ भूसुर्वे अरुन्धत्ये नम अरुन्धत्ये नम अरुन्धती मावा
हयामि भो अरुन्धति । इहागच्छ इह तिष्ठ पूजा गृहाण मम संमुख
सुप्रसन्नो वरदाभय ॥ ८ ॥ ॐ भूसुर्वे स्व याज्ञपल्क्याय नम याज्ञ
पल्क्य मावा हयामि । मोयाज्ञपल्क्य इहागच्छ इह तिष्ठ पूजागृहाण मम
समुख सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ ९ ॥ ॐ इता येन गौतम भरद्वाजा यमदग्-

गौतमोऽयंभारद्वात्रऽइमावेव विश्वामित्रं जमदग्नीऽअयमेव विश्वामित्रो-
 ऽयं जमदग्निरिमा वेव वसिष्ठ कश्यपा वयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपो
 वागेयात्रि व्वाचगृह्यत्र मद्यतेतिर्हवै नामैतद्यद्विरिति सर्वस्यात्ता भवन्ति
 सर्वस्यान्नभवति यऽएवं वेद ॥ ४ ॥ सङ्कल्पः—अद्येत्यादि शुभपुण्य
 तियौ ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तयर्थं श्री परमेश्वर
 प्रीत्यर्थं उत्तमर्जनाङ्गत्वेन अरुन्धती सहित करयपादि सप्तपिस्व ऋषि
 पूजन मई करिष्ये ॥ तत्रादौ निविध्नता सिद्धयर्थं महागणपति पूजनं
 स्मरणं वा करिष्ये । [एव गणपतिपूजां स्मरणं वा कृत्वा ऋषीन्ध्या-
 येत्] ॥ ध्यानम्—ॐ सप्तऽऋषयःऽप्रतिहिताःऽशरीरं सप्त रक्षन्ति सद्
 मप्रमादम् । सप्तापःऽस्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजोसस्व
 सद्यो चदेवौ ॥ ३ ॥ इदं विष्णुर्विचक्ररुमे त्रेधा निश्चे पदम् । समूह
 मस्यपा ६ सुरेस्वाहा ॥ ४ ॥ सहस्रशो ॥ ५ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरुन्-
 धन्ती सहित करयपादि स्व ऋषिभ्यो नमः ध्यान पूर्वकं सा वाहनं
 समर्पयामि ॥ आसनम्—सुवर्णं घटित दिव्यं नाना रत्न समन्वितम् ।
 आसनं रुचिरं यच्च गृह्यतांभो मुनीश्वराः ॐ पुरुष ए० ॥ ६ ॥ ॐ भू-
 भुवः स्वः अरुन्धती सहित काश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नमः आसनं समर्प-
 यामि ॥ पाद्यम्—गङ्गाजलं समानीतं गन्ध द्रव्येण संयुतम् । पाद्यार्थं
 प्रति गृह्णन्तु कश्यपाद्या महर्षयः [१]—ॐ एतावानस्य० । ७ ॥ ॐ
 भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः पाद्यं सम-
 र्पयामि ॥ अर्घ्यम्—सुवर्णं पात्र संयुक्तं गन्ध पुष्पाक्षतैर्युतम् । सप्तर्षयः
 प्रगृह्णन्तु इदं मय्यं सगर्षितम् ॥ ॐ त्रिपाद० ॥ ८ ॥ ॐ भू भुवः स्वः
 अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आच-
 मनम्—कर्पूरं वासितं तोयं सुवर्णं कलशोस्थितम् । दत्तमाचमनीयं च
 ऋषिणां प्रीतये सदा ।—ॐ ततो द्वि० ॥ ९ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरु-
 न्धती सहित करयापादि एव ऋषिभ्यो नमः ॥ आचमनीयं समर्पयामि ॥
 स्नानम्—सुगन्ध द्रव्य संयुक्तं पवित्रा मङ्गलं जलम् । स्नानार्थं वः
 समानीतं मुनयः प्रतिगृह्णाताम् ॥—ॐ तस्मा ध्यात्सर्व० । १० ॥ ॐ
 भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित करयापादि स्व ऋषिभ्यो नमः स्नानं
 समर्पयामि ॥ अथ स्नानम्—पञ्चामृतस्नानम्—पयो दधि घृतं चैव मधु
 च शर्करान्वितम् । पञ्चामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्—ॐ
 पञ्चमद्यस० ॥ ११ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्व
 ऋषिभ्यो नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ॥ गन्धोद्दस्नानम्—ॐ
 गन्ध द्वारा दु० ॥ १२ ॥ ॐ भू भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व
 ऋषिभ्यो नमः गन्ध स्नानं समर्पयामि—पूर्वपूजां समाप्य । पुरुष सूक्ते

नाभिपेठं हृत्वात् ॥ ॐ सहस्रशी० ॥ ॐ भूर्भुव स्व अरुन्धती सहित
 कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम मदाभिपेठं स्नान समर्पयामि ॥ इति चोप
 क्रम ॥ यज्ञम्—मूत्रमाख्य तोत्र शुभ्राणि वस्त्राणि त्रिभिर्वा निच । ऋषय
 प्रति गृह्णन्तु उष्ण शीत निवारणो ।] ॐ तस्मात्प्रा० ॥ ११ ॥ ॐ भूर्
 भुव स्व अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम वस्त्र समर्प
 यामि ॥ यज्ञोपवीतम्

यज्ञोपवीतम्—नानामन्त्रै समद्भूत त्रिष्टुत ब्रह्मसूत्रकम् । प्रत्येक दीयते
 स्व-उ ऋषय प्रति गृह्यताम् ॥ ॐ तस्मा द्दरशा० ॥ ४ ॥
 ॐ भूर्भुव स्व अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम यज्ञोप
 वीतइतिसमर्पयामि ॥ गन्धम्—आत्मसन्तापहार च सुगन्ध द्रव्य
 सयुक्तम् । चन्दनवत्प्रच्छामि ऋषीणामीतिहेतवे ॥ ॐ तप्यज्ञ ० ॥ ५ ॥
 ॐ भूर्भुव स्व अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम
 गन्ध समर्पयामि ॥ अक्षयम्—अक्षयता शुभ्र रन्दुल वा शुक्ला
 शङ्ख गुग्गु मन्तोरमा । अक्षयान्प्रयच्छामिगृह्णन्तुमुनि पुङ्गवा । ॐ अक्ष
 यमी० ॐ भूर्भुव स्व अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम
 अक्षयान् समर्पयामि हरित्रा—हरित्रात्राकुङ्कुम चैव कज्जलभूषणा
 निच ॥ कटुण कण्ठ सूत्र च गृह्णण्य पमेश्वरि ॥ ॐ अहिरिव०
 ॥ १० ॥ ॐ भूर्भुव स्व अरुन्धतीसहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो
 नम हरित्रा कुङ्कुमादि द्रव्याणि समर्पयामि ॥ इति चोपक्रम ॥
 पुष्पाणि (तुलसीफल—त्रिरुपत्र—कमलानि च ऋषिभ्यो विरोधत)
 मां न्यादीनि सुमन्वीनि मालिन्यादीनि सत्तमा । मन्वापितानि पुष्पाणि
 गृह्णन्तु मुनिपुङ्गवा ॥—ॐ यत्पुष्प० ॥ १८ ॥ ॐ भूर्भुव स्व
 अरुन्धती सहित कश्यपादि ऋषिभ्यो नम ऋतुमालोद्धरपुष्पाणि
 समर्पयामि । धूपम्—छण्डासुरासमुद्भूतो धूपोऽथ पश्चाद्भृश ।
 सुगन्ध कश्यपादिभ्य ऋषीभ्यो दीयतेऽयुना ॥ ॐ ब्राह्मणे० ॥ ॐ
 भूर्भुव स्व अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम धूप
 दर्शयामि ॥ दीपम्—पञ्च वर्ति समायुक्त सप्त मङ्गल शोभन ।
 मन्वाविरोधितो यत्तया दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ चन्द्रमाम् ॥ २० ॥
 ॐ भूर्भुव स्व अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋषिभ्यो नम
 दीप दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—पत्रमूल समायुक्त नात्र शाक समन्वि-
 तम् । शङ्खपूत सयुक्त नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ नाम्ब्याऽऽश्रा०
 ॥ २१ ॥ ॐ भूर्भुव स्व कश्यपादिभ्य ऋषिभ्यो नम नैवेद्य
 समर्पयामि ॥ विष्णु मन्त्रे पानीय समर्पयामि । उत्तरापोशा इत्य
 प्रपातने मुख मन्वात्तन करोद्धर्तव्यं चन्दनं च समर्पयामि ॥

(अथ क्षेपकम्—फलम्—नारिकेलं कूमाण्डं च कदली कर्कटी
 फलम् । ऋतुकालोद्भवं चान्यदीयतेऽथ मुनीश्वराः । १ । ॐ याः
 फलि ॥ २२ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धतीसहित कश्यपादि स्व
 ऋपिम्यो नमः फलानि समर्पयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥ ताम्बूलम्—
 पूगी फलं स कपूरं नाग वल्ली दलैर्युतम् ॥ एता लवङ्ग संयुक्तं
 ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ— यत्पुरुषे ॥ २३ ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋपिम्यो नमः ताम्बूलसमर्प-
 यामि ॥ अथ क्षेपकम्—दक्षिणा' हिरण्य गर्भं गर्भस्थं हेम वीजं
 विभावसौः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिप्रयच्छमे ॥ ॐ हिरण्य
 गर्भः ० ॥ २४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः— अरुन्धती सहित कश्यपादि-
 स्व ऋपिम्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ कपूर्वात्तिक्यम्—ब्रह्मिष्ठा
 ब्रह्मरूपाश्च कश्यपाद्या महर्षयः । ब्रह्म यज्ञादि दातारः सन्तु मे कीर्तिं
 कर्मणि ॥ ॐ इदं ० ॥ २५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित
 कश्यपादिस्व ऋपिम्यो नमः कपूर्वात्तिक्यं दर्शयामि ॥ इति क्षेपकम् ॥
 प्रदक्षिणा—यानि कानि च पायानि जन्मान्तर कृतानि च १ तानि
 तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥ ॐ सप्तायस्या ० ॥ २६ ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋपिम्यो नमः
 प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः—शरणागत
 दीनार्थं परि त्राण परायणाः । रक्षन्तु मुनय सर्वे मामद्य शरणा-
 गतम् । सप्तर्षयः शुभाः श्रेष्ठा सर्वेषां च शुभ प्रदाः । पुष्पाञ्जलि मया-
 दत्तं गृह्णन्तु मुनिसत्तमाः ॥—ॐ यज्ञेन यज्ञ ० ॥ २७ ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादिस्व ऋपिम्यो नमः मन्त्र पुष्प
 युक्तं नमस्कारं समर्पयामि । प्रार्थना—मन्त्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति
 हीन मुनीश्वराः । यत्पूजितं मया सर्वं परि पूर्णं तदस्तुमे ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः अरुन्धती सहित कश्यपादि स्वः ऋपिम्यो नमः प्रार्थनां
 समर्पयामि ॥ अर्पणम्—अनेनमया वेदोत्सर्जनाङ्गत्वेन कृतेन
 ध्याना वाहनादिषोडशोपचारादि पूजनेन अरुन्धती सहित कश्यपादि
 सप्तर्षिस्व ऋषयः प्रीयन्तां न मम ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ इति ऋपि
 पूजनम् ॥ ततः स्वपितृभ्यो यज्ञोपवीत दानम्—अमुक गोत्रेभ्यः
 अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः । तथा द्वितीयं अमुक गोत्रेभ्यः
 अस्मन्माताह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः । तृतीयं—कव्यवाड नलादि

(१) प्राचीनाधीति दक्षिणाभिर्भुवः सर्वे कुशोदकं गृहीत्वापुरतोयज्ञो-
 पवीतानि निधाय ॥

दिव्यपितृभ्य इमानि यज्ञोपवीतानिस्ववा सम्पद्यन्ताम् इति
 ऋष्यपरि समर्पयेत् ॥ [जीवित्पितृ कै रवि पितु पित्रादि
 भ्यो मातामहादिभ्यश्च यज्ञोपवीतानि देवानि न.]
 तत सत्र्य कृत्वा सर्वात्राह्वणान् । गन्धादिना सम्पूज्य तेभ्यो यज्ञोपवी
 तानि दत्त्वा पश्चात् सर्वे स्वय मपिवास्याणि ॥ यज्ञो पवीत धारण
 प्रयोग —आचम्ये प्राणानाचम्य ॥ सङ्कल्प्य श्रद्धेत्यादि मम श्रीव
 स्मार्त्त कर्मानुष्ठान सिद्धयर्थं तथाच अमुक कर्माङ्गदान यज्ञो पवीतधारण
 मह ऋषिभ्ये । सूत्र त्रिगुणी करणम्—इद विष्णुरिति मेवातिथिर्ऋषि ।
 विष्णुर्देवता । गायत्री छन्द सूत्र त्रिगुणी करणे विनियोग —ॐ इद
 विष्णुविचक्रने त्रेधा निद्वे पदम् । समूढ मस्य पा ३ सुरे स्वाहा ॥१॥

प्रज्ञालनम्—आपोद्विष्टेचितिसृष्ट्यासिन्धु द्वीप ऋषि । आपा देवता ।
 गायत्री छन्द । यज्ञोपवीत प्रज्ञालने विनियोग—ॐ आपोद्विष्टु मयो
 भुव स्तानऽऽङ्गने ददातन महेश्याय चक्षसे ॥२॥ यो व —शिव तमो रस
 स्वस्यभान्यतेह न —उशतीरिवमातर ॥ १ । तस्माऽअरङ्गमाम प्रो वस्य
 यस्य क्षयाय चिन्त्यय । आपो जन्तयवा चनऽ ॥४॥ ततो यज्ञो पवीतानि
 प्रज्ञाल्या नन्तरं दशगायत्री मन्त्रैरभि मन्थ्य ॥ तन्तु देवतातामा वाह
 नम्—प्रणस्य । ब्रह्मा ऋषि परमात्मा देवता । गायत्री छन्द प्रथम
 तन्तो ॐ कारा वाहने विनियोग । ॐ प्रथम ततो ॐ कार भावाह्यामि ।
 अग्निन्तमिति मेवा तिथि ऋषि । अग्नि देवता । गायत्री छन्द ।
 द्वितीय तन्तो म्पाराहने विनियोग—ॐ अग्नि तूत्सुरोदये हृषवाह
 सुपभूये । देवा रं ऽ आसा द्यादिह ॥ ५ ॥ द्वितीय तन्तो अग्निमावाह
 यामि । तमोस्तु सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि सर्पा देवता । अतु
 ष्टुप् छन्द । तृतीय तन्तो सर्पा वाहने विनियोग—ॐ नमोस्तु । सर्पे
 ष्या वैक्वच प्रथिसोमनु । येऽअन्तरिक्षे येदिवि तेभ्य—सर्पेभ्यो नम— ॥
 ६ ॥ तृतीय तन्तो सर्पांना वाह्यामि । वय ३सामेत्यस्यन्धुर्ऋषि सोमो
 देवता । गायत्री छन्द । चतुर्थ तन्तो सोमा वाहने विनियोग—ॐ
 वय ३ सामन्ते तत्र मनस्त नूपुवि० प्रवऽ प्रजान्तऽ मचेमहि ॥१॥
 पनुव तन्तो सोममावाह्यामि ॥ तृतीरामित्यस्य राशु ऋषि । पितरो
 ऽरता । त्रिष्टुप् छन्द पञ्चम तन्तो पित्रा वाहने विनियोग—ॐ
 ऽशारतामरऽऽरुपतामऽऽन्मद्वयमा ऽ पितर—सोम्यास— । अतु ष्यऽ
 ईपुर ऽराऽश्च शान्त नो वन्तु पितरा इत्यु ॥ ८ ॥ पञ्चम तन्तो
 पित्रा नाराऽयभि ॥ प्रजापतिरित्यस्य दिरपयगभ ऋषि । प्रजापतिर्देवता ।

त्रिष्टुप् छन्दः । पष्ट तन्तौ प्रजापत्या वाहने विनियोगः—ॐ प्रजाप
 तेन । त्वदेता न्यन्यो विश्वाल्पाणि परिता वभूव । यत्कामास्ते जुद्ध-
 मस्तन्नोऽअस्तु वयं थ स्याम पवयोरथीणाम् ॥ ६ ॥ पष्टतन्तौ प्रजापतये-
 नमः प्रजापतिमा वाहयामि आनो नियुङ्गिरित्यस्य । वसिष्ठश्चपि ।
 अनित्तो देवता त्रिष्टुप् छन्दः । सप्तम तन्तौ अनिला वाहने विनियोगः ।
 ॐ आनो नियुङ्गिःशतीनीभिरद्वर थ सदस्रिणीभिरुपचाहि यज्ञम् ॥
 व्वायोऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिऽसदान ऽः
 ॥ १० ॥ सप्तम तन्तौ अनिलाय नमः अनिल मावाहयामि ॥
 सुगाव इत्यस्यात्रिष्टुपि । गृह पतयो देवता । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः ॥
 अष्टमं तन्तौयमा वाहने विनियोगः—ॐ सुगावो देवाऽ सदानाऽ
 अरुम्यऽआगमेदथसवनञ्जुपाणाऽ । भग्भाणा वहमाना हवो थप्य-
 स्मेधत्र वसवो वसूनि स्वाहा ॥ १ ॥ अष्टम तन्तौयमाय नमः यममाया
 हयामि ॥ विश्वेदेवाऽऽगत इत्यस्यामधु छन्दा ऋषिः । विश्वेदेवा
 देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । नवम तन्तौ विश्वेदेवा देवानामा वाहने विनि-
 योगः—ॐ विश्वेदेवाऽऽगत शृणुताम्ऽइमथ इवम् । एदम्बर्हिन्ति
 पीदत ॥ १२ ॥ नवम तन्तौ विश्वेदेवभ्यो नमः विश्वान्दवा ना
 वाहयामि ॥ यज्ञो पवीत प्रन्धि देवताऽवाहनम्—ऋजुज्ञान मित्यस्य ।
 प्रजापतिर्ऋषिः । ऋजा देवता गायत्री छन्दः । प्रन्धि मध्ये ऋजा वाहने
 विनियोगः ॥ ॐ ऋजयज्ञानमप्रथम स्पुस्ता द्विसीमतऽऽः सुकचोव्येनऽ-
 आव ऽ सवुद्धन्याऽ उपमाऽ अस्वव्विष्टयाऽ सतरच यानिमसतरच
 व्वियः । १३ ॥ इद विष्णुरित्यस्यमेधा तिथिष्टुपि । विष्णुर्देवता ।
 गायत्री छन्दः । प्रन्धि मध्ये विष्णवा वाहने विनियोगः—ॐ इदम्बिष्णु
 ॥ १४ ॥ इदम्बक मित्यस्य । वसिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवता । विराट्
 ब्राह्मीत्रिष्टुप् छन्दः । प्रन्धि मध्येरुद्रा वाहने विनियोगः—ॐ इयं
 मरुः ॥ १५ ॥ यज्ञोपवीत प्रन्धि देवताभ्यो नमः—प्रन्धि देवता आवा
 हयामि ॥ प्रणवाद्या वाहित देवताभ्यो नमः यथास्वानमहं न्यसामि ॥
 मानसो पचारं सम्पूज्य । अथ ध्यानम्—प्रजापतेर्यत्सहज परित्र
 क्षापीस स्रोत्रव प्रह स्रम् । प्रहत्स सिद्धये च यशः प्रशश उपस्य
 सिद्धिं कुरु प्रह स्रम् ॥ ॐ सुवा सुवासा परिवीत ऽआगात्सऽउप्रेवा-
 न्भवति जायमानः । तम्पीरसः कथय उत्रयन्ति स्वाभ्या मनमा देव-
 क्तः । यज्ञोपवीत धारणम्—यज्ञोपवीत मिति मन्त्रस्य । परमंष्टी ऋषिः
 जित्गोत्र देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । यज्ञोपवीत धारणे विनि योग—ॐ
 यज्ञोपवीतम्भ्यमन्वविरम्भ्यजपतेर्यत्सहजम्पुरस्तान् । आयुष्य मग्भ्यप्रति
 सुरव शुभं यज्ञोपवीतम्यव मन्तु तेत्र यज्ञोपवीत मसि यज्ञस्य त्या द्योत-

पर्वते नोपत ह्यमि ॥ अनेन मन्त्रेण यज्ञोपवीतानां पृथक्-पृथक् धारणं
 कुर्यात् । प्रति यज्ञोपवीतं धारणं स्याच्चन्तयाराचमम् धारणांते जीर्णसूत्र
 त्याग मन्त्रः—एताद्दिनं पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णस्वात्त्वत्परि-
 त्यागो गच्छ सूत्रं यथा सुखम् ॥ इति मन्त्रेण जीर्णं यज्ञोपवीतं शिरो
 मार्गेण निःसार्य शुद्ध भूमौ त्यजेत् ॥ पश्चात् यथा शक्ति गायत्री मन्त्र
 जपं कुर्यात् ॥ अपंगम्—अनेन नव यज्ञोपवीतं धारणार्थं कृतेन यथा
 शक्ति गायत्री जप कर्मणा श्री सविता देवता प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्स-
 व्रतद्वारपांगमस्तु ॥ यस्य० ॥ इति यज्ञोपवीत धारण प्रयोग ॥

अथोत्सर्ग तर्पणम्

आचम्य प्राणानाम्ब्य देशकालौ सङ्गीर्षं ह्यन्दसां क्वचिदन ध्यायति
 काले पठनादनधिकरिभिः श्रावणं प्राप्तं मालिन्यस्य निरासार्धं मुर्त्सा-
 र्गास्य तर्पणमहं करिष्ये इतिःसङ्कल्प्य । देवतर्पणम्— ॐ विश्वेदेवासऽ
 आगतं श्रुणुताम इमं ॐ हवम् । एदम्बहिर्निषोदत् ॥ २६ ॥ विश्वे देवाऽ
 शृणुतेमं ॐ हवम्यबेऽथन्दरिचं पऽउपहय विष्टु । ये अग्नि जिह्वाऽउतवा
 यजन्त्याऽआसद्दयारिम्बर्हिषि मादयद्धम् ॥ ३० ॥ इति मन्त्राभ्यां देवानां
 वाह । ॐ देवास्तृप्यन्तु । इन्द्रा ॐ सि तृप्यन्तु । ॐ घेदास्तृप्यन्तु ॥ ॐ
 ऋषयः स्तृप्यन्तु । ॐ पुराणा चार्वा स्तृप्यताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् ।
 ॐ इत्य चार्वास्तृप्यन्ताम् । [अथ क्षेपकम्—केचित्संवरसारायथयात्
 पृथक्त्वेन तर्पयन्ति तद्यथा]— ॐ अहोरात्रा स्तृप्यन्ताम् । अर्भमासा-
 स्तृप्यन्ताम् । ॐ मासास्तृप्यन्ताम् । ॐ ऋतव स्तृप्यन्ताम् । ॐ संबत्सरः
 सावयवस्तृप्यन्ताम् ॥ इति क्षेपकम् ॥] ॐ पितर स्तृप्यन्ताम् ॥ आचार्यो
 स्तृप्यन्ताम् तव सख्यं जान्वाच्य दक्षिणामि मुखोऽपसव्येन विलिम्-
 धित जलमञ्जलोद्गीत्वाअमुक गोत्राःअस्मत्पितरः अमुकशर्माख्यो वसुरुपा
 स्तृप्यन्स्वधानमः । अमुकगोत्राः अस्मत्पितामहाः अमुक शर्माख्यो रुद्ररुपा
 स्तृप्यन्स्वधानमः ॥ अन्येतु आभि रङ्घ्रिः वक्षीता मित्वादि नोक्तं तर्पण
 विधिना शिल्पैर्ब्रह्मरसः क्रियायोगेन सर्वान् पितृन् तर्पयन्ति ॥ श्रीवत्पितृकैः
 पुत्रैरिष्ट्यैश्चाचार्यं पितृतर्पणाकार्यम् ॥ तस्य—अमुकगोत्राः अस्मदा चार्यस्य
 पितरः अमुक शर्माख्य स्तृप्यन्स्वधा । एव माचर्यस्य पितामहं प्रपिता
 महात्मा ज्ञेयम् ॥]

(२) दक्षिण जान्वाच्येशानामि मुखाः यन्नेन प्रागग्रैर्दमेदेवतीर्थेन देवानां
 मञ्जलि प्रथं दद्यात् ॥

वतः आचमनम्,—तूष्णीम् पश्चात् ॥

वंशानां ब्रुवणम्

अथ व ३ शः समान मासाञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रो माण्डूकायने
 माण्डूकार्थानिमाण्डव्या न्माण्डव्यः कौत्सात्कौत्सो माहित्ये माहित्यि-
 व्वामकक्षायणाव्वाम कक्षायणो वात्स्याद्वात्स्यःशारिडल्या च्छारिडल्य-
 ऽःकुश्रेऽःकुश्रियंज्ञ वचसो राजस्तम्बायनाद्यज्ञ वचा राजस्तम्बायनस्तु रात्का-
 वपेयात्तुरऽः कावपे यऽःप्रजापतेऽः प्रजापतिर्ब्रह्मणोब्रह्मस्वयम्भु ब्रह्मणे नमऽः
 । १॥ वशोक्ता ऋषय स्तूप्यन्ताम् । (एवं ऋष्युपरि उद्कं क्षिपेत्) अथ
 व ३ शस्तदिदं वय ३ शौर्ण्य्याच्छौर्ण्य्याप्यौ गौतमाद्गौतमो वात्स्यां
 द्वात्स्यो व्वात्स्याच्च पारा शर्य्याच्च पाराशर्य्यऽः सङ्कृत्याच्च भारद्वाजा-
 च्चभारद्वाज ऽथौद्वा हेश्च शारिडल्याच्च शारिडल्यो वैजवाच्च गौतमुच्च
 गौतमो वैजवापायनाच्च वैष्ट पुरे याच्च वैष्ट पुरेयऽः शारिडल्याच्च रौहि
 णायनाच्च रौहिणा यनऽःशौनका चात्रेयाच्च रैभ्या च रैभ्यऽः पौत्तिमाख्या-
 यणाच्च कौण्डिन्यायनाच्च कौण्डिन्यायनऽः कौण्डिन्यात्कौण्डिन्यः कौण्डि-
 न्यात्कौण्डिन्यः कौण्डिन्याच्चाग्नि वेद्याच्च ॥२॥ आग्नि वैश्यः सैतवात्-
 सैतवऽः पाराशर्य्यात्पाराशर्य्योजातुकर्ण्यञ्जातू कर्ण्योभारद्वाजा द्वारद्वाजो-
 भारद्वाजःश्चा सुरायणाच्च गौतमाच्चगौतमोभारद्वाजा द्वारद्वाजोवैजवा पायना-
 द्वेजवा पायनऽः कौशिकायनेः कौशिकायनि घृतकौशिकाद्धृत कौशिकऽः
 पाराशर्य्यायणत्पाराशर्य्यायणऽः पाराशर्य्या त्पाराशर्य्यो जातुकर्ण्य जातु
 कर्ण्यो भारद्वाजा द्वारद्वाजो भारद्वाजाश्चा सुरायणश्च यास्काश्चा सुरायणश्च-
 वणेश्वरै वणि रोपजन्धने रौष जन्ध निरासुरेरासुरि भारद्वाजा द्वारद्वाजा
 आत्रेयान् ॥३॥ आत्रेयोमाष्टे माण्डिगौतमाद् गौतमो-गौतमा द्वौतमो
 व्वात्स्याद्वात्स्यऽः शारिडल्याच्छारिडल्यऽः केशोर्य्यात्काप्यात्केशोर्य्यऽःकाप्य-
 ऽःकुमारहारितात्कुमारहारितोगालवाद्गालबोबिद्धर्मी कौण्डिन्या द्विद्धर्मीकौण्डि-
 न्योवत्सन पातोब्राध्रवाद्बत्सन पाद्वाध्रवऽः पथऽःसौभरात्पन्थाऽःसौभ-
 रोऽयास्वादाङ्गि रसाद्यास्यऽ आङ्गिरसऽआभूतेस्त्वाष्टां दा भूतिस्त्वाष्टो-
 विश्वरूपा त्वाष्टाद्विश्वरूपस्त्वाष्टोऽश्विभ्यामश्विनोर्दधौचा थर्वणाद्ध्य-
 ङ्ङेडाथर्वणो देवाद् थर्वा ह्वोमृत्योऽःप्राध्व ३ सनामृत्युः
 प्राध्व ३ सनात्प्राध्वऽः ३ सनऽएकपरैरेकपि विप्रजितेविप्रजिति व्यष्टे
 ध्यष्टिऽः सनारो ऽःसनारु ऽः सनातनात्सनातनऽः सनगात्सनगऽः
 परमेष्टिनऽः परमेष्टी ब्रह्मणो ब्रह्मस्वयम्भु ब्रह्मणे नमऽः ॥ ४ ॥
 वंशोक्तान्ऋषयस्तूप्यन्ताम् अथ व ३ शस्त दिदं वयशौर्ण्य्याच्छौर्ण्य्या-

ल्यो गीतमाज्ञीतमोवात्स्याद्वा त्तयोआत्स्याच्च पाराशर्याच्च पाराशर्य्यं साङ्क
 त्याच्च भारद्वाजाच्चभारद्वाजञ्चौदयादेश्चराशिङ्ल्याच्च शाशिङ्ल्योवैजवायाच्च
 गीतमाच्च गीतमो वैजवा पायनाच्च द्रैष्ठ पुरेयाच्च व्वैष्ठयः
 शाशिङ्ल्याच्चरोहिण्यायनाच्च रोहिण्यायनऽ शौनकाच्चलैवन्तायनाच्च
 रैभ्याश्चरैभ्यऽपतिमाख्यायणाच्च कौशिङ्न्यायनाच्चऽ कौशिङ्न्यायनऽ
 कौशिङ्याभ्या कौशिङ्न्याऽ औणवाभेभ्यऽ औणवामाऽ कौशिङ्न्या
 कौशिङ्न्यऽ कौशिङ्ल्या कौशिङ्न्यऽ कौशिङ्न्याच्चाग्नि वैश्याच्च ॥ ५ ॥
 आम्निवेत्यऽ सैतना सैतनऽ पारा शर्यात्पाराशर्याऽ.आतू कर्णजातू
 कर्णो भारद्वाजाद्भारद्वाजोभारद्वाजाच्चासुरायणाच्च गीतमाच्च गीतमोभार
 द्वाजाद्भारद्वाजो वत्साका कौशिका द्वाजाका कौशिकऽ कापायणात्कापयणऽ
 सौकरायणात्सौकरायणस्त्रै षण्णैस्त्रै वशिरोपजन्धेनरीप जन्धनिऽ छावकाय
 नात्सायकायनऽ कौशिकायनेऽ कौशिकायनि घृतं कौशिकाद्भूत कौशिकऽ
 पारुशर्यायणऽ पाराशर्यायणऽ पाराशर्यात्पाराशर्या जातूस्त्र्याज्जातू
 कर्याभारद्वा नो भारद्वाजे भारद्वाजाच्चासुरायणाच्चारकाच्चासुरायणस्त्रैषण्ये
 स्त्रै वशिरीर जन्धन रीप जन्धनिरासुरेरासुरिभारद्वा जभारद्वाजऽ आत्रे वातू
 ॥६॥ आत्रेयाद्वात्रेयो माय्देर्नाशिद गावमा द्वैवमागीतमा द्वैतमो वात्स्याद्वा
 त्त्यशाशिङ्ल्याच्चशाशिङ्ल्यऽ कैशोर्यात्काप्या ल्कैशोर्यऽ काप्यऽ कुमार
 हारित्वात्कुमार हारित्वागालवा द्वालनाब्जिदर्भो कौशिङ्न्यो व्वत्सनपातो
 वात्रवाद्वात्सन पाद्वात्रवऽ पथऽ सौभरात्पन्थाऽ सोभेरायात्यादाङ्गिरसा
 द्यास्यऽआङ्गिरसऽ आभूतेस्त्वाष्टादा भूतिस्त्वाष्ट्रोविवस्वरूपा त्याष्ट्राद्
 विश्वस्त्वाष्ट्रो विश्व्यामरिपनी दधीवऽ अथणाद्दध्यङ्ङावर्षणौ दैवाद
 यन्त्रैवामृत्वा प्राथ्य छ सनान्मृत्यु प्राथ्य छ सनात् प्राथ्य छ सनऽ
 एरुपे रेक्षप विप्रजिते विप्रजितिव्यष्टे व्यष्टिऽ सनारोऽ सनारुऽ सनातना
 त्सनातनऽ सनगात्सनगऽ परमेष्ठिनऽ परमेष्ठी 'ब्रह्मणो ब्रह्म स्वयम्भु
 ब्रह्मणेनमऽ वशाकाऽ ऋषयस्तुप्यन्वाम् ॥७॥अथवथ शस्त दिद् यथऽ भार
 द्वाजापुत्रा भारद्वाचपुत्रो व्वात्सीमाएडवी पुत्रा द्वात्सीमाएडवी पुत्रऽपारा
 शरी पुत्रा पाराशरी पुत्रो गार्गी पुत्राद्गार्गी पुत्रऽ पाराशरी कौशिङ्नी
 पुत्रा त्याच शरी कौशिङ्नी पुत्रोगार्गी पुत्रा द्गार्गी पुत्रो वाडयी पुत्राद्वाडेयी
 पुत्रा मौषिकी पुत्रा न्मौषिकिपुत्रो हारिकर्ण्य पुत्राद्धारि ऋषी पुत्राभारद्वाजी
 पुत्राद्भारद्वाजो पुत्रऽ पंती पुत्रात्पंती पुत्रऽ शौनकी पुत्राच्छौनकी पुत्रऽ
 कारयपी वाला क्वा माठरी पुत्रा त्कारयपी वालाक्वामाठरी पुत्रऽ
 र्धत्सा पुत्रा त्क्षैत्मी पुत्रो र्वावा पुत्रा द्वीधीपुत्रऽ शालद्वायनी पुत्राच्छा
 लद्वायनी पुत्रा चार्पगण्यो पुत्रा च्चार्प गण्यो पुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमीपुत्र
 श्रोत्रयो पुत्रा द्दनेया पुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमी पुत्र व्वात्सी पुत्रा द्वात्सी

पुत्रो भारद्वाजी पुत्रद्धारद्वाजी पुत्रऽः पाराशरी पुत्रा त्पाराशरी पुत्रोव्वाकर्ण-
रुणीपुत्राव्वाकर्णरुणी पुत्रऽऽर्तभागी पुत्रादार्तभागीपुत्रऽःशौङ्गीपुत्राच्छौङ्गी
पुत्रऽः साङ् कृती पुत्रात्साङ् कृतीपुत्रऽः ॥ ६ ॥ आलम्बी पुत्रादालम्बी-
पुत्रऽऽलम्ब्यायनी पुत्रादालम्ब्यायनी पुत्रो जायन्ती पुत्राज्जायन्ती पुत्रो-
माण्डूकायनी पुत्रान्माण्डूकायनी पुत्रो माण्डूकीपुत्रान्माण्डूकी पुत्रऽः
शाण्डिलीपुत्राच्छाण्डिलीपुत्रो राथीतरी पुत्राद्राथी तरीपुत्रऽःक्रौञ्चिकी
पुत्राम्यां क्रौञ्चिकी पुत्रोवैदभृती पुत्रा वैदभृतीपुत्रो भालुकी पुत्राद्भालुकी
पुत्रऽः प्राचीन योगी पुत्रा प्राचीन योगीपुत्रऽः
साञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रऽः कार्शकेयी पुत्रात्कार्शकेयी
पुत्र ॥ १० ॥ प्राश्री पुत्रा दासुरि वासिनः । प्राश्रीपुत्रऽऽसुरायणा
दासुरायणऽऽसुरेरासुरिर्ध्याज्ञ वल्क्यावद्याज्ञ वल्क्यऽऽहालकादुहालको
रुणादरुणऽऽपवेशेरुप्रवेशिऽः कुश्रेऽः कुश्रिर्वाजश्रवसोव्वाजश्रवसोव्वाज-
श्रवाज्जिह्वा वतोव्याध्योगाञ्जिह्वावा न्याध्योगोसित्ताद्वापंगणाद् सितोव्वा
पंगणो ७ हारितात्करयपाद्धरित्ऽः कश्यपऽः शिल्पा कश्यपा
च्छिल्पऽः कश्यपऽः कश्यपाम्नेध्रुव्रेऽः कश्यपोनैध्रुविर्वाचो वागम्भि-
ण्याऽऽम्भिएयादित्यादा दित्यानीमानि शुक्लानियजु ६ पिवाज
वल्केयना ख्यायन्ते ॥ ११ ॥ वंशोक्ताऽऽपयस्तृप्यन्ताम् ॥ ॐ तत्सवितु-
रिति चतुर्वारं गायत्री पठेत् ॥ हति प्रति वंश वंशोक्ता नामृपीणां तर्पणम् ।
ततः तत्सं वितुर्वं सावित्र्याश्चतुः कृत्वाऽऽनुत्रुवणम् । सर्वेषांतदन्ते
ॐ विरताः स्म इतिसकृदुच्चैर्वृथात् ॥ अध्यायाः—इषेत्वा ॥ १ ।
कृणोसि ॥ २ ॥ समिधाग्निम् ॥ ३ ॥ यदंम् ॥ ४ ॥ अग्ने-
स्तनूऽः ॥ ५ ॥ देवस्यत्वा ॥ ६ ॥ व्वाचस्पतये ॥ ७ । उपयाम
गृहीवोसि ॥ ८ ॥ देवसवितः ॥ ९ ॥ अपो देवाऽः ॥ १० ॥
युञ्जानऽः प्रथमम् ॥ ११ ॥ इशानो रुक्मऽः ॥ १२ ॥ मयि
गृह्णामि ॥ १३ ॥ ध्रुवक्षितिध्रुवयोनिऽः ॥ १४ ॥ अग्ने जातान्
॥ १५ ॥ नमस्ते ॥ १६ ॥ अश्मन्नुजम् ॥ १७ ॥ व्वाजश्च
॥ १८ ॥ स्वादीन्त्वां ॥ १९ ॥ ह्यत्रस्ययोनिः ॥ २० ॥ इममं
॥ २१ ॥ तेजोसि ॥ २२ ॥ हिरण्य मग्मंऽः सम् ॥ २३ ॥
अश्वस्तूपरऽः ॥ २४ ॥ शादन्द्विऽः ॥ २५ ॥ अग्निश्च
॥ २६ ॥ समास्त्वा ॥ २७ ॥ हाता यक्षत् ॥ २८ ॥ समिद्धोऽ
अञ्जन् ॥ २९ ॥ देवसवितऽः ॥ ३० ॥ सहस्र शीर्षा पुरुषऽः
॥ ३१ ॥ तदेव ॥ ३२ ॥ अस्या जरासः ॥ ३३ ॥ यञ्जाप्रतः
ऽः ॥ ३४ ॥ अपेतऽः ॥ ३५ ॥ ऋच वाचम् ॥ ३६ ॥ देव-
स्ववा ॥ ३७ ॥ देवस्य ॥ ३८ ॥ स्वाहा प्रणोम्यः ॥ ६३ ॥

ईशावस्यम् ॥ ४० ॥ ॐ हिरण्ययेन पात्रेण सत्र्यस्यापिहितम्भुगम्
 योसा वादित्ये पुरुष ऽः सोसावहम् ॥ ॐ ३म् ॥ लम्ब्रह्म ।
 अध्यायोक्त ऋषयस्तुप्यन्ताम् ॥ अथकाण्डिकाः—ऋतुमुपैरयन्
 ॥ १ ॥ सर्वै कपालान्ये वान्यत्तरऽउपपद्वाति ॥ २ ॥ सर्वै स्त्रुच
 ऽः संमाष्टि ॥ ३ ॥ हिङ्गुकृत्या प्रवाह ॥ ४ ॥ सर्वै प्रवराया
 श्रानयति ॥ ५ ॥ ऋतपोह्वै देवेपुयज्ञोभागमीपिरे ॥ ६ ॥
 सर्वैपूर्णशारया कस्तानपा करोति ॥ ७ ॥ मनत्रे ह्वै प्रात ऽः
 ॥ ८ ॥ सयत्राह ॥ ९ ॥ स सयद्वा इत रचेतस्व सम्भरति
 ॥ १० ॥ उद्धृत्या हवनीयम्पूर्णाहुति जुहोति ॥ ११ ॥ सूर्योहवाऽ
 अग्नि होत्रम् ॥ १२ ॥ अथ हुतेमि होत्रमुपतिष्ठते ॥ १३ ॥
 प्रजापतिर्हवा इद मप्रऽएकऽएनास ॥ १४ ॥ पितामहा इषिषा ह्वै
 देवा वृत्रजन्तु ऽः ॥ १५ ॥ देवयजनं योपयन्ते ॥ १६ ॥ दक्षि-
 णेना हवनीर्य प्राचीन धीवे कृष्णाजिनेऽउपस्तृणाति ॥ १७ ॥
 सतपदान्यनुनि ऋमति ॥ १८ ॥ शिरो वै यज्ञस्यातिथ्य वाह
 प्रायणियोदयनीयो ॥ १९ ॥ तथ ऽप्य पृार्ध्याव्यर्षिप्रूर्यूणाजो
 भवति ॥ २० ॥ उदरभे वास्यसदऽः ॥ २१ ॥ अग्निमादत्ते ॥ २२ ॥
 तद्यत्रेत्स्नवृत्तो होता होत्पदन ऽवपदिशति ॥ २३ ॥ प्रजा पति-
 र्ब्रजा ऽः मसृजानो रिरिचानऽदपामन्यत ॥ २४ ॥ प्राणो हवाऽ
 अस्थोपा ध शु ऽः ॥ २५ ॥ चतुषोहवाऽअस्य शुक्रा मन्यिनी
 ॥ २६ ॥ भवयित्वा समुप हूता ऽः स्मऽइत्युस्त्वोत्तिष्ठति ॥ २७ ॥
 मनोहवाऽअस्यसप्रिता ॥ २८ ॥ आदित्येन चरुणोदय नीयेन
 प्रचरति ॥ २९ ॥ प्रजापतिर्वाऽएव यद ध शु ऽः ॥ ३० ॥
 देवाश्च ताऽअसुसश्च ॥ ३१ ॥ अवस्तु यज्ञवाज्यविलापिनी चाहाय
 ॥ ३२ ॥ अरथ्योरमो समारोह ॥ ३३ ॥ केशवस्य पुरुषस्य
 ॥ ३४ ॥ आग्ने वांष्टा कपाल ऽः पुरोडाशो भवति ॥ ३५ ॥
 असदाऽइदममऽधासोन् ॥ ३६ ॥ प्रजापति परमिर्ल्पाएयन्गध्यान्
 ॥ ३७ ॥ प्लष्टे देवा ऽअत्रु रन् ॥ ३८ ॥ अवेतमव ऽग्न त्वेन
 ॥ ३९ ॥ पण्डित्याय निष्पञ्चा ऽप्लाऽआपो भ्रवन्ति ॥ ४० ॥
 न्या ध सिद्धो ध विभवन्ति ॥ ४१ ॥ रुक्मप्रति मुख्य-
 मिर्भति ॥ ४२ ॥ न्यनी नामे वाग्नि विभ्रदित्याहु ऽ ॥ ४३ ॥
 गार्ह पत्य वेप्यन्पलाश शागया व्युद्भवति ॥ ४४ ॥ अयावो
 नैष्टोर्नोर्हन्ति चिनोर्गार्हपयोभरति ॥ ४५ ॥ आरभन्नमि गृहीते
 व्येप्यन् ॥ ४६ ॥ वृमंमुस्रधाति ॥ ४७ ॥ प्राणुद्धत ऽउपपद्वाति
 ॥ ४८ ॥ द्विवावाचिमुपपद्वाति ॥ ४९ ॥ तृवावाचि वि मुपपद्वाति

। ५१ ॥ चतुर्योचितिमुपदधाति ॥ ५२ ॥ पञ्चमी चितिमुपद-
 धाति ॥ ५३ ॥ नाकसद् उपदधाति ॥ ५४ ॥ ऋतव्याऽऽपदधाति ॥ ५५ ॥
 अथातऽःशतरुद्रियं जुहोति ॥ ५६ ॥ उपवसथीये हन् प्रात रुद्रितऽआदित्ये
 । ५७ ॥ अथातो व्यैस्वानरं जुहोति ॥ ५८ ॥ अथातो राष्ट्र भृवो जुहोति
 ॥ ५९ ॥ अथातऽः पयोवृत तायै ॥ ६० ॥ अग्निरेष पुरस्ता षीयते
 । ६१ ॥ प्रजापतिऽःस्वर्गं लोकं मज्जिगां च सत् ॥ ६२ ॥ प्राणो गायत्री
 ॥ ६३ ॥ प्रजापतिर्विस्त्रस्तम् ॥ ६४ ॥ तस्य वाऽऽप्तस्थाऽऽग्नेऽः ॥ ६५ ॥
 हेतेदग्रे ॥ ६६ ॥ सम्बस्मरो वै यज्ञऽः प्रजापतिऽः ॥ ६७ ॥ त्रिद्वै पुरुषो
 जायते ॥ ६८ ॥ वाग्धवाऽऽप्तस्याग्नि होत्रस्याग्नि होत्री ॥ ६९ ॥ उद्दालको
 हाहण्डा ॥ ७० ॥ उर्वशी हाप्साऽः ॥ ७१ ॥ भृगुर्द्वै रुणिऽः ॥ ७२ ॥
 पशु बन्धेन यजसे ॥ ७३ ॥ तद्यथा हवै ॥ ७४ ॥ अयं यज्ञो योयं पवते
 ॥ ७५ ॥ समुद्रं वाऽऽप्ते प्रचरन्ति ॥ ७६ ॥ यद्वा लोके ॥
 ७७ ॥ दीर्घसत्रं च हवाऽऽप्तऽऽपयन्ति ॥ ७८ ॥ तदाहुर्य देवदीर्घ
 सत्री ॥ ७९ ॥ सोमो वै राजायज्ञऽः प्रजापतिऽः ॥ ८० ॥ विश्व रूपं वे
 द्याष्ट्रे भिन्नोऽहन् ॥ ८१ ॥ इन्द्रस्य वै यत्र ॥ ८२ ॥ एतस्माद्देवज्ञात्पु-
 रुषो जायते ॥ ८३ ॥ ब्रह्मो दनं पवति ॥ ८४ ॥ प्रजापतिदेवेभ्यो यज्ञान्व्या-
 दिशत् ॥ ८५ ॥ प्रजापते रक्ष्यस्वयत् ॥ ८६ ॥ प्रजापति रक्षामत् ॥ ८७ ॥
 अथ प्रातर्गोतमस्य ॥ ८८ ॥ पुरुषोद् नारायणोऽकामयतः ॥ ८९ ॥ ब्रह्म
 वैस्वम्भु तपोऽतप्यत ॥ ९० ॥ अथास्मै श्मशानं कुर्वन्त्वयौः शान्तिः
 ॥ ९१ ॥ देवा हवै सत्रं नृपेदुऽः ॥ ९२ ॥ अथातो रौद्रिणी जुहोति ॥ ९३ ॥
 सत्रं तृतीये हन् ॥ ९४ ॥ द्वया ह प्राजा पत्याऽः ॥ ९५ ॥ ह्यत् वाला कि
 हान् चानोगायंऽऽस ॥ ९६ ॥ जनको हवै देहऽः ॥ ९७ ॥ जनकऽ ह-
 वै देहं याज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ९८ ॥ पूर्णमद्ऽः पूर्णमिदम् ॥ ९९ ॥ श्वेत
 नेतुर्द्वाऽऽऽरुणोयऽः ॥ १०० ॥ प्रारुणोपुत्रा दासुरि वासिनः । चतुर्दश-
 ऋषेऽऽध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ शतस्थानानि—ॐ इपेत्वां
 ॥ १ ॥ परिते ॥ २ ॥ अग्नेनयं ॥ ३ ॥ उपयाम गृहीतोसि सुशम्मांसि
 ॥ ४ ॥ [प्रथमा] सोमस्यत्विणि ॥ ५ ॥ परस्याऽऽअधि ॥ ६ ॥ अन्याव-
 ॥ ७ ॥ राक्ष्यमि ॥ ८ ॥ नमो हिरण्य वाहये ॥ ९ ॥ इन्द्र मम् ॥ १० ॥
 इनीते ॥ ११ ॥ अज्ञात्परिभृतः ॥ १२ ॥ अश्विना तेजसा ॥ १३ ॥
 पृथिव्यै स्वाहा ॥ १४ ॥ प्रजापतये च ॥ १५ ॥ तेऽमस्य ॥ १६ ॥ तनून
 पात्यऽः ॥ १७ ॥ अयमिह ॥ १८ ॥ अनुनऽः ॥ १९ ॥ इत्यमे ॥ २० ॥
 ([शोदं पञ्चसप्ततिः] ॥ हिरण्यमेतं पान्त्रेणः । ॐ इन्द्राय । शतोक्ता
 ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ त्वत्सुपैत्यन ॥ १ ॥ तद्युदेयं पितृषु ॥ २ ॥ अगा-
 ज्यसिप्वाम्यां पवित्राभ्याम् ॥ ३ ॥ पृथ्वीवायविष्टयेति ॥ ५ ॥ यमूनां

तानि यदा गृह्णाति ॥ ७३ ॥ योगनौतिष्ठन् ॥ ७४ ॥ कतमऽव्यात्मेति
 ॥ ७५ ॥ अथ हैन मनुष्याऽऽरुचु- ॥ ७६ ॥ अथ यामिच्छेद्गर्भन्धीतेति ॥ ७७ ॥
 सप्त सदस्र पत् शत शेष चतुर्विंश शति ॥ ७८ ॥ प्राशनीपुत्रा दासुरि
 तसिनः ॥ ७९ ॥ चतुर्विंश ऋण्ड शतोक्ता ऋण्डस्तृप्यन्ताम् ॥ अथ
 'प्रपाठका'—त्रत सुपैख्यन् ॥ १ ॥ चतुर्धाविहितो हवाऽअपेग्निरास
 ॥ २ ॥ तैराऽआर्द्राऽस्युऽ ॥ ३ ॥ स सुचोत्ररा माघारयिष्यन् ॥ ४ ॥
 यज्ञेन वैदेवाऽ ॥ यज्ञेन वैदेवा दिवम् पोदकामन् ॥ ६ ॥ स वैस्यु
 चोऽब्रूहति ॥ ७ ॥ स यद्वाऽइत् श्येतरचसम्भरति ॥ ८ ॥ वरुणो हैनद्राव्य
 कामऽआदधे ॥ ९ ॥ यत्र वै प्रजापतिऽ प्रजाऽससृजे ॥ १० ॥ प्रजा-
 पतिर्वाऽएते नाम्ने वज्ञेने जे ॥ ११ ॥ महा हरिषा हरै देवा घृत्र
 जप्नुऽ ॥ १२ ॥ देवयजन योप तन्ते ॥ १३ ॥ वाचयच्छति ॥ १४ ॥
 नाडे कृष्णा त्रिन मास्तृणाति १५ ॥ नद्यऽएपपूर्वोर्ध्वो वपिष्ठ स्युणा
 रानो भवित ॥ १६ ॥ विजामानो हैवास्यधिष्ययाऽ ॥ १७ ॥ पाश
 कृत्वाऽप्रतिमुञ्चति ॥ १८ ॥ सोत्यप य जति ॥ १९ ॥ प्राणोप्रसे हवा
 अस्योऽयु छ पा २० ॥ आत्मा हवाऽअहराप्रयणऽ ॥ २१ ॥ धन्तिनाऽऽ
 तयज्ञम् ॥ २२ ॥ सवाऽअवभृथुमभ्य वैति ॥ २३ ॥ तद्यत्रै तद्वाऽदशाहेन
 व्व्यूढ रश्चन्द्र सायजते ॥ २४ ॥ देवारचवाऽअसुरारच ॥ २५ ॥ न हऽस्पत्यन
 चरुणा प्रवरति ॥ २६ ॥ सवाऽअपऽ सम्भरति ॥ २७ ॥ मैत्रावरुण्या
 पयस्य या प्रचरति ॥ २८ ॥ असद्वाऽइदमऽआमीत ॥ २९ ॥ प्राजा-
 पत्यरश्च रद्वाऽआलम्भन्ते ॥ ३० ॥ प्रदीप्ताऽपतेग्नयो भरन्ति ॥ ३१ ॥
 तस्याऽएनस्याऽआपाढा पूर्वा करोति ॥ ३२ ॥ रुक्म प्रति मुच्यन्ति
 ॥ ३३ ॥ गार्हपत्यञ्छेप्यन् पलाश शारङ्गाया व्युद् हति ॥ ३४ ॥ अथ
 दर्भस्तम्भ मुपदधाति ॥ ३५ ॥ आत्मन्नग्निं गृह्णीतधेप्यन् ॥ ३६ ॥ कूर्म
 मुन दधाति ॥ ३७ ॥ प्राणभृतऽऽपदधाति ॥ ३८ ॥ अथ विरव ज्योतिषमुन
 दधाति ॥ ३९ ॥ अथा तान्वा वृत्तम् ॥ ४० ॥ गार्ह पत्यमुप दधाति
 ॥ ४१ ॥ अथात शत्रुद्विय जुहोति ॥ ४२ ॥ प्रत्ये त्यग्निं मह रिष्यन्
 ॥ ४३ ॥ अथ कान्यज्ञ ष्टु जुहोति ॥ ४४ ॥ अथ प्रातऽमाव स्तुवार
 मुपा करिष्यन् ॥ ४५ ॥ अग्निरेप पुस्ता शोयते ॥ ४६ ॥ अथा तदच
 यन स्येन ॥ ४७ ॥ सम्यत्सर्पेरे प्रजापतिऽग्निऽ ॥ ४८ ॥ नेयवाऽइदममे
 सदासोमेव सदासोन् ॥ ४९ ॥ संवत्सरोर्यै यज्ञऽ प्रजापतिऽ ॥ ५० ॥
 अपिवाऽप्रवहि ॥ ५१ ॥ प्रजापतिर्वै प्रजाऽमृचमानोऽवप्यन्
 ॥ ५२ ॥ अथा तऽन्वाध्याय प्रशऽमा ॥ ५३ ॥ अथ वैयज्ञो
 योर्न पयतो ॥ ५४ ॥ पुरुष छद् नागरण पजारतिरुवार ॥ ५५ ॥
 सोमो वै राजा यज्ञऽ प्रजापति ॥ ५६ ॥ प्रजापतिर्वै नमृचन्त ॥ ५७ ॥

ब्रह्मोद्गमं पचति ॥ ५८ ॥ नियुक्ते पशुषु । ५९ ॥ प्रमुच्यार्थं दक्षिणं नखं
 विम् ॥ ६० ॥ पुरुषो ह नारायणोऽकामयत ॥ ६१ ॥ देवाह वै सप्रनि-
 पेदुः ॥ ६२ ॥ सयत्रैता ए होतान्वाह ॥ ६३ ॥ इवाह प्राजाप्रस्थाः । ६४ ॥
 ह्यत वा नाकिर्हानु-वानो गार्ग्यः ॥ ६५ ॥ अथ हैन भुङ्गुर्लाहायतिः
 पमच्छ ॥ ६६ ॥ जनक ए हृष्येदेर्ह याज्ञवल्क्यो जगाम ॥ ६७ ॥ भूमि
 रन्त रिक्तं सौरति । ६८ ॥ प्राश्नो पुत्रादासुरि वासिनः । ६९ ॥ इति चतुर्दश
 काण्डे प्रपाठोक्ता ऋषय स्तृप्यन्ताम् । इति प्रपाठकाः ॥ अथ ब्रत विम्
 जन् न यमिन्हर्त्तात्र मुल्लोक मेत्यव नियाम्याभ्यो प्रहाभ्यानि
 गृह्णतेऽय गृह्णतिः सु ब्रह्मण्या माह यतिता वाऽप्यतास्ताति दश भवन्ति
 ताऽप्यताऽअङ्गुलयोमध्यमेय तृतीयां चितिः सद्गोवा नाथर्व्व ए शस्वत्साऽ
 ब्रह्मैतदुवाचमे वाऽप्यताऽयास्ते यत्सौवामणोमर्यादायाऽएवलोष्ट मोह्य
 प्राश्नो पुत्रा दासुरिगसिन ० ॥ १ ॥ अन्त्यकारण्डोक्ता ऋषयस्तृप्य-
 न्ताम् । एवं ब्रत विसृजत परमाङ्गतिङ्गच्छतीति तस्माद्धोतृचमसान्
 तस्मिन् समुपह्वमिष्टया स्मिन्तोऽभ्याधति द्वादशवा त्रयोदश वा
 दक्षिणा भवन्ति याथा नाग्निर्वा यत्यस्यममाप्रा तावत्तद् भवति तस्मा-
 त्समान् सन्त्यन्तास्तस्मादिमे प्राणऽउपरिष्ठाद् सञ्जन्ताः सजादे
 नैर्दिव जो लोहा इति ब्रह्मणो ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे नमः कशिनीरेषमाऽ
 आप्ये तर्हि मजा जायन्ते तस्मादिमावात्मानमग्निने वाह तस्मादुहै
 तस्त्रीराश्च पितृश्चन सदस्यन्तेऽनाजसनेयनयाज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते ॥२॥
 चतुर्दशकाण्डे अन्त्य कार्ण्डोक्ता ऋषय स्तृप्यन्ताम् ॥ नमस्ततः—
 ततः तदेतदचार्युक्तं न मृषा आन्तयद्वन्ति देवा इति नहैवेव विदुषः
 क्रिन्मनमृषा भ्रान्तं भवति तयो हास्ये तस्सर्वे देवाऽभ्यवन्ति ॥ ११ ॥
 इति नमस्कारः । विसंजनम्—अं वसिष्ठ उवाच ॥ एते देवयन्तस्त्वेमहं ।
 उष्यन्तु मरुतः मुदानः ५६८८ प्यार्थं वासवा १५६३४ स्व स्वप्रयान्ति
 सत्रेण ॥ ब्रते प्रास्यन्—अं समुद्रं च स्वार्हान्निरिच्छद्द स्वार्हो
 देवर्षेभ्यो विना रङ्गद समाहा मित्रा बभूवो गच्छ स्वार्हांऽहो रात्रे गच्छ समाहा
 छन्दःसि गच्छ समाहा हवाचमृषिर्षा गच्छु स्वार्हा यत्तद्गच्छ स्वार्हामोमत्रत्वं
 न्माहादिभ्यन्मभोगद् स्वार्हाग्निर्वैरवानाङ्गच्छ समाहा मनोमैहादिवद्दि
 यन्ते यमोगद्गु मग्ग्योति—श्चिरीन्मस्मना गृण समाहा ॥ ११ ॥
 तवो विराचमर्न इयुः ॥ आचार्यादि प्राणेषु पूजन पूजना ॥ (नेम्बो
 इति तं देवा प्राणजसिगो गृहीयान् । हनम्योऽमर्गाणाकर्म कर्मणः
 साङ्गताविद्वान् यसायकारेण यवा शक्ति भाङ्गणानभोज विष्ये इति
 सङ्कल्प्य ॥) यंणम्—यनेनाध्यायोऽमर्गं कर्माङ्गत्वयेन कृतेन अपि
 पूजन तर्पणादि कर्मणा श्रीमन्पाण्ड्यरमेऽपरः प्रीयतां न मम । अं तस्स-
 रङ्गापेण मान् ॥ इति भाष्योपयोगः ॥

अथ ऋषिश्राद्धम् ।

कृत प्राणवाभोदेराकालो सङ्कृत्य—उत्सर्गाङ्गभूत मृषि भ्राद्ध महं करिष्ये ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि० ॥ १ ॥ इति मन्त्रेणदिग्बन्धः ॥ ऋषिश्राद्ध-स्योपहाराः शुचयोभवन्तु ॥ इत्युपहार प्रोक्षणम् । देशकाल पात्रसम्पदस्तु ॥ अरुन्वती सहित कर्यपादि स्व ऋषयः यथादत्तं विभागं वः स्वाहा अरुन्वतीसहित कर्यपादि स्व ऋषयः, यथा दत्तं गन्धा चर्चनं यथायथा विभागं वः स्वाहा । इति गन्धादि दानम् । ऋषिश्राद्ध साङ्गता सिद्धयर्थं सप्त मङ्गला कान् ब्राह्मणान् यथाकालं यथा सम्पन्नान्नेन तर्पयिष्ये । तेन अरुन्वतो सहित कर्यपादि स्व ऋषयः प्रीयन्ताम् । ऋषिश्राद्ध साङ्गता सिद्धयर्थं हिरण्यनिष्कयभूतां दक्षिणा आचार्यायं तुभ्य महं सम्प्रददे आचार्यः । ॐ क्रौंदा रक्षमाऽअदात्कामोऽदात्कामायादान् । कामो दाता कामः-प्रतिगमहीता कामैतत्ते ॥ २५५ ॥ इति मन्त्रं पठेत् । उपविष्टेषु ब्राह्मणेषूद्गादि दानम् ॥ तद्यथा—ॐ शिवा आपः सन्तु । सौमनस्यमस्तु । अक्षतं चारिष्टं चास्तु । अघोरा ऋषयः सन्तु । सर्वत्र सन्विति गिप्राः प्रति वचनं दद्युः । उत्सर्गं कर्मणो न्यूनादि रिक्त दोष परिहारार्थं नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसां दक्षिणां सम्प्रददे ॥ प्रार्थना—उत्सर्गाङ्गभूतं ऋषिश्राद्धं परिपूर्णं मिति आचार्यादयः प्रति वचनं दद्युः । ततः सहनोस्तु सहनो वतु सहनऽइदं वीर्यं वदस्तु ब्रह्मऽइन्द्रस्तद्वेदयेनयथा नविद्विषामह इति ॥ पश्चात्—उभाक वी० इति मन्त्रं पठेत् ॥ इति ऋषि श्राद्धम् ॥ इदं ऋषि श्राद्धं कृता कृतं अस्ति ॥ इति श्रावणी पद्धति अध्यायोपाकर्मः पारस्करगृह्यसूत्रे—अथातो ऽअध्यायोपाकर्मापिधीनां प्रादु- भवि अ णेन आषण्यां पौर्ण मास्याऽः श्रावणस्यपञ्चम्यऽः हस्तेनवाज्यभागाविष्टा ज्याहुती जुहोति । प्रथिव्याऽइत्यग्नेदे ऽन्तरिक्षायवायव इतियदिवेसूर्या येति मामजुर्वेदेदे दिग्भ्य इन्द्रमसऽइत्य थर्ववेदे ब्रह्मणे छन्दोभ्यश्चे तिसर्वत्र प्रजापतयेदेवेभ्यो ऋषिभ्यः अद्वायै मेनायै सदस्सपतयेऽनुमतये ऽइति चैत देवत्रतोद्देशेन विसर्गेषु सदस्सपति मित्यक्षत धानास्त्रि सर्वेऽनुपठेषु हुत्वा हुत्वाहुत्वाहुत्वास्तिस्रस्त्रिस्त्रः समिध ऽआद्भ्युराद्राः सप्तलारा

प्रश्न गन्धम्—शरीर शुद्धयर्थं पञ्चगव्यप्राशनं कार्यम् ॥

पञ्च गन्धं पवित्रं तु आहरे ताम्र भाजने (१) गायत्र्या चैव गोभूष (२) गन्धं द्वादशैति गोमयम् (३) आप्याय स्वैति चर्चरं (४) इतिकल्प्येति वेदवि (५) पिनेत्रोति शुक्र मित्राञ्जं (६) देवस्य स्वा कुशोदम् ॥

घृताका. सावित्र्या ऋक्ष चारिणश्च पूर्व कल्पेन शत्रो भवति
 त्यक्षत्रवानाऽयत्नादन्तः प्रारनीयुर्दधि ऋक्षेऽदिति दधि भक्षेयुः स
 यावन्तगणमिच्छेत्तावन्तस्तिताना कर्षकल केन जुहुयात्सावित्र्या शुक्र
 ज्योतिरित्य नु वाकेन वाप्रशानान्ते प्रत्यङ्क मुखेभ्यऽउपरिष्टंभ्य ॐ
 कारमुक्त्वात्रिरव सावित्रीमध्याया दीन्प्रत्रयादपि मुखानि बह्व चाना
 पर्वाणि छन्दो गाना ७ सूक्ताभ्या यव्यंशाना ७ सर्वे जपन्ति
 महनांस्तु महनोवतुसह न ऽइह वार्यं वदस्तु ऋक्ष ऽइन्द्रस्तद्वेद येन
 यथा न विद्विषा महऽइति त्रिरात्र नाधीयीर ह्योम नया नामनिहृ-
 न्तनमेके प्रागुत्सर्गात् ॥

प्रथोपाकर्मप्रयोगाः—

[गुरु. इमौ पादौ प्रजाल्य द्विराचम्याव सव्याग्रे लौकिकामेर्वा
 पश्चाच्छिद्राप्यै सहप्राङ्मुख उपविश्य प्राणा याम त्रयं कृत्वा देशक
 लीमङ्गीत्य श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं अध्यायोपाकर्मणि पञ्च भूमस्फार
 पूरकं मग्निस्थापनमह करिष्य इति मङ्गल्य' पञ्चभूमस्फारान्कुर्यात् ।
 तेच—दर्भे. परि समुद्र २—गोमयोदकेनो पलिष्य । ३—मुखेणो
 लिष्य । ४—अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुद्धृत्य । ५—उदकेनाभ्युक्ष्य ॥ तत्र
 अग्निं प्रतिष्ठाप्य पात्र स्थापनादिं कुर्यात् । तत्र पूर्वेषु ऋक्षणो-
 गमनम् । अग्रे हतत पात्रासादनम् । द्वेषवित्र ताघ्नमयी आज्य
 स्थाली । पात्रारय समिव । प्राञ्चा वाद्योरो । समिद्धतमे आज्य
 भागो । नित्त होम सावित्री मन्त्रेण । पूर्णपात्र दक्षिणा । त्रिरात्र'
 लोमनया नामनि कृन्तनम् ॥) ॥] अग्निच्छन्ददेवतास्मरणम्—इषेत्वे
 त्यादिकस्य रश्मिद्वान्तस्य माध्यन्दिनीयस्य वाज मनेय तस्य यजुर्देव
 न्नायस्य विरसा नृपि । वायुर्देवता । गायत्र्यादीनिसर्वाणि छन्दार्ति ।
 अग्न्यायोपाकर्मणि विनियोग ॥— देवताभिध्यानम्—तत्र—प्रजापतिम् ।
 इन्द्रम् । अग्निम् । सोमम् । पृथिवीम् । अग्निम् । ब्रह्माणाम् ।
 इन्द्रा ७ वि । अन्तरिक्षम् । वायुम् । ब्रह्माणम् । छन्दाऽसि ।
 दिवम् । मूर्ध्नाम् । ब्रह्माणम् । इन्द्रा ७ सि । दिशः । चन्द्रम-
 सम् । ब्रह्माणम् । छन्दा ७ मि । प्रजापतिम् । देवान् । श्रयीन् ।
 ध्रुवम् । मेरुम् । सप्तसप्ततिम् । अनुमतिम् ॥ एताः प्रवानदेवता
 चाग्नेन । महमथपतिम् । रताभिः । मरिचार्तिने । अग्निस्तिष्ठ
 कृत्वा नारोपेण ! अग्निम् । वायुम् । मूर्ध्नाम् । धम्ना पदयो ।

अग्नीवहणी । अग्निम् । वरुणम् । सविहारम् । विष्णुम् । विरवा-
न्देवान् । मरुतः । स्वर्कान् । वरुणम् । प्रजापतिम् । एता अद्भ
प्रधानादीवता अस्मिन्कर्मण्यहं यद्ये ॥

[ब्रह्मवरणम् (दक्षिण तो ब्रह्मासनमास्तीर्य । अमुक शर्मन्
अस्मिन्कर्मणित्वं ब्रह्मा' भव । भवामीति प्रति वचनम् । ब्रह्मातृष्णीं
आसनावलोकनं-आसनात्तृणनिरसतञ्च कृत्वा उपविशेत् ॥ अग्नेरु-
त्तरतः प्रणीतार्थमासनद्वयनिधाय । प्रणीता चमसं वाम हस्ते कृत्वा
आत्माभिमुखं जलेनापूर्य प्रथमा सनेनिधाय चमस दण्डमालम्ब्यब्रह्मणां-
श्रवणलोक्य तेन सङ्केतादिना ऽनुद्घातः प्रणीयोत्तरासनेनिदध्यात् । तत
उद्गमैः प्रागमैः कुशैरग्निं परिस्वीर्य । अथवदासाद्य । अग्नेरुत्तरतः
प्राक्संस्थ मुदकसंस्थं वा पात्रासादनम् । पवित्रच्छेदनार्थं दर्भास्त्रयः ।
पवित्रे द्वे । प्रोक्षणी पात्रम् । आज्य स्थाली । सम्भार्जन कुशास्त्रि
प्रभृतयः । उपयमनकुशाः सप्तप्रभृतयः । समिधस्त्रि प्रभृतयः । सुवः ।
आज्यम् । धानाः पूर्णं पात्रं च ॥

अधोप कल्प नीयानि—प्रति शिष्यं नव नव समिध आर्द्राः
मपत्रा औदुम्बरस्य । दधिभक्षणाथं । लौकिका धाना वाहु मात्र
मौदुम्बर काष्ठं तिल स्थापनस्थाने सर्पफणाकार मार्कर्पफलकम् ।
तिलाश्चेति । पवित्र करणम् । द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय
द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रदाक्षणी कृत्य सर्वान्युगपत्कृत्वा नामिका
द्दृष्टाभ्यां—क्षित्वा तानुत्तरतः प्रक्षिपेत् । प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतो
त्तरतो निधाय । प्रोक्षणीपात्रे पात्रान्तरेण प्रणीताद्भि
स्तासांप्रोक्षणम् । स पवित्र हस्ते नोत्तानेन, पात्रप्रोक्षणम् ।
आज्य स्थाल्याः प्रोक्षणम् । सं मार्गं कुरानां प्रोक्षणम् ॥ उपयमन
कुशानां प्रोक्षणम् । समिधांप्रोक्षणम् ॥ सुवस्यप्रोक्षणम् ॥ आजस्य
प्रोक्षणम् । धानानां प्रोक्षणम् ॥ पूर्णं पात्रस्य प्रोक्षणम् ॥ प्रणीताम्भ्योर्मध्ये
सञ्चरे प्रोक्षणीनिधाय । कुशोप ग्रहेण आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः ।
आज्यापि श्रयणम् । ततो ज्वल दुल्मुकेन पर्यग्निकरणम् । इतरथाशुचिः ।
अर्वाश्रिने सूत्रंशप्रवत्ये । संमार्गं कुशैः संमृश्य । अग्नेमूलादारभ्याप पर्यन्तं
मूलेभ्य दारभ्यमूलपर्यन्तं प्रणीतोद्भवेनाभ्युक्ष्य । पुनः प्रवत्ये । दक्षिणतो निद-

(१) औदुम्बरस्य या शाला फलक द्वय संयुता । इत्थं फलकं
नामाप्यश्लेः परि क्लृप्तम् ॥ २ ॥ एताः सप्तविंशत्यद्रुतयः आज्येन तत-
प्रेक्षिणधानानि धारणम् ॥ सुवेण धाना श्रवदाय । मदमहाति मद्भुतमित्य
यनेन मन्त्रेण उहवाय ॥

प्यात् । आद्य मुद्रास्य । उत्तरतो निधाय । ततोऽग्नेः परिचम तो निदध्यात् ।
 पवित्राम्यामाद्यमुत्पूय । प्रोक्षणीरचपूर्वं बधुत्पूर्वं । आज्यमवेक्ष्य । अथ द्रव्य-
 निरसनम् । उपपमन कुशानादाय । तिष्ठन् समिधोऽभ्यादाय । प्रोक्षत्युत्क-
 शेषेण सपवित्रेण हस्ते नेहानमारभ्ये शान्त पर्यन्तं प्रदक्षिणमर्धित पथुक्ष्य ।
 इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । सोपग्रहं स्वयं हास-
 मुचार्त्तं दृदिनिधाय दक्षिण जानु निपातः ब्रह्मणोन्वारम्भः । दक्षिण
 हस्तेनक्षुत्रेण होमः ।] मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये
 नमम ॥ त्यागान्तेद्रव्य प्रक्षेपः । प्रोक्ष्यणीमात्रे संस्त्रवधारणम्) । ॐ
 इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्रायय नमम ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये
 नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम ॥ १ ॥ ऋग्वेदे—सप्त
 विंशत्याहुतयः । ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै नममः । ॐ अग्नये
 स्वाहा इदमग्नये नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । छन्दोभ्यः
 स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो नमम् ॥ यजुर्वेदे—ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदं
 मन्तरिक्षाय नमम ॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे नमम । ॐ ब्रह्मणे
 स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो नमम । साम-
 वेदे—ॐ दिवे स्वाहा इदं दिवे नमम । ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय
 नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दो-
 भ्योनमम ॥ ४ ॥ अथर्वण वेदेः—ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो नमम ।
 ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदंचन्द्रमसे नमम । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे
 नमम । ॐ इन्द्रोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यो नमम । ॐ प्रजापतये स्वाहा
 इदंप्रजापतये नमम । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवभ्यो नमम । ॐ ऋषिभ्यः
 स्वाहा इदं ऋषिभ्यो नममः ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै नमम । ॐ
 मेवायै स्वाहा इदं मेवायै नमम ॐ सप्तसप्ततये स्वाहा इदं सप्तसप्ततये
 नमम । ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अनुमतये नम । ॐ सप्तसप्तवि-
 मद्भूतम् पियमिन्द्रस्य काम्भ्यम् । सन्निधेधामयासिप छे स्वाहा ॥ १११ ॥
 इदं सप्तसप्ततये नमम । (इमं मन्त्रं गुरुणायपठ्यमानं शिष्या आप
 सदानुपठेयुः ॥ तत उदुम्पर समिद्रितय मन्त्रिचार्यं हाते गृहीत्वा उत्थाय
 प्रोक्षन्मुपसिपन्तः) ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ २ ॥ स्वाहा इदमग्नये
 नमम । (इत्युच्चार्यं पक्षां समिधमादधुः । एव मन्त्रेण द्वितीयां तथा
 तृतीयां । ततः सर्वं उपसिरोयुः । आचार्यः पुनः । श्रुवेष्टाधाना अवा
 दाय ।) ॥ द्वितीयांथानाहुतिं पूर्यन् ॐ तत्सवितुम् ॥ ११ ॥ स्वाहा

(२) पंथाः सप्तविंशत्या हुतयः आग्नेन ततः रोक्षित धानामिपारम्भम् ॥
 पुरेष्टाधाना चरुदाय । सप्तसप्तविमद्भूत मित्पनेनम-नेत्युत्तरम् ॥

इदमग्नये नमम ॥ ततस्तिष्ठोऽपराःसमिधो घृत्तेनाभ्यञ्ज्य । उत्थाय प्राङ्-
मुखास्तिष्ठन्तः—ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा इदमग्नये नमम ।
(इत्युच्चार्य एकां समिधमाद्भ्युः ।) पुनः ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा
इदमग्नये नमम । एवं द्वितीया । पुनः ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा
इदमग्नये नमम ॥ एवं तृतीयां हुत्वा चार्योधाना हुर्तिजुहुयात् । ॐ सद-
सस्प ० ।-स्वाहा इदं सद सस्पतये नमम ॥ मन्त्रानुपठनं (शिष्याणा-
मपि-समिन्वयं पूर्वं वज्जुहुयात्) ॐ तत्सवितुः ॥ १ ॥ स्वाहा इदमग्नये
नमम । एवं द्वितीयां । ब्रह्म चारीतु । शिष्योऽहर हरगिन कार्य क्रमेण
समिधाधान कुर्यान् न सावित्र्या । अन्यत्सर्व समानम् ।) वाना भक्षणम्
(ततोया उपकल्पिताधानास्तिष्ठ स्तिष्ठोऽगृहीत्वा)—ॐ शन्नोभवन्तुव्वा-
जिनो ह्वेषुदेव तातामितद्द्रवः स्वर्वाः । जन्मभ्यन्तोर्द्विष्टुः रक्षा
धं सि सनेम्म्यस्म्यद्दुयवन्नमीवाः ॥ ६ ॥ इति मन्त्रेण दन्तै रस्वा
दन्तः प्रारनीयुः ॥ ततो-द्विराचनम्) दधिभक्षणम्—ॐ दधिक्राव्णोऽ
अकारिपञ्चिज्जणोऽरश्श्वश्याजिनः । सुरभि नो सुरा करत्तप्रणः
आयुधं पितारिपत् ॥ १० ॥ इति मन्त्रेण दधि भक्षेयुः ॥ द्विराचनम् ।
(तत आचार्यो यावन्तशिष्यगणं आत्मन इच्छेत्तावतस्तिलान्गणयित्वा
आकर्षफलकेना वदाय)—ॐ शुक्ल ज्योतिरश्च । चित्त्यज्योतिश्च
सत्त्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्चशुक्लार्चःऽऽतपावात्यंहाः ॥ ११ ॥ इत्या
द्यनु वाकेन सावित्र्या वा जुहुयात् । ॐ तत्सवितुः ॥ १२ ॥ स्वाहा
इदं सवित्रे न मम ॥ (सं स्रवप्रक्षेपः । ततो धानाम्यः स्विष्टकृन्)—
ॐ अभयेस्विष्ट कृते स्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेन मम ॥ भूराद्या नवा
दुतयः—(आज्येन जुहुयात् । सर्वत्र त्यागान्ते द्रव्य प्रक्षेपः । तद्यथा—
॥ १ ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेन मम ॥ २ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं
वायवे न मम ॥ ३ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ४ ॥ ॐ
त्वनोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽ अवयासि सीष्ठाः ।
यजिष्ठो ब्रह्मिष्ठमः शोशुचानो व्विरात्रा द्वेषा धं सिष्पमुमुग्ध्य
स्मत्स्वाहा ॥ १३ ॥ इदमग्नी वरुणाम्यां न मम ॥ २५ ॥ सत्त्वन्नोऽ-
ग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽस्याऽऽपसोव्युष्टी । अय यत्त्व नोवरुण
धं रराणोव्वीहि मृडोक धं सुहवो नऽधिस्वाहा ॥ १४ ॥ इदमग्नीवरुणा
भ्या न मम ॥ ६ ॥ अया र्चाग्नेस्यनभिरास्तिपारच सत्यमित्वमयाऽ
असि । अया नोयज्ञं बहास्यानोधेदि मेपज धं स्वाहा । (सौत्रमन्त्रः) ।
इदमयाच न मम । [इद मग्नये अयते न मम इति] केचित् ॥ ७ ॥
येते शतं वरुण ये सहस्रं य ज्ञयाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽ-
अथ सवितोव व्विष्णु व्विरवे पुरञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।

[सौत्रमन्त्रः] । इदं बहूनाय सवित्रे त्रिण्ये विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरु-
द्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ८ ॥ उदुत्तमं व्यहृणवाश मस्मद्वाधर्म-
विमध्यम धा अध्याय । अथा अयमादित्य ऋते तवा नागसोऽदित वे
स्याम स्वाहा ॥ १५ ॥ इदमादित्यायादितये न मम ॥ ६ ॥ उपांशु ।
ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । [संख्य प्राशनम्] आक्-
मनम् । पवित्राग्नां मार्जनम् । अग्नी पवित्र प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे
पूर्ण पात्रदानम्,—यथा,—ब्रह्मन् अश्वोपाक्रमेणोऽङ्ग तथाविहित पूर्णं
पात्रं प्रति गृह्यताम् । ॐ द्यौस्त्वाद्दातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्यातु इति
मन्त्रस्य ब्रह्मा जपं कुर्यात् । (प्रणीता विमोक्तः । ततोऽग्निमुत्तरेण कुशेण
शश्वद् मुष्यो पविष्टेभ्यः शिष्येभ्यः प्राङ्मुख आचार्यः त्रेद्वारमुक्त्वा
विरच सावित्री मनु ज्ञान्)—यथा—ॐ तत्सवि० द्यान् ३३ । (इति
निः) इवेत्वादि ईशावास्यान्तम् । तत्र मुपैष्यन्नित्यादि सर्वमन्त्र ब्राह्मण
योऽध्यापि प्रनूयात् । बहु चाष्टपिनुस्यानि । पर्वणि छन्दोगानाम् । सूक्त-
न्य रंश्या नाम् । (एषं सर्वं पठित्वाऽरुः शिष्याश्च जपन्ति) ॥ ॐ
सहनोस्तु, सहनोतु सहनऽहं वीर्यं बद्धस्तु ब्रह्म इन्द्रस्वदे दे येन यथा
न विद्विषामहे ॥ इतिमन्त्रं जपित्वा नि रात्रमध्वयनं लोम नरया नमति
कृन्तनमवपनं च करिष्या महे ॥ इति सर्वेषां सङ्कल्पः ॥) प्रागुत्सर्गं द्वा
नियमो लोमनख निकृत्तनम् । उत्सर्गं वधि लोमनत्वा नाम कृन्तन मह
करिष्ये इति । छन्द सामुत्सर्गाः प्राङ् मन्त्र ब्राह्मण योरध्वयनम् ॥ इत्यु
पाकर्म्म प्रयोगः ॥

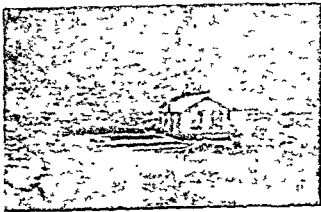
अथ तीर्थं श्राद्ध विधिः

वाचस्पत्योः—श्राद्धया दीयते यस्मात् श्राद्धं येन निगद्यते । नित्यं
नैमित्तिकं काम्यं बुद्धिं श्राद्धतथैवच ह पार्वण्यं चेति मनुना श्राद्ध पञ्च
विधं स्मृतम् ॥ अहन्नेकादशेऽपि पार्वण्यन्तु विधीयते ॥ तीर्थेषु ब्राह्मणा
नैत्र परीक्षेत कदा चन ॥ अत्राग्निं मनु प्राप्तं भोज्यं न मनुर त्रवात् ।
सकृभि पितृदानं च संयाये पायसे न वा । कर्त्तव्यं सृषिभि दिष्टं पित्या
केन गुडे न वा ॥ देवन्तु तिलपित्याकं शक्ति मद्भि नरैः सदा ॥ श्राद्धैतु
तत्र कर्त्तव्यं मद्यावादनं वजितम् ॥

अथ पार्वण्य तीर्थं श्राद्धम्

अथ तीर्थेति कर्त्तव्यता पूर्वं तीर्थं प्राप्ति काल परं तीर्थं साष्टांग
प्रणम्य नारिकेलं कन पुष्पां चण्डारिकं आदाय अमुक तीर्थाय नमः
इति नियम ॐ हरेण तीर्थं पृष्ट्वा ॐ नमोऽस्तु देव देवाय शिति
कृष्टाय इष्टिने रुद्राय पाप हस्ताय चक्रियेवेषसे नमः । सरस्वती च

सावित्री वेद माता गरीयी । सत्रि धात्री भवत् वत्रः तीर्थे पाप प्राणा-
शिनी ॥ वीक्षणं द्रष्टुं महाकाय कल्यान्तं दहनो पम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्य
मनुज्ञा दातुं महसि ॥ इति मन्त्रेण क्षेत्रपाल गणेशं च नमस्कृत्य सचैलं
स्नायात् ॥ ततः त्रिभिना पूर्ववत् तीर्थस्नानं देश काल कीर्तनान्ते यथो-
क्तेन स्नायात् ॥ इति स्नायायात् ॥ इति स्नात्वा ॥ प्रायश्चित्तार्थे गो भू
हिरण्या दिक् दद्यात् ॥ द्यौर कुर्व्यात्-तत्र मन्त्रः—यानि कानि च पापानि
ब्रह्महत्या समानि च । केशानां अस्थितिष्टन्ति तस्मात्केशान्वपाम्यहम् ॥ ततः
प्रथमं दक्षिण कर्णं मास्य वामकर्णं पर्यन्तं उदकं सस्थम् केशववप-
नम् ॥ ततः श्मश्रु ह्योम नखा ग्राणा क्रमेण वपनम् । उग्रानां केशादीनां
जले गर्तेवा प्रक्षेप. ततः मृत्तिका स्नायात् तत्रमन्त्रः.. ॐ अन्व क्रान्ते-
रथ क्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुन्धरे मृत्तिके हरमे पाप बन्मथा दुष्कृत
कृतम् ॥ मृत्तिके ब्राह्मणा दत्ता कास्यपेयाभि मन्त्रिता ॥ मृत्तिकेदेहिमे पुष्टि.



श्री हंसकुण्ड ब्रह्मतीर्थ

त्वइसर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि० इतिमन्त्रेण । तत्र निभज्योन्म-
ज्य जलादुत्तीयं धौते वाससी परिधाय भस्मादीना त्रिपुरहोर्ध्वं पुरह्लादिकं
कृत्वा संध्या मुपास्य ॥ तर्पणे कुर्यात् ततः सभादिते रूपकरणैस्तीर्थं श्राद्ध
भारभेत् तत्राय विधिः ॥

श्राद्धस्थानम्.—मनु.—शुचिं देशं चित्रिकं तु, गोमये नोप लेपयेत् ।
दक्षिणां प्रवणं रचैव प्रयत्रे नोप पादयेत् ॥

श्राद्धस्थले देवस्य सं निधापनम्—पादमे—शिवस्य नार्मदलिङ्ग
गामिप्रामशिला चयः । पीठे मन्थापयित्वा तु श्राद्धञ्च कुरेते नरः ।
पितरं स्वस्य तिष्ठन्वि कल्प कोटि शतदिवि ॥

कुशप्रदण मंत्र — विरिञ्चिनासहोत्पन्न परिमेष्ठिनसर्गज
 बुद सर्वाणि पापानि दर्म ? स्वास्ति करो भवः ॥

हविर्विषये—आगो मूच यच्छादुधं माप सुदृग विवर्जितम् ।
 तैल पक्वैरहित कृतमप्य कृत भवेत् ॥

सूतके—विष्णु स्मृतौ—प्रत यज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे ।
 आरब्धे सूतकं नस्यात् अनारब्धे तु सूतकम् ॥

विधवा कर्तृक श्राद्धम् ॥ —स्वभर्तृ प्रमिति त्रिभ्ये स्वपितृभ्य
 स्तयैवच । विधवा कारये च्छाद्व यथा काल मतिद्रिता ॥ आमन्त्रे
 नतु शूद्रस्य तृष्णातुद्विज पूजनम् । कृत्वा श्राद्धन्तु निर्वाप्य सजति
 नाशये दथ. ॥

आचम्य हरिस्मृत्वा ॥ शुक्ल वापीत वस्त्र परिधाय आशानो परि
 उपविश्य दीपं धृत्वा तिल तैलवा प्रज्वाल्यरक्षोधनदीपाय नमः इतिसम्पूज्य
 [दीपं दक्षिणाभिमुखं सस्थाप्यश्राद्धकर्ता पूर्याभिमुखं उपविश्य] पुण्याक्षत
 सहित नमस्कृतम्—यन्मन्त्र वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधान पुरुषंस्तवान्ये
 विश्वोद्भूते कारणमीश्वरम्भा तस्मै नमोविद्मन्विनाशनाय ॥ शुक्ला-
 वर धरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रशन्नवदनध्यायेत् स्वर्ध्व त्रिनो
 पशान्तये इति नमस्कृतम् ॥ स्ववामभागे गन्धादिना भूमौ चतुष्कोण
 मण्डलं विधाय तत्र शङ्ख चक्र च ७।४ । विलिख्य तत्र कुशानास्तीर्य्य
 वा त्रयमुष्टिवण्डलधृत्वा—तदुपरि कर्मपात्रे सस्थाप्य ॥ [ताम्र-नील्य रत्न] पात्रे
 पवित्रम्—दक्षपाणिने—ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वर्धनः सव
 उत्तपुनान्यद्विद्रेणपवित्रेण सूर्य्यस्य रस्मिभिः तस्वते पवित्रपते पवित्र
 पूतस्य यत्तकामपुने तच्छ्रेयम् ॥ इति मन्त्रेण पवित्रं क्षिपेत् इय दक्षिण
 हाता नामिकाया पवित्रेस्थ इति मन्त्रेण उश पवित्रो मघ
 धारयेत् ॥ पात्रे च शन्नोदेवीति जलम्—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो
 भवन्तु पीतय शश्यारभिश्चरन्तुन. इति मन्त्रेण पात्रे तु जलक्षिपेत् ॥ इति
 मन्त्रावात् यपोसीति यान्—ॐ यपोसियवयारमद् द्वे पो यवयारातिदिव
 च्यान्तरिक्षायत्वाग्रथिवे त्वा शुन्धताब्जोऽपि तृपदना पितृपदन मसि ॥
 इति यवान्क्षिपेत् ॥ तिलोसीति तिलान् तिलोपी सोम देवत्यो गोसवो
 देवनिर्मित प्रत्नमद्भिः पृङ्गुस्त्वययापितृ-न्लोकाग्नीणादिन स्वाहा
 इति तिलान्क्षिपेत् । तत्र वरुणा गहनं तुष्यति—आवाहयाम्यहं देवीं
 गत्वा प्रैलोक्यमावाम् ॥ यस्या स्मरणमापेण मंत्रपाप प्रणामनम् ॥
 ॐ नमोऽव स्व वरुणो देवता इहाच्छ दरातिष्टम् प्रविष्टितोरसोभव ॥
 गन्धाक्षत (मृद्गरात्र) रतेतपुण्यादिभिः तृष्णिनिधिष्य । गन्धद्वारेति
 गन्धम् । श्री गणतन्त्रिष्य ॐ इमं पात्रं मु सम्पन्नं भवतु । इतिमन्त्रेण

पृच्छेत् [अस्तुसु सम्पन्नं मिति यजमानोब्रूयात्] प्रतिवचनम् ॥ ततः
 तज्जलेन ॐ अपवित्रः पवित्रो या सर्वा० इति मन्त्रेण श्राद्धीयवस्त्रना-
 त्मानां च सिंचेत् पुण्डरी काक्षंस्मृत्वा इतित्तु श्राद्धदेशे सामाग्री आत्मानं
 च सम्प्रोक्षे इति ॥ ततःकुशादिक आदाय ॐ अद्येत्यादि प्रधान सङ्कल्य
 सिद्धिरस्तुदेश काल कीर्ति नान्ते अमुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह
 प्ररिता महानांममुकामुक शर्मणां वा (ब्रह्मणां वा गुप्तानां) यथायोग्य
 सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां अक्षय तृप्त्यर्थं पार्वण श्राद्ध विधानेन
 धूरि लोपन सञ्जक विश्वेदेव पूर्वकं अमुक तीर्थं प्राप्त निमित्तकं सपिण्डक
 मामात्रं तीर्थं श्राद्धं करिष्ये ॥ ॐ कुरु चेति प्रत्युक्तिः ॥ ॐ देवताभ्य
 पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एवंच ॥ नमः स्वधायै स्वाहायै नित्य मेव नमो
 नमः इतित्रि । सप्त व्याधादशार्णं पुमृगाः कालञ्जरे गिरौः चक्रःवाकाशर-
 द्वीपे हंसा सरसिमानसे । तेपि जाताकुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपागाः ॥
 प्रस्थित दीर्घ मध्यात्तयू यं किमवतीदथः ॥ श्राद्धारम्भे गयाध्यात्वाध्यात्वा
 देवंगदाधरम् । उभाभ्यांवनमस्कृत्य ततः श्राद्ध समाचरेत् ॥ गया गया
 गयादित्यो गायत्री च गदाधरः गया गयासुरश्चैव पद्गया मुक्तिदायकाः
 ईशान विष्णु कमला सन कार्तिकेय वह्नि त्रयार्क रजनी शगणेश्वराणाम् ॥
 क्रौञ्चामरेन्द्र कलशोद्भव कर्यपानां पादान्नमामि सततं पितृ मुक्तिहेतोः ॥
 ॐ गयायै नमः ॐ गदाधरायै नमः । ततः कृष्णकव्यमिदं रक्षमदीय
 मिति अप्सस्त्रवेन शिगबन्धनं कुर्यात्-तिल सहित मोटकं आदाय तिलान्
 पूर्वादिक्रमेण धिकिरेत् ओं अग्निध्वात्ताः पितृगणाः प्राचीरक्षन्तु मे
 दिशम् ॥ अपहता असुरा रक्षा धंसि वेदि षट् । ओं तथा वह्निं पद
 यान्तुयाम्याये पितरः स्थिता ॥ अपहता असुरा रक्षा धं सिञ्चेद्विपदः ॥
 ओं उदीची मपि सोमपः पितरः यान्तु ॥ अपहता असुरा रक्षा धं सिञ्चे-
 दिपदः ओं ऊर्ध्वं तस्त्वयमा रक्षेत्कव्यवाडनलोप्यधः ओं रक्षोभूत पिशा-
 चेम्य स्तथैवाऽसुर दीपतः ॥ सर्वतः रचधिपस्तेषां ॥ यमो रक्षा
 करोतुमे ॥ इति मन्त्रैस्तिलान्त्रिकीर्यदिगबन्धन मोटक मनेन
 वक्ष्यमाण मन्त्रेण वाम कर्त्याधारेयत् ओं निहन्मि सर्वं पदमेध्यवद्
 भजेद्धतारचसर्वेऽसुरदानवामया ॥ रक्षांसि यक्षाः स पिशाच गुह्यकाहता

श्राद्धे वैश्व देव — पातुषाःसामगाः पूर्वं श्राद्धमध्ये क्षयर्षणःवह्नितृचाः
 श्राद्धशेषेण कुर्युर्वैश्वदेवकम् ॥ वैश्वदेवकम् ॥ वैश्वदेव अङ्गुली प्रमाणं माक्ष
 अग्निः—त्रिर्यग्यबोदरान्वधावूर्ध्वं वात्रद्वियस्त्रयः । अङ्गुलीः सेव विज्ञेयः धोते
 स्नातं च कर्मणिः ॥ इति वचनात् ॥ भार्यारजस्वलासत्वे-दिन चतुष्टयं प्रति
 पालयेत् । रजस्वला तीर्थे देवमन्त्रिरादीरञ्चमदिनेन गन्तव्यम् ॥

मया यातुवानास्व सर्वे इति ॥ ततस्तिष्ठ संहित कुशाग्रं गृहीत्वा-प्रयान्ते
दूरतः सर्वदेवैशदानवास्तया ॥ सर्वं विध्नो पशान्तरथं । क्षुपाभिचः
कुशा स्तितान् इति मन्त्रेण दक्षिणस्या क्षिपेत् ॥ ततः सव्य-कृष्ण इव्य
मिदं रत्नमदीय इति सव्यं कृत्वा हरिं स्मरेत् ॐ नमो नमस्ते गोविन्द
पुराण पुरुषोत्तम । इदं आद्वं हृषी केश ! रत्नां सवतो दिशः ॥
अथा सतम्—ततः सव्येन कुशादिक मादाय ॐ अघोहामुक गोत्राणां
मम रिपु पितामह प्रपितामहानाममुकामुक शर्माणां
[ब्रह्मणां गुप्तानां] यथायोग्यसपत्नी कानां वसुक्रुद्रादित्य स्वरूपाणां
तथा द्वितीय गोत्राणामस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महाना
अमुकामुक शर्माणा यदायोग्य सपत्नी कानां वसुक्रुद्रादित्य स्वरू-
पाणां आद्व शन्वन्विनाधुरि लोचन शङ्करानां विश्वेयां देवानामिद
मासन मस्तु । इदं कुरारूप आसन आस्यतां आस्ये इत्यासनं देव्या ।
ततः अचनम्—कुरोसि कुरापुत्रोसि ब्राह्मणा निमित्तः पुरा । त्वयाचितः
सोचितोस्तु यस्याहं नाम कीर्तये ॥ पूर्व्वेयन् अपसव्येन मोटक
मादाय—ॐ अघोहामुक गोत्राणामस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महाना-
ममुका मुकामुक शर्माणा [ब्रह्मणा-गुप्तानां] यथा योग्य सपत्नी
कानां वसुक्रुद्रा दित्यस्वरूपाणां तथा द्वितीय गोत्राणां मस्मन्माता-
मह प्रमातामहवृद्ध प्रमातामहाना ममुकामुकामुकशर्माणां सपत्नीकानां
वसुक्रुद्रा प्रजापत्यग्नी स्वरूपाणा अद्य फर्त्तव्यामुक तीर्थं आद्वे इदं
मोटक रूप मासन पीढा विभज्य युष्मन्व स्वया, इदं मोटक रूप
ग्रामन आस्यतां आस्ये इत्यासन देव्या । ततः सव्येन ॐ कुरोसि
कुरा पुत्रोसि ब्राह्मणा निमित्तः पुरा । त्वयाचितः सोचितोस्तु
यस्याहं नाम कीर्तयेति अर्चविष्ये इति पृष्ट्वा ॐ अर्चयेति प्रत्युक्तः
ॐ नमोस्त्य नन्ताय सहस्रमूर्तयेति मन्त्रेणान्ध पुष्पाक्षत धूप दीप
नैवेद्यादिभिः सम्पूज्य । कुशादिक मादाय ॐ अघामुक गोत्राणां
मस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानाममुका मुकामुक शर्माणां (ब्रह्मणा-
गुप्ताना) यथा योग्य सपत्नीकानां वसु क्रुद्रादित्य स्वरूपणां आद्व
मन्वन्विनाधिरक्षेयैव धुरि लोचन नामानः एतान्धर्षना न्यग्रन्ध
पुष्पाक्षतयत्रा धूप दीप यज्ञो परीत वासासि वो नमः ॐ अर्चन-
त्यो मयं ऋषूणां मस्तु इति जलं दद्यात् अस्तु प्रति वचनम् ।
ततः अस्तव्येन ॐ अर्चविष्ये इति पितृ ब्राह्मणां पृष्ट्वा ॐ—
अर्चयेति प्रत्युक्तः तन्धादिभि सम्पूज्य धूप विज्ञो वाहार येन् । पितृ
ऋषूणां सम्पूज्य ॥ ॐ पितृ पितामह प्रपितामहानां यथा योग्य
सपत्नी केभ्यो नमः । ॐ नमोः मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता-

महाना यथा योग्य सपत्नी का ना तथा च आप्त समस्ताना पूजन
 कुर्यात् ॥ कुश मोटकादिक मादाय ओं अद्यामुक गोत्रा अस्मत्पितृ
 पितामह प्रपितामहा अमुकामुकामुक शर्माण (ब्रह्मा गुप्तो) यथा
 यथा योग्य सपत्नीका वसु रुद्रादित्य स्वरूपा तथा अमुक गोत्रा
 अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महा अमुकामुकामुक शर्माण
 यथायोग्य सपत्नी का वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपा अथ कर्त्तव्या
 मुक तीर्थ श्राद्धे पतान्यर्चनान्यत्र गन्ध पुष्पाक्षत ताम्बूलपूगीफत
 यज्ञोपवीत धूप दीप नैवेद्यादीनि पोढा विभज्य युष्मभ्य स्वधा इत्यु
 त्स्त्रुतेत् । ओं अर्चनविधे सर्वपरिपूर्णं मस्तु इति जल दद्यात् ओं
 अस्तु परिपूर्णं इति प्रति वचनम् । अथ अन्नसकल्प । सव्यन
 सोपस्कर मन्त्र सम्प्रोक्ष्य सोपस्कर यव जल घृत मधुयुत मन्म
 उपनीय मधुनामिधाय ऋजुहस्ताभ्या अन्न पात्र आनभ्य पृथिवीते
 पात्र द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृत जुहोमि स्वाहा । इ
 विष्णुविचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्, समूह मस्य पा ५ सुरेस्वाहा ।
 ओं कृष्ण इव्यमिद् रक्ष मदीयमिति पठित्वा । ओं इद अन्न इति
 अन्ने इमा आप इति जल इद माज्यइति घृते ॥ इद हविरिति
 पुनरन्ने पतानि उपकारणानि इति क्रमेण अन्न जल घृतेषु विप्र घरे
 दक्षिणा इ ष्टनिवेद्य ॥ ओं यवोसियवव्यास्म द्वेषो यववारितिमन्त्रेण
 यवात्रोपरि विकीर्य कुश यव जलान्यादाय—वाम हस्ताङ्गुल्यङ्गुष्टे
 क्रमेणान्नापरचपुष्टवा ओं अद्यामुक गोत्राणामस्मत् पितृ पितामह
 प्रपितामहानाममुकामुकामुक शर्माण (ब्रह्मा गुप्तो) यथायोग्य सपत्नी
 का ना वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा तथा द्वितीय गोत्राणा अस्मन्मातामह
 प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाममुकामुकामुक शर्माण यथा योग्य
 सपत्नी का ना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा श्राद्ध सम्बन्धिभ्य
 धूरि लोचन सङ्गक विश्वेभ्य देवेभ्य इद मन्त्र अमृत स्वरूपेण
 सपद्यता न मन स्वाहा ॥ इति कुशादिक उक्तस्तत् ॥ अपसव्यन ॥
 सोपस्करं तिल घृत मधुजल युत मन्म उपनीय मधुना विधाय
 अधो मुख्याभ्या व्यस्ताभ्या पाणिभ्या अन्न पात्र आनभ्य पृथिवीते
 पात्र द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृत जुहोमि इ विष्णु-
 विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूह मस्य पा ५ सुरेस्वाहा ओं कृष्ण
 इव्यमिद् रक्ष मदीय इति पठित्वा ओं इद अन्न ओं इमा आप ओं
 इद आज्य ओं इद हविरिति पुनरन्ने । ओं—एता न्युपकारणानि
 क्रमेण अन्न जल घृतेषु विप्र दक्षिणा ऋष्ट निवेद्य । ओं आप
 हता अमुरा रक्षा ५ सिन्धेदिपद इति ब्राह्मणा नाम प्रतो भूमायैव ।

विद्वान् विकीर्य मोटका दीन्यादाय वाम हस्ताङ्गुलैः प्रवे-
 ष्यात् अपश्च स्पृष्ट्वा श्रीं अथोहामुक गोत्रेभ्यः अस्मिन्
 पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुकामुक शर्मभ्यः [ब्रह्मा-गुतेभ्यः]
 यथा योग्य सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वह्येभ्यः तथा
 द्वितीय गोत्रेभ्यः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः यथा
 योग्य सपत्नी के भ्यः वरुण प्रजापति अग्नि स्वह्येभ्यः इह मामार्ज
 सजलं सोपस्करं परि विष्टं परि वेद्यमाय मद्य तृप्ति हेतोस्तेयथा यथा
 भार्गं धिभ्यमुच्यते स्वधा ॥ इति पितृ ब्राह्मण समीपै मोटकादिकमुत्स-
 जेत् । सक्तु अपोदत्त्वाः ततः सव्ये न देव ब्राह्मण करयोः श्रीं भवन्ती
 प्राशयन्तो मित्य पोशान चैश्वदेव ब्राह्मणं जलं दद्यात् ॥ अपसव्येन
 भवन्तः प्राशयन्तु इति पितृ ब्राह्मणाय जलं दद्यात् ॥ अन्नहीन क्रिया
 हीनं विधि हीनं च यद्भवेत् तत्सर्वं मद्भिद्र मस्तु इति जपेत् ॥ सव्येन
 गायत्रीं जपित्वा श्रीं मधुव्याता ऋत्तायवे मधु चरन्ति सिन्धवः । माध्वीनः
 सन्वोपयी । श्रीं मधुनक्त मुलोपसो मधुमन् पाथिवेध रजः ॥ मधुघोर-
 स्तुनः पिताः ॥ श्रीं मधुमान्नोव्वनसतिर्मधु मांः अस्तु सूरवैः । माध्वी
 गावो भवन्तुनः ॥ श्रीं मधु मधु मधु इति पठित्वा । श्रीं अन्नहीनं क्रिया
 हीनं विधिहीनं चयद्भवेत् । तत्सर्वं मद्भिद्र मस्तुश्रीभारकरस्य प्रसादतः । श्रीं
 नमस्तुभ्यं विरुपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुसेः । नम पिताक हस्ताय वरहस्ताय
 वै नमः इति पठेत् ॥ यथा सुखं जुषध्वम् इति वचना तन्तरं ते ब्राह्मण
 सोमिनो भूत्वामुञ्जीर संज्ञया च भक्ष्यं प्रार्थयेयुः ॥ ततोऽर्धेष्वासीनः
 गायत्रीं मधुव्याता इत्यादि ऋचम् श्रीं मधु मधु मध्वीति च जपेत् । ततः
 ऋगुज्वपात्रः मिति रक्षोनी ऋचं पठेत् [ऋचं अग्नेद्रष्टव्यः] ततः
 द्विज्ञान्भूमीक्षित्वा श्रीं उदीरता मित्यादिपितृ मन्त्रान् श्रीं सहस्र शीपं
 त्यादि पुरुषं मूकम् श्रीं आयुः शिशानू इत्यादि कम प्रति रथं मधुव्याता
 इत्यादि पितृसूक्तं च नमस्तेऽह इत्यादि रुचिनाय.पविनायि । अग्नेद्रष्टव्यः)
 यथा शक्तिजपेत् । नमस्तुभ्यं विरुपाक्ष नमस्तेने रुच्युपे नमः पिताक हस्ताय
 वर हस्ताय वै नमः ॥ इतिपठेत् अन्यद्वापिद्वित गोवादि पारायणं पठेत् ॥
 अपसव्येन पिण्डदानार्थं वेदिकां निर्माशः श्रीं ये न्यायि प्रतिमुश्चमाना
 अमुराः मन्तुः स्वजयारवरन्ति । परापुतं त्रिपुरो जे भस्त्रयन्तिस्त्रोक्लोकान्
 प्रगुश्रांत्यम्मान् इति मन्त्रेण ज्वलद्द्वारं भ्रामयि-या । तद्द्वारं दक्षिणदरं
 क्षिपेत् ॥ ततः पितृद्वारायां रेव्या कण्ठम्—वामेन पाणिनां दर्भं
 पिञ्जलीं गृहीत्वा मध्येन अगृहीत्वा—श्रीं अपठत्वा अमुरा रक्षाधिसि-
 क्षिपेत् । इति दक्षिणायां रेव्यां कृत्वातां मुचर ताक्षिणा, ततो जलेन
 श्रीं शम्भो देवोपि विष्टिद्यां आसिष्य, तदनुदिन्नं नूनं पुशानास्तीर्यं ।

सव्येन ओं देवताभ्य इतित्रि. पठित्वा अपसव्येनयवपिष्ट मयान्
 पिण्डान्निर्माय-मोटकादिक मादाय ओं अद्यामुक गोत्रअस्मत् पितृ अमुक
 शर्मन् [ब्रह्मा-गुप्त] वसुस्वरूप अमुक तीर्थं श्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावने
 निचवतेस्वधा । एव पितामह. प्रपितामहा (अम्बात्रितय) मातृ पितामहि
 प्रपितामह्य (सपत्नजननी) मातामहप्रमातामहा वृद्धप्रमातामहा एतेसरित्रय
 ओं-पुत्र-पुत्री-पितृव्य सखी मातुलसपत्नीक. स्वभ्रातासपत्नीक पितृ स्वपा-
 सापि अपत्यधवयुक् सापत्या सधवा, मातृष्वसा-आत्मध्वसा-रवसुर.
 गुरुः-शिष्या आप्तभित्राणि-उमस्त (अन्न शस्त्र-वाहनादि) पितृभ्यो
 वसुस्वरूपेभ्य आद्यकर्तव्य अमुक तीर्थं श्राद्धे पिण्डस्थानेऽअत्रावने
 निचवते स्वधा इति अवने जन छिन्न मूल कूशोपरिदद्यात् ॥ तत सव्येन
 भो ब्राह्मण युष्मदनुज्ञया पिण्ड प्रदान महं करिष्ये इति परने ओं
 कुरुत्येत्यनुज्ञात ॥ असव्येन यव,पेष्टमयान् निर्माय पिण्ड मोटकादि
 सहितप्रथम पिण्ड आदाय-ओंअद्येहेत्यादि पूर्व सकल्पमुच्चार्य अमुक
 गोत्रऽअस्मत्पितृ अमुक शर्मन् (ब्रह्मन् वागुप्तो) वसु स्वरूपाद्य कर्त्तव्य
 अमुक तीर्थश्राद्धे एष पिण्डोरअमृत तरूपोऽन्नय तृप्तिहेतोस्ते स्वधा ।
 इदमुदक गागम्-ओं गङ्गे चेत्यादि गङ्गा जलम् । ओं अद्येहे त्यादि
 पूर्व सकल्प मुच्चार्य अमुक गोत्र. अस्मत्पितामह अमुक शर्मन् रुद्रस्व-
 रूपाद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थं श्राद्धे एष पिण्डो अमृतस्तरूपोऽ अन्नय
 तृप्ति हेतो स्वधा । इद मुदक गागम् ॥ २ ॥ ओं अद्ये हेत्यादि पूर्व
 सकल्पमुच्चार्य अमुक गोत्र अस्मत्प्रपितामह अमुक शर्मन् आदित्य
 स्वरूपाद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थं श्राद्धे एषपिण्डो अमृतस्तरूपोऽअन्नय
 तृप्तिहेतोस्ते स्वधा । इद उदक गागम् गगेश्व यमुनेत्यादि ॥ ३ ॥ ओं
 अद्येहे त्यादि पूर्व संकल्प सिद्धि रस्तुअमुक गौत्राय अस्मन्मात्रे. अमकी
 देवी गायत्री स्वरूपे (सापत्ये) अद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थं श्राद्धे एष
 पिण्डो अमृतस्तरूपेऽन्नय तृप्तिहेतोस्ते स्वधा । इद मुदकं गागम् ॥ ओं
 अद्येहे त्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गोत्राय अस्मन्पितामही
 अमुकी देवी (सापत्यादेवो) सात्रिणीस्वरूपेऽद्य कर्त्तव्य अमुक तीर्थं
 श्राद्ध एष पिण्डोअमृत स्वरूपे अन्नय तृप्ति हेतोस्ते स्वधा, इदमुदकं
 गागम् ॥ ओं अद्येहेत्यादि पूर्व सकल्प सिद्धिरस्तु अमुक गात्राय
 अस्मत्प्रपितामहो अमुकी देवी (सधवादेव्ये) सरस्वती स्वरूपे
 अद्य कर्त्तव्य तीर्थं श्राद्धे एष पिण्डो अमृतस्तरूपे अन्नय तृप्ति
 हेतोस्ते स्वधा ॥ एव सपत्न जननी ॥ इद मुदकगागम् गगे चेत्यादि ॥
 त्रितोयगोत्रम् ओं अद्येहेत्यादि पूर्व सकल्प मुच्चार्य अमुक गोत्रा
 अस्मन्माता मह अमुक शर्मन् यथा योग्य सपत्नीकः वसु स्वरूपाद्य

कर्त्तव्यं अमुक तीर्थं श्राद्धे एव पिण्डो अमृतस्वरूपो अन्नं तृप्ति
 हेतोस्ते स्वया इदं मुदकं गागम् ॥ ओं अद्य हेत्यादि पूर्वं सत्त्व
 मुच्चार्य अमुकगोत्राः अस्मन्प्रमाता मह अमुक शर्मन् यथा योग्य सपत्नीक
 वसु स्वरूपाद्य कर्त्तव्यं अमुक तीर्थं श्राद्धे एव पिण्डो अमृत स्वरूपो
 अन्नं तृप्ति हेतोस्ते स्वया ॥ ओं अद्य हेत्यादि पूर्वं सत्त्वमुच्चार्य
 अमुक गोत्राः अस्मन्वृद्ध प्रमातामह अमुक शर्मन् यथायोग्य सपत्नीक
 वसु स्वरूपाद्य कर्त्तव्यं अमुक तीर्थं श्राद्धे एव पिण्डो अमृत स्वरूपो
 अन्नं तृप्ति हेतोस्ते स्वया । इदं मुदकं गागम् गणे चेत्यादि तीर्थं मन्त्रो-
 णः ॥ एतं चो वनयादि पुत्र पुत्र्योऽपि पितृव्यं ज्येष्ठं कनिष्ठं यथायोग्य
 सपत्नीकः, मातृक, मौऽपि सखी, शृण्वसा-मातृणसा आरमहरसा
 (यथायोग्या) ज्ञायापिताः गुरु शिष्या- आप्तमित्रा समस्त पितृव्य
 वाहन-अन्न शस्त्रादि, आद्यकर्त्तव्यं अमुक तीर्थं श्राद्धे एव पिण्डो अमृत-
 स्वरूपोऽन्नञ्च तृप्तिहेतोस्ते स्वया । इयं भूमिरिति । इदं मुदकं गागम्
 गणे चेत्यादि तीर्थं मन्त्रोण पुन एक पिण्डमादाय—ओं आद्यभारणो ये
 पितृ वरा जाता मानुस्तथा वश भवामदीयाः । कुल द्वये ये ममदासभूता
 भुक्त्यास्तत्रेयाश्रित सेवनाश्च सिद्धाणि सख्य, पशुपशु वृक्षा पृष्टारच
 दष्टारच कृतो प्रकारः जन्मान्तरे ये मम सगताश्च तेभ्य स्वया पिण्डं मिमं
 ददामि ॥ इति इत्यादि । पुन एव पिण्डमादाय ओं पिता पितामहरचैव तथैव
 प्रपितामह । माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ मातामहा वारि-
 ताचप्रमाता महता नय । तेभ्यो पिण्डो मया दत्ता स्वतन्व्यं सुपतिष्ठताम्
 इति दत्ता ॥ ततः आल्लूकुरा मूलेन ओं लेन भागिन्ता भय भागोस्तु
 इति लेप भागिन्त्य, प्रवि पक्ति लेप भागं च, दद्यात् इति करं प्रोदय
 मन्थं कृत्वा द्विराचम्य हरिश्मरेन् तत अपमन्थने प्रत्यग्ने जनम् ।
 मोट्टकमादाय ओं अद्यमुक गोत्र अस्मत्पित, अमुक शर्मन् वसु स्वरूप
 अद्य कर्त्तव्यं अमुक तीर्थं श्राद्धे पिण्डे प्रत्यग्ने जनन्ते स्वया, एतं इति
 इत्यादयेभ्योपि पिण्डं प्रत्यग्ने जन दत्त्वा दन्त्येन आचम्य पुण्याक्षत
 गुहोस्ता अवाय ओं अत्र पितरो माद यच्चं यथा भागमा वृषायिपन् इति
 इति उत्तरमि मुग्ग पठित्वा स्वाम् नियम्य भास्कार मूर्त्तिं
 पिण्डादन्वयापन् ॥—ॐ अनामन्-न पितरो यथा भागमा वृषायिपन् इति
 पठित्वा पुण्यादिकानि पिण्डोपरिनिक्षिपन् । नीरा त्रिस्रस्य । मन्थेन
 आचम्य हरिश्मरेन् अमन्थेन मूलाद्यादाय-दायेन पाणिनाश्रुत सूय
 दक्षिणेन आदाय ॐ नमोः२ पिता रसाय नमोः२ पितरः शोषाय
 नमोः२ पितरा जीवार नमोः२ पितरः स्वयाथै नमोः२ पितरो पोषाय
 नमोः२ पितरो मन्थेन नमोः२ पितरः पितरो नमो योगदान्, पितरोऽत
 नतोः२ पितरोऽग्ने उद्ध पितरो वाम इति मन्थेण प्रत्येक पिण्डो परित्यु

दद्यात् । ततः क्रमेण प्रत्येक पिएडान् गन्धादिभिः सम्पूज्य धूपदीप नैवेद्यादि निवेद्य ॐ पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यो नमः ॐ मातृ पितामहि प्रपितामहिभ्योनमः ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महेभ्यः अमुका मुकामुक शर्मभ्यः सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तथाः अन्येभ्यः आराधयसमस्तेभ्यः दत्त पिएडेभ्यः आराधयस्व अमुक तीर्थं श्राद्धेभ्यः एतानि पिएडार्चनानि अत्र वस्त्र सूत्र गन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप उपायन द्रव्य नैवेद्य ताम्बूल यज्ञोपवीत वासासि अनेकधाभागं विभज्य युष्मन्त्यः स्वधा ॥ इति पिएडे उत्सृजेत् । ततः आशिपः प्रार्थयेत् सव्येन ॐ गोत्रन्नोवर्धताम् ॐ वर्धताम् इति प्रति वचनम् । ओं दातारो नो भिवर्धताम् ॐ वर्धन्ताम् । ओं वेदावर्धन्ताम् । ॐ सन्तति वर्धन्ताम् ।—ओवर्धन्ताम् । ॐ श्रद्धा चनो माव्य गमत् ॐ मागात् ॐ बहुदेयं चनोस्तु ॐ अस्तु । ॐ अन्नं चनो बहुभवेत् ॐ अतिथीं श्चलभे महि । ओं लभश्चम् । ॐ यच्चित्तरश्चनः सन्तु ओसन्तु । स्व तिलकं सत्त्वां नुष्टान सन्पन्नाः सर्वदा यत्र बुद्धयः पितृमातृ परास्त्वेव सन्त्वश्मत् कुलजा नरा । ॐ यं कामं कामयते सोऽस्मै काम समुद्यतां मिति ब्राह्मण हस्तेनस्व तिलकं [देव ब्राह्मण (वेश्वदेव) स्मरति पूर्वकं] कारयेत् । ततः अपसव्येन ॐ स्वधावाच विष्टये ॐ वाच्यताम् । रिक्ताञ्जलिना ॐ अद्यामुक गोत्रेभ्योऽऽस्मत्पितृ पितामह प्रपिता महेभ्योऽऽमुका मुकामुक शर्मभ्यः यथायोग्य सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः । तथा अमुक गोत्रेभ्यः अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता महेभ्योऽऽमुकामुकामुक शर्मभ्यः यथायोग्यस सपत्नी केभ्यः वसु रुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तथा अन्येभ्यश्च समस्तेभ्यो दत्त पिएडेभ्योः अमुक तीर्थं श्राद्धेभ्यस्वधोक्ष्यताम् ॐ अस्तु स्वधा । ॐ ततः सपयस्कं पुटकं वाम हस्ते कृत्वा ॐ ऊर्जवहन्तो रमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयन् मे पितृन् ॥ इति दक्षिणाप्रां पयोधारां दत्त्वा पृच्छेत् । ओं रिण्डाः सन्पन्नाः ओं सुसम्पन्ना ओं पिएडान्नुत्थापयामि, ॐ उत्थापयस्व । उतः नश्री भूय पिएडान् सव्येना प्राह्य । अपसव्येनोत्थापयेत् । पिएडाधार कुर्यानुल्मुक च बह्वोक्षिपेत् । ततः सव्येन पिएडकायां शङ्ख चक्रं च ७ । ४ विलिख्य ॐ शशायनमः । ॐ चक्राय नमः । ॐ शंख चक्राभ्यां नमः इतियवैः अपसव्येन पिएडान् पिएडको परि तिधाय गयायां पितृ रूपेण स्वयमेव जनार्दनः उ दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च शृणुत्रयात् इतिः सव्येन पूजयेत् ॐ वसन्ताय नमस्तुभ्यं प्रीण्माय च नमो नमः ॥ वर्षाभ्यश्च शरत्संज्ञं ऋतये च नमोनमः । हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते क्षिशिराय च । मास सम्बत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमोनमः ॥ इति वसन्तादिषु ऋतुभ्यो नमः पर्व दक्षिणाद्रव्यणि आदाय पूजयेत्—हिरण्य गर्भं गर्भेस्य हेमवी • इक्षिये द्रम्यावन्नम् । ततः कुशादि

सहितं दक्षिणाद्रव्यं आदाय ॐ अद्यामुक गोत्राणा मस्मत्पितृपितामह प्रपि
तामहानाममुकामुकामुक शर्माणा यथा योग्य सपत्नीकाना वसु रुद्रा दित्य
स्वरूपाणा तथा अमुक गोत्राणामस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता
महानाममुकाशुक्रामुक शर्माणा (वा) यथा योग्य सपत्नीकाना वरुण
प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा कृतैतत् अमुक तीर्थं पिण्डदान प्रतिष्ठाप्य
दक्षिणा द्रव्यं यथा नाम दैवत यथा नाम गोत्रायेत्यादि नाधिश्वेदेव
ब्राह्मणाय दद्यात् । पुन कुशादि सहित दक्षिणा द्रव्य आदाय ॐ अद्या
मुक गोत्राणा मस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानाममुका मुका मुक शर्माणा
(वा) यथायोग्य सपत्नी काना वसु रुद्रादित्य स्वरूपाणा तथा (द्वितीय
गोत्राणा मस्मन्-मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाम मुका मुका मुक
शर्माणा (वा] यथा योग्य सपत्नी काना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरू
पाणा तथा अन्येषामस्त पितृ णा कृतैतत् अमुक तीर्थं श्राद्धे पिण्ड
दान प्रतिष्ठार्थमिदं सुपुजितं द्विरण्य यजानाम दैवत यथा नाम गोत्रेभ्य
यथा यथा नाम शर्मान्य पितृ ब्राह्मणेभ्य यथा यथा भाग विभज्य दातु
मह मुत्सृजे ॥ पुन भूयसी दक्षिणामादाय ॐ अद्यामुक गोत्राणामस्म
त्पितृपितामह प्रपितामहानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथायोग्य
सपत्नीका ना वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणा द्वितीय गोत्राणा अस्मन्मातामह
प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाम मुका मुका मुक शर्माणा (वा) यथा
योग्य सपत्नीकाना वरुण प्रजापति अग्नि स्वरूपाणा अथ कृतैतद् मुक-
तीर्थं श्राद्ध सागता सिद्धये न्यूनाति रिक्तपूतये च अमुक द्रव्य ममुक दैवत
ममुकामुकामुक गोत्रेभ्योऽअमुका मुकामुक्रानाम शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा
भाग विभज्य यथा काले दातुमह मुत्सृजे इति ब्राह्मणेभ्यो दद्यात् । तत्र
भूरि लोचन विश्वे देववा प्रीयन्ता मिति प्रणमेत् । अपसव्येन वाजे २ वत्
रात्रिनो धनेषुधिप्राऽमृता ऋतव्वा अस्यमध्वा पियमादर्ध्वं तृप्ताय्यात
पयिभिर्द्वेष यानै । इति मन्त्रेणपितृ न्विसृजेत् ॥ सव्येन ॐ इपताभ्य
पितृभ्यश्च महायोगी-भ्ये वच नम स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो
नम । इति त्रिपठेत् अपसव्येन दीप आदाय । सव्येन हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या
चम्य इति पठेत् । ॐ यत्कृतम् तत्सुकृत मस्तु यन्न कृत तद्विष्णौ प्रसादात्
ब्राह्मणवचनान् परिपूर्णम् स्तु अस्तुमरि पूर्णम् इति ब्राह्मणा । ॐ प्रमादा
कुर्वन्ता कर्म प्रच्य उताध्वरपु चस्मरणा न्वताद्विष्णो सम्पूर्णा स्यादिति
ध्रुति ॥ आयु पूजा धन विद्या स्वर्ग मोक्ष मुग्धा निच प्रयच्छन्तु तथा राज्य
पितर — श्राद्ध तपिता ॥—॥ ततो वक्ष्यमान् आपन्नस्तम्भ पर्यन्त द्यपि
पितृ मानवा दीन्तिलोदकाञ्चनलिभिस्तर्पयेत्—ॐ आपन्नस्तम्भ पश्यन्त
क्षरपितृमानवा । तृप्यन्तु पितर तर्पे मातृ माता महाद्वय ॥ १ । । पितृ

वशो मृतायेव मातृ व शो तथैवच । गुरुस्वसुर वन्धूना ये चायेवान्धवा
 स्मृता । २॥ ते तृप्ति मखिलायान्तु ये चास्मत्तोय काञ्चिण ये । १०॥ धवा
 वान्धवायेऽन्यजन्मनि वान्धवा । ३॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तुमदत्तेनाम्बुनाऽखि-
 ता ॥ देवामुरास्तथा यज्ञानागागन्धर्वराक्षसा ॥ ४॥ पिशाचागुह्यका सिद्धा
 कूष्माण्डास्तर व स्रगा ॥ जलेचराभूमि चरा वाय्वाहाराश्च जन्तव ॥ ५॥
 ते तृप्तिमखिलायान्तुमदत्तेनाम्बुनाऽखिला नरकेपुसमस्तेपुयातनासुचयेद्वि-
 ता ॥ ६ ॥ तेषा माप्या यनायेतदीयते सलिल मथा ॥ अतीत कुलकोटीना
 सप्तद्वीपनिवासि नाम् ॥ आवल्य भुवना, ह्योकादिदमस्तु तलो दकम् ॥
 यत्र क्वचनसस्यानाल्लु तृष्णोपहतात्मनाम् ॥ इद मन्त्रय मेवास्तु मया दत्त
 तिलो दकम् ॥ इति मन्त्रेण तिल मिश्रित चारि धारा या दद्यात् ।
 प्रथ वस्त्र निष्पीडन विधाय-एके चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो
 रिमता । ते पिर्धन्तु मया दत्त वस्त्र निष्पीडनो दक मिति मन्त्रेण
 वज्रल भूमौ निक्षिपेत् ॥ तत सर्व्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखो भुत्वा
 आचम्य जले ब्रह्मादि देवान् पूजयेत् ॥—ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथम
 पुरस्ताद् द्विपी मत सु रुचोऽग्नेन ऽआव ॥ सवुष्ण्या उपमाऽ
 अस्य विष्टा शतश्च योनिम शतश्चन्विव ओं ब्रह्मणे नम आ
 इद विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् ॥ समूढमस्य पा ध सुरे
 स्वाहा ॥ ओं विष्णवे नम ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्य वऽन्तोतऽऽपथं
 नम ॥ वाहुभ्या सुतते नम ॥ ओं रुद्राय नम ॥ ओं भूर्भुव
 स्व तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो योन ष्यचोद
 यात् ॥ ओं मित्राय नम ॥ ओं वरुण स्योत्तम्भनासि वरुणस्य
 ऽऋतसदन मासीद् ॥ ओं वरुणाय नम ॥ अधोत्थाय सूर्या
 यार्यं दद्यात् ॥ अर्घप त्रे जलगन्धपुष्पादीनिनिक्षिप्य ॥ ओं एहि सूर्य
 महस्त्राशोतेजो राशो जगत्पते ॥ अनुकम्पयमा भक्त्यागृहाणान्यं
 दिवाकर इति मन्त्रेण अर्घ्यं दद्यात् ॥ तत उत्थायैव सूर्यो पस्था
 नम् । ओं अहो मस्य केतवोऽविरस्मयोज्जनां ऽ अनु ॥ आजन्तोऽ
 अप्रभो यथा ॥ उपमाय गृह तोसि सूर्यायत्वाञ्ज्राजायैषते योनि
 सूर्यायत्वा ऽत्राजाय ॥ सूर्यञ्ज्राजिष्ट ञ्ज्राजिष्ट त्व-देधेऽपिसिञ्चा
 निष्त्रोहस्मनुष्येषुभूयासम् ॥ ॐ इधस शुचिपदसुरन्तरिच सद्योता
 वेदि पद्विति धुगोणसत् ॥ नृपद्वर सहव सद् व्योम सदन्व
 गोजा ऋतजा ऽ अद्रिनाऽऋतवृहन् इति मन्त्राभ्या सूर्यं सुपस्थाये
 प्रदक्षिणी कुर्यादिम्बो दिग्देवेभ्यश्च प्रणमेत् ॥ ओं वारुचर्यं दिशानम । ओं
 इन्द्रायनम । ओं आग्ने वै ऽशे नम । ओं अग्नेयं नम । ओं दिक्षिणस्यैऽग्निशो
 नम ओं यमाय । ओं नैऋत्वेदिशो नम ओं निऋत्ये नम । ओं

प्रतीच्यैदिशे नम वरुणाय नम ॥ ओं वायव्यै दिशे नम ओं
 वायव्ये नम ॥ ओं उदोच्यै दिशे नम ओं कुबेराय नम ॥ ओं
 ईशान्यैदिशे नम ओं ईशानाय नम ॥ ओं उर्ध्वायैदिशे नम — ओ
 ब्रह्मणे नम ॥ ॐ अथोदिशे नम अतन्ताय नम ॥ तत
 उपविश्य प्रणमेत् ॥ ओं ब्रह्मणे नम । ओं अग्नये नम ओं
 इन्द्रायै नम । आ आपविभ्या नम । ओं प्रचे नम । आ वाचस्पत
 य नम । आ रि० ॥ २ ॥ नम । ओं महद्भ्यो नम । ओं अद्भ्यो
 नम । ओं अपाम्बतते नम । ओं वरुणा । य नम । ओं सम्बन्धसाप
 यसा सन्तनु मिरगन्महि मनसा स ६ शिवन ॥ एष्टा सु द्वे
 विदधातु रायो लुमाण्डुं तन्वो यद्विलिष्टम् ॥ इति मन्त्रेण सनत्
 ऊर द्वयेन सुप्त विमृश्य । तच्चतुरीति मन्त्रेण चक्षुः स्वर्गं कुर्यात् ॥
 ओं त चक्षु ईवदितम्पुरस्ता चक्षुः सुचरत् । परयेम शरद् शतजीम
 शरद् शत ६ ॥ १ ॥ याम शरद् शत प्रव्र वाम शरद् शतमदीना
 श्याम शरद् शतम्भूयश्च शरद् शतात् ॥ इति मन्त्रेण नामिकाऽ
 गुष्टाम्या नल स्पृष्ट्या, चक्षुः स्वर्गं निदर्शित । तत ॐ देवामातु
 विद्वो गातु त्वित्वागातुमित् ॥ मनस्वतऽऽत्मन्नेवयस ६ स्वाहा स्वातेवा
 इति मन्त्रेण पितृन् प्रिसृज्य कायन वाचेति मन्त्रेणेश्वरारपणं कुर्यात्-
 कायेन वाचा मनसन्निद्रयैवाचुष्यात्मनाया प्रकृति स्वभावात् ॥ कोमि
 यद्यत् सकल परस्मै नारायणा यति समपयेति ११ कमपावस्थ कुर्या
 णिः भूभाचुत् सृजन् ॥ यस्यस्मृत्या चना मोक्षया तपोयज्ञ क्रिया
 दिषु । -युत सम्पूर्ण वा याति सद्योवन्दे वनच्युतम् ॥ चतुर्भिरच
 चतुर्भिरच द्वाभ्या पञ्चमिरे वच ह्युक्त च पुनर्द्वाभ्या समेविष्णु
 प्रसीदन्तु इति पठेत् तत गन्धाक्षत पुष्पाण्यादाय वक्ष्यमाणमन्त्रा
 पठित्वा गन्धादिभि यत्रमानस्वतिलकं कुर्यु ॥ वैदिक मन्त्रा ओं
 शतमिन्तु शरदोऽश्रन्तिदेवा यथा न शक्या जरसन्तन् नाम ॥ पुत्रा
 मोषत्र पितरो भवन्ति मानोमध्वारी रिपतायुर्मान्तो ॥ १ ॥ अदिति
 र्गारदिति रन्त रिञ्ज मदितिम्माता मपिता सपुत्रा ॥ त्रिरदेवाऽ
 अदिति पञ्च जनाऽअदिति ज्ञान अदिविज्रनिचक्वम् ॥ स्वाहु
 प ६ मद पितरोययोधा कृच्छ्र भित शहा जन्तोगभीरा । चित्र
 मनाऽऽशुवताऽअमृदा मतो यीरा उरयो व्यात माहा ॥ ३ ॥ आच्छा
 न पितर साम्या सः शिवनोष्ठा वा प्रथिया अनेहसा ॥ पूषा न
 यानुदुरिता ह्या शूर्दा रक्षा माफिमोऽअगसाऽऽशत ॥ ४ ॥ पितृभ्य
 म्या यिम्यः स्वयानम पितामहभ्य स्वययिभ्य स्वयानम । मपिता
 महभ्य स्वययिभ्य स्वयानम । अथत्र पितरो मादन्त पितरोती

तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ५ ॥ पुनन्तुमा पितरः सोम्यासः
 पुनन्तुमा पितामहा पुनन्तु प्रपिता महा ॥ पवित्रेण शता युपा ।
 पुनन्तुमा पिता महाः पुनन्तु प्रपिता महाः । पवित्रेण शतायुपाविश्च
 म् आयुष्यं श्शनवै ॥ ६ ॥ ततो यजमानो गृहीत तिलको ब्राह्मण पादान्
 प्रक्षाल्य पादोदकं गृहीत्वा ॥ तान्ब्राह्मणान् पायसादिभिर्भोजयित्वा
 तेभ्यो लब्ध्याभ्यनुक्तः सपरिवार स्वयं मपि भुञ्जीतः ॥ तत् ॥ श्राद्धोयत्रव्या-
 णि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् तद्भावे जलेवानिच्छिपेत्ः इति सगृहितम् ॥
 प्रा० धेनुं अ० द्रष्टव्य ।

अथ पितृसूक्तम् ॥

ॐ मधुमधु मधु ॐ मधुन्वाताऋताय वे मधु चरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः
 सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ मधुनक्त सुतोपसो मधु सत्पाथिव ॐ रज मधुद्यो
 रस्तुनः पिता ॥ २ ॥ माधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमो ॥ २ ॥ ऽअस्तु सूर्यः
 माध्वीर्गावो भवन्तुनः ॥ ३ ॥ ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय
 पितृ मते स्वाहा अपहृता असुरक्षा ॐ सि वेदि पदः ॥ ४ ॥ ये रूपाणि
 प्रति सुप्रचमाना । असुराः सन्तस्वधया चरन्ति परा पुरोये भरन्त्यग्निष्टो
 त्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ ५ ॥ अत्र पितरो मादयध्वम् । यथाभागमा
 वृषायध्वम् । अमीमदन्त पितरो यथा भागमा वृषायिपत् ॥ ६ ॥ ॐ
 नमोवः पितरोरसाय नमोवःपितर शोषाय नमोवः पितरोजीवाय-
 नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः
 पितरो मन्यवे, पितर पितरो, ननोयो गृहान्नः पितरो दत्त सतोवः पितरो
 दैर्दमै तद्रः पितरोव्वास आधत्त ॥ ७ ॥ आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्कर
 स्रजम् । यथेह पुरुषोऽपत् ॥ ८ ॥ उज्जं वहन्तीर मृतं धृतं पयः कीलालं
 परिश्रुतम् स्वधास्वतर्षयतमे पितृन् ॥ ९ ॥ ॐ पितृन्व्यः स्वधायिम्यः स्वधानमः
 पितामहेभ्यः स्वधायिम्यः स्वधानमः अक्षत्र पितरोऽमीमदन्त पितरोऽती
 तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ १० ॥ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु
 मा पिता महाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुपाः पुनन्तु मा पिता-
 महाः पुनन्तु प्रपितामहा पवित्रेण शतायुपाविश्च आयुष्यं नवै ॥ ११ ॥
 अग्न आयुष्यपि पयसः ऽआसु वोर्ज धिय वनः आरे वाधस्व दुच्छु-
 नाम् ॥ १२ ॥ पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः पुनन्तु विश्वा
 भूतानि जाव वेदः पुनीहिमा ॥ १३ ॥ पवित्रेण पुनी हिमा शुक्रेण देव
 दीयत् अग्ने क्त्वा क्तूँ १ दस्तु यत्ते पयि मचिष्यन्ने विवत मन्तरा
 ब्रह्मतेन पुनातु मा ॥ १४ ॥ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षाणि ।

यः पोता मपुतातुमा ॥ १६ ॥ उभाभ्यादेव सवितः पवित्रौ न च मां
पुनोद्विविश्वतः ॥ १७ ॥
वैश्व देवी पुनती दैव्यागा धर्यामिना बहुव्यः स्वन्योतपृष्टाः । तथा-
मदन्त सद्यमा देपुवय ऽ स्याम पतथोरथीणाम् ॥ १८ ॥ ये समानाः समनसः
पितरो यमराज्ये तेषां ल्लोकः स्वयानमो यतो देवेषु कल्पताम् ॥ १९ ॥
ये समाना समनसो जीवा जीवेषु मामकाः तेषां ऽ श्रीर्मयि कल्पता
मस्मिन्लोके शत ऽ समाः ॥ २० ॥ द्वेसूती असृग्वां पितृणामिह देवाना
मुत्तमर्त्यानाम् ताम्यामिदं विश्व मेजत्समेतिय पितरं मातरं च ॥ २१ ॥
इदं ऽ हविः प्रजननं मे अस्तु दश वीर ऽ सर्वं गणं ऽ स्वस्तये आत्म
सनि । प्रजासनि पशु सनि लोक मन्य भयसनि । अग्निः प्रजां
बहुलां मे करोत्वन्न पयोरेतो अस्मा सुवत्त ॥ २२ ॥
उदीरता मवर उत्परास उन्मथ्यमाः पितरः सोम्यासः असुय ईशुर पुका
अवज्ञास्तेनोऽवन्तु पितरो ह्वेषु ॥ २३ ॥ अङ्गिरसोनः पितरो नवम्वा
अश्रवाणो भृगवः सोम्यासः तेषां वयं ऽ सुमतौ यक्षियाना मपि भद्रे
सोमनमे स्याम ॥ २४ ॥ ये तः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनू हिरे सोमपी
र्धं वसिष्ठः तेमिर्यमः सऽरण्यो हवीं ऽप्यु शत्रु शङ्गिः प्रति काममत्तु
॥ २५ ॥ त्वं ऽ सोम प्रचिकितो मनोपा त्वं ऽ रजिष्ठ मनुनेपि पन्थाम
तव प्रणीती पितरो न इन्द्रोः देवेषु रत्न मभ जन्त धीरा ॥ २६ ॥ त्वयहि
नः पितरः सोम पूर्वं कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः ॥ बन्वन्न वातः
रिधीं ऽऽरपोऽसु वीरेभि रसुं मधवा भवानः ॥ २७ ॥ त्वं ऽ सोम पितृभिः
वंविशनोऽनुचावा पृथिवीः आततन्व ॥ तस्मैत इन्द्रो हविषां विधेम वय
ऽ स्याम पवयो रथीणाम् ॥ २८ ॥ बर्हिषद्ः पितरऽऽत्यर्वागिमायोऽव्यो
च कुमा जुषधम् ॥ त आगता वसा सन्त मेना धानः शंयोररथोद्घात
॥ २९ ॥ आह पितृन्मुविदर्शो ॥ २ ॥ अविस्सेन पात च विक्रमण्यं च
भिष्णो बर्हिषदोये स्वयया सुवस्य भजन्व पितृस्व इहा गमिष्ठा ॥ ३० ॥
उपहृताः पितरः सोमासो बर्हिष्येषु तिष्ठिषु श्रियेषु ॥ त आगमन्तु त इह
ध्रुवन्वपि प्र वन्तु वेऽरन्व स्मान् ॥ ३१ ॥ आयास्तुनः पितरः सोम्यासो
ऽग्निप्रात्ताः पथिमिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे त्वयया मन्दन्तोऽपि
नू वन्तु वेऽवन्वस्मान् ॥ ३२ ॥ अग्निप्रात्ता पितर पृह गन्धत सद्यः सद्यः
सदसु प्रयातयः अत्ताऽर्वाक्षिप्रयतानिवहिष्यवारथि ऽ सर्तं वीरं दधावता
॥ ३३ ॥ ये अग्निप्राता ये अग्नेनप्राता मध्ये दिवः स्वयया मादयन्ते
देव्यः गणं सुनोतिमेतापथा चपक्वन्ं कल्पयति ॥ ३४ ॥ अग्निप्रात्तानुय
तोस गमहे नाराश ऽ मे मोमपी र्थं य आशुः । तेनो विप्रासः सुहवा वन्तु
ययं ऽ रथाम पवयो रथीणाम् ॥ ३५ ॥ आच्या जानु ब्रह्मिण्यो

निपद्येर्म यज्ञ मभिः गृणीत विश्वे माहिः सिष्ठ पितरः केन चिन्तो यद्
 आगः पुरुषता कराम ॥ ३६ ॥ आसीनासो अरुणीना मुपस्थे रयीं धत्त
 दाशुपे मर्त्याय पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य न्वस्वः ॥ प्रयच्छत इहोर्जदधात ॥ ३७ ॥
 यमग्ने कथ्य वाहनत्वचिन्मन्यसे , रयिम् तन्नोगीभिः श्रवाप्यं देवत्रा
 पनयायुजम् ॥ ३८ ॥ यो अग्निः कथ्य वाहनः पितृः न्यरुहता वृधः प्रेदुह-
 व्यानि वो चति देवेभ्यश्चपितृभ्य आ ॥ ३९ ॥ त्वमग्न ईडितः कथ्य
 वाहना वाहद्व्यानि सुरभीणि कृत्वाप्रादाः पितृभ्यः स्वधयाते अत्तन्न-
 द्वित्वं देव प्रयता हवीऽपि ॥ ४० ॥ ये चेह पितरो ये च नेह यंश्च
 विद्मयो ॥ २ ॥ उचन प्रविद्ध त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञे
 सुकृतजुपध्व ॥ ४१ ॥ इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासोय उपरास
 ईयुः ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वानूनं सु वृजि ना सु विबु ॥ ४२ ॥
 अधा यथा नः पितरः परासः प्रलासो अग्न ऋत माशुपाणः शुचीदयन्दी
 धिति मुक्य शासु क्षामाभिदन्तो अरुणीरपत्रन् ॥ ४३ ॥ उशन्तस्त्वा-
 निधीमह्य शन्तः समिधी महि । उशन्तुरात आवह पितृन् हविषे
 अत्तर्वे ॥ ४४ ॥ श्रोन्समुद्रा न्समत्प त्स्वर्गा नपां पतिवृषभ इष्टका
 नाम् ॥ पुरीषं स्वसानः सुक तस्य लोके तत्र गच्छत यत्र पूर्वपरेताः ॥ ४५ ॥
 आप्या यस्वसेम तुते विधतः सोमविषायम् भवा वाजस्य सङ्गधे ॥ ४६ ॥
 सन्ते परां ॐ सि समुयन्तु वाजाः सं वृषया न्यभि मातिपाहः आप्याय
 मानो अमृताय सोम दिविश्रवा स्युत्तमानिधिष्वः ॥ ४७ ॥ अग्नि
 प्रियेपुशाम सु कामोभूतस्यभव्यस्यं सम्राडेको विराजति ॥ ४८ ॥ ओ
 तत्सत् ॥ इतियजुर्वेदे पितृ सूक्तम् ॥

अथ हेमाद्रो मार्कण्डेय पुराणो रुचिस्तवः ॥

रुचिर वाच—नमस्येऽहं तीर्थं रच्छाद्धे येव सन्त्यधि देवताः । देवै
 रपिहि तर्प्यन्ते येच श्राद्धे स्वधोत्तरेः ॥ १ ॥ नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे ये
 तर्प्यन्ति महर्षिभिः । श्राद्धैर्मनोभयैभक्त्याभुक्तिः मुक्ति मधीष्युभिः ॥ २ ॥
 नमस्येऽहं पितृन्स्वर्गे सिद्धांः संतर्पयन्ति यान् । श्राद्धेषु दिव्यैः सकलै
 रूप हारे रतुत्तमैः ॥ ३ ॥ नमस्येऽहं पितृ भक्त्यायेऽर्च्यन्ते मुहूर्त्तैरपि ।
 तन्मयत्वेन वाज्रज्जिह्वं द्वि मात्यन्ति की पराम् । नमस्वेऽहं पितृ न्मर्त्यैः
 रच्यन्ते सुविषे सदा, श्राद्धेषु श्रद्धयाभिष्ट लोक प्राप्ति प्रदायिनः ॥ ५ ॥
 नमस्येऽहं पितृन्विप्रेरर्च्यन्तेभुविषे सदा वाञ्छिताभीष्ट लाभाय प्राजा

प्रत्यप्रदायितः ॥ ६ ॥ नमस्येऽहं पितृभ्यो वै तर्प्यन्तेऽरंश्य वासिभिः ।
 वन्यैः श्राद्धं रथता हारैस्त्वपो निधूतं किञ्चिदपि ॥ ७ ॥ नमस्येऽहं पितृन्विप्रै
 र्नेष्टिकं ब्रह्म चारिभिः ये सं संयतात्मभिर्नित्यम् सं तर्प्यन्ते समाधिभिः ॥
 नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धे राजन्या स्वर्पयन्ति यान् कञ्चैर शोषैर्विधिव श्लोक
 त्रय फलं प्रदान् ॥ ६ ॥ नमस्येऽहं पितृन्वेश्यै र्च्यन्ते भुवि ये सदा
 शकृमाभिरतै र्नित्यं पूष्य धूपान्न चारिभिः ॥ १० ॥ नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धे
 ये शूद्रै रवि भक्तिः सन्तप्यन्ते जगत्त्रय नाम्ना ज्ञाताः सु कालिनः ॥ ११ ॥
 नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धैः पावाले ये महा सुरैः सन्तर्प्यन्ते स्वधा हारात्पुण्य
 इम्भ पदेः [सदा ॥ १२ ॥ नमस्येऽहं पितृञ्छ्राद्धै र्च्यन्ते ये रसावले ।
 भोगै रशोषैर्विधि वन्नागैः कामा नभीप्सुभिः ॥ १३ ॥ नमस्येऽहं पितृ
 ञ्छ्राद्धैः सप्तैः सन्त पितान्सदा । तत्रैव विधि वन्मत्र भोग संपत् सम
 न्यतेः ॥ १४ ॥ पितृन्ममस्येनिधसन्ति सादात् ये वेदं लोके च त्वान्त
 रिजे ॥ महीतले ये च सुरादि पूज्याः तेमेप्रयच्छन्तु मयोपनीषम् ॥ १५ ॥
 पितृन्ममस्ये परमात्म भूता ये वे विज्ञाने निवसन्ति मूर्ताः । यत्रन्ति
 यानस्तमलैर्भनीभिर्योगिश्वराः क्लेश विमुक्ति हेतुम् ॥ १६ ॥ पितृन्ममस्ये
 दिनि ये च मूर्ताः ॥ स्वधा भुजः काम्य फलाभि सन्धौ ॥ प्रदानं शक्ताः
 स ऋत्विक्सतानां वि मुक्ति दायेऽनभि सहितेषु ॥ १७ ॥ तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पि
 तरः सनता इच्छावतां ये प्रदिशान्ति कामान् ॥ सुखमिन्द्रत्वमतोऽधिकं
 वा, सुषान्शु न्वानिजल गृहाणि ॥ १८ ॥ सोमस्यये रिमपुत्रेऽहं विन्वे,
 शुभ्ले विपार्नेच सदा वसन्ति ॥ तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरोऽन्त तोयैर्गन्धा
 दिनापुष्टि मितोत्रजन्तु ॥ १९ ॥ येषां हृतेऽनौहविषा च तृप्तिः ये मुञ्जते
 वित्र शरीरभाजः ये पिण्ड दानेन सुदं प्रयान्ति तृप्यन्तु तेऽस्मिन्पितरो
 न्तवोयैः ॥ २० ॥ ये यद्विगमांसिनसुरैरभीष्टैः ऋष्यैस्तिलैर्हव्यमतो हरैश्च ।
 कालेन शास्त्रेण महर्षिर्वै संवीण्य तात्तैमद् मन्त्रायान्तु ॥ २१ ॥ इत्यान्य
 शेषाणि वधान्यवीणा न्यतोच तेषा ममेराचितानाम् । तेषान्तु सानिध्य
 मिहास्तुपुष्प,गन्धाभ्युभोज्येषु मयापिषेषु ॥ २२ ॥ दिने दिने येपत्किमुद्धतेऽर्चाम् ।
 मासान्त पूज्या सुर्येऽपुत्रास्तु, येरत्सरान्तेऽभ्युदये च पूज्या प्रयान्तु ते
 मे पितरोत्र तृप्तिम् ॥ २३ ॥ पूज्या द्विजात् कुमुदेन्दुमासो वे चत्रिया
 गाञ्च नराकं यणोः । तथा विशाये कनरा यथाता नीलीनिभा शूद्र
 जनस्य वैच ॥ २४ ॥ तेऽस्मिन्समस्ता सम पुण्य गन्ध, धूपान्न वावादि
 भिरे दनेन, तथाग्नि होमेनचयान्तु तृप्तिं सदा पितृभ्यः प्रणवोऽस्मि
 न्मेव ॥ २५ ॥ ये देव पूजायति तृप्तिं ह्येवोरनन्ति कस्यानि शुभा
 हृताभि, तृप्ता भयं भूति मृचो भयन्ति तृप्यन्तु तेऽस्मिन्प्रणवोऽपु
 न्मेव ॥ २६ ॥ रर्षामि भूतान्य मुरास्तुभोपान् निष्ठांश यन्तस्तत्र शिष

प्रजानाम् । आद्याः सुराणाममरेशपूज्यास्तृप्यन्तुतेऽस्मिन्प्रणवोऽस्मितेभ्यः ॥ २७ ॥
 अग्निष्वात्ता वह्निं पदः आज्यपाः सोमपास्तथा । ब्रजन्तु तृप्तिं श्राद्धे-
 ऽस्मिन् पितरं स्तर्पिता मया ॥ २८ ॥ अग्निष्वाताः पितृ गणाः प्राची
 रक्षन्तु मे दिशम् । तथा वह्निं पदः पान्तु यान्याः ये पितरस्तथा ॥ २९ ॥
 प्रतीचीं माज्यपास्तद्ध दुद्धोचीं मपि सोमपाः ऊर्ध्वं त स्वर्यमा रक्षेत्कव्य
 वाहनलोऽप्यधः ॥ ३० ॥ विश्वे देवाभवः पान्तु ऊर्ध्वं पाःन्तुमरुद्गणाः । रक्षो
 भूत पिशाचेभ्यस्तथैवा सुर दोषतः । सर्वतश्चाधिप स्तेषां यमो रक्षां
 करो तु मे । ३१ ॥ विश्वा विश्व भुगाराभ्यो धर्मो धन्यः शुभा ननः ।
 भूतिदो भूति कृद्भोतः पितृणां वे गणा नवः ॥ ३२ ॥ कल्याणः
 कल्पदः कर्ता करवः कल्पतरा श्रयः कल्पना हेतु रनघाः पट्टिमे ते गणा
 स्मृताः ॥ ३३ ॥ वरो वरेण्यो वरदः पुष्टिदं स्तुष्टिदं स्तथा । विश्व पाता
 तथा धाता सप्तै वैते तथा गणाः ॥ ३४ ॥ महान्महात्मा महितोमहिमः
 बान् महाबलः । गणाः पञ्च तथै वैते पितृणां पाप नाशनाः ॥ ३५ ॥
 सुखदो धनदर्शचान्यो धर्म दोऽन्यश्चभूतिदः । पितृणां कथ्यते चैत तथा
 गणं चतुष्टयम् ॥ ३६ ॥ एकं त्रिंशत्पितृगणा यैर्व्याप्तं मखिलं जगत् ।
 तेमेऽनु तृप्तापितरस्तृप्यन्तु च सदा हितम् ॥ ३७ ॥ स्रोत्रेणाने नव नरो
 योर्ध्मो स्तोष्यति भक्तिः तस्य तुष्टा वय भोगान्दास्यामो ज्ञानमुत्तमम्
 ॥ ३८ ॥ तस्मा देत्त च्वया श्राद्धे विप्राणा भुञ्जतां पुरः श्रावणीय महा-
 भाग अस्मात् तृप्ति कारकम् ॥ ३९ ॥ इतिहविस्तवः ॥

अथ रक्षोघ्नीर्चनं पठेत् ॥

ॐ कृणुष्व पाजः प्रासितिं न पृथ्वीं याही रोजेवामर्वा इमेन ॥
 त्रिष्वी मनु प्रसितिं हुणानोस्तासि विष्यत्तसस्त पिष्टे ॥ १ ॥ तव
 भ्रमास आशु या पतन्त्य नुस्पृशायुपता शोशु चानः ॥ वपूष्यग्ने जुह्वा
 पतङ्गा न सन्दिवो विश्वज विष्व गुल्काः ॥ २ ॥ प्रतिस्पृशो विसृज तृष्णि
 तपो भवा पायुर्विशो अस्या अदग्धः । योनो दूरेऽग्रथश १० सोयो-
 ऽअन्त्यग्ने माकिष्टेव्यधिरा द्धर्षीत् ॥ ३ ॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्याते नुध्वन्य
 मित्रा ओपत्तात्तिम् ह्येते ॥ यो नो अराति १० समिधान चक्रेन नीचा
 तंधद्वरा सन्न शुष्कम् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविष्दुया द्यवस्मदा विष्कृ-
 णुष्व वेव्यान्यग्ने ॥ अवस्थिरा तनु हियांतु जूनां जामिमजा
 मिम्प्रमृणो हि शत्रून् ॥ अग्नेश्वा तेजसा सादयामि ॥ इति
 रक्षोघ्नी श्रवणम् ।

गर्गः—कृष्णे भाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रति दिनं भवेत् । पितॄणां प्रत्यहं
कार्यनिपिद्धा हेऽपि तर्पणम् ॥

अथ तर्पण प्रयोगः ॥

आचम्य प्राणा नायम्य कुश पवित्र धारणाम्—(दक्षिणहस्तस्या
नामिक्रयां—ॐ पवित्रे स्त्वो वैष्णव्य योसवितुव्व ऽप्सवऽत्तपुनाम्य
द्विद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ तस्य ते पवित्रपतेपवित्रपूतस्य
यत्कामऽपुने तद्वकेयम् ॥ १ ॥ मन्त्रेण धारयेत्, सल्पः ॐ विष्णवे
नमः—अद्यपूर्वाचारित एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ
ममाञ्जनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं देव ऋपि मनुष्य पितृ
तर्पणा महं करिष्ये ॥ आद्य पात्रे रीष्य पात्रे वा तर्पणर्थे उदक पूरणम्—
(एतत्पात्रे प्रथमं श्वेतगन्ध यवान्ऽतद्भावेतएडुलान्) सुगन्ध पुष्पाणि
तुलसी दल सहितानिनिदध्यात् तदन्तरं तत्पात्रो परि हस्त प्रमाणान्न
प्रादेश प्रमाणान्न वात्रोन्न कुशान्न प्राग्मान्न स्थापयित्वा पश्चान्नमन्त्रेण
तत्पात्रं जलेन पूरयेत् ॥—ॐ विश्वान्देवान् भवत्सु (केपाञ्चिन्मरोः
भाद्र कर्माणि कुर्यात् नतु तर्पणे ।) आवाहयिष्ये ॐ आवाहय ॥ ॐ
विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमं हवम् । पदम्बर्हिन्निपीदत ॥ २ ॥
विविश्वेदेवासः । शृणुतेमं हवम्मे येऽअन्तरिक्षे यऽन्नपदयविष्णु ।
येऽअग्नि जिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसदयास्मिन्नवर्हिर्पि मादयध्वम्
॥ ३ ॥ ततो देवानामा वाहनम्—(पूर्वं पात्रो परिस्थापित त्रीन्कुशान्न
तुलशीदल संयुक्तानदक्षिण कर सम्पुटे धृत्वा तदनन्तरं तस्योपरि वाम
हस्त मयो मुलं कृत्वा पश्चाद्देवाना वाहयेत् ॥) आगच्छन्तु महाभागा
विश्वेदेवा महाशलाः ये तर्पणेऽत्र विहिताः सायधाना भवन्तुते ॥ ३ ॥
ॐ भवामः ॥ देव तर्पणम्—ॐ ब्रह्मास्तृप्यताम् । ओं विष्णुस्तृप्यताम् ।
ओं रुद्रस्तृप्यताम् । ओं प्रजापतिस्तृप्यताम् । ओं देवास्तृप्यताम् ।
ओं इन्द्रा हं सि स्तृप्यताम् । ओं वेदास्तृप्यताम् । ओं ऋषय-
स्तृप्यताम् । ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यताम् । ॐ
इतरा चार्यास्तृप्यताम् । ॐ सम्बन्धरः साययवस्तृप्यताम्, ॐ देव्य
स्तृप्यताम् ॐ अप्सरसस्तृप्यताम् । ॐ देवानुगास्तृप्यताम् । ॐ नागा
स्तृप्यताम् । ओं सागरास्तृप्यताम् । ॐ पर्वतास्तृप्यताम् । ॐ सरित्-
स्तृप्यताम् ॐ मनुष्यास्तृप्यताम् । ॐ यक्षास्तृप्यताम् । ॐ रक्षाध
स्तृप्यताम् । ॐ पिशाचास्तृप्यताम् । ॐ सुपर्णास्तृप्यताम् । ॐ

भूतानिस्तृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् । ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ।
 ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भुतप्रामश्चतु
 विधस्तृप्यन्ताम् । (तैः कुशैः) प्रांगमैः पूर्वाभिमुखो दक्षिण हस्तस्य
 सर्वाङ्ग ल्यप्रै देवतीर्थेनान्य पात्रे एकैकाञ्जलिं क्षिपेत् ॥) ॐ तीर्थानि
 तृप्यन्ताम् । ॐ तीर्थ देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ विश्वेदेवास्तृप्यन्ताम् । ॐ
 मोदास्तृप्यन्ताम् । ॐ प्रमोदास्तृप्यन्ताम् ॐ . . . सुमुखा
 तृप्यन्ताम् । ॐ दुर्मुखास्तृप्यन्ताम् । ॐ अविघ्नास्तृप्यन्ताम् । ॐ
 विघ्न कर्तारस्तृप्यन्ताम् ॥ मालाकारे यज्ञोपवीत विधाय - मनुष्यदेव
 तर्पणम्— (ततो निवीतं कृत्वा पूर्वोक्त कुशानुदगग्राम्दक्षिणा हस्तस्य
 कनिष्ठका मूल प्रदेशेषुत्वा पश्चादुत्तराभिमुखं मनुष्य देवेभ्यो द्वौ द्वाव
 ङ्जली कायतीर्थेन देयौ ॥) यथा ॐ—सनकस्तृप्यतु । ॐ सन० ॥
 ॐ सनन्दनस्तृप्यतु । ॐ सनन्दन० ॥ ॐ सनातनस्तृप्यतु । ॐ
 सना० ॥ ॐ कपिलस्तृप्यतु । ॐ कपि० ॥ ॐ आसुरिस्तृप्यतु । आसुः ॥
 ॐ वोढुस्तृप्यतु । ॐ वोढु० ॥ ॐ पश्चशिखस्तृप्यतु । ॐ पश्च० ॥
 पितृ तर्पणम्—; पूर्वोक्त कुशान्द्रिभुगनान्दक्षिणाम मूलान् द्विगुणी कृत्या-
 ङ्गुष्ठ तर्जनी मध्य प्रदेशे (दक्षिण हस्तस्य) धृत्वा दक्षिणाभिमुखं
 पूर्वमन्त्रित् पात्र जले अपसव्येन कृष्णतिल मिश्रणं तेन जलेनाया सद्येन
 पितृतीर्थेन पितृ स्त्रीं स्त्रीनञ्जलीन् दद्यात् ।) यथा—ॐ कन्यवाड
 नलस्तृप्यताम् । ॐ कन्यवा० ॐ क० ॐ सोमस्तृप्यातम् ॥३॥ ॐ यमत्
 प्यताम् ॥ ३ ॥ ॐ अर्यमास्तृप्यताम् । ३ ॥ ॐ अग्निष्वात्ताः पितर
 तृप्यताम् । ३ ॥ ॐ वह्निपदःपितरस्तृप्यताम् । ३ ॥ यमतर्पणम् ॥—
 (यमाश्चैकेत्री स्त्रीमञ्जुलीन्दद्यादित्याहुः ।) यथा—ॐ यमायनमः ।
 ॐ यमाय० ॐ यमाथ० ॐ यमगाजायममः ॥३॥ ॐ मृत्युवेनमः ॥२॥ ॐ
 अन्तकाय नमः । ३ ॥ ॐ वैश्वस्वनाय नमः । ३ ॥ ॐ कालायनमः । ३ ॥
 ॐ सर्वभूत क्षयायनमः । ३ ॥ ॐ औन्दुम्बरायनमः । ३ ॥ ॐ दध्नाय
 नमः । ३ ॥ ॐ नीलायनमः । ३ ॥ ॐ परिमेषिते नमः । ३ ॥—ॐ
 वृकोदरायनः । ३ ॥ ॐ चित्राय नमः । ॐ चित्रागुप्ताय नमः । ३ ॥
 मनुष्य पितृतर्पणम्— (स्वस्व पितृणां गोत्र नामो धारं कृत्वा पितृ
 तीर्थेन प्रत्येकत्रो स्त्रीनञ्जलीन्दद्यात् ॥) उशान्तस्त्रेत्या याहनम्—ॐ
 उशान्तस्त्रा । निधी मह्यशान्तऽसमिधी महि । उशान्तु रातऽअश्वह
 पितृन्द्द्विपेऽअत्तरे ॥ ४ ॥ नमस्तपितृना वाहयित्वे—ॐ आवाहय—(तर्प-
 णेतु प्रथमा रिभक्त्यन्त पद् योजयेत् ॥) यथा ॐ उदीरका मरुऽ
 उत्परासऽउन्मरुपनाऽ पितरः सोम्यासः । अनुष्यऽशुसुधाऽ श्व
 घ्रास्ते नो वन्तु पितरो हयेषु ॥ ० ॥ ॐ अघेहा मरुगोत्रोऽस्मत्पितरऽ

मुहुशर्मा (वा) वसु स्वरूप स्तृप्यता मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा ॥
 प्रथमाञ्जलिम् ॥ अङ्गिरसोत । पितरो नवगवाऽऽबध्वर्षाणोभृगावऽ
 सोम्यास - ॥ वेपाञ्चय ष सुमती यद्वियानामपिमद्द्रे सौमस
 स्यात् ॥ ६ ॥ अथोहासुक गोत्रोऽस्मत्पिताऽसुक शर्मा वसु स्वरु
 प्यतामिद् तिलोदक तस्मैस्वधा । इतिद्वितीयाञ्जलिम् ॥ अथोहासु ।
 नऽ पितर-सोम्यासो गिण्णान्ताऽ परिभिर्देवयानैऽ । अस्मिन्वज्जेत्य
 यामदन्तोविष्णु वन्तुतेनन्वस्मान्ना । आयाथ्यो हासुःगोत्राऽस्मत्पितासुक
 शर्मानसु स्वरूपस्तृप्यता मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा ॥ इति त्रितियाञ्जलि
 पित्रे दद्यात् ॥ अथो उज्जं वदन्ती रसुतञ्चूतम्पय- क्रीलालन्परिस्तुतम् ।
 स्वधास्थ तर्पयत मेपितृम् ॥ ८ ॥ अथो अयोहासुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽ
 सुक शर्मा (वा) रुद्र स्वरूप भृप्यता मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा ॥ इति
 प्रथम । पितृभ्य-स्वधायिष्य । स्वधा नम+ पितामहेभ्य+स्वधा
 यिष्य+स्वधा नम +पितामहेभ्य+स्वधापिभ्यस्वधातम+ अङ्गिन्पितरो
 भीमदन्त पितरोत्रा तृप्यन्तपितरऽ पितरऽ शुण्धदम् ॥ ९ ॥ अथो अयोहासुक
 गोत्रोऽस्मत्पिता, महोऽसुक शर्मा रुद्र स्वरूपस्तृ० ॥ इति द्वितीया
 ञ्जलिम् ॥ अथो ये चेद् पितरो येच नेद् योश्चत्विज्जयाऽरु ॥ उच न
 प्यदिदम् । स्वदेव्य यतित जातयेद्ऽ स्वयामिष्योक्तधसुकनञ्जुपस्य ० ॥
 अथो अयोहासुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽसुक शर्मारुद्र स्वरूपस्तृ० । इति त्रि
 तीयेपितामहाय, दद्यात् अथो मधुव्यताऽऽष्टावयते मधुक्षान्ति सि-व्य ।
 माद्वीर्नऽ सन्तोषवाऽ । अथो अयोहासुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽसुकशर्मा
 (वा आदित्य स्वरूपस्तृप्य मिद् तिलोदक तस्मैस्वधा । इति प्रथमाञ्ज
 लिम् ॥ ॐ मधुनक्त मुतो पसो मधु मत्पाविन ष रज- । मधु रथी
 स्तु न ऽ पिता ॥ १२ ॥ ॐ अयोहा सुक गोत्रो ऽ स्मत्पिता
 महोऽसुक शर्मा आदित्य स्वरूपस्तृ० ॥ इति-द्वितीयाञ्जलिम् ॥
 ॐ मधु मान्तो वरतस्यतिर्म्मधुमा २ ॥ अथस्तु सूयं - । माद्वी
 गांवाभयन्तु न ३ ॥ १३ ॥ अयोहा सुक गोत्रो जनत्पितामहो
 सुक शर्मा आदित्य स्वरूपस्तृ० ॥ इति प्रथमा महाप तृतीयाञ्जलि
 दद्यात् ॥ ॐ आमावातस्य प्रसवो नयम्या ष्मे वाया शुचिनी
 विदरस्य ॥ आमा गन्ताम्वितरा मातरा आमा सोमा अमृत द्येन
 गन्वा ॥ ॐ अयोहा सुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽसुकशर्मा (सापत्यसववा)
 गायत्री स्वरुपा तृप्यता मिद् तिलोदक तस्मै स्वधा ॥ इति प्रथमा
 चतुर्थाञ्जलिम् ॥ अथो नैव पाक्यत माप्रे द्वितीया त्रितीया चतुर्थी
 दद्यात् ॥ ॐ आमा व्यावस्यसरो नगम्या तमे वाया शुचिनी
 विदरस्ये ॥ आमा गन्ताम्वितरा मातरा आमा सोमा अमृतस्य

गन्धात् ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्राऽस्मत्स्वित्पतामही अमुक दा (वा-
यथा योग्या) सवित्री स्वरूपा स्तूप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा
॥ इतिपितामह्यै प्रथमाञ्जलि दत्त्वा ॥ अने नैव वाक्येन द्वितीय
त्रितीया, ञ्जली दद्यात् ॥ ततः—आमा ध्वाजस्यप्सवो जगम्या
देमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे ॥ आमागन्ता म्पितरा मातरा चामा
सोमो अमृत त्वेन गम्यात् ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्राः अस्मत्प्रपि-
तामही अमुकदा (यथा योग्या) सरस्वती स्वरूपा तूप्यतामिदं
तिलोदकं तस्यैस्वधा ॥ इति प्रपिता मह्यै प्रथमाञ्जलि दद्यात् ॥
अने नैव वाक्येन प्रपितामह्यै द्वितीय तृतीयाञ्जली दद्यात् ॥ ॐ
मधु । मधु । मधु । तूप्यध्वम् । तूप्यध्वम् । तूप्यध्वम् ॥ ॐ
नमो व ऽः पितरो रसाय नमोव ऽः पितर ऽः शोषाय नमोव ऽः
ऽः पितरो जीवाय नमोव ऽः पितर ऽः स्वपायै नमोव ऽः पितरो
पोराय नमो व ऽः पितरो मन्त्र्यवे नमो व ऽः पितर ऽः पितरो
नमो वो गृहान्न ऽः पितरो दत्त सतोव ऽः पितरो देष्मै तद्वः
पितरो ध्वास (आधत्त) ॥ ११ ॥ ॐ अद्येहामुक गोत्राःऽस्मन्माता
महोऽमुक शर्मणाः (वा) यथायोग्य सपत्नीकः वरुण स्वरूपः
स्तूप्यता मिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ इति माता महाय सपत्नी
काय प्रथमाञ्जलि दद्यात् । एवं एव नमोवः इति मन्त्रेण माता
महाय (यथायोग्य सपत्नीकाय) द्वितीय तृतीयाञ्जलि अपि देये ॥
ॐ नमो वः इति मन्त्रं समग्रं पठित्वा ॐ अद्येह अमुक गोत्रोऽ-
स्मत्प्रमाता महोऽमुक शर्मा (वा) यथायोग्य सपत्नीकः प्रजापति
स्वरूपः स्तूप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ॥ इति प्रमाता महाय
प्रथमाञ्जलि दद्यात् ॥ एतदेव वाक्य मुच्चार्य द्वितीय तृतीयाञ्जलि
अपि तस्मै देये ॥ ॐ नमो वः इति मन्त्रं समग्रं पठित्वा ॐ
अद्येहामुक गोत्रोऽस्मद् बृद्ध प्रमाता महोऽमुक शर्मा (वा) यथा-
योग्य सपत्नीकः अग्नि स्वरूपः स्तूप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥
इति बृद्ध प्रमाता महाय सपत्नी काय प्रथमाञ्जलि दद्यात्—द्वितीय
तृतीयाञ्जलि अपि एतदेव वाक्य मुच्चार्य देये ॥ [ततो बह्व्य माण-
श्लोका ऽनुसारेण तावाम्बा इति जेष्ठ कनिष्ठादोन्सपत्नी कार्च
वर्षेत् ॥ अद्येहऽमुक गोत्रा अमद् सपत्न जननी (उपमाता)
अमुकदा वसुरूपा तूप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा । इदं तिलो-
दकं तस्यै स्वधा । इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ अद्येहामुक गोत्रा
ऽस्मद् पत्नी अमुक दा वसुरूपा तूप्यता मिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ।
इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ इदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ॥ अद्येह-

मुक्त गोत्रेः अस्मत्सुतः अमुक शर्मा (वा) वसुरूप स्तृप्यता मिदं
 तिलो दकं तस्मै स्वधा । इदंति० ॥ अमुक गोत्रा अस्मत्कन्या
 अमुकदा (यथायोग्या) वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥
 ३० । ३० । अमुक गोत्रः अस्मत्पितृभ्यः अमुकशर्मा यथा योग्य
 सपत्नीक (ज्येष्ठ कनिष्ठ) वसु स्वरूप स्तृप्यता मिदं मिदं तिलो
 दकं तस्मै स्वधा नमः ॥ ३० । ३० । अमुक गोत्रः अस्मन्मातुलः अमुक
 शर्मा यथा योग्य सपत्नीक वसुस्वरूप स्तृप्यता मिदं० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मद्भाता अमुक शर्मा (वा) यथायोग्य सपत्नीक
 वसुरूप स्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रः अस्मत्सापन्नभाता
 अमुक शर्मा (वा) यथा योग्य सपत्नीक वसुरूप स्तृप्य-
 तामि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रा अस्मदात्म भगिनी
 अमुकदा (यथायोग्या वसु रूपा तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रा अस्मन्मातु भगिनी अमुकदा (यथायोग्या) वसु रूपा
 तृप्यतामि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रा अस्मदात्म भगिनी अमुकदा
 (यथायोग्या) वसु रूपा तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥ अमुक गोत्रा अस्म
 सापन्न भगिनी अमुकदा (सापत्या) वसुरूपा तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मच्छ्वशुरः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्राः अस्मद्गुरुः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यतामि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मच्छ्वशुरः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मन्मित्रः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 अमुक गोत्रः अस्मदाप्तः । अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यता मि० । ३० । ३० ॥
 ततो वदवमाणान् आसदास्त्वन्व पर्यन्त देवर्षि पितृ मानवा दीन् तिलो
 दका ऋत्विभि स्वर्षयेत् ॥ यथा—श्री आवद्वास्तम्हपर्यन्त देवर्षि पितृ
 मानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता मद्वादेय, पितृ वंशो मृता येच
 मातृ वंशो तथैवच । गुरुरवशुर वन्धूना ये चान्ये वान्धवा स्मृताः ॥ ते
 तृप्ति मात्रिला यान्तु ये वास्मत्तोयकारु क्षिणः ॥ ये वान्धवा वान्धवा वा
 ये ऽन्य जन्मनिवान्धवा ॥ ३ ॥ ते सर्वे तृप्ति मायान्तु मर्त्ते नान्युनाऽ
 पिजाः ॥ देवागुणः स्वधा यज्ञा नागा गन्धर्वे राक्षसाः ॥ ४ ॥ पिशाचा
 गुण्डाः सिद्धा कृष्णावडास्तर यः रग्नाः । जलोचन भूमि चना वायवा
 हाराश्च जन्ववः ॥ ५ ॥ ते तृप्ति मात्रिला यान्तु वरुणे नान्युनाऽपिजाः ।
 नरकेषु समस्तेषु यातना सुषवेस्थिताः तेषामात्वा यनापेतदीपते सखिल
 मया ॥ अनीत कुल कोटीनां सप्तर्षीप निवासिनं ॥ ७ ॥ आरद्र भुवनं
 न्तोकादिश्च मन्तु तिलोदकम् ॥ यत्रः क्वपन् संख्यातां तु तृप्यो
 महतात्मनान् ॥ ८ ॥ इद मघय मेकान्तु मयादत्तं तिलोदकम् ॥ अथपरत्र

निष्पीडनम् ॥— ये के चास्म-कुले जाता अपुत्रा गोत्रियो मृताः । ते
 गृहन्तु मयादत्तं वस्त्रं निष्पीडनोदकम् ॥ इति मन्त्रेण तज्जलं भूमोक्षिपेत्
 वस्त्रं चतुर्धा कृत्वा । भूमौ वामभागे निष्पीडयेत् । तपित जले पवित्रं
 विसृजेत् ॥ ततः—सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखो भूत्वा शुद्धोदकेनाचम्य
 प्राणा यामं कुर्यात् । अर्घ्यं जले ब्रह्मादि धेवान्पूजयेत् । ॐ ब्रह्मयज्ञा
 न्मप्रथमम्पुरस्ताद्दिदसीमतः ॐ सुरोब्धेनऽश्रावः । सतुरग्न्याऽ
 उपमाऽअस्यष्टिः ॐ सतरश्चयोनिम सतरश्चविवः ॥ १६ ॥ ॐ ब्रह्मणे
 नमः ॥ इति मन्त्रेण पात्रे शुद्धोदकं पूरयिस्वातन्मध्येऽनामिकयापडदलम्
 श्वेतं गन्धाक्षतं पुष्पाणि तुलसीदलानि च प्रक्षिप्य पराहादेवेभ्योऽर्घ्यं ॐ
 ईदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम् । समूढं मस्यपा ॐ सुरे स्वाहा १७ ॥
 ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ नमस्तेरुद्रमन्त्रय वऽउतोतऽइपवे नमः ॥ १८ ॥
 ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ तत्सवितु ॥ १९ ॥ ॐ सवित्रे नमः ॥
 ॐ मित्रस्य चर्पणीधृतो वो देवस्य सानसिद्गुम्प्रक्षिचत्र शश्व-
 स्तमम् ॥ २० ॥ ॐ मित्राय नमः । ॐ इमम्मे बरुण शशुधी इवामदथा
 च मृडय । त्वाम वस्यु राचके ॥ २१ ॥ ॐ बरुणाय नमः ॥ सूर्योपस्थानम्
 ॐ अहरश्मस्य केतवोविवररमयो जना २॥ ॐ अनु । भ्राजन्तो
 भ्रमन्तो यथा । उपयाम गृहीतोसि सूर्याय त्वाभ्राजायैप ते योनिः
 सूर्याय त्वाभ्राजाय सूर्ये भ्राजिष्वभ्राजिष्वु स्त्वन्वेदेव्वसिभ्राजिष्टोह
 मनुष्येषुभूयासम् ॥ २२ ॥ इ ॐ सःशुचिप द्वसुरन्तरिच सद्दोताव्वेदिपद
 विधिह रोणसत् । नृपद्वरसद्व सद्योम सदब्जागोजाऽश्रुतजाऽअश्रुज्जाजा
 ॐ नृपद्वरसद्व ॥ २३ ॥ दिग्देवतानां नमस्काराः—प्राच्यै-ॐ इन्द्राय नमः ॥
 आग्नेय्यै-ॐ अग्नये नमः ॥ दक्षिणायै-ॐ यमाय नमः ॥ नैर्ऋत्यै-ॐ
 नित्ये नमः ॥ पश्चिमायै-ॐ बरुणाय नमः ॥ वायव्यै-ॐ वायवे नमः ॥
 वदीच्यै-ॐ सोमाय नमः ॥ ईशान्यै-ॐ ईशानाय नमः ॥ ऊर्वायै-ॐ
 ब्राह्मणे नमः ॥ अधस्तात्-ॐ विष्णवे नमः ॥ अवाच्यै-ॐ अन्ननाय
 नमः ॥ (जलमध्ये) ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ अग्नये नमः ॥ ॐ श्यि-
 न्ये नमः ॥ ॐ ओषधिम्यो नमः ॥ ॐ वाचे नमः ॥ ॐ
 वाचस्पतये नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः । ॐ अम्हो
 नमः ॥ ॐ अपाम्पतये नमः ॥ ॐ बरुणाय नमः ॥ सुख

वशा पत्नम्—अद्यमे सफलं जन्म अद्यमे सफलं तपः । अद्यमे गोत्रजासर्वे याता
 वांनुपहादिरन् । पत्र शलादि दानेनभ्रैशितापूयनी र्पं वत्
 क्लेशा सिह संजातः तत्त्वं क्षुन्तु मर्दतः ।

विमार्जनम् (शुद्धोदकेन) ओं संन्वर्धसा पयसा सन्तनु भिरगन्महि
 मनसा सध शिवेन ॥ स्वष्ट्रा सुदत्रोविदधातुरायोनुर्माण्डु तन्नवो धडि
 लिष्टम् ॥ २४ ॥ विसर्जनम्-ओं देवा गातु विदोगातुं विवत्वागातुमित ।
 मन्तसम्पत्तऽइमन्देव यज्ञ ॐ स्वाहाव्यातेषाऽः ॥ २५ ॥ अर्पणम्—अनेन
 यथा शक्ति देव अपि मनुष्य पितृ तर्कधारण्येन कर्मणा भगवान् मम
 समस्त पितृस्वरूपे जनार्दन धातु देवः प्रीयतां नमम । ॐ तत्सद्ब्रह्मावर्ण
 मस्तु । श्री गदावरस्तुष्यतु । ओं विष्णवे नमः इतित्रिः इति तर्पण प्रयोग



श्री चक्र पूजनम् ॥

श्री गणेशाय नमः । अथ देव्यार्चनम्—आचम्य प्राणा नाथम्य
गुशान्ति र्भवतु ॥ ॥ मङ्गलोच्चारणम् ॐ स्वस्तिनऽऽइन्द्रो वृद्धरश्वाऽः
स्वस्ति नःपूपा विवश्व वेनाऽःस्वस्तिन स्ताह्योऽऽरिष्ट नेमिऽः स्वस्तिनो
वृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ भद्रद्रङ्गणेभिऽऽशृणुयाम देवा भद्रद्रम्परये मा
त्तमिष्यर्जनाऽःस्थिरै रङ्गैस्तुष्ट वा ॐ सस्तनूभिर्व्यरो महि देव हित
व्यदायु ः ॥ २ ॥ तम्प्रच्छन्कोभिरनुगच्छेभदेवा ऽः पुत्रै व्प्रातृ भिरुत
वा हिरण्यैऽःना कङ्ग व्णनाऽः सुकृतस्य लोके तृतीये ष्ट्रेऽःअधिरोचने-
दिवऽः ॥ ३ ॥ नमस्काराः । श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः । इष्ट देवता-
भ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । ग्राम देवताभ्यो नमः । स्थान देवताभ्यो
नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः । वाणी हिरण्य मर्मण्यां नमः । श्री लक्ष्मी-
नारायण भ्यां नमः । श्री वामादेवरा भ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां
नमः । मातृ पितृ चरण कमलाम्यां नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
निर्विघ्न मस्तु । सुमुख श्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः । लम्बो-
दश्व विकटो विन्न नाशो गणाधिपः । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभाल चन्द्रो
गजाननः । द्वादशै तानि नामानियः पठेच्छृ णया दपि ॥ विद्यारम्भे
विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न
जायते ॥ शुक्लां न्वर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् प्रशन्नः वदन
व्यायेत् सर्वं विघ्नो पशान्तये ॥ अभित्सितार्थं सिद्धयर्थं पूजितोयः सुरा-
सुरैः सर्वं विघ्न हरस्तस्मैगणाधिपतये नमः । सर्वमङ्गल माङ्गल्यै शिवै
सर्वाय साधिके शरण्यै त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते । सर्वदा
सर्वं कार्येषु नास्तित्तेषां ममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलाय
तनम् हरिः तदैव लग्न सुदिन् तदैव तारावर्लं चन्द्र वर्लं तदैव ॥ विद्या
वर्लं दैव वर्लं तदैव लक्ष्मी पते तेऽङ्घ्रि युगं स्मरामिः ॥ लाभस्तेषां
जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषां मिन्दी वर स्गमो हृदय स्थो जना-
र्दनः ॥ यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः तत्र श्रीविजयो भूक्ति
ध्रवा नीति र्मतिर्मम ॥ सर्वेष्वारु रव्य कार्येषु त्रयस्रो भुवनेश्वराः । देवादि
सन्तुनः शिद्धि ब्रह्मेशान् जनार्दना ॥ विनायकं गुहं भानुं ब्रह्म विष्णु-
महेश्वरान् । मरुवर्तो प्रणुन्यादौ सर्वकार्यायं सिद्धिये ॥ सङ्ग्रहः ॥—

श्रीं विष्णु २ः श्री मद्भगवतो महा पुरुषस्य विष्णुराज्ञाया प्रवृत्तमानस्य
 अथ ब्रह्मणे द्वितीये परार्द्धे श्रीरथे वराहकल्पे वैवस्वन् मन्वन्तरेऽष्ट-
 विंशति तमे युगे कलि प्रथम चरणे भारतखण्डे भारतवर्षे जम्बूद्वीपे आर्या
 वर्तन्वराण् हिमवन् प्रवर्तक देशे केदार खण्डे वाटिका धर्म शुभे
 द्विष्य पार्वं सरस्वती मन्दा किन्ध्यामध्ये श्री शालिवाहन शास्त्रे
 बौद्धा वतारे अस्मिन्वर्त माने पृथी सम्यत्सराणां मध्ये अमुक नाम
 मन्वन्तरे अमुकाऽयने अमुकतो अमुक नाम अमुक पत्ने अमुक
 नासरे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक
 राशि स्थिते श्री सूर्ये अमुक राशि स्थिते देव गुरो शेषेण प्रहेषु
 यथा क्यं राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुणा विशेषण विशि-
 ष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ममात्मन श्रुति स्मृति पुराणोक्त
 क्त प्राप्स्यथ मम ऐश्वर्याभिः वृष्यथ अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्स्यं
 प्राप्त लक्ष्म्यारिचर काल संरक्षणार्थम् एकल मन इप्सित कामना
 मं सिद्धयर्थम् लोके वा सभायां राज द्वारे वा वा सर्वत्र यशो
 विजय लामादि प्राप्स्यथ इह जन्मनि जन्मान्तरे बाल्य योवन
 वार्धक्या वस्थासु वाक्पाणि पाद पायू पथ्य प्राणा रसना श्रु
 श्रोत्र स्तरान मनोभिः श्चरित ज्ञाता ज्ञात कामा काम महापातकी
 पापातकादि सच्चित्तानां पापा नां अन्यतन् सं संगं रूप महापात
 का नां शृष्टा शृष्ट मच्छती करण अपात्रो करण जाति भ्रश
 करण रस विक्रय गा विक्रय खरोष्ट्र विक्रय महिषि विक्रय
 अत्रादि पशु विक्रय आक्षण दुर्भाषणे निरर्थक द्रुम च्छेदन इमानया
 क्यं ब्रह्मत्व हरण जाति भ्रंश करण रवि देवराज स्थाप हरण
 प्राक्षण निन्दा वेद निन्दा देव तिन्दा शिवनिन्दा
 अमद्य भक्षण अभोध्य भोज्य अघोष्याऽऽघोषणम् अपेया पानम्
 अरारथ स्पर्शनम् अश्राव्यम् श्रवण अघ्रोषेया घ्राण महित्याऽहि-
 मनम् अवन्याऽऽवन्यनम् अचिन्त्या चिन्तनम् अयाच्याऽऽयाप-
 नम् अपुत्र्यो पूत्र नम् इत्येक मातृ पितृ तिरस्कारणम् स्त्री पुरुष
 प्रति भेदनम् मित्र्या पशद् पर द्रोह पर हानि पौर्यकरणम् तं
 संभाषण श्लेच्छ संहा सनम् प्रदग्नेयणम् स्वामि भेदनम् मित्र
 वचन भाषां निम्नम् परात्र भोजनम् ॥ गणिकान्न भोजनम् अनु-
 पात्र-पात्र भोजनम् नृहृष्टान्न भोजनम् पकि भेदादि करण तथा
 प् परि रोमादि भोजनम् अन्यान्धोपि शोपान सकृत् दुरिनो पराम
 नार्थ तथा च गोशो चारण स्त् पितृ पितामह प्रतिता महानां
 अनुदा मुदा मुद राग्नाया यभावोप्य (नासत्य मरुत) मप्री

बोधु कुरा ध समानऽआयुऽऽप्रमोपीऽ । आस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं स
परिवारं सायुषं सशक्तिमा वा ह्यामि ततः-कलशे प्रार्थनादेव वानव
सम्वादे मध्यमाने महीदधौ । वत्प्रज्ञोऽसि सदा कुम्भ विधृतो विष्णुना
स्वयंम् त्वत्तोये सर्वं तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वायि तिष्ठन्ति
भूतानित्वयि प्राण प्रतिष्ठिताः । शिव स्वयंत्वये वाऽपि विष्णुस्त्व व
प्रजापतिः आदित्या वसवोरुद्रा विश्वे देवाः स पैत्रिकाः त्वयि तिष्ठन्ति
सर्वेपि यतः कामः फल प्रदाः । त्वत्प्रसादा दिमां पूजां, कर्तु मीहे
जलो द्रवः सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा । प्रमन्नो
भव ॥ वरदो भव ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कलशस्थ वरुणाय नमः ।
आवा ह्यामि यथा मिलितो पचरार्ये गन्धा क्षत पुष्पाणि
समर्पयामि । नमस्करोमि । अनन्तरम् । कलशोदकेन पूजा द्रव्या
णि तथा ऽआत्मानं च अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः
यः स्मरेत्पुण्डरी कार्क्षं सवाह्याम्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ आपोहिष्ठा
मयो भुव स्वान ऽ उर्जेदधातन । महे रणाय चक्षुसे ॥ यो वः शिव
तमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरि व मातरः तस्मात्सङ्ग मा
भवो यस्य क्षयाय जिन्तथ । आपो जन यथा चन ऽः ॥ इति
सम्प्रोक्ष्य ॥ पश्चात् कलशे मुद्रां प्रदश्यं ॥ शङ्ख पूजनम्-शङ्खद्वौ
चन्द्र देवस्यं कुक्षो वरुण देवता पृष्ठे प्रजापति रश्चैव अग्ने गङ्गा
मरुत्स्वती । त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाक्षया । शङ्खे
तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तन्माच्छङ्खस्वः प्रचोदयात् । ॐ अग्निर्ह्यपि ऽः
पत्र मान ऽः पाद्वच जन्ध ऽः पुगे हितः तमी महे महा गयम
ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थ देवतायै नमः आवा ह्यामि सर्वोप-
चारार्ये गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । शङ्ख मुद्रां प्र- ।
घण्टा पूजनम्-आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् । घण्टा
नादं प्रकुर्वीत परवाद् घण्टा प्रपूजयेत् । ॐ सुपर्णोसि गरुत्त्व भस्त्रि
वृत्ते शिरो गायत्र वचतुर्वृद्ध्यन्तरे पक्षी । स्त्रीम ऽआत्कंता इन्द्रा-
ध स्यङ्गानि यजु ध पि नाम ॥ सामते तनू वामदेव्यं व्येज्ञा य-
क्षिय भ्युद्धन्धिष्ण्या ऽः शफा ऽः सुपर्णोसि गरुत्त्वमान्दिवङ्ग च्छ स्वः
पत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्वाय गरुडाय नमः आवाहयामि ।
सर्वो पचारार्ये गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि । घण्टा मुद्रां

घण्टस्थ गरुड मुद्रा-घण्टां कुरी कृत्वा मंत्रं विंशति कनिष्ठ के पुनश्चा-
धो मत्तो कृत्वा तर्जनी योत्रपेक्षयोः । मध्यमा नामिके द्वेषु पञ्चाविविधा-
लयेत् ॥ मध्येषा पश्चिंराजस्य सर्वावेभ्यनिगारिषीत् ॥

प्रदर्शय ॥ दीप पूजनम्—त्रिनेत्रमा रक्त तनुः, सु युक्तः वस्त्रं सुवर्णं स्रज माले मीढे ॥ वरभय स्वक्ति क शक्ति हस्तं पद्म स्थ मा कल्प समूह युक्तम् ॥ ॐ आग्नि ज्योति ज्योति ज्योति रग्नि ऽः स्वाहा सूर्यो ज्योति ज्योति ऽः सूर्य ऽः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योति वर्च ऽः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योति वर्च ऽः स्वाहा । ज्योति ऽः सूर्य ऽः सूर्यो ज्योति ऽः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दीप स्थ देवतायै नमः आवाहयामि सर्वो पचारार्थे गन्धा क्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥

गुं गुरुभ्यो नमः ॥ त्र्यम्बक ध्यानम्—हस्ताम्भोज युगस्थकुम्भ युगला-दुद्धृत्यतोयं शिरः सिञ्चिन्तं करयो युगेन दधतं स्वांकेश कुम्भौ करो ॥ अक्षत्रग मृगहस्त मन्बुज गतमूर्द्धस्थ चन्द्र स्रवं पीयूषो नत्तनुभजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥ इति त्र्यम्बकं नत्वा ॥ तारादि नमोन्तं मूल मन्त्रम्—माला मन्त्रम्—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः श्रीं ह्रीं श्रीं क ए इ लाह्रीं ह स कदल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा ॥ जपित्वा वा स्व २ माला मन्त्रम् जपेत् ॥ अस्य श्रीत्रिपुर सुन्दरी मन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः पंक्तिः छन्दः श्री मन्त्रिपुर सुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कोलकं ममाभिष्टसिद्धयर्थेजपेविनिशोगः॥आन्यान्यान्यासानाह—दक्षिणा मूर्तये नमो मूर्ध्नि । पक्तये नमोमुखे । त्रिपुरसुन्दर्यै नमो हृदि । ऐं बीजाय नमो गुह्ये सौः शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमो नाभौः । इति मुन्यादि न्यासः ॥ कर शुद्धि न्यास माह—ह्रीं श्रीं अमध्यमाभ्या नमः । ह्रीं श्रीं आनामिकान्यांनमः । ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं अं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं आंतर्जनीभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं सौः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः अयं कर शुद्धि न्यासः ॥ आसन न्यासः ॥ आसन न्यासमाह देवीति—ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः पादयोः ह्रीं श्रीं ह्रै- हस क्लीं हसौः चक्रासनाय नमः जंघयोः । ह्रीं श्रीं ह्रसै हसक्ली हसौः सर्व मन्त्रासनाय नमः जानुनोः । ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लींल्वै साध्य सिद्धा सनाय नमोऽङ्गोः इत्थसन न्यासः । स तारादि नमोन्त मूलम् (माला

पदंग—हृद्य गुलिभयं न्यस्येत्तर्ज्यादि इयंतुके । शिखाप्रदेशे पाङ्गुष्ठ दशाङ्गुल्यस्तु ब्रह्माणि ॥ हृद्य नेत्रं पूर्वं मखं सक्ति रङ्गस्य मुद्रिका ॥ प्रता-रिताभ्यां हस्ताभ्यां कृन्वा ताल त्रयं मुखा ॥ तर्जन्य गुष्ठयो रमे स्फालयं च घया दशः ॥ पर लीभाय दण्डनी मुद्रा लक्षणम्—वामे मुष्टिं हृदं वध्वा तर्जनीं प्रविष्टारयेत् । भ्रामये द्वाभ कर्णान्तं मुद्रा लीभाय दण्डनीति । इयं द्वयोर्मणि मुद्रामिति ॥

मन्त्रम्) मध्यमा नामिकाभ्या शिरसि न्यसेत् ॥ पद्म माह—श्रीं ह्रीं क्लीं
 ऐं सो ह्रये । ओं ह्रीं श्रीं शिर-आद्य कूटेन शिवा । मध्य कूटेन कत्रच ।
 त्रितिय कूटेन नेत्रम् । सौ ऐं श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्रम् ॥ इति पङ्कगम् ॥ पुन
 सतारादि नमोन्त मूल मध्यमा नामिकाभ्या (सुधास्रवन्ती दीपाङ्गा
 वृहत् स्त्रया सौभाग्य दा देवीमाध्यार्य) शिरसिन्यसेत् ॥ पुनर्वाम करे
 पर शौभाग्य दण्डनी मुद्रा कृत्वा राम पार्श्वे मूर्धादिपादान्तम् तारादि
 नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ पर शौभाग्य दण्डनी मुद्रा एवं क्षोभणी मुद्रा ॥
 स तारादि नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ दर्शयेत् ॥ रिपु जिह्वा मुद्रा एव
 द्राविणि मु० (तारादि नमोन्त मूल सहित न्यसेत्) दर्शयेत् । त्रिखण्डा
 मुद्रा एव कर्पणी मुद्रा प्रत्येक तारादि नमोन्त मूल न्यसेत् ॥ मुखे स
 वेष्टय स्तारादि नमोन्त मूल दक्ष कर्णा तो वामान्त कण्ठा-मुखा तमर
 मेव न्यसेत् ॥ पुन प्रणव पुटा विद्या सर्वाङ्गे न्यसेत् ॥ (विद्या अ
 आ० इत्यादि) मुखे योनि मुद्रा कृत्वा तथैव देवीन्यसेत् ॥ अयं जग-
 द्दशीकरणान्यास ॥ देवी कात्या विरवं रक्त ध्यायन् अगुष्ठा नामिका भ्या
 ब्रह्मरन्ध्रे मणि बन्धे ललाटे विद्या न्यसे दितिसमोहनो न्यास ॥
 अ नम पादयो । आ नम जघयो । इ नम जानुनो । ई नम कटि
 भागयो । उ नम लिंगे । ओं नम पृष्ठे । कु नम नाभिदेशे । ऋं नम
 पार्श्वयो । लृ नम स्तनयो । लृ नम अंशयो ए नम कर्णयो । ऐ नम
 ब्रह्मरन्ध्रे । ओं नम बन्धे ओं कर्णपृष्ठे मि अ नम नेत्रयो । अ नम
 कर्णशङ्कुली ॥ अय सहार न्यास ॥ वाग्देवता न्यास माहपोढरा
 स्वर पूर्व कतद्वीज पूर्वा वशिनी शिरसि न्यसेत्—यथा अ आ ई ई उ
 ऊ ऋ ऋं लृ लृ ए ऐ ओं ओं अ अ ऋं वशिनी वाग्दे वतायै
 नम शिरसि ॥ कवर्गस्य कामेश्वरी बीजाद्य भाले न्यसेत्—कं खं गं घ ङ
 ङो ह्यो कामेश्वरी वाग्देवतायै नमो ललाटे ॥ चवर्गेण मोहनो बीजन
 ध्र मध्ये न्यसेत् ॥—यथा—च छ ज झ वं न्वली मोहनो वाग्देवतायै
 नमो ध्र मध्ये ॥ टवर्गेण स्तद्वीजस्य विमला कटे न्यसेत् ॥ ट ठ ड ढ या
 टल् विमला वाग्देवतायै नम कटे ॥ तवर्गे बीजाभ्या अरुणा इदि

रिपु जिह्वा मुद्रा—यथा—अ गुड गर्भित मुदि ब जीव्या दक्षपाणिना ।
 रिपु जिह्वा महा कथय मुद्रोक्ता शत्रु नशि नीति मुद्रा वाम पाद वेज इतेति
 इय द्राविणी मुद्रा ॥ त्रिखण्डा (अमे)

त्रिखण्डा मुद्रा लक्षणम्—परिवारं करो सध्या पगुटी कारयेत्समो ॥
 अनामान्यगते इत्वा तत्रन्वो इटिला ह्यी । कनिष्ठके त्रियु ज्ञीत
 नित्रापाने महेश्वरी ॥ त्रिखण्डेय एमात्वाता त्रिपुरा क्षान कर्माधिः

न्यसेत् ॥ यथा—तं धं दं धं नञ्ज्रीं अदणा वाग्देवतायै नमो हृदि ॥
 पवर्गं बीजाभ्यां जयितीं नाभौ न्यसेत् ॥ यथा—पं फं वं भं मं हसल्लव्यं
 जयन्ती वाग्देवतायै न्यसेत् ॥ पवर्गो बीजाद्य सर्वेश्वरीं मूलाधारे न्य
 सेत् ॥—यथा—यं रं लं वं इत्यस्यं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमो मूलाधारे ॥
 शादयो बीजाभ्यां कौलिनी उवादि पादान्तं न्यसेत्—स च यथा—रां पं सं हं
 लं चन्द्रां कौलिनी वाग्देवतायै नमः उवादि पादान्तम् ॥ वाग्देवतायै नमः
 इति पदम् ॥ सृष्टि न्यास माह—ब्रह्म रन्ध्र इति अं ब्रह्म रन्ध्र इति ॥ आं ल
 लाटे । इं नेत्रयो । इं कर्णयो । उं नासा । ऊं गंडयो । ऋं दन्तेषु ।
 ऋं ओष्ठयो । लृं जिह्वायां । लृं मुख मध्ये । एं षष्ठे । ऐं सर्वांगे ओं
 हृदि । औं स्तनयो । अं कुक्षौ । अः लिंगे ॥ स्थिति न्यास माह—केरति—अं
 अगुष्टाभ्यां नमः । आं तर्जिनीभ्यां नमः । इं मध्यमाभ्यां नमः । ईं
 अनामिकाभ्यां नमः । उं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ऋं मुखे ।
 ऋं हृदि । लृं नाभ्यादि पादान्तम् । लृं कंठादिनाभ्यन्तम् । एं ब्रह्म
 रन्ध्रात्कंठात् । ऐं पंच पादां गुलिषु ॥ (ऐं-ओं-ओं-अं-अः) परवावृत्ति-
 न्यासमाह—अं आं मूर्ध्नि वक्त्रे । इं इं नेत्रयोर्द्वे । उं ऊं श्रुत्योर्द्वे,
 ऋं ऋं नसोर्द्वे, लृं लृं गंडयोर्द्वे । एं ऐं ओष्ठयोर्द्वे । औं औं मुखमध्ये ।
 अं दन्त पंक्ते । अः वदने विन्यसेत् ॥ द्वितीय माह—अं शिखा । आं
 शिरः इं भाले । ईं भ्रूः । उं नासाः । ऊं मुखे । ऋं ऋं-लृं लृं एं ऐं
 ओं औं अं अः दक्षकर सन्ध्यपेषु पंच एव वामे पंच ॥ तृतीय माह—
 अं शिरः । आं ललाटे । इं इं नेत्रयो उं मुखे । ऊं जिह्वायां । ऋं ऋं
 लृं लृं एं ऐं ओं औं अं अः दक्षपाद अंगुलिषु संध्यमं पंच एव वाम-
 पादे पंच ॥ चतुर्थ माह—अं ललाटे । आंगले । इं हृदि । ईं नाभौ । उं
 मूलाधारे । ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ऋं मुखे । ऋं गुदे । लृं आधारे । लृं हृदये ।
 एं ब्रह्मरन्ध्रे । ऐं ओं करयो । औं-अं पादयो । अः हृदि ॥ पंचमं
 आह—प्रणव पुटितां विद्यां सर्वांगे न्यसेत् नमोतां हृदि च—श्री अं
 ललाटे । ह्रीं आंगले । क्ली-इं हृदि । एं इं नाभौ । सौ वं मूला-
 धारे । औं ऊं ब्रह्मरन्ध्रे । ह्रीं ऋं मुखे । श्रीं ऋं गुदे । आद्यकूटेन लृं
 आधारे । मध्यकूटेन लृं हृदि । तृतीय कूटेन एं ब्रह्म रन्ध्रे । सौः एं ऐं

इति कर्पणीति त्रिलयदया मुद्रया तु भाले मूलं न्यसेत् ॥ त्रैलोक्यस्या
 खिलं स्यादं कर्तेति स्वविचित येत् ॥ योनि मुद्रा अग्रे द्रष्टव्य-
 मुखे योनि मु०—मियः कनिष्ठि के वध्या तर्जनीभ्या अनामिको अनामि
 कोर्ध्वं सरिलष्ट दोषं नप्य मयोरपः अङ्गुष्ठाप्र द्वयं न्यस्ये योनि मुद्रे यमीरि
 तेति ॥ अयं जगद्गो करण न्यासः ॥

ओं करवौ । क्लीं ह्रीं-ओं अं पादयौ । श्रीं अ हृदि ॥ षोडश्यासादयो
 निस्तरभया-नोक्तास्ते उच्यन्ते ॥ यथा—गणेशप्रह्म नक्षत्र योगिनी राशि
 पीठ लक्षण षोडा न्यासा ॥—गणेश मातृ का मंत्र स्य दक्षिणा मूर्ति
 ऋषि गायत्री छन्द श्री मातृ का सुन्दरी देवता मनो पास्य श्री विद्या
 गत्नेन षोडा न्यासे विनियोग ॥ अक ल ग घ ङं आ ऐं इत् । इ च० ५
 क्लीं शिर । उ ट० ५ ऊ सी शिरा । ए त० ५ ऐं सो कवचम् ॥
 ॐ प० ५ अं क्लीं नेत्रम् ॥ अं यं १० अ ऐं अक्षत्र ॥ ध्यानम्—
 उदात्सूर्यं सहस्राभा पीनोन्तव पयोधरा ॥ रक्त माळा वरा लेप रक्त
 भूषण भूपिता ॥ पाशा कुरा धनुर्बाण भास्वत्याणि चतुष्टया
 रक्त नेत्र त्रया स्वर्णं मुहुटोद्भासि चन्द्रिकाम् ॥ एवं ध्यात्वान्यसेद्वीज
 पूर्वं ग अ त्रिघ्नेश ह्रींभ्या नम । ग आ विघ्न राज श्रीभ्या नम ।
 इत्यादि मातृ का स्थले न्यसेत् । अथप्रह मातृ का मंत्रस्य दक्षिणा
 मूर्ति ऋषि गायत्री छन्द श्री मातृका सुन्दरी देवता मनो पास्य
 श्री विद्या गत्नेन षोडान्यासे विनियोग । ध्यानम्—रक्त श्रेत
 तथा रक्त स्वामं पीत चपाडुरम् धूम्र कृष्णं च धूम्र च
 रूम धूम्र विचिन्तयेत् ॥ रवि मुख्यान्काम रूपान्सर्वा भरण भूपि
 तान् ॥ वामो रुन्यस्त हस्ताश्च दक्षिणे नर प्रदान् ॥ अ १६
 मूर्याय रेणुका वायै नम हृदि ॥ य ४ चन्द्राया मृता वायै नम
 ध्रूमध्ये । ऋ ५ मगलाय धामा वायै नमो नेत्रयो ॥ च ८ बुधाय
 ज्ञान रूपा वायै नमो हृदि ॥ व ५ वृहस्पतये वशस्त्रिन्य वायै नमो
 हृदयोपरिभागे । त ५ शुक्राय शक्र्यै वायै नम कटे ॥ प ४
 शनैश्चराय शक्र्य वायै नमो नाभी । शं प स ह राह्वे वृष्णा
 वायै नमो मुखे । लं लं केतवेधूम्रा वायै नमो गुदे ॥ अथ
 नक्षत्र मातृ का मंत्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषि गायत्री छन्दो नक्षत्र
 रूपिणी सुन्दरी देवता विद्या गत्नेन न्यास विनियोग ध्यानम्—उल
 क्ताज्ञानि सकाशा मरां भरण भूपिता । नवि पाययोऽरित्री
 मुख्या वरदा भय पाणय ॥ अ आ आश्विन्यै नमो ललाट । इ

१ तस्यां गणेश आनाक्षपूर्ये दासना दिभि । अथचर्यं जुनुमैशु कुर्या
 दा वरणाचनम् ॥ आग्नेया दिपु कोषेषु हृदय च शिर शिरा । वामाम्बुचाप
 नेशादिदप ह्यापूर्येऽनुषो ॥ द्वितीयावर्ये पूर्या प्रागाशष्टे व शतप ।
 शिवादिमा विधात्री च मोगदा विघ्न वाविनी ॥ निधि प्रदीप पापान्त्री
 पुण्या परा-वृष्टिमा । दक्षामेषु वक्र तु ड एक दंष्ट्रो महादा ॥ गनास्य
 सन्वादरुषी विहारा विघ्न रा । भूपायंस्व दमेपु रक्षायाश्चायुधेषुं ।

भरार्यैनमोदक्षनेत्रे उइ' अंकुत्तिकायैनमोवामनेत्रे । ऋ' ऋ' लुं' लुं' रोहिरायै
नमोदक्षनेत्रे । एंमृगशिरसेनमोवामकर्णे । ऐंआद्रायैनमोदक्ष नसि । ॐ औं
पुनर्वसवेनमोवामनासि ॥ कंपुष्पायनमःकंठे । खं गं आरलेपायै नमो दक्ष
स्कन्धे । घं इमद्यायैनमोवामस्कन्धे । चंपूर्वा फाल्गुन्यैतमो दक्ष कूर्परे ।
छं जं उत्तरा फाल्गुन्यै नमो वाम कूर्परे । ऋं ञं हस्ताय नमो
दक्षिण मणि वन्धे । टं ठं चित्रायै नमो वाम मणि वन्धे । डं
स्वात्यै नमो दक्ष हस्ते । ढं णं विशाखायै नमो वाम हस्ते । त
थं दं अनुराधायै नमो नाभौ । धं ज्यैष्ठायै नमो दक्ष कटौ ।
नं पं फं मूलाय नमो वाम कटौ । वं पूर्वाषाढायै नमो दक्षौरौ
। भं उत्तराषाढायै नमो वामौरौ । मं श्रवणाय नमो दक्ष ।
जानुनि । यं रंधनिष्ठाय नमो वाम जानुनि । लं शतभिषायै
नमो दक्ष जंघायाम् । वं शं पूर्वाभाद्रपदायै नमो वाम जंघायाम् ।
पं सं हं उत्तरा भाद्रपदायै नमो दक्ष पादे । लूं अं अः
रेवस्यै नमो वाम पादै । इति नक्षत्रमातृकाः सर्वेषु न्यासे
ष्वादौ माया श्री वीजे योज्ये ॥ न्यासा न्सर्वा न्प्रकृवीत्
माया श्री वीज पूर्व कानित्युक्त त्वात् ॥ योगिनी न्यास माह-
योगिनी न्यासस्य मुनि छन्दसी पूर्वोक्ते । योगिनी रूपा सुन्दी देवता
श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः । ध्यानम्—सिता सिता रूपा वभ्र
चित्रा पीतारव चितयेत् ॥ चतुर्भुजाः समैर्वक्रैः सर्वाभरण भूपिताः
एवं ध्यात्वान्यसेत् ॥ ह्रीं श्रीं डां डीं डंमल वर यूं पूं डाकिन्यै नमः । अं
१६ मम त्वचं रक्ष २ त्वगात्मने नमः कंठ देशे विशुद्धौ ॥ १ ॥ ह्रीं औं
रां रां रं मल वर यूं पूं राकिन्यै नमः । कं १२ मम रक्तं रक्ष २
असृगात्मने नमः हृद्यनाथा हस्ते ॥ २ ॥ लीं लीं लं मलवर यूं पूं लाकि-
न्यै नमः । इ १० मम मांसं रक्ष २ मांसत्मने नमः नाभौ मणिपुरे ॥ ३ ॥
कां कीं कं मल वर यूं पूं काकिन्यै नमः । वं ६ मम मेदो रक्ष २ मेद
आत्मने नमः लिग मूले स्वाधिष्ठाने ॥ ४ ॥ शां शीं रां मल वर यूं पूं
शाकिन्यै नमः व ४ ममास्थि रक्ष २ अस्थ्यात्मने नमः गुदे मूलाधारे
॥ ५ ॥ हां हीं हं मलवर यूं पूं हाकिन्यै नमः हं हं मम मज्जां रक्ष २
मज्जात्मने नमो भ्र मध्ये आह्ला चक्रे ॥ ६ ॥ यां यो यं मल वर यूं पूं
याकिन्यै नमः ॥ अं मम शुक्रं रक्ष २ शुक्रात्मने नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ २ ॥
इति योगिनी मातृकाः ॥ राशि मातृका न्यास माह—राशि मातृका
मन्त्रस्य मुनि छन्दसी पूर्वोक्ते । राशि रूपा सुन्दरी देवता श्री विद्यां
गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥ ध्यानं—रक्त श्वेत हरि वर्णं मांडु चित्रासिता-
न्मरेत् ॥ पिरांग विंगली वभ्र कबु'रा शिषधूत्रवान् ॥ एवं ध्यात्वान्यसेत् ।

अं आं इं ईं मेघाय नमः दक्ष पाद गुल्फे ॥ १ ॥ उं ऊं ऋं वृषाय नमः
 दक्ष जानुनि ॥ २ ॥ ऋं लृं लृं मिथुनाय नमः दक्ष वृषणे ॥ ३ ॥ एं
 ऐं कर्काय नमः दक्षकुक्षौ । औं औं सिंहाय नमः दक्ष स्कन्धे । अं अः
 शं ष सं हं कन्यायै नमः दक्षशिरो भागे ॥ कं खं गं घं ङं तुलायै
 नमो । वाम शिरो भागे ॥ चं छं जं झं ञं वृषिबकाय नमः वामस्कन्धे ।
 टं ठं डं ढं णं धन्विने नमः वामकुक्षौ । तं थं दं धं नं मकराय नमः
 वाम वृषणे । पं फं बं भं मं कुंभाय नमः वाम जानुनि । यं रं लं वं
 चं मीनाय नमो वाम गुल्फे । इति राशि मातृकाः ॥ पीठ मातृकाः ॥
 माह—पीठ मातृका मन्त्रस्य मुनि छन्दो गानि श्री मातृका पीठ रुपिणी
 सुन्दरी देवता श्री विद्यां गत्वेन न्यासे विनियोगः ॥

ध्यानं—सिता सिता रुणा रयामा हरिपीतान्यनुक्रमात् । पुनरेवत्क्रमा
 देवी पंचाशत् स्थान शंचये ॥—ह्रीं श्रीं अं कामरूप पीठाय नमः ॥ १ ॥
 ह्रीं श्रीं आं वाराणसी पी० ॥ २ ॥ ह्रीं श्रीं इं नेपालपी० ॥ ३ ॥ ह्रीं श्रीं
 ईं पौंड वर्धनपी० ॥ ४ ॥ ह्रीं श्रीं उं कारमीर पी० ॥ ५ ॥ ह्रीं श्रीं ऊं
 कान्य कुब्ज पी० ॥ ६ ॥ ह्रीं श्रीं ऋं पूर्णागिरी पी० ॥ ७ ॥ ह्रीं श्रीं ॠं
 अर्बुदाचल पी० ॥ ८ ॥ ह्रीं श्रीं लृं आंघ्रात केशवर पी० ॥ ९ ॥ ह्रीं श्रीं
 लृं एकान्त पी० ॥ १० ॥ ह्रीं श्रीं एं तिस्रोत पी० । ह्रीं श्रीं ऐं काम कोठ-
 पी० ॥ १२ ॥ ह्रीं श्रीं ओं कैलाश पी० । ह्रीं श्रीं औं भृगु पी० ॥ १४ ।
 ह्रीं श्रीं अं केदार पीठा० ॥ १५ ॥ ह्रीं श्रीं अः चंद्रपुर पी० ॥ १६ ॥ ह्रीं
 श्रीं कं भी पी० ॥ १७ ॥ ह्रीं श्रीं खं अंकार पी० ॥ १८ ॥ ह्रीं श्रीं गं जालं-
 धर पी० ॥ १९ ॥ ह्रीं श्रीं घं मालव पी० । ह्रीं श्रीं ङं कुलान्तपी०
 ह्रीं श्रीं चं देवी कोट्टक पी० ॥ २२ ॥ ह्रीं श्रीं छं गोकर्ण पी० ॥ २३ ॥
 ह्रीं श्रीं जं मारुतेश्वर पी० ॥ २४ ॥ ह्रीं श्रीं झं अट्टहास पी० । ह्रीं श्रीं
 ञं विरज पी० ॥ २३ ॥ ह्रीं श्रीं टं राजगृह पी० ॥ २७ ॥ ह्रीं श्रीं ठं महापथ
 पी० ॥ २८ ॥ ह्रीं श्रीं डं कोकिलगिरि पी० ॥ २९ ॥ ह्रीं श्रीं ढं पलापुर
 पी० ॥ ३० ॥ ह्रीं श्रीं णं कालेश्वर पी० ॥ ३१ ॥ ह्रीं श्रीं तं जयंती
 पी० ॥ ३२ ॥ ह्रीं श्रीं थं उज्जयिनी पी० ॥ ३३ ॥ ह्रीं श्रीं दं चरित्र
 पी० ॥ ३४ ॥ ह्रीं श्रीं धं चौरि का पी० ॥ ३५ ॥ ह्रीं श्रीं नं हस्तिनापुर पी०

प्राय संयमन् ॥ पूर्वं बत्-हृद्यज्जिह्वं चन्वस्मे त्यादि ॥ मुद्राः वतस्य
 मूच्यते—यस्य—उन्माद-महाकुश-महायोनि ॥ यस्य—पुटाकारो करो कृत्वा
 एतन्म्या संकुर्यादृती ॥ परिकृत्य क्रमेणैव मध्यमे तदधो गतो क्रमेण देवि ते देव
 इतिहा नामिका दंपः ॥ संयोन्यं निबिडाः एषां प्रगुप्ता यमदेवतः मुदेरं यममे
 एानी एषं यस्य कपी मतेति ॥ मुद्रां (अमे)

॥ ३६ ॥ ह्रीं श्रीं पं वडोश पी० ॥ ३७ ॥ ह्रीं श्रीं क प्रयाग पी० ॥ ३८ ॥
 ह्रीं श्रीं वं पष्ठीश पी० ॥ ३९ ॥ ह्रीं श्रीं मं मायापुर पी० ॥ ४० ॥ ह्रीं
 श्रीं मं मलय पी० ॥ ४१ ॥ ह्रीं श्रीं यं श्री-शैल पी० ॥ ४२ ॥ ह्रीं श्रीं रं
 मेरु पी० ॥ ४३ ॥ ह्रीं श्रीं लं गिरि पी० ॥ ह्रीं श्रीं वं माहेन्द्र पी० ॥ ४४ ॥
 ह्रीं श्रीं रं वामन पी० ॥ ४५ ॥ ह्रीं श्रीं पं हिरण्यपुर पी० ॥ ४६ ॥
 ह्रीं श्रीं सं महा लक्ष्मी पी० ॥ ४७ ॥ ह्रीं श्रीं हं उड-
 याख पी० ॥ ४८ ॥ ह्रीं श्रीं लं छाया पी० ॥ ४९ ॥ ह्रीं श्रीं हं
 छत्रपुर पीठाय नमः ॥ ५० ॥ इति पीठ मातृकाः आदि शब्दात्काम
 मातृकाद्यो ज्ञेया ॥ (अग्रे स्पष्टा) एवं न्यासान् कृत्वामुद्राः प्रदर्शः ।
 पहठम् ॥ ध्यानमाह— बालकार्यायुत तेजसां त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
 नाना लंकृति राजमान वपुषं बालोद्भवात् गेखराम् । हस्तैरिक्षु धनुःसृष्टिं
 शमशरं पाशं मुदा विभ्रती श्री चकस्थित सुन्दरी त्रिजगतामाधार
 भूतास्मरेत् ॥

प्रात्रस्थापन माह—

ॐ वज्रोद् के हूँ फडितिजल प्रहणम् ॥ ॐ ह्रीं स्वाहेति पाद प्रहा-
 बनम् । ॐ ह्रीं सु विशुद्ध धर्म सर्व पाप निशान्या शेष विकल्पानव
 नय स्वाहेत्या च मनम् श्रीं मणि धरि वत्रिणि शिखरिणि सर्व वरां करिणि
 हुं फट् स्वाहेति शिखावन्धनम् । श्रीं रत्न २ हुं फट् स्वाहेति विघ्न
 वारणम् ॥ श्रीं पवित्र वज्र भूमे हुं स्वाहेति भूमि निमग्नम् ॥ श्रीं आसु
 रेखे वज्र रेखे हुं स्वाहेतिमंडलम् ॥ श्रीं यथा गताभिपेक समान्नि मेहुं
 फडिति पुष्पशोधनम् ॥ श्रीं श्रीं ह्रीं स्वाहेति चित्त शोधन मंत्रः । कलश
 स्थापनम्— श्रीं रत्न २ फट् स्वाहा भूमि सं शोध्य ॥ तत्र-श्रीं आसु
 रेखे वज्र रेखे हुं स्वाहा मण्डल मंत्रेण-वृत्त त्रिकोणचतुष्कोणात्मक
 मण्डलं कुर्यात् । तत्राधार शक्तिः— यथा— विश्व शक्त्यै नमः ॥
 ॐ महाशक्त्यै (माया) नमः ॥ कूर्मा सनाय नमः ॥ ॐ योगास-
 नाय नमः ॥ श्रीं अतन्ता सनाय नमः । ॐ विमला सनाय नमः ।
 मध्ये ॐ परम सुप्रोय नमः । ॐ भूभुवः स्वः आत्मासनाय

उन्नाद मुद्रा लक्षणम्— समुच्चै तु करी कृत्वा मध्यमा मध्यमातुजे ॥ अना-
 पिके तु वरलेः वदधस्त्वर्जनीद्वयम् ॥ दंडा कारो वर्तुगुप्यै मध्यमा नस्य देरगो ॥
 मुद्रेशान्मादनी नामकलेदिनी सर्व बोधिता ॥ महां कुरा मुद्रा लक्षण यथा—
 अस्यास्त्र नामिका युग्मं अत्रः कृत्वा कुरा कृति ॥ वर्जम्पा वधिते नैव न्मेष
 विनियो अवेत् ॥ एवंमहा कुरा मुद्राः सर्व कामार्थं धापिनोति ॥

नम । इति आधार शक्ति कूर्मं शोषान् सम्पूज्य ॥ एक त्रिंश
 चर मन्त्रेण धार पूजयेत् ।—तमाह— ॐ रा रीं रं र मल वर यू
 अग्नि मण्डलाय धर्मं प्रद दश कलात्मने ऐं कलशा धाराय नम ।
 तदुपरि पात्राधारो परि आप्तेयो दश कला अर्च ये ता एवाह—
 हव्य कन्वादिका वहा ॥ य धूम्राचि कला श्री पादुका पूजयामि ।
 र उष्मा कला श्री पा० ॥ ल ज्वलनी कला श्री पा० ॥ व
 श्वालिनी कला श्री पा० ॥ म विष्कु लिंगिनी कला श्री पा० ॥
 र सुश्रे कला श्री पा० ॥ रु सुरूपाये कला श्री पा० रीं कपि
 लाये कला श्री पा० ॥ रा हव्याये कला श्री पा० ॥ ॐ कव्याये
 कला श्री पा० ॥ स्वर्णादिनिमित् कलशाम्—ॐ हा ह्रीं हू ह्रमल
 व्यू ह सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने स्त्री कलशाय नम ।
 तत्रार्कं कला स्तपिन्याया सम्पूज्य । क भं इत्यादि विलोमे मूल
 मातुके जपन् जलै स्त सम्पूर्णै । क भ तपिन्यै नम । ल वं
 तापिन्यै नम । गं फ धूम्राये नम । ध प मरीच्यै नम । ऊ न-ज्वालि
 न्यै नम । च ध रुच्यै नम । छ रं सुपुम्नायै नम । जल भोगदायै नम ।
 र्कं त विरवायै नम ॥ व णं बोधिन्यै नम ॥ ट टंधारिण्यै नम ॥
 ठ ड-क्षमायै नम ॥ इत्यर्क मण्डलं सम्पूज्य । मूल मत्र पठन् सुधा
 बुध्या तो य सम्पूर्णं तत्रगन्ध पुष्पाक्षतान् मं तपनी कला श्री पादु
 का पूजयामि नम । य तापिनी कला श्री पा० ॥ सू धूम्राची कला
 श्रीपा० ॥ ह मरिचि कला श्री पा० । व्यू ज्वालिनी कला श्री पा० ।
 ल रुच्ये कला श्री पा० । म सुपुम्नायै कला श्री पा० ॥ ह भोगदायै
 कला श्री पा० ॥ ह विश्वै कला श्री पा० ॥ ह्रीं बोधिन्यै कला श्री
 पा० । हा धारिण्यै कला श्री पा० ॥ ॐ क्षमायै कला श्री पा० ॥
 मिति प्रयोगे त्रिस्रण्डा मुद्रा बध्भोका ॥ मूलविद्या च मत्र वित
 ॐ सोम मण्डलाय येति कलशा मृताय नम तत ॐ सा सी सू
 समल व्यू स सोम मण्डलाय कामप्रद षोडश कलात्मने सौ कलशा

महा योनि मुद्रा लवणम्—मध्यमे कुटिले कृत्वा तजन्यु परि स्थिते ॥
 अनामिका मध्य गतेक्षये यदि कनिष्ठिके ॥ सर्वो एकत्र सवाग्या अङ्गुष्ठ परि
 वीकृता ॥ एपा तु प्रथामा मुद्रा महायो-य मिषा मते ॥ त्रिलपदा मुद्रा ।
 ध्याता ॥ दोषे मन्त्रेण ॥ गणे च । यादि स्रपवा अ कुरा मद्रवा—शुद्धनी
 मध्य मिकां कृत्वा तत्रंती मध्य पवधि ॥ सयोज्या कु स्वये रिचिचिमुद्रया कुरा
 वडि धाम् ॥ मन्त्र मुद्राल—नाभो परिष्ठा तस्थप्य दक्ष इक्षत प्रसारयेत्
 अङ्गुष्ठो शुक्लोः पादव मात्म मन्त्रे यनी रितेति ॥ मुद्राज मुद्रा (द्यमे) दक्षम्—

मृताय नमः मन्त्रोयं जलाघ्ने । षोडशश्वराद्या, रवान्त्रीः कलास्तज्जले
 चयेत्ता आह अमृतेति ॥ अं अमृतायै कला श्री पादुकां पूजयामि । अं
 मानदायै कला श्री पा० ॥ इं पूपायै कला श्री पा० ॥ इं तुष्टे कला श्री
 पा० । उं पुष्टे कला श्री पा० ॥ ॐ रत्ने कला श्री पा० । ऋधृत्यै कला
 श्री पा० ॥ ऋं शशिन्यै कला श्री पा० ॥ लृं चन्द्रिकायै कला श्रीपा लृं
 कात्यै कला श्री पा० ॥ एं जोस्न्यायै कला० ॥ ऐं शिष्ये कला श्रीपा
 ओं प्रीत्यै कला श्री पा० । औं अंगदायै कला श्री पा० ॥ अं पूर्वायै कला
 श्री पा० ॥ अः पूर्णामृतायै कला श्री पा० इत्यर्घ्यसम्पूज्य ॥ तत्र तन्घट
 स्थापने सृष्टि मुद्रया गंगे चेत्यादि तीर्थ मन्त्रेणां कुरामु द्रया अकं
 मण्डलना चोर्थमावाह्य त्वद्दो देव मा वाहयेत् ॥ एका दशांशेन मन्त्रेणां
 एवारं जलं मंत्रयेत् सा यथा—एँ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् हसौः
 हूं मिति मन्त्रेणाष्टवारं जलं मन्त्रयेत् ॥ ततो—ह्रीं बीजेन (सुधां)
 प्रक्षिप्य (इति तोये अमुकां प्रक्षिप्य) । कुम्भ योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् । तत्र
 सम्पूज्याघ जले हसत्तमलेति स्वरूपं पानीयवः । भेख मन्त्रं आह-यथा-
 हसत्त मलव्यं आनन्द मैस्वायवौषट् । (दशांशेन इति स्वरूपम्) हसयो
 वैपरित्यं-सहस्रं मलं व्युं सुधा देव्यै वौषट् ॥ इति सन्वाणं पूजयेत् ॥ मुद्रा-
 प्रदर्शयेत् ॥—मत्स्य-अस्त्र-कवच-धेनु-संरोधिनी-सन्निरुध्य-मुशल-
 चक्रं-महामुद्रा-योनि मुद्रा-कुम्भ-पुनः अमृति मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ अर्घ्यं
 इति—आदयः षोडशश्वराः । कादयोणान्ता (कं० तपयन्तं) धादयो
 शान्ताः (थं० यः पर्यन्त) तै र्घ्यं त्रिकोणं संविन्द्य ॥ की दृशं ॥
 इक्ष्वाभ्यां मध्ये शोभितं तत्र ऐं ह्रीं सौः रिति चालां संपूजयेत् । ओं ह्रीं
 हंसः सोहं स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण देवीं ज्योतिर्मयीं यजेत् । मूलं त्रिपुजने
 कुर्यात्कुर्यात्सुद्रा समीरिताः ॥ समीरिता मुद्राः मत्स्य-अस्त्र-कवच-धेनु-अमृ-
 तिसंरोधिनी-सन्निरुध्य-रंत्त्र-मुशल-चक्र-इति नव मुद्राः कुर्यात् अर्घ्यादि-
 केन-पूजा वस्तूनि आशानानं चं सम्प्रोक्ष्य मूल मंत्रं स्मरन् । राह्य पद

मुसल मुद्रा—मुष्टि कृत्वा तु हस्ताभ्या वामरगे परि दक्षिणाम् । कुर्यात्
 मुशल मुद्रेय सर्वं विघ्न निवारिणाति ॥ चक्र मुद्रा—हस्तांशुं संमलौ कृत्वा सं
 लामो मु प्रसारितौ । कनिष्ठा गुष्ठको लामो मुद्रेपाचक्रं षष्ठिं लेति ॥ अस्त्र मुद्रा—
 दक्षस्य तर्जनी मध्ये सव्येकर तलेक्षिपेत् अभिधातेन शब्द स्या दक्ष मुद्रा समी
 रिता ॥ कवच मुद्रा—द्विनेत्र त्रिभिरा उपातं द्वाभ्या अक्षं शिरोमत्तम् । अङ्गुष्ठं
 न शिखण्डेया दिग्भिः कवच मीरित्व ॥ इति पदगानि न्यास मुद्रान् ॥
 अमृती मुद्रा—परिवृत्त्य करौ परचाचर्जनी मध्येने मुते कीमप्यनामिकाङ्गुष्ठं
 परस्परं पुवं कुरुः पेनु मुद्रे पमा ख्याता अमृती करणं भवेत् ॥ अर्घ्यं द्रव्यं कृत-

अथ पदं च प्रयोज्य ॥ मधुपर्कम्-पात्रे तुमधुपर्कस्य दध्याज्य मधुचक्षि-
पेत् । मूत श्लोः सुशामने दृष्ट्यात्तं वदने प्रनोः ॥ सुधा मंत्रं-सहस्रमल-
व्यूः सुधादेव्य वीपट् । मुन्यक्षरः सत्वाणाम् पूजयेत् । मधु पर्कं मिरुं देव
कल्पयामि प्रसीदमै । पुनराषमनं दद्यात्तल श्लोःकान्तर पठन् । शुद्धि
माप्नोति तस्मैतेपुनरा च मनीयकम् । स्नानं वस्त्रो पश्रीतान्ते नेवेद्यान्ते
पितृत्सृत्वम् ॥ पुनरा चमनं-उच्छिष्टोप्य शुचि वापियस्यस्मरणमां-
श्रवाः ॥ शुद्धि माप्नोति तस्मैते पुनरा च मनीय कम् ॥

पीठ पूजा माह—

द्वार निर्णयः—मात्स्ये—वद्वौ पूर्वतः स्थाप्यौ दक्षिणेतु यजुर्विदी ।
सामागौ पश्चिमे तद्दुत्तरेण त्वथर्वणौ । इति वचनात् । (सुधाण्य-
वासनं पश्चा यजेत्प्रेताग्नेर्बुजासनम्) दिव्या सन चक्रासनं सर्वं मन्त्रा
सनं ततः साध्य सिद्धा सनं प्रान्च्यं चक्र राजप्रपूजयेति ॥ इति मंत्र
महोदधिम् ॥

तार मात्रा त्रयाद्यम् ।—

अं ऊं म सूर्यं सोमाग्नि महदलं गुणान् सत्त्वं रज तर्मांसि स्व-
वर्णा दान् । स सत्वाय नमः र रजासाय नमः त तमसाय नमः ।

नम्...पाय द्रव्याण्यथाह—दूनाङ्कुरेति । आचमनीय द्रव्याण्यथाह, लरंगेति । कंडोल
मुग-व द्रव्ये मरीचोरमम् । तत्र अर्घ्यं पात्रे द्धिपेद् वातिलदभांश्च तर्पयान् । यवगुण्या,
दान् गण तेनार्घ्यं भूषिवा चरेत् ॥

पेत्तु मुद्गा-वामागुलिवा मध्येषु दक्षिणा गुली रथाना सं योज्य तर्जनीजिन
दत्ता मय्य मया वामया तथा दत्त भय्य मया वामां तर्जनी चनिरो जयेत् ।
दन्तया नामया वामा कनिष्ठा त्रिनियो जयेत् । विरिवापो मुत्तोचैवापेत्तु मुद्गा
पश्रीति वेति । अमृत गोजव, वनितिवं जेन सं राधिन्या मुद्गया वा यमा-अगुष्ट
गर्भिणी भैव सन्नि रोरे सनीरतेति ॥ अगुष्टं गर्भे मष्टि द्वयं हस्वर्षः । महा-
मद्रायया-रनी कृष्य करवा रंगुलो क्षमप्य करौ विषो जयेदितियोनि मुद्गा-
दंताग्रष्ट वामागुष्टपिचरा हस्तद्वये नच शान शया (मय्य शत्या) मुष्टि वा
दुर्गात् वा कश्च मद्रया ॥

आत्मान्मित्यादीन् । मायाप्रयादीन्—अं आत्मने नमः । ऊं अन्तरात्मने
 नमः । मं परमात्मने नमः । ज्ञानात्मानं—ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । मायातत्त्वा-
 दीनि स्ववर्णां घानि । मां मायातत्त्वाय नमः । कला तत्त्वाय नमः
 विद्यातत्त्वाय नमः । प्रपूजयेत् । ब्रह्मप्रेताय नमः विष्णु प्रेताय नमः
 रुद्रेस्वर प्रेताय नमः ॥ पीठ शक्ती राह—कामिभ्यै नमः । कामदायिभ्यै
 नमः । रत्यै नमः । रतिप्रयायै नमः । नन्दायै नमः । मनोन्मनायै नमः
 वरायै नमः । वराभय करायै नमः ॥ इति पूर्वोक्ते पीठ मातृके आदि शब्दा-
 ल्कामानूकादयो (ज्ञेयाप्रयोगेषु) ततः आसन मंत्रेण पूजये चक्र नाय-
 कम्—पीठ मन्त्र मुद्गरतिस्वरूपमन्यत् यथा ऐं परोपे अपरायै परा परायै
 हसौ सदाशिव महा प्रेतपद्मा-सनायनमः इति ॥ एवंपीठसमभ्यर्चदद्यात्पुष्पां
 ञ्जलिततत्राःपुष्पाञ्जलि मंत्र माह ।—ह्रीं श्रीं प्रचट गुप्ततर सत्प्रदाय
 कुलनिगमं रहस्यात्ति रहस्य परा पर रहस्य संज्ञक श्री चक्र गत योगिनी
 पादुकाभ्यो नमः । इति पुष्टपाञ्जलिम् ॥ इति ॥

आवरणार्थं—उपचार पूजनम् ॥

पूजनप्रयोगः त्रिखण्डा मुद्गोक्ता ॥ आवाहन मंत्र माह—
 ध्यानपूर्वकंपुष्पं गृहित्वा—खड्ग चक्र गदेषु चाप परिघा वृक्षलंबुशुण्डी
 शिरः शंखं संन्दधतीं करैस्त्रि नयनां सर्वाङ्ग भूषा घृताम् ॥ नीला-
 श्मद्युति मास्यपाद दशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौ स्वपिते
 हरोकमल जो हन्तु मधु कैटभम् ॥ १ ॥ ॐ हिरण्य वर्णां
 हरिणीं सुवर्ण रञ्जत श्रजम् । चन्द्रां हिरण्य मयीं लक्ष्मीं ज्ञातवेदोय
 मा वह ॥ १ ॥ देवेशि भक्ति मुलभेसर्वा वरण सं युते । यावत्त्वां
 पूज विष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥ इदमा वाहनं प्रोक्तं ततः
 स्थापनमा चरेत् ॥ भैरवी मंत्र मुच्चार्य श्री मन्त्रपुर सुन्दरि ॐ भूर्भुवःस्व.

मधु पकं मन्त्रः—श्रो दधिवक्त्रावयोऽप्रकारिषजिष्णोऽरभवंस्य ध्वाजिनं ॥
 सुरमिना मुखाकरस्पर्शऽग्रायूं ॐ विदारिवत् ॥ पात्रे तु दधि क्षिपेत् ॥ अं
 घृतमिमिदे घृतमंस्य योनिव्युते ! शिश्रतो धूतम्वंस्यधामं । अतुष्पधमा
 वरं मादसं स्त स्तारु कृतं नृप्यत्त वृत्ति रत्नस्य ॥ इति घृतं क्षिपेत् ॥ श्री
 मधु ध्वाताऽश्रुताय ते मधुं क्षरन्ति सिन्धवः । माधुद्वीजं ऽः सन्त्वोषधीः ॥
 मधुनक्तप्रदोष सो मधुं मत्चार्यिवध्रजः । मधुहृषो रस्तुनः पिता ॥ मधुं
 नात्रोन्नत्स्वतिम्मधुमां ॥ २ ॥ अस्तुसूर्य्यं । याद वीर्गावो भवन्तुनः ॥ मधुं क्षिपेत् ॥
 त्रिचर्पं यित्वा—शुक्ल पक्षुत्—अष्टिं क्लीं सीः ॐ नमः कामेश्वरि इच्छा
 काम फल प्रदे सर्वं सत्त्वं वशं करि सर्वं अगतदोभय करि हुं हुं हुं द्रा श्रीं क्लीं

श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम ध्यानावाहनसमर्पयामि नम ॥ इति प्रयोगे ॥
 अथ आसनम्—ॐ अक्षय्यं परशु गद्रेषु कुलिपं पद्मं धनु
 कुण्डिका दण्डं शक्ति मखि च चर्म जल ज घण्टा सुराभाजनम् ॥
 शूल पारा शुदशने च दधतीं हस्तै प्रसन्ना नना से वे सै लि
 मर्दिनीमिह महा लक्ष्मीं सरोचस्थिताम् ॥ १ ॥ ता ऽ आवाह जात
 वेदो लक्ष्मी मनप गामिनीम् । यस्या हिव्य विन्देय गामस्य पुरुषा
 नहम् ॥ अनेक रत्न सयुक्त नाना मणि गणान्विताम् । कातम्बर
 मय दिव्य आसन प्रति गृह्यायाम् ॥ ॐ भू भुव स्व श्री महा
 त्रिपुर सुन्दर्यै नम ध्यान पुष्प सहित आसन सगपयामि नम ॥
 इति पुष्प स० ॥ तत आसन मुद्रा स्थापन्यादि दरायेत् । चक्रे
 स्मिन्कुरु सात्रिभ्य नमोन्त स्थापने मानु दशयेन्ध्यापति मुद्रा
 सन्निधि सत्रिरोधनम्—सुमुखीं मुद्रा मन्त्रविद् दशयेत् ॥

पद्मगङ्गम् न्यसेत्—सकली करण त्विदम् अव गुण्डा मृतीकार
 परमी कृत्यमहा मुद्रा न्प्रदर्शयेत् ॥ मुद्रा न्पूर्व प्रयोगे द्रष्टव्य
 पात्र स्थापनादि प्रयोगम् ॥

पाद्यम्—उद्यत्मानु सहस्र कान्ति मङ्गल क्षोमा शिरो मालिका
 रक्ता लिप्त पयोधरा चप चर्ती विद्या मभीति वराम् ॥ ठस्ताञ्जै दध
 तीं त्रिनेत्र विलसद्भ्रकार विंद श्रिय देवीं वद्ध हिमाशु रत्न मुकुटा वन्दे
 सुम द सिमताम् ॥ ॐ अथ पूर्णां रथ मध्या हस्ति नार प्रमोदिनीम्
 श्रिय त्वी मुप ह्वये श्रीर्मा देवीं जुपताम् ॥ गङ्गादि सव तीर्थेषु
 मयाप्रार्थ नया द्रवम् बोधने तत्सुख स्पर्शापाद्यार्थ प्रतिगृह्य ताम् ॥
 ओं भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम पाद्यं समर्पयामि नम ।
 अर्घ्यम् कालाभ्रमा कटाक्षै ररि हृत्त भयदा मौलि वद्धन्दु रेखाशर
 चक्र कृपाणा विशाल मपि करे रुद्ध हन्ता त्रिनयाम् ॥ सिंह स्फुपाधि
 रुदा त्रिभुवन मखिलता तेजसा पूरयन्ती ध्यायेद् दुर्गां जम्बू रया त्रिदश

भू स लो क्ती ऐ ५६ कामेश्वरि निया धी वादुकां पूज यामि तर्प यामि
 नम एत प्रयोग ॥ कृष्ण पञ्चेतु विधिमाया कामेश्वर्यां वरानका ॥ इति
 माना ॥ विषयवा मुद्रा उक्ता ॥ उप तापूना त्रितयदा मुद्रा—मुद्रां त्रितयां
 इ ताप पुषावशादाय चाज्ज्यो ॥ प्यात्वा पूर्वा दिता देवीं मूल विद्या समुष
 २२ ॥ चैतयं दूरकमल ॥ नाविहा रम निगतम् ॥ तद रं प्रसव मामास योजित
 कुमुदां बली ॥ महा पद्म वनां तस्य कारणा नद त्रिपदे ॥ सर्वं भूत रते मात
 रमदि परमेश्वरि ॥ १ ॥ महा पूजाभ वेत्यय सयुक्त कुमुदा जलिम् ॥ भा
 पद रात्र भंवां नद तव आक त्र्यं पठत् । ४ ॥

परिचृतां सोवितांसिद्धि कामैः ॥ कौसौर्मितांहिरण्यप्रकारामाद्रान्यलन्तीतृप्तां
 तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्म वर्णा तामिहो पद्मये श्रियम् ॥ निधीनां
 सर्वं रत्नानां त्वय नर्भ्यगुणा ह्यसि ॥ सिद्धो परि स्थिते देवि । गृदाणार्घ्यं
 नमोस्तुते ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः अर्घ्यं समर्प-
 यामिनमः ॥ आचमनीयम्-घटा शूल हतानि शंख मुशले चक्रं धनु
 रसायक हस्ताब्जैर्दधतां घनान्त विलम्बञ्जीतांशुतुल्य प्रभाम् ॥ गौरी देह
 समुद्भवां त्रिजगतामाधारभुतामहापूर्वा मन्त्र सरस्वती मनुभजे शुभादि
 दैत्यादिनीम् । चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रिय लोके देव जुष्टा मुदाराम् ।
 तां पद्मनेमी शरण महं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नन्यतां त्वा वृणोमि । स्वरूपरे
 ण सुगन्धेन सुगन्धि स्वादु शीतलम् । तौयमा चमनी यार्थं देवि । त्वं
 प्रति मृदयताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः आचमनीयं
 समर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ मलाय कर्ण स्नानम्-नागाधोरखर विष्टरो परि
 फणोत्तं सौररत्नावली भास्वहेह लतां दिवाकर निभां नेत्र त्रयोद्भासिताम् ।
 माला कुम्भ कपालनी रज कर्ण चन्द्रार्द्धं चूडां परां सर्वज्ञेश्वर भैरवाङ्क
 निलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥ आदित्य वर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तव
 त्रिज्ञोऽथ विलयः तस्यकलानि तपसानु दन्तुमायान्तरायारचवाद्याऽबल-
 क्ष्मीः ॥ मन्दाकिन्याः समानीतेर्हेमां बोरुह भासितैः स्नानं कुरुष्व देवेशिः
 सलिलैश्च सुगन्धिमिः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः
 स्नानं समर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ मधुपर्कम्-पात्रे तु मधु पर्कस्य दद्याज्य मधु
 चक्षिपेत् । मूल श्लोक सुधा मंत्रं दद्यात्तं वदने प्रभोः ॐ मधुच्वाता
 रितायते मधुत्तरन्ति सिन्धवः माञ्जवीर्न सन्त्वोपधीः ॥ दधि घृतमधु
 समायुक्तं पात्र युग्म समन्वितम् मधु पर्कं गृहाणत्वं शुभदाभव शोभने ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः ॥ ७ ॥ शुद्धोदक स्नानम्-
 ॐ आपो अस्मान्मातरः सुन्दर्यन्तु घृतेय नो घृतस्वः पुनन्तु ॥ विवरवध
 पिरिश्मन्त्रहन्ति देधी रुदिदाम्यः शुचिरा पूतएभि । दीक्षातं पसस्तिनू
 रसि द्यां तां शिवा ॐ शगमा परिदधे भद्रं वर्णं पुष्टम् ॥ परमानन्द
 बोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये । सांगोपांग मिदं स्नान कल्पम्यहमीशिते ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै नमः मधुपर्कं स्नानान्ते शुद्धोदक
 स्नानं स्नानम् ॥ पुनरा च मनीयम्-उच्छिष्टोप्य शुचि र्थापि यत्यास्मरण
 मत्प्रतः शुद्धिमाप्नोति तस्मैते पुनरा चमनीयकम् ॥ सर्वं लोकस्य या शक्ति
 र्ब्रह्म विष्णु महेश्वराः । दद्याम्या च मत्तं तस्यै देव्यांस्तुभ्य मनोऽरम् ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि नमः ।
 सुगन्धित स्नानम् ॐ काण्डाकाण्डापरौ हृन्ती परुषः परुषस्परि ॥
 पशानो बुर्वे प्रवन्तुं सद्दक्षेण शते नवः । ॐ स्नेहागृहाण स्नेहेन लोकेरपरि

महा नमो, सर्व लोकेषु शुद्धात्मन् वधामि स्नेह मुत्तम् ॥ ओं भू भुवः स्वः
श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नमः सुगन्धिस्त द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ दुग्ध
स्नानम्—ओं मयः प्रथिव्याम्यय औषधी धीपुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयोः
भाः ॥ पयः स्वधीः प्रविशः मन्तुमह्यम् ॥ कामधेनु समुद्गतं सर्वेषां
जीवन परम् । पावनं यद्ग हेतुरस्य पयः स्नानार्थं मर्पितम् ॥ १० ॥ ओं
भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पय स्नानं समर्पयामि नमः ॥
पय स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं—ओं आपो अस्मान्मातरः सुन्ध यन्तु
घृतेन नो घृतस्यः पुनन्तु ॥ त्विरवधं द्विरिधिन्प्रवहति देवी रुदिदाभ्यः
शुचिरापूत एमि । दिक्षांतं पसस्ति नू रसि स्वां वां शिवा ओं रागमा
परिक्षे भद्रवर्षं पुष्पान् स्नानार्थं शुद्धोदकं समर्पयामि नमः । स्नानान्ते
वच्छिद्योप्यसिति पुनर्वाचमनीयं समर्पयामि नमः ॥

दधिस्नानम्—ओं दधि काञ्चो अकारिषि त्रिणोरोश्चस्य वाजिनः
सुरभिनो मुखा करत्पण आयु ६३ त्रिवारिपत् ॥ ॐ पय सस्तु समुद्गुः
तं मधुरान्तं शशि प्रथम् । दध्यानीतं मया देवी । स्नानार्थं प्रतिगृह्य-
ताम् ॥ पुन शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते ।
मन्त्रो घ्राणं पूर्वकं आचमनीयथं समर्पयामि नमः । इति दधिम ॥
घृतस्नानम्—ओं घृतं घृत पावनः त्रिपथ व्यर्सा यसा पावनः पिवता-
न्वारिच स्य हवि रसि स्वाहा । विशः प्रदिश ऽआदिशोविवदिशः शरिरो
दिग्भ्यः स्वाहा ॥ नव नीत समुत्पन्नं सर्वं सन्तोष कार कम् । घृत
तुभ्यं प्रदा स्थामि स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ पुनः पूर्वोक्ते
मन्त्रोघ्राणं विधेशुद्ध स्नानम्, शुद्ध स्नानान्ते चमनीयम् ॥ इति घृतम् ॥

मधुरस्नानम्—मधु नक्त मुतो पसो मधु मत्त पार्थिव ६३ राजः मधु
घोरस्तु नः पिताः ॥ तनु पुष्यं समुद्गतं सु स्वाहु मधुरं मधुरं मधु ॥
तेजः पुष्टि करिः दिग्भ्यं स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ मन्त्रोघ्राण
पूर्वकं पुनः शुद्धोदक स्नानम्—स्नानान्ते आचमनीयम् ॥ इति मधुः ॥
शंकरास्नानम्—ओं आपा ६३ रसमुद्भवस्त ऽः मूर्धे मन्त ऽः
ममाहित ॥ आपा ६३ रसस्य यो रसस्त म्वो गृहाण म्युताम् सुप-
याम गृहीतो मोन्द्रायन्था जुष्ट गृह्याभेपते योनि रिन्द्रायन्था जुष्ट
समम् ॥ इत्युत्तर समुद्भूता शंकरा पुष्टि कारिका । मन्त्रा पद्मारक्ष
दिग्भ्या स्नानार्थं प्रति गृह्य ताम् ॥ आपो अस्मान्मिति शुद्धोदकं
अचिद्यमिति आचमनीयं समर्पयामि नमः । ॐ भू भुवः स्वः श्री
महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः २५६ मन्त्रेणा मुक्ता मुक्त इत्य सदिब
२५ पद्मापूत स्नान समर्पयामि नमः ॥ इति २५० ॥ पद्मापूतम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्ती मपयन्ति स स्रोतसः । सरस्वतीतु पञ्च-
 धासो देशे भवत्सरित् ॥ पयो दधि घृतं चैव मधुच शर्करान्वितम् ।
 पञ्चामृतं मया नीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ पुनः आपो अस्मान्
 मिति शुद्धोदक स्नानं ॥ उच्छिष्टमिति आचमनीयम् ॥ ॐ मूर्धुः
 स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि नमः ॥
 गन्ध स्नानम्— ॐ गन्ध द्वारा दुराधर्षा नित्य पुष्पां क्रीपिष्णीम्
 ईश्वर्यै सर्व भूतानां तामिहो पङ्कये श्रियम् ॥ मलयया चक्र सम्भूतं
 चन्दना गन्ध सम्भवम् ॥ चन्दनं देवि देविशः । स्नानार्थं प्रति गृह्य-
 ताम् ॥ पुनः आपो अस्मान् मिति शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।
 स्नानान्ते उच्छिष्टमिति आचमनीयम् ॥ उद्धर्तनम्— ॐ अथ ३ सुनाते
 अथ ३ शुः पृच्छतां परुषा परुः गन्धस्ते सोमम् भवतु मदाय रसोऽ
 अच्युतम् ॥ नाना सुगन्धि द्रव्याणि चन्दन रजनी युक्तम् । उद्धर्तनं
 मया दत्त स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् पुनः शुद्धोदक स्नानम्— आपो
 अस्मान्मातरः सुन्ध यन्तु मिति शुद्धोदक स्नानं ॥ उच्छिष्टमिति आच-
 मनीयम् ॥ ॐ भूः भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः उद्ध-
 र्तनं समर्पयामि नमः इति । तदुपरि ॐ सहस्रं शीर्षं त्यादि पुरुष
 शुक्तेन श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः (मूर्ध्नि) शंखविशेषा
 ध्यं समर्पयामि नमः ।

द्वय वस्त्रम्— ध्यायेयं सरस्वतीं शुक्ल कलफटितं श्यवतीं श्याम
 लांगी, न्यस्तो कान्ति सरोजे शशि शकल परां वल्लकीं बाद यन्तीम् ॥
 कल्हारा वद्धमालानियमितविलसच्चूडिकारक वस्त्रांमातंगी शंखपात्रां
 मधुर मधु मदां चित्रको द्वासिभालाम् ॥ उपैतु मां देव सखः कीर्ति
 रच मखिता सह । पादु भूतो सुराष्ट्रे स्मिन् कीर्तिं पृष्टिं द्वावतु मे ॥
 यद्भक्त युगं देवि । कंचुकेच समान्वितम् । परिधेहि कृपां कृत्वा
 देवी । दुर्गतं नाशिति ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै
 नमः वस्त्रः द्रव्यं समर्पयामि नमः ॥ उच्छिष्टमिति आचमनीयं सम-
 र्पयामि नमः ॥ अथ— यज्ञोपवीतमञ्जरुणां करुणा तरङ्गि ताक्तीं घृत
 पाशां कुश मुण्य चाप हस्ताम् । अणिमा दिभिरावृताम यूषै रह मित्ये वधि
 भावये भवानीम् ॥ स्रुत पिपासा मला ज्येष्ठाम लक्ष्मीं नारायाम्बहम् ।
 अमृति मसृष्टिं च सर्वां निर्गुणं मे गृह्णात् । नवभिस्वन्तुभिर्युक्तं त्रिशूलं
 त्रिपुरेमयिम् । उपवीतं पोत्तरीयं गृह्णाण परमेश्वरि ॥ ततः स्वयं यज्ञम-
 नीयम् । ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः यज्ञोपवीत (शूत्र)
 समर्पयामि नमः । तद्गोत्रपुष्पम् ॥ गन्धम्— वन्धुः— काञ्चन निम्बं त्रि

रात्मालापशा कुशौ च उरदं निज वाहु दृष्टे । विभ्राण म्बु राक्ला
 भग्निनेत्र मन्वाविके शम निरा वपुरा श्यामि ॥ गन्धद्वाराद्विषयौ
 नित्य पुष्टा करीपिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूताना वामिहो पद्मे त्रिशम् ॥
 परमानन्द सौभाग्य परिपूर्णं दिगन्तरे । गृहाण परम गन्ध कृपया परम
 श्वरि ॥ ॐ भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम गन्ध समर्पयामिनम् ।
 शौभाग्य सूत्रम्-ॐ सौभाग्य सूत्रं वरदे । सुवर्णमणि सयुतम् । कृते
 वक्ष्यामि देवेशि ? सौभाग्य देहि मे सदा ॥ ॐ भू भुव स्व सुत्र
 श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नम कण्ठ सूत्रं समर्पयामि नम । अक्षयम् अक्षय
 मोमदन्त हृद्यवप्रियाऽ अक्षयम् । अस्तोपत स्वभानवोऽन्विष्या नविष्या
 मता यो ज्ञानिवन्त्रतेहरी ॥ अक्षता निमला शुद्धा मुक्तामणि समन्वितान्
 गृहाणे मान्महादेशी ? देहिमे निर्मला पियम् ॥ इति ह्येकम् ॥ ॐ
 भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम अक्षता-समर्पयामि नम ॥
 हरिद्राचूर्णम् ॥ हरिद्रा रञ्जिते देवी । सुप्त शौभाग्य दायिनि ॥ तस्मा
 त्स्या पूजयाम्यत्रदु रशान्ति प्रयच्छमेत् ॥ ॐ भू भुव स्व श्री महा
 त्रिपुर सुन्दर्यै नम परिमल द्रव्य समर्पयामि नम कुङ्कुम् कुङ्कु मम् कान्तिद
 दिव्यं कामिनी कामशम्भरम् । कुङ्कुमे नाचिते देवि । प्रशिद्ध परमेश्वरी ।
 ॐ भू भुव स्व श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम कुङ्कुम् समर्पयामि नम ॥
 सिन्दूर-सिन्दूर मरुणा भास जया कुशुम सन्निभम् । पूजितासिमयो
 देवि ? प्रसोद परमेश्वरि ॥ ॐ भू भुव स्व श्री महात्रिपुर सुन्दर्यै नम
 सिन्दूरं समर्पयामि नम । कञ्जला-चञ्जल्यां कञ्जलं रम्य सुभगे । शान्ति
 कारके । कपूरं ज्योति रत्न-न गृहाण परमेश्वरि ॥ ॐ भू भुव स्व श्री
 महात्रिपुर सुन्दर्यै नम कञ्जला समर्पयामि नम ॥

दुर्वाङ्गु रम्-उत्तम हन शचिरा रधि चन्द्र वह्नि नेत्रा धनुशार
 युवा कुरा पाशा शूलम् ॥ रम्येभु जैरव दधता शिव शक्तिरुपा
 कामेष्वा इदिभनामि धृतन्दु लराम् ॥ ॐ आशां पुष्करणीं पुष्टि
 सुरया हेम मालिनीम् । स्याद्विष्णुमया लक्ष्मीं जात वदा ममा
 ॥ ॐ काण्डा र्काण्डा तरा हन्तीं पुरुष पुरुषस्वरी एवानो दुर्वे
 प्रतनु म्दक्षेण शर्व नथ ॥ दुर्वां दले स्यामलक्ष्म मदी रूपे हरि
 प्रिय ॥ अतो दुर्वाभिर्नर्वा, लयामि सदा शिव ॥ ॐ शुभु र
 म्य भा महा त्रिपुर सुन्दर्यै नम । दुर्वां कुर समर्पयामि ॥ विन्द
 पत्रम्-आशा य करिणी यष्टि पिङ्गला पद्ममात्रिणाम् । चन्द्रा
 रिष्णुमया लक्ष्मीं राधयदाय आरद ॥ ॐ नमो विदिन्त र कथिपन
 नमो धर्म्मिण्यै च र्म्मिण्यै च नम-रुष्ठाय च र्भ्रत मताय च नमो
 दुन्दुभुगय च र्भ्रतप्रया यथ नमो र्गुण्यै । यदुवां ज्ञय भा पुका

महा देवि । प्रियः सदा ॥ विल्व पत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरे
 र्वरि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः विल्व
 पत्रं समर्पयामि नमः ॥ पल्लव अर्पणम्-ताम्रंऽश्रावहं जात देवो
 गच्छमी मनप गामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गात्रो दाम्यो
 स्नान्निन्देयं पुरुषा नहम् ॥ ॐ अश्वत्थेपो निपदनं पर्णोवो व्यसति
 रकृता ॥ गोभाज गोभाज इत्किलासथयत्स नवयपुरुषम् ॥ गृह द्वारे
 चोम-पि दुष्टासुर निवर्हिणि ॥ पूजां करोमि चार्धगि पल्लवानं
 न्दनोद्भवैः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः पल्लवान्-
 समर्पयामि नमः । फलमालां- ॐ महादेवी चविद्महे विष्णु पत्नी च
 धीमही ॥ तन्नो देवीप्र० ॥ ॐ याः फलाफलनीर्याऽ अफला यारव पुष्पि-
 पणी ॥ पृष्ठस्पति प्रसूता स्तानो मुञ्चन्त्य र्हसः ॥ शरत्काले समुद्रतां
 निशुम्भे मर्दते त्वया ॥ फल मालां वरां देवि । गृहाण सुर पूजिते ।
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः फलमालां स० ॥
 रत्नमालां- ॐ परि वाज पतिः कवि रप्ति हृदया न्बकमीत् ॥
 तद्यद्रत्नानिदा शुभे ॥ ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सध्रम कर्दम । श्री
 य वा सयमे गृहे मातरं पद्म मालिनीम् ॥ मुक्ताफल युतां मालां
 रत्न वैडूर्य सु प्रभाम् ॥ माणिक्यं स्वर्णं प्रथितां गृह्यतां वरदे ?
 नमः । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर सुन्दर्यै नमः रत्न मालां स० ॥
 पुष्प मालां-आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिकीत वसमे गृहे । निच
 देवी मातरं श्रियं वा सयमे कुले ॥ ॐ श्री रचते लक्ष्मी रश्च पत्-
 ङ्क्या बहो रात्रे पार्श्वे नः ॥ पद्म शंखजपुष्पादि शत पत्रै विचित्र
 ताम् ॥ पुष्प मालां प्रयेच्छामि गृहाण त्वं सुरे रचरि ॥ ॐ भूर्-
 भुवः स्वः श्री महत्रिपुर सुन्दर्यै नमः पुष्प मालां स० ॥ अथ पुष्पं-
 वाक्तर विद्यति मिन्दु किरीटा तुङ्ग कुवां नयन त्रयं युक्ताम् । स्मेर
 सुखीं वरदां कुरापाशा भीति करीं प्रभजे भुवनेशीम् ॥ मनसः काम
 मा कृति वाचः सत्य मशीमहि । पशूतां रूप मन्नयस्य मयि श्रीः भयनां यशः
 ॥ पुष्पे नांता विधेर्दिव्यैः कुमुदै रथ चम्पकैः ॥ पूजार्थं नीयते तुम्भं
 पुष्पाणि प्रतिगृह्य ताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री म० पुष्पं स० ॥
 अलंकारम्-विद्यु दाम सम प्रभां मृग पतिं स्कन्ध स्थितां भीषणां
 कन्याभिः कर बाल सेट-विलस द्रस्ता भिरा सेवितां ॥ हस्तै रचक्र
 गदासि खेट विशिखां श्रापं गुणं तर्जनीं विभ्राणामन लात्मिकां
 शशिघ्रां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ हार कंठे केशू र मेखला कुरडला-
 दिभिः । रत्नादय कुरडलो पेतं भूपणं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः
 स्वः श्री म० अलंकारं स० ॥ सुगन्ध द्रव्यम् बालार्क मण्डला भाषां

चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥ पाशाङ्कुशायामोर्वां स्वारयन्तीं क्षिप्रं
भवे ॥ ॐ अहि रिव भोगैः पर्येति बाहुं जाया इति परि वाव
मावः ॥ इन्द्रो विश्वान् युनानि विद्वान्यु मान्युमा ५ सम्परि पाव
विश्वतः ॥ चन्द्रना गरु कपूर कुङ्कुमं रोचनं तथा । कस्तूर्यादि सुग
न्धारव सर्वाङ्गेषु विक्षेपनम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री म० सुगन्ध
द्रव्यं (उतर) स० ॥ अथ भूपम्—यः शुचिः प्रथतोभूत्वा जुहुया वाग्व
मन्वदम् । सूक्त पञ्च दरा षड्भ श्री कामः सततं जपेत् ॥ ॐ पू
रभो धूतं धूर्त्वं धूर्त्वं योऽस्या धूर्त्वं तीत धूर्त्वं यय धूर्त्वामः । देवाना
मसि षड्भि म ५ सस्ति तमं प्रपित मजुष्ट तमन्देवहू तमम् ॥ दशाङ्ग
गुग्गुलं धूपं चन्द्रना गरु संयुतम् समर्पितं मया भक्त्या महादेवे प्र
गुणाताम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महानि० धूपं स० ॥ अथ दीपम्—
ॐ अग्निज्योति ज्योति रग्नि स्वाहाः सूर्यो ज्योतिः सूर्य्यः स
स्वाहाः अग्नि ऋषो ज्योति ऋचः सः स्वाहाः सूर्यो ऋषो ज्योति
ऋचः सः स्वाहा । ज्योतिः सः सूर्य्यः सः सूर्य्यो ज्योतिः सः स्वाहा ॥
सर सिज निलये सरोज हस्ते धवल तरांशुक गन्धः माण्ड्य शोभे ।
मगवनि हरि लल्लभे मगोहे त्रिभुवन भूति करि प्रसीद् मह्यम् ॥
पृ। वति समा युक्तं महा तेजो महो ज्वलम् । दीपं दाम्बामि देवेसि
सुशीताभव सर्वदा ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा श्री० दीपं समर्प-
यामि नमः । अथ नैवेद्य—नैवेद्यं निवेदयामि नमः । जलेना म्बुत् ॥
गन्ध पुष्पा भ्या माद्याद्य ॥ धेनु मुद्रया असृती कृत्य ॥ योनि मुद्रां
प्रदश्यं ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा,
ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा, ॐ आर्द्रां पुष्करिणि
पुष्टिं सुवर्णां देम मालिनीम् । सूर्यां हिरण्ययीं लक्ष्मीं जात वेदो
म मा यद् ॥ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः पद्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं
गृह्यतां देवि । भक्ति मे श्रवणां कुरु । ॐ भू भुवः स्वः श्री महा
त्रिपुर सुन्दरं नमः नैवेद्यं स० ॥ मध्ये पानीयम्—ॐ यत्पुत्रपेण
हविषा देवा यद्म म० ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पित्रलां पद्म मालि
नीम् । चन्द्रां हिरण्ययीं लक्ष्मीं जात वेदोम आवह ॥ आचम्यतां
त्वयादेविभक्ति मे श्रवणां कुरु । इप्सितं मे । वरं देहि परश्रव
परां गतिम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री महा त्रिपुर पा नीयम्
स० ॥ करो इतनम्—करोद्वतनं कं देवि सुगर्भे परि
पासितेः इप्सितं मे वरं देहि पर प्रथ परां गतिम् । ॐ

मुद्राः—धेनु-अमृती-योनि-यूषं प्रयोगे दृश्यः ॥

भू भुवः स्वः श्री महात्रि० ॥ इति च गन्धसमर्पयामिः ।
हस्त मुख प्रक्षालनार्थं जलं-गन्धतोय समानीतं सुवर्णं फलशोस्थितम् ।
हस्त प्रक्षालनार्थाय पानीयंते निवेदयेत् ॥ पुनः शत्रो देवीति मंत्रस्य
उत्तरा पोसनार्थं-करमुपप्रक्षालितार्थं जलं समर्पयामि नमः ॥ ऋतुकलम्-
याः फलिनीयाऽअफलाऽअयुष्पाचारश्च पुष्पिणीः । वृहस्पति प्रसूतास्त्वानो
मुच्चन्त्वं ॥ हस्तः ॥ द्राक्षात्मजूर कदलीपत्र सात्रक प्रपि थकम् । नारिके
लेडु जंबादी फलानि प्रतिगृह्यवाम् ॥ ॐ भूभुवः स्वः श्री महात्रि० ऋतु
फलं स० ॥ ताम्बूल पूगोफलम्—ॐ सप्तास्यासन् परिधय० । ॐ तामऽ
श्रावह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । गस्यांहिरयं प्रभूतिं गावो दास्यो
श्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ एता लवंग कस्तूरं कापूरैः पुष्पयामितांवीटि
का मुख वासार्थं मर्पयामि सुरेश्वरि ॥ ॐ भूभुवः स्वः श्री महात्रि०
ताम्बूल पूगोफलं सम० ॥ दक्षिणाद्रव्यं—हिरण्यं गर्भं गर्भस्थं हेमवीजं
विभावसौः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥ हिरण्यं गम्भ्वंऽ
समवत्तं ताम्रे भूतस्य जातऽः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीन्धमुते
माङ्गल्यैर्देवैः य हविषा विधेयम् ॥ मृजाफल समृध्यर्थं तवाग्रे स्वर्गामोश्वरी
स्थापितं तेनमे प्रोक्ता पुण्यं कुर्वन् मनो रथान् ॥ ॐ भूभुवः स्वः श्री
महात्रि० पूजन पूर्वकं दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामिनमः ॥ कपूरा रत्तिक्यम-
ॐ इदं हविऽअजननम्मेऽअन्तुदशवीरं सर्वगणं स्वस्तये । आत्कम
मनिप्रजासनि पशु शनि लोके सन्न्यमय सनि ॥ आग्निऽऽहुताभ्यलान्मे
करो स्वन्नम्-पयोरेतोऽअश्मासुधत्त ॥ नीराजनं सुमांगल्यं कपूरेण सम-
न्वितम् । चन्द्रार्कं वह्नि सदृशं महादेवि ! नमाऽस्तुते ॥ ओं भूभुवः स्वः
श्री महा० कपूररत्तिक्यं समर्पयामिः ॥ प्रदक्षिणम्—ॐ मानस्तोके तनये० ।
ॐ याति कामि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
प्रदक्षिण पदे पदे । सर्व पापा प्लुत्तये प्रदक्षिणां करोमि ॥ ॐ भूभुवः
स्वः श्री महा त्रि० प्रदक्षिणां स० ॥ पुष्पाञ्जलिम्—ॐ विश्वतरचतुरः
विरततो मुखो विश्वतो बाहुस्त विश्व तस्पात् । संवाहुम्यांधमति सत्तत्रे
द्यावा भूमि जनयन देवएकः ॥ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्धवा
निव । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वरि ॥ ओं भूभुवः स्वः
श्री महात्रि० पुष्पाञ्जलिं समर्प- यामि नमः । ततः सफलार्थं-पुष्पगृह्णित्वा-
भ्यानम्-काला भ्रातां कटाक्षै ररि कुलभयदां मौलिवद्वेन्दु रेखांरालं चक्रं
कृपाणां विशिष्य मपि करै रुद्रहन्तीत्रितेशम् । सिंहस्कन्धाधि रुद्रां त्रिभु
वन मञ्जिलं तेजसा पूष्यन्तीष्यायेद् दुर्गा जयाख्यां त्रिदरा परि वृतांमेविगां-
सिद्धि कामैः ॥-ऋषिहवाय ॥ १ ॥ शम्भुदयः सुर गणा निहतेऽति धीर्ये
तस्मि दुरात्मनि सुरारि बलेऽ देव्या ॥ तां तुष्टुवुः श्वतिन्म्र शिरोधरांसा

शक्तिः प्रहर्षं पुलकोद्गम वारु देहाः ॥ २ ॥ देव्या यय तत मिदं जगत्तान्
 शक्त्या निःशेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या, तमम्बिका मखित देव सभ्य
 पूज्यां भक्त्या नताः स्म त्रिदयातु गुभा निशानः ॥३॥ यस्याः प्रभाव मनुज
 भगवानतन्जो ब्रह्मा हरश्च नहिं वस्तु मलं वस्तुच ॥ सावर्णिक
 खिल जगत्परि पाल नाय नाशाय च शुभ भयरवमतिं करोतु ॥ ४ ॥
 या श्रीः स्वयं सुकृति नां भुवने स्व लक्ष्मीः । पापात्मनां कृतघ्निषां
 द्वन्द्वे सु बुद्धिः श्रद्धा सतां कुत जन प्रमत्तस्य लज्जा, तां स्वां
 नताः स्म परि पालय त्रेत्रिविधम् ॥ ५ ॥ किं रण्यम एव रूप
 मचिन्त्य मेतत्किं वाति वीर्यं मसुर क्षय कारि भूरि ॥ किं चाह्वेषु
 चरितानि तदाति यानि सर्वेषु देव्य सुर देव गणादिकेषु ॥ हेतुः
 समस्त जगतां त्रिगुणाऽपिदेवे तंज्ञायसे हरि हरादिभि रण्य पाप ॥
 श्रवा श्रवा ऽखिल मिदं जगदं रामूद मध्या कृताहि परमाप्रकृति
 स्वमाद्या ॥ १ ॥ यस् ॥ समस्त सुरता समुद्रो रणेन तृप्ति प्रयाति
 सञ्जलेषु नरेषु देवि ॥ स्वाहा ऽसि वै पितृ गणस्य च तृप्ति
 हेतु रुचाये से त्वमत एव जनैः स्वधाच ॥ या मुक्तिं हेतु रवि
 चिन्त्य महा ब्रवात्वगम्यस्य से सुनियतेन्द्रिय तत्त्व सारैः ! मोक्षायि-
 भिर्मुनिभिरस्त समस्त दीपैर्विद्या ऽसि साभागवती परमाहि देवि
 ॥ ६ ॥ शब्दादिमहा सु विमलगन्धुपां निवान मुग्दी धरम्यपर
 पाठ यतां चसामनाम् ॥ देवी त्रयी भगवती भव भावनाय बांता
 च सर्वं जगतां परमार्तिं हन्तीः ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदित्वा
 विज्ञ शास्त्र सारा दुर्गासिदुर्गा भव मातर नौरसंगा ॥ श्रीः कैट-
 भारि द्वन्द्वे ककुवाधि वासा गौरी त्वमेव शशि मौलिकृत प्रतिष्ठा
 ॥ ११ ॥ ईशसहा सममलं परि पूणं चन्द्र विम्बानु कारि क्लृप्तो
 क्षम हान्ति कान्तम् ॥ अत्यद्भुतं पदवमा तरुपा तथा ऽपि पश्यं
 विनोस्य महत्या महिया सुरेषु ॥ १२ ॥ एष्वानु देवि कृपितं भुक्तो
 कराल सुशुद्धरा सहस्र श्चवि यत्र सयः ॥ प्राणान्मुनोच
 मदिपस्तद् वीच चित्रं कैर्जीव्यतेहि कुपिता न्तक दरां नेन ॥ १३ ॥
 वेदं प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाश यसि कोपवती
 कुलानि ॥ विज्ञायसे तद् धुनेच यदस्त मेव प्रीत वलं सु विभुलं
 महिषा सुरस्य ॥ १४ ॥ ते सं मता अन पद्मेषु धनानि तेषां तेषां
 परांसि न च मो क्षति धर्मं वरां धन्यास्त एव निभृतात्मन भूय
 दारा तेषां सदा ऽभ्युद यदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धन्यांश्चि देवि
 मकलानि सतेव कर्मायत्या हवः प्रतिदिनं सुकृतां करोति ॥ स्वर्ग-
 प्रयाति च वती भयवी भसादा लोकप्रये ऽपि क्लृप्ता ननु देवि तेन

॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता।
मति वतीथ शुभांदासि- दारिद्र्य दुः खभय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोत्कार करणाय सदात्रं चित्ता ॥ १७ ॥ एभिर्हृतेर्जगदु पैति सुखं
तथैते, कुर्वन्तु नाम नरकाय चिरायपापम् ॥ संग्राम मृत्यु मधि
गम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नून महिम्ना न्विनि हंसि दधि ॥ १८ ॥
दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वा सुरा नः रिपु यत्प्रह्मिणोषि
शस्त्रम् ॥ लोका न्प्रयान्तु रिपवो ऽपिहि शस्त्र पूता इत्थं मति
र्भवति तेष्व हितेषु साध्वी ॥ १९ ॥ खड्ग प्रभानिकर विस्फुरयौ
स्तयोप्रेः शूलाप्र फान्ति निवहेन दृशो ऽसुराणाम् ॥ यत्रा गता विल
यमं शुमदिन्दु खण्ड योम्या ननं तत्र विलोक यतां तदे तन् ॥ २० ॥
दुर्वृत्त वृत्त समनं तव देवि शीलं रूपं तथै तद् विचिन्त्य मतुल्य मन्यैः ॥
वीर्यं च हन्तु हत देव परा क्रमाणां वैरि ष्वापि प्रकटितैव दया
त्वये त्वम् ॥ २१ ॥ केनो पन्ना भवतु ते ऽस्य परा क्रमस्वरूपं चशानु-
भयं कार्यति हारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समर निष्ठु रता चष्ट्रा-
त्वय्येव देवि वरदे भुवन त्रयेऽपि ॥ त्रैलोक्य मे तद् खिलं रिपु
नाशनेन, त्रातं स्वया समर मूर्द्धनि तेऽपिहत्वा । नीता दिवं रिपु-
गणा भय मप्य पास्त मरुता कमुन्मद सुगारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥
शूलिन पाहिनी देवि पाहि पङ्केन चाम्बिके । घण्टा स्वनेन स्नः
पाहि ना पञ्चानिः स्वनेन च प्राच्यां रक्ष प्रती च्यां च चण्डिके
रक्ष दक्षिणे, भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तरस्यां तथे श्वरि ॥ २५ ॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्यविचरन्ति ते, यानि चां त्वय्यं घोषणे
तै रक्षा स्मा तथा भुवम् । खड्ग शूल गदा दीनि यानि चाञ्जाणि तेम्बिके,
कर पल्लव संगीनि तैरस्मा नक्ष सर्वत ॥ २७ ॥ भूमौप्रादेशंकृत्वाप्रणमेत् ॥
इति मन्त्रेणार्घ्यं स्थं पूगीफलंश्वेष्टा । सम्मुखे निवेद्यः । ॐ अनेन सफलाभ्यं
दास्तु सदा ममः ॥ इत्य शंखं विशपाद्योदकं देवतांस्नापयेत् ॥ ॐ भूमौ वः
स्वः भ्रामहात्रिपुर सुंदर्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि नमः ॥ ततःमूलमंत्रेण ग-
न्धाक्षत पुष्पधूप दीपत्रि.पूजयेत् । पुनः संतर्पयेत्-मूल मन्त्रेण पुष्पान्तान्-
शुक्ल पद्मेत्-यथा आं ऐं क्लीं सौः ॐ नमः कमिश्वरि इच्छा काम फलप्रदे
सर्वधत्ववरां करि सर्व जगदहोमणकरिहुं हुं हुं द्रा द्रीं क्लीं ब्लूं सौ क्लीं ऐं
४६ कामेश्वरिनित्यां श्रीपादुका पूजयामिति दक्ष हस्तेन । माला मन्त्रं संतर्प-
येत् । (वामै पां भूमि निक्षिपेत्) इतित्रिः ॥ अंआं०अः पर्यन्तं ॐ भू.सुं वः
स्वः श्री महात्रिः । पुष्पा ज्वलिं समर्पयामि नमः ॥ इति पुष्पाब्जलिम् ।
०.०० पद्मेतुपूवं वन् माला मन्त्रं पूजयामि नमः कामेश्वरिं तर्पं ० पुष्पं स०
प्रार्थनाम्-ॐ विद्यु हाम समप्रभां मृग पतिं स्तब्धरिवतां भीषणाम्

कन्धाभिः कृत्वा ल रोटे विलमद्वस्ताभिरा सेविताम् ॥ हस्तैश्चक गदाभि
 स्तेट विशिखां चारुं गुणं वर्जनीम् विभ्राणाम् । मनलात्मिकां शशि धरो दुर्गा
 त्रिनत्रां भजे ॥ सर्वं स्वरूपे ! सर्वेशी सर्वं राक्षि स्वरूपिणि । पूजां
 गृहाण-कौमारि ! जगन्मावर्तनीऽस्तुते ॥ श्रीं भृ भुं वः स्वः श्रीमहात्रिपुर
 मुन्दर्यै नमः प्रार्थनां स० ॥ तथा च । वैदिकं धार्मिकं सूक्तं प्राथमेव
 समर्पयामिः ॥ नमोऽवेभ्यै महादेव्यै० वा श्री शुक्लं प्रा] अथ आचरणार्चनादि
 परिचार पूजनम्-शुक्ल पद्मेयजेन्नित्या कामेश्वर्यादि पौढरा ॥ कृष्णपद्मे
 विचित्राद्याः कामेश्वर्यंबसानकाः ॥ इति वचनान् ।-प्रयोगो यथा-

भगमालिनी माह-आं ऐं भग भुगेभगिति भगो दरिभगमाले भगवदे
 भग गुह्ये भग योने भगनिपाविति सर्वं भगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने
 भग स्वरूपे सर्वं भगानि मेखानय वरदे रेते सुरेतेभगक्लिन्ने क्लिन्न द्वे
 क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्ये लुभक्ती भय सरं सत्वान् भगेररि ऐं
 ब्लूं ख ब्लूं में ब्लूं भों ब्लूं हैं क्लिन्ने सर्वाणि भगानि में वशमानय
 स्त्री हरंत्वे ही भगमालिनी नित्या प्रा पादुका पूजयामि नमः ॥
 नित्यक्लीत्रा मन्त्र माह-शियाचर एकां दशार्णः । इंहीं नित्य
 क्लिन्ने मद्रवे स्वाहा नित्यक्लिन्ना नित्या श्री पादुकां पू० ॥
 भेनडामंत्रमाह-इं ओं क्रों प्रों क्रों चों छों श्रीं ज्ञां स्वाहा भेकं
 डानित्या श्री पा० । वह्नि वासिनीमंत्रमाह-मावेति-ॐ ही वह्नि
 वासिन्यै नमः वह्नि वासिनि नित्या श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥
 महाविद्ये श्री मंत्र माह-ॐ हीं क्रों सः नित्य क्लिन्ने मद्रवे
 स्वाहा ॥ महाविद्येश्वरेनित्या श्री पा० ॥ शिव दूती मंत्र माह-
 ॐ हीं शिव दूत्यै नमः ॥ शिव दूतीनित्या श्री पा० ॥ त्रिपिता
 मंत्र माह-ॐ हीं हुं रे च छे छः श्रीं ईं वे हीं फट् त्रिपिता-
 नित्या श्री पा० । कुल मुन्दरी मंत्र माह-लुं ऐं स्त्रीं सो.
 कुल मुन्दरीनित्या श्री पा० ॥ नित्य मंत्रमाह-लुं ऐं स्त्रीं सो.
 हीं० सक्रीं हर्यैं सो. लीं ऐंहीं लीं ब्लूं सः नित्या श्री पा० ॥
 नील पत्राङ्गिनी मंत्रमाह-ओं हीं क्रों मूं हीं क्रों नित्य मद्रवेदुं
 को नील पत्राङ्गिनीनित्या श्री पा० ॥ विजया मंत्र माह-ऐह् सक्लं
 विजयाये नमः विजयान्तरा श्री पा० ॥ मंत्र मङ्गला मंत्र माह-ओं
 श्रीं मंत्रमङ्गला येनमः सर्वं मङ्गला श्री पा० ॥ उगला मालिन मंत्रमाह-
 ओं नमोऽभगवती न्यात्रा माजिनि देवि सर्वं मूल संहारकारिके जात वैश्वि
 र्गर्भान्द प्रगल्भि अल यन्प्रगल्भुं रं रं हुं फट् ब्रह्मा मालिनी
 नित्या श्री पा० ॥ विभिन्न मंत्र-माह अं वक्रों विभिन्ना नित्या श्री
 पा० ॥ एता र्थ एता इरा नित्या ॥ एता ॥ स्त्रिकोप्ये र्थ एता र्थ

विन्दौ मूलेन पोडशीं यजेत् ॥ अं मूल महा त्रिपुर सुन्दरी नित्या
 श्री पादुकां पूजयामि तर्प यामि नमः ॥ विन्दुत्रिकोण यो मध्ये त्रिभंगीभिः
 पंक्तिं त्रयेणगुरू न्यजेत् ॥ ते त्रिविधा इत्याह ॥ यथा-पर प्रकाशा नन्दनाथ,
 श्री पादुकां पूजयामिः ॥ पर शक्त्यं वा श्री पा० भोगदा नन्दनाथ श्री०
 पा० ॥ गगनदा नन्द नाथ श्री पा० ॥ भोग शक्त्यम्वा श्री पा० ॥
 त्रिन्दो प्रागादि दिक्षु पूर्वा म्नाय देवता की पा० ॥ दक्षिणा त्राय
 देवता श्री पा० ॥ पश्चिमा त्राय देवतां श्री पा० ॥ उत्तरां त्राय
 देवता श्री पा० ॥ ततः पंच पंचिकाः पूजयेत् ॥—तत्राय पंचके ।
 मूलेन श्री त्रिधा मध्ये पूज्या ॥ दिक्षु लक्ष्म्या द्याः लक्ष्मी मंत्र
 माह—श्री लक्ष्मी श्री पा० । इति पूर्वे । महा लक्ष्मी मंत्र माह—
 ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलेकमला लये प्रसीदर श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा लक्ष्-
 म्यै नमः महा लक्ष्मी श्री पा० ॥ दक्षिणे ॥ त्रिशक्ति मंत्र माह—
 श्रीं ह्रीं क्लीं त्रिशक्ति श्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ सर्व साम्राज्या मंत्रमाह—
 श्रीं सहकल ह्रीं श्रीं सर्व साम्राज्या श्री पा० ॥ उत्तरे ॥ द्वितीय
 पंचके—पर ज्योति-मंत्र माह—ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा परं ज्योतिः
 श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ पर निष्कल शाम्भवी मंत्र माह—ॐ परनिष्कल
 शाम्भवी श्री पा० दक्षिणे ॥ अजयामाह—हमः अजया श्री पा० ॥
 पश्चिमे ॥ आदिज्ञान्त वर्णास्तु म.तुकाः ॥ अं आ० हं मातृका
 श्रीं पा० उत्तरे ॥ तृतीय कल्प लता पंचके ॥—त्वरिता मंत्र माह—
 ॐ ह्रीं हुं ग्वेचछेत्तः स्वीं हुं छे ह्रीं फट् त्वरिता श्री पा० ॥
 पूर्वे ॥ परि जातेरचरी मंत्र—माह ॥ ॐ ह्रीं हंसकल ह्रीं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै
 नमः पारि जातेरचरी श्री पा० । दक्षिणे ॥ त्रिपुटा मंत्र माह—श्रीं ह्रीं क्लीं
 त्रिपुटा श्री पा० ॥ पश्चिमे । द्वां द्वां क्लीं व्लू सः पंच शायेशी श्री पा०
 उत्तरे ॥ कामधेनु पंच के ॥ अमृत पीठेशी मंत्र माह—एँ क्लीं सौंः अमृत
 पीठेशी श्री पा० ॥ पूर्वे ॥ सुधा श्री मंत्र माह—ह्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं
 सुधा श्री पा० । दक्षिणे ॥ अमृते श्वरी माह—सौः क्लीं है अमृते
 श्वरी श्री पा० ॥ पश्चिमे । अन्नपूर्ण श्वरी मंत्रमाह—ॐ ह्रीं श्रीं
 क्लीं नमो भगवतिमाहेश्वरि अन्न पूर्ण स्वाहा अन्न पूर्ण श्री पा० ॥
 उत्तरे ॥ रत्न पंचके—सिद्ध लक्ष्मी मंत्र माह—एँ क्लिम्ने क्लीं मद्-
 त्रये कुले हसोः सिद्ध लक्ष्मी श्री पा० । पूर्वे । दक्षिणे मातंगी—एँ क्लीं
 सौः एँ ह्रीं श्रीं भवे नमो भगवती मातंगीश्वरि सर्व जन मनोहरि सर्वराज
 पशं करि, सर्व दुष्ट मृग वशंकरि सर्व लोक व शंकरि ह्रीं श्रीं क्लिं ए
 मातंगीं श्री पादुकरं प्र० ॥ दक्षिणे ॥ मुचनेश्वरी माह ह्रीं—मुचनेश्वरी श्री
 पा० ॥ पश्चिमे ॥ चाराही मंत्र माह—ॐ एँ ग्लौं एँ नमो भगवति चारालि

वाराहिवाराहमुखि ऐं ग्लो ऐं अंधेअंधिनिनमः । रुंधेरुंधिनिनमः । जभेर्जभिनि
 नमः मोहे मोहिनि नमः स्तभे स्तंभिनि नमः ऐं ग्लो ऐं सर्वं दुष्ट प्रदुष्टानां
 सर्वेषां सर्वं वाक् चित्त चक्षुर्मुख गति जिह्वा स्तम्भं कुरु २ शीघ्रं वरा
 कुरु २ ऐं ग्लो ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा वाराही श्री पा० उत्तरे ॥
 एवंपंचपंचिकाः सम्पूज्य दर्शनानि यजेत् ॥ शिव दर्शन श्री पा० ॥
 शक्ति दर्शन श्री पा० ॥ ब्राह्म दर्शन श्री पा० ॥ सौर सोगतम् ॥ अं
 मूलेनत्रिस्तवयेत् ॥ अङ्गुष्ठ तर्जनी योगे ज्ञान मुद्रां प्रदर्शयेत् । भूवेम्ब
 माख्य विन्दु पर्यन्तं ॥ प्रतिलोमे नवा वरण पूजा आवरण देवता नामादी
 माया श्री चीजे अनेतु श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ अग्नीशा शुरवायव्यं
 पुरोदिक्ष्वग पूजनम् ॥ आग्नेये इत् ॥ ईशः शिरः । नैतिल्ये शिखावायव्ये
 कवचं । पुरो नेत्रे । दिक्ष्वखं ॥ प्रयोगो यथा—श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः
 इन्द्रयं वाग्देवता श्री पा० । आग्नेये ॥ ॐ ह्रीं श्रीं शिरः वाग्देवता श्री
 पा० ॥ ईशः ॥ कयेइल ह्रीं शिखा वाग्देवता श्री पा० । नैतिल्ये ॥ इस
 कङ्कल ह्रीं कवचं वाग्देवता श्री पा० ॥ सकलह्रीं नेत्रम्वाग्देवता श्री पा० ॥
 पुरी ॥ मीः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं दिक्ष्वखं श्रीं पादुकां पूजयामि वाग्देवायै
 नमः ॥ अन्नम् ॥ त्रिरेखं भूं गृह मस्ति । वस्याधर रेखायां अष्ट
 दिक्षु ऊर्ध्वं भधरचाणिमाद्या दश सिद्धीयजेत् ॥ ह्रीं श्रीं अणिमायैशिद्धि
 अणिमां श्री पादुकां पू० ॥ ह्रीं श्रीं महिमायै शक्तिर्महिमां श्री पादुकां पू० ॥
 ह्रीं श्रीं लघि मायै शिद्धिलघिमा श्री पा० ह्रीं श्रीं गिरिमायै सिद्धिगिरिमां
 श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं प्राण्यैसिद्धि प्राण्यै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं प्राकाम्यै शिद्धि
 प्राकाम्यां श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं इपितायै शिद्धि ईपितां श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
 वसितायै शिद्धि वसितां श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ ध्यानम्—तप्त
 हेम समानाभाः पारांक्राधरा शुभाः । सावकेभ्यः प्रवच्छन्ति रत्नोप
 वां विचित्रयेन् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभिर्नैवद्यान्तं सम्पूजयेत् ॥

भू गृह द्वितीय रेखायां परिचमादि ब्राह्मणा अष्ट मान्यजेत् ॥
 ह्रीं श्रीं मातृका मानुका श्री पादुकां पूजयामि नमः । ह्रीं श्रीं माहेश्वरी
 मानु का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कौमारी मानुका श्रीपा० । ह्रीं श्रीं
 वेष्णायी मानु का श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वाराही मानु का श्री पा० । ह्रीं
 श्रीं इन्द्राणीमानुका श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं चामुण्डा मानुका श्री पा० ॥
 ह्रीं श्रीं महा लक्ष्मी मानु का श्री पा० ॥ ध्यानम्—त्रिधां शूलं
 शक्ति चक्रं गदां चक्रं हिं दडकम् ॥ पद्मं क्रमेण दृवतीः सर्वां भिष्ट
 प्रहारिकाः । पापगन्धा घत गुण्य दिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूजयेत् ॥
 वस्यन्पुण्य वृक्षीय रेखायां दिक्षु ऊर्ध्वमगद्व दश संज्ञाभाषाया दश

मुद्रा यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं क्षोभण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं द्रावण
मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कर्णण मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वश्य-
मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं उन्माद मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं महा क्रियाः
मुद्राः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं खेचरीमुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वीज
मुद्रा श्रीपादुकां पू० ह्रीं श्रीं योनि मुद्रा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
बिल्वडामुद्रा श्री पादु० ॥ एवं ॥ क्षोभ मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ प्रार्थना—
ॐ अग्निष्ट सिद्धि म्मे देहि शरणां गत वत्सला । भक्त्या समर्पये
तुभ्यं मिदना, वरणा चंनम् । इदमा वरणा चंनम् ॥ उतः पाषा-
दिसि नैवेद्यान्नं सम्पूज्यः श्रं० मूलेन पुण्या खलिदद्यात् ॥ ततः
पोडशारे विलो मेव परिचमादि पोडशा क्रामा कर्पणा चाः राक्षीः
पूजयेत् ॥ तर्पयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं क्रामा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं बुद्ध्या कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अर्धं कारा कर्पणी-
शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शब्दाकर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्पर्शा
कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्पर्शा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
रूपा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं गन्वा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं चित्ता कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं धैर्या कर्पणी शक्ति श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं नामा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं वीजा कर्पणी
शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अमृता कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्तूत्या
कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शरीरा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
भात्मा कर्पणी शक्ति श्री पा० ॥ प्रार्थना—अग्निष्ट सिद्धिमे देहि शरणां-
गत वत्सलः । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितिया वरणाचंने । इति संप्राप्यं ॥
एताः योडशा गुप्त योगिन्यः पूजितास्तर्पिताः संस्वित्युक्त्वा ॥ द्रावणो मुद्रां
दर्शयेत् ॥ अष्टवर्गा त्वितेः प्रोर पूर्वाद्यनु लोमेना नंग कुरामा चाः पूज-
येत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं अनंग् कुगुमा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग् नेत्रला श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग् मरुता श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग् मदना
तुरा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग् रेखा श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग् वेगा
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग् डकुंशाः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अनंग्
माभिनि श्री पा० ॥ एवं तृतीया वरणीः सम्पूज्य सत्र सं क्षोभणे
पठे एता अष्टौ गुप्त तर योगिन्यः पूजिताः सन्तु ॥ प्रार्थना—

क्षोभणी मुद्रा—बामे मुष्टि दृढं बध्वा उर्ध्वं परिशारयेत् । भ्रानदेदधाम
कर्णां तं मुद्रा लोभात्थ दबदनीतिद्वयोमणी मुद्रां इति ॥

द्राविणी मुद्रा—अगुष्ट गर्भित मुष्टि बध्वा इज पश्चिना । विपुत्रिहा
परारभ्येवं मुद्रात्का शत्रु नाशिनीति मुद्रा वाम पाद तले पठेत् ॥

अभिष्ट शिद्धिं मे देहि शरणागन् वत्सजः । भक्त्या समर्पये तुभ्यं
तृतिया वरणाचने ॥ इति सं प्रात्स्य ॥ पाद्यगन्धाक्षत पुष्पादिभिः
नेत्रेद्यान्त सम्पूज्य इत्युक्त्वा कर्पण मुद्रां दर्शयेत् ॥ पुनः तपयेत् ॥—

वतरचतुर्था वरणे चतुर दशारे कादि चतुर्दशार्ण युते । इत्
गोपेद्याद्युक्त रूपा दर्पण पाशरर वाम कराः । पान पात्रां कुराव
दचकराः सर्वं सं चोभष्यां या रचतुर्दश शक्तम् ॥ शक्ति पदादिका-
पश्चिमादि विलोमतः पूज्याः ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सं चोभरणी शक्ति
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं द्राविणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं कर्पणी शक्तिः
श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं ह्लाद करी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सं मोहिना-
शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं स्तवन कारिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं
श्रीं जम्भनि का शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं वशं करी शक्ति श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं रञ्जनि का शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं शर्वो न्मादिनि वा
शक्तिः श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वायं साधिनी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं
श्रीं सर्वं मन्वति रूपिणी शक्ति श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं मन्त्रनी
शक्ति श्री पा० ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वं चय करी शक्ति श्री पा० ॥ पर चतुर्था
रणे माराय सर्वं सौभाग्य दे चक्रे इमा चतुर्दशमम्प्राय योगिन्य-
पूजिता सत्त्वि त्युक्त्वा पश्य मुद्रा दर्शयेत् ॥ प्रार्थना—अभिष्टशि-
द्धिं मे देहि । मरणा गत वत्सजे भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्था वरणा
चने ॥ इत्मा वरणा चनम् ॥ पाद्यगन्धाक्षत पुष्पादिभिः सम्पूज्य ।
मूले पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा । वश्यमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ पूजितास्तपिवा
इमा ॥ यादि दश वरणं युते दशारे पश्चिमादि व्युत्क्रमेण
सर्वं सिद्धिप्रदाया या देवी प्रदाया वरा पूजयेत् ॥ यथा—
ह्रीं श्रीं सर सिद्धि प्रदा यादेवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं सम्प-
त्पदा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं मित्र
करी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं मंगल कारिणी देवी श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं सर्वं काम प्रदा देवी श्रीपा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं दुःख विमो ।

कर्मण मुद्रा—परि वर्यं करो स्रष्टा वंगुप्टी कारये ममो ॥ अनामा न्त-
गेते इत्वा तर्जनी कुटिला इती ॥ कनिष्ठके नियुं बीत नित्र स्थाने महे-
ररि ॥ त्रिलंबदेवं समाह्वयता विपुरा हान कर्मणिः इति कर्पणी ॥

वरपमुद्रा—पुटा हारो करो इत्वा तर्जनी वङ्कुरा इती ॥ परि वर्यं
करो येन मन्त्रेण तदभोगते ॥ कर्मण देवि ते नेत्रकनिष्ठा नामिका दयः ॥
क्यावर त्रिदिशा वशां अगुष्ठा वम देवतः मुद्रेण परमे शान्ती सर्वं वर्यं कती
मवति ॥ इति वर्य मुद्रा लक्षणम् ।

निनी देवी धीपादुका० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं मृत्यु प्रशमनी देवी श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं विघ्न निवारिणी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं
सर्वाङ्ग सुन्दरी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वं शौभाग्य दायिनी देवी
श्री पा० ॥ एवं पंचमा वरण सम्पूज्य सर्वार्थ साध के चक्रे इमा
दश कुलयोगिन्यः पूजिताः सन्त्वि त्युक्त्वा ॥ प्रार्थना—अभिष्ट सिद्धि
म्मे देहि शरणां गत वत्सलेः भक्त्या समर्पित्तुभ्यं पंचमा वरणा
चंनम् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूज्य ॥ उन्माद
मुद्रां दर्शयेत् ॥ ततो परे दशारे माद्यर्णयुक्ते ज्ञान मुद्रा धर दक्ष
कराः टंक पाश वाम करा उद्यद्विनिभाः सर्वज्ञा या देव्याद्या दश-
पूजयेत् ॥ यथा—ह्रीं श्रीं सर्वज्ञा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व
शक्ती देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व ऐश्वर्य्य फल प्रदा देवी श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व ज्ञान मयी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व व्याधि
विनाशिनी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वा धार स्वरूपा देवी श्री
पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व पापहरा देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्वा नन्द
मयी देवी श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं सर्व रक्षा स्वरूपिणी देवी श्री पा० ॥
ह्रीं श्रीं सर्व सितार्थ फलदादेवी श्री पा० ॥ इति परिचमादि विलो-
मगाः ॥ एवं षष्ठ मा वरण मन्मर्च्य सर्व रक्षा करे चक्रे इमा
दश निर्गम योगिन्यः पूजिता सन्त्वि त्युक्त्वां कुश मुद्रां दर्शयेत् ॥
प्रार्थना—अभिष्टसिद्धिम्मेदेहि—शरणां ज्ञत वत्सलेः भक्त्या समर्पये
त्तुभ्यं षष्ठमा वरणा चंनम् इति सं प्रार्थ्यः पाद्यगन्धाक्षत पुष्प धूपदीप
नैवेद्यान्त सम्पूज्यां कुश मुद्रयाम्प्रदर्शयेत् ॥

ततोष्टारे रक्तं यत्र वाणधर दक्ष करा धनु विद्या वाम करा
न्यासोक्ता अष्ट वसिन्या या उक्त बीज पूर्विका यजेत् ॥ ह्रीं श्रीं
अं आं० अः ० क्लूं वशिनी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं—अं
आं० अः क्लूं ह्रीं कौमारी वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं—
आं० अः ० क्लूं मादिनी वाग्देवता श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अं आं०

उन्माद मुद्रा—संमुखीनु करौ कृत्वा मध्यमा मध्यमे तुजे ॥ अनामिके
तु सरले तदध स्वर्जनी द्वयम् ॥ दंडा कारी ततो गुप्टी मध्यमा नख
देशगौ ॥ मुद्रेशा न्मादनी नाम वज्रेदिनी सर्वं योपिता ॥

अंकुश मुद्रा—धृज्जीं मध्यमिकाकृत्वां तर्जनी मध्य पर्वणि । संयोज्या
कुन्तये तिकचिन्मुद्रैपांकुशासंज्ञिकम् ॥

शेचरी मुद्रा—मध्यदक्षिण हस्तेतु सव्य हस्तेतु दक्षिणम् । बाहू कृत्वा-

अ ष्टू विमला वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ
 श्रीं अरुणा वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ हस्तू
 जयनीवावाग्देवतायै श्रीपादुका० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ० अ इज्जु शर्वेशी
 वाग्देवतायै श्री पा० ॥ ह्रीं श्रीं अ आ अ द्द्रीकौलिनीवसन्वतायैश्री पा०
 एव सप्तमा वरण भिष्टवा सर्व हरे चक्रे इमा अष्टारैहस्य योगिन्य
 पूजिता सत्वि त्युक्त्वा ॥ प्राथना अभिष्ट सिद्धिमे देहि शरणा गत
 वत्सल भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य सप्तमा वरणार्चनम् ॥ इति प्रार्थयेत् ॥
 पाद्य गन्धाक्षत पुष्पादिभि नैवेद्यान्त सन्पूज्य । खेचरी मुद्रा दर्शयन् ॥

स्तोत्रादिकादि वरणरचितेत्रिकोणेपश्चिमाद्यनु लोमेन चतुर्दक्षस्व स्व
 बीजपूर्वकान् जभ मोह वसस्तभ विशेषण विशिष्टान् कामेश्वर कामेश्वर्यां
 र्वाण धनु पाशाकुशान्पूजयेत् ॥

यथा—ला वा सा द्रा द्वी क्लीं व्लू स कामेश्वर कामेश्वरी जभण
 वाणश्री पा० ॥ पश्चिमे ॥ यथ कामेश्वर कामेश्वरी मोहन धनु श्री
 पा० ॥ उत्तरे ॥ आ ह्रीं कामेश्वर कामेश्वरीवशीकरणपाश श्रीपा० ॥पूर्वे ।
 क्रीं कामेश्वर कामेश्वरी स्मभ्वनाकुश श्री पा० ॥ दक्षिणे अग्नि दक्षिण
 वामकोणेपुकूटत्रय, क०ह०स०)पूर्वे रुद्रविष्णु ब्रह्मणाशक्त्याश्वतिस्र कामे
 श्वरीवज्रे श्वरी भगमालिनीसज्ञा पूज्या ॥ प्रयागोयथाक एई०हं कामरूप
 पीठे क मेश्वरी रुद्रशक्ति श्री पा० ॥ ह सकल ह्रीं पूर्वागिरीं पीठे वज्रे
 श्वरी विष्णु शक्ति श्री पा० ॥ सकल ह्रीं जाल-धरो पीठे भग मालिनी
 ब्रह्म शक्ति श्री पा० ॥ एव सप्तमा वरण भिष्टवा सर्व सिद्धि प्रदे चक्रे
 इमा अर्थात् रहस्य योगिन्य पूजित सान्त्वित्युक्त्वा मन्त्रेण पुष्पाब्जलि
 दत्वा बीज मुद्रा प्रदर्शयेत् ॥ यथा प्रायना -अभिष्ट सिद्धिमेदेहि शरणा-
 ङ्गत् वत्सने भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य अष्टमा वरणार्चनम् ॥ इदमा वरणा
 र्चनम् ॥ पाद्य गन्धाक्षत पुष्प धूपधीप नैवेद्यादिभि सन्पूजयेत् । मूले
 पुष्पाब्जलिदत्वा मुद्रा प्रदर्शयेत् ।

तता -अ आ० इत्यादिमूल विद्या पठित्वा ध्यात्वा विन्दौ श्री मन्त्रि-

महा -वि हस्तौ च परि वर्यच ॥ कनिष्ठ नामिदा देवि पुत्राजे न क्रमेश
 तर्जनीम्याश्रमाजान्तेरुर्ध्वंमविमध्यमे । अंगुष्ठी तुमहादे विशरला कारयत्सम ।

बीज मुद्रा -अगुष्ट गभिणी सेव सन्निराध समीरितेति अगुष्ट गर्भे नृष्टिदर्य
 ह यथ ॥ गेनि मुद्रा नमंथ कनिष्ठि के यथा तर्जनीम्या अनामि के ॥ अना
 मिनीर्ध्वं स्रिल्लष्ट दार्थ नभ्य मया रथ । अगुष्टादय न्यस्य योनि मुदेयने
 विवेति ॥ ३० वशीकरण-पाठ ॥

पर सुन्दरी पादुकां पूजयामि इतियजेत् ॥ एवं नवमावर्ण भाराध्य सर्व
काम प्रदे चक्रं सर्वाभीष्ट दायिनी परा पर इहस्य योगिनी श्री मञ्जिपुर
सुन्दरी पूजितास्त्रियुक्त्वा योनि मुद्रां प्रदर्श्य त्रिस्तंभयित्वा धूपदीपा
दीनि दत्त्वा अग्नोवावाह्य हुत्वोदासयेत् ॥ अग्नि स्थापनम् । (प्र० ३०)

भार्थना-अभिष्ट सिद्धि म्मे देहि शरणां गत वत्सलेः भक्त्या
समर्पये तुभ्यं नवमा वरणार्चनम् ॥ इति सं प्रार्थ्यः ॥ पाद्यगन्धाक्षत
धूप दीप नैवेद्य पुष्पै नानाविधैर्दिशेत् । वह्निस्मृष्य पूजां क्त श्रीमद्
त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥ योनि मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ अथ शत चण्डी

श्री सत् चण्डिविधानम् ।

विधानं प्रयोगो यथा—शास्त्रोक्त विधिना शङ्करालये भवान्धा लयेवा ॥
मंडपं वेदि मध्ये निर्माय ॥ प्रतीच्यां कुण्ड मध्येवा कृत्वा-सकल्पं
विधाय ॥ कृत नित्य क्रियो मुक्त कामः शत चण्डी विधान महं
करिष्य इति ॥ मातृ स्थापन नांदि आद्यं विधाय स्वस्ति वाचनं
कृत्वा ॥ उक्त लेक्षणान् दश विप्रान् मधु पर्कं बल हेम दाना-
दिना वृणुयात् ॥ तेच यजमान दत्ता सनेपु दत्तमालाभिः समाहि-
ताः सुमन्न सोमगवतीं स्मरं तः सप्त सतीमूल मन्त्रेण वेद्यां कुंभ-
सस्थापयित्वा तत्र दुर्गा मा वाह्य पोडरो पचारैः स्मृष्य तदप्रे
प्रत्येकं दश कृत्वः सप्तसती म युतं च नवार्णं जपेयुः ॥ हविष्य
भोजन ब्रह्म चर्चनू शयना स्पृश्यास्पर्शादि नियमां रच चरेयुः ॥ यजमान
अ द्वि वर्षां या उक्तज्ञाना अधि कांगी त्यादि दुर्लक्षण रहिताः
कुमारी त्रिमूर्तिकल्याणादिनाम्नी दश कन्या भोजन बल हेम दाना
दिनामंत्रा चार मयो मित्यादि मंत्रेणा वाह्यजगत्पूज्ये त्यादि स्व० स्व०
मंत्रैः पूजयेत् ॥

नवार्णं चण्डिका मंत्रं जपेयु आ युतं पृथक् ॥ यजमानः पूजयेच्च
कन्यानां दशकं शुभम् ॥ द्वि वर्षां या दशा व्दावाः कुमारीः परि
पूजयेत् ॥ नाचिकां गौन हीनांगीं कुण्डिनीं च व्रणां क्विताम् ॥
अथां काणां केकरां च कुरुपां रोम युक्तं नुम् ॥ दासीं जावां
रोगयुक्तां दुष्टां कन्यां न पूजयेत् विप्रांसर्वेषु सं सिद्धै यशते चत्रियो
इवाम् ॥ वैश्यानांधन लाभायपुत्राप्तौ शुद्धजांयजेत् ॥ द्विवर्षां सा
कमा र्युक्ता त्रिमूर्तिं हांयत त्रिका ॥ चतुर्वेदा तु कल्याणी पंचवर्षां
तुरोहिणी । पडव्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्त हायनी ॥ इष्ट
वर्षां शांभवी स्या र्हां च नव शायनी ॥ सुभद्रा दश वर्षोका

स्ता मंत्रैः परि पूजयेत् ॥ एकाब्दा याः प्रोत्य भावो रुद्राब्दास्तुवि-
 वजिताः ॥ तासा मा वाहने मंत्राः प्रोच्यन्ते शङ्करो दिताः । मंत्रा-
 क्षमयो लक्ष्मीं मातृणांरूपवारिणीम् ॥ नव दुर्गात्मिकां साक्षा लक्ष्म्या
 मा वाहयाम्यहम् ॥ कुमारी कादि कन्यानां पूजा मंत्रा न्नुवेऽधुना ॥
 जगत्पूज्ये जगद्गद्ये सर्वे देव स्वरूपिणि ॥ पूजागृहाण कौमारी जग-
 न्मातर नमो स्तुते ॥ त्रिपुरात्रिपुरा धारां त्रिवर्ग ज्ञान रूपिणीम् ।
 त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजया म्यहम् ॥ कलात्मिकां कला ती-
 तां कारुण्य हृदयां शिवाम् ॥ कल्याण जननीं देवीं कल्याणीं
 पूजयाम्यहम् ॥ अग्निमादि गुणाचारा मकारा चक्षरात्मिकाम् ॥ अन-
 तां शक्ति कां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ कामचारां शुभां
 कान्तां काल चक्र स्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणो दारां कालिकां
 पूजयाम्यहम् ॥ चण्डवीरां चण्ड मायां चण्ड मुंड प्रभजनीम् पूजयामि
 महा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमाम् ॥ सदा नन्द करी शांता सर्व
 देव नमस्कृताम् ॥ सर्व भूतात्मिकां देवीं शाभवीं पूजया म्यहम् ।
 दुर्गे दुस्तरे काम्ये भवाणं व विनाशिनि ॥ पूजयामि सदा भक्त्या
 दुर्गा दुर्गातिं नाशिनीम् ॥ सुंदरीं स्वर्ण वर्णां भां सुख सौभाग्य
 दायिनीम् ॥ सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥ एते
 मंत्रैः पुराणीकैः स्तातां कन्यां प्रपू जयेत् ॥ गंधै पुष्पैर्भक्ष भोज्यै

त्रिमूर्तिपूजनम् ॥

वंत्रैरा भरणै रपि ॥ वेद्यां विरचिते रम्ये सर्वं तो भद्र मण्डले ॥
 घटं संस्थाप्य विधि वक्षत्रा वाह्य श्ये च्छिवाम् ॥ तदग्रं कन्यका
 रचापि पूजये द्राक्षणा नपि ॥ उपचारे स्तु विविधैः पुर्वोक्त वरणा
 न्यपि ॥ एवं तु द्राक्षणाः पूज्याः अन्यथा होम मा चरेत् ॥ पाय
 माग्रे स्त्रि मध्वकै द्राक्षरभा फले रपि ॥ मानु लिंगे रिखु खंडे
 नारि केलैः पुरै स्थिलैः ॥ जारो फले राग्र फले रम्ये मंधुर वस्तुभिः
 सप्त शत्या दशा वृत्या प्रति रलोकं द्रुवं चरेत् ॥ अयुतं च
 उन्नतं स्वर्णित्कान्तो दिव्यतः ॥ कूर्पात्त क्यम् ॥ ततः आवरण
 देयता नाम मंत्रे स्तारादि स्वाहां वे रेकैका माहृतिं द्रुवा ॥ सर्वेष्ट
 मिद्विः कामपञ्चविद्याः हवनीय द्रव्य प्रयोगे द्रष्टव्यः च—
 उन्नतौपम् ॥

उन्नतौपं—एकल ही कल ही एक सद्म ही मकल एल ही भी स्त्री

कृष्णाय गोविन्दाय गोपी जन वल्लभाय भ्राह्म ॥ मिति पुर्णा हुति
 कृत्या देवीं कुंभ स्थासम्पुत्र्य । आवाङ्ग जुहुया द्रव्यं पंचविंशति सं-
 यया ॥ ईशानाग्नेय नैऋत्य वायु-कोणेषु चक्र मात् ॥ श्री चक्रस्य
 वलिं दद्यात् हुत शेषेण संयुतः (ईशानादि कोणेषु वटुक योगिनी
 क्षेत्रे पाल गणेशेभ्यो नमः) । वटुक वलि मंत्रमाह—ऐशेहि देवी
 पुत्र वटुक नाथ कपिल जग्न भार भासुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सव
 विघ्ना त्राशाय २ सर्वो पचार सहितं वलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥

श्री वटुकादि पूजनम् ॥

योगिनी वलि मंत्र माह—ॐ वटुका तौ वा दिविगगत त-
 लेभूतले निष्कले वा पातले वा नलेवा सलिल पवन यो र्यत्र
 कुत्रस्थितावा ॥ क्षेत्रे पीठे वा पीठा विबुध कृत पदा धूप दीपादि
 केन प्रीता देव्येः सदानः शुभ वलि विधिना पातु वीरेन्द्र वंशाः ॥
 यां योगिनीभ्यः स्वाहांवां भूमि नंदाक्षरो मनुः । योगिनी नां वलि
 दद्यात् अनेन विधि पूर्वकम् ॥ क्षेत्रे पाल वलि मंत्र माह—ह्रां ह्रीं
 ह्रूं ह्रौं ह्रौं ह्रः ह्रुंस्थाने क्षेत्रे पालेश सर्वं कामं पूरय स्वाहेति ॥
 गणेश वलि मंत्र माह—ॐ गांगी गूं गं गणपतयेः—
 वर वरद सर्वं जनं मे वशमानाय सर्वो पचार सहितं

वलिं गृह्ण २ स्वाहेति ॥ किञ्चिद्वकी कृता मध्या गणनाथ वलीस्मृता ॥
 अनामा मध्यमां गुप्ता योगिनां तु वली पुनः ॥ एवं सम्पूज्य संस्तुत्य ॥
 नत्वात्मन्युप सं हरेत् ॥ सिद्ध मंत्रः प्रकुर्वीत प्रयोगान् शिवभाषितान्
 इत्यादि श्री चक्रस्य वलिं दद्यात् हुत शेषेण संयुतः ॥ आबर्षादि परिवार
 पूजनं समर्पयामिः नमः ॥ नतीर्नमस्कारान् ॥ ॐ स्वग्भ्यः प्रत्येकं निष्कमकौ
 सुवर्णपित सुवर्णं सवत्सगा दानादिकं दद्यात् ॥ ततो विप्रः कलशो
 दंष्ट्रं यजमानं निगम पुराणोक्त मंत्रै रभिरिन्द्रेपुराशिषरच दशुः ततः
 शतं विभ्रान्ताना विधान्नीर्भोजयेत् । तेभ्योपि यया शक्ति दक्षिणां
 दद्यात् ॥ गृह्या दाशिपस्ततः ॥ शुभम् ॥

चंडीविधेः प्रकार माह—

सप्तचंडी विधानं वशगुणं सहस्र चंडीतत्र शर्व, विप्रप्रवरणम् ॥ तं शत-

विप्राःप्रत्येकदशदश,सप्तशती पाठान्कुयुं । अयुतमयुतंनवार्या जपंचतुर्युः ॥
 शत कन्या श्चभोज्याः पूज्याः ॥ एवंदश दिनेषु संपाद्य एकादशेहि सप्त-
 शती शता वृत्या प्रति श्लोकं तल्लक्षणं सख्यं नबायोनं च होमः ॥
 ऋत्विग्भ्योपि दश २ निष्क मितं सुर्यं प्रत्येकं दद्यात् ॥ शेषं पूर्वोक्तवत् ।
 इति सहस्र चंडी विधिः ॥ एतत्फलं—एवं सहस्र संख्याकं मिति ।
 एतद्युतचंडी विधानं लक्ष चण्डी विधानयो रूप लक्षणं सहस्र चंडीदश
 गुणोऽयुतचंडी विधिः सदशगुणो लक्षचंडी विधिः । जपे होमे दक्षिणा यां
 कन्यासु विप्रभोजने च दशगुणत्वम् ॥ इति चंडीपाठ विधिः । वर्णनम् ॥

श्री देव्या आर्तिः ॥

आरती वक्तिका ॥

टका—जे अम्बे गौरी मय्या जय अम्बे गौरी ।
 तुमको निशदिन घ्यावे हरी ब्रह्मा शिवजी ॥
 माग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को ।
 उज्वल से दोऊ नयना चन्द्र वदन नीको ॥ टेक
 कमक समान फलैवर रक्षांवर राजे ।
 रक्त पुष्प गल माला करठन पर साजे ॥ टेक
 केहरि वाहन राजे रङ्ग रणपर धारी ।
 सुर नर मुनि जन शेवत तिनके दुःख हारी ॥ टेक
 कानन कुण्डल शोभन नासापे मोती ।
 फोठिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ॥ टेक
 रामु निशुंभ विढारे महिपा सुर घाती ।
 धूम्र विलो घन नयनां निशिदिन मदमाति ॥ टेक
 पौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरवे ।
 वाजत ताल मूर्दगा श्रीर वाजत डमरू ॥ टेक
 भुजा पार अति शोभत रङ्ग रणपर धारी, मन वाञ्छित फल पाये
 सेवत नर नारी ॥ टेक ॥ करुण वान विराजत अम रूपर वाती ।
 भीमाज केमुने राजत कोटि ग्ल ज्योति ॥ टेक ॥ यह अम्बे की आती जो
 कोई नर गाये । भक्त शिवानन्द स्थाभी सु स्वमपति पाये ।
 टेक—जे अम्बे गौरी मय्या जय अम्बे गौरी ॥ से० विरवनाथ रामां

श्री अग्नि स्थापनम्

अग्नि स्थापन विधिमाह—आसनम्—वागीशी वागीश्वर्यो यौग
पीठत्मने नमः ॥ मायादिक्रुः पीठ मन्त्रस्तयोस्ते नाशनं दिशेत् ॥ यजेतौ
तारभायाभ्यां गंधाद्यै रुपचारकैः ॥ १ लक्ष्मी नारायणौ त्वर्षे द्वै ष्यवे होम-
कर्माणि ॥ सूर्य कान्ता दरणितः श्रोत्रिया गारतो पिवा ॥ पात्रेण पिहिते
पात्रे वह्नि मानाय ये त्ततः ॥ अस्त्रेण दाय तत्पात्रं वर्मणो द्वाटये तुतम् ॥
अस्त्र मन्त्रेण नैश्रत्ये कव्यादां शतत स्त्यजेत् ॥ मूलने पुरतो घृत्वा संस्का-
राश्च ततश्चरेत् ॥ वीक्षणाद्यान्पुराप्रोक्ता नर्त्पं प्रोक्षण मा चरन् । पर-
मात्मा नलेनाथ जाठरेणापि वह्निना ॥ भ्रमरै न्यंबह्नि वीजा शैतन्यं
योजयेत्ततः ॥ तारेण चाभि मन्त्र्याग्नि सुधया धेनु मुद्रया ॥
अमृतीकृत्य संरक्षेदथ मन्त्रेण मंत्र वित् ॥ मुद्रयात्वव गुंठिन्या
कवचेना व गुंठयेत् ॥ कुण्डो परितवो वह्नि भ्रामयेत्त्रिध्रुव
(ॐ) पठन् ॥ नवार्यं मुद्गरति ॥ शय्यागता मृनुस्नातां नीलेदोवर
धारिणीम् ॥ देवेन भुज्य मानांतां स्मृत्वा तद्योनि मण्डले ॥ इशारे चोधिया
व ह्निस्थापये दात्म सं मुद्रम् ॥ मूलं नवार्यं चपठ ज्ञानु सृष्टधरातल-
तरेफार्थशेन्दु संयुक्तं गगनं वह्नि चैततः ॥ तन्याय हृदया तोय नवार्योग्नि
निधापनेः विश्राण्या च मनं देवी देवयोज्वालये द्रुसुम् ॥ चतुर्विंशतिवर्षेण
मन्त्रेण श्रपणां दिभिः । चित्पिगल हना द्रुद्वं दह युग्मं पचद्वयम् ॥
सर्वाज्ञा ज्ञापय स्वाहा मन्त्रो वेद भुजाक्षरः प्रदेश्यं ज्वालितो मुद्रामुत्थाय
विहिनां जलिः ॥ श्लोक रूपेण मन्त्रेण ह्युपतिष्ठे ह्युताशनम् ॥

क्रव्या दाशं मासाशि नो वन्देयस्तत्र भागस्त मन्त्रणत्यजेत् ॥ वन्द
वीजात्—रमिति वीजात् ॥ सुधया वं वीजेन धेनु मुद्राः अपि गुंठिन्या अपि
वक्ष्यते ॥ कवचेन द्रुं वीजेन ॥ त्रिधुवं प्रणवम् ॥ (ओ)

१ हौं वागीशी वागीश्वर यो यौग पीठात्मने नमः ।

२ ह्रीं ह्रीं लक्ष्मीनारायण म्या नमः ॥

ह्रूं वह्नि चैतन्याय नम इत्यग्नि स्थापने नवाक्षरो मंत्रः ॥

चतुर्विंशति वर्षा मुद्गरति—चित्पिगलहन २ दह २ पच २ सर्वशा शायप
स्वाहा । वेद ४ भुजा रक्षा श्चतुर्विंशति वर्षाः ॥

ज्वालितो मुद्रा लक्षणम्—मग्नि क्वच युती नेत्वा प्रसृता गुन्तिकी करी ॥
कनिष्ठा गुष्ठ युयुक्ते मिलित्वातः प्रवारित ॥ ज्वालितो नाम मुद्रेयं वैश्वानर
प्रिय करीति ॥

१ ह्रूं वह्नि चैतन्याय नम २ अग्निम् ३ आयदादिभिः ॥ ३ ॥

श्लाफ रूप अग्नि मंत्र माह—अग्निं प्रञ्चलितं वन्दे जात वेदं हुता
शनम् ॥ सुवर्णं वर्णं ममल समिद्धं विश्व रचतो मुखम् ॥ अथाग्नि
मंत्रं विन्यस्येत्तद्विधान मुदीयते ॥ वैश्वानरति जातेति वेदाते स्यादिहा
वद् ॥ लोहि ताक्ष पदात्सर्वं कर्माण्य तंतु साधय ॥ वह्नि प्रियांतो
मंत्रोय पडिश्शत्य क्षणन्वितः ॥ ऋषि शङ्खन्दो देवतास्य भृगुर्गायत्र
पात्रकाः । रं वीजं ठ द्वयं शक्ति हं वने विनि योजनम् ॥ लिंगे
पायी मूर्ध्निवक्त्रे नसि नेत्रे रिक्तांगुके ॥ वह्ने जिह्वाः स्वबीजा
दयान्यमेन्द्रेता नमो न्विताः ॥ हिरण्या गगना रक्ता कृष्णा सुप्र
भयान्विता । बहु रूपाति रक्तेति जिह्वा दमुन सोमताः दीपिका नल
वायु स्थाः साद्या नरण मिलोमतः । सेन्दवः सप्त जिह्वानां सप्तानां
धीजता गताः ॥

१ गीर्वाण पितृ गन्धर्व यज्ञ नाग पिशाचकाः । राक्षसा श्चेतिजि
ह्वानां देवतास्तत्स्यले न्यसेत् ॥ व्यासे चने व्युत्क्रमः स्या इहु
रूपाति रिक्तयोः । नेत्रेति रिक्तान्य स्वव्या सर्वांगे बहु रूपिका ॥
मदस्त्राचिपे हृदयं स्वस्ति पूर्णाय मस्तकम् । उत्तिष्ठ पुरुषा येति
शिखामंत्रोयमीरितः ॥ धूमन्ते व्यापिने वर्मं सप्त जिह्वाय नेत्रकम् ।
अस्त्रं धनुर्धरा येति पडंगानि समाचरेत् ॥ मूर्ध्नि वामे सकं पार्श्वे
कटौ लिंगे कटौ पुनः । दक्षे पार्श्वे सके न्यसे न्मूर्ती रष्टौ विभा-

अग्निमंत्र याह—वैश्वानर जात वेद इहा व लोहिताक्ष सर्व कर्माणि
साधय स्वाहेति । ठ द्वयं स्वाहा । देन्ता अतुर्ध्याताः जिह्वा बीजा न्युधरति ।
दीपिकेति । एतेषु स्थिताः सकाराद्याः विलोम धर्माः स व श बलरयेति
सेन्दवो नुस्वाराद्या इने सप्त हिरण्यादि जिह्वाना बीजानी त्वर्थः । तवश्च ॥
स्व हिरण्याये नमः । ध्य गगनाये नमः ॥ ध्य रक्ताये नमः ॥
ध्र कृष्णायै नमः । ल्य मुप्रभाये नमः । प्र बहुरूपाये नमः । ध्र
अग्नेः सप्त जिह्वी नामानि ॥ ध्र ध्र र्ध्र ध्र ल्र प्र ध्र अग्ने-
आनेरिक्तादेनम् जिह्वा बीजानि ।

गीर्वाण दयो जिह्वाधि देवा जिह्वा स्थानेषु पस्यान्यस्ता ॥ सुरेभ्यो
नमः लिंगे इत्यादि । जिह्वाय देवाता नामानि । प्रयोगोस्तु । ध्र
ध्र र्ध्र ध्र ल्र प्र र्ध्र हिरण्याय नमो लिंगे । ध्र र्ध्र
ध्र ल्र प्र र्ध्र गगनाये नमः पागे ॥ र्ध्र ध्र ल्र प्र र्ध्र
रक्ताये नमः मूर्ध्नि । ध्र ल्र प्र र्ध्र कृष्णायै नमः ॥ वक्त्रे ।
ल्र प्र र्ध्र मु प्रभारे नमः । नधि । प्र र्ध्र बहु रूपाये नमः
नेत्रे ध्र अतिधियाये नमः अत्रिलोमे ॥ मस्तके शिरो मंत्रः । मदस्त्राचिपे

वसोः ॥ ताराग्रये पदा द्यास्ता रचतुर्थी नमसान्विताः ॥ जातवेदाः
सप्त जिह्वो हव्य वाहन इत्यपि ॥ अरवो हरज संज्ञोन्य स्तथा
वैश्वानरा ह्यः । कौमार तेजाः स्या द्विश्व सुरा देव सुरा स्तथा ॥
ततो न्यसे त्रिजे देहे पीठं हाट करे तनः । वह्नि मण्डल पर्यन्त
मण्डू कादि यथो दितम् ॥

पीता श्वेता रूपा कृष्णा धूमा तीत्रा सु लिंगिनी । रुचिरा
ज्वालिनी चेति कुर्यान्नोः पीठ शक्तयः ॥ वीज बन्धुधा सनाचेते
द्वंद्वं वः पीठमन्त्रकः । एवं विन्यस्य पीठान्तं पावकं चित्तयेत्तनौ ॥
ध्यानम्-त्रिनेत्रमारक्तं तनुं सु शुभ्रं वस्त्रं सुवर्णं स्रज मणि मीढे ।
वराभय स्वस्तिक शक्ति हस्तं पद्मस्थं ना कल्प समूह युक्तम् ॥ एवं
भ्यास्वा र्चनं कुर्यान्मानसं विधि बद्धसोः ॥ परिधिं च तत्र स्तोत्रैः
कुण्ड स्थण्डिल मेववा ॥ दर्भैः परि स्तरे दग्निं प्राग्ने रद् गप्रकैः ।
प्रत्यग्दक्षिण सौम्यास न्यसे श्रीं न्परिधीं न्क्रमात् ॥ पालाशान्वि-
त्वजां स्तेषु मद्य विष्णु शिवान्यजेत् । बह्वी तत्पीठ मभ्यर्च्य
वाहये त्वद्ददौ नलम् ॥ गन्धादिभिः समभ्यर्च्य पूजये त्पावकं
प्रती । पठ् सु कोणेषु मध्ये च जिह्वा स्त देवता यजेत् ॥ ईशा-
नादिषु वाय्वंत कोणेषुपठ् समर्चयेत् ॥ दिरण्याद्य तिरन्तं वा
मध्येतु बहु रूपिणाम् ॥ केसरे प्वंग पूजा स्याहले ध्वष्ट स्वमूर्त्तयः ।
मात्तरोष्ठौ दलां तेषु भैरवाः- स्यु स्तदप्रतः ॥

धरा पुरेतु शक्राद्या वज्राद्या युधसंयुताः । एतमा वरणे युक्तं सप्त

पीठाद्या पीठ शक्तयः । वीज मिति रं बह्वचासनाय नमः । इति-
पीठ मंत्रः ॥ ध्यानं त्रिनेत्र मिति ॥ वर स्वस्ति कौ दक्ष्योः । अभीति
शक्तिं कामयोः ॥ आकला आभरणानि वस्त्रध पुतम् ॥

हरयम् । स्वस्तिकः मस्तकम् । उत्तिष्ठ पुरुषाय शिवा, पूम व्यागिने
कव सप्त विहारा नेत्रम् । पनुर्धराय अक्षयम् श्रो अभये जात वेदने नमो
मूर्त्तौ । श्रीं अ० सप्त० योन । श्रीं अ० हव्यवा० अंसके । अश्वीद-
राय पार्श्वे । वैश्वानराय कटो । कौमार ते० लिंगे । विश्व मू० कटो ।
देव मु० दक्ष पार्श्वे ॥ ततो न्यसे त्रिजे देहे ॥ पठ् हाटक रत्नसः ॥

तीर्थ मन्त्रेण ॥ मन्त्रेण यमुने नैव गादावरि सरस्वति नवदे
विष्णुकामेति अजोरिन न्शक्तिं कुर्वत्य नेन ॥ यथवाङ्मनुश मुद्रया ॥
शुभ्रं मध्य भिक्षा इत्या ० चैनी मण्यारंवि संयोग्यः कुंभे दिक्षिन्
मुद्रयां कुश सङ्घेति हृदयम् ॥

भिः पात्रकं यजेत् असि तांगो रुद्र र्चंडः क्रोध उन्मत्त संज्ञकः
 कपाली भीत्रण श्चापि संहार श्चाष्टभैरवाः ॥ वामे कुशा नथा
 स्तीर्य तत्र वस्तूनि निक्षिपेत् । प्रणीता प्रोक्षणीपात्रे आज्य स्थाली
 स्रुवं स्रुचम् ॥ अधो मुखानि चैतानि होम द्रव्यं घृतं कुशान् ॥
 समिधः पंच पालाशी रन्य इष्युप योगियत् ॥ कृत्वा पवित्रे
 मूलेन प्रोक्षेत्तानि शुभांभसा । उत्तानानि विधां याथ प्रणीतां
 पूर्ये जलैः ॥ तीर्थमत्रेण तीर्थां नि सृण्या तत्रा ह्वयेत्सुधीः ॥
 पवित्रे अक्षतां स्तत्रनिक्षिप्योत्पवनं चरेत् ॥ अथो दीच्यां निधायै
 तां प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिपेत् ॥ हवनोर्य द्रव्य जात मुक्षे तोयैः
 पवित्रगैः ॥ मूलेन मूल गायत्र्या यद्वा हृदयमंत्रतः । दक्षिणे पीठ
 मासाद्य तत्र ब्रह्माण्य माह्वयेत् ॥

अग्नि मायाः सिद्धयोष्टीत्रह्यणः पीठदेवताः । तारदत्पूर्वाकोष्ठे तो ब्रह्मो-
 मंत्रोस्य पूजने ॥ हस्ताभ्यां स्रुकस्रुवौ धृत्वात्तापयेन्त्रिरधो मुखौ ।
 वाम हस्तेन वौधृत्वा दर्भदंक्षेण मार्जयेत् । सं प्रोक्ष्यं प्रोक्षणी तीर्थैः
 प्रतप्य पूर्वा वस्पुनः । न्यस्याप्नौ मार्जनान्दर्भां स्तयोः शक्ति त्रयंन्यसेत् ॥
 इच्छा ज्ञान क्रिया संज्ञा चतुर्थी नम सान्विता ॥ दीर्घत्रयन्दु युग्ध्योम
 पूर्वाकं स्थान कत्रये ॥ हृदायुस्तु चिन्यसे च्छक्तिं स्रुवे शंभु तत स्तुतौ ।
 मूत्र त्रयेण सं वेष्टय संपूज्य कुसुमा दिभिः ॥ कुशोपरिन्यसे हृत्ते तयोः
 संस्कार इशतः । अस्त्रोक्षितायामाज्यस्य स्थाल्या माज्यं विनि क्षिपेत् ॥
 विक्षिणादिक संस्कार संस्कृतं मूल मंत्रतः । गोमुद्रया मृत् कृत्य पट-
 संस्कारां स्तत्रचरेत् ॥

कुण्डोद्धृते वायु कोयो स्थितेगारे विनिक्षिपेत् ॥ हृदेतितापनं प्रोक्तं
 दर्भ युग्मं प्रदीपितम् ॥ आज्ये क्षिप्त्वाह दा बहो पवित्री करणां क्षिपेत् ॥
 आशं नीरा जये दीप्त दर्भ युग्मेन वयंशा ॥ अभिष्टो तन मुक्तं तदीप्तं
 दर्भं त्रयं घृते ॥ दर्शये इस्त्रेणो हृषोते गृहीत्वा घृत पात्रिकाम् ।

अग्निमाया ऋषमे वक्ष्यते ॥ ब्रह्म मंत्र मुद्गरति ॥ तारेति । ओं नमो
 ब्रह्मणे इति ॥ स्रुक स्रुव संस्कार माह ॥ हस्तान्यामिति ॥ शक्ति त्रय माह ॥
 इच्छेतिः दीर्घत्रयन् श्राई ऊ भ्योमहः ॥ तत्पूर्वं काहा इच्छा शक्ते नमो मूले ॥
 ही शानशक्ते नमः मध्ये ॥ हूं क्रिया शक्ते नमः अंते । गोमुद्राः श्वेतु मुद्रा ॥

१—ओं नमो ब्रह्मणेः २ नमः शक्ते नमः शमवे ॥

नाडी त्रय मिति ॥ हृदा सिंगला मुपुभ्यां क्वा ॥ तृतीया मध्ये विरया ॥
 हृदा ॥ नम इति मंत्रेषु ॥ अग्नये स्वाहेति दक्षुनेत्रेः ॥ सोमाय स्वाहेति
 वामे ॥ तदा इति अद्रुष्टये नाने त्रेषु मुख प्राङ् सोमवदोत्तरार्धः ॥

संयोज्याम्नो तद्गारान्सलिलं संस्पृशेत्सुधीः ॥ अंगुष्ठा नामिकाम्यान्तु
दर्भावा दायिनि क्षिपेत् । त्रिरग्निं संमुखे त्याज्य मस्त्रेणोत्पवनं त्विदम् ॥
इदात्म संमुखं तद्ददाज्य चोपस्तु संजवः ॥ नीराजनादि संस्कारे प्वग्नौ
दर्भान्विनिक्षिपेत् ॥ दर्भ द्वयं ग्रथि युतं घृतमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ वाम दक्षिण
योः पक्षौ स्पृत्वा नाडी त्रयं स्मरेत् । दक्षिणा द्वात्मो मध्या द्वादशाय घृतं
सुधीः ॥ अग्नयेऽग्नि प्रिया सोमाय स्वाहेत्यग्नि नेत्रयोः ॥ जुहुया दग्नी
पोमान्यां स्वाहेत्यदिण तृतीयके ॥

पातये वाहुतेः शेषमाहुति प्रहण स्थले ॥ भूयो इदा दत्त भागा
दादा याज्यं मुखे यजेत् ॥ अग्नये स्विष्ट कृते तन्ने त्रास्थो द्वाटनं
मतम् ॥ नरसिंहं विना विष्णु मन्त्रे नेत्र द्वयं यजेत् ॥ नरसिंहा
न्य देवेषु बह्वे नेत्र त्रयं स्मृतम् ॥ महा व्याहृतिभिर्व्यस्त समस्त-
ताभि चतुष्टयम् ॥ आहुती ना त्रयं बह्वि मन्त्रेणै वत तश्चरेत् ॥
घृता हुति भिरष्टाभि रेकैकां सस्कृतिं चरेत् ॥ ओमत्याग्रे रसुं
संस्कारं करो म्यग्नि बलभा ॥ इत्यं मनुं जपन्गर्भा धानं पुंस वनं
ततः ॥ सीमंतोन्नयनं जात कर्म कृत्वा ततरचरेत् ॥ बह्वो पच समि-
द्धीमा भ्राजा पतयन्तं रसोः ॥ कुर्या देवाभिधानेन पूर्ववन्नाम शुष्मणः ॥
नामानन्तर मे तस्य पितरौ स्वर्पये द्वादि ॥ अन्न प्राशं तथा धीलो-
पनयो दारयो जनम् ॥ संस्काराः स्युर्विवाहान्ता मृत्युताः क्रु कर्मणि ॥
एकै का माहुतिं कुर्या द्बह्वे जिह्वागमूर्तिभिः ॥ इन्द्रादिभिरच वज्रा-
द्यै द्विठातै जुहुया ततः ॥ स्रुवेणा ज्यं चतुर्वारं निधाय स्रुपितां
सुधीः ॥ अपि धाय स्रुवे णैवो गृही यात्कर युग्मतः ॥ ऋष्ट-
न्मूलं तयो नाभी कृत्वाग्ने कुगुमक्षिपेत् ॥ वामस्त ना तं तन्मूलं

शौ अस्वाग्ने गर्भाभान सरकारः कराभि स्वाहेत्यादि ॥ पंच समिधा
होमा इषो रमेः नालाग्नयना ख्य. संस्काराः ॥ देवाभिधानेन देव
नाम्ना शुष्मणामे नाम पूर्ववत् ॥ घृता इत्यष्ट केन कुर्यात् । रामाग्निः
हृन्ध्याग्नि रित्यादि ॥ एतस्वामेः पितरौ वागीशी वागीशी कुण्डलात् स्व
द्वादि भ्यसेत् ॥ उपनयन मुक्तीवम् । दार याजनम् विवाहः ॥

१ नरसिंहरच अन्ये देवा भवेषु । २ भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः
स्वाहा नू भुवः स्वः स्वाहा । ३ वैभानर जात वेद इहा यह लोहि
याव सर्वं कर्माणि साधय स्वाहा ॥

इन्द्रो पुष्पन् ॥ दशधा म्परत्नेन विभक्तेन ॥ तमेव विभाग माह ॥
पूर्वेति ॥ सोत्र पट्टक ॥ नागाः सायका पदेव । मुग्ध. ५५३ ॥

कृत्वाम्नि मनुना सुवीः ॥ जुहुया द्वी पडंतेन संपत्यथं मतं द्वितः ॥
महागणेश मंत्रेण व्यस्तेन दशधा ततः ॥ जुहुयाच्चसमस्तेन चतुर्वारं
घृता हुवीः । पूर्व पूर्व युतं वीज पट्कं वाणाश्च सायकाः ॥ मुनयो
मार्गणाश्चेति विभाग स्तन्मनोः स्मृतः ॥ तारो लक्ष्मी गिरि सुता
कामोभूर्गण नायकः ॥ चतुर्थ्यं तो गणपति वंरांते वरदे तिच ॥
सर्वांते जन मित्युस्त्वा मेव शान्ते तु मानय ॥ स्वाहां तो वसु
युमार्णो महा गणपतेमनुः । एवं कृत्वाम्नि सस्कारं पीठं देवस्य पूजयेत् ॥

श्री अग्नि पूजनम्

तत्रोष्ट्र देव मा वाह्य मुद्रा आवाहनादिकाः ॥ प्रदर्श्य वह्नि रूपस्य देवस्य
वदने पुनः ॥ मूलेन जुहुयात्पच नेत्र संख्या घृता हुवीः ॥ वज्रकेशी
करां त्वग्नि देवयोस्ते नजायते ॥ नाडी संधान सिद्धयर्थं वह्नि देवतयो
स्ततः ॥ जुहुयान्मूल मंत्रेण रुद्र संख्या घृता हुवीः ॥ इष्ट देवस्या घृती
नामे कैरा माहुति चरेत् । ततस्तु मूल मंत्रेण दशधा जुहुयाद् घृतम् ॥
ततः कल्पोक्त द्रव्येण दशांशं जुहुया ज्ञपात् ॥ होम समाप्य कुर्वीत पूर्णां

मार्गणाः पंच ॥ गणेश मंत्रमाह ॥ तार इति ॥ १ जिह्वेति स्वदेवता
नामप्युप लक्षणं २ ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व
जनं मे वश मानय स्वाहा ॥ प्रयोग स्तु श्रीं स्वाहा ॥ श्रीं श्रीं स्वाहा ॥
श्रीं श्रीं ह्रीं स्वाहे त्यादि ॥

आवाहनादिका अग्ने र्यक्तख्याः । पञ्चनेत्र संख्या पंचविंशतिः ॥ पवित्रादि
प्रति पञ्चमाह ॥ बह्ना विधि ॥ विधि ब्रह्मार्था विसृज्य-दक्षिणा दत्तेति शेषः ॥
७ कुरान् परिस्तरण सहितान् वसा वग्नी ॥

तर्पण मंत्र माह—मूल मंत्रान्ते कृष्यं तर्पं यामि नमः ॥

कृष्यं अभिषिचामीत्य भिषेके ॥ जना दशांश स्तोमः—तदशां शेनाभिषेकः
तदशा शेन विप्र भोजन मिति ॥ पचार्गं पुरश्चरण मिति कनीयान् पचः ॥

अभिषेक वर्जो मध्यमः ॥ तर्पणा मियेक वर्जं स्मृंगउत्तमः पचः होम
दशांशं द्विज भोजन मिति ॥ किं बहुना ॥

बद्ध प्राण्य भोजने देवता प्रसादो भवति ॥ ब्रह्मालन् एवं प्रायनां नमस्तर
गुगुलि द्रव्यं देय अभिष्टमिति ॥

आर्ता चंद्र कूर्म ॥—पवरातीर निवासिनि मिति द्रष्टव्यः ॥

ततः तर्पना मरि भुञ्जीः ॥ मयद्रुह मिति ॥ विश्वशर्मा लालमो० योयो
पां वां तनुः भक्षया भक्षया० मिसिपुनान् ॥ शुभम्भुषण् ॥

हुवि मन-यधोः ॥ होमाशिष्टे नाज्येन पूरयित्वा स्रुचं सुधीः । पुष्प
फलं निधा यात्रे स्रुवेणाच्छाद्यतां पुन- ॥ उत्थितोवीपडं तेन मूलेन जुहुया
दृशौ । तद् द्रव्येणा वृत्ती नांच जुहुया दाहृतिं पृथक् ॥ देवं विसृज्य
स्वहृदि बह्वे निर्हांग मूर्तिभिः । जुहुयाब्धहृती हृत्वा प्रोक्षेत्तं प्रोक्षणी
जले ॥ सं प्राध्या । नेनमनुना नत्वातं विसृजे हृदि ॥ भो भो बह्वे महा
शक्ते सर्वं कर्म प्रसाधक ॥ कर्मांतरेपि सं प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥
बह्वी पवित्रो निक्षिप्य प्रणीतां बुभुधि क्षिपेत् ॥

विधि^१ विसृज्य सकुशान्यरिधीन्विन्वसे हृत्सौ । एवं होमं समाप्याथ
तर्पये देवतां जले ॥ आवाह्य तद्दशांशेन तर्पणा दभिणे चनम् ॥ तर्प-
यामि नम स्वेति द्वितीयां तेषु पूषं ऋम् ॥ मूलां तेषु पदं देयं सिचामोत्य-
भिपे चने ॥ ततो नाना विधै रन्नैस्तर्पयेद्विज्ञ सत्तमान् । इष्टं रूपान्समा-
राध्य तेभ्योदद्याच्च दक्षिणाम् । न्यूनं सम्पूर्णं ता मेति ब्राह्मणाराधनाङ्गणाम्
देवताश्च प्रसीदति सं पदांते मनोरथाः ॥

श्री शरत्कालीय नवरात्र पूजामाह ॥

तत्रादौ प्रतिपदि कृत्यम् ॥ तत्र निर्णयः ॥ अमायुक्ता न कर्तव्या-
प्रतिपत् पूजनेमम । सुहृत् मातृं कर्त्तव्याद्वितीयादि गुणान्वितेति ॥ पुनः ।
देशभङ्गो भवे तत्र दुर्भिक्ष्यं चोपजायते ॥ नन्दायां दशा, युक्तायां यत्र
यान्मम पूजनमिति घचनात् ॥ भार्गवार्चन चन्द्रिकायाम् । त्वाष्ट्र
वैधृतियुक्ता चेत् प्रतिपत् चण्डिकाचने । तयो रन्ते विधातव्यं कलशो-
रोपणं गृहे । इति वाक्यात् ॥ चित्र नक्षत्र वैधृति योगं समायुक्तं प्रति-
पत्तिथिं च यज्यित्वा शुद्ध प्रतिपत्तिथौ अथवा द्वितीया तिथौ घट
स्थापनं कुर्यात् ॥ वदितु प्रतिपत्तुष्ट्वा तदाऽमाया मपिकाय्यम् ॥ रात्रौ
स्थापनं कुर्यान्न च कुम्भाभिवेचन मिति मत्स्यपुराण वाक्यात् । रात्रौ
घटस्थापनं विसर्जनं च नैव कुर्यात् ॥

अथ प्रयोगः—प्रातः समयेस्नान संध्यादि । नित्यं कर्म कृत्वाकदल्या
दिस्तम्भैर्वितान तोरण वस्त्र वैष्टितमण्डिते दुर्गागृहे चतुरस्र चतुर्द-
स्ते वेदिको परिसर्वतो भद्रादि मण्डिते शुद्धगूढ भूमि चन्दना क्षतपु-
ष्पधूपदीप नैवेद्य कुशातिल जल सम्पूर्णं मामग्री सम्पाद्यकर्मारम्भेदीप
पूजन मिश्याचारः ॥ आचम्य कर्मपात्रं कृत्वा कुशादौ न्यादाय ॥ ॐ

अथ दुर्गा सप्तशती प्रयोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ अथ प्रयोगविधिः ।

भ्रीगणेशायनमः ॥ अथ प्रयोगान्तराणि काल्यायनी तन्त्रोक्तानि ॥
प्रति श्लोकं मास्यतयोः प्रणवं जपेन्मंत्रं सिद्धिः ॥१॥ अग्रे सर्वत्र श्लोकं
पदं मंत्राय लक्षणम् ॥ सप्रणवमनु लोम व्याहृति त्रयमादौ अन्तेतुवि-
लोमं तदित्येवं । प्रति श्लोके कृत्वा शवाश्रुत्ता पाठेऽति शीघ्रसिद्धिः ॥२॥
प्रतिश्लोकं मादौजात वेदमश्नुषं पठेत् सर्वकाम सिद्धिः ॥३॥ अपमृत्यु
वारणाय अंबक मन्त्रं पठेत् ॥ आदाय ते च शतमित्यर्थः ॥ प्रतिश्लोकं
एनमन्त्रं जपइत्यन्वयः ॥४॥ प्रति श्लोकं श्लेन पाहिर्ना देवीतिपाटादय
मृत्यु नाराः ॥ अस्य केवलं स्थापि श्लोकं च लक्ष्मणमुत्तं सद्मं

तस्मिन् ३ ओं विष्णु ३ नम इत्यादि-देशकालौ संकृत्य अद्योहं इत्यादि
 अमुकगोत्रस्य सदारापत्यस्यामुक शर्मणे मम अद्य प्रभृति नवमीपर्यन्त
 मुपवामादि नियमैरिष्ट देवता प्रीति द्वारा त्रिवर्ग सम्पत्ति सिद्धये नव-
 रात्र व्रतं महं करिष्ये । तदङ्गतया करिष्यमाणे नव दिन पर्यन्त महर्निशं
 दीप प्रज्वालनादि नवरात्रव्रतकर्माणि निर्विघ्नता सिद्धयर्थमश्रीगणेश्वरस्य-
 ययामिलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये, इति संकल्प्यः ॥ एकदन्तं शूर्पकणं मित्या
 दीनाभ्यात्वा आवाहनासन पाद्याभ्यां चमन वस्त्र यज्ञोपवीत भूषण गन्ध
 पुष्पाञ्जल धूप दीप नैवेद्यान्ते गणा नन्त्रे तिमन्त्रोण गणेशं सन्पूज्य
 स्वशक्तया मातृकां च सम्पूज्य पुरयाहा वाचनं कुर्यात् । सम्भवे ग्रहं च
 सस्याप्य तत ॐ यवोषि यवयास्म द्वेष यवया राती दिवेत्त्वान्त रिच्चा
 यत्वा पृथिव्यैश्वा गुन्वतावाँल्लोकाः पितृपदनापितृ पदन मसि मन्त्रेण यवं
 प्रक्षाल्य, शुद्ध मृत्तिकायाः मण्डपं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् । अद्योहं देव्या-
 स्तुष्टयर्थं यवा रोपणं महं करिष्ये ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ यवस्त्रं यव रूपोसि
 यत्रार्थे निर्मितोऽसिद्धि ॥ देवीनां तृप्ति कारी च तस्मात्त्वं वरदो भव

रातं जपे प्रामृश्यवारणम् ॥१॥ प्रतिश्लोकं करारणागतदीनार्तेति श्लोकपठे-
 त्सर्गं काय सिद्धिः ॥६॥ प्रतिश्लोकं करारुसानः शुभेत्यर्द्धं पठेत्सर्वं कार्यसिद्धिः
 ॥ ७ ॥ स्वाभिष्ट वर प्राप्तये एषां देव्या वर लब्धये ति श्लोकं पठेत् ॥ ८ ॥
 सर्वा पत्तिवारणाय प्रति श्लोकं दुर्गेस्मृतेति पठेत् ॥ अस्य केवल स्यापि
 श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्ष्य युतं सहस्रं शतं वाजपः ॥ ९ ॥ सर्वा
 बाधेत्यस्य लक्ष्यजपे प्रति श्लोक पाठेवा श्लोकोक्तं फलम् ॥ १० ॥ इत्थं
 यथा यथा चायेति श्लोकं जपे महामारी शान्तिः ॥ १० ॥ ततो वज्रे नृपो
 राज्य मिति मन्त्रस्य जपे पुनः स्वराज्य लाभः ॥ १२ ॥ हितास्ति दैत्य
 इत्यनेव सद्योप वलि दाने घटां गंधने च बाल ग्रह शान्तिः ॥ १३ ॥ तेजांसि
 आद्यावृद्धि मन्त्रो लोमेन पठित्वा ततो त्रिपर्णा क्रमेण द्वितीया मनु
 लोमेन तृतीया मित्येव मा वृ च त्रयेणा शीघ्रं कार्यं सिद्धिः १४ ॥ सर्वा-
 वृत्ति वारणाय दुर्गेस्मृतेत्यर्थं ततो यदे च्छिष्य दूरके स्त्यं चं तदेते वारि-
 द्य दुःसेत्यर्द्धं मेवं कार्यानुसारेण लवमयुतं सहस्रं सत्तं वाजपः ॥ कामो-
 स्मोत्स्यचं प्रति श्लोकं पठेत्सदमी प्राप्तीः ॥ १६ ॥ प्रति श्लोक मन्त्रा
 अस्मिन्निदचं पठेत्तु परिहारः ॥ १७ ॥ मारणार्थं मेरमुक्या समुत्प्रेति
 श्लोकं पठेत् मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १८ ॥ शान्तिनामपि चेतानि
 इति श्लोक जप मात्रेणसर्वो मोहन मित्य तुमत्र सिद्धम् । प्रति श्लोकं
 वन्द्य श्लोक पाठेत्स्व वरयम् ॥ १९ ॥ रोगान शोषा निवि श्लोकस्य
 प्रति श्लोक पाठे सकृन्न रोग नाशः ॥ तन्मात्र जपेपिसिः ॥ २० ॥

जयंती मंगला काली भद्र काली कपालिनी ॥ दुर्गा समा शिवा भागे
 स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण यव मारंष्य ॥ शुद्धोदकेन यवो
 परि सेचनम् ॥ अथ घटः स्थापनम् ॥—उत्र-संकरः—अपेक्ष
 ममेह जन्मनि दुर्गा प्रीति द्वाप सर्वापञ्चान्ति पूर्वक दीर्घायु विपुलपुत्र
 पुत्र पीत्रस्य नव द्विज सन्तन्ति वृद्धिस्थिर वक्ष्मी कीर्ति लाम शत्रु परा-
 जय मद्मोष्ट सिद्धयर्थ शारद् नवरात्र प्रतिपदिविः हित कलश स्थापन
 पूर्वकं दुर्गा कुमारी पूजन महं करिष्ये । कलश स्थापन विधिना घट
 सस्थाप्य । प्रयोगेषु यथा बहंतो या नाडी दक्षा वामा वातद्वस्तेन स्थामे
 त्रिकोणादियंत्रे ॥

यंत्रं मालिहय ॥ तत्रास्त्र चालितं पात्रा धारं स्थापयेत् ॥ एक
 त्रिदंभ चर मंत्रेणाधारं पूजयेत् ॥ तमाह—ॐ रां रीं हं रमल
 वर यूरं अमि मण्डलाय धर्मं प्रददा कलात्मने ऐं कलशा धाराय
 नमः । तदु परि पात्रा धारो परि आग्नेयी दश कला अर्चये त्वा
 प्वाह ॥ धूर्त्वारि रिति ॥ हव्य कव्यादिका वदा । यं धुम्नारिः कला
 श्री पादुकां पूजयामि ॥ रं ऊष्मा कला श्री पा० ॥ लं ज्वालिनी
 कला कला श्री पा० ॥ वं ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ मं विस्तु
 लिगिनो कला श्री पा० ॥ रं सुश्रे कला श्री पा० ॥ हं सु रूपाय
 कला श्री पा० ॥ रीं कपिलामे कला श्री पा० ॥ रां हव्याये कला

हस्तुका सा वदा देवी गंभीरेति श्लोकस्य प्रति २ लोकं पाठे पृथग्-
 जपे वा विधा प्राप्तिर्वा, वै कुत्र नाशरच ॥ २१ ॥ भगवत्या कृत्
 सर्वं नित्यादि द्वादशो चर शवाक्षेरामन्त्रः सर्वं कामदः सर्वापत्ति
 चारणरच ॥ २२ ॥ देवो प्रपन्नाति हरे इति श्लोक स्य यथा कार्यं
 जज्ञायुत सइस्र शतान्य तस्य संख्यया जपे प्रति श्लोकं पाठे वा सर्वा
 पत्रिभूतिः सर्वं कामाप्तिश्च ॥ एषु प्रयोगेषु प्रति श्लोकं दीपामे
 केवलमे वनमस्तुष्टेऽपि शोधं मिद्धिः ॥ प्रति श्लोकं काम बीत्र
 सं पुष्टि तस्य एक चत्वारिंशदिनं त्रिग वृत्ती सर्वं काम तिद्धिः
 ॥ २३ ॥ एक विंशति दिन पर्यन्त मुक्त रीत्या प्रत्यहं द्वादशा वृत्ती
 वशी करणम् ॥ २४ ॥ माया बीत्र सं पुष्टि तस्य पट् पञ्च
 सहितस्य सप्त दिन पर्यन्त प्रयो दशा इत्ता वशाटन तिद्धिः
 ॥ २५ ॥ तादृश्या मेवदिन वनुष्टय मेका दशा वृत्ती सर्वोपद्रव
 नाशः ॥ २६ ॥ एको न पञ्चाराहिन पर्यं तं प्रति श्लोकं
 श्री बीत्र सं पुष्टि तस्य पंच दशाशती लक्ष्मी प्राप्तिः ॥ २१ ॥
 प्रति २ श्लोकं याम्बीत्र सं पुष्टिः पञ्चशता वृष्या विषा शक्तिः

श्री पा० ॥ ॐ कव्यायै कला श्री पा० ॥ पूजयेत् ॥ स्वर्गादि-
निर्मित कलशम् ॥ अस्त्रापकडिवि प्रक्षाल्य तथा धोरन्यसेत्-तमुद्ध-
रति ॥ ॐ हां ह्रीं हुं इमल प्रयूँ हं सूर्यमण्डलाय वसु प्रद द्वादश
कलात्मने ह्रीं कलशाय नमः इति । सूर्य कला आह ॥ कं भं
तपिन्यै नमः ख वं तापिन्यै नमः । गं फं धूम्रायै नमः ॥

धं पं मरीच्यै नमः । हं तं ज्वालिन्यै नमः चं धं रुच्यै नमः । छं दंसु
पुन्नायै नमः । ज खं भोगदायै नमः । झ तं विरवायै नमः । ञं खं बोधि
न्यै नमः । टं ड धारिण्यै नमः । ढं डं क्षमायै नमः । इत्येकं मण्डलं
सम्पूज्यः । पुनः पूर्ववत् सं तपती कला श्री पा० । चं तापिनी
कला श्री पा० । सूं धूम्रायै कला श्री पा० ॥ हं मरिचि कला
श्री पा० ॥ प्रयूँ ज्वालिनी कला श्री पा० ॥ तं रुच्यै कला श्री
पा० ॥ मं सु पुन्नायै कला श्री पा० ॥ हं भोग दायै कला श्री
पा० ॥ हुं विरवै कला श्री पा० ॥ ह्रीं बोधिन्यै कला श्री पा० ॥
हां धारिण्यै कला श्री पा० ॥ ॐ क्षमायै कला श्री पा० ॥ इति ॥
मूल मंत्रं पठन् सुधा बुध्या तोयं सम्पूर्य तत्र गन्ध पृष्ठा क्ष्वान्-
मं तपनि कला श्री पादुकां पूजयामि त्वादि प्रयोगे विपेत् ॥ मूल-
विद्यां च मंत्रं वित् कलशा मृदाय तम । ॐ सोम मण्डलायेति
पूर्वेत्रिण्येष्टा मुद्रां वध्या ततः ॐ सांसीं सूं समल * प्रयूँ सं सोम

॥ २८ ॥ अथतत चडो विधिः पूर्वोक्त अग्नि स्थापनादि प्रयोगे
द्रष्टव्यः ॥ श्री रस्तु ॥

अथ देव्याः कवचं प्रारम्यते ।—श्री गणेशाय नमः । अद्येत्यादि०
श्री महा काली महालक्ष्मी महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थं चण्डो सप्त
सती पाठास्यं कर्म करिष्ये ॥ तद्गात्रे नादौ कवचागला कीलक पठन
माद्यं तयो रक्षीत्तर शतसंख्य नवार्णं जप पूर्वकं क्रमेण रात्रि सूक्त
देवो सूक्त पठनमते रहस्य त्रयपठनं च करिष्ये । इति सकल्प्य ॥
प्रथमं नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ॥ नमः प्रकृत्यै भद्रायै
निरता. प्रणोता. स्मताम् ॥ इति मंत्रेण पञ्चो पचारं पुस्तक पूजां
कुर्यात् ॥ आ रस्तु श्रीगणेशाय नमः ॥ ओं नमश्चण्डिकायै ॥
मांसेष्टेन नवाच । ओं यद् गुह्यं परमं लोके—

सर्वं रक्षा करं नृणाम् ॥ यन्न कस्य चिदा ख्यातं तन्मेत्रं हि पितामह
॥ १ ॥ प्रणोवाच । अस्ति गुह्यं तमं विप्र सर्वं भूतो पकारकम् ॥
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्वमहा मुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैल पुत्री च
द्वितीयं ब्रह्म चारिणी । तृतीयं चन्द्र घण्टेति कृष्णारहेति चतुर्थकम्

मण्डलाय कामप्रद पोडश कलात्मने सौः कलशा मृदाय नमः ।
 मन्त्रोयं जलार्चने ॥ अमृतेति ॥ अं अमृतायै कला श्री पा० ॥ आं
 मानदायै कला श्री पा० ॥ इं पूषायै कला श्री पा० । ईं तुष्टै कला
 श्री पा० ॥ उं पुष्टै कला श्री पा० ॥ ऊं रत्यै कला श्री पा० ॥ ऋं
 धृत्यै कला श्री पा० ॥ ॠं शशिन्यै कला श्री पा० ॥ लृं चन्द्रि-
 कायै कला श्री पा० ॥ ॡं कांत्यै कला श्री पा० ॥ एं ज्योत्स्न्यायै
 कला श्री पा० ॥ ऐंधियैकला श्री पा० ॥ ओं प्रीत्यैकला श्री पा० ॥
 औं अंगदायै कला श्री पा० ॥ अं पूर्वायै कला श्री पा० ॥ अः
 पूर्णा मृतायै कला श्री पा० ॥ इत्यर्च्यं सम्पूज्य कुम्भ योनिशुद्धं
 प्रदर्शयेत् ॥ तत्र घटो परिप्रतिमां सस्थाप्य अथवा तद् भावे द्रव्य
 क्षता संस्थाप्य श्री दुर्गाभावाद्दयेत् ॥ अथध्यानम्—जटा जूट समा-
 युक्तां मूर्द्धेन्दु कृत शोखायाम् लोचन त्रय सम्पन्नां पद्मेन्दु सदशा
 ननाम् ॥ अतसो पुष्प वर्णा भां सु प्रतिष्ठां सु लोचनाम् ॥ नव
 यौवन सम्पन्नां महिपासुर मर्दिनीम् ॥ त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं
 वक्रं च वामतः ॥ लोचनं वाणं तथा शक्ति वामतो सत्रि वेशयेत् ॥
 खेटकं पूर्णं चापं च पाशमङ्कुश मूर्द्धजम् ॥ घण्टां च पाशु चापि
 वामतः सन्नि वेशयेत् ॥ अथस्ता न्नादिपं तद् द्विशिरस्कं प्रदर्शं येत् ॥
 शिर च्छेदो ऋर्वयद् दानवं खड्ग पाणिनाम् ॥ हृदि शूलेन निर्भिन्नं
 तिर्यग्गन्ध विभू पितम् ॥ रक्त रक्ती कृताङ्ग च रक्त विसत्कारिते
 क्षणम् वेष्टितं नाग पाशेन भ्रुकुटो भीषणा नतम् धमन् रुविरवन्त्र-

॥ ३ ॥ पद्भमं स्कंद मातेति पष्टं कात्यायनीतिच ॥ सष्टमं काल-
 रात्रीति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं सिद्धि दात्री च नव
 दुर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मण्यैवमहात्मना ॥ ५ ॥
 अग्निनादद्य मानस्तु शत्रुमध्ये गतोरणे विपमे दुर्गमे चैवमथार्ताः
 शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते किंचिद् दशुमरणसंश्रुते ॥ नापदं
 तस्य परयामि शोक दुःख भयं नहि ॥ ७ ॥ यैस्तुभक्त्या स्मृता नून
 तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ येषां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ।
 प्रेवसंस्थातु चामुण्डा वागदी महिषा सना, ऐन्द्री गत्र समा रुद्रा
 वैष्णवी गहवा सना ॥ ८ ॥ मादेस्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि
 यादना लक्ष्मीः पद्मा सना देवी पद्म हस्ता हरि प्रिया ॥ ९ ॥ स्वैत
 रूपधरा देवी ईश्वरी वृष यादना ॥ प्राङ्गो हंस समा रुद्रा सर्वा भरण
 भूषिता ॥ ११ ॥ इत्येतामातरः सर्वाः सर्वयोग समन्विताः ॥ नाना
 भरणरोमादद्या नाना रत्नोप शोभिताः । हरयन्ते त्यमा रुद्रा

च देव्या सिद्धं प्रदर्शं येत् ॥ देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिद्धो
परि स्थितम् ॥ किञ्चिद् दूर्ध्वं तथा वामं मङ्गलं महिषो परि ॥
स्तुयं ज्ञानं च वद्रूपममरैः सन्निवेशयेत् ॥ अथा वाहनम् ॥ एहि
दुर्गे महा भागे ? रक्षार्थं मम सर्वदा ॥ आवा ह्याम्यहं देवि ? सर्व-
कामार्थं सिद्धये ॥ अस्यां मूर्तिसमा गच्छ इह तिष्ठ इह सन्निहिता
भव इह स्थिरा भव सुप्रसन्ना भव इत्या वाह्य एतन्त इति प्रति
प्राप्य । ॐ दुर्गे दुर्गेरक्षणि ? स्वाहा । जयन्ती मङ्गला कालो
इति मन्त्रेण च दुर्गे देव्यै पाध्याध्यां च मनोय पञ्चामृत स्नान
शुद्धो दक्र स्नान वस्त्र यज्ञोपवीत भूषण चन्दन सिन्दूराञ्जना
दर्शादि शौभाग्य द्रव्या कृत पुष्प माल्य खिल्व पत्र धूप दीप-
नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणादि षोडशो पचारैः पञ्चो पचारैः यथा-

देवः क्रोध ममाकुलाः ॥ १२ ॥ शंखं चक्रं गदां शक्ति इजं च मुसला-
युधम् ॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पारामेव च ॥ १३ ॥ कुन्ता युधत्रिशूल-
लं च शार्ङ्गमां युद्ध मुत्तमम् ॥ खड्ग चर्मत्रिशूलं च पट्टिशं मुद्गरं तथा
॥ १४ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्ताना मभयाय च ॥ धार यन्त्या युधा
नीलधिवाना च हिता यवै ॥ १५ ॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर
परक्रमे ॥ महा वले महोत्साहे महाभयत्रिज्जशिनि ॥ १६ ॥ त्रादिमां
देवि तुष्येदये शत्रूणां भयवर्धिनि ॥ प्राच्यां रत्नतु मा मैत्री आग्नेय्यामग्नि-
देवता ॥ १७ ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्ग धारिणी ॥ प्रतोच्यां
वारुणी रत्ने द्वायन्यां मृग वाहिनी ॥ १८ ॥ उदीच्यां पातु कौमारी
ईशान्यां शूलधारिणी ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रत्ने दधस्ता द्वेष्यवो तथा ॥ १९ ॥

एवं दशदिशो रत्ने चामुण्डा शिव वाहना ॥ जया मे चाप्रतः
पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ २० ॥ अजिता वाम पार्श्वे तु दक्षिणे
चा पराजिता ॥ शिक्षामेह्योतिनी रत्ने दुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता
॥ २१ ॥ माला धरी ललाटे च भ्रुवौ रत्ने चरास्विनी ॥ त्रिनेत्रा
षभ्रुवोर्मध्ये यम घन्टा च नासिके ॥ २२ ॥ शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये
श्रोत्रयोर्द्वार वासिनी ॥ कपोलौ कालिका रत्नेत्कर्य मूलेतु शाकरी
॥ २३ ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्टे च पचिका ॥ अधरे
चा मृत कला जिह्वा यां च सरस्वती ॥ २४ ॥ इन्तानुरक्तु कौमारी
कण्ठ देशेनु चण्डिका ॥ घण्टिकाचित्र घंटा च महामाया च
तालुके ॥ २५ ॥ कामाक्षी चित्तुकं रत्ने द्वार्थं मे सर्वं मंगला ॥
श्रीवायां भद्रकाली च षष्ठ वंशे धनुर्धरी ॥ २६ ॥ नील श्रीवा
वहिः कण्ठे नालिका मल शूवरी ॥ स्कन्धयोः गङ्गिनी रत्नेऽह मे

सं भवेयां दुर्गा दुर्गा सम्पूज्य प्रणम्य शार्थयेत् ॥ आगच्छ देवदेवेशि !
 दैत्य दर्पं निपू दनि ! ॥ पूजां गृहाण सुमुखि ? नमस्ते शङ्कर
 प्रिये ? ॥ सर्वं तीर्थं मयं वारि सर्वं देव समन्वितम् ॥ इमं घटं
 समागच्छ तिष्ठ देव गणैः सह ॥ दुर्गे देवि ? समागच्छ सान्नि-
 ध्यं कुरुवै ध्रुवम् ॥ वलिं पूजां गृहाण त्वं मष्टाभिः शक्तिभिः
 सह ॥ महिषासिन महा नाये चामुण्डे मुखे मालिनि ? ॥ द्रव्य
 मारोग्य विजयं देहि देवि ? नमः सदा ॥ सर्वं मङ्गल माङ्गल्ये-
 शिये सर्वार्थ साधिके ॥ शरण्या श्यम्बके गौरी नारायणि
 नमोस्तुते ॥ रूप देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहिमे ॥
 पुत्रं देहि धनं देहि सर्वां स्वामा न्प्रदेहिमे ॥ एवं प्रार्थना
 नन्तरं सुमन्धि द्रव्यं देयम् ॥ अथ कन्या पूजा ॥—गणेशं वटुकं दुर्गा
 प्रणम्य, संकल्पः अद्यैव मम देवीभ्यः प्रसादाद् विविध मनोऽभीष्ट कामना
 वासि राज्य करणोत्तर कालिक देवी लोक गमन कामनया कुमारी वटुकं
 च पूजन एवंकं भोज इष्यामि ॥ मन्त्रान्तर मर्यादामां मातृणां रूपधार-

वत्र धारिणी ॥ २७ ॥ हस्तयो र्दण्डिनी रक्षेदन्विष्टा चांगुलीषु
 च ॥ नखा ङ्ङ्गुलेश्वरी रक्षेत्कुक्षीरक्षे त्कुलेखरी ॥ २८ ॥ स्तनी
 रक्षेन्महादेवी मनः शोक विनाशिनी ॥

हृदये जलिता देवी उदरे शूल धारिणी ॥ २९ ॥ नाभी च
 कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्ये श्वरी तथा ॥ पूतना कामिका मेढू
 गुदे महिष वाहिनी ॥ ३० ॥ कट्यां भगवती रक्षे जानुनीविन्ध्य
 वासिनी ॥ जंघे महाबला रक्षे रस्यं कामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥ गुल्फयो
 नार्त्सिही च पाद पृष्ठे तु तैजसी ॥ पादांगुलीषु श्री रक्षे त्पादाधः
 स्थल कामिनी ॥ ३२ ॥ दंष्ट्रां करालिनी रक्षेत् केशां श्वैवोर्ध्वं
 केशिनी ॥ रोम कूपेषु कौमारी त्वंच वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥
 रक्ष मञ्जा वसा मांसा न्यस्थि मेदांसि पावती ॥ अन्त्याणि काल
 रात्रौ च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥ पद्मावती पद्म कोरो कफे
 पूजा नाणिव्धवा ॥ ज्वाला गुग्गुली नख ज्वाला ममेद्या सर्वं संधिषु
 ॥ ३५ ॥ शुकं ब्रह्माणी मे रक्षे ङ्ङ्गायां छत्रेश्वरी तथा ॥ अर्ध
 चारं मनो बुद्धिं

रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥ प्राग्जा शनी तथा व्याज मुदा नैव समा-
 नरम् ॥ यत्र इत्या च मेरुदेव्याणं कल्याण शोभना ॥ ३७ ॥ रसेरूपे च
 गन्धे च शब्देस्पर्शे च योगिनी ॥ गच्छन् रक्षन्म श्चैव रक्षे नारायणी सदा
 ॥ ३८ ॥ प्रागुत्पन्ना वाराहो भवे रक्षन् धैर्यवती ॥ यथा कीर्तिं च सद्गती-

खीम् । नव दुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामा वा हवाम्यहम् ॥ इत्या वाह्य
 तत्र पूजा मंत्ररच ॥ जगत्पूज्ये जगद्धात्रि सर्वं शक्ति स्वरूपिणी पूजां
 गृहाण कौमारि ! जगन्मात नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण पाद प्रक्षालनादिभिः
 पूजयेत् भोजयेच्च नाना वस्त्र पञ्चाश्रा लङ्कारैः स्व शक्त्या देवी पूजा
 नन्तरं नवमी पर्यन्त प्रत्यहं वा कुर्यात् ॥ एकै कां पूज्येत्कन्यां मेक
 वृद्धया तथै वच ॥ द्विगुणा चापि प्रत्येकं नवकं च विशेषतः ॥ द्विर्वर्ष
 कन्या मारभ्य दश वर्षां वधि क्रमात् ॥ पूजयेत्सर्वं कार्येषु यथा विध्युक्त
 मार्गतः ॥ अत ऊष्णन्तु या कन्या सर्वं कार्येषु वजिता ॥ आयुष्यं घल
 वृद्धयर्थं कुमारीं पूजयेन्नरः आयुः काम छिमूर्त्तितु त्रिपर्णं स्यफल प्रदाम् ॥
 अल्प मृत्यु व्याधि पीडा दुःख दारिद्र नाशिनीम् ॥ आरोग्य सुख कामी
 च जय कामी तथैव च ॥ यशः कामी नरोनित्यं रोहिणीं प्रति पूजयेत् ॥
 विद्यार्थी चा भयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः । शत्रूणां च विना शार्थी
 कालिकां पूजयेन्नरः ॥ ऐश्वर्यं सुख कामी च पुत्रा कामी च यो नरः ॥
 सङ्ग प्राप्ते जय कामी च चरिडकां प्रतिपूजयेत् ॥ दुःख दारिद्र नाशाय
 नृपं समोहना यच ॥ महा पाप विना शायं शान्भवी च प्रपूजयेत् ॥ सर्वं

च धनं विद्या च चक्षिणी ॥ ३६ ॥ गोत्र मिन्द्राणी मे रक्षेत्पशुन्मे रक्ष
 चरिडके ॥ पुत्रान्नक्षेत्रमहालक्ष्मी भर्त्सा रक्षतुभैरवी ॥ ५० ॥ पत्थानं सुपथा
 रक्षेन्मार्गं क्षेम करी तथा ॥ राज द्वारे महालक्ष्मी विजया सर्वतः स्थिता
 ॥ ४१ ॥ रक्षा हीनं तु यत्स्थानं वाजितं कवचेनतु ॥ तत्सर्वं रक्षमे देवी
 जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पद मेकं नगच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभ भात्मनः ॥
 कवचे नावृत्तो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थं
 लाभश्च विजयः सर्वं कामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं ततं प्राप्नोति
 निरिचतम् ॥ ४२ ॥ परमैश्वर्यं मतुलं प्राप्यते भूतले पुमान् ॥
 निभंयो जायते मर्त्यः संप्राप्तेष्व पराजित ॥ ४५ ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्
 पूज्यः कवचं नावृत्तः पुमान् ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवाना मपि दुर्लभम्
 ॥ ४६ ॥ यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ देवी कला भवे
 तस्य त्रैलोक्ये चापराजितः ॥ ४७ ॥ जीवेद्वर्षं शतं साम मप मृतपुत्रिय-
 जितः नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विरकोटका दयः ॥ ४८ ॥ रथावरं
 जङ्गम चैव कुत्रिम चापियद्विपम् ॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयंत्राणि
 भूतज्ञे ॥ भूचराः श्वेचराश्चैव कुलजा रवोपदेशिकाः ॥ ४९ ॥ सहजा
 कुजजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ॥ अन्त रिक्त चरा
 पोषा डाकिन्यरच मद्वापसाः । ५० ॥ मण्ड भूत विशा - चारच
 यच्च गन्धर्वा राक्षसाः ॥ षष्ठ राक्षस वंशालाः ॥

लोकस्यशत्रूणां वपसाधनकर्मणि ॥ दुर्गांतु दुःखनाशायपूजयेद्यत्नतोबुधः ॥
 शौभाग्य धनधान्या दिवाच्छिवार्थं फलाप्तये ॥ शुभद्रां पूजयेन्मर्त्यो दासी
 दासादिवृद्धये ॥ अथत्रिमूर्तिपूजा ॥ त्रिपुरात्रिपुराधारां त्रि वरां ज्ञानरूपिणीम् ॥
 कामदां करुणो दारां कालीं च पूजयाम्यहम् ॥ कल्याणी पूजा मंत्रः ॥—
 कालात्मिकां कला तीतां कारुण्य हृदयां शिवां ॥ कल्याण जननी
 नित्यं कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ रोहिणी पूजा मंत्रः ॥—अणिमा
 दिगुणा धारा मकारा द्युत्तरात्मिकाम् ॥ अनन्त शक्ति कां लक्ष्मीं रोहिणीं
 पूजयाम्यहम् ॥ कालिका पूजा मंत्रः ॥—कामं वारिशुभा कान्तां कान्तचक्र-
 खरूपिणीम् ॥ कामदां करुणो दारां कालीं च पूजयाम्यहम् ॥ चण्डिका
 पूजा मंत्रः ॥—चण्डवीरां चण्ड मायां चण्डः मुण्डप्रभञ्जनीम् ॥
 पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्ड विक्रमम् ॥ शाम्भवी पूजा मंत्रः ॥
 सदानन्द करी शान्तां सर्वा देव नमस्कृतम् ॥ सर्वा भूतात्मिकां लक्ष्मीं
 शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥ दुर्गा पूजा मंत्रः ॥—दुर्गामे दुस्तरे कार्यं भव-
 दुःख विनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदाभक्त्या दुर्गा दुर्गातिं नाशिनीम्

कुम्भारडा भैरवा दयः ॥ ५१ ॥ नश्यन्ति दर्शना तस्य कवचे हृदि-
 संस्थिते ॥ मानो व्रतिभवेद्राज्यं तेजो वृद्धि करं परम् ॥ ५२ ॥ चरासा
 वर्धतेसोऽपि कृत्ति मण्डलभूतले ॥ तस्माज्जपेत्सदा भक्त्या कवचं कामदं
 मुने ॥ ५३ ॥ जपेत्सप्त शतीं चण्डीं कृत्वातु कवचं पुग ॥ यावद् भू-
 मण्डल वरो सरील वनका नतम् ॥ ५४ ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः
 पुत्र वीरकी ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरै रपि दुर्लभम् ॥ ५५ ॥ प्राप्नोति
 पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥ लभते परम रूपं शिवेन सह मोदते
 ॥ ५६ ॥ इति वाराह पुराणें हरि हर ब्रह्म विर चितं देव्याः कवचं
 समाप्तम् ॥

ॐ नमस्त्वैवकायै जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपा-
 लिनी ॥ दुर्गा चामा शिवा धात्री स्वाहा स्वया नमोस्तुते ॥ १ ॥ जयत्व
 देवि वा मुण्डे जय भूतात्रिं हारिणी ॥ जय सर्वं गते देवि फाल रात्रि
 नमोऽस्तुते ॥ २ ॥ मण्डेष्ट भत्रि द्राविधात् वरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं
 देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ३ ॥ महिषा सुर निर्घाशि भक्ताना सुखदे
 ममः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ४ ॥ रक्त बीज वधे
 देविचण्डमुण्ड विनाशिनी ॥ रूपं देहि जय देहि यशो देहि द्विपो जाह
 ॥ १ ॥ शुभस्यै पनि शुम्भस्य भूत्रा एतस्य पमर्दिनी ॥ रूपं देहिजयं देहि
 यशो देहि द्विपो जहि ॥ ५ ॥ अचिन्त्य रूपं परिते सर्वे शत्रु विनाशिनी ॥
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ ६ ॥ ननेगः मर्धादा भक्त्या

॥ शुभद्रा पूजन मन्त्रः ॥—सुन्दरीं स्वर्णं वर्णाभां सुख शौभाग्य दायि-
नीम् । शुभद्र जननीं देवीं शुभद्रां पूजयान्यहम् ॥ भक्तिः कुमारीणां
यत्नत पूजा कार्या ॥ कञ्चुकैश्चैव वस्त्रैश्च गन्ध पुष्पा च्छतादिभिः ॥
नाना विधैर्भक्ष्य भोज्यै भोजयेत् पायासादिभिः ॥ इति कुमारी पूजा ॥
अथ सप्त सती पाठ विधिः ॥ सकल पूजा नन्तरं सप्तसत्यादि
पाठ जपादिकं कुर्यात् ॥ ब्राह्मण द्वारा कुर्यात् ॥ श्रूयाद्वा ॥
अथ, सप्त सती पाठ वेद पाठानेक पुराणान्तर गत स्तोत्र पाठ
गायत्री जप नवार्णव मन्त्र जाप स्वेष्ट देवता मन्त्र जपादीन् यथा
शक्ति कुर्यात् ॥ अथसंकल्पः ॥ अद्येह ममभूत भविष्य वर्तमान
जन्म जन्मान्तराणां दुष्कृत नृवृत्ति दुष्कृतोत्थ समस्त पाप क्षय शत्रु
दस्यु राज शत्रा न शता यौघहेतुक भया भाव महा मारी समुद्रवा
शेषो प सर्गावगम त्रिविधो त्पातो पशम सर्वा पच्छान्ति पूर्वक
रक्षो भूत पिशाच ग्रह पर कृत्या बालप्रहादि सकल बाधा शम-
यितो—श्री दुर्गा सान्निध्य द्वारा सर्व गुणो त्पत्ति दीर्घायु विपुल
धन धान्य पुत्र पौत्राद्य नव चिह्न सन्तति वृद्धर्थ सकल कुलानन्द
स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ सुख प्राप्ति सदभिष्ट सिद्धि मूलक महा
काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती प्रीतये मार्कण्डेय पुराणा-न्तर्गत सावर्णिः—

चण्डिके दुरितापदे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि
द्विपो जहि ॥ ६ ॥

स्तुवद्भयो मक्ति पूर्वं त्वा चण्डिके व्याधि नाशिनि ॥ रूपं देहि
जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १० ॥ चण्डिके सततं ये त्वा
मर्च यन्तीह भक्तिः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो
जहि ॥ ११ ॥ देहि सौभाग्य मारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ॥
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १२ ॥ विधेहि
द्विपतां नाशं विधेहि बल मुष्कैः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो
देहि द्विपो जहि ॥ १३ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहिपरमां
भियम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १४ ॥
सुरासुर शिरोरत्ननिघृष्ट चण्डो ऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि
यशो देहि द्विपो जहि ॥ १५ ॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मी
वन्तं जनं कुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि
॥ १६ ॥ प्रणयन्ते दैत्य दर्पणे चण्डिके प्रणवा यमे ॥ रूपं देहि
जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र
संस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो

सूर्यं तनय इत्या राभ्य सावर्णिं भंविता मनुः तथा च रहस्यादिः
पर्यन्तप्राठं कर्तुं मध्या रभ्य नवमी पर्यन्तं ब्रह्मणानां पूजनं वरणं
च करिष्ये ॥ पाठान्ते यथा शक्ति वलिदानं छाग कुष्माण्ड फलैर्वा
वक्ष्यमाण विधिना कार्यम् ॥ अथ द्वितियादि दिन कृत्यम् ॥
द्वितीयायां श्री परमेश्वर्यै पट्ट केशरज्जुं कङ्कति कां दद्यात् ॥ तृतीयां
दर्पणं सिन्दूरं कज्जलम् ॥ चतुर्थ्यां मधु शर्करा दधि कांश्य पात्राजं कांश्य
धालि कास्प्य मधु पकम् ॥ कज्जलम् ॥ पञ्चम्यामुद्धर्त्तनं सौवर्णं रौप्यं वा
भूषणमथवा तत्सुष्पं दध्यात् ॥ प्रति संध्यं प्रति पश्चादि तिथिषु
पूजनं यथा शक्या ॥ द्वितीयायां मध्याह्नात् ऊर्ध्वं संध्या काला
दर्वाक् वाल चन्द्र दर्शनं कुर्यात् । शंखार्घ्यं श्वेत चन्दन दध्यक्षत तौर्यं
निधानं जानुना वर्ति स्पृष्ट्वा दक्षिण हस्तेन चन्द्रार्घ्यदानम् । तत्र मंत्रः ॥
अत्रि नेत्र समुद्भूत क्षीरो दाणव सम्भव ॥ गृहाणाध्वं शशां केश
रोहिया सहित प्रभो ॥ प्रणाम मंत्रः ॥ नमः सुधां शवे तुम्य लक्ष्मी

जहि ॥ १८ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदांश्विके ॥ रूपं
देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ १९ ॥ हिमाचल मुता नाथ
मंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ २० ॥
इन्द्राणीपति सद्भाव पूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो
देहि द्विपो जहि ॥ २१ ॥ देवि प्रचण्ड दोर्दण्ड दैत्य दर्पविना-
शिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ २२ ॥ देवि
भक्त जनो हाम दत्ता नन्दो दये ऽश्विके ॥ रूपं देहि जयं देहि
यशो देहि द्विपो जहि ॥ २३ ॥ पत्नी मनो रमां देहि मनो वृता
नुसारिणीम् । तारिणीं दुर्गं संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ सनुसप्त शता संशय
रमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५ ॥ इति मार्कण्डे पुराणे अर्गना स्तोत्रं
समाप्तम् ॥ २६ ॥

अर्था नमः शशिचक्रायै—मार्कण्डेय उवाच—विशुद्ध ज्ञानवेदाय त्रिवेदी
दिव्यचक्षुषे ॥ धेयः प्राप्ति निमित्ताय नमः सोमर्षचारिण्य ॥ सत्रमेतद्वि-
ज्ञानीया न्मशाणामपि षोडशम् ॥ मोऽपि चैव ममाप्नोति सत्तन्त्राय तत्परः
। २ ॥ सिद्धयन्त्यु च्छाटनादीनि यस्तूनि सकला न्यपि ॥ एतेन
गुरतां देवीं स्तोत्रं मातृसहिपुत्रिवि ॥ ३ ॥ न मन्त्रं नौषधं तत्र न किं
चिदपि विद्यते ॥ विना जाप्येन सिद्धयेत् सत्रं गुणघाटना दिक्म्
। ४ ॥ रामपाण्यपि सिद्धयन्ति लोके शश्या मिमां हरः ॥ श्रुत्वा
तिनन्त्रया मासं सव' मेव मिदं शुभम् ॥ ५ ॥ स्तोत्रं वै पण्डित्य

भ्रातर्नमोनमः ॥ निष्कलङ्किन् कला धारिन् गङ्गाधर शिरो मणे ॥
 शंभोजटा जूट वासिन् बाल चन्द्र नमो स्तुते ॥ इति दद्यात् ॥ अथ
 पष्टयां विल्वनिमन्त्रविधिः ॥ शुक्ल पष्टयां जेष्ठा युवाया सूर्यास्तः
 वेलायां विल्वं तद् सन्निधौगत्वा उपवासादि कृतं नित्यं क्रिय-पूर्वं
 मुखं उत्तरं मुखं वा उपविश्याऽऽचम्य सन्ध्या काल समये दीपं प्रज्वाल्य
 संकल्पं कुर्यात् ॥ अथहे० श्री दुर्गा प्रीति कामः श्री वृत्त पूजन पूर्वकं
 विल्व निमन्त्रणमहकरिष्ये ॥ ॐ भगवति दुर्गे इहा गच्छ-
 द्दहतिष्ठे त्वा बाह्य । पाद्यादि नैवेद्यान्तो पचारैः सम्पूजयेत् ॥ तत्र-
 मंत्रः ।—रावणस्य वधार्थाय रामस्या नुमदाय च । अकाले लवणा-
 म्बोधौ त्वया देव्या त्रितः पुरा ॥ अहं मप्याश्रितः पष्टयां साया-
 न्हे बोधया मयः ॥ पूजयामीह दुर्गे, त्वां सर्वं शत्रु विनाशिनीम् ॥
 देव देवांशं संभूतः ? श्री वृत्तः चाण्डिका प्रियः ॥ श्रामन्त्रयामि पूजार्थं
 शाप्ता मेकंभयच्छमे ॥ इत्यामंत्र्य । यथोक्त विधिना विल्व

यास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ॥ समाप्नोतिः सु पुण्येन तां यथा वह्नि
 चन्द्रणाम् ॥ ६ ॥ सोऽपिष्ठेममवाप्नोति सर्वंभवे नशशयः । कृष्णं
 वा चतुर्दश्या मष्टम्यां वासुनाहितः ॥ ७ ॥ द्वादविप्रति गृह्णाति नान्य
 येषां प्रसिद्धयति ॥ इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥
 योनिष्कीलांविधार्यनां नित्यं जपति संस्तुटम् ॥ सतिष्ठःसगणः सोऽपि
 गन्धर्भोजायतेनरः ॥ ९ ॥ तत्रैत्रा प्यटत स्वस्य भयं क्वापि हि जायते ॥
 नाप मृत्यु वंशवाति मृदो मोक्ष ममाप्नु यात् ॥ १० ॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य
 कुर्षीत न कुर्षाणो विनश्यति ॥ ततोऽप्यत्वेव संपन्न मिदं प्रारभ्यते दुषेः
 ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किंचिद् हस्यते ललना जने ॥ तत्सर्वं
 तत्प्रसादेन तेन जाप्य मिदंशुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽभि-स्तोत्रे
 सम्पत्तिरुच्यते ॥ भयं त्येव समप्रापि ततः प्रारभ्य मेवतन् ॥ १३ ॥
 ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्या रोग्य संपदः ॥ शत्रु हानिः परो मोक्षः
 स्तुयते सान किं जनैः ॥ १४ ॥ इतिभगवत्याः कीलकं स्तोत्रं समाप्तम्
 ॥ ३ ॥ शुभंभूयात् ॥

श्री गणपति जपति ॥ ॐ अस्य श्री नवार्धमन्त्रस्य ॥ प्रज्ञा
 सिन्धु-जज्ञ श्रयः ॥ गायत्र्युष्णिगं नृष्टुभं श्छन्दामि ॥
 श्रीमहा कात्रो महा लक्ष्मी महा सास्वत्यो देवताः ॥ ऐं श्रीत्रम् ॥
 ही शक्तिः । कर्ता कोत्रकम् । श्री महाकाशी महा लक्ष्मी महा
 मत्स्वतो प्रीत्यर्थं जने विनियोगः ॥ प्रज्ञासिन्धु रुद्र श्यपित्री
 नमः सिरति ॥ गायत्र्युष्णिगं नृष्टुपृथ्वीभ्यो नमोऽनुये ॥

वृक्षाधि वासं कृत्वा नृत्य गीत वाद्योत्सवै रात्री जागरणं
 कृत्वा वतः पुनः । ॐ विंशत्य इहागच्छ इहा तिष्ठे त्या बाह्य वित्त्वा
 य नमः । इति मन्त्रेण पाद्यादि सिन्दूर गन्ध पुष्पाक्षत धूप दीप
 ताम्बूल नैवेद्यान्त दधात्, वित्त्व वृक्षस्थष्ट्वा मन्त्र पठेत् । श्री-
 रौल शिखरे जातः ? श्री फलः ? श्री निकेतन । नेतव्योसिसमागच्छ
 पूर्यो दुर्गास्वरूपतः ॥ इति पठेत् ॥ अथ सप्तमी दिन कृत्यम् ॥ सप्तम्यां
 प्रातरा रम्य पत्रिका पूजनान्तर पर्यन्तं पुस्तकादौ सरस्वतीं पूजयेत् ॥
 मन्त्र मन्त्रे वक्ष्यते रुद्र यामलेः—मूल ऋत्वे सुराधीश पूजनीया सरस्वती ॥
 इति ॥ सप्तम्या मूल युक्तायां वा केवलायां पत्रिका प्रवेशः । तद्दिने
 प्रातः समये नित्य कर्म कृत्वा पुन विंशत्य समीपं गत्वा प्रणम्य प्रार्थयेत् ।
 त्रिंशत् वृत्त महाभाग सदात्वं शङ्कर त्रिंशत् ॥ गृहीत्वा तव शाखां च
 पूज्या दुर्गेति चस्मृतिः ॥ उत्तिष्ठ पत्रिके देवि सर्वा कल्याण हेतवे ॥
 पूजां गृहाण सरस्वती मरुतां वरदा भव ॥ मेरु मन्दर कैलाश हिम-
 वच्छिखरे गिरो ॥ जाता श्री फल वृक्षेत्व माम्बिका या सदा प्रिये
 इति प्रार्थय ॥ त्रिंशत् वृक्षस्य दक्षिणस्यां दिशि श्री फल युग सदित्तां
 शाखा गृहीत्वा गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ ॐ छिन्दि फः अस्त्राय नमः ।
 ॐ हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रेण सच्छिन्द्य तच्छा खात्रोटनं कृत्वा वृष्टा

महा काली महा लक्ष्मी महा सरस्वती देवताभ्यो नमः इहे ॥
 ऐं वोजाय नमो गुणे ॥ ह्रीं शक्तये नमः वाद्योः ॥ क्लीं कील काय
 नरोताभी ॥ इति मूलेन करौ संशोध्य ॥ ॐ ऐं शं गुप्ता भ्यां नमः ॥ ॐ
 ह्रीं तजनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मर्ष्यैभ्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अना-
 भिकाभ्यां नमः । ॐ विष्टो कनिष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
 चामुण्डायै विष्टो करवत् कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ ऐं इत्यादि ॥ ततोऽक्षर
 न्यासः ॥ ॐ ऐं नमः शिखायां ॥ ॐ ह्रीं नमो दक्षिण नेत्रे ॥ ॐ
 क्लीं नमो वाम नेत्रे ॥ ॐ श्रीं नमो दक्षिण करौ ॥ ॐ मुं नमो वाम-
 करौ ॥ ॐ टां नमो दक्षिण नासायाम् ॥ ॐ ऐं नमो वाम नासायाम् ॥
 ॐ त्रिनमो मुखे ॐ श्रीं नमो गुह्ये ॥ ऐं विन्वस्याष्ट वारं मूत्रेन व्या-
 पकं कुर्यात् ॥ ॐ ऐं चानेष्ट्यै नमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॥ ॐ ह्रीं
 नैऋत्यै नमः ॥ ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ क्लीं दायव्यै नमः ॐ
 चामुण्डायै उशंभ्यै नमः । ॐ चामुण्डायै ईशांभ्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं
 चामुण्डायै विष्टो उशंभ्यै नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विष्टो भूम्यै
 नमः । अथ ध्यानम् ॥ गन्ध शक्र गवेषु चाप परिधाञ्जलं मुमुक्षु वी शिः
 शय मन्दयती करं त्रि नयनां मयां प्र भूषा पृत्ताम् ॥ नैऋतम च्युति

देवतीर्थं । कदली स्वम्भ दाडिम धान्य वृक्ष हरिद्र वृक्ष मानक कचूर
 विल्व पत्रा शोण जयन्ती त्रोण पुष्पान्य पुष्प फलं चयल्लभ्यं सम्पूर्णं
 मा हृत्य प्राधयेत् ॥ शास्त्रान्छेदेन यद् दुःखं यत्कृतं हिमया प्रभो ॥
 क्षम्यतां मम वृक्षेश विल्व वृक्ष नमोस्तुते ॥ वृक्ष वृक्ष महाभाग सर्वादा
 राङ्गर प्रिय ॥ गृहीत्वा तव शारां च देवी पूजां करोम्यहम् ॥ इति
 प्रार्थनं ॥ ॐ ह्रीं हुं क्लीं चामुण्डे चल चल शीघ्रं त्रिभुक्के प्रविश ॥
 षाण्डिन्यं दुर्गं रूपसि सुर तेजा महाबले । प्रविश्य तिष्ठ
 यज्ञोस्मिन् यावन् पूजां करोम्यहम् ॥ इति प्रविश्यस्थापयेत् ॥
 ॐ स्यां स्यां इति स्थिरोभय । आरोपितासि दुर्गेत्वं मृत्यमर्थं श्री फलतुवा ॥
 स्थिरी भूता च त्वं देवि गृहाण कामदा भव ॥ इति स्थिरी कृत्य पत्रिणा
 मुत्थाप्य दालायामारोप्य दोलां स्कन्धे निधाय नौनी सन् गृह समीपे
 आर्नय नाना वादित्रादि मङ्गल पुरस्सर पत्रिकायां यथामिलितो पचारैः
 सम्पूज्य ततो देवी गृहान्ध्यन्तरे सार्यं काले पत्रिकां प्रवेशयेत् ॥ अथ
 सप्तम्यां सन्त्रोत्तर कृत्यम् ॥ ततो भूतादीनां कृच्छरात्न वर्तिदद्यात् ॥
 ॐ भूत इहागच्छेद्वृत्तिष्टे त्वा बाह्यसंस्थाप्य भूतादिभ्यो नमः ॥ इति

नास्य पाद दशकां संवे महा कालिकां यामसौत्स्वपिते हरो कमल
 जोहन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्पराशुं गणेषु कुलिशं पद्मं
 धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्ति मसिच चर्म जलदं घण्टा-सुरा-भाज-
 नम् ॥ शूल पारा सुदर्शने च वधर्ता हस्तैः प्रसन्नां ननां संवेसै
 रिभ मर्दिनी मिह महा लक्ष्मीं सराजस्थिताम् ॥ -२ ॥
 घण्टा शूल इलानि शङ्ख मुसले चक्रं धनुः सायकं हस्तान्छेदधर्ता घनान्त
 विहासच्छीतांशु तुल्य प्रभाम् ॥ गौरी देइ समुद्रवां त्रिनयना मागार
 भूतामहा पूर्वा मंत्र सरस्वती मनुभजेच्छुभादि दैत्यादिनीम् ॥ ३ ॥ अष्टो
 चर राव सडयामंत्रराज...ए ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे ॥ घोत्र
 प्रयायविद्बहे तत्प्रधानायधोमहेतन्नराकि प्रथो दद्यात् ॥ १०८ ॥ जपेत् ॥
 इति नवार्ण विधिः ॥

अथ रात्रि सूक्तम् ॥ विश्वरवर्ती जगद्धार्मी स्थिति संहार कारिणीम् ।
 निद्रां भगवतीं निष्कारतुत्रां तेजसःप्रभुः । १ ॥ मज्जोराच ॥ त्वं स्वाहात्वं
 स्वधा त्वं दि यत् कार स्वराजिका ॥ बुद्धास्व मन्त्रे नित्ये त्रिधा मात्राति
 कास्थिता ॥ २ ॥ अर्थं मात्रा स्थिता नित्या वानुषागो विशेषतः ॥
 स्वमेव धर्म्या मायिषी त्व देवि जननी परा ॥ ३ ॥ त्वयं नृनायते विश्वं
 स्वयैतत्सुन्यते जगत् ॥ त्वयं तत्तान्यते देवि त्वनन्दन न नयंदा ॥ ४ ॥

पाद्यादि नैवेद्यान्तेः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ भूता प्रेता. पिशाच चैव
सन्त्यत्र मृतले ॥ वेगृह्णन्तु मयादत्तं बलिमे तत्प्रसादितम् ॥ पूजिता बलि
पुष्पाद्यैस्तपिता बलिभिस्तथा देशा दस्माद्विनिः सृज्य पूजां गृह्णन्तु
यत्कृतवाम् ॥ एष माप बलिः भूतादिभ्यो नमः सर्पपंच विकीर्णं बल्यु
परिदीपं प्रज्वाल्य गृहाद्बहिःस्थापयेत् ॥ ततः सप्तम्यां पुस्तका द्वौ प्रभाते
वा पत्रिका पूजनानंतरं वा सरस्वतीं स्थापयेत् यथा । वेद शास्त्र पुष्पानि
सृष्टि ज्याकरणानि च ॥ ज्योतिषं मन्त्र विद्यां च सर्वं विद्या मनेकधा ।
त्रितयां पुस्तके मातनिश्चयं कुरुमेगृहे ॥ वंजीवन कुलेजातं पुस्तकाप
नमो नमः । इति मन्त्रादिना पूजयेत् ॥ अष्टौदे त्यादि सर्वापच्छान्ति सर्वा
विद्य सोख्य प्राप्ति पूर्वक शरत्कालीय नव दुर्गा शाकम्बारी स्थापन मद्
करिष्ये ॥ मृगमयीं दुर्गा प्रतिमां सकलां शिविव शास्तां, कदल्यादि
नव पत्रिकां च सस्थाप्य पञ्चामृतेन संस्थाप्य एतन्त इति प्रति
प्राप्य पूजयेत् ॥ पत्रिका नामानि । कदली दाहिमं धान्यं हरिद्रा
मानकं कचम् ॥ विल्वा शोकी जयन्ती च विज्ञेया नवप
त्रिका ॥ प्रत्येकं नव पत्रिका पूजनं यथा शक्ति कृत्वा स्नानार्थं
दद्यात् ॥ तद्यथा ॥ आग्नेयी नवदा गङ्गा यमुना च सरस्वती ॥
शरयू गण्डकी पुण्या खेत गङ्गा च कीर्तिकी ॥ वती च पातले
स्वर्गे मन्दाकिनी तथा ॥ सर्वाः सुमन सोभूत्वा शृङ्गारै स्नपयन्तुते ॥

विश्वेश्वरौ सृष्टि रूपा त्वं स्थिति रूपा च पालने ॥ तथा संहति रूपान्ते
जगतीऽस्य जगन्मये ॥ २ ॥ महा विद्या महा माया महा मेधा महासृष्टिः ।
महामोहा चभवती महा देवी महासुरी ॥ ६ ॥ प्रकृतिस्तत्र चसर्गस्य गुण
त्रय भाविभाविनी ॥ काल रात्रिमहारात्रिमोक्षरात्रिश्च दारुणः ॥ ७ ॥ त्वं श्री
स्वनीश्वरी त्वं हो स्वर् बुद्धिर्बोध लक्षणा ॥ लग्ना पुष्टि स्तयानुष्टि त्वं
शान्तिः ज्ञानितरेव च ॥ ८ ॥ सङ्घिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा
शक्तिनी चापिनी-वाण मुगुयही परिषा युधा ॥ ९ ॥ सोम्या सोम्य तथा
रोष सोम्येभ्यस्तत्रति मुन्दरी ॥ परा पराणां परमात्ममेव परमेश्वरी ॥ १० ॥
यमदिवित्क्यचिदम्बुसद सदास्तिलात्मके ॥ तस्य सर्वभ्य या शक्तिः
सात्वं किं स्युसे तथा ॥ ११ ॥ यथा त्वया जगत्त्वष्टा जगत्यात्पति
या जगन् । वाऽपिनिद्राय नोतः कस्तयाम्भोतुते मिदेश्वरः ॥
विष्णुः शरीर मइण मद् भीष्मन एव च ॥ कारि तस्ते यवोऽ
सस्ता यः स्तोतुं शक्ति मान्भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्यं प्रमादेः
खेयदारे रवि भम्बुना ॥ मोक्ष देवी दुर्गापरां वसुधै मयु केदभी
। १४ ॥ प्रबोध च जगत्त्वामां नोपक्षानप्युवो बभु ॥ बोध

कदल्यै नमः । कदल्या ब्रह्माणी हागच्छे हतिष्टे त्या वाह्य ब्रह्माण्यै
 नमः इति पाद्यादि नैवेद्यान्त दद्यात् ॥ दाडिम्या रक्त चण्डिकाम् ।
 सर्वेषा मधिपो देव ईशानो नाम नामतः ॥ शूलपाणि महादेवो
 शृङ्गारै स्नपयन्तुते ॥ पूर्वं षट् इहागच्छे त्यादिना सम्पूज्येत् ॥
 धान्ये जलमीम् । पुण्यत्वं पुण्य शाखाना मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
 विष्णुना विधृतो नित्य मतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ मन्दाकिन्या
 स्तुते वारि सर्व पाप हर शुभम् । स्वर्गस्रोतस्तु वैष्णव्यं शृङ्गा-
 रैस्नपयन्तुते ॥ पूर्वं वत्संपूजयेत् ॥ मानके चामुण्डम् । गन्धाढ्यं
 चन्दनं दिव्यं तच्छ्रीतल सुरप्रियम् ॥ सर्वं पाप हरं चैव शृङ्गारै
 स्नपयन्तुते ॥ पूर्ववत्संपूजयेत् ॥ कर्चै कालिकाम्—सागरा सरितः
 सर्वा सरः स्रोतोदमस्तथा ॥ सर्वोपधीभिः पापघ्ना शतशः स्नप-
 यन्तुते ॥ सर्वाः सुमनसो भूत्वा शृङ्गारैस्न पयन्तुते ॥ पूर्वं वत्सम्-
 पूजयेत् ॥ विल्वेशिवाम् ॥ हिमवद्धेम कूटाद्या रचाधिविरचन्तु
 पर्वताः निर्भरोदक पूर्णेन पष्टेन कलशे नंतु । सर्वा सुमन सोभूत्वा
 शृङ्गारै स्नपयन्तुते ॥ पूर्ववत्सम्पूजयेत् ॥ असोके शोक हारिणीम्

शक्यता मस्य इन्तु मेती महा सुरौ ॥ १५ ॥ इति ॥ श्री
 गणेशाय नमः ॥ अथ सप्त शती न्यासः ॥ अथ प्रथम मध्यमो
 त्तम चरि त्राणां ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः । श्री महा काली
 महा लक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः ॥ गायत्र्युष्णिग नुष्टु भरु-
 न्दासि ॥ नन्दा शाकम्भरी भीमा शक्यः ॥ रक्त दन्तिका दुर्गा
 भ्रामर्यो बीजानि ॥ अप्रिर्वायुः सुयस्तत्त्वानि ॥ ऋषयः साम
 वेदाध्यायानि ॥ सकल कामना सिद्धये श्री महा काली महालक्ष्मी
 महा-सरस्वती देवत प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः । तनादौ न्यासा ॥ खड्गिनी
 शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी वाणं भुशुण्डी
 परिधायुधा ॥ अंगुष्ठाभ्या नमः ॥ शूलैः पाहिनो देविपाहि खड्गेन
 चाम्बिके ॥ घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेनच ॥ तर्जनी म्या
 नमः ॥ प्राच्या रक्त प्रतीच्या च चण्डिके रक्त दक्षिणे ॥ भ्रामर्ये
 नात्म शूलस्य वचरस्या तृथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्या नमः । सौम्यानि
 यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्तिते ॥ यानि चात्यर्थं घोराणि तै
 रचा स्मां स्तथा वृषाम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥ खड्ग शूलगदा
 दीनि यानि चास्त्राणि ते ऽम्बिके ॥ कर पद्मव सङ्गीनि तैरस्मा
 ब्रह्म सरतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ सर्व स्वरूपे सर्वेशेः स-
 र्व शक्ति समन्विते ॥ भयेभ्य त्वादि ना देवि दुर्गे देवि नमो

॥ लवणैर्दु सुरा सर्पि दधि क्षीर जलै स्तथा ॥ सर्वा सुमनसो भूत्वा
 शृंगारै स्नापयन्तुते ॥ पूर्व वस्त्रम्पूजयेत् ॥ जयन्त्यां कार्तिकाम् ॥- दुर्गा
 चण्डो श्वरो चण्डी वाराही कार्तिकी तथा ॥ हरसिद्धि तथा काली रुद्राणी
 वैष्णवी तथा ॥ भद्रकाली विशालाक्षी भैरवी सर्व रूपणी ॥ सर्वा
 सुमनसो भूत्वा शृङ्गारै स्नापयन्तुते ॥ पूर्ववत्सम्पुज्य ॥ तत्रैव तक्षका
 दौशचक्ष्मापयेत् पूजयेत् ॥ तक्षकाया रक्षये चान्ये पाताल तल वासिनः ॥
 सर्वा सुमनसो भूत्वा शृङ्गारैः स्नापयन्तुते ॥ अनेन प्रकारेण प्रत्येकं पत्रि-
 कान् स्नापयित्वा पूजयेत् ॥ ततो विल्व फल शाखायां श्री परमेश्वरी मा
 वाहयेत् ॥ अथा वाहनम् ॥ आवाहयाम्महः देवीं श्री फले मृतमये तथा ॥
 आयुरारोग्य मैश्वर्यं देहि देवि नमः सदा ॥ कैलाश शिखरे देवी हिमाद्रे
 हिमपर्वतात् ॥ आगच्छ विल्व शाखायां चाण्डके कुरु सन्निधम् ॥ स्था-
 पितासि महादुर्गे ॥ पूजयेत्वा प्रसीदमे ॥ दुर्गे देवि ! इहा गच्छ सान्निध्य
 मम कुरुय ॥ यज्ञ भागान्गृहाणत्वं योगिनी कोटिभिः सह ॥ इत्यावाह्य
 सर्वात्र यत्नं विधीयं ॥ ओद्दुर्गे-दुर्गे रक्ष स्याद्वा दुर्गायै नमः ॥ जयन्ती
 मङ्गला काली चेति पारान्यां चमनीय मधुपर्क पञ्चामृत शुद्धस्तान वस्त्रा

ऽस्तुते ॥ कर तल कर शृष्टाम्यां नमः ॥ एवं हृदयादिषु ॥
 खड्गनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः ॥ शूलेन पाहिनो देवी० शित्ते
 स्वाहा ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीक्षां च० शिरसायै वृ पट् ॥ सौम्यानि
 यानि रूपाणि० कवचाय हुम् ॥ खड्ग शूल गदा दीनि०
 नेत्र प्रयाय वी पट् ॥ सर्व स्वरूपे सर्वशे० अस्त्राय पट् ॥

अथ ध्यानम्

विशुद्धम सम प्रभां मृग पत्रि स्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः पर धाल
 श्वेत विल्व सद्गताभिगच्छेविताम् ॥ हस्तेरचक्र गदामि खेट विशालां
 रक्षां गुणं तर्जनी विभ्राणा मनलात्मिकां शशिवर्यां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे
 ॥ १ ॥ इति ध्यानम् ॥ प्रथम चरित्रत्य प्रज्ञा श्रुतिः महाकाली देवता
 गायत्रीचक्रम्, नन्दा राक्तिः, रक्त दन्तिका बीजम् ॥ अग्निस्तोत्रम्,
 श्रुतानन्दः स्वरूपम्, श्री महाकाली प्रीत्यर्थं प्रथम चरित्र जपे योगः विनि ॥
 अथ ध्यानमूलकं चक्र गदेषु पाप परिधात्तुलं भुगुण्डो शिरः शोघं
 सन्दर्शनीं हरे स्निहयनां सर्वाङ्ग भूषा भूषाम् ॥ नोक्तास्म पुष्टि मास्य
 पाद् दराक्षं सधे महाकालिकायामलोलपदे हरो कनक जो ह्नु मधु-
 केतभम् ॥ १ ॥ माकण्डेउवाच ॥ १ ॥ सायण्यिः सूर्यं तनयां यामनुः
 ॥ १ ॥ निरामय तदु पति रिस्तरादुगतो मम ॥ २ ॥ महाभाषा

भूपण गन्धाक्षत पुष्प सिन्दूर कज्जलादि ब्रह्म धूप दीप नैवेद्य ताम्बू-
लादि समस्त पत्रिका स्वरूपायै भगवत्यै दुर्गा देव्यै नमः ।

इत्यादीनां दत्त्वा नमस्कारः ॥ उग्र चण्डे रुद्र चण्डे चण्डोप्रे चण्ड
नाशिनी ॥ चण्डिके चण्ड वत्याम्ब चण्ड ! तुभ्यं नमोनमः ॥ महिषगिनि
महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनि ॥ क्षेम मारोग्य मैश्वर्य देहि देवि !
नमोस्तुते ॥ इतिप्रणम्य प्रार्थयेत् ॥ विल्व पत्र मादाय ॥ सुधोद्भव च श्री
युक्तं शङ्करस्य सदा प्रियम् । पवित्रंते प्रयच्छामि विल्व' पर्णं सुरेश्वरि
द्रोण पुष्पमादाय । ब्रह्म विष्णु शिवा क्षीनां द्रोण पुष्प सदा प्रियम् ॥
उत्ते दुर्गे । प्रयच्छामि सर्वा कामार्थं सिद्धये ॥ कुङ्कुमेन समालिप्ते चन्द-
नेन विले पिते ॥ विल्व पत्र कृत्वाऽऽपीडे दुर्गे ह' शरणां गतः ॥ रूपं देहि
यशो देहि, भगंभगवति तथा ॥ पुत्रवान्देहि धनन्देहि सर्वान्कामान्प्रदेहिमे ॥
अथ प्रत्येकं नव पत्रिका पूजा ॥ अथेहेत्यादि नव पत्रिकायां नव दे-
वीनां पूजनं महं करिष्ये इति संकल्प्य आवाहनादि ताम्बूलान्तैः सम्पूज्य
प्रत्येकं प्रार्थयेत् ॥ कल्पयां ब्राह्मणी पूजा ॥ दुर्गे देवि ! समागच्छ सानि-
ध्यमिह कलय ॥ रम्भा रूपेणमेनित्यं शान्तिं कुरु सदा शुभे ॥ ब्रह्माण्यै
नमः ॥ दाडिम्यां रक्त चण्डिकां पूजयेत् ॥ दाडिमि त्वं पुरा युद्धे रक्त बीज-

नुभात्रने यथा मन्वन्तराधिपः । संवभूर्य महाभागः सावर्णिस्तनयो
रवेः ॥ ३ ॥ स्वारो विषेऽन्वरे पूवं चैत्र वंश समुद्भवः ॥ सुरधो नाम
नाम राजाभून्समस्ते क्षिति मण्डले ॥ ४ ॥ तस्य पालयतः सम्यक्प्रजाः
पुजा निवौ रसान् ॥ बभूवः शत्रवो भूपाः कोला विष्वासिभिर्जितः
॥ ६ ॥ ततः स्वपुर माया यो निज देरा धिपो भवत् ॥ आक्रान्तः समहा-
भागस्तैस्त्रिंश प्रवत्तारिभिः ॥ ७ ॥ अमात्यैर्वालिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्यदुरात्मभिः ॥
कोशो बलं चाप हतं तत्रापि स्वपुरे क्तः ॥ ८ ॥ ततो मृगया व्याजेन
हृत् स्वाम्यः समुपतिः ॥ एकाको हयमा रुद्र जगाम गहन वनम् ॥ ९ ॥
स तत्रा श्रम मद्राक्षोद्द्विजवर्यस्य नेधनः । प्रशान्तश्च पदा कीर्णं
मुनि शिष्यो पशो भिउम् ॥ १० ॥ तस्वो कंचित्त कालच मुनिना
तेन सत्कृतः ॥ इत रचेतरच विचरंस्तस्मिन्मुनि वरा श्रमे ॥ ११ ॥
सोऽचिन्व यत्तदा तत्र ममत्वा कृष्ट चेतनः नत्पूवः पालितं पूर्वमयाक्षीर्णं
पुरंदि तत् ॥ १२ ॥ मद्रूत्यै स्तैरसद्रुचैर्धनतः पालयते नवा ॥ न जाने
स प्रधानोमैश्वर हस्वी सदा मद् ॥ १३ ॥ ममं वैरिवशंयातः कान्भोगा
नुपूज्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसाद धनभोजने ॥ १४ ॥ अतुर्बुद्धिं
भुङ्क्तेऽय कूर्वन्त्यन्यनदी भूताम् ॥ असम्पग्न्यय शीनेः तैः जुर्वद्भि सव
वन्वयम् ॥ १५ ॥ संचितः सौख्ये दु खेन ह्यर्थं शोभामिष्यति ॥ पव-

ग्य सम्मुखे ॥ उमा कार्यैकृतं यस्मा दुर्गे देवि नमो नमः ॥ २ ॥ धान्ये
 लक्ष्मीं पूजयेत् ॥ जगतः प्राण रक्षार्थं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ उमा प्रीति
 करवान्यां तस्माद्रक्षतु सर्वादा ॥ ३ ॥ हरिश्रयां दुर्गां पूजयेत् ॥ हरिद्वेष
 वरदे देवि उमा रूपासि सुप्रभे ? ॥ मम विघ्न विनाशाय पूजां चैत्र
 गृहाण भो ॥ ४ ॥ मानके चामुण्डां पूजयेत् ॥ अस्मिन्नेवि समातिष्ठ मान
 वृत्ते राक्षीप्रिये मम चानुमहाशायं पूजारजीकरणाय च ॥ ५ ॥ करचूर के
 कालिकापूजयेत् ॥ मदिपासुर युद्धेषु कालि भूतासि सुवते ! ॥ मम चालु
 प्रशार्थाय आगतासि हर प्रिये ॥ ६ ॥ विल्वे शिवां पूजयेत् ॥ महादेव प्रिय
 करो वासुदेव प्रियः नवा ॥ उमा प्रीतिं करोयस्याद्विल्व वृक्ष ॥ नमो-
 स्तुते ॥ ७ ॥ अशोकै शोक हारिणीम्—हरप्रिय करो वृक्ष ! सदात्वं शोक
 नाशनः ॥ दुर्गां प्रीतिं करोयस्मात् तस्मात्तम् रक्षमां सदाभिति पूजयेत् ॥
 जयन्त्यां कार्तिकीं पूजयेत् ॥ निशुम्भ शुम्भ मथने सेन्द्रेदेव मरौः सद् ॥
 जयन्ति ! पूजयामित्वा यस्माकं वरदाभव ॥ ८ ॥ इति नव पत्रिकां सम्पूज्य
 प्रार्थयेत् ॥ खड्ग छुरिकाधनुष्वज पता का शक्ति धनीसि इन्दुभि शब्द-
 रुद्रारक छत्र चामरे शस्त्रास्त्राणि श्रीदुर्गां समीपे सस्थापयेत् इति-
 सध्वन्या पत्रिका प्रवेशः पूजनविधिरथ ॥ अथ महाष्टम्यां काल

श्चान्य च सतत चिन्तया मास पार्ययः ॥ १६ ॥ तत्र विप्रा धमाभ्याशो
 वैश्वमेकं दृशं सः ॥ सष्टरथेन कस्त्वांभो हेतुरचा गमनेऽवकः ॥ १७ ॥
 मशोक इव कस्मात्तन दुर्भना इवलक्ष्यसे ॥ इत्या कश्यवचत्तस्य भूपतेः
 प्रणयो दितम् ॥ १८ ॥ प्रत्युनाचसतं वैश्यः प्रथया वनतो नृपम् ॥ १९ ॥
 वैश्य उवाच ॥ २० ॥ समाधिर्नाम गौरयोऽह मुत्पन्नोधनिनां कृते ॥ २१ ॥
 पुत्र दारे निरतश्चघनलोभादिसाधुभिः विहीनश्चघर्नैदारे पुत्रे पात्राय
 मेघनम् ॥ २२ ॥ वनमध्यागतो दु खी निरस्त रथाध्वन्धुभिः ॥ सोऽहं न
 वेदि पुत्राणा कुराता कुशलात्मिकाम् ॥ २३ ॥ प्रवृत्तिं स्वर्नां
 नां चदाराणां चात्रास्थितः । किन्तु तेषां गृहे क्षेम मन्त्रे किनुसां
 प्रति ॥ २४ ॥ कथं ते किन्तु सद् पृचादुर्घृताः किन्तु मे सुताः
 ॥ २५ ॥ रात्रो वाच ॥ २६ ॥ योनिरस्तोभयोऽस्तुथिः पुत्राणा
 निर्निचयोः ॥ २७ ॥ तेकिं भवतः स्नेह मनुवध्नातिमानसम् ॥ २८ ॥
 वैश्य उवाच ॥ २९ ॥ एव मेवयथा ग्राह भवानस्मद्वर्तव्य ॥ ३० ॥ किं
 करोमि नवपत्नवित्तम निष्टु रतांमनः ॥ ये संत्यग्य पितृ स्नेहं धन
 मुन्मैर्निराहृतः ॥ ३१ ॥ पति रश्चन हार्दय हार्दितेप्येवमे मनः किमे वप्रा
 भिचानांमि ज्ञानमपि महायते ॥ ३२ ॥

यन्त्रेन प्रयथावच्छं विगुणेष्वपि बन्धुपु ॥ तेषां कृते मेनि रवातो-

रात्री भद्रिका पूजा निर्णयः ॥ नाष्टमी सप्तमी युक्ता सप्तमी
 नाष्टमी युता ॥ नवम्या सह कार्यास्या दष्टमी सर्वदा बुधैः । अष्टमी
 सप्तमी युग्मे महोत्साहे महोत्सवः ॥ इति वाक्यात् । नवमी युक्तायाः
 प्राशस्त्याभि धानात् सति संभवे सप्तमी विद्धा सर्वथा वर्जनीया ॥
 यदि स सूर्यो दये न स्या नवमी वापरे ऽहनि ॥ तदाष्टमी प्रकु-
 र्वीत सप्तम्यासहिता नृपः इति ॥ अहं भद्रा चभद्रा च आवयो
 रन्तरं नहि ॥ सत्रं सिद्धि प्रदास्यामि भद्राया मचिता प्यहमिति
 वचनं भद्र काल्य चन परेण महाष्टम्यां निशीथ काले पूजा कर्त्तव्या । दक्ष
 यज्ञ विनाशिन्या अर्द्धं रात्रे प्रादुर्भावात् ॥ तत्राष्टम्यां महा काली
 दक्ष यज्ञ विनाशिनी ॥ प्रादुर्भूता महाघोरा ह्यार्द्धस्ते चन्द्र मण्डले ॥
 इति ब्रह्म वचनात् ॥ सप्तमी विद्धां न कुर्वीत मुख्य शुद्धा-
 ष्टम्यां काल रात्रि कुर्यात् अष्टम्यां सायं सन्ध्योत्तरं देवी पूजा कार्या ॥
 अघेह दुर्मिच्छादिदुःखादि निवृत्ति दीर्घा युष्य परमानन्द परम पद गमन
 दशाश्व मेघ फल ध्वज माला कुल विमान घरा रोहण शाश्वत

दोर्मनस्य च जायते ॥ ३३ ॥ करोमि किं यन्न मनस्ने प्वशीतिपु
 निष्णुम् ॥ ३४ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ततस्तौ सहितौ विप्र तं
 मुनि समुपस्थौ ॥ ३६ ॥ समाधिर्नाम वैश्यो ऽसौ सच पार्थिवसत्तमः ॥
 कृत्वानु तौ यथा न्यायं यथां हृतेन सविदम् ॥ ३७ ॥ उपविष्टौ
 यथाः कारिच चक्रतु वैश्य पार्थिवौ ॥ ३८ ॥ राजौ वाच ॥ ३९ ॥
 भगवन्त्या मह प्रष्टु मिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४ ॥ दुःखाय
 यन्मे मनसः स्वचित्ता यत्ततांविना ॥ ममत्त्व गतराजस्य राभ्याङ्गे
 स्वविले प्वपि ॥ ४१ ॥ जानतो ऽपि यथाक्षस्य किमे तन्मुनि
 सत्तम ॥ अयं चनिहृतः पुत्रैर् दारैर् भृत्यै स्तथो ज्जितः ॥ ४२ ॥
 स्वजनेन च स त्यक्त स्तेषु हार्दी तथा प्यति ॥ एव मेप तथा
 हंच द्वावप्य त्यन्त दुः प्यितौ ॥ ४३ ॥ दृष्ट द्रोपे ऽपि विपये
 मनत्वा कृष्ट मानसौ ॥ तदिक्रमे तन्महा भाग यन्मोहो ज्ञानिनो रपि
 । ४४ ॥ ममास्य च भव स्येपा विवेकान्ध स्यमूढता ॥ ४५ ॥
 ऋषिर्वाच ॥ ४६ ॥ ज्ञान भस्ति समस्तस्य जन्तो विपय गोचरे
 ॥ ४७ ॥ विपयाश्च महा भाग यानि चैवं पृथक्पृथक् ॥ दिवान्याः
 प्राणिनः केचि ज्ञाता बन्धा स्तथा परे ॥ केचिहिवा तथा रात्रौ
 प्राणिन स्तुन्य दृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं नुते नहि
 केवलम् ॥ यतोहि ज्ञानिनः सर्वे पशु पक्षि मृगादयः ॥ ज्ञानं
 च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृग पक्षिणाम् ॥ ५० ॥ मनुष्याणां च

फाला ऽवद्वित्र हर्षं विजय कामः श्री दुर्गा देव्याः पूजनं ध्यानं
 चाहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ ततः गणेश दोष पूजनावं स्थापनं
 कृत्वा ॥ जटा जूट समायुक्ते स्यादि पूर्वोक्त ध्यानं कुर्यात् ॥
 अथावाहनम् ॥ एहि दुर्गे महाभागे ? रक्षायै मम सर्वदा ॥
 आत्रा हवा न्यहं देवि ? सर्वं कामार्थं सिद्धये ॥ अस्यां
 मूर्तीं समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे
 विश्वेश्वरि ? नमो स्तुते ॥ ॐ एतन्तेति भगवति दुर्गे ? इहागच्छ
 इह लिप्तेह सन्निहिता भव इह स्थिरा भव सुप्रशान्ता भव इत्यां
 वाह्य ॥ ॐ जयन्ती मङ्गला कालीति दुर्गे दुर्गे रक्षिणि ! स्वाहा ॐ दुर्गायै
 नमः ॥ इति मन्त्रेण आमन्त्र पाद्यार्घ्यं पञ्चामृतं स्नाना चमनं शुद्धोदकं
 स्नानं एक वस्त्र भूषणं सिन्दूर चन्दना चत पुष्प कञ्जल धूपदीप नैवेद्य
 ताम्बूल दक्षिणान्तं कृत्वा आवरणां पूजये ॥ देव्या दक्षिणं मागे एका
 दश गौरीः पूजयेत् ॥ ॐ ह्रीं जयन्ती नमः इति । प्रणवादि नमोन्वं
 सर्वत्र होयम् ॥ ॐ ह्रीं मङ्गलायै नमः । ॐ ह्रीं काल्यै नमः । ॐ ह्रीं ह्रीं
 मद्र काल्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं कपालिन्यै नमः । ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः । ॐ
 ह्रीं क्षमायै नमः । ॐ ह्रीं शिवायै नमः । ॐ ह्रीं ध्याय्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं

यत्तेषां तुल्य मन्य सत्यो भयोः ॥ ज्ञाने ऽपि सति पर्यैता न्यतङ्गा
 द्वार चंचुपे ॥ ५१ ॥ कणमोक्ष हवान्मो ह्य स्पीडय गाना
 नपि जुधा ॥ मानुषा मनुज व्याघ्र साभिलाषाः सुतान्प्रति ॥ ५२ ॥
 लोभात्प्रत्यु पकाराय नन्ये तान्किं न पश्यसि ॥ तथापि ममता
 वर्ते मोक्ष गतेनिपातिताः ॥ ५३ ॥ महा माया प्रभावेण संसार स्थिति
 कारिणा ॥ तत्रात्र विरम्यः कार्यो योगनिन्द्रा जगत्पतेः ॥ ५४ ॥
 महामाया हरे रक्षैषा तथा सं मोक्षते जगत् ॥ शान्तिना सपि वेतांसि
 देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ यत्नादा कृप्य मोहाय महामाया प्रय-
 ष्ट्रति ॥ तथा विस्मयतेविषयं जगदे तथा चरम् ॥ ५६ ॥ सैषा
 प्रमत्ता चक्ष्वा नृणा भ्रमति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्ते हंतुभूता
 सनातनी ॥ ५७ ॥ संसारं देवु देवुश्च सैव सर्वैरपरेरपरी ॥ ५८ ॥ राज्ञी
 वाच्य ॥ ५९ ॥ भगवान्कादिसा देवी महामायेवियंभवान् ॥ ६० ॥
 प्रवीति अथमुत्पन्नासं नर्माप्यास्चरि द्विज ॥ यत्प्रभावा च सा देवीरक्ष-
 रूपायदुर्गवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रानुमिष्यदा म त्वत्तो मद्भविदांर ॥ ६२ ॥
 श्रुपिरुवाच ॥ ६३ ॥ नित्येसा जगन्मूर्तिस्तथा सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥
 उमापि तत्समुत्पत्तिं यं द्रुगा भूयानाम् ॥ देवानां कार्यसिद्धयर्थमायिर्भवति
 ज्ञायदा ॥ ६५ ॥ उपनोति तदालोके मन्तियाप्यमधीयते ॥ योग निद्रो

स्वादानमः । श्रौं ह्रीं स्वधा नमः ॥ अर्घ्यादि नैवेद्यान्तः पूजयेत् । देव्यापृष्टं
भागे द्वादश देवी पूजनम् कुर्यात् ॥ ह्रीं मादि नमोन्ताः प्रयोगो यथा—
ह्रीं अप चण्डायै नमः । ह्रीं प्रचण्डायै नमः । ह्रीं चण्डोप्रायै नमः । ह्रीं
चण्डनायिकायै नमः ॥ ह्रीं चण्डायै नमः । ह्रीं चण्डवत्यै नमः ।
ह्रीं चण्डरूपायै नमः । ह्रीं चण्डिकायै नमः । प्रत्येकं सम्पूज्य, दे या
वाम भागे नव देवीः पूजयेत् ॥ ह्रीं उप द्रंष्ट्रायै नमः । ह्रीं शुभ-द्रष्ट्रायै
नमः ॥ ह्रीं करालिन्यै नमः ॥ ह्रीं भीम नेत्रायै नमः ॥ ह्रीं विशाल-क्ष्यै
नमः ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः ॥ ह्रीं जयायै नमः ॥ ह्रीं विजयायै नमः इति
सम्पूज्य ॥ देव्यप्रभागे षोडश देवी । पूजयेत् ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः ।
ह्रीं नदिन्यै नमः । ह्रीं रुद्रायै नमः । ह्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ ह्रीं कीर्त्यै नमः ।
ह्रीं यशस्विन्यै नमः । ह्रीं पुष्ट्यै नमः । ह्रीं शिवायै
नमः ह्रीं सार्थ्यै नमः ह्रीं यशोवत्यै नमः । ह्रीं शोभायै नमः

यदा विष्णुजगत्ये कार्णवोक्तते ॥ ६६ ॥ आस्तीर्यो शेषमभजत्कल्पान्ते
भगवान्प्रभुः ॥ तदाद्वाव सुरौ घोरौ विख्यातो मधुकैटभौ ॥ ६७ ॥ विष्णु
कर्ण मलोद्भूतौ हन्तुं ब्राह्मणमुद्यता ॥ सनाभि कमले विष्णोःस्थितौ
ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ दृष्टवाताय सुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दम् ॥
तुष्टाव योग निद्रां तामेकाग्र हृदयः स्थितः ॥ ६९ ॥ विवोधनार्थाय हरे
हरिर्नेत्र कृतालयाम् ॥ ७० ॥ विश्वेश्वरीं जदयर्थां स्थिति संहार कारिणीम् ॥
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥ ब्रह्मो वाच ॥ ७२ ॥ त्वं
स्वाहा त्वं स्वधां त्वं हि वपदकारः स्वरात्मिका ॥ सुधा स्वमन्त्रे नित्ये
त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धं मात्रा स्थिता नित्या यानुचार्या विशेषतः ।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देविजननी परा ॥ ७४ ॥ त्वये तर्द्धायिते विश्वं
त्वयै तत्सृज्यते जगत् ॥ ७५ ॥ त्वयेतत् पाल्यते देवित्व मत्प्रन्ते च
सर्वादा ॥ विस्तृष्टौ सृष्टिरूपात्वं स्थिति रूपाच पालने ॥ ७६ ॥ तथा
संहति रूपान्ते जगतोस्य जगन्मये ॥ महा विद्या महा माया महामेधा
महास्मृतिः ॥ ७७ ॥ महा मोहा च भवती महा देवी महासुरी ॥ प्रहृ-
तिस्त्वं च सर्वस्य गुण त्रय विभाविनी ॥ ७८ ॥ कालरात्रिमहारात्रि मोह-
रात्रिश्चक्षुराणां ॥ त्वं श्रीस्त्वमीरवरी त्वं ह्रीं स्त्वं बुद्धिबोध लक्षणा ॥ ६॥
लज्जा पुष्टि तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च । खड्गिनी शूलिनी
घोरा गद्दिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणमुष्टण्डो
परिघायुधा ॥ सौम्या सौम्य तराश्रोप सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी ॥ ८१ ॥ परा
परा ॥ परमात्ममेव परमेवरी । यच्च किंचित्क्यचिद्वस्तुसद्दृढासदास्वित्त्वक्त्विके
त्सर्व सर्वस्या शक्तिः सात्त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यथा स्वयाजगत्स्रष्टा जगत्वा-

इज्यायै नमः । ह्रीं धृत्यै नमः । ह्रीं आनन्दायै नमः । ह्रीं मेधायै नमः । ह्रीं
 नन्दायै नमः । इति पूर्ववदमभ्युजयेत् देव्याप्र भागे चतुः पष्टिदेवौ ह्रीं वीजयै
 नमः पूजयामि ॥ ह्रीं मङ्गलायै नमः पूजयामि ॥ ह्रीं भद्रायै नमः पूजयामि ॥
 ह्रीं धृत्यै नमः पू० । ह्रीं शान्त्यै नमः पू० । ह्रीं शिवायै नमः पू० । ह्रीं ज्ञानायै
 नमः पू० । ह्रीं सिद्धे नमः पू० । ह्रीं तुष्ट्यै नमः पू० । ह्रीं पुष्ट्यै नमः
 पू० । ह्रीं उमायै नमः पू० । ह्रीं श्रियै नमः पू० । ह्रीं श्रद्धे नमः पू० ।
 ह्रीं रत्यै नमः पू० । ह्रीं दीप्त्यायै नमः ॥ पू० ॥ ह्रीं कात्यै नमः पू० ।
 ह्रीं लक्ष्म्यै नमः पू० ॥ ह्रीं ईश्वर्यै नमः पू० । ह्रीं वृद्धयै
 नमः पू० । ह्रीं शक्त्यै नमः पू० । ह्रीं जया वत्यै नमः पू० । ह्रीं
 ब्राह्मे नमः पू० । ह्रीं जयन्त्यै नमः पू० । ह्रीं अपराजितायै नमः पू० । ह्रीं

त्वत्तियो जगन् ॥ ८३ ॥ सोऽपि निद्रा वशं नीतः कस्तवां स्तोतु मिदं
 श्वरः ॥ विष्णुः शरीर ग्रहण मह मीशान एष च ॥ ८४ ॥ कारि तास्ते
 यतोऽतस्त्वां कः स्तोतु शक्तिमान्भवेत् ॥ सात्व मित्थं प्रभावैः स्वै रुदारै
 र्देवि संतुता ॥ ८५ ॥ मोक्षयती दुराधर्षा वसुरी मधुकैटभी ॥ प्रबोधं च
 जगत्सामी नीयता मच्युतो लघु ॥ ८६ ॥ बोधश्च क्रियता मस्य हन्तु
 मेतो महासुरी ॥ ८७ ॥ अपिरुवाच ॥ ८८ ॥ एवं स्तुता तदा देवी तामसी
 तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः प्रबोध नार्थायनिहन्तुं मधुकैटभो ॥
 नेत्रास्य नामिका बाहु हृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ
 ब्रह्मणोऽव्यक्त जन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जगन्नाथ स्तया सुकोजनादनः ॥
 ॥ ९१ ॥ एकाण्यै वैशिष्ट्ये रायना ततः सदहरो च ती ॥ मधुकैटभी दुरात्माना
 चनि वीर्यं पराक्रमी ॥ ९२ ॥ क्रोधरक्तो ज्ञानावत्तुं प्रह्लाणुं जनितो रमी ॥
 समुत्थाय ततस्त्वाम्यां युयुधे भगवान्दरिः ॥ ९३ ॥ पञ्च वर्षं सद्दसाणि बाहु
 प्रहरणो विभुः ॥ तावप्यति बलोन्मत्तो महाभाया विमोहितौ ॥ ९४ ॥
 उक्त वन्ती बरोस्मत्तो त्रियता मितिकेशवम् ॥ ९५ ॥ भगवानुवाच ॥ ९६ ॥
 भवेता मयमे तुष्ट्यै मम वध्या जुमां षपि ॥ ९७ ॥ किमन्येन वरे गुण
 एतायद्वि श्रुत्तं मया ॥ ९८ ॥ अपिरुवाच ॥ ९९ ॥ याञ्छिताम्यां मिति
 तदा सर्वा पावो मयं जगन् ॥ विनोम्य ताम्यां गदितो भगवान्कर्मले क्षण
 आयां जहि न यत्रोर्षां सलिलेन परिप्लुत्वा ॥ १ ॥ अपिरुवाच ॥ २ ॥
 तथेयुस्त्वा भगवता रांय चक्र मदाभुता ॥ कृत्वा पकेण वेदिने जघने
 शिरसी तयोः ॥ ३ ॥ एव मेवा समुत् पत्रा प्रह्लाण सन्तुता स्यम् ॥
 प्रभाय मस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामिते ॥ ४ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे
 सार्वभौम मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये मधुकैटभ वधो नाम प्रथमाध्यायः ॥ १ ॥
 उवाच ॥ १४ ॥ अर्पे ॥ २४ ॥ शो ॥ ६६ ॥ एवम् ॥ १०४ ॥

अजितायै नमः पू० । ह्रीं मानस्यै नमः पू० । ह्रीं दित्यै नमः पू० । ह्रीं
 मायायै नमः पू० । ह्रीं महा मयायै नमः पू० । ह्रीं मोहन्यै नमः पू० ।
 ह्रीं रति लालसायै नमः पू० । ह्रीं तारायै नमः पू० । ह्रीं विमलायै नमः पू० ।
 तद्वा ह्रीं गीर्वाण्यै नमः पूजयामि । ह्रीं शारण्यायै नमः पू० । ह्रीं कौशिक्यै नमः
 पूजयामि । ह्रीं मत्स्यै नमः पू० । ह्रीं दुर्गायै नमः पू० ॥ ह्रीं क्रियायै नमः ।
 पू० । ह्रीं अहन्वत्यै नमः पू० । ह्रीं घण्टायै नमः पू० । ह्रीं कर्णायै
 नमः पू० ॥ ह्रीं कपालिन्यै नमः पू० । ॥ ह्रीं रौद्रायै नमः पू० । ह्रीं काल्यै
 नमः पू० । ह्रीं मातृर्यै नमः पू० । ह्रीं त्रिनेत्रायै नमः पू० । ह्रीं स्वरूपिन्यै
 नमः पू० । ह्रीं बहु रूपायै नमः पू० ॥ ह्रीं रिपु हन्त्र्यै नमः पू० । ह्रीं
 अश्विनीयै नमः पू० ॥ ह्रीं चर्षिकायै नमः पू० । ह्रीं सुर पूजि-
 तायै नमः पू० । ह्रीं वीवस्वत्यै नमः पू० । ह्रीं कौमार्यै नमः
 पू० । ह्रीं माहेश्वर्यै नमः पू० । ह्रीं वैष्णव्यै नमः पू० । ह्रीं महा-
 लक्ष्म्यै नमः पू० । ह्रीं शिवदूत्यै नमः पू० । ह्रीं कार्तिक्यै नमः पू० ।
 ह्रीं कुशिकायै नमः पू० । ह्रीं चामुण्डायै नमः पू० । इति संपुज्या

मन्त्रम चरितस्य ॥ विष्णु ऋषिः ॥ महा लक्ष्मी देवता ॥
 उच्छिष्टं छन्दः ॥ शार्ङ्गभरो शक्तिः ॥ दुर्गावीजम् ॥ वायुवत्त्वम् ॥
 यजुर्वेदः स्वरूपम् ॥ महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं मन्त्रम चरितं त्रये विनि-
 योगः ॥ अध्ययानम् । ॐ अक्षतकपरशुं गदेषु कुजिशं पद्मं धनु-
 षिकुण्डिकां दण्डं शङ्खं मणिं च चर्म जलजं घण्टां सुरा भोजनम् ॥
 शूलं पाशं मुद्गरानि च दध्वां हस्तैः प्रसन्ना ननां सेवे शौरि-
 मदिनी मिह महालक्ष्मी सरोज स्थिताम् ॥ १ ॥ ऋषिहोत्राच देवा सुर यम्
 दध्वां पूणं मन्त्रं शतं पुरा ॥ महिषे सुराणाम विषे देवानां च
 पुरं दरे ॥ २ ॥ तत्रा सुरैर् महा वीर्यै देव सैन्यं पराजितम् ॥
 जित्वा चसकला न्देवानिन्द्रोऽभून् महिषा सुरः ॥ ३ ॥ ततः
 परा जिता देवाः पद्म योनि प्रजापतिम् ॥ पुरस्कृत्य गन्तास्तत्र यवेश
 गरुडभ्रजौ ॥ ४ ॥ यथा वृत्तं तयो स्तद्वन्महिषा सुर चेष्टितम्
 ॥ ५ ॥ त्रिदशाः कथया मासुर्देवाभि भवविस्तारम् ॥ ५ ॥ सूर्ये
 न्द्राग्न्ये निम्नोद्भूतां यमस्य वरुणा स्यच ॥ अन्येषा चाधि का
 रान्त स्वयमेवाभितिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गो त्रिराकृताः सर्वे तेन देव
 गणा भुवि ॥ विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥
 एतद्गः कथितं सर्वं ममरारि विचेष्टितम् ॥ शरणं वः प्रपन्नाः
 स्मोवथ स्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ इत्थं निशम्य देवानां वना-
 सिन्धु सूदनः ॥ चकार कोपं शंभुरन भ्रुकृती कुटिला ननी,

अष्ट मातृकार्या अष्टदिक्षु पूजनं कुर्यात् ॥ ब्राह्मण्यै नमः । भार्गव्यै नमः । कोमार्यै नमः । वैष्णव्यै नमः । वाराह्यै नमः । इन्द्रायै नमः । चामुण्डायै नमः । महालक्ष्म्यै नमः । मध्ये वलिङ्कार्यै नमः । देव्या अप्रभागे भैरवाय नमः । इति पूजयेत् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ भैरवं परमं देवं सर्वं काम प्रसाधनम् । पूजयाम्नुर्द्ध्वो देव्याः सर्वाधिकं फलं प्रदम् ॥ ततः श्री परमेश्वर्यै नमः ॥ दुग्धं कुशं दधि वरदं तण्डुलं यव सपंपादि दश सहस्रं वर्षां वद्विभ्रं दुर्गां लोहं मदी पतित्वं काम एषो षाड्भो ऽर्घो भगवत्यै दुर्गा देव्यै मया दत्तः ॥ दुर्गे ? दुर्गे ? रक्षिणि स्वाहा दुर्गा देव्यै नमः । इत्यर्घं दत्त्वा चन्दनं दद्यात् ॥ अग्निं प्लोमं यज्ञं फलं फलं प्राप्तिं कामनया चन्दनेन भगवत्यै दुर्गा देव्यै अनुलेपनं दत्तं दुर्गा देव्यै नमः ॥ विल्वपत्रं मालां मादाय ॥ चन्दनेन समाक्षिप्ये कुङ्कुमेन विलेपिते । विल्वं पत्रं कुर्वां मालां गृह्णाणामुरं वन्दिते ? ॥ दुर्गा देव्यै नमः । अथ सिद्धं पूजा ॥ ॐ ह्रीं ह्रः ह्रः महा शार्ङ्गं विनायकं विङ्गलं लोचनाय नमः ॥

॥ ६ ॥ ततो ऽति क्रोधं पूर्णस्य चक्रिणो वदना ततः ॥ निरचं क्रामं महं तेजो ब्रह्मणः शंकर स्वयं ॥ १० ॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ॥ निर्गतं सुमहत्तेजस्तथैव नमराच्छिव ॥ ११ ॥ अवीचं तेजसः कूर्तं अकलन्तमिव पर्वतम् ॥ ददुःशुस्ते सुभा स्तत्र ज्वाला व्याप्तं दिगन्तरम् ॥ १२ ॥ अदुर्लभं तत्र तेजसः सर्वं देव शरीरजम् ॥ पृथग् तदं भूजारी व्याप्य लोकं त्रयं विषया ॥ १३ ॥ यद्भू च्छाम्भवं तेजस्तेना जायते तन्मुखम् ॥ चाप्ये न चाभवन्केशा बाहवो विष्णु तेजसा ॥ १४ ॥ सीम्येत स्तनयो युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ॥ वारुणे न च जंघोरु निवन्व स्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥ प्रहृष्टं स्तेजसा पादौ तदं गुप्तो ऽकृतेजसा ॥ वसूनां च करं गुह्यः क्षीरेण च नासिका ॥ १६ ॥ तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजापत्येन तेजसा ॥ नयनत्रितमं जह्ने तथा पावकं तेजसा ॥ १७ ॥ अथौ च संभ्ययो स्तेजसः श्रवणां वनिलस्य च ॥ अन्येषां चैव देवानां संभव स्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥ ततः समस्त देवानां तेजो राशिसंमुद्रयाम् ॥ तां शिरोऽप्यमुर्धं प्रातु त्वेव महिषादिताः ॥ १९ ॥ शूलं शूनादिनिष्ठं च दरीभयं विनाकं पृक् ॥ पञ्चं च दत्तं यान्दृष्ट्याः मसुपादां च चक्षुः ॥ २० ॥ शंभो न चक्षुः शक्तिदरी तस्यै दृता-

अथ देव्याः पङ्क्तु पूजा । ॐ कालीवज्रे श्वरी लोह द्रष्टाय
स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ काली वज्रे श्वरी लोह द्रष्टाय स्वाहा
शिरसे नमः । ॐ काली वज्रेश्वरी लो० शिखायै वषट् ॥ ॐ
काली वज्रेश्वरी लो० कवचाय हुम् ॥ ॐ स्वाहा काली
वज्रेश्वरी लोह द्रष्टाय स्वाहा ॥ नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ काली
वज्रे श्वरी लोह द्रष्टाय स्वाहा अस्त्राय फट् ॥ अथास्त्र पूजा-
त्रिशूजायनमः । खड्गाय नमः । चक्रायनमः । तीक्ष्ण वाणायनमः ।
शक्रेनमः । इति दक्षिणे ॥ खड्गायनमः पूर्ण चापायनमः । अङ्कशाय-
नमः । घण्टायै नमः इतिवामे । अथ सिंहासन पूजा । वज्र नख द्रष्टायु
धाय महासिंहाय हुं फट् नमः ॥ विजयो जयदो जेता विप्रभेता भयङ्करः ।
दुःखहा धर्मदः शान्तः सर्वारिष्ट विनाशिकः ॥ इत्यष्टौ तत्र नामानि
तस्मात्सिंहासनाक्रमः ॥ तेन सिंहासनो नित्यं नाम्ना देवेषुगीयते ॥ त्वयि
स्थितः शिवः साक्षात्त्वापि शक्रः सुरेश्वरि ! ॥ त्वयि स्थितो हरो देवस्त्व
दर्थं तप्यते तपः ॥ नमस्ते सर्वतो भद्रं भद्रतो नव भूपते ॥ त्रैलोक्यत्रय
सर्वस्व सिंहासन ! नमोऽस्तुते ॥ अथ खड्ग पूजा ॥ असि विसजनम् ॥
पङ्क वाक्षसधरो दुरासदः ॥ श्री गर्भो विजयरचैव धर्म राजस्तथैव च ॥
इत्यष्टौ तत्र नामानि स्वयमुक्तानि वेधमा ॥ नक्षत्रं कृतिकातेतु गुरुदेवो

शनः ॥ मारुतोदत्त वांरचापि वाण पूर्णो तथेपुर्धा ॥ २१ ॥ वज्र मिन्द्रः
समुत्पाद्यकुलिशा इमराधिपः ॥ ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टा मेरावता
द्रजात् ॥ २२ ॥ कालदण्डाद्यमोदण्डं पारां चाम्बु पतिर्ददौ ॥ प्रजापतिरवा-
चमाकां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ समस्त रोम कूपेषु निजरश्मीन्दिवा-
करः ॥ कालरचदत्त वान्त्रङ्ग तस्यान्वर्मच निर्मलम् ॥ २४ ॥ क्षीरोदश्चा
मलं हार भजरे च तयान्वरे ॥ चूडामणि तथा दिव्यं कुण्डले षट्का
निच ॥ २५ ॥ अर्ध चन्द्रं तथा शुभ्रं केशूरान्सर्वां राहुपु ॥ नूपुरी विमली
वद्वर्षमेय कमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ अगुलीयक रत्नानि समस्ता स्यगुलीपुत्र ॥
शिरस्कर्मा ददौ तस्यै परशुं चात्रि निर्मलम् ॥ २७ ॥ अस्त्राय नेक रूपाणि
तथा नेर्यं च दर्शनिम् ॥ अन्तल पञ्चजां माकां शिरस्यु रसि चापाम् ॥
अवद्वज्रलक्षित्वास्त्यै पंकजं चाति शोभनम् ॥ हिमवान्वाहनं सिद्धं रत्नानि
त्रिविधाः निच ॥ २८ ॥ ददान् श्यमं सुरया पान पात्रं घनाधिपः ॥ श्रेयश्च
सर्वा नागेशो महामणि विभूषितम् ॥ २९ ॥ नागहारं ददौ तस्यैधर्षीया
शुभ्रिणी भिमाम् अन्यै रपि सुरै र्देवी भूपणै रायुधै स्वभा ॥ ३० ॥
समानिवां ननादोषैः साष्टु हार्यं मुहुसुद्धः ॥ तस्यानादेनघोरेण रत्नमा
पूरितं नमः ॥ ३१ ॥ अमायवाति महताप्रति रन्दो मढानमूत ॥ चन्द्र-

महेश्वरः ॥ रोहिणीश्च शरीरं तेषां देवो जनार्दनः ॥ पिता पिता महो
 देवस्तंभा पालयसर्वादा ॥ नीलजी भूत शङ्खाशस्तीक्ष्ण द्रष्ट कृशोदः ॥
 विशुद्ध धर्मा सततं तीक्ष्णधारस्तथैवच ॥ इयं येन हता क्षीणी हतरथ
 महिषा सुरः तीक्ष्णधार य शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ अथ क्षुरिका
 पूजा ॥ सर्वायुधानां प्रथमं निर्मितोसिपिनाकिना ॥ शूला पुष्पो द्विनि
 प्लुष्य कृत्वा मुष्टि मह शुभम् ॥ चण्डिकायै प्रदत्तासि सर्वा दुष्ट
 विनाशिनी ॥ तथा विस्तारिता चासि देवानां प्रति पादिता ॥
 सर्वं सर्वाङ्ग भूतानि सर्वं दुष्ट निवारिणी ॥ क्षुरस्के रक्षमां
 नित्यं शान्ति यन्त्र नमोस्तुते ॥ अथ कट्टार प० ॥ कट्टारक ।
 जगद्रक्ष ! रक्ष त्राजिपना निच ॥ ममदेहं सदा रक्ष कट्टारक ! नमोस्तुते ।
 अथधनु० ॥ सर्वायुध महाशस्त्र सर्वं देवा रसूदन ॥ चाप । मां समरेक्ष
 सायकैः सुरसेवितः ॥ धृतं कृष्णेन रक्षार्थं संहाराय हरे एक ॥ त्रयीमूर्ति
 र्व त्वं देव ! धनुरस्त्रं नमाम्यहम् ॥ अथ चर्म० ॥ चर्मं प्रदस्त्वं समरे सर्व
 सैन्यस्य रक्षकः ॥ रक्षमां रक्षणीयो हं त्वयाः नद्य ! नमोस्तुते ॥ अथ

सकला लोकाः समुदारच चकं पिरे ॥ ३३ ॥ चवाल वसुधा चेलुः
 सकलारच महीवराः ॥ जयेति देवारच मुदाता मूचुः सिंह वाहिनीम् ३४ ॥
 नृपुत्रुं मुनय रत्नैनां भक्ति नम्रात्ममूर्तयः ॥ दृष्ट्वा समस्तं स क्षुब्ध
 त्रैलोक्य मपरारयः ॥ ३५ ॥ सन्नद्राखिलसैन्यास्तैसमुत्तस्पुरुदा युधाः ॥
 आः कि मेतदिति क्रोधादाभाप्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ अन्वधावतत शब्द
 मशेषैरसुरैर्युतः ॥ सददरो ततो देवी व्याप्त लोक त्रयात्विषा ॥ ३७ ॥
 वाता क्रान्त्वा नतभुगं किरीटोलिलाम्बिताम्बराम् ॥ क्षोभित शेष पातालां
 धनुर्धानिः स्वनेनताम् ॥ ३८ ॥ दिशो भुजसहस्रेणसमन्ता द्रुपाप्य सांस्थि
 ताम ततः प्ररुतेयुद्धं तथा देव्यासुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥ शस्त्रार्थैर्वह्या मुक्तै
 रादी पितृदिगन्तरम् ॥ महिषा सुर सेन्ननीश्चक्षुराप्त्यो महा-
 सुरः ॥ ४० ॥ इयुधे पामरश्चान्येरषतुरग वलान्वितः ॥ स्थानां मयुत
 पद्भिर्दुःप्रारुयो महासुरः ॥ ४१ ॥ अयुष्य ता युवानां चसःश्रेण
 महाहनु पन्था शङ्करच त्रियुते रसि लोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ युवानां
 शतैः पद्भिर्घातलोयुसुरैरेणैः ॥ गज वाजि सहस्रीघोरनेकैः पवित्रा
 रितः ॥ ४३ ॥ शूलो स्थानां फोट्यां च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ॥ विद्वान्ना-
 णोऽयुवानांन पञ्चाराष्ट्रि रवायुते ॥ ४४ ॥ युयुधे सयुगे तथ स्थानां
 परि वारितः ॥ अन्ये च नप्रायुतशो रथ नाम हयवृता ॥ ४५ ॥ युयुधः
 संयुगे देव्या सह तत्र मत्ता मुगः ॥ फोटि फोटि सहस्रेभ्यु स्थानां
 दन्तिना तथा ॥ ४६ ॥ हयानां च शूलो युद्धे तत्रा नून्महिषा सुरः । तीमेर

वारण० ॥ खड्गायुधानां त्रातात्वंवारणः सर्वावारणाः॥वीराणां देहिधारीत्वं
 वारणं सिद्धिं नायक ! ॥ अथ मर्दल० नर्त्तकीं नर्त्तकश्चैव बल्लभ ! त्वं
 नृपस्य च । मृदु मर्दलमा रत्न गम्भीर ध्वनि मर्दल ॥ अथ दुन्दुभि० ॥
 दुन्दुभैश्च सपरानातां घोषो हृद्य कम्पनः ॥ त्वत्पूजकानां सौम्यानां तथा
 विजय वर्द्धनः ॥ यथा जीमूत घोषेण हृष्यान्ति वर वारणाः । तथास्तु तव
 शब्देन घोषोऽस्माकंभयावहः ॥ अथ वाण० ॥ कामदेवस्य देवानां
 सफलार्थाजुनस्य च ॥ रामस्य च यथा वाणास्तथास्मार्कं भवन्तिवह ॥
 अथ त्रोण० । रक्त वृक्ष स्थितं त्वं च पूर्णं मायुध सायकैः ॥ सङ्ग्रामे
 विजयं नित्यं त्रोणं काय नमोस्तुते ॥ अथ कुन्त० ॥ पाश पातय शत्रु त्वं
 त्वनया लोके मायया ॥ गृहाण जीवितं तेषां मम सैन्यं च रक्षताम् ॥

अथ पताका० ॥ नागकिन्नर गन्धर्वं बल्लभूत महोरगाः प्रमथारच—
 महादेवो भूतेशोभातुभिः सह ॥ शक्र सेनापति स्कन्दो बरुणश्चाश्रित-
 स्वयि ! ॥ प्रद हन्तु रिपून् सर्वान् विजयं चस गच्छतु ॥ यानि मुक्तानि-
 रिपुभि भूषणानि समन्ततः ॥ निदि तानि सदातानि त्वया दुष्प्रिद्यतेजसा

भिन्दि पालेस्व शक्ति भिमुसलैस्त्वया ॥ ४७ ॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः
 परशु पट्टिरीः ॥ केचिच्च चित्तिपुः शक्तीः केचित्पासांस्तथा परे ॥ देवी
 खड्ग प्रहारंस्तु ते तां हन्तु प्रचक्रमुः ॥ सापि देवी तनस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि
 चण्डिका ॥ लीलयैवः प्रविच्छेद निजशस्त्रान् वरिणी ॥ अनायस्ता
 नना देवीस्नूय माना सुरभिः ॥ ५० ॥ सुमोचा सुर देहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि
 पेशवरा ॥ सोऽपि क्रुद्धोयुत सटो देव्या वाहन केसरी ॥ ५१ ॥

चचारा सुर सैन्येषु वनेष्विव हुतापनः ॥ निःशसांनुमुचे यांश्चयुष्य
 मानारण्येऽभ्यकाः । त एवसद्यः संभूतागणाः शत सहस्रशः ॥ युयुधुस्ते
 परशुभि भिन्दि पालासि पट्टिरीः ॥ ५३ ॥ नाशयन्तोऽसुरगणान्देवी शक्त्यु
 पब्रंहिता ॥ अवाद्यन्त पटहान्नाणाः शंखांस्तथा परे ॥ ५४ ॥ हृदङ्गारप
 नभैवान्ये तस्मिन्नुद्ध महोत्सवे ॥ ततो देवी त्रिशूलेन गदयाशक्ति
 वृष्टिभिः ॥ खड्गादिभिरच शतशो निजघान महा सुरान् ॥ पातयामास
 पैवान्यान्यपट्टास्थन विनोहितान् । अशुरान्पुरि पारोत वषा चान्या न
 कर्षयन् ॥ केचिद्दृष्ट्वाकृता स्तोत्रयोः सङ्गपातैस्त्वयापरे । ५७ ॥ वियो-
 धिता निपातेन गदया बुधिरोगं ॥ वेनुरप केचिद्बुधिरं मुसचेनभृशंहता ५८
 केचिन्निनातिताभूमिन्ना-शूलेनयससि ॥ निरन्तप-शरीपेणुशुवाः केचिद्-
 पात्रिरे । सेनानुकारिणाः प्राणान्नुनुचुप्रिदशादनाः ॥ केसाधिदाह्यशिदन्ना-
 रिदन्ममायास्तया परे ॥ ६० ॥ शिराभि पेनुग्नेगामग्नेमग्नेरिदरिताः ॥
 विच्छिन्न जंपा स्वपरे पेनु हर्ष्यां महानुग ॥ ६१ ॥ एक

काल नेमिवधे युद्धे तथा त्रिपुर घातने ॥ हिरण्यकश्यपेयुद्धं यथा
 त्रेवासुरे तथा ॥ शोभितासि सुरे कन्या शोभसे संयुगे वतः ॥ नीलांशुवे
 मिमां दृष्ट्वा विनश्यन्तु ममारयः ॥ अथध्वजापूजा ॥ शक्र केतु महावीर
 सुवर्णस्वव्युपासितः ॥ दया प्रधान योगानां कुरु रक्षां रिपोर्भयात् ॥
 अथं वीणा० शास्त्रा वल्लभे ! त्वं हि अद्भुता शत भूपिते ॥ वीणे । त्वं
 रक्षमां नित्यं विदग्ध नृप वल्लभे ॥ अथ जिरह० शर्म दस्त्वं हि समरे
 धर्म सैन्य संसोधने ॥ रक्षमां रक्षणीयोऽहं तवा नद्य । नमोस्तुते ॥ अथ
 कुण्डल० ॥ प्राण इन्त्री रिपुस्त्वं चा मलयोऽऽलोकमालया ॥ गृहस्थ
 जीवितन्तेपां सैन्यं च मम रक्षताम् ॥ अथ चामरम् ॥ शशाङ्क का
 शङ्काशो हिमडिण्डिमहासुर- प्रोत्सारयाशु दुरितं चामरा मर पूजित ॥
 अथ छत्रम् ॥ यथाम्बुधं द्यादयति शिवायेमां वसुन्धराम् ॥ तथा
 द्यादयमा छत्र विजया रोग्यवर्द्धये ॥ अथ शङ्ख ॥ पुण्यदः शङ्खः !
 पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥ विष्णुना त्वं धृतो नित्य मतः शान्ति

वाङ्मिचरणाः केचिदेव्याद्विधा कृताः ॥ छिन्नेऽपि चान्येः शिरसि पतिता
 पुनरुत्थिताः कवन्वा युयुधुर्देव्या गृहीत परमा युधाः ॥ नचतुरवापरे
 तत्रयुद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥ कवन्धारिखन्न शिरसः सङ्गशक्युष्टि
 पाणयः ॥ तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ पानितेरथ
 नागारचैर सुरेश्च वसुन्धरा अगम्या साऽ भवत्त त्रयत्रा भूतमहारणः ६५ ॥
 शोणितोषा महानद्यः सद्यस्तत्र विमुञ्चुः ॥ मध्ये चा सुर सैन्यस्य वारणा
 सुरवाजिनाम् ॥ ६६ ॥ ज्ञेनेन तन्महा सैन्यमसुराणां तथास्त्रिका ॥
 निन्येद्यं यथा बद्धिस्तृष दारु महाचयम् ॥ ६७ ॥ स चसिद्धो महानाद
 मुत्सृजन्धृतकेसरः ॥ शरीरेभ्योऽमराधीणा मस्निवविचिन्वति ॥ ६८ ॥
 देव्यागणैश्च स्तस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः ॥ यथैषां तुष्टुवुर्देवाःपुष्पवृष्टि मुनी
 दिवि ॥ ६९ ॥ इतिमार्कण्डेय पुराणे साधरिं के मन्वन्तेर देवी माहात्म्ये
 महिषासुर सैन्य वधो नाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥ उवाच ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ६८ ॥
 एवम् ॥ ६९ ॥ एव मादितः ॥ १७३ ॥

अथध्यानम्—अथद्धानु सहस्र कान्ति मरुण क्षीमां शिरोनालिकां
 रक्षाभिध्वज योधरां जपवटीं विद्याम भीतिवयम् ॥ ह्रस्वान्जैर्दपतीत्रिनेत्र
 पिलसद्वयकारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमां शुरत्नमुक्तां बन्देसुमन्दारिमिताम् ॥
 प्रपिठवाच ॥ १ ॥ निहन्य मानंतत्सैन्य मरुतोक्त्य महासुरः ॥ सेनानी
 रिपुसुर- कौपाद्ययोर्द्व मगान्त्रिकाम् ॥ सदेवी शर वर्षेण वर्षे समरे
 ऽसुरः ॥ ययामेक गिरेः००गवोप वर्षेणवोषदः ॥ ३ ॥ तस्वच्छित्वा वतो
 देवी क्षीलयेथ शतोत्तरान ॥ जपान तुरगान्याण्योयन्तार वैववाजिनाम् ४ ॥

प्रयच्छमे ॥ इति शखाख पृजा ॥ श्रो परमेश्वर्यै नाना पुष्पमाल्य दीप
माला दाना पञ्चान्न कदली फलाग्रेजु नारङ्गबीज पूर मूलक कुम्भाएद
ताम्बूल पूगी फले त्यादिमिष्टमिष्ट द्रव्यं यथा शक्ति दत्वा ॥ रक्त
पुष्पाञ्जलिमादाय स्तुतिं पठेत् ॥ ॐ दुर्गा शिवां शान्ति करीं ब्राह्मणीं
ब्रह्मणः प्रियाम् ॥ सर्वं लोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदा प्रियाम् ॥ मङ्गलां
शोभनां शुद्धानिष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्वमातां प्रणमामि
सदा उमाम् ॥ सर्वं देवमयीं देवीं सर्वं रोगभया पद्माम् ॥ बहोश विघ्नु
नमितां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्य निलया दिव्य स्थान
निवासिनीम् ॥ योगिनीं योग जननीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥ ईशान
मातरं देवी मोरेश्वरी मोरेश्वर प्रियाम् ॥ प्रणवात्मिसदादुर्गांसंसारार्णव वारि
णीम् ॥ यद्दं पठतिस्त्वोन्नं सृणुंया द्वापियो नरः ॥ समुक्तः सर्वापापैस्तुमोवसे
दुर्गायासह ॥ इतिस्तुत्या प्रणमेत् ॥ यत्र नस्याद्विलिदानंतत्रगोदानमीरितम
अयाग्निस्थापन विधिनाअग्निस्थापनंकृत्वा होमं कुर्यात् अथ वलिदान
विधिः ॥ प्रथमं ज्ञाग सेचनं ॥ स्वयंभूर्वासुदेवश्च शङ्करश्चमहोदयः सदा
रारश्चस पुत्राश्च सगणार्चस शक्तयः ॥ प्रोक्षन्तु त्वां पशु
श्रेष्ठ मेते विश्वैक हेतवः ॥ छागाय नमः इति अर्घं चन्दन पुष्प
धूप दीप नैवेद्यान्तैः पूजां विधाय खड्गाय नमः इति खड्गं संपूजयेत् ॥
अत्र प्रसङ्गवशाद्गामहिपादि रुधि रेणं कृत्विमाह ॥ मेपहधिरेण एकवर्ष

चिच्छेदचधनुःसगो ध्वजं चाति समुच्छ्रितम् ॥ त्रिभयाध चैवगात्रे पुच्छिन्न
धन्वा नमाशुगैः ॥ ५ ॥ सच्छिन्नधन्वा विरथोदतारवोदतसारथिः ॥
अथवा वतवां देवीं खड्ग चमधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंह माहृत्य खड्गेन वीर्य
धारेण मूर्धनि ॥ आजघान भुजे सव्ये देवी मध्यति वेगवान् ॥ ७ ॥
तस्याः मङ्गो भुजं प्राप्यपफाल नृप नन्दन ॥ तवो जगद्द शूलं
सकोपा दक्षुण लोचनः ॥ ८ ॥ चित्तोप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ॥
जाभवत्य मानं तेजोमी रवि विन्ध्य मिदाम्बरान् ॥ दृष्ट्वातदा
पतच्छूलं देवीशूलममुञ्चयुत ॥ तच्छूलंशतधातेन नीवं सच महासुरः ॥ ९ ॥
हते वस्त्रिभन्महावीर्ये महिषस्य वमू पत्नी ॥ आज गाम गजारुदरचामर
खिदशादनः ११ ॥ सोऽपि शक्तिं मुनो षाध देव्यास्वामभिवकाद्रुतम् ॥
हु कारानि हतां भूमौ पातया मासनिष्प्रभाम् ॥ १२ ॥ भन्नां शक्ति निपततां
दृष्ट्वा क्रोध समन्वितः ॥ चित्तोप चामरः शूलं वायैस्वदपिसाच्छिन्नम् १३
ततः सिंहः ममुत्तरगज कुम्भान्तरेस्थितः ॥ बाहु युद्धेन युयुषे नेतुर्बहि
दशारिषा ॥ १४ ॥ युष्मानौ तवस्त्वोत्तस्मान्नागान्महा गती ॥
युयुधातेऽति संख्यां प्रहारे रवि दारुणोः ॥ १५ ॥ तवो वेगात्समुत्पत्य

तृप्तिः॥आगरुधिरेखदशवर्पतृप्तिः॥महिपरुधिरेखशतवर्पतृप्तिः॥स्वदेहरुधि-
रेखसहस्रवर्पतृप्तिः ॥अथछागोत्सर्गसंकल्पः ॥ॐश्रीमद्दुर्गादर्शनाभिवन्दन
स्पर्शन तर्पण जनन पूर्वकं सदापत्यस्य ममाखिला' पञ्चान्वित नानाविध
कल्याणोत्पत्ति दीर्घायुष्य वल पुष्टिवृद्धि दुर्गाप्रोतिकाम.श्रीदुर्गादेव्यैअमुक
छाग वलि वलि दैवतं नमः ॥ पशुं गायत्रीं श्रावयेत् ॥ ॐ पशु पाशाय
विदुमहेशिस्त्वेशायधीमहि तन्नो पशुः प्रचोदयात् ॥ अञ्जलिवध्वा पशुं
प्रायेयेत् । अन्तर्धे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशु घातनम् ॥ अतस्त्वां घात
यिष्यामि तस्माद्यज्ञे यधोऽयधः ॥ शिवा दत्तं रिमैः पिएडै रतस्त्वं शिवतां
गतः ॥ अपत्यं च पशोर्दित्वं चाशिवं च शिवो मिहि ॥ पशुस्त्वं वाण
रूपेण मम भाग्यादुपस्थितः ॥ चण्डिकाप्रीति दानेन मम चापाद्विनाशनम् ।
पशुरूप परित्यज्यगन्धर्वस्त्वं स्वरूपधृक् गोरी लोकं समा साद्य मम
कल्याण दो भव । पशु पाशविमोहाय हेम कूटस्थिता यच । परावे च
नमः स्तुभ्य नमस्ते वलि रूपिणे ॥ छेदो सि वलि रूपस्त्व माह्वया

निपत्य च मृगारिणा ॥ कर प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥ १६ ॥
उदप्रचरणे देव्या शिला वृक्षादिभिर्हतः ॥ दन्त मुष्टि तलेश्चैव करा-
लश्च निपातितः ॥ १७ ॥ देवी क्रुद्धागदापातैश्चूर्णया माम चोद्धतम् ॥
वाष्कलभिन्दि पालेन वायुस्ताघ्रं तथान्धकम् । उग्राम्भ्यमुपधीर्यं चतयै व
चमहा हनुम् ॥ त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥-१६ ॥
विडालस्या सिना कायात्पातया मास वैशिरः ॥ दुर्धरं दुर्मुणं चोभौ शरै
निन्ये यमक्षयम् २० ॥ एवं सन्धीय मायेतु स्वसैन्ये महिषा सुरः ॥ माहि-
पेण स्वरूपेण शसयामासतान्गणात् ॥२१॥ कारिचत्तण्ड प्रहारेण सुरत्ते पै
स्तथा परान् ॥ लांगूल तडितार्चान्याञ्छुद्धान्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥
येगेन कारिचद् पराजानेन भ्रमणे नच : निः श्वासपवने नान्या न्यातया
मासभूतले ॥ २३ ॥ निपात्य प्रमथा नीक मध्यघावतसोऽसुरः ॥
भिह हन्तु महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४ ॥ सोऽपि कोपान्महा
वीर्यः गुर लुण्णमहीतल ॥ शृङ्गाभ्यां पर्वतानुशोरिचक्षे पच ननाद्व ॥२५॥
येग भ्रमण विनुण्णा मही तस्य व्यशोर्यत ॥ लांगूले नाह तरवादिः
प्लावयामास मयंतः ॥२६॥ घुतश्रविभिन्नाश्च रण्डं रण्डंययुर्नाः ॥
श्यामा निनास्ताः शनशानिपेदु नभसोः चलाः ॥ इति श्लोक समाप्त्याव
मास्तंगे महा सुरम् ॥ दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तदुपाय तदाऽकरोत् ॥
माहिपत्या तस्यै पाशं तवयन्ध महासुरम् ॥ तस्यात्र माहिषं रूपं सोऽपि
पदो महामूर्ध ॥२७॥ वनः सिधोऽमयरसयोपायत्तस्याम्बिका शिरः ॥ दिन.
पि जायतु रूप. यद्ग पाशीर ददयत् ॥ ३० ॥ उत पशु पुत्रं देवी

पत्या गुरोः ॥ ह्येदभेदोद्धवं दुःखं क्षमस्व पशुस्व-धृक् ॥ पशु योनि
 प्रशूतोसि पूजा होमादि कर्मणि ॥ तुष्टा भवति सादेवी सरकैः पिशिते
 तवः ॥ इति स्तुत्वा ॥ ॐ काली काली वज्रोश्वरी लोह दण्डायै नमः ॥
 पूर्वोक्तैरसि विसर्जनादिमन्त्रैः खड्गप्रणय ॥ श्री परमेश्वरीभ्यास्त्वैक
 प्रक्षारेणच्छिन्त्यात् ॥ कपूर्वमिश्रितं हविर् समर्पयेत् ॥ अथ पुनर्गोतमोक्त
 द्यागोत्सर्गं त्रिभिः ॥ कुशाप्रण द्यागं प्रोक्ष्य ॥ ॐ अग्निः पशु रासी चेना
 यजन्तस पतङ्गलोकमजयस्मिन्नग्निनः सते लोको भविष्यति तन्तेस्यसि
 पिवैता अपः ॥ ॐ वायुः पशुरासी चेना यजन्त सपतङ्गलोक मजयस्मिन्न
 ग्निनः सते लोको भविष्यति तन्तेष्यसि पिवैता अपः ॥ ॐ सूर्य पशु-
 रासी चेना यजन्तस पतङ्गलोक सजयस्मिन्नग्निनः सते लोको भविष्यति
 तन्तेष्यसि पिवैता अपः (औषण्डः पशुरासी दित्यादि ॥ ॐ गन्धर्गः
 पशुरासी दित्यादिना ॥) द्यागं हस्तेनस्पृशेत् ॥ ॐ वाचं ते शुन्यामि ॥
 ॐ शिरस्ते शुन्यामि ॥ शृङ्गतेशुन्यामि जुस्ते शुन्यामि ॥ ॐ कर्णोवि
 शुन्यामि ॥ ॐ वक्त्रं ते शु० ॥ ॐ कण्ठते शु० ॥ ॐ मेढूते शु० ॥
 ॐ सर्वा गात्राणि ते शुन्यामिइति अक्षतान् पशु गात्रे निक्षिप्य ॥ ॐ वाक्

ते आप्याचिच्छेदसायकैः ॥ तं ब्रह्म चर्मणासाधं ततः सोऽभून्महागजः ॥ ३१ ॥
 क्रेण च महासिंह तं चाकर्ष जगर्जच ॥ कर्पतस्तु कर् देवी छद्मेन निर
 कृन्तत ॥ ३२ ॥ ततो महासुरो मूयो माहिपं वपुगस्थितः ॥ तत्रैव क्षोभया
 मास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चरिद्वरु
 पानमुत्तमम् ॥ पपी पुनः पुनश्चैव जहासाठण लोचना ॥ ३४ ॥ नमर्द
 धामुः सोऽपि बल वीर्यं मदीदृतः ॥ विपाणाम्यां च विक्षेप चरिद्वरु
 प्रेति भूधरान् ॥ साचता न्प्रहिता स्तेन चूर्णं यन्तो शरोत्करैः उवाचतं
 मदीद धूत सुख रागा कुजा वरम् ॥ ३५ ॥ देव्युयाच ॥ ३० ॥ गर्जगर्ज
 चूर्णं मूढ नपु यावत्पियाम्बहम् ॥ मयात्वविहतेऽत्रैव गात्रिष्यं त्यागु
 देरताः ॥ ३६ ॥ शृपिठवाच ॥ ३६ ॥ पयं सुकृता समुत्पत्य साऽऽम्बा
 तं महा सुगम् । पादेना क्रुन् कण्ठे च शूले नैन मताडयन् ॥ ४० ॥ तदा
 सोऽपि पदा क्रान्तमया निज मुखा ततः ॥ अर्धं निष्पान्त पवासो
 देव्या धीर्येण सततः ॥ ४२ ॥

अर्धं निष्पान्त एवामी सुभ्यनानो महासुरः ॥ तथा महासिना देव्या
 शिरदिक्ष्वा निवानितः ॥ ततो हाहा कृत् सर्वं दैत्य सैन्यननारा तन् ॥
 प्रद्वं च परं त्रामुः सकला देवता गणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टु युस्तां मुता देवी
 सह दिव्यं मदीपिभिः ॥ त्रगुर्गन्धर्व पतयो नन्वे श्वाप्सरो गणाः
 ॥ ४४ ॥ इति माण्ड्ये पुराणे मातृशिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये महिया-

धताम् ॥ ॐ शिरस्ते आप्याताम् ॥ ॐ शृङ्गे त आप्याताम् ॥ ॐ
 चक्षुम् आ० ॥ ॐ कर्णोत आ० ॐ वक्त्रं त आ० ॥ कण्ठं त आ० ॥
 मेढ्रं त आ० ॥ ॐ सर्वा गात्राणि आप्यायताम् ॥ पशोरुपरि पुष्पाणि
 निक्षिप्य प्रार्थयेत् ॥ शिरः कण्ठे ललाटे च पादयोर्जङ्घयोस्तथा ॥ नेत्रयोः
 मर्गगात्रेषु मुरचन्तुपगु देवताः ॥ अनेन ऋद्धार्गं प्रोक्ष्य पशुगायत्री श्राव-
 येत् ॥ ॐ पशु पाशाय विद्महे शिरस्त्रेदाय धीमहि ॥ तन्नोद्भागः प्रचो-
 द्यात् ॥ पुष्पाक्षतैः पूजयेत् ॥ सांक्ली फेंवारि सरस्वति लीयतां नमः फ-
 ट् वीपट् ॥ इत्यादि क्रमेण सां पादयोः पृथिवी लीयताम् ॥ सां पाथी मित्रो
 लीयताम् ॥ सां चक्षुपोस्तेजो लीयताम् ॥ सां उपस्थे जलं लीयताम् ॥ सां कर्णो-
 र्नमो ॥ लीयताम् ॥ सां सर्वाङ्गेषु देवी लीयताम् ॥ सां मनसि काली लीयतां
 फट् वीपट् ॥ इति तत्तस्थाने लीनं कृत्वा तत्तद्दशाङ्ग स्पृशेत् ॥ ॐ चामुष्ठाये
 नमः कपाले ॥ ॐ यमायनमः शृङ्गयोः ॥ ॐ शशिभास्कराभ्यां० नेत्रयोः ॥

सुर वयो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ उवाच ॥ ३ ॥ श्लोकाः ॥ ४१ ॥
 पद्यम् ॥ ४३ ॥ एवमादितः ॥ २१७ ॥

अथ ध्यानम् ॥ काला भ्रामां वटासै ररि कुल भयदां मौलि वट्टेन्दु
 रेरां शंसं चक्रं कृपाणं विशिखमपि करै रुद्ध हन्तीं त्रिनेत्राम् ॥ सिंह
 स्कन्धाधि रुदां त्रिभुवन मखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायेद् दुर्गां जवाख्यां
 विदरा परि श्रुतां सेवितां विद्धि कामैः ॥ ४ ॥

श्रुपिकृपाच ॥ १ ॥ शक्रादयः सुर गणा निहितेऽति वीर्ये ॥ तस्मिन्दु-
 रारमनि सुरारि बले च देव्या ॥ तां तुष्टुबुः प्रणयति नम्र शिरोधरंसा ।
 वाग्भिः प्रहर्षं पुलकोद्गम श्चरु देहाः ॥ २ ॥ देव्या यया तत्
 मिदं जगदात्म शक्तया । निःशेष देव गण शक्ति समूह मूर्त्यां ।
 तामन्विषन्ना मखिल देव महर्षि पूज्यां । भक्त्या नताः स्मविदधानु
 शुभानिष्ठान् ॥ ३ ॥ यस्याः प्रभाव मतुलं भगवान ननन्तो । मङ्गा
 हरत्च नहि धम्नु मलं बलंचासा चण्डिकाऽखिल जगतरि पाल नाय
 नाशाय चा शुभ भयभ्यमीरिं करोतु ॥ ४ ॥ या श्रोः स्वयं मुकृति नां भवः
 नेष्व लक्ष्मीः । पापात्मना श्रुतधियां हृदयेषुमुदिः ॥ भद्रा मतां कुल जन
 प्रभवस्य कर्मात्तां त्यां नताः स्म परि पालय देविद्विग्यम् ॥ ५ ॥ किं
 धरंयाम तत्र रूप मधिन्त्यमेतत् ॥ किं चाति वीर्यं मसुर घ्न्य कारिभूरि ॥
 किं पाह्येषु परि वानि तशक्ति यानि, सर्वेषु देस्य मुर देवगणा दिहेषु ॥ ६ ॥
 हेतुः भ्रमस्त जगतां त्रिगुणाऽपि शोभे । मेघायमे हरि हरादिभिरप्यपारा ॥
 सर्वोभयाऽभ्रिभ्रमिदं जगद्दशानूत् । मन्वाऽऽवा हि परमा प्रकृतिस्तरमाणा ॥
 यस्याः ममस्त सुरता मगुदीर्येन । तूर्ध्विं प्रयाति महल्लेषु मंगेषुर्देवि ॥

बृहस्पतये०कर्णयोः ॥ॐचन्द्रावरुपोलयोः ॥ॐरुधिरवदनार्थ०मुद्रे ॥ॐरक्त
दन्ति वा येनमःदन्ते ॥ॐपृथिव्यै०नासिकयो०महादेवाय०कण्ठे ॥ॐपृथिव्यै०
उदरे ॥ॐप्रजापतये०मेदसि ॥ॐकूर्माय०पृष्ठे ॥ॐसाङ्गोपाङ्गाय नमःपुच्छे ॥
ततः पूर्वोक्त यज्ञार्थे पशवः मृष्टा इति मन्त्रेण पशुं प्रार्थयित्वा खड्गं
पाशा दिना संपूज्य ॥ ॐ मध्ये ब्रह्मणे नमः ॐ अग्ने महादेवाय नमः ।
ॐ पृष्ठे यमाय नमः ॥ ॐ आधारेकालाय नमः ॥ पूर्वोक्तं असिबिभर्जनं
पठित्वा ॥ छागश्कन्धे घर्षयेत् यावद् गात्र शिरो वलिं न चात्र यति ताव-
द्दलोकाल्यै नम इति मन्त्रेण जलंमक्षिपेत् । अथ रुधिरं सेरु संकल्पः ॥
ॐ अथोह दश वर्षां वद्धिन्न दुर्गा प्रीति कामनया इदं छाग रुधिरं भग
वत्यैमयादत्तम् ॥अजमेपमहिपादिवलिदानेतु ॥अथमहाष्टम्यामर्द्धरात्रे मम-
सर्वापच्छान्ति पूर्वकं सर्वं कल्याणोत्पत्तिदारुणगृहपीडोपशमनशत्रु मारण
पूर्वकं दिग्विजय राष्ट्र प्राप्ति कामनया इमं महिषं यम दैवतमजं वह्नि
दधतं मेघं वरुण दैवतं वृक्षयज्ञ विनाशिन्ये महाधोरायै कोटि योगनी परि
वृतायै भद्र काल्यै ह्रीं-दुर्गे । रक्षणि स्वाहा श्री दुर्गादेवी प्रतिभे घातयित्वे ॥
ततो नाम मन्त्रेण कृष्णारुदं संपूज्य ॥ अथैतं सगोल वनका जनदान जन्य

स्वाहाऽसि वै पितृगणस्य च तृप्ति हेतु । रुधिरं से त्वमत एव जनैः
स्वधा च ॥ ८ ॥ यामुक्ति हेतु रवि चिन्त्य महा व्रता स्व । मम्यस्यसे मुनि-
यतेन्द्रिय तत्त्व सारेः ॥ मोक्षार्थंभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै । विद्याऽसि सा
भगवती परमाहि देवि ॥ ६ ॥ शब्दात्मिकामु विमलग्यंजुषां निधान ।
मुग्दीधरस्य पदपाठ वतांचसान्ताम् ॥देवीत्रयोभगवतीभवभायनायवातां च
सर्वं जगतां परमार्ति हन्त्री ॥ १० ॥ मेधाऽसि देवि विदिता म्विल शाल
सारा दुर्गासि दुर्गा भव सागर नीर संग्गा ॥ भोः कैट भारि हृदयै कृत्वाधि
वासा । गौरी त्वमेव शशिमीलि कृत प्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ इपत्सहा सममलं
परि पूषां चन्द्र विन्वानु कारि कनकोचम कान्ति कान्धम् ॥ अत्यद्भुतं
प्रदत्त मात्तरुपा तथाऽपित्रक्त्रंखिलोम्य सहसा महिपामुरेण ॥ १२ ।
दृष्टवानु देवि कुपितं भ्रू कृटी काल मुद्यच्छराऽसदराच्छर्षि यन्न सद्यः ॥
प्राणान्मुमोच महिपस्तद् तीवचित्रं कैर्जांन्यतेहि कुपितान् वरु ११
नेन ॥ १३ ॥ देवि प्रसोद पाभा भवती भवार सधो विनाशयसि कोप
यती कुलानि ॥ शिक्षावमे वदधुनेत्र यदस्व मेतन्नीलं बलंनु विपुलं महिपा
सुरस्य ॥ १४ ॥ ते संनता जन पदेषुवनानि तेषां तेषां यशांसि न यसी
दति धनं वगैः ॥ धन्यास्त एव निभृत.रनजभूतय दारा येषां सदाऽमुदय
दाभवती प्रमत्ता ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि स्रुनानि सदैव कर्माख्यत्या
दः प्रतिदिनं मुहूर्ती करोति ॥ स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतो भवारा ।

फल प्राप्तिं कामैः कृष्णाण्ड फलं वनस्पति दैवतं भगवत्यै दुर्गा देव्यै
मया दत्तम् इति संकल्प्य । कृष्णाण्ड फलं देवी प्रीतये दद्यात् ॥ ततो
महिष रुधिर दान संकल्पः । अद्यशत वर्षा वद्धिन्न दुर्गा प्रीति काम
नया इदं महिष रुधिरं भगवत्यै दुर्गा देव्यै मया दत्तं नमः ॥ पशु
कपालं देव्या पुरतो याम भागे संस्थाप्य पुष्पाक्षतयुतं दीपं
तत्कपालो परि दद्यात् ततोवशिष्ट रक्तं धृत्वा कुशाविभिरष्टधा विभज्य
तेन पूर्वं चा मुण्डां तर्पयामि ॥ तद्दक्षिणे योगिनीं तर्पयामि ॥ प-
श्चिमे ङाकिनीं तर्पयामि ॥ उत्तरे भैरवीं तर्पयामि ॥ आग्नेये
विदारिकांतर्पयामि ॥ नैऋत्ये पाप राक्षसीं तर्पयामि ॥ वायव्ये
पूतनां तर्प यामि ॥ ईशाने कालिकां तर्प यामि ॥ इति सन्त-
प्यं ॥ खड्गगाय खलनाशाय भक्त कार्याय तत्परः ॥ पशु च्छेद
स्वया कार्थ्यो खड्ग रूपिन्न मोस्तुते ॥ इति खड्गं प्रणमेत् ॥
वडुशोज महिषा घाते अद्यत्संख्या वर्षा व द्धिन्न दुर्गा प्रीति काम-

श्लोक त्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति
मशोप जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि ॥ दारिद्र्यदुःख भय
हारिणि का त्वदन्या । सर्वो पकार करणाय सदाद्रिचिन्ता ॥ १७ ॥
एभिर्हर्तैर्जगद्दु पैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नर काय विराय
पापम् ॥ संमाम मृत्यु मधिगम्य दिव प्रयान्तु मत्वेति नूनमहिता
न्विनि हंसि देवि ॥ १८ ॥ हृष्टैर्वकिं न भवती प्रकरोति भग्न ।
सर्वा सुरा नरिषु यत्प्रदिणोपि शस्त्रम् ॥ लोकान्प्रयान्तु रिपवो
ऽपिहि शस्त्रपूता ॥ इत्यं मति भवति तेष्व हितेषु स्वाध्वी ॥ १९ ॥
खड्ग प्रभानिकर त्रिस्फुरणैस्त्वथोम्रेः शूलाम कान्ति निवह्नेन दृशो
ऽसुराणाम् ॥ यन्नागता विल यमं शुभविन्दु खण्ड । योग्या ननं
तव विलोक यतां तदे तन् ॥ २० ॥ दुर्वृत्त वृत्त शमनं तवदेवि
शीलं । रूपं तथै तदविचिन्त्य मनुष्य मन्यैः ॥ वार्यं च ह्मत् इव
देव परा क्रमाणां यैरि ध्वपि प्रकटि तैव दयात्वयेत्यम् ॥ २१ ॥
केनो पमानवतु ते ऽस्य परा क्रमस्य । रूपं च शत्रुभय कारयति
हारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरनिष्ठरता च दृष्टा त्वय्येव देवि
वरदे सुवन त्रयेऽपि ॥ २२ ॥ त्रैलोक्य मेतद् क्षिन्न रिपु
नारानेन । त्रासं त्वया समर मूर्द्धनि ते ऽपिदत्त्वा । नीता दिवं
रिपु गणाभयपप्य पास्त भस्मा कमुन्मद् मुस्रारि भवं नमस्ते
॥ २३ ॥ शूनेन पादिनो देवि पादि पद्रेन चाम्बिके । पयटा
स्वनेन स्नः पादि आपात्रयानिः स्वने नष ॥ प्राच्यां रक्ष म-

नया एतान्छागान् वह्निदैवतान् एतान्मेपान् वरुणं दैवतान् एतान्
महिषान् यम दैवतान् श्री दुर्गा देव्यै प्रीतये अहं घातयिष्ये ॥
महिष त्वेन कुमाण्डं बीजपूरं नर स्ततः ॥ छागा भावे कर्कटी
स्यान्मत्स्या भावे तु मूलकं ॥ मधु त्रयं घृत मधु शर्करा परि कीर्त्ति-
तम् ॥ नारि केलोदकं पुण्यं रहस्यहि शिवोदकम् ॥ इति विशेष
वास्येन नर महिष ङाग मत्स्या भावे बीज पूरकं कूष्माण्ड कर्कटी
फलम् मूलकं घृत मधु शर्करा नारि केलादिकं भगवत्यै दुर्गा
देव्यै क्रमेणनिवेदयेत् ॥ कदलीं वृन्ताकं जम्बीरं नारङ्ग कोशातक
च दद्यात् ॥ अथ स्तुतिः ॥ जयदेवि जगन्मात जय पापघ
हारिणी ॥ जय जन्म जरा व्याधि तृष्णा दावा नला कृते ? ॥
जय सर्व विपत्तिघ्नि जयत्रिदश वन्दिते ? ॥ जय नित्या नन्द रूपे जय
कल्याण दायिनि ? ॥ जय शत्रु क्षय करि जय रोग प्रणां शिनी ? ॥

ती न्यां च चरिडके रत्न दक्षिणे । भ्रामणे नात्म शूलस्य उत्तर-
स्यां तथे श्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानिरूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति
ते । यानि चात्यर्थ घोराणि तैरत्ना स्मां स्तथा भुवम् ॥ खड्ग शूल
गदा दोनि यानि चास्त्राणि ते ऽम्बिके । कर पल्लव संगीनि तै
रस्मान् रत्नसर्गात् ॥ २७ ॥ ऋषिरु वाच । २८ ॥ एवं स्तुता
सुरै दिव्यैः कुसुमै नन्दनोद्भवेः ॥ अर्चिता जगनां धात्री तथा
गन्धानु लेपनैः ॥ २९ ॥ भक्त्या समस्तैस्त्रि दशै दिव्यै धूर्पः
सुधूपिता ॥ प्राह प्रसाद सुमुखी समस्तान्प्रणतान्पुरान् ॥ ३० ॥
देव्यु वाच ॥ ३१ ॥ त्रियतां त्रिदशा. सर्वे यदस्म त्तो ऽभिधा
द्वितम् ॥ ददा म्यह मति प्रीत्या स्तवै रेभिः सुपूजिता ॥ ३३ ॥
देवा ऊचु ॥ ३३ ॥ भग वत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते !
यदयं निहतः शत्रु रस्माक महिषा सुरः ॥ ३४ ॥ यदि चापि वरो
देयस्त्वया ऽस्माक महे श्वरि ॥ संस्पृवासस्पृवा त्वंनो हिसेवाः परमां-
पदः ॥ ३५ ॥ यश्व मर्त्यः स्तवै रेभिरूवां स्तोष्यत्य मला नने ॥
तस्य वित्तद्धि विभवे—धनदारादिसंभदाम् ॥ ३६ ॥ वृद्धये ऽस्मत्प्रसन्ना
त्वंभवेवाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७ ॥ ऋषीरु वाच ॥ ३८ ॥
इति प्रसादिता देवै जंगतो ऽयं तथात्मनः ॥ तथे त्युक्त्वाभद्रकाली वभूवा
न्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूपसभूता सा यथा पुरा ॥ देवी देव
शरीरेभ्या जगत्त्रय हितैषिणी ॥ ४० ॥ पुनरचगौरी देहात्सा समुद्रभूता
यथाऽभवत् ॥ कथाय दुष्ट दैत्यानां तथा शुम्भ निशुम्भयोः ४१ । रत्नगाय
चलोक्तानां देवानामुपचारिणी ॥ वच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथा वक्तवया

जय-भीमे जया घोरे जय सङ्कट वारिणि । ॥ जयामृत रसा स्वाद
तुन्दिरा नन्दविपद् ! ॥ त्रिनेत्रे विकरालास्ये नुण्डमाला विभूषिते ! ॥
सर्गसुर क्षय करि खड्गखट्वांगधारिणि ! ॥ महाघोरे महारात्रे दैत्य
दुर्ष निपूदिनि ! ॥ इमं पशु बलि ! देवि गृहीत्वा काल रात्रि के ! ॥
प्रीताभव महा चण्डि रत्नमा शरणागतम् ॥ आयुर्देहि धन
देहि भाग्यं कीर्ति च देहिमे ॥ स्त्रियं देहि सुतान् देहि सर्वान्का-
मांश्चदेहि मे ॥ उग्र चण्डेप्र चण्डाक्षि प्रचण्डकर बालिनी ॥ महा
चण्डोप्रदोर्दण्डे विश्वेश्वरी नमोस्तुते ॥ रत्नमां शरणापन्नं त्वत्पार्दा त
मानसम् ॥ हर पापहर क्लेशहर शोकं हरा सुखम् ॥ हर रोगं हर
क्षोभं हर दैन्यं हर प्रिये ॥ स्तुति मेतां पठित्वैव दण्डवत् प्रणमेद् भुवि ।
गुह्य कालि जगद्धात्रि सर्वान्तर्यामिनीस्वरि ! ॥ गृहि त्वेनं पशु बलि
यथोक्त फलदा भव ॥ कायेन मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गर्तिमम ॥ अन्त

मिते ॥ ४२ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणेसावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
शक्रादिस्तुति नाम चतुर्थाऽध्यायः ॥ ४ ॥ उवाच ॥ ५ ॥ अर्घं ॥ २ ॥
श्लोक ॥ ३५ ॥ एवम् ॥ पथ मार्दितः । २५६ ॥

उत्तम चरितस्य ॥ रुद्र ऋषिः ॥ महा सरस्वती देवता ॥ अनुष्टु
पञ्चन्दः ॥ भीमाशक्तिः ॥ भ्रामरी बीजम् । सूर्यस्तत्वम् ॥ सामवेदः
स्वरूपम् ॥ महा सरस्वती प्रीत्यर्थं उत्तम चरित जपे विनियोगः ॥ अथ
ध्यानम्—एषटा शून हलानि शम्भु मुशले चक्रं धनु रत्नायक हस्ताञ्जैर्दधती
पनान्त विलसन्क्रीतांशु तुल्य प्रभाम् ॥ गौरीदेह समुद्भवां त्रिगता
माधार भूतां महा पूर्वा मंत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यादिनीम् ॥ ५ ॥

ऋषि उवाच ॥ १ ॥ पुराशुम्भनि शुम्भाभ्यामसुराभ्यांशचीपतेत्रै लोकेष्वं-
यज्ञभागारचद्वतामद वला श्रवात् ॥ तावेव सूर्यतां तद्वद्वि चारं तथैन्दवम् ॥
कोवेर मथ याम्यं च चक्राते बहणस्यच ॥ तावेवपव नाधि च चक्रतु-
वर्द्धि कर्मच ॥ तवां देवा विनिर्भूवा भ्रष्ट राज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ इवा-
धिकारा त्रि दरां स्ताभ्या सर्वे निराकृताः ॥ महासुराभ्यां तां देवी संस्मर
न्व पतिविताम् ॥ ५ ॥ तयाऽऽस्माकं वरो दत्तो यथापत्मुस्त्वाऽऽस्त्रिणाः ॥
भयतां नाश विष्यामि तस्त्रिणाऽपरमापवः ॥ ६ ॥ इति कृत्वा मतिं देवा
हिम वन्त नगेश्वरम् ॥ जग्मुस्तत्र ततो देवी विष्णु मायां प्रनुष्टुवुः ॥ ७ ॥
देवा शशुः ॥ ८ ॥ नमो देव्ये महा देव्ये शिवायै सततं नमः ॥ नमः
प्रथम्ये भद्रायै नियवाः प्रणतः स्तवाम् ॥ ९ ॥ रीत्रायै नमो नित्यायै गीर्षे
भाष्यै नमो नमः ॥ ज्योत्सनायै चेन्दुरूपिण्यै मुखायै सततं नमः ॥ १० ॥
कृत्वायै प्रणतः गृह्यै मिदयै कुर्मो नमो नमः ॥ नैश्रत्यै भूर्भुवां

श्चरसि भूतानां दृष्टिस्त्वं परमेश्वरि ! ॥ इतिस्तुत्वागीतवाद्यादिकं च कृत्वा
 पुनर्देव्यै स्तोत्रपाठादिनापुष्पाञ्जलिदद्यात् ॥ पद्भ्यांकराभ्यांजानुभ्यां मनसा
 वचना दृशा ॥ उरसा शिरसा चेति प्रणामोऽष्टांग ईरितः ॥ इति प्रणम्य ॥
 श्रीं परमेश्वरी प्रीतये नमः ॥ वामन्त्रेणाऽथवा जपन्तीमंगलेतिमन्त्रेण लक्षं सह
 स्रम् अष्टोत्तर शतं वा यथा शक्तिहोमं कृत्वा इष्ट देवताभ्यां कुलदेवताभ्यांच
 संपूज्याऽऽहुतिं दत्त्वा ब्रह्माण्डाद्यष्ट दलेषु बलिदानं कुर्यात् यथा-ब्रह्माण्डो
 माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नार सिंही ऐन्द्री शिव दूती मध्ये च
 चण्डिका ॥ बलिदान मन्त्रः ॥ ॐ भगवति ब्रह्माणि एषब्रह्म घृत दीप मास
 समन्वित भावभक्त बलितुभ्यं नमः क्रमेण सर्वेभ्यो मातृभ्यो बलिदद्यात् ॥
 अथ सामान्य बलिदानम् ॥ ॐ नमः कपाली ब्रह्म नक्षत्र सुरासुर
 गन्धर्व यक्षेश विद्याधर गरुड महोरग किन्नर गजेन्द्र देवता राक्षस भूत
 कव्याद् पिशाच मनुष्य मातृगण योगिनी शाकिनी डाकिनी गणा
 इमां बलिं गृह्णान्त स्वाहा ॥ पूर्ववत् दद्यात् ॥ ॐ शिवाः कङ्काल

लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ११ ॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्व कारिण्यै
 ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ १२ ॥ अति सौम्याति रोद्रायै
 नतान्तस्त्यै नमो नमः ॥ नमोजगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः ॥ १३ ॥ या
 देवी सर्व भूतेषु त्रिगुणमायेति शब्दिता ॥ नमस्तस्यै ॥ १४ ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै
 नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १५ ॥ या देवी सर्व भूतेषु चेतनेत्यनिधीयते ॥ नमस्तस्यै ॥ १७ ॥
 नमस्तस्यै ८ नमस्तस्यै नमोनमः १६ या देवी सर्व भूतेषु पुबुद्धिरूपेण सस्थिता
 नमस्तस्यै ॥ २० ॥ नमस्तस्यै ॥ २१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या
 देवी सर्व भूतेषु निद्रारूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २४ ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै ॥
 नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्व भूतेषु क्षुधा रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै
 ॥ २६ ॥ नमस्तस्यै ॥ २७ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ २८ ॥ या देवी सर्व
 भूतेषु छाया रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ २९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३० ॥
 नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३१ ॥ या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण संस्था
 ॥ नमस्तस्यै ॥ ३२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३३ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३४ ॥
 या देवी सर्व भूतेषु तृष्णा रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥
 नमस्तस्यै ॥ ३६ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ३७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु
 क्षान्ति रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ३८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३९ ॥ नमस्तस्यै
 नमोनमः ॥ ४० ॥ या देवी सर्व भूतेषु जाति रूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै
 ॥ ४१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४३ ॥ या देवी सर्व
 भूतेषु लज्जा रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४५ ॥
 नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ४६ ॥ या देवी सर्व भूतेषु शान्ति रूपेण

वेतालाः पूतना जन्मका दयः ॥ ते सर्वे तृप्ति मायेऽन्तु वलिदानेन
 तर्पिताः ॥ इति वलि दद्यात् ॥ क्षेत्रपालाय कृच्छरान्तं वादध्य सत
 वलि दत्त्वा होमं समाप्य होमन्ते श्री परमेश्वर्या विशेषतः ललां कुर्यात् ॥
 इति महाष्टम्यां काल रात्रि विधिः ॥

अथ महा नवमी पूजा विधिः ॥ सातु पूर्व युता प्राङ्ग तद्यथा हेमाद्री
 स्कान्दे ॥ पूव विद्धा प्रकर्तव्या नवमी वलि कर्मणि ॥ न कुर्यान्नवमी वात
 दशमी संयुक्तां सदेत्यादि चचनात् ॥ पूर्वविद्धा शुभेति प्रति भावि ॥
 अष्टमी दशमी सन्वी तृतीय खलु कथ्यते ॥ तस्मिन्कृते वलिदाने पुन-
 नाशो भवेद्दुर्घवाः इति ॥ नवम्या नपरा ह्येतु वलि दानं प्रशस्यते ॥ इति
 धीम्य वचनात् ॥ शुद्धा नवमी महा नवमी न विद्धा ॥ शुद्धाया अभावे
 अपराह्ये यत्र नवमी तत्रै वेत्ति ॥ नवम्या मपरा ह्येतु वलिदानं
 प्रशस्यते ॥ दशमीं वर्जये तत्र नात्र कार्या विचारणेति मदन श्लोकेनवात्
 ब्रह्म वैवर्त्तंसिपि ॥ नन्दायां ज्वलते वह्निः पूर्णायां पशुघातनम् ॥ भद्रायां
 गोकुल ऋद्धा तत्र राज्य विनश्यति ॥ यद्वातु नवमी त्रुटित्ता तदाष्टम्यां

सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः
 ॥ ४९ ॥ या देवी सर्व भूतेषु श्रद्धा रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ।
 ॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥
 या देवी सर्व भूतेषु कान्ति रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥
 नमस्तस्यै ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ५५ ॥ या देवी सर्व भूतेषु
 लक्ष्मी रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५७ ॥ नमस्तस्यै
 नमोनमः ॥ ५८ ॥ या देवी सर्व भूतेषु वृत्ति रूपेण सस्थिता ॥
 नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ या
 देवी सर्व भूतेषु स्मृति रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै
 ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दया रूपेण
 सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः
 ॥ ६७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु तुष्टि रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै
 ॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७० ॥ या देवी सर्व-
 भूतेषु मान् रूपेण सस्थिता ॥ नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥
 नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्व भूतेषु भ्रान्ति रूपेण सस्थिता ॥
 नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७६ ॥
 इन्द्रियाण्य मग्निशरी भूतानां या गिरिषु या ॥ भूतेषु यत्तत्र तस्यै
 व्याप्ये दद्या नमोनमः । पितृ रूपेण या कृत्स्न मेत इनाप्य स्थिता
 उपात । नमस्तस्यै । ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो-

नवमी पूजा कार्या ॥ तत्र पूजन विधिः ॥ अथोद्धारिण्य शुक्ल महा
नवम्बां सकल पाप क्षय पूर्वक धर्म यशो दीर्घायुष्य ब्रह्म लोक गमन
ब्रह्मेन्द्र रुद्र विष्णादि प्राप्य परम पद प्राप्ति काम
स्त्रि शूलिनी दुर्गा चण्डिका पूजन महं करिष्ये ॥ ॐ त्रिशूलिनी हा
गच्छेद्देह तिष्ठेत्या वाह्य त्रिशूलिण्य नमः ॥ इति मन्त्रेण पाद्यादि नेपेद्यान्तैः
सम्पूज्य तत्र दुर्गा शिवां शङ्करां चण्डिकां च सम्पूज्य अष्टम्यानिबोक्त
प्रकारेण बलिदानं कुमारो पूजनं शङ्खाख पूजनं कुर्यात् ॥ इतिमहा
नवमी विधिः ॥

अथ दशम्यामपराजिता पूजा ॥ श्रवणाक्षरेण संयुक्ता दशमी शुक्ल
पक्षगा इषे मासि स्थिता ज्ञेया विजया दशमी तिथिः सा नवमी विद्धा
कर्तव्या नत्वेकादशी युक्ता ॥ मध्याह्ने विजय मुहूर्त इति केषां चिन्मतम् ॥
सन्ध्यासमये केषां चिन्मतम् ॥ विजया रयोऽष्टमस्मृत इति वशान्तराजः ॥
किञ्चित्सन्ध्या मतिक्रम्य किञ्चित्पुष्प तारकः ॥ विजयो नाम योगोयं
सर्वं कर्मसु सिद्धदः ॥ इति गर्ग संहिताया मुक्तम् ॥ धवण युक्ता शुद्धा

नमः ॥ ८० ॥ स्तुवा सुरैः पूर्वं मभोष्टसंश्रया । तत्रासुरेद्रेणदिनेषु सेविता ॥
करोतु सानः शुभ हेतुरीश्वरी । शुभानि भद्राण्य मिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥
या सांप्रतं चोद्धव दैत्यतापितैरस्माभिरीसा च सुरैर्नमस्यते ॥ या चस्मृता
तरुणमेव हन्तिनः सर्वा पदोभक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ ८२ ॥ शृणुष्वच
॥ ८३ ॥ एवं त्वादि युक्तानां देवानां तत्र पार्वती । स्नातु मन्था ययौतोये
जाह्वव्या नृप नन्दन ॥ ८४ ॥ साऽब्रवीत्तान्पुरासुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽवका
शरीर कोशा हरचास्याः समुद्धृता ब्रवीच्छ्रद्धया ॥ ८५ ॥ स्तोत्र ममेतत्कि-
यते शुम्भ दैत्य निरा कृतैः ॥ देवैःसमेतैः समरे निग्रम्भेन पराजितैः ८६ ॥
शरीर कोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निः सृताम्बिका । कौशिकीवि समस्तेषु
यतां लोकेषु गीगते ॥ ८७ ॥ तस्यां विनिर्गतायांतु कृष्णा भूत्तापि
पार्वती ॥ अलिकेवि समाख्याता हिमाचल कृताभया ॥ ततोन्मिकां परं
रूपं विभ्राणां सुमनो हरम् ॥ दरदां पर्यडो मुखहर च मृत्यो शुभ
निशुभयोः ॥ ८८ ॥ ताम्यां शुभाय चाख्याता श्रवीष सुमनो ह्रा
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयंती हिमा चलम् ॥ नैवटाटक क्वचित्र्पृष्टं
केन चिदुत्तमम् ॥ ज्ञायतां काप्यसी देवी गृहतां चा सुरैस्वर ॥ ८९ ॥
स्रोस्तनमति चावद्भो योतयती दिशस्त्वप ॥ सातुनिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवां-
द्रुष्टु मर्हति ॥ ९० ॥ यानिरत्नानि मखयो गजास्वा दीनि वै प्रभो ॥
त्रैलोक्येतु समस्ता निसां प्रवं भ्रांति ते गृहे ॥ ९१ ॥ परावतः समानी
शो गत्र रत्न पुरान् ॥ पारिजात वहरचायं तथैवोद्यैः रच वाहय ॥ ९२ ॥

दशमी ॥ अथवा नवमी युवा वा विजया दशमी अद्यारिवन शुद्ध
 दशम्याम पराजिताया विजय सिद्धयर्थं नवदुर्गा पूजाया न्युनाति रिक्त
 परि पूरणार्थं मपराजिता देवी पूजन पूर्वक विसर्जन महं करिष्ये चन्दने-
 नाष्ट दलं लिखित्वा तन्मध्ये मृतमथ पात्र त्रयं सस्थाप्यावाहयेत् ॥
 अथवा पूगीफल पुष्पाक्षतेष्वाहयेत् । मध्ये ॐ अपराजितायै नमः ॥
 दक्षिणे क्रियासिद्धयै जयायै नमः ॥ वामे ॐ उमायै विजयायै नमः ॥
 नाम मन्त्रे प्रतिष्ठाप्या वाह्य । चतुर्भुजां पीत वस्त्रां सर्वा भरण भूषि-
 ताम् । इत्यादिना खड्गवर्म घरां वराभय हस्तां त्रिनेत्रा मीषप्रहसितं
 वदनां सर्वाङ्ग सुन्दरी मपराजितां श्री भगवतीं ध्यात्वा ॐ अपराजितायै
 नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ॐ विजयायै नमः इति नाम मन्त्रः ।
 पाठार्था चमन वस्त्रा भूषण चन्दनाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बू-
 लादि दक्षिणान्तं दत्त्वा, पार्थयेत् ॥ चारुणा मुख पद्मेन विविच-
 क्तको ज्वला ॥ जया देरी शिवे भक्त्यै चान्कामान्ददातु मे ॥ काञ्च-
 नेन विचित्रेण केयूरेण च भूषिता ॥ जय प्रदा महा माया शिव-

विमानं संयुक्त मेतविष्टति तेश्राणे ॥ रत्न भूत मिहा नीत यदासीद्द्वेषो-
 द्भुत्तम् ॥ ६५ ॥ निधि रे प महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ॥ किं
 जलिकर्त्ता ददी चार्वाधिर्माला मन्तान पंकजाम् । हृद्यते वारुणे गेहे कंचन
 स्नावतिष्ठति ॥ तथायं स्वदन वरो वः पुरासीत्प्रजायते ॥ ६७ ॥
 मृत्योर्हरकान्ति दा नाम शक्तिगिरा त्वया हवा ॥ पाशाः सतिष्ठ
 राजस्य धातुस्तव परिगृहे ॥ ६८ ॥ निशुंभस्याधि जातारच समस्ता रत्न
 जातवः ॥ वह्नि रपि ददौ तुभ्य मग्नि शौचे च वासमी ॥ ६९ ॥ एवं
 दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्या हतानिते ॥ स्त्री रत्नमेपा कल्याणी
 त्वया करमान्न गृह्यते । ७० ॥ ऋषि उवाच ॥ १ ॥ निशम्येति
 वचः शुंभःसतदा चंड मुण्डयोः ॥ प्रेषयामास सुमीवं दूतं देव्या
 महासुम् ॥ २ ॥ इति चेति षवक्रव्यासागत्या यचनाम्भम ॥ यथा
 चान्येति मं प्रीतश तथा कार्यं रयया लघु ॥ ३ ॥ न तत्र रात्वा यत्राऽऽस्ते
 शौको देशोऽस्ति शोभने ॥ सा देरी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुर या
 गिरा ॥ ४ ॥ दूत उवाच ॥ ५ ॥ देवि दैत्यैरवशः शुभ स्त्रप्रोक्ये परमे-
 स्वरः ॥ दूतो हंप्रेपि तस्तेनैवत्सद्वारा मिहा गतः ॥ ६ ॥ अध्या इतानः
 सर्वांसुवः सदा देव चोत्तिपु ॥ निर्जिवा खिल दैरवारिः म यदा हृद्यगुप्त्वा
 तनु ॥ ७ ॥ मम शौकोक्य मग्निं मम देवा यशा मुगाः ॥ यज्ञ भागा
 नहं सर्वां नु पाशानि पृथक् पृथक् ॥ ८ ॥ शौकोक्ये वररत्नानि मम
 वरपात्रे रेषवः ॥ नभेर मार्ज रत्नं च उर्न देवेन्द्र वाहनम् ॥ ९ ॥ धीरोद

भाषित चेतसा ॥ विजयात्र महाभागा ददातु विजयं मन ॥ हारेण
 शुचि वित्रेण भास्वरकनक मेघला ॥ अपरेण रुद्ररता करोतु विजयं
 मन ॥ इति मन्त्रैः संप्राथ्यं हरिः सपंप दूर्वा युक्त पीत वात्र पोटलिकां
 पात सूत्रेण ॐ कार मुञ्चत वद्वावा एतन्तेति प्रतिष्ठायामि मन्त्रयेत् ॥
 सदा पराजिते यस्मात् त्वंल वा मुच्यते स्मृता ॥ सर्वाकामार्थं सिद्धयर्थं
 तस्मात् त्वां पूजया म्यहम् ॥ भवा पराजिते देवि ? मम सर्वं समृद्धये ॥
 पूजितायां त्वयि श्रेयो ममास्तु दुरितं हत मिति मन्त्रेणापराजितां देवीं
 समीपे अभिमन्त्रय ॥ अथ धारय मन्त्रः ॥ जग्दे वरदे देवि ! दशम्याम
 पराजिते ? ॥ धारयामि मुजे दत्ते जय लाभामि वृद्धये ॥ बलमा रोहि
 बलय मायशार्त्रो पराजयम् ॥ तद्वारणात्तवे युर्म धनधान्य समृद्धयः ॥
 इति मन्त्रेण दक्षिण बाहौ धारयेत् ॥ ततो मूत्र देवीं सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥
 रूपं देहि यशो देहि भगं भवति देहिमे ॥ पुत्रान्देहितया मातः सर्वाङ्कामा
 र्चदेहिमे ॥ महिपत्ति महाभाये चामुण्डे मुण्डे नालिनि ? ॥ आयुरा

भयनेद्भूत मध्वल्ल ममामरैः ॥ उच्चैः श्रव ससङ्गं तत्प्राणित्य
 समापितम् ॥ १० ॥ रानि चान्तरानि देरेषु गंवरं पुरगेषुच ॥ रत्न भूतानि-
 भूतानि तानि मप्येव शोभने ॥ ११ ॥ खो रत्न भूतां त्वां देवि लोके
 मन्यामहे वयम् ॥ सात्व मस्मा नुपा गच्छ यतो रत्न भुजो वयम्
 ॥ १२ ॥ मांभाममानुजं वापिनि शुम्भ मुरु विक्रमम् ॥ भजत्वं चञ्चला
 पांगि रत्न मूता सिद्धयत्तः ॥ १३ ॥ परमैश्वर्यं मतुल प्रात्य सेमत्परि-
 महात् ॥ एतद् बुद्ध्या समा लोक्य मत्परि प्रहतां व्रज ॥ १४ ॥ श्रुपि-
 रुवाच ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वा सा तदा देवो गंभीरां तः स्मित्वा जगौ ॥ दुर्गा
 भगवती भद्रायवेद् धार्यते जगत् ॥ १६ ॥ देव्युवाच ॥ १७ ॥ सत्य
 मुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किं चित्त्वयो दितम् ॥ त्रैलोक्याधि पति शुभो
 निशुम्भ इवापि वादशः ॥ किंत्वं गत्वति ह्याव मिथ्या तद्विक्रयते कथम् ॥
 भूयता मलय युद्धित्वात्प्रतिज्ञा या वृता पुरा ॥ १६ ॥ योमां जयति
 सप्रामे योमे दर्पं चपपो हवि ॥ योमे प्रति बलो लोके समे भर्ता
 भविष्यति ॥ २० ॥ तदा गच्छतु शुम्भोत्र निशुभो वा महासुरः ॥ मां
 जित्वा किञ्चिरे एतत्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥ २१ ॥ दूत उवाच ॥ २२ ॥
 अत्र लिप्तासिमै वं त्वा देवि ब्रह्मि माप्रतः ॥ त्रैलोक्ये कपुमां स्तिष्टे
 दमे शुम्भ निशुम्भयो ॥ २३ ॥ अन्येषा मपि दैत्यानां सर्वे देवा नवी
 युधि विष्टन्ति संमुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिंका ॥ २४ ॥ दन्द्राद्याः
 सकला देवा त्वत्युत्पेपां न सयुगे । शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यमि
 संमुखम् ॥ २५ ॥ सात्वां गच्छ मयैकोक्त पाथं शुम्भ निशुम्भयोः ॥

रोग्य भैश्वर्यं देहि देवि ! नमोस्तुते ॥ तवः प्रणमेत् ॥ इयं पूजा मया
 देवि ; यथा शक्त्या निवेदिता ॥ रक्षार्थं त्वत्प्रसादाय यत्रैव स्वस्थानं
 सुत्तमम् ॥ इति प्रणाम्य ॐ कारेण विसर्जयेत् ॥ ॐ दुर्गे
 देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते ! ॥ सन्वत्सरे व्यतीते
 तु पुनरा गमनं तव ॥ इति विस्तृत्य देवी मुखापये
 वक्षिष्ट देवि चण्डेशि ? शुभां पूजां प्रगृह्य च ॥ कुरुष्व मम
 कल्याणप्रदाभिः शक्तिभिः सह ॥ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्था-
 नं देवि चण्डिके ? ॥ ब्रजस्रोतो जलं वृद्धये स्पीयतां च जले
 स्वया ॥ ततो जपपाठ नव रात्र ब्रत देवी पूजनादि कृत्वा
 सम्पूर्णं कर्मणो वृत्ति ॥ संस्मरं कुर्यात् ॥ पूर्वं स्थापित पत्रिकां
 मृष्टमय प्रतिमाञ्चोत्थाप्य शिवकादि शुभयानो परि सन्निवेश्य गीत
 वादित्र निः स्वनिजल समीपे गत्वा पूर्वोक्त दुर्गे देवि जगन्मात-
 रिति श्लोकेन इमां पूजां मया देवि ? इति श्लोकेन च जले

केशा कर्णाणा निधूत गौरवामा गमिष्यसि ॥ २६ ॥ देव्युवाच ॥ १२७ ॥
 एवमेत द्रुती शुभो निशुभ रचाति वीर्यं बान् ॥ किं करोमि प्रति
 ज्ञामं वदना लोचिता पुरा ॥ १२८ ॥ सत्संगच्छ मयोक्त ते यदेतत्सर्वं
 माहव ॥ तदा चक्षुरा सुरेद्राय सच युक्तं करोतु यत् ॥ १२९ ॥ इति श्री
 मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देव्यादूत संवारी
 नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ॥ उवाच ॥ ६ ॥ गण्डानि ॥ ६६ ॥ श्लोका
 ॥ २४ ॥ एवं ॥ १२९ ॥ एव मादिवः ॥ ३८ ॥

अथ ध्यानम्

नागाधीश्वर विष्टरां पण्डि कणोत्तसोक रत्ना बली भास्वदेह लतादिवाक्
 निभां नेत्र त्रयो द्वासिताम् ॥ माला कुम्भ कपालनी रत्नकरा ब्रह्माद
 वृष्टां परां सयंज्ञे स्वरभैरवाद् निलयां पद्मा यतां चिन्त्ये ॥ ६ ॥
 श्रुपेह वाच ॥ १ ॥ इत्या कर्ण्यं धरो देव्याः सद्गुणो मयैरुतिः ॥
 समा चरुत समागम्य ईत्यरात्राय विस्तरान् ॥ २ ॥ तस्य दूतस्य
 वद्भाष्य माहुर्यो मुखाट तवः । स क्रोधः प्राड दत्वा ता मधिपं
 भूषतोवनम् ॥ ३ ॥ हे भूष लोचनाशु त्वं ह्य सेन्य परि
 पारितः । वामा नय यत्राद् दुष्टां केशा कर्णल विद्धताम् ॥ ४ ॥
 तस्य रेवाणदः रुचिचदियोतिष्ठते ऽपरः । स हन्व्यो ऽपरो शक्ति
 यज्ञो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥ श्रुपिह वाच ॥ ६ ॥ तेना श्रुत
 भक्तः शीघ्रं स देवो भूष लोचनः । शूनः पट्टेनावहस्याथा
 ममुषाणां दूधं ययो ॥ ७ ॥ स दृष्ट्वा तां पयो देवीं गुदिना पत

प्रवाहयेत् ॥ ततो अपराजिता पत्र त्रयं तंडुल त्रयं च ॐ सः हू
सहक वरा हौं, सः हुमितिमंत्रेण प्राशयेत् ॥ ततः शमी वृक्षान्ते
गत्वा पूजा कार्या ॥ मंत्रः ॥ शमी शम यते पापं शमीलोहित
कण्टका ॥ धारिण्य र्जनु वाणनां रामस्य प्रिय वादिनी ॥ करिष्यमाण
यात्रायां यथा कालं सुखं मया ॥ तत्रनिर्विघ्न कर्त्री त्वं भव श्री
राम पूजिता ॥ इति मन्त्रेण शमीं पूजयित्वा ॥ पुष्पाणि साक्षता
माद्रां शमी मूल गतां मृदम् ॥ शमी शाखां च गृहित्वा शिवि-
कादि यानो परि सन्निवेश्य गीतधादित्रनिर्घोषैः स्वगृहं प्रत्या
नयेत् ॥ ततः स्वजनैः सह वेदोक्त पुराण मन्त्र रभिषेकं कृत्वा
वस्त्र भूषण तिलका दिकं धारयेत् ॥ ततो जल समीपे ॥ गोष्ठे
नद्यां वा खञ्जनं विलोकयेत् ॥ प्रणाममन्त्रः । नीलश्रीव शुभ
श्रीव सर्वं काम फल प्रद ? ॥ पृथिव्या मव तीर्णोसि खञ्जरीट ?
नमोस्तु ते ॥ इति प्रणम्य ब्राह्मणेभ्यो ? ? दक्षिणां दत्वा आशी-
र्वादं गृहीत्वा यथा सुखं विहरेत् । इति शरत्कालिकं दुर्गोत्सव

सस्थिताम् । जगादोच्चैः प्रया हीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥ न
चेत्प्रीत्याय भवती मङ्गलार्थं मुपैष्यति । ततो बला प्रयाम्येप केशाकर्षण
बिह्वलाम् ॥ ९ ॥ देव्यु वाच ॥ १० ॥ दैत्येश्वरेण प्रहितो बल बान् बल
संवृतः । बलान्नयसि मामेव' ततः किं तेकरो म्यहम् ॥ ११ ॥ अपिरु वाच
॥ १२ ॥ इत्युक्तः सोम्याथा वत्ता मसुरो धुम्र लोचनः ॥ हुंकारेणैवतं भस्म
साच कारां विका ततः ॥ १३ ॥ अथ क्रुद्धं महासैन्य मसुराणां
तथाश्विका ॥ वयर्पां सायकै स्तीक्ष्णै र्तथा शक्ति पर स्वयैः
॥ १४ ॥ ततोद्युत सटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ॥ पपाव सुर
सेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १५ ॥ कारिषत्कर प्रहारेण
दैत्यां नास्येन चा परान् ॥ आक्रत्या चाधरेणान्या न्सत्रधानमहा-
सुरान् ॥ १६ ॥ केषां चित्पाटया मास नरैः कोप्यानि केशरो ॥
तथा बल प्रहारेण शिरांसि कृतवान्पथक् ॥ १७ ॥ विच्छिन्न पाहृ
शिरसः कृतास्तेन तथा परे ॥ पपौषरुधिरं कोप्या दन्देपाधुत
केशरः ॥ १८ ॥ छयेन उद्धतं सर्वं छये नीतं महात्मना ॥ तेन
के सरिणा देव्यावाहने नाति कोपिता ॥ १९ ॥ भुत्वा तम सुरे
देव्या निहतं धूम्र लोपनम् ॥ पलं च छयितं छर्त्तं देवो केशरि-
णावतः ॥ २० ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः गुमः प्राकुरितापरः ॥
आज्ञापयास च ती चरड सुबहो महा सुरी ॥ २१ ॥ हे चरड

पूजा विधिः ॥ ॥ शुभम् भूयात् ॥ ले०सेवकविश्वनाथ शर्मा ।

स्त्री कर्तुं—दीप दान प्रयोगः ।

स्त्रेष्ट देवता समीपे निवेद्य ॥ अथ लक्ष्मिं चर्चिका दीप दान विधिः ॥
कर्त्ता शुचिरा चान्तः दीपं प्रज्वल्य नमोस्तु नन्तायेति दीपं सम्पूज्य ॥
अर्घ्यं स्थापनं कुर्यात् ॥ अर्घ्यं स्थापनं माह ॥ स्ववामाप्रेत्रिकोष्पटकोष्प
वृत्तं चतुरस्राणि कृत्वा शंसु मुद्रयास्तभयेत् ॥ ततः पुष्पाक्षतैरग्न्यादियु
पङ्क्तानि सम्पूज्यास्तत्र चालितं माधारं मन्वद्भिर्मंडलाय दश कलात्मनेदे-
वार्घ्यं पात्रा सनाय नम इत्याधारं त्रिकोणे स्थापयेत् ॥ तत्राग्नेः कला
धूम्राचिं राधाः पूजयेत् शल मंत्रचालितं शंखम् ॥ असूर्यं मंडलाय द्वादश

हे मुण्ड वलैर्बहुभिः परि वारिती ॥ तत्र गच्छत गत्वा च सासमा
नीयतां लघु ॥ २२ ॥ केशेष्व्वा कृष्य वदध्वावा यदि वः स
शायोयुधि ॥ वदा शेषा युषे स्वर्गैर सुरै विनि हन्य ताम्
॥ २३ ॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिद्धे च विनि पातिते ॥
शीघ्रं ना गम्यतां वदध्वा गृहीत्वाता मथां विकाम् ॥ २४ ॥
इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये धूम्र-
लोचन वधो नाम पट्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥ उवाच ॥ ४४ ॥ अर्घ्यं ॥ ० ॥ श्लोक २९
एवम् २४ ॥ एवमादितः ॥ ४१२ ॥

अध्यातम्—ध्यायेयं रत्न पीठे शुक कर्तुं पठितं श्रवती श्याम
लांगी न्यस्तै काग्नि सरोजे शशि राक्ल धरां वल्लर्का वाद यन्तीम् ॥
कहारा वद्धमाला नियमित विलसच्चूडिकां रक्त वस्त्रां मातंगी शंख पात्रां
मधुर मधु मदां चित्रकोद्गासि भालाम् ॥ ७ ॥ ऋषि रुवाच ॥ १ ॥
आठप्ताभते सतो देव्या स्वचण्डमुण्ड पुरोगमाः ॥ चतुरंगः वलोपेतायसुरस्यु-
द्यता युधाः ॥ २ ॥ इदं शुक्ते ततो देवी मीपद्गासा व्यवस्थिताम् ॥ सिद्धस्यो
परिशैलेन्द्रशङ्गे महति वाचने ॥ ३ ॥ वेष्ट्वा तांसमादातुमुद्यमं च
कुरुद्यताः ॥ आकृष्ट चापा सिध्यास्तवान्ये तत्समीपगाः ॥ ४ ॥ ततः कोप
च क्रोर्यै रविका तानरीन्प्रति । कोपे न चास्या वदनमपीवर्यामभूत्तदा ५
भ्रूटी वृष्टिलात्ताया ललाट फलकाद् द्रुतम् ॥ काली फराल वदना
विनिष्क्रान्ता सिपाशिनी । ६ । विचित्र खड्गं धरानर मालाविभूषणा ॥
द्वीपि चमपरोधाना शुक्ल मासाविभूषणा ॥ ७ ॥ अति विस्तार वदना
जिह्वा लज्जन भीषणा ॥ निमग्नास्त नयना नादा पूरित दिङ् मुखा ॥ ८ ॥
। मयेगेनाभिपतिता घातवती मदासुरान् ॥ सेन्ये वत्र सुरारोणामभर

कलात्मनेदेवार्घ्या पात्राय नमः इति तमाधारे स्थापयेत् ॥ त्र्यक्षिवर्षा वां
 स्त्रयोविंशति वर्षाः श्रमुक पदस्थाने इष्ट देवता नामोच्चार्य रामार्घ्यं त्यादि
 रां च नम्र माह ॥ ॐ क्लीं महाजन वराय हुं फट् स्वाहा पावजन्याय
 नम इति ॥ कामः क्लींमिति त्र्यक्षिवर्षाः तत्रार्क कलास्तपिन्य याः सम्पूज्य
 विलोमे मूल मातृके कं भं तपिन्यादिकान् जपन् जलैस्तं सम्पूर्य ॥ ॐ सोम
 मण्डलाय पौडशाकलात्मनेदेवार्घ्या मृतायनमदत्यर्थसंपूज्य तत्र तन्मंत्रं तृणि
 मुद्रया गंगे चेत्यादितीर्थ मंत्रेण कुशमुद्रयाऽ कं मंडलात्तीर्थना वाद्यस्वद-
 दोदेवमावाहयेत् ॥ अं कुशमुद्रा ॥ लक्षणं मुकुम्भ ॥ मत्स्यमुद्रोक्ता ॥ अं गुण्डतर्जनी
 स्फोटं धोपिका मुद्रा ॥ वाम मुष्टिनिगर्तवर्जनीकं कृत्वा शंखोपरिभ्रमणमवगुं टन
 पनमुद्रा ॥ ब्राह्मणाहुं ॥ वीजेन गंगामुद्रायै नुमुद्राम् ॥ सा उक्ता ॥ अमृतधीजत वमिति
 वीजेन संरोधिन्यामुद्रायाः ॥ तत्रार्घ्यमुद्रा शंखाद्याः ॥ शखमुशलचक्रमुद्रा उक्ताः ।
 महामुद्रां कुर्वन् ॥ परमीकृत्य करयोरगुलीसमध्यकरौ कियो जयेदिति महामुद्रं का
 करं गुल्य प्राणि वकी कृत्य संमुलं योजि तानि गालिनी मुद्रा गरुडमुद्रा
 उक्ताः ॥ तेन प्रोक्षणी जलेन तिजांग मुक्षेत् सिंचेत् ॥

ततद्वलम् ॥ ६ ॥ । ६ ॥ पाप्मिणप्राहां कुशप्राहि योध घंटा समन्वितान् ॥
 नमदायैक हस्तेन मुखे चित्तेषु वारणान् ॥ १० ॥ तथैवथोवं तुरगै रथं
 सारथि ना सह ॥ निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयंतं इति भैरवम् ॥ ११ ॥ एकं
 जपाह के शेषु प्रीवाया मथ चापरम् ॥ पादेनाक्रम्य चैवान्य मुर सान्य
 मपोययन् ॥ १२ ॥ तै मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तवासुरैः ॥ मूत्रे
 न जप्ता हरुपा दशनैर्मथिता न्यपि ॥ १३ ॥ वज्रिनां तद्वलं सर्वं मसुराणां
 दुरात्मनाम् ममर्दाभक्षयघान्या नन्यांरचा वापत्तदा ॥ १४ ॥ असिना
 निहताः केचित्केचित्छट्ट बांग वाहिताः ॥ जग्मुर्बिना राममुरादवाप्राभि ह्विता
 स्वधा । १५ ॥ ज्ञेयं तद्वलं सर्वं मसुराणां निरातितम् ॥ दृष्ट्वा चंडो
 भिदुद्रावतां काला मतिभीषणाम् ॥ १६ ॥ शरवर्षैर्मदाभीमैर्भो
 माक्षीर्ता महासुराः ॥ द्वादशमासचक्षेत्रे च मुंडितानिः सहस्र राः । १७ ।
 तानि चक्रारयनेकानि निरामानानि तन्मुसम् ॥ वभुर्यवारुं विनानि
 सुरभूं निपतो इरम् ॥ १८ ॥ ततो जहामा विरथा भीमं भैरव
 नाद्रिनी ॥ काली कराख यक्रांत दुर्दंशं दुरानोऽग्न्यजा ॥ १९ ॥ उवाच च
 महा सिद्ध देवी चंड मभावत ॥ गृहीत्वा पास्यके शेषु शिरस्ते
 नामिनाच्छिनन् ॥ २० ॥ अथ मुषडोम्यथावर्त्ता दृष्ट्वा चंडं निरातितम् ॥
 तमप्य पातयद् भूमौ सा यद्गंगाभिहतरुपा ॥ इत रोषं ततः मन्थं
 दृष्ट्वा चंडं निपातितम् ॥ मुंडं यमु महावीर्यं दिशो भेजेनगा चरम्
 ॥ २२ ॥ शिरस्चंडस्य काली च गृहीत्वा मुसुं मेरुच ॥ प्राह प्रपवडा-

अथ संकल्पः ॥ अद्योत्पत्तिं मम समस्त जन्म बाल्य योवन वार्धक्या
 वध्यो पार्जित कायिक वाचिक मानसिक सां सर्गिक सकल पाप स्य
 पूर्वाकैहिकानेक विधि निरवधिक भोगा नु भवानन्तरे श्री परमेश्वर प्रीति
 द्वाराब्रह्मा शिव विष्णु सायुज्य पद प्राप्ति कामोलक्षवर्चिकाप्रज्वालनवदङ्ग
 भूत दीप कलश गणेश पूजन पूर्वाक ब्रह्म विष्णु महेश्वरं पूजनं प्रधान
 देवता पूजनं चाह करिष्ये ॥ दीपं सम्पूज्य कलश गणेश पूजनं च
 कुर्यात् ॥ अन्य कलश मध्ये इदं विष्णु रिति मन्त्रेण हेम सिंहासन स्थितं
 भिया सहित विष्णुं पूजयेत् ॥ तदक्षिणे ब्रह्म यज्ञाननमिति सावित्री
 सहितं ब्रह्माण्डं पूजयेत् ॥ तदक्षरे नमः शम्भवायेति मन्त्रेण उमा
 सहितं शिवं पूजयेत् ॥ प्रधान देवतां गङ्गा च पोडशी पवारैः सम्पूज्य ॥
 ततः मनो जूति रिति मन्त्रेण प्राणं प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ सहस्र शीर्षति

दृहासनि श्रमभ्येत्य चडिष्ठाम् ॥ २३ ॥ मया तवात्रोपहतौ चण्ड मुढौ-
 महापशु ॥ युद्ध यज्ञे स्वयं शुभं निशुभं चहनिष्यसि ॥ २४ ॥ श्यपि-
 रुवाच ॥ २५ ॥ तावानीती ततो दृष्ट्वा चण्ड मुण्डौ महासुरी ॥ उवाच
 कात्तो कल्याणी ललितं चडिकावचः ॥ २६ ॥ यस्मा शब्दं च मुण्डं च
 गृहीत्वा त्वमुपागता ॥ चामुण्डेतिवतो लोकेऽस्याता देवि भविष्यसि ॥ २७ ॥
 इति मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये चण्ड मुण्ड
 वयो नाम सप्तमाऽध्यायः ॥ ७ ॥ उवाच ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥ एवम्
 २७ ॥ एवमादितः ॥ ४३६ ॥ अथ अष्टमः ॥

अथ ध्यानम्—अरुणां करुणा तरङ्गिताक्षीं श्रुत पाशा कुंश मुष्यं
 चाप इस्तार ॥ अग्रिमा द्विभिरा श्रुतां मयूरीरुह मित्ये वविभावये भवा-
 नीम् ॥ ८ ॥ श्यपिरुवाच ॥ ९ ॥ चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनि
 पादिते । वरुलेपु च सैन्येषु क्षयिते प्वसुरे खरः ॥ १० ॥ ततः कोप
 परार्थेन चेताः शुम्भः प्रतापवान् ॥ उद्योगं सर्वं सैन्यानां दैत्या नामादि-
 देशत् ॥ ११ ॥ अथ सर्वो यज्ञे दैत्याऽपदशीविहदायुषाः कम्बूनां चतुषा
 शीति निर्यान्तु स्वर्गले वृताः ॥ १२ ॥ कोटि वीर्याणि पद्माशद सुराणां
 कुलानिधौ । शतं कुलानि ध्येयाणा निर्गच्छन्तु ममाग्रया ॥ १३ ॥ कालका
 शीदरा भीयोः कालकेयास्तथा सुराः युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आग्रया
 रशरिता मम ॥ इत्याग्राप्या सुरपतिः शुम्भो भैरव शासनः ॥ निर्ज-
 गाम महासैन्य सहस्रं वीरुभिर्भुवः ॥ १४ ॥ मायान्तु चण्डिका दृष्ट्वा
 कथेन्य मति नोपयात् । उवाचैतैः पूरवामास परयो गगनाचरम् ॥ १५ ॥
 ततः भिरौ नानाद् मनीष कृतवान्पुत्र ॥ परया न्येन तन्नाद् मग्बिका
 चाप वृहन् ॥ १६ ॥ अनुभवां सिद्ध परयाना नारापूरित दिङ्मुष्या ॥

आवनम् ॥ ॐ पुरुष एवेति उपवेशन् ॥ ॐ एसावानस्येति पाद्यम् ॥ ॐ
 त्रिपादूर्ध्वेति अर्घ्यम् ॥ ॐ ततो विराड्विभ्राचमनीयम् ॥ ॐ तस्माद्यज्ञादिति
 स्तानम् ॥ त माद्यज्ञात्समिति आच्छादनम् ॐ तस्मादरवेति यज्ञोपवीतम् ॥ ॐ तं
 यज्ञमिति गन्धम् ॐ यन्पुरुष इति अञ्जलिकरणम् ॥ ॐ सप्तास्यासन्निति-
 प्रक्षिणा ॥ इति सम्पूज्य ॥ गरुडं हंसं वृषभं च सम्पूज्य ॥ ततोऽङ्ग-
 पूजा ॥ कालाय नमः शिरः पूजयामि ॥ ॐ विष्टुवे नमः ललाटे पूज-
 यामि ॥ ॐ बह्वये नमः नेत्रं पूजयामि ॥ ॐ रवेये नमः
 कर्णौ पूजयामि ॥ ॐ क्षीप्राय नमः नासिकां पूजयामि ॥ ॐ
 निशा कराय नमः मुसं पूजयामि ॥ ॐ हृदाय नमः कण्ठं
 पूजयामि ॥ ॐ शोषाय नमः स्कन्धं पूजयामि ॥ ॐ जगद्वापिने

निनादेर्भूपतौः काली जिग्ये विस्तारिता नना ॥ १० ॥ तं निनाद् मुप
 श्रुत्य दैत्य रीन्यैरवतु दिशाम् ॥ देवी सिंहस्तया काली सरोषीः परिवारि-
 ता ॥ ११ ॥ पतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुर द्विपाम् ॥ भवाथामर
 सिद्धाना मति वीर्यं बलान्विताः ॥ १२ ॥ ब्रह्मेश गुहविष्णुनां तथेन्द्रस्य च
 शक्तयः ॥ शरीरेभ्यो विनिष्कम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥ यस्य
 देवस्य यद्रूपं यथा भूषणं वाहनम् ॥ तद्रदेवदितच्छक्तिं सुरान्योद्
 धुमाययी ॥ १४ ॥

हंसयुक्त विमानामे साक्षसूत्र कमण्डलुः । आयाता ब्रह्मणः शक्ति
 ब्रह्मणी सभिधीयते ॥ १५ ॥ मादेरवरी वृषा रुद्रात्रिशूल वरपा-
 रिणी । मद्वाहिवलयाप्राप्ता चन्द्रोरेखा विभूषणा ॥ १६ ॥ कीमारी
 शक्ति हस्ता च मयूर वर वाहना । योद्धमभ्यापयो दैत्या नाभिका
 गुरुरूपिणी ॥ १७ ॥ तथैव वेणुयो शक्ति गरुडो परि सास्थिता ।
 शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्गं सङ्गं हस्ताभ्युपा ययी ॥ १८ ॥ यत्र
 धाराहमनुलं रूपं या विध्रतो हरेः ॥ शक्तिः साप्या ययी तत्र
 धाराही विध्रतोऽनुम् ॥ १९ ॥ नार सिद्धो नृसिंहस्य विध्रतो सररां
 ययुः । प्राप्ता तत्र सदाज्ञेपञ्चिध्र नयनं चक्षुः ॥ २० ॥ यत्र हस्ता
 तथे बैन्द्री गत्र शत्रो परि स्थिता । प्राप्ता सहस्र नयना यथा
 शक्र स्तयैव सा ॥ २१ ॥ तदः पतिवृत्तं भिरो शानो देव
 शक्तिनिः ॥ हन्यन्तामनुयः शीघ्रं मम प्रीत्याह परिब्रह्मम् ॥ २२ ॥
 ततो देवो शरीरात् विनिष्कान्तावि भोषणा ॥ परिब्रह्म शक्तिं त्वयुमा
 शिवा शतनिनादिनी ॥ २३ ॥ सा पाद् भूय जटिल माशय

नमः बाहूँ पूजयामि ॥ ॐ, तेजो रूपाय नमः स्तत्रौ पूजयामि ॥
 ॐ महेश्वराय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ विश्वरूपाय नमः कर्तो
 पूजयामि ॥ ॐ जगत्प्रभवे नमः गुदं पूजयामि ॥ ॐ स्वप्रका-
 शाय नमः उरु पूजयामि ॥ ॐ स्वयं व्याप्तये नमः जानुनी पूजयामि ॥
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः गुरुतौ पूजयामि ॥ ॐ जनविपाय नमः पारी
 पूजयामि ॥ ॐ पर ब्रह्मणे नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ ॐ धात्रे नमः पारी
 पूजयामि ॥ विधात्रे नमः जङ्घे पूजयामि ॥ छष्टे नमः उरु पूजयामि ॥
 ॐ प्रजापतये नमः मेढूँ पूजयामि ॥ ॐ परमेष्ठिने नमः कर्तो
 पूजयामि ॥ ॐ अग्नि रूपाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ॐ पद्म
 नाभाय नमः हृदयं पूजयामि ॥ वेद्यसे नमः बाहूपूजयामि ॥ ॐ
 शमोदराय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ ॐ हिरण्य गर्भाय नमः
 मुखंपूजयामि ॥ ब्रह्मणे नमः शिरं पूजयामि ॥ विष्णवे नमः
 सर्वाङ्गम् पूजयामि ॥ विशेषो पहारादि समपयेत् । अथ दीप

नपराजिता ॥ दूत त्वगच्छ भगवान्पार्वं शुम्भ निशुम्भयोः
 ॥ २४ ॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दीनवा वति गर्वितौ । ये चान्ते
 दानवा स्तत्र युद्धाय समुपरिधनाः । २५ ॥ त्रैलोक्य मित्रो लभतां देवाः
 सन्तु हविर्भुजः ॥ यूय प्रयात पातालं यदि जीवितु मिच्छथ ॥ २६ ॥
 बलावले पादथ चेद्भवन्तो युद्ध काङ्क्षिणः ॥ तदागच्छत तृप्सन्तु
 मच्छिन्वाः पिशितने वाः ॥ २७ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन उवा
 रेव्या शिवः स्वयम् ॥ शिव दूतीति लोके, ऽस्मिं स्वतः साख्याति
 मागता ॥ २८ ॥ ते ऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यात महा-
 मुखाः ॥ अमपीपूरिता जग्मुर्घतः कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ततः
 प्रथममेवामे शर शक्त्युष्टि दृष्टिभिः ॥ ववर्षु रद्धतामपां स्तान्देवी
 ममराय्यः ॥ ३० ॥ सा च तान्प्रहितान् वाया ञ्छूल शक्ति पर
 एषान् ॥ चिच्छेद् लीलयाभ्यात धनुर्मुके महेषुभिः ॥ ३१ ॥
 तस्मापतस्तथा काली शूल पात्र विदारि तान् । तद्वद्वाङ्ग पोथितां
 रषारोन् क्रुरेवती प्यचर चक्ष ॥ ३२ ॥ कमण्डलु जला छेप हव
 दीर्यान्दती जसः ॥ अघ्नाणो चाकरो चक्षु न्येन येनरम धावति
 ॥ ३३ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन वया बभ्रुष्य वैष्णवी ॥ दे-याञ्जपान
 फीमारी वया शक्त्यादि कोपना ॥ ३४ ॥ ऐन्द्री कुलिश पावेन
 शतशो देव्य दानवाः ॥ पेतु विदारितः शृष्ट्यां क्रथिरोपप्रवर्षिणः
 ॥ ३५ ॥ नुख पहार त्रिभ्रमा दम्प्राम छत रत्नम् ॥ वाराह मूर्त्या-
 न्यपतं रषष्टेण च विदारिता ॥ ३६ ॥ नदी विदारितां रचान्वा-

दान सङ्कल्पः ॥ अद्येहेत्यादि पूर्वं सङ्कल्प्य सिद्धिं रस्तु अमुक
 गोत्रायाः अमुक नाम्नी देव्या ममसमस्त जन्म वाल्य यौवन
 वार्धक्या वस्थो पार्जित कायिक वाषिक मानसिक सां सर्गिक
 सकल पापत्रय पूर्वकैहि कानेक विष निर वधिक भोगा
 नुभावा नन्तरं श्री परमेश्वर प्रीतये तिल तैला कान् पृताकान्
 स पाद् लक्ष संख्य कान् प्रज्वालितान् दीपान्
 अमुक देवता राधन पक्षे ब्रह्मणे त्रिष्णने, ईश्वराय, देव्यैगङ्गायै, तुषार्यै,
 सूर्याय, गणपतये समर्पया मीति शर्मपयेत् ॥ अथ कांश्य पात्र रौप्य
 पात्रस्य हेम वत्तिका दान मंत्रः ॥ रौप्य पात्र स्थित दीपं हेम वत्तिं
 समन्वितम् ॥ कांश्य पात्रेण सहितं ददामि व्रत पूर्त्तये ॥ ततो भूयमी
 दक्षिणा दानम् ॥ इदं व्रतं मन्नादेव कृतं प्रित्यै तत्र प्रभो ! न्यूनं सम्पूर्णं
 वांयातु प्रसादा तत्र केशव ! ॥ गृहीत्वाऽपि व्रतदेव यद्य पूर्णं करोम्यहम् ॥

न्भक्तवन्तो महा सुरान् । नार सिंही चचाराज्ञी नादा पूर्णं
 दिगम्बरा ॥ ३७ ॥ अण्डा दृढा सैरसुराः शिव दूत्यभि दू-
 पिताः ॥ पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तौश्चत्वादाय सात्तदा ॥ १८ ॥ इति मान्
 गणं क्रुद्धं मदयन्त महा सुरान् ॥ दृष्ट्वाम्यु पाचैर्विविधैर्नशुर्देवारि
 सैनिकाः ॥ ३६ ॥ पलायन परान दृष्ट्वा दैत्यान्मात् गणार्दितान् ॥ योद्धु
 मभ्या ययौ क्रुद्धो रक्त बीजो महामुरः ॥ ४० ॥ रक्तविन्दुर्यदा भूमोपतत्यस्य
 सरीरतः ॥ सैमुत्पततिमेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥ ४१ ॥ युयुये सगदा
 पाणि रिन्द्र शक्त्या महामुरः ॥ तत्रचैन्द्रीस्य वज्रेण रक्त बीजमठाडयत् ३२
 कुलिरोनाहवस्याय बहु सुस्त्राव शोणीवम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रू
 पास्तस्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीरांद्रक्त विन्दवः ॥
 वावन्तः पुरुषा ज्ञातास्तद्वीर्यं बल विक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र
 पुरुषा रक्त मम्भराः ॥ समं मातृभिरन्त्यप्र शस्त्रशाताति भीषणम् ॥ ४५ ॥
 पुनश्च वज्र पातेनक्षत्रमस्य शिरोयदा । वगाह रक्तं पुरुषास्ततो
 जाताः सद्भ्रराः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणामिजपानह ।
 गदया ताडय मासरेन्द्रो तनमुरेस्वत् ॥ ४७ ॥ वैष्णवी चक्र भित्तस्य
 अधिर स्त्राव सम्भवेः । सद्भ्र शो जर्गदुयाप्तं तत्प्रभायो महामुरैः ॥ ४८ ॥
 शक्त्या चपान कौमारो वाराही च तयासिना ॥ नाहेशरी त्रिशूलेन
 रक्त बीजनहामुत् ॥ ४९ ॥ न चापि गदया दैत्यः सर्वा एषा इनत्पृथक् ॥
 मान् कोषा समाविष्टोरक्त बीजो महामुरः ॥ ५० ॥ तस्या हतस्य
 बहुधा शक्ति शूलादिभिर्नृपि ॥ एषान यो देरकौषण्येन सद्भ्रराऽ
 युगः ॥ ५१ ॥ तेषामुराम्कसम्भूतैरनुर. सकर्णं जगत् ॥ ध्यात्वा

तन्मेभवतुसम्पूर्णं त्वप्रसादाञ्जनादनः ॥ यस्यस्मृत्येतिकायेनवाचेत्यादि नाप-
रमेद्वरं समर्प्यततो विसर्जनं कुर्यात् ॥ इतिलक्ष्मितीकादीपदानविधि-समाप्ताः ॥
पूर्वोक्तविधिशीमस्याचित्रानाम्पुन्यावेत्यासङ्कपोक्तदेवानां चार्पणं कृतम् ॥

अथ महाष्टमी व्रतप्रतिष्ठा ॥ सर्वातो भद्रं मण्डलैक
देशे कलशं सम्पूज्य ॥ तदुपरि सुवर्णं प्रतिमां तत्पूजाविधिना
सम्पूज्य रात्रौ जागरणं प्रातर्देव्या उत्तर पूजां विधाय ॥ ॐ अथ महाष्टमी
अग्ने अश्विकेति १०८ होमं समाप्य प्रार्थयेत् ॥ महिपत्नि ! महा माये
चामुण्डे मुण्डे मालिनि ! ॥ द्रव्यमारोग्य विजयं देहि देवि ! नमोस्तुते ।
भूतप्रेत पिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरी ! देवभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्योर
क्षमा सदा ॥ सर्वं मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ॥ उमे ब्रह्मणि
कौमारी विस्वरूपे ! प्र प्रसीद मे ॥ इतिसंप्रातरर्थ ॥ नव ब्राह्मणेभ्यो यथा
शक्ति रक्त व क्षत्रिणादि दानं कुर्यात् ॥

मासीत्ततो देवाभयमाजगमुक्तमम् । ५२ ॥ तान्विपण्णान्सुरान् हृष्ट्वाचरि-
डका प्राइसत्वा ॥ उवाच काली चामुण्डेविस्तरवदनं कुरुः ॥ ५३ ॥ मच्छस्त्र-
पात सम्भू तान् रक्तविन्दून्महासुरान् ॥ रक्तविन्दोः प्रतीच्छत्यंबक्त्रेण नेत-
पेगिता ॥ ५४ ॥ भजयन्ती चरणे ददुत्पन्नान्महा सुरान् ॥ पवसेप क्षयं देत्य-
क्षीणरक्तो गमिष्यति । ५५ ॥ भक्ष्यमाणा स्वया चोमा न चोत्पत्स्यति
चापरे ॥ इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूले नाभि जघानतम् ॥ ५६ ॥ मुलेन काली
जगृहेरक्तवीजस्वशोणितम् ॥ ततोऽसावाजघानाथगदगातत्रचण्डिका ॥ ५७ ॥
न चास्या वेदनां चक्रे गदा पातोऽल्पि कामपि ॥ तस्या हतस्य
देशत्तु बहु सुम्नाच शोणितम् ॥ ५८ ॥ यतस्ततस्त्वद्वक्त्रेण चामुण्डा
सम्प्रतीच्छति । मुले समुद्रत्तयेऽस्या रक्त पातान्महासुराः ॥ ५९ ॥ तारच-
खादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ॥ देवी शूलेन वज्रेण वाणी
रक्षिभि ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥ जघान रक्त बीजं तं चामुण्डा पीत शोणि-
तम् ॥ स पपात महोष्ट्रे शस्त्रसङ्घ सभाहतः ॥ ६१ ॥ नीरक्तञ्च मदी-
पाल रक्त बीजो महासुरः ॥ ततस्ते हर्षं मतुलमवापु स्त्रि दशा नृप ॥ ६२ ॥
तेषामानुगणो जातो ननर्वास्त्रं मदोद्धतः ॥ ६३ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे
मार्यखिन्दे मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये रक्तबीज वधो नामाष्टमोऽध्यायः ।
उवाच ॥ १ ॥ अर्धं ॥ १ ॥ रलोक ६१ ॥ म० ६३ ॥ एवमादितः ॥ ५०२ ॥

अथ ध्यानम्—इन्द्रक काञ्चन निर्भान्कविराष्ट माखांशाशाङ्कुरी च
वर्दा नित्र वाट्टु दण्डैः । विधाण मिन्दुशकल भरणां त्रिनेत्राम्माम्बिके
शमनिर्वा यपुरा भ्रयामि ॥ ६ ॥ राजोवाच ॥ १ ॥ विचित्र मिदमाख्यात
भगवन्भयवामम ॥ देव्यारचति माहात्म्यं रक्तबीज वधाधितम् ॥ २ ॥

अथ कुमारी पूजनम् . .

सु तिष्ठ भूमौ स्थापिता सनेषु प्राङ्मुखीः कुमारीः संस्थाप्य संकल्पं
 कुर्यात् ॥ अथेत्यादि मम कृतस्या मुक्ताष्टमी व्रतस्यो घापन कर्मणः
 प्रतिष्ठा साङ्गता सिद्धये देवी प्रीत्यर्थं एतावत्संख्याक कुमारीणां यथा
 सादत्त सामप्रिणां पूजन पूर्वकं भोजनं चाहं करिष्ये ॥ तासां पाद्
 प्रक्षालनम् ॥ जगत्पूज्ये ! जगद्वन्दे सर्वशत्रुविनाशिनि ! ॥ पूजां गृहाण
 कौमारि ! जगन्मात नमोस्तुते ॥ इति मन्त्रेण पाद्यादि नैवेद्यान्तं
 समर्च्य विभवानुसारेण सौभाग्य द्रव्य वस्त्र भूषणा दीनि दद्यात् ॥
 खण्ड मोदक घृत दुग्धं दधि मधुनि यथा सुखं शनैः शनैः भोजयेत् ॥
 तासां दत्ता च मनीया नां करेण क्षत पुष्पादिकं दत्त्वाप्रतिगृह्यधिसजयेत्

भूयरेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्त बीजे निपातिते ॥ चकार शुभो यत्कर्म
 निशुभ रचाति कोपनः ॥ ३ ॥ ऋषिरु वाच ॥ ४ ॥ चकार कोपमतुलं
 रक्त बीजे निपातिते ॥ शुभा शुरो निशुभश्च हतेध्वन्वेषु चाह्वये ॥ ५ ॥
 इत्य मानं महा सैन्यं विलोक्या मर्षमुद्रहन् ॥ अभ्यधा चन्नि
 शुभोय मुरच्यया सुरसेनया ॥ ६ ॥ तस्याप्रत स्तथाष्टे पार्श्वयोश्च
 महासुताः संदष्टौष्ट पुत्राः क्रुद्धाहतुं देवी मुपा ययुः ॥ ७ ॥
 आज गाममहावीर्यः शुभोपि स्वशले वृतः ॥ निहतुं चरिदकां
 कोशात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ततो युद्ध मती वासी देव्याः
 शुभ निशुभयोः ॥ शर वर्यमती वोप्रं मेघयो रिष वपंतो ॥ ९ ॥
 चिच्छेदा स्ताञ्छरां स्ताभ्यां चरिदका स्वशरोत्तरैः ॥ ताडया मास
 चांगेषु शस्त्रौषे सुरेश्वरी ॥ १० ॥ निशुभो निशितं स्वङ्गं चर्म
 चादाय सुप्रभम् ॥ अताड यन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहन मुत्तमम्
 ॥ ११ ॥ ताडिते वाहने देवी जुरप्रेणासिमुत्तमम् ॥ निशुभस्या
 यपि च्छेद चर्म चा छुट्ट चन्द्रकम् ॥ १२ ॥ क्षिप्ते चर्मणि
 स्वर्गोच शक्ति चित्तेपमोमुरः ॥ तामप्यस्वदिधा चक्रे चक्रेणाभि
 मुत्सा गताम् ॥ कोपाप्मातो निशुभोय यज्ञं जप्राह दानवः आयातं
 मुष्टिपातेन देवी तषाप्य चूर्णयन् ॥ १४ ॥ आदिद्वयाथ गदां
 सोपि चित्तेय चरिदकां प्रति ॥ सापि देव्या त्रिगजेन भिन्नाभम
 रनागता ॥ १५ ॥ ततः परशु हस्तं त माषान्तं देत्य पुक्
 गरम् ॥ आहत्य देवी वाष्ठीये रपाव यत भूतले ॥ १६ ॥
 तस्मिन्नि पतिते भूमौ निशुम्भे भीम विरम्भे । प्रातर्पतोय संक्रुद्धः
 प्रययी हन्तुर्नविकाम् ॥ १७ ॥ सरयस्थ स्वधा त्पुर्धेगृहीत प(मा)पुषेः ॥

अथ श्री विष्णु पूजन प्रयोग

आचाम्य प्राणा नायाम्य भूतादि शुद्धिं संविधायशु शान्तिं भवंतु ।
मङ्गलोच्चारणम्—ॐ स्वस्तिनऽऽइन्द्रोव्यूद्धरश्चवाऽः । स्वस्तिनःपूपा
विवरश्च वेदाऽऽ स्वस्तिनः स्ताक्षर्योऽश्चरिष्टनेमिऽः स्वस्तिनो बृहस्वति
र्द्वानु ॥ १ ॥ भद्रद्रुक्कुर्याभिऽऽ श्यगुयाम देवा भद्रद्रुम्पस्येमा क्षमिष्यं
जन्त्राऽऽ स्थिरै रक्षै स्तुष्टुवा धं सस्तनूभिर्व्यंशो महि देव
हितं व्यदायुः ॥ २ ॥ तम्पत्तकोभिऽऽ खुगच्छेम देवाऽऽपुत्रैर्व्रतुभिऽऽ
रुत वाहिरण्यैऽऽ । नाकङ्कृष्णानाऽऽ सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽऽअधि

भुजै रष्टाभिऽऽ खुलै व्याप्यां शेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥ तमायान्तं समालोक्य
देवीं शङ्क मवा दयन् ॥ ज्या शब्दं चापि धनुपश्चकराऽऽवोवदुःसहम् १९ ॥
पूर्यामास ककुभोनिज घण्टास्वने तच ॥ समस्त दैत्य सैन्यानां तेजो
यथ विधायिना ॥ २० ॥ ततः सिंहो महा नादैस्त्याजितेभ महामदेः ॥
पूर्यामास गगनं गां तथैव दिशोदरा ॥ २१ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं
द्दामताडयत् ॥ कराम्यां तश्चिनादेन प्राक्स्वनारतेतिरोहिताः ॥ २२ ॥
अट्टाट्टहा सम शिवशिव दूती च कारह ॥ तैः शङ्करसुरारत्रैऽऽपुः शुम्भः
कोषं परंययी ॥ २३ ॥ दुरात्मतिष्ठतिष्ठेतिव्याजहाराम्बिका यदा ॥
तदा-जयेत्यभिहितं देवैरा काशसंस्यतैः ॥ २४ ॥ शुभेनागत्यया शक्ति
मुक्ताञ्जलाविभीषणा ॥ आयांती वह्निकृशा भासानिरस्ता महोरुक्या ॥
सिंहनादेन शुभस्य व्याप्तं लोक त्रयान्तरम् ॥ निर्वातनिः स्वनो घोरो
जितया नवनी पते ॥ २६ ॥ शुभमुक्ताच्छरान्देवी शुभस्तत्प्रहिताच्छरान् ॥
चिच्छेदस्वशरै रूमैः शत शोध सहस्रशः ॥ २७ ॥ ततः सा चरिद्धमा
ऋद्धा शूने नाभिजघानतम् ॥ सतदा निहतो भूमो मूर्च्छितो निप-
पातह ॥ २८ ॥ तवो निशुंभः संप्राप्य चेतनामाचक्रामुंक्रः ॥ आजघान
शरैर्देवीं फालीं के शरिण तथा ॥ २९ ॥ पुनरच कृत्वा वाहूना भयुवं
दनुजेश्वरः ॥ चक्रायुधेन दित्तजक्ष्णाद्या मास चंडिकाम् ॥ ३० ॥ तवो
भगवतो ऋद्धा दुर्गा दुर्गाति नाशिनी ॥ चिच्छेदतानि चक्राणि स्वशरैः
सायकंश्चतार ॥ तवो निशुंभोयगेन गदा मादाय चंडिकाम् ॥ अभ्यधा
यतथे इतु दैत्य मेना ममा वृतः ॥ ३२ ॥ तस्या पतत पवागु गर्द
चिच्छेद पण्डिका ॥ रत्नेन शिन धारेण सच शूलं समादरे ॥ ३३ ॥
शूलं हस्तं समायांते निशुंभ ममताहनम् हृदि विष्वाधशूलेन येचिद्धेनचण्डि
का ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयाग्निः सूर्तोपरः ॥ महावतो
महावोर्धेभित्थं पुरोधोवदन ॥ ३५ ॥ तस्य निष्कामतो देवीप्रहस्यस्थन

रोचनेदिवऽ ॥ ३ ॥ नमस्काराः—श्री मन्महा गणाधि पतये नमः ।
 इष्ट देवताभ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो
 नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः । वाणी हिरण्य गर्भभ्यां नमः ।
 श्री चामाभेश्वराभ्यां—नमः । श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः ।
 शची पुरन्दराभ्यां नमः । मातृ पितृ चरणरुमलेभ्यो नमः । सर्व-
 भ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । निविघ्न—मस्तु ॥
 सुमुख शकैक तन्तरच कपिलो गज कर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्न
 नाशो गणाधिपः ॥ धूम्र केतुर्गणाभ्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः ॥
 इत्यादिभि र्मन्त्रैर्गणेशं सम्पूज्य तत्र—सङ्कल्पः—ॐ विष्णु ३—

वत्ततः ॥ शिरश्चिच्छेदखड्गेन ततो सात्र पतद्भुवि ॥ ३६ ॥ ततःसिंह
 रचखादोम्रदंष्ट्राक्षुण्णशरोवरान् ॥ असुयंस्तांस्तथा काली शिवदूती
 तथा परान् ॥ ३७ ॥ कौमारी शक्ति निभिन्नाः केचिन्नेशुमंहासुराः ॥
 ब्रह्माणो मंत्र पूतेनतोये नान्येनिराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरीप्रिशुलेन भिन्नाः
 पेतुस्तथा परे ॥ वाराही तुंङ्ग श्यतेन केचिच्चूर्णा कृता भुवि ॥ ३९ ॥
 खंडखंड च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ॥ वज्रेण चैत्रो हस्ताम
 विमुक्तेन तथा परे ॥ ४० ॥ केचिद्विने शुर सुराः केचिन्नष्टा महाइवान् ॥
 भवितारचापरे काली शिव दूतीमृगाधिपेः ॥ ४१ ॥ इति मार्कण्डेय पुराणे
 सारणि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुम्भ वधो नाम नवमोऽध्यायः
 ॥ ६ ॥ अथाच ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥ परं ॥ २१ ॥ पत्रमा-
 दितः ॥ ५४३ ॥

अथव्यानम्—उत्तप्व हेम रुचिरां रवि चन्द्र बद्धि नेत्रां धनुश्शरयुता
 कुश पाश शूलम् ॥ रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव शक्ति रूपां कामेश्वरी हृदि
 भजामि धृतेन्दु लेखाम् ॥ १० ॥ अष्टिहवाच ॥ १ ॥ निशुंभ निहतं
 दृष्ट्वा भ्रातरं प्राण समितम् ॥ हन्यमानं वलं चैव शुंभः क्रुद्धोऽग्रधी
 इवः ॥ २ ॥ बला वते पादु दुष्टे त्वं मादुर्गे गर्वमा वह ॥ अन्यासां वल
 मा भित्त्य युद्ध सेयाति मानिनी ॥ ३ ॥

देव्युवाच ॥ ४ ॥ एकैवाहं प्रगत्यत्र द्वितीया काममापरा ॥ परपैता
 दुष्ट मय्येव शिराश्वो मद्रिभूतयः ॥ अष्टिहवाच ॥ ५ ॥ उक्तः
 समस्ता स्तादेवो प्रज्ञाणि प्रमुखाब्जयम् ॥ ६ ॥ तत्रा देव्यास्तनी
 जामुरेके वासीत्तदाविष्ठा ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ ८ ॥ अहं विभूत्या बहुभि
 रिद रूपे यंदास्मिता ॥ तस्मै ह्यहं मये केवतिष्ठा म्यात्री स्थिते मय
 ॥ ९ ॥ अष्टिहवाच ॥ १० ॥ तत्रः प्ररहरो युद्ध देव्याः शुंभस्य
 जेजयोः ॥ परस्तां सर्व देवानाम सुराराया षडादयम् ॥ ११ ॥ शर वधैः

श्री मङ्गलबनो महा पुस्तस्य विष्णु राज्ञया प्रवर्त्त . मानस्य अच
 ब्रह्मणः द्वितीये परार्थे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे
 अष्टा विंशति तमे युगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भारतखण्डे वद्रिका
 भूमे भारत वर्षे आर्या वर्ता न्तर्गतदिमपर्वतैक देशे केदार खण्डान्तर्गत
 पुण्य क्षेत्रे अलक नन्दामन्दाकिन्यो मध्ये वौद्धा वतारे अस्मिन्व-
 तमाने अमुक नाम संम्बरसरे अमुका ऽथने अमुकती अमुक
 मासे अमुक पक्षे अमुक वासरे अमुक तिथौ अमुक नक्षत्रे
 अमुक राशि स्थिते वन्द्रे अमुक राशि स्थिते श्री सूर्य्ये अमुक
 राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु महेषु यथा यथं राशि स्थानस्थि-
 तेषु सत्सु एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुरश्चिथी मम ऽत्मनः

शिवैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः तयोर्बुद्ध मभूद्भूयः सर्वं लोकं मयं
 करम् ॥ १२ ॥ दिव्यान्वस्त्राणीस वशो मुमुचे यान्यथान्विका ॥ ब
 भञ्जवानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघात कर्तुमि ॥ १३ ॥ मुक्तानि तेन वास्त्राणि
 दिव्यानि परमेस्वरो ॥ व भञ्जलीलयै वीथ हुंकारोच्चारणा दिभिः
 ॥ १४ ॥ ततश्शर शतैर्देवी माच्छादयत सो सुरः ॥ साधि तच्छुषिता
 देवी धनुश्चिद्येद चेपुभिः ॥ १५ ॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्ति
 मया ददे ॥ चिच्छेद । देवी चक्रेण ताम प्यस्य करेस्थिताम् ॥ १६ ॥
 ततः सङ्ग सुपादाय शत चन्द्रं च भानुमत् ॥ अग्न्याघ्नतद्वादेदीदृत्याना-
 मधिपेस्वराः १७ ॥ तस्यापततपयाशुखङ्गचिच्छेद चाडिका ॥ धनुर्मुक्तैः शिवै-
 वीर्यैश्चामेकाकंकरामजम् ॥ १८ ॥ हवास्य सतदा दैत्य रिद्धन्नघन्वाविरा
 रथिः ॥ जमाइ मुद्गरं घोरमंभिका निधनोद्यतः ॥ १९ ॥ छिद्येद्वापततस्तस्य
 मुद्गरं निशितैः शरैः ॥ तथापिसोम्यथा वतां मुष्टि मुद्यम्य वेग
 यान् ॥ २० ॥ समुष्टि पातयामास हृदयदैत्य पुङ्गवः ॥ देव्यास्तं
 चापि सा देवी तलेनो रस्य ताडयत् ॥ २१ ॥ तल प्रहाराभिहतो
 निष पातमही तले ॥ स दैत्य राज्ञः सहसा पुन रेव तथोत्थितः
 ॥ २२ ॥ उत्पत्य च प्रगृह्णाषेर्देवो गगन मास्थितः ॥ तत्रापि
 मानिराधाय युयुषे तेन चंडिका ॥ २३ ॥ नियुद्धंते तदा दैत्यरक्ष-
 दिडहाच परस्परम् ॥ चक्रतुः प्रथम सिद्ध मुनिविस्मय कारकम् ॥
 ततोनिबुद्धं मुचिरं श्रुत्वा तेनाधिका सह ॥ २४ ॥ जगत्पत्य भ्रामया
 मास चित्रेण धरणी तले ॥ २५ ॥ सत्सिष्णो धरणीं प्राप्य मुष्टि
 मुद्यम वेगितः ॥ अग्न्याघ्नत दुष्टात्मा चडिका निषने च्छदा
 ॥ २६ ॥ जमा वातं ततो देवो मयं दैत्य जने श्रम् । जगत्यां
 पातया मास भित्वा राज्ञेन वक्षसि । २७ ॥ सगतां मुः पया

श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं (मम ऐश्वर्याभि वृद्धयर्थम् । अप्राप्तलक्ष्मी-
प्राप्त्यर्थम् । सकलमनईप्सितकामनासंसिद्धयर्थम् । लोकेवासभारं राजद्वारेवा
सर्वत्रयशोविययलाभादिप्राप्त्यर्थम् इह जन्मान्तरेवासकलदुरितोमशमनार्थं
तथा ममसभार्यस्य सुपुत्रस्य सुबाधवस्य अखिलकुटुम्ब सहितस्य स पशोः
समस्त भव व्याधि जरापीडामृत्यु परि हार द्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभि
वृद्धयर्थम् । तथा मम जन्मराशेर खिल कुटुम्बस्य वाजन्मराशेः सकाशाद्ये
कैचिद्वरुद्ध चतुर्धाष्टमद्वादशस्थान स्थित क्रूर प्रदास्तै सूचितं सूचिषिष्य
माणं च यत्सर्वारिवृष्टंतद्विनाशद्वारा एकादश स्थान स्थिर वच्छुभ फल

तोऽर्था देवी शलाग्र विहित ॥ चाल यन्स कलां पृथ्वीं साप्ति
द्वीपांसपर्वताम् ॥ २८ ॥ ततः प्रशन्नमखिलं हृते तस्मिन्दुरात्मनि ॥ जगत्स्वास्थ्य-
तीवापनिर्मलं चाभवन्नभः उत्पातमेधास्सोल्काये प्रागादस्ते शर्म ययुः ॥
सरितो मार्गं वा हिन्यस्तथा सस्तत्र पातिते ॥ ३० ॥ ततो देवा गणाः
सर्गे ह्यर्षे निर्भरमानसाः ॥ बभूवुर्निहते तस्मिन्गर्वा ललितं जगुः
॥ ३१ ॥ अत्रादयं स्तेयै वान्ये नष्टु आप्सरोगणाः ॥ बबुवुः पुण्यास्वथा
त्वस्वतासुप्रभोभूद्दिवा करः ॥ जङ्गलुरवाग्दरुणताः गपन्शांताः शांत दिग्जनिः
॥ ३२ ॥ इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुंभ वयो नामाद-
शमोऽध्यायः ॥ १० ॥ उवाचा ॥ १ ॥ अर्धं ॥ १ ॥ श्लो ० ॥ २ ॥ एवमादितः ॥ ५७६ ॥

अथ ध्यानम्—वासर विद्युति मिन्दु किरीटां तुङ्ग कुचां नयन प्रय
युक्ताम् ॥ स्मेरमुखी वरदां कुशा पाशा भीति करी प्रभजे भुवनेशोम्
अपिहवाच ॥ १ ॥ देव्या हते तत्र महासुरेद्रेसेन्द्राः सुरा वह्नि पुरोग
भास्वाम् कात्यानीं तुष्टुव रिष्ट लाभादिकासि वक्रताञ्जसिकासि
ताशाः ॥ २ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर जगतो गिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं । त्वमीश्वरी देवि चरा धरस्य ॥ ३ ॥
आधार भूता जगत्स्वमेका । मही स्वरूपेण यतः स्थितासि अपां स्वरूप
स्थितया त्वयैत दाप्यायते कृत्स्नमलघ्यवीर्यं ॥ ४ ॥ त्वं यैष्णवी शक्ति
रन्त वीर्यो विश्वस्य वीजं परमासि माया । सं मोहितं देवि समस्त मेत
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ विद्याः समस्ता स्तव देवि भेदाः
त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ॥ त्वयैक्या पूरितमं वयैतत् । कावेस्तुतिः
स्त्वय्य परापतोक्तिः ॥ ६ ॥ सर्वभूतायदा देवो स्वर्गं मुक्ति प्रदायिनी ॥
त्वं श्रुताश्रुतये काया भवति परभोक्यः ॥ ७ ॥ सर्वगां बुद्धि रूपेण
जनस्य हृदि संस्थिते ॥ स्वर्गां परगंद देवि नारायणि नमोस्तुते ॥ ८ ॥
कला काष्ठादि रूपेण परिणाम प्रदायिनि ॥ विश्वस्यो परतौ शक्ते नारायणि
नमोस्तुते ॥ ९ ॥ सर्वं मंगलना मंगल्ये शिरे सर्वार्थ साधिने ॥ शारदये

प्राप्त्यर्थम् । पुत्र पौत्रादि सन्तते रविच्छिन्न बुद्धयर्थम् । आदित्यादि
नवमहानु कूललता सिद्धयर्थम् । तथा इन्द्रादि दशदिग्पाल प्रसन्नता
सिद्धयर्थम् । अधिदेविकाऽधिभौतिकाऽऽद्यात्मिकत्रिविध तापो परम
नाथम् । धर्मार्थं काममोक्ष फलावाप्त्यर्थं च ॐ भूर्भुवःस्वः श्री लक्ष्मी
नारायण अनन्तो प्रीत्यर्थं यथा ज्ञानेन यथामिलितोपचार द्रव्यैः पुरुष
सूक्तेन—ध्याना वाहनादि षोडशोपचार सहितस्य अनन्तोपचारैः पूजन
महं करिष्ये ॥ तत्राक्षोपडङ्ग न्यास पूर्वकं पुरुष सूक्त षोडशाङ्ग न्यास
पूर्वकं वा । कलशादि पूजन करिष्ये ॥ ॐ भूर्भुवः कलशास्य कदणाय
नमः आवाहयामि सर्वां पचराथं गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

त्र्यंबके गौरि दारायणी नमोस्तुते ॥१०॥ सृष्टि स्थिति विना शानां शक्ति
भूतेसना तनि ॥ गुद्याश्रयेगुणामये नारायणि नमोस्तुते ॥११॥ शरणागत
देनातं परित्राण परायणे ॥ सर्वं स्याति हरेदेवि नारायणि नमोस्तुते १२॥
हंसयुक्त विमान स्ये ब्रह्माणी रूपधारिणि ॥ कोरांभः क्षीरके देवि
नारायणि नमोस्तुते ॥ १३ ॥ त्रिशून चन्द्रादि धरे महावृषभ वादिनि
माहेश्वरीं स्वरूपेण नारायणि नमोस्तुते ॥ १४ ॥ मयूर बुक्कुट वृते
महाराकि धरे नये ॥ कौमारी रूप संस्थाने नारायणि नमोस्तुते ॥ १५ ॥
शंख चक्र गदा शङ्खं गृहीत परमा युधे प्रसीद वैष्णवी रूपे नारायणि
नमोस्तुते ॥ १६ ॥ गृहीतोप्रमहाचक्रे टूष्टोद्धत वसुंधरे ॥ वाराह रूपिणि
शिवे नारायणि नमोस्तुते ॥ १७ ॥ नृसिंहरूपेणो हन्तुं दैत्यान्कृ-
तोद्यमे त्रैलोक्य त्राणसहिते नारायणि नमोस्तुते ॥ १८ ॥ किरीटिनि
महा वज्रे सहस्र नयनोज्ज्वले ॥ वृष प्राणहरे चेंद्रिनारायणि नमोस्तुते
॥ २० ॥ दंष्ट्रा कराल यदने शिरोमाला विभरणे ॥ चांमुडे मुंड मयने
नारायणि नमोस्तुते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये ध्रुवे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ॥
महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोस्तुते ॥ २२ ॥ मेघे सरस्वति वरे
भूतिवाभ्रवितामसि ॥ नियते त्वं प्रसीदरोनारायणि नमोस्तुते । २३ ॥
सरं स्वरूपे सर्वेशे सरं शक्ति समन्विते ॥ भयभ्यस्त्राहिनोदेवि दुर्गा
देवि नमोस्तुते ॥ २४ ॥ एतच्चे वदनं साम्बं लोचनं त्रय भूषितम् ॥ पातुनः
सर्वभीतिभ्युः कात्यायनि नमोस्तुते ॥ न्वाला कराल मत्युप्र मरोपामुर
सूदनम् ॥ विश्व पातुनोभोदिभेद्र कालि नमोस्तुते ॥ २६ ॥
दिनश्चि दैत्य तेजांसि स्वनेना पूर्वया जगत् ॥ सार्पदा पातुनो देवि
पापेभ्योनः मुदानिध ॥ २७ ॥ असुष सृष्टयसा र्वक धर्षितस्ते करोज्ज्वलः ॥
शुभाय गङ्गोभवतु षंडिके त्वां नवाश्रयम् ॥ २८ ॥ रोगा न शेषा नपि
हंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्मकला नभीष्टान् ॥ स्वामाभितानां न विप-

नमस्करोमि । अनन्तरं कललशोदकेन पूजा द्रव्याणि तथाऽत्मानं च—
 अपवित्रः आपोहिष्ठा । इत्यादि मन्त्रेण घासम्प्रोक्ष्य यथा—अपवित्रः ॥
 पवित्रो वासर्वा वस्थां गतोऽभिव । यःस्मरेत्पुण्डरी काङ्गं स बाह्याभ्यन्तरः
 शुचिः ॥ ॐ आपोहिष्ठा मयो । भुवस्तानऽऽर्ज्जेदधावन । महेरणाय
 चक्षुरो ॥ ५ ॥ यो व ÷ शिव तमो रसस्तस्य भाजयतेहन ÷ उशतीरि
 वमातरः ÷ ॥ ६ ॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यतयाचजिन्वथ । आपो
 जनयथा चनऽः ॥ ७ ॥ पश्चात्कलकलशशमुद्रां प्रदर्श्य ॥ शङ्खपूजनम्—
 शङ्खादौ चन्द्र दैवत्यं कुक्षौ वरुण देवता । पृष्टे प्रजापतिश्चैव अप्रेगङ्गा
 सरस्वती । त्रैलोक्ये यानितीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया । शङ्खे विष्टन्ति
 विप्रेन्द्रतस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत् । त्वम्पुरासागरोत्तन्नोविष्णुनापिधृतः करे । नि-
 मित्तःसर्वदेवैश्च गङ्गाजन्यायनमोस्तुतेपाञ्चजन्यानविद्महेपावमानायमीमहि

न्तराणां त्वामा श्रिताद्याश्रयतां प्रयांति ॥ २६ ॥ एतत्कृतंयत्कृतं त्वयाऽद्य
 धर्मं द्विषां देवि महासुराणाम् ॥ रूपैरनेकैर्वहुधात्ममूर्तिं । कृत्वाऽम्बिके
 तत्प्रकरोतिकाऽन्या ॥ ३० ॥ विद्यासु शास्त्रे पुत्रिवेकं दीपे । प्वाद्येषु
 वाक्येषु चका त्वदन्या ॥ ममत्वगर्तेति महांधकारे । विभ्रामयत्ये तदनीव
 विश्वम् ॥ ३० ॥ रक्षांसि यत्रोपविपारच नागा यत्रारयो दस्यु बलानि
 यत्र ॥ दावा नलोयत्र तथाब्धि मध्ये तत्रस्थिता त्वं परि पासि विश्वम्
 ॥ ३२ ॥ विश्वेश्वरित्वं परि पासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति
 विश्वम् ॥ विश्वेश वन्द्या भवती भवंति ॥ विश्वा श्रयायेत्वयिमकि नाम्नः
 ॥ ३३ ॥ देवि प्रसीद् परिपालय नोऽरिभीते नित्यं यथा सुरवधा दधुनैव
 सद्यः । पापानि सर्वं जगतां प्रशमं नयाशु । उदात्पाक जनितारच
 महोपसगान् ॥ ३४ ॥ प्रणतानां प्रसीदत्वं देवि विश्वातिं दारिणी ॥
 त्रैलोक्य वासिना मीढ्ये लोकानां वरदा भव ॥ ३६ ॥ देव्युवाच ॥
 ॥ ३७ ॥ वर दाहं सुर गणा वरं यंमनसेच्छ्रय ॥ तं यूगुष्मं प्रयच्छामि
 जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥ देवाऋषुः ॥ ३८ ॥ सर्वा वाधा प्रशमनं
 त्रैलोक्यमया खिञ्जेश्वरि ॥ एव मेरुत्वया कार्यं मस्मद्वैरि विनाशनम्
 ॥ ६६ ॥ देव्युवाच ॥ ४० ॥ वैवस्वते वरे प्राप्ते अष्टा विंशतिनेयुगे ॥
 शुंभो नियुभे रचेन्नया युतस्त्वेने महानुरी ॥ ४१ ॥ नह गोत्र गृहं
 जाता यशोदा गर्भ संभवा ॥ तवस्ती नारा विष्णानि विद्या षड् निवा-
 सिनी ॥ ४२ ॥ पुनरप्यति रीत्रेण रूपेण पृथिवी तजे ॥ अथ वीर्यं
 हनिष्यामि वैप्र भित्तांस्तु दान वान् ॥ ४३ ॥ भद्रपत्न्यारचतामान्वैप्र
 भित्तान्मशानुरान् रक्षा दन्ता भविष्यन्ति दादिनी दृग्मोपनाः ॥ ४४ ॥
 यतो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यं लोके च मानवाः ॥ स्तुतंती ज्याह रिष्यन्ति

तत्र शङ्ख प्रचोदयात् ॥ ॐ अग्नि ऋषिः परमानऽ पाञ्चजन्यऽ
पुरोहितऽ तमीमह महागयम् ॥ ८ ॥ ॐ भूभुव स्व शङ्खस्थ देवतायै
नम आवा ह्यामि सर्वो पचारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि
नमस्करोमि । शङ्खमुद्राप्रदर्श्य ॥ (घण्टा पूजनम्) आगमार्थं तु देवाना
गमनार्थं तु रत्नसाम् । घण्टा नादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत्)
ॐ सुपर्णोसि ॥ गरुत्कमास्त्रि वृत्ते शिरो गायत्र्यञ्जतु-वृहद्द्रथन्तरे
पक्षी । स्तोमऽव्यात्कमा वृ-दा ध स्यङ्गानि यजू ध पिनाम । सामवे
तनु-र्वाम त्रेऽव्यप्येज्ञायज्ञियमुञ्चन्वियद्वयाऽ श फाऽ ॥ सुपर्णोसि
गरुत्कमान्दि वङ्गु च्छस्व-पत ॥ ६ ॥—ॐ भूभुव स्व घण्टास्थाय
गरुडाय नम आवाहयामि । सर्वो पचारार्थे गन्ध पुष्पाणि समर्पयामि
नमस्करोमि । घण्टामुद्रा प्रदर्श्य ॥ अथ क्षेपकम्—ततो दीप पूजन
भक्त्यादीप प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्रिहि मानिरयाद् घोरा
दीप ज्योति नमोऽस्तुते ॥ ॐ अग्नि ज्योति ज्योति रग्निऽ
स्वाहा सूर्यो ज्योति ज्योतिऽ सूर्योऽ स्वाहा अग्नि वर्चोर्वा
ज्योति वर्चोऽ स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिव्यर्चोऽ स्वाहा ॥
ज्योतिऽ सूर्यो सूर्यो ज्योतिऽ स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ भूभुव स्व

सप्तत एक दतिकाम् । ४४ ॥ भूयश्च शतवार्षिक्या मनाशुष्ठ्या मनभसि ॥
मुनिभि सम्भृता भूमी सभविस्याम्य योनिना तव शतेन नेत्राणा
निरोक्षिष्यामि य-मुनोन् ॥ कीर्तयिष्यन्ति मनुजा राजाज्ञी नितिमावव
॥ ४० ॥ ततोऽहम खिल लोकनाम दे० समन्वये ॥ भरिष्यामि सुग
शाकैरा रष्ट्रे प्राण धारकैः ॥ ४१ ॥ शाकं भरीति विख्याति तदायास्था
म्यद् भुवि ॥ तत्रैव च विष्यामि दुग्माख्यं महासुरम् ॥ ४० ॥ दुर्गादीतीति
विद्यातत्तमेनाम भविष्यति । पुनश्चाद् पदाभीम रूपं कृत्वा हिमावले ५०
रचासिभञ्ज विष्यामि मुनीना प्राण्य कारणात् ॥ तदामो मुनय सर्वे स्तो
त्र्यत्या नञ्मूढय ॥ ५१ ॥ भीमा देरोति विख्यात तन्मे नामभविष्यति ॥
बराकृष्णान्ध्रैः लाफ्ये महाबाधा करिष्यति ॥ ५२ ॥ तदाहं ध्रानरं रूपं
कृत्वा मन्वयवत् पदम् ॥ त्रैलोक्यस्य हितार्वय विषिष्यामि महा
सुरम् ॥ ५३ ॥ भ्रामरीति घमा लोकाश्चरास्तोऽप्यनुसर्त ॥ इत्य यदा
यदा यावा ५३ रोदवा भविष्यति ॥ ५४ ॥ तदा तदा पतीषाह करिष्य
म्यरि स ३यम् ॥ ५५ ॥

इति माण्डूक्ये पुताये सापशि क म चन्तरेर देरी माहात्म्ये देवीः
श्या नागपयाः मुत्तनाम पञ्चादशोऽध्याय ॥ ११ ॥ उवाच ॥ ४ ॥
अपै । १ । रजोरु । २० । पाम् । २५ । पवमादिन ॥ ६३० ।

दीपस्थ देवतायै नमः आवा हयामि सर्वो पचारार्थे गन्धा-
 क्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्क रोमि ॥ ध्यानम्—
 शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन
 सटशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मी कान्त कमल नयनं योगि-
 भिर्यान्तं गम्यं वन्दे ऽविष्णु भवभय हारं सर्वं लोकैकनाथम् ।
 अथ—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोऽः श्नाप्त्रे स्थो विष्णोस्सूरसि विष्णो
 द्रुवोसि ॥ वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ॥ ११ ॥ अथ विष्णोरावा हनम् ।—
 आवाहयेत्तं गरुडो परिस्थितं रमार्धं देहं सुरराजं वन्दितम् । कन्सान्तकं
 चक्र गदाञ्ज हस्तं भजामि देवं वसुदेव सूनुम् । ॐ विष्णुर्विचक्रमेत्रेधा
 निदधे पद्मम् । समूढ मस्य पा ॐ सुरे स्वाहा । आवाहनम्—आगच्छ
 भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव । याव त्पूजां करिष्यामि ताक्त्वं
 सन्निधौ भव ॥ ॐ सद्मन्तशीर्षायुरुप ऽः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥

अथ ध्यानम्—विशुद्धाम समप्रभां मृगपति स्कन्धस्थितां भीषणां
 चन्द्र्याभिः कर बालरोट विलसद्भस्ताभिर्गणसेविताम् ॥ हस्ते चक्र गदासि
 रोट विधिराया र्चापगुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिका शशिधरां दुर्गा
 शिनेर्गभजे १२ ॥ देव्युवाच ॥ १ ॥ एभिः तवै र्चमां नित्यं स्तोप्यतेयः
 समाहितः ॥ तस्याहं सकृतां वाधां नाश विष्याम्य संशयम् ॥२॥ मधु
 द्रेतभ नाशं चमहिषासुरघातनम् ॥ कीर्तियिष्यंति ये तद्रथं शुभ निशुभयोः ॥
 ३ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चर्द्धं चेतसः ॥ श्रोप्यति
 चैवये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ ततेषां दुष्टकृतं
 किञ्चिद्दुष्टकृतोस्थान चापदः । भविष्यति नदारिद्र्यं नचै वैष्टपियो
 जनम् ॥ ५ ॥ रात्रौ न भयं तस्य द्रुपुतोवानराजतः ॥ न राज्ञा नलतो
 योपात्कदाचित्सं भविष्यति । ६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठि तव्यं
 समाहितैः । श्रोतव्यं च सदाभक्त्या परं स्वस्त्ययनं हितम् ॥ ७ ॥ वरसर्गा
 न रोषांस्तु मङ्गमारी समुद्रवान् ॥ तथा त्रिविध मुत्पातं माहात्म्यं
 समयेन्मन । ८ ॥ नेत्रै त्तरुच्यते सम्यक् नित्यमाय वनमम । सदान ताद्रो-
 दयामिसानिध्यं तत्र मेस्थितम् ॥ ९ ॥ बलिप्रदाने पूजाया मनिर्दार्थ्ये
 महोरसरे । सर्वानमैत बरितमुषार्थे भाव्यमेव च ॥ १० ॥ जानता जानता
 वापि बलिपूजां तथा वृताम् ॥ प्रतोधिष्याम्यहं प्रीत्यावद्धि होमं तथा
 पृथम् ॥११॥ रात्रौ काले मङ्गमृजाद्वियतेयाश्च वापि कीर्तया मने तन्माहात्म्यं
 भुत्वा नक्ति समन्वितः ॥ १२ ॥ मरं पाधाविनि मुक्तो धनधान्य
 मुतान्विभः मनुष्यो मत्सदादेन भविष्यति नसरायः ॥ १३ ॥ धृता ममैतन्
 नादानं तथाचोत्सव. शुभाः ॥ परा ममं च पुण्ये जादवे

म भूमिं सव्यं तस्मिन्नात्यतिष्ठदशाङ्गलम् ॥ ॐ ॥ भूर्भुवः
 स्वः श्री विष्णुनारायण (अनन्त) देवताभ्योनमः
 आवाहन पूर्वकं ध्यानं समर्पयामि ॥ आसनम् ॥ रम्यं सुभक्तं
 दिव्यं सर्वं सौख्यं करं शुभम् । आसनं च मयादत्तं
 गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ पुरुषोत्तम ॥ मन्त्रैश्च्युतं यच्च माभ्यम् ।
 उवाच तत्र स्वस्यैरागे च दत्ते नातिरो हति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु
 लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि । पादम्—
 उष्णोदकं निर्मलं च सर्वं सौगन्धं संयुतम् । पादं प्रक्षालनायाय
 दत्तं ते प्रति गृह्यताम् ॥ — ॐ एतां चान्त्यं । महि मातो
 ज्यार्या रश्मिरूपः ५ । पादो स्यद्विश्वा भूतानि त्रिपादभ्या
 मृत्निद्वि । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
 देवताभ्यो नमः पादं समर्पयामि ॥ अर्घ्यम्—अर्घ्यं मृदाणं देवेश
 गन्धं पुष्पाक्षतैः सह । करुणा करं मेदेव गृहाणाध्यं नामो
 ऽस्तुते ॥ ॐ त्रिपादूष्णं ऽउदं त्पुरुषः ५ । पादो स्यहा भवच-
 पुनः ततो विष्णुर्दृष्टः व्यक्रा मत्सा शना नशने ऽग्रामि
 । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवता-

निर्मयः पुमान् ॥ १४ ॥ रिपवः सञ्जय याति कल्याणं चोपपश्ये ॥
 नं रते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम श्येवताम् ॥ १५ ॥ शान्तिकमथि
 सर्वत्र तथा दुः स्वप्नं दर्शने ॥ मदं पीडा शुचो प्रासु माहात्म्य
 सृणुयान्मम ॥ १६ ॥ अपसर्गाः शर्मं याति मदं पीडाश्च दाकृणाः ॥
 दुः स्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुप जायते ॥ १७ ॥ बालं प्रहाभि
 भूतानां यातानां शान्तिं कारकम् ॥ सघातभेदे च नृणां मैत्री
 करणमुत्तमम् ॥ १८ ॥ दुष्टं चानाम शेषाणां बलहानि करं परम् ॥
 रत्नो भूत विशाचानां पठना देव नाशनम् ॥ १९ ॥ सर्वं ममेतन्
 माहात्म्यं मम सन्निधिं कारकम् ॥ पशुपुष्पाद्यै रत्रगधं दीपै
 स्तयो ज्ञेयैः ॥ २० ॥ त्रिपाणां भोजनैर्होमैः प्रोत्सृष्टीयेदेहनिशम् ॥
 अन्ये शघविविधैर्भोगैः प्रदानं दास्यरेणया ॥ २१ ॥ श्रीतम
 क्रियते सास्मिन्सकृद्दुः करिते श्रुते ॥ भूत हरति पापानि तथा
 रामं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ रत्नं करोति भूतभ्यो जन्मनां क्रीतं नमम ॥
 युद्धेषु शरीरं यन्मे दुष्टं दैत्यं निवर्हणम् ॥ २३ ॥ तस्मिन् ऋतुते
 वैरि कृतं भयं पुंसां न जायते ॥ युष्माभिः मृतयो नारय
 वारय मद्गार्भिभिः कृजाः ॥ २४ ॥ मद्गणाश्च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति
 शुभाभिविम् ॥ अरण्यं प्रान्तरे चापि दावामि परिवारितः ॥ २५ ॥

म्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ आचमनम्—सर्वं तौथ समायुक्तं
सुगन्धि निर्मलं जलम् । आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमे-
श्वर ॥—ॐ तवो विराड जायत विराजो ऽअधि पुरुष ऽः । स
जातो ऽअत्यरिचयत परवाङ्मि मयो पुर ऽः ॐ भूर्भुवः श्री लक्ष्मी
नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि । स्नानम्-
गङ्गा—सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्वादा जले । स्नापितो ऽसि मया
देव तथा शान्तिं कुरुष्वमे ॥ ॐ तस्माद्यज्ञा रसद्यदृतः ऽः सम्भृत-
मृगदा ज्वषम् । पशुं स्वो रचक्रे वायव्या नारयाम्ना म्या रचये ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः स्नानं स-
मर्पयामि ॥ [अथ क्षेपकम्—पञ्चामृतस्नानम्—पयो दधि घृत चंभु च
शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ पञ्चनद्यः ऽ
सरस्वती मयि यन्ति सखीवसः ऽ । सरस्वतीतु पञ्च न मोदंशो भवत्सरित् ॥

दस्युभिः वांरुतः शूये मृहीतो वारि शत्रुभिः ॥ सिंह न्यात्रा
नुया तोगा वनेवा वन इस्तिभिः ॥ २६ ॥ राजा क्रुद्धे नचा हृष्टो
यगो वंघगतोपिवा । आङ्गूणितोवा वातेन विवतः पोत महार्णवे । २७ ॥
पवस्तु चापि रास्त्रेषु संभामे भृरा दाक्षणे ॥ सर्वं वाधा सुधोरासु
वेदनाभ्यर्चितो पिवा ॥ २८ ॥ स्मरन्मर्मतचरितं नरो मुच्येत संवटात् ॥
भम प्रभासत्सिद्धाद्या दस्यवो वैरिण स्तथाः दूरा देव पलायन्ते
स्मरत रचरितं मम ॥ ३० ॥ ह्यपक वाच ॥ ३१ ॥ दस्युस्ता
माभगरतो चडिक्का चंडविक्रमा ॥ ३२ ॥ परयता मेव देवानां
वर्षेवां तस्थोयतः ॥ तेषि देवा निरा तकाः स्थाधि कार न्यथा
पुरा ॥ ३३ ॥ यज्ञ भाग भुज्ज सर्वे चकुर्वन्ति हतारय ॥ दैत्याय
देव्या निश्ते युग्मे देव रिगैयुधि ॥ ३४ ॥ जगद्विभंस के तस्मि
न्महाप्ते तुन विक्रमे । निशुभेच महा योयं शेषाः पातात मा
ययुः ॥ ३५ ॥ एत्रं भगरतो देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ॥ संनूर
कुरुत भूज जगत परिपालनम् ॥ ३६ ॥ तयेनमोऽन्तेरिश्च मेरिश्चैव प्रसूयते ॥
सायाचिता चविज्ञानं तुष्टा ह्यद्वि प्रयच्छति ॥ ३७ ॥ वृषत्तं तयेतस्त-
कलं प्रज्ञाड मनुजे भर ॥ महा काले महा मारो महाभारी
स्वरुपरा ॥ ३८ ॥ सैव काले महाभारी मेव मृष्टि भंरत्यत्रा ॥
स्थिति करोति भूतानां सैव काले सनत्तनी ॥ ३९ ॥ भव काले
नृणां शैव लक्ष्मी पूर्द्धि प्रदा गृहे ॥ सेवा भावे तथा लक्ष्मीविना
शायो पशयते ॥ ४० ॥ सुवा संपूजिता पुनो धूपं गन्धादिभि
स्त्रया ॥ इदानीविषं पुरारथ मन्दिमे गति गुणाम् इति श्री माहंरंर

ॐ भू भुवः स्व. श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः. एक
मन्त्रेण पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानम्—ॐ आपो
अश्मान्मातरः सुन्व यन्तु घृतेन नो घृतस्वः पुनन्तु ॥ विरश्च ११ हरि
प्रिम्प्रवद्दन्ति देवीं रुदि दाम्यः शुचिरा पूत एमि । दीक्षान्तं पसस्ति
नूराशित्वां तां शिवा ॥ ॐ शगमा परि द्ये भद्रं वर्णं पुष्पन् ॥ परमा-
नन्द बोधादि निमग्नं निजमूर्त्तये । सांगो पांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यहं
मीशिते ॥ ॐ भू भुवः स्व. श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ आचमनीयम्—
उच्छिद्धप्योप्य शुचि वापि यस्यस्मरणं । मात्रतः शुद्धि माप्नोति
तस्मैते पुनराच मनीयकम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री लक्ष्मीनारा-
यण (अनन्त) देवताभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि ॥ अथवा-
पृथग्मन्त्रेण पञ्चामृत स्नानम्—तत्र-पयः स्नानम् कामधेनु समुत्पन्नं
सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थं मर्षितम् ॥-

पुराणे सावलिं के मन्वन्तरे देव्याश्चरित माहात्म्य नाम-द्वादशोध्याय-
॥ १२ ॥ उवाच २ अर्घं २ श्लोक ३७ एवम् ४१ एवमादितः ६७१ ॥
अथध्यानम्—वालाकं मण्डला भाषा चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ॥ पशा-
ङ्कुश वरा भीती द्धरं यन्ती शिवांभजे । १३ ॥ अपिहवाच । ११ ॥
एतत्के कथितं भूप देवी माहात्म्यमुत्तमम् ॥ एषां प्रभावा सादेवी ययेदं
वार्यते जगत् ॥ २ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णु मायया । तथा
तमेव नीरयश्च तथै बान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥ मोह्यते मोहिताश्चैव मोह
मेध्यंति चापरे ॥ तामु पैदि महाराज शरणं परमेध्वरीम् ॥ ४ ॥ आरा-
धिता संव नृणां भोगस्वर्गा पवर्ग दा ॥ ५ ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥
इति तस्यवचः श्रुत्वा सुरधः सनराधिपः ॥ ७ ॥ प्राणिपत्यमहाभाग
तन्मृषिं सांशित प्रथम् ॥ निर्विण्णोति ममत्वेन राज्यापहरणे नच ॥ ८ ॥
जगाम सस्यस्तपस्ते सच वैश्यो महागुणे ॥ सं दर्श नार्थं नं वाया नदी
पुलिनमारिधतः ॥ ९ ॥ सच नीरयस्तपस्तेपे देवीं सूक्तं परं जपन् ॥ ती
मरिमन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिंमही मयीम् ॥ अहंणा चक्रनुरतस्याः
पुत्र भूषाणि तपंगेः ॥ निरा हारो यदा हारो ह्यमन्स्की समाहिती
॥ ११ ॥ इदं तुस्वी वलिं चैव नित्र गात्रा गृमु क्षितम् ॥ एवं समात्-
पयतो स्त्रिभिर्भयैयत्तात्मनोः ॥ १२ ॥ परितुष्टा जगद्गात्री प्रत्यक्षं प्राह
पण्डिका ॥ १३ ॥ देव्यायाच ॥ १४ ॥ यत्राप्येतं त्वया भूपत्ययाच कृष्ण
नन्दन ॥ १५ ॥ म उस्तन् माप्यनां सर्वं परिपृष्टा ददा मत्त ॥ १६ ॥
मार्कण्डेय उवाच ॥ १७ ॥ ततो प्रो नृपोगाय मन्त्रिभ्यश्चैव उन्मनि

ॐ पयःशयिष्याम्ययऽश्रौषधीषु पयोदिव्यन्तरित्ते पयोधा ऽः । पय-
स्वतो ऽऽपदिराःसन्तु मह्यम् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण
(अनन्त) देवताभ्यो नमः पयः स्नानं समर्पयामि ॥ पयः स्नानाते
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्प-
यामि ॥ दधिऽनानम्—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ दधिवक्राण्योऽश्रका
रिष ङिप्रणोऽरश्चस्यन्वाजिन + । सुरभिर्नो मुखा कारुप्रणऽश्वायू
धं पितारिपत् ॥ ॐ भू भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः दधि स्नानं समर्पयामि ॥ दधि स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं
समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधुस्नानम्—
नवनीत समुत्पन्न सर्वसन्तोष कारकम् । घृतं सुष्य प्रदास्यामि स्नानार्थं
प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ घृतम्भिमिक्षु घृतमस्य यानिघृतोरर्भतो घृताम्भ्वस्य

॥ १८ ॥ अत्रै वच निजं राज्यं हत शत्रु बलं वलात् ॥ सौंपि नैश्यस्ततो
ज्ञानं वचेनिर्विणामा नसः ॥ १९ ॥ ममेत्यह मितिप्राज्ञः संग विच्युति
कारकम् ॥ २० ॥ देव्युवाच ॥ २१ ॥ स्वल्पै र्होभि नृपते स्वराज्यं
प्राप्तयते भवान् ॥ हस्वारिपूत स्वलितं तव तत्र भविष्यति ॥ २२ ॥
सृतरच भूयः सं प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २३ ॥ सावर्णिको नाम
मनुर भवान्भुवि भविष्यति ॥ वैश्य वयस्वयायश्च चरोऽस्मत्तोभिर्वाहितः
॥ २४ ॥ तंप्रयच्छामि सं सिद्धये तव ज्ञानं भविष्यति ॥ २५ ॥
माकण्डेय उवाच ॥ २६ ॥ इति दत्त्वा तयो देवी यथाभिलषितं
वाम् ॥ २७ ॥ वभुवावर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ एवं
देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥ २८ ॥ सूर्याज्जम समासाद्य
सावर्णिरु भवितामनुः ॥ २९ ॥ सावर्णि भवितामनु रिति द्विरुच्चारणीयः ॥
इति माकण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ नैश्य
पो र्भर प्रदानं नाम त्रयो दशोऽध्यायः ॥ उवाच ॥ ६ अर्षाणि ॥ ११ ॥
श्लोकाः ॥ १२ ॥ एवम् २६ एवमादितः ॥ ७०० ॥—अथोत्तर-
न्यासाः ॥—मङ्गिनी शूलिनी—षोरा० हृदयायनमः । शतनपाहिनो
देशो० शिरसे स्थाहा ॥ प्राच्यां रत्न प्रतोच्यां च० शिरवायश्च पद् ॥
सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय द्वं कस्तुंग रत्न गरा
दीनि० नेत्रप्रयापवोपट्सर्गस्वरूपे मन्वरो० अस्याय फट् ॥

अथसन्त्रोकदेरीनुत्तम्—

अथ ध्यानम्—विश्वाम समप्रभांमृग पतिस्कन्धारियांभीपत्नीं कन्याधिः
कलात्म्येऽत्रिलसदृग्भाभिर्नासेविताम् ॥ इतैश्चक्रगदासि म्यं विशिद्या

धाम । अनुष्णवधमावह मादवस्य स्वाहा कृतं वृषभञ्जिह्वम् ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः घृत स्नानं
 समर्पयामि ॥ शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ मधु स्नानम्—
 तरु पुष्प समुद्भूतं सुरशङ्ख मधुरं मधु । तेजः पुष्टि करं दिव्यं
 स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ मधुःव्राताऽऽवृतायतेमधुत्तरन्ति सिन्धवः ।
 माद्रीन्तः सः सन्वोपयीः ॥ मधुनक्त मुतोपसोमधुमत्पार्थिवं प्राजन् ।
 मधुर्गौरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नाव्यनस्त्यतिन्ममधुर्मा ॥ २ ॥ ऽयस्तु
 मृत्युः । माद्रीर्गावो भवन्तुनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण
 (अनन्त) देवताभ्यो नमः मधु स्नानं समर्पयामि स मधु स्नानान्ते शुद्धो-
 दक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥
 शर्करास्नानम्—इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका । मलापहारिका
 दिव्यास्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ अर्पां रसमुद्वयसंमृत्यै सन्तं
 ममादितम् । अर्पा ॐ रसस्य यो रसस्तं व्रां गृह्णाम्युत्त ममुपशाम

श्चापं गुणं तर्जनीं विज्राणामन लात्मिकांशशिधरां दुर्गां त्रिनेत्राम्बे । नमो
 देव्यै महादेव्यै शिवायै सत नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रखटाः
 स्मवाम् ॥ १ ॥ रीद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ज्योत्स्तायै वेन्दुरु-
 पियै सुवायै सतं नमोः ॥ २ ॥ कल्याणैवप्रणतांवृद्ध्यैसिद्धयैकुर्मो नमो
 नमः नैश्वर्ये भूभुतां लक्ष्मैराज्ञायै ते नमो नमः ॥ ३ ॥ दुर्गायैदुर्गा पारयै
 नमः । सायै सव कायै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै भूषायै सततं नमः ॥ ४ ॥
 अति सौम्यायै रीद्रायै नवास्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै
 कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु विष्णु मायैति शब्दिता नम-
 स्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु चेतनेत्य भिषीयते ।
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु बुद्धि रूपेण
 संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥ या देवी सर्वं
 भूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ९
 या देवी सर्वं भूतेषु लुपा रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो
 नमः ॥ १० ॥ या देवी सर्वं भूतेषु छाया रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ११ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु शक्ति रूपेण
 संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १२ ॥ या देवी सर्व
 भूतेषु गूष्णा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः १३
 या देवी सर्वं भूतेषु चान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
 नमो नमः ॥ १४ ॥ या देवी भूतेषु जाति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १५ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु

गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं तमम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण
 (अनन्त) देवताभ्यो नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ॥ शर्करानानान्ते
 आचमनीयं समर्पयामि ॥ पष्टं गन्धोदक स्नानम्—मलया चल सम्भूतं
 चन्दना गरु सम्भवम् चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ गन्ध
 द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्पां करीषिणीम् । ईश्वरी सर्वं भूतानानां तामिहो
 पह्वयेधियम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवता
 न्या नमः षष्टं गन्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक दक स्नानम् ।
 स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ उद्वर्तन स्नानम्—नाना सुगन्धि द्रव्यं
 च चन्दनं रजनी युतम् । उद्वर्तनं गया दत्तं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥—ॐ
 थ ध शुना ते अ ध शु ऽः पृच्यता स्पष्टपा परु ऽः गन्धस्ते
 सोम मवतु मदाय रमो ऽश्चयुत ऽः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
 विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः उद्वर्तनस्नानं
 समर्पयामि ॥ उद्वर्तन स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदक
 स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ॥ विशेषम् ॐ भूर्भुवः स्वः श्री
 विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पञ्चामृतस्नानान्ते
 शुद्धोदकं शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥

लज्जा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ १६ ॥
 या देवी सर्वभूतेषु शान्ति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
 नमो नमः ॥ १७ ॥ या देवी सर्व भूतेषु श्रद्धा रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १८ ॥ वा देवी सर्वं भूतेषु कान्ति रूपेण
 संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ या देवी
 सर्वं भूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो
 नमः ॥ २० ॥ या देवी सर्वं भूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नम-
 स्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २१ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु स्मृति रूपेण संस्थिता
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु दया
 रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २३ ॥
 या देवी सर्वं भूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै-
 नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २४ ॥ या देवी सर्वं भूतेषु मान् रूपेण
 संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥
 या देवी सर्वं भूतेषु भ्रान्ति रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमः
 स्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २६ ॥ इन्द्रियाणां मधिष्ठात्री भूतानां
 चादिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ २७ ॥
 विविध रूपेण या कृत्स्न मेव इवाप्य संस्थिता जगन् । नमस्तस्यै नमस्त-

ततः—पञ्चामृतादि स्नानाङ्गं पूजां — ॐ भूमिभ्यः स्वः श्री
 भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अतन्त्र) देवताभ्यो नमः
 वस्त्रोप वस्त्रार्थं अन्नतान् समर्पयामि । यज्ञो पवीतार्थं
 ऽक्षतान् समर्पयामि । गन्ध समर्पयामि । माना परि मल सौभाग्य
 द्रव्याणि समर्पयामि । यथा ऋतुकालो ऽन्न पुष्पाणि समर्पयामि ।
 धूपं दर्शयामि । दीपं दर्शयामि । शकरो पद्धार नैवेद्यम्— ॐ प्राण-
 यस्वाहा । ॐ अपानायस्वाहा । ॐ ध्याना य स्वाहा । ॐ
 समानाय स्वाहा । उदानाय स्वाहा । नैवेद्यं समर्पयामि । नैवेद्या-
 न्ते हृदय प्रक्षालनं मुख, प्रक्षालनं च समर्पयामि । करो-द्वर्तनार्थं
 चन्दनं समर्पयामि । मुख वामार्थं पूगीफल ताम्बूलं समर्पयामि ।
 हिरण्य मुद्रा दक्षिणां समर्पयामि । कपूरं आराविक्यं दर्शयामि ।
 प्रदक्षिणाः समर्पयामि । मन्त्र पुष्प युक्त नमस्कारं समर्पयामि ।
 विरोषाध्व्यः— रत्न रत्न गणाध्वत्त रत्न त्रैलोक्य रत्नक । भक्तानां

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टं तं
 श्रया चया सुरे द्रेणादिनेषु मेधिता । करोतु सा नः शुभहेतुरी
 स्वरो शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २६ ॥ या सा म्रतं चोद्धत
 देव्य तापितैरध्माभिरीशा च सुरैर्न मस्यते । याचस्मृता तत्क्षण मेव
 हन्तिनः सर्वा पदो भक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥ ३० ॥

इति तन्नोक्त देवो सूक्तं समाप्तम् ।

अथ प्राधानिक-रहस्यम् ।

राजो वाच—भगवन्नवतारा मे चरिदका या स्त्वयो दिताः । एतेषां
 प्रकृतिं मद्गन्धर्धानं चकतु मर्हसि । १ ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः
 स्वरुं येन चद्विज । विधिना प्रदि सकलं यथायाप्रण तत्स्वमे
 ॥ २ ॥ ऋषिकृवाच—इदं रहस्यं परमं मनास्वयेयं प्रब्रुवते । भक्तो
 ऽसीति नमे द्विद्विजवाप्यं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वं स्याद्यामहाजदमी
 विष्णुणा परमेश्वरी । लक्ष्म लक्ष्य स्वरूपा साव्याप्य कृत्स्नं व्यव-
 रिव ॥ ४ ॥ मातु लिङ्गं गदां गेटं पान पात्रं च विभ्रती ।
 नगी त्रिङ्गं च यानि च विभ्रती नृप मूर्धनि ॥ ५ ॥ तप्त काञ्चन
 पण्डोभा लज्जकाचन भूषणा । गून्मं तद्विभ्रं स्वेन पूषा मास
 मेमया ॥ ६ ॥ गून्मं— तद्विभ्रं लीकं पित्रोक्त्य परमेश्वरी ।
 बनार परमं रूपं तमगा देवजे नदि ॥ ७ ॥ मा विम्राधन संकारा
 द्दृष्टाद्विज पगानना । विराजन् शोषना नारी पनूपतनु मध्वमा ॥ ८ ॥ मङ्ग
 पात्रेश्वरः गेटेश्वरः एव पञ्चुंत्रा । एवंपि दारं शिरसा विभ्राणा ऽदि

मभयं कर्ता त्राताभवभवांर्णं वात् । वरद तं वरं देहि वाङ्मृतं
 वाङ्मृतार्थद । अनेन सफला ह्येण फलदो ऽस्तु सदा मम ॥ प्रार्थनां
 समर्पयामि ॥ अर्पणम्—अनेन पश्चामृतादि स्नानाङ्ग भूत पूजनं कृतेन
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
 देवताः प्रीयन्ता न मम ॥ निर्माल्यं विसृज्य । पुनश्च—
 ततः अभिषेकः कार्यः । स्नापन धारा पात्राय गन्धाक्षत पुंशं
 (तुलशीदलं) समर्प्य । तदनन्तरं मभिषेकार्थं देवानां गन्धाक्षत
 पुष्पाणि समर्पयेत् ॥ शालि-ग्रामोपरि आसनार्थं पूजार्थं च तुलसी-
 दलं तद्वत्समर्प्य ॥ स च—यथा—हरिःॐ—ॐ सहस्र शीर्या० ॥
 पुरुष ऽण० ॥ एतावान० ॥ त्रिपादुद्धृष्टं ऽण० ॥ ततोव्विराड० ॥
 तस्माद्यज्ञात्स० ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वद्वृत ऽष्टच ऽः सामानि जज्ञिरे-
 छन्दा १५ सि जज्ञिरे तस्मा द्यजु स्तस्मा दजायत ॥ तस्मा-
 दश्या ऽ अजा यन्त येके चोभया दत्त ऽः । गायो ह जज्ञिरे
 तस्मान्तस्मा ज्ञाता ऽअजावयः तं यज्ञं स्वर्हिषिप्रौ क्षत्रपुरुष
 व्जात मग्रतः ऽ । तेनदेवाऽअजयन्त साद्धयाऽष्टषय रचये ॥ यत्पुरुषं
 व्यदधुः ऽ कतिधाव्यकल्पयन् । सुराङ्गिमस्यासीत्किन्वाहू किमूक पादऽ
 उच्येते ॥ ब्राह्मणोस्य मुख मासीद वाहराजत्रयःकृत ऽ । ऊरुतदस्य
 यद्वैश्यःपदभ्या १५ शहोऽअजायत ॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षुः ऽ
 सूर्योऽअजायत । शशोन्वा द्वायुश्च प्राणश्च मुखोदग्नि रजायत् ।

शिरः स्रजम् ॥ ६ ॥ सां प्रो वाचमहा लक्ष्मी तामसो प्रमदोत्तमा । नामकर्म
 चमे मात देहि तुभ्यं नमोनमः ॥ १० ॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मी
 स्तामसो प्रमदो उत्तमाम् । ददामि तव नामनि यानिकर्याणि तानिते
 ॥ ११ ॥ महामाया महाकाली महामारी लुधा तृषा । निद्रा
 तृष्णा चैक वीरा काल रात्रि दुर्लभया ॥ १२ ॥ इमानि तव नामानि
 प्रति पाद्यानि कर्मभिः । एभिः कर्मणि तेज्ञात्वा योऽधीते
 सोऽनुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृपम् ।
 सत्त्वाख्येनाति शुद्धेन गुण्येनेन्दु प्रभन्दथी ॥ अक्षमालाङ्ग शय्या वीणा
 पुस्तक धारणी । सा बभूव वरा नारी नामान्धस्यैवसा ददौ । १५ ॥ महा
 विद्या महाशाली भारती वाक्ससरस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनु वीज-
 गर्भा च धीश्वरी ॥ १६ ॥ अयो वाच महालक्ष्मी महाकाली सरस्वतीम् ॥
 युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानु रूपतः ॥ १७ ॥ इत्युत्त्वात् महालक्ष्मीः
 समर्ज मिथुन स्वयम् हिरण्य गर्भो रुषिरी स्त्री पुंसी कमलासनी ॥ १८ ॥
 ब्रह्मन्विधे विद्महेति धातु रित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मी त्याह

नाम्न्याऽश्वासी इन्तरिच ॐ शीर्ष्णोद्वयौ :ऽ सवत्रस्त । पद्भ्याम्भूमिदिशि :ऽ
 भ्रीञ्जातथा लोकाँ २ ॥ऽ अकल्पयन् । यत्तपुरुषेण हविषा देवा ब्रह्म
 मतत्रयत् । ब्रह्मन्तोस्यासी दाज्य ऊर्षीष्मऽश्वा :ऽ शरद्वि :ऽ ॥
 सप्तास्या सन्नपरिध यास्त्रि :ऽ सप्त समिधः कृता :ऽ । देवा ब्रह्मजन्त-
 न्नवानाऽब्रवध्दन्पुरुषम्पशुम् ॥ यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि
 प्यथमान्या सन् । तेह नाकम्महिमानं सचन्त यत्र पुरुर्वे साद्व्या :ऽ
 सन्ति देवा :ऽ । अत्रा वसरे शङ्ख पूरितोदककेन—ॐ इदं त्रिष्णु
 त्रिचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ॐ सुरे स्याहा ॥ इति
 मन्त्रेण शालिग्रामं स्तापयेत् । परचात् स्तापनधारपात्रो द्दकेन श्री भगवान्
 विष्णु नारायण (अनन्त) देवतानां शान्त्याभिषेकं कुर्यात् सच यथा—
 ॐ द्यौः :ऽ शान्ति रन्तरिच ॐ शान्तिः पृथिवी शान्ति राप :ऽ—शान्ति
 रोप भय :ऽ शान्तिः । वनस्पतय :ऽ शान्तिद्विष्वे देवा :ऽ शान्तिर्ब्रह्म
 शान्ति :ऽ सव्व ॐ शान्ति :ऽ शान्ति रेव शान्ति :ऽ सामा

मावा चतां स्थियम् ॥ १६ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह ।
 एतयो रपि रूपाणि नामानि च वदामिते ॥ २० ॥ नील कण्ठं रक्त बाहुं
 श्वेताङ्गं चन्द्र शेखरम् । जनया मास पुरुषं महाकाली सितास्त्रियम्
 ॥ २१ ॥ सरुद्रः शङ्करः स्थाणु कपर्दी च त्रिलोचनः । त्रयी विद्या काम-
 धेनुः सास्त्री भापाचराखरा । २२ । सरस्वती विद्ययां गौरी कृष्ण च पुरु-
 नृप । जनया मासनामानितयो रपि वदामिते । २३ । विष्णुकृष्णोदपीकेशी
 वासुदेवो जनार्दनः । उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥ २४ ॥
 एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपदिरे । चक्षुष्मन्तोऽनुपश्यन्ति नेतरे तद्विदो
 जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणो प्रददौ पर्त्नां महा लक्ष्मीं नृप त्रयोम् । रुद्राय
 गौरीं वरदां वासुदेवाय च धियम् ॥ २६ ॥ स्वराया सह संभूव
 विरञ्चयोश्च मज्जी जनत । विभेद भगवान् रद्रस्तद् गौरीया सह वीर्यवान्
 ॥ २७ ॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यं जाव मभून्नुप । महा-
 भूतात्मकं सर्वं जगत्थाय च जङ्गमम् ॥ २८ ॥ पुषोप गजया
 मास वल्लक्ष्म्या सह केशवः संजहार जगत्सर्वं सहगौर्या महेश्वरः ॥ २९ ॥
 । ह्यलक्ष्मीमंहाराज सर्वं सस्य मयीश्वरी । निराकारा च साकारा मैत्र
 नाता भिषानभृन् ॥ ३० ॥ नामान्तरे विस्मृयानाम्नानान्येन कुर्याच्चिन् ॥ ३१ ॥
 इति प्रधानिक रक्षस्य समाप्तम् ।
 अथ वैकृतिक रक्षस्यम्—

श्रुतिरुपाय—त्रिगुणा वामसीदंभी सात्विजोद्योतिता । नामवां

यतो यतऽः समी हसे ततो नोऽब्रमयङ्क न । शत्रु कुरुप्रजाभ्योऽभयत्रऽः
 पशुभ्यः ॥ ॐ सर्वेषां वा ऽ एष वेदानां ध रसोऽयसाम सर्वेषामेवै नमे
 तद् वेदानां ध रसेनाधिपिब्वति ॥ (ब्राह्मण मन्त्रः) ॥ ॐ शान्तिः
 शान्तिः सुरान्ति भवतु । सर्वारिष्ट शान्ति भवतु ॥ ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥
 ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः अभिषेकं
 समर्पयामि ॥ इतिक्षेपकम् ॥ परचान् देवतीर्थं धृत्वा । ततो देवाया-
 चमनम्—ॐ केशवाय नमः स्वाहा ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ
 माधवाय नमः स्वाहा । इत्वा चमनं समर्पयेत् ॥ हस्त प्रक्षालनम्—ॐ
 गोविन्दाय नमः ॥ यत्रम्—सर्व भूपाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।
 मगोप दिवेषुर्भ्यं वासन्तीप्रति गृह्यताम् ॥ ॐ तस्मा इत्यङ्गारमर्च्यं हुतऽ
 ऋचः ॥ ॐ—भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
 नमः ॥ यज्ञोपवीतं तिल, ऽक्षतान् समर्पयामि ॥ यज्ञोपवीतम्—नवभिस्तनु-
 भिपुक्तं त्रिगुणं देवता मयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीय गृह्णाण परमेश्वर ॥ ॐ
 तस्मादस्त्रं ऽ अत्र ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु नारायण (अनन्त)
 देवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं (यज्ञो पवीताऽभावेऽक्षतान्) समर्पयामि ॥

चण्डिकादुर्गाभिर्ना भगवतीर्यते ॥ १ ॥ योग निन्द्रा हरे रक्ता महाकाला
 तमोगुणा । मधुकैटभ नाशार्थं यां तुष्टा याम्बुजासनः ॥ २ ॥ दश वक्त्रा
 दशभुजा दशपादाब्जजप्रभा । विशालया राज माना विशालोचन
 मालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्दशन दंष्ट्रासा भीम रूपापि भूमिप । रूप सौभाग्य
 कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ४ ॥ रत्न वाणगदा शूल शङ्ख चक्र
 भुराण्डभृत् । परिधं कामुकं शीर्षं निश्चयो तद्रुधिरं द्यौ ॥ ५ ॥
 पपासा वैष्णवी माया महा काली दुरत्यया आराधिता वशी कुर्यात्पूजा
 रुनुश्चरा चम् ॥ ६ ॥ सर्वदेव शरीरेभ्योयाऽविभूताऽभित प्रभा ।
 त्रिगुणामा महालक्ष्मोः साक्षान्महिपमर्दिनी ॥ खेतानना नील भुजा
 मुखेनस्तन मण्डला रक्त मध्या रक्त पादा नील जङ्घोरुहृन्मदा ॥ ८ ॥
 सुचित्र जघना चित्र माल्वाम्बर विभूषणा चित्रानुलेपना कान्ति रूप
 सौभाग्य शान्तिनी ॥ ९ ॥ अष्टादश भुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती ।
 आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः कर क्रमान् ॥ १० ॥ अक्षमाला चकमलं
 वाणोऽसिः कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशु शङ्खो घण्टा च पाराका
 ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पान पात्रं कमण्डलु । अलङ्कृत भुजामे
 मिरायुद्धैः कमलासना ॥ १२ ॥ सर्व देव मयी मीशां महालक्ष्मी मिमां
 नृप । पूजयेत्सर्व लोकानां सदेवानां प्रभुभवेत् ॥ १३ ॥ गीरीदेहात्समुद्भूता
 या सत्त्वेक गुणाभया । साक्षात्सरस्वतीमोक्षा शुभ्भासुर निवर्दिणी ॥ १४ ॥

मन्धम्—श्री खरडं चन्दनं दिव्यं गन्वाह्य सुमनोहरम् । विलेपनं सुर
श्रेष्ठ चन्दनं प्रति गृह्यताम् ॥ ओं तंयक्ष्णम् ० ओं भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु
नारायण (अनन्त) देवेभ्यः गन्धं अक्षता सहितं सौभाग्य द्रव्यादीनि
अनामिका ङ्गुष्ठेनसमर्पयामि ॥ अथ क्षेपकम्—अक्षताः (यव, अक्षतार
सुर श्रेष्ठ कुङ्कुमाक्षताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण
परमेश्वर ॥ तिलान् ओं अक्षत्रमीम दन्तहाह्वयप्रियाऽअघूपत । अस्तोपत
स्वभानवोविष्णो नविष्ण्यामती यो जान्निवन्दने हरी ॥ ओं भूर्भुवः स्वः
श्री विष्णुनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥
इति क्षेपकम् पुष्पाणि—मालयादीनि सुगन्धीनि मालत्या दीनि वै प्रभो ।
मयानोतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ ओं पत्पुरुषं ॥ ओं भूर्भुवः स्वः
श्रीविष्णु नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः पुष्पाणि (सौभाग्यद्रव्य
सहितं च) समर्पयामि । (शालि प्रामत्यासनार्थं तुलसी दलं ॥
सनर्थं ।) एवं यवतिता ऽक्षतान्समर्पयामि) तुलशीदलापरणम्—
तुलशीहेमरूपां चरत्न रूपां चमञ्जरीम् । भव मोक्ष प्रदां तुम्यमर्पयामि
हरिं प्रियाम् ॥ — ॐ विष्णोः कर्माणि । परयत यतो ब्रूतानि
पश्यशे । इन्द्रस्य युज्यते ऽ सरवा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान्
विष्णु लक्ष्मीनारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः तुलशीदलं समर्प-
यामि ॥ गृथक मन्त्रेण सौभाग्य द्रव्यम्—हरिदां कुङ्कुमं चैवसिन्दूरं
कज्जला निरतम् । सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वरो ॥ ॐ
अद्विषि भोगै ऽः पर्ष्यति बाहू वज्रयाया हेतिम्परि बाधमानः ।
हस्तग्नोद्विष्या व्ययुतानि विरदन्नुपमान्मुमा ६ सम्परि पातु विर-

दधौ चाष्ट भुजा वाण सुसन्ने शूल चक्र भृत । शङ्खं घण्टां लाङ्गलं
च कामुकं वसुधाधिप ॥ १५ ॥ एषा सपूजिता भक्त्या सर्वं क्षत्वं
प्रयच्छति । निशुम्भ मयिनी देवी गुम्भा सुर निवहिंणी ॥ १६ ॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणिमूर्तानां तव पार्ष्विष । उपासनां जगन्मातुः
प्रयगासां निरा मय ॥ १७ ॥ महा लक्ष्मीं यदापूज्या महाकाली
सरस्वती । दक्षिणोत्तरयोः पूजये प्रष्टनो मिथुन प्रयम् ॥ १८ ॥
विरब्धिः स्वस्या मध्ये कठो गौर्या च दक्षिणे । यामे लक्ष्म्या
दक्षिणे, केराः पुरतो देवता प्रयम् ॥ १९ ॥ अष्टादशभुजा मन्त्रे
यामे चास्या दशानना ! दक्षिणे ऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महं तोति समर्चयेत्
॥ २० ॥ पूषादि दशतः पूषा अति नाङ्गादि भैरवाः । अष्टादश भुजा
धेया पद्मपूज्या नतपिप ॥ २१ ॥ दशानना चाष्ट भुजा दक्षिणो चरयो
भद्रा ॥ दशा नना यदापूज्या दक्षिणो भक्त्यो वददा ॥ २२ ॥ कार

वर्त ः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णुं लक्ष्मी नारायण
(अनन्त) देवताभ्यो नमः सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि ॥
इति क्षेपकम् ॥

धूपम्—वनसपाते रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आग्नेय,
सर्व देवानां रूपो ऽप्यप्रतिगृह्यताम् ॥—ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू
राजजयः कृतः । उरू तदस्य यद्वैश्वः पद्भ्यां च शूद्रो
ऽअचायत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान् विष्णुं लक्ष्मी नारा-
यण (अनन्त) देवताभ्यो नमः धूपं दर्शयामि ॥ घृत पूरित नीरा-
जनदीपम् आज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण
देवेश त्रैलोक्य तिमिरा पद् ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जात शशचक्षो.
सूर्यो ऽअजायत । श्रोत्राद् द्वायुरश्चप्राणश्च मुखा दग्निरजायत ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णुं लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
नमः घृत पूरित नीरा जन दीपं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम्—शर्करा घृत
संयुक्तं मधुरं स्याद् चोत्तमम् । उपहार समायुक्तं नैवेद्य प्रति गृह्य
ताम् ॥ ॐ नाभ्या ऽअसी दन्तरीक्षं च शीष्णो षो ऽः समवर्त्तत ।
पद्भ्याम्भूमिर्दिशः ऽः श्रोत्रा तथा लोकाँ ॥ २ ॥—ऽअकलयन् ॥ ॐ
प्राणायस्वाहा । ॐ अपानायस्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ
उदानायस्वाहा । ॐ समानायस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भग-

मृत्यु च संपूज्ये सर्वा रिष्ट प्रशान्तये ॥ यदा चाष्ट भुजा पूज्या
शुम्भा सुरनिवहिणी ॥ नवास्याः शक्यः पूज्या स्तदारुद्रविनाय कौ ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महा लक्ष्मी समर्चयेत् ॥ २४ ॥
अवतार त्रयाचार्यां स्तोत्र मन्त्रा स्तदा श्रयाः ॥ अष्टादश भुजा
चैषा पूज्यामहिप मदिनी ॥ २५ ॥ महालक्ष्मी मंहकाली सैव प्रोक्ता
सरस्वती ॥ इधरो पुण्य पापानां सर्व लोक महेश्वरी ॥ २६ ॥
महिपान्त करी येन पूजितास जगत्प्रभूः ॥ पूजये जगतां धार्त्रां चरिड-
कां भक्त वत्सलाम् ॥ २७ ॥ अद्यो दिभि रल कौर गन्ध पुष्पै
स्तथोत्तमैः ॥ धूपै दीपैश्च नैवेद्यै नाना भक्ष्य समन्वितैः ॥ २८ ॥
रुधिराक्तेन बलिना मां से न सुरत्या मृष ॥ बलिमासा दे पूजेयं विप्र
वर्ज्या मयेरिता ॥ २९ ॥ तेषां किल सुरा मांसे नोक्ता पूजा
नृष क्वचित् ॥ प्रणामा चमनी यैश्च चन्दनेन सुगन्धिना ॥ ३० ॥
सकपूर्दैश्च ताम्यूलैर्मक्ति भाव समन्वितैः ॥ वाम भागे गतो देव्यास्त्रिज-
शीर्षामहासुर ॥ ३१ ॥ एजयेन्महिपं येन प्राप्त सायूज्य भीशया ।
दक्षिणे पुरत सिद्धं ममधर्म मीरचरम् ॥ ३२ ॥ याद्दर्मं पूजये ददेत्

वान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः नैवेद्यं
समर्पयामि । नैवेद्य मध्ये पानीयम्—एलो शीर लवणदि
कपूर परि वास्त्वितम् । प्रारानार्थं कृतं तोयं गृहाण परमे-
श्वर ॥ उत्तरा पोशानं हस्त प्रचालनं मुख प्रचालनं आचम-
रेधि ॥ नीयञ्चसमं पयामि । करोद्धर्तं नार्थं चन्दनं समर्पयामि ॥ मुख
वासार्थं ताम्बूलम् पूगीफलं महाद्विज्यं नागवल्लीदलैर्मुतम् एला
चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् । ॐ यत्त पुरुषेण । हविषा
देवायन्न मनन्वत, व्वमन्तो स्यासी दाञ्ज्यङ्गीष्मऽऽद्व्यऽऽ शरद्विऽऽ ॥
ॐ भूमुवः श्रां भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥ फलम्—इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरसत्नर ।
तेनमे मफला वाप्तिर्भ वेज्जन्मनि जन्मनि ॥ ॐ याऽऽ फलिनीर्थाऽऽ
श्रुताऽऽअपुष्पाय्यारव पुष्पिणीऽऽ । वृद्धस्त्वपिपसूतस्तानो मुञ्च
न्वध हसऽऽ ॥ ॐ भूमुवः स्वः श्री भगवान् लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
देवताभ्यो नमः फलं समर्पयामि ॥ दक्षिणा—हिरण्य गणं गर्भार्थं हेमधीज
धिभावसोः । अनन्त पुण्य फलद मतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ ॐ हिरण्य
गर्भऽऽ समवर्त्तं ताम्रे भूतस्य जातऽऽ पतिरेकऽऽप्रासीत् सदापार
पृथिवीन्ध्यामुने मङ्गस्मैदेवाय हविषाद्विधेम ॥ ॐ
भूमुवःस्वःभगवान् श्रीभ०विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो

धृतं येन चरा चरम् ॥ ततः कृताञ्जलि भूत्वा स्तुवोत् चरितरिमः ॥ ३३ ॥
एकेनवा मध्यमेन नेकेने तयोरेद ॥ चरितार्थेनु न जपेज्जपंदिद्र मवा
प्नुयात् ॥ स्तोत्र मन्त्रैः स्तुवो तेषां यद्विवा जगदम्बिकाम् ॥ प्रदक्षिणा
नमस्कारान् कृत्वा भूधिं कृताञ्जलिः ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरत
त्रितः ॥ प्रतिश्लोकं च जुहुयात्वायमं निल सर्पिषा ॥ जुहुयात्त्रोत्र मन्त्रैर्वा
चण्डिकायै गुभं हविः ॥ भूया नाम पद्वै देवीं पूजयेत्सु ममाहितः ॥ ३५ ॥
प्रयतः प्राञ्जलिः प्राहः प्राणा नारायण चात्मनि ॥ सुचिरं भावयेदी
चण्डिका तन्मयो भवेत् ॥ ३८ ॥ एवं यः पूजयेत्कृत्वा प्रयत्नं परमेस्वरीम्
भुक्त्वा भोगान्यथा कामं देवीं सायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३६ ॥ यो न पूजयते
नित्यं चण्डिकां भक्त वत्सलाम् ॥ भस्मोक्त्यास्य पुण्यानिनिर्दह्यन्मे-
रगरी ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्व लोक महेश्वरीम् ॥ यथोक्तेन विधानेन
चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ४१ ॥

इति वैदिकं रक्ष्यं ममाधाम् ॥

अथ मूनि उवाच ॥

श्रुति कथा च । नन्दा भगवती नामया परिष्यति नन्दाया । । स्तुतापूजिताश्च

नमः दक्षिणां समर्पयामि ॥ कपूर्वार्त्तिक्यम्—कदली गर्भं सम्भूतं कपूर्वं च
 प्रदीपितम् । आरात्तिक्यमहं कुर्वे पश्यमेव रदो भव ॥—ओ३६३ हविःऽऽपजन-
 नम्मेऽअस्तुदशवीर३सर्व्वगण३स्वस्तये । आत्मसन्निपजासनिपशुसनिलोक
 सन्नय भयसनि ॥ अग्निऽऽपजान्वहुलाग्ने करोस्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासु
 धत्त ॥ ओं भू भुवः स्वःश्रीभगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त)
 देवताभ्यो नमः कपूर्वार्त्तिक्यं दर्शयामि । मन्त्र पुष्प युक्त प्रदक्षिणा—
 यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु
 प्रदक्षिण पदे पदे ॥ ओं सप्तास्या सन्परि—धयस्त्रिऽऽ सप्त समिधः
 कृत्वाऽऽ देवायद्यज्ञान्त्वानाऽअवद्धनन्पुरुषप्पशुम् ॥ ओं भू भुवः
 स्वः श्री भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताभ्यो
 नमः आरात्तिक्य सहितां मन्त्र पुष्प युक्त प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्र
 पुष्प युक्त नमस्कारः ।—नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि-

भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १ ॥ कनकोत्तम कान्तिःसासुकान्तिकनका-
 म्बरा । देवी कनक वर्णाभा कनकोत्तम भूषणा ॥ २ ॥ कमलाङ्कुश
 पाशाञ्जैरलंकृत चतुर्भुजा ॥ इन्दिरा कमला लक्ष्मी. साश्रीरुक्माभ्युजा
 सना ॥ या रक्त दन्तिका नाम देवी प्रोक्तामयाऽनघ ॥ तस्याः स्वरूप
 वक्ष्यामि शृणु सर्वं भया पहम् ॥ ४ ॥ यच्छ्रुत्वा सर्वं पापेभ्यो मुच्यते
 नात्र संशयः ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्त सर्वाङ्ग भूषणा ॥ ५ ॥ रक्तयुधा
 रक्त नेत्रारक्त केशातिभीषणा ॥ रक्त तीक्ष्ण नखा रक्त रसना रक्त दन्ति
 का ॥ ६ ॥ पतिं नारी वानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥ वसुधेव विशा-
 लासा सुमेरु युगलस्तनी ॥ ७ ॥ दीर्घोलम्बावति स्थूलोतावतीवमनो
 हरौ ॥ कर्कटावति कान्तौ तौ सर्वा नन्द पयोनिधी ॥ ८ ॥ भक्तान्सं
 पाययेद्देवी सर्वकामदुर्धोस्तनौ ॥ एङ्ग पात्र शिरः ऐटैरलं कुन चतुर्भुजा
 आरुह्याता रक्त चा मुरडा देवी योगेश्वरीति च ॥ अनयाव्याप्त मखिलं
 जगत्स्वावर जङ्गमम् ॥ १० ॥ इमांयः पूजयेद्भक्त्यास व्याप्नोति चरा
 चरम् ॥ भुक्त्वा भोगा न्यथा काम देवी सायुज्य माप्नुयात् ॥ अधीतेय
 इमं नित्यं रक्त दंत्या वपुः स्तम् ॥ तं सा परि चेरद्देवीपतिं प्रियमि-
 वांगना । ॥ २ ॥ शाकंभरी नीलवर्णा नीलोत्पल विलोचना ॥ गभीर
 नामि क्षिरनीविभूषित तनूदरा ॥ १३ ॥ सुकंशसमोत्तुग व्रत पीन
 घनस्तनी ॥ मुष्टी शिली मुखा पूर्ण कमल कमला लया ॥ १४ ॥ पुष्प
 पल्लव मूलादिफलाद्यं शाक सचयम् ॥ काम्या न्दतर सैर्युक्तं क्षुण्णस्यु
 जरा पहम् ॥ १५ ॥ कामुं चष्कृत्कालि विभ्रति परमेश्वरी ॥ शाकंभरी
 शवाही सा सेव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ १६ ॥ नमार्गौरी सवी चण्डी

ॐ पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ ॐ यज्ञेन यत्र मय जन्त
 देवा स्नानि धर्माणि प्रथमान्या सन् । तेह नाकम्महिमानंसचन्त
 यत्नपूर्वे सादृश्या ऽऽ सन्ति देवा ऽऽ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु
 लक्ष्मी नारायण (अतन्त) देवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलि युक्त
 नमस्कारं समर्पयामि ॥ विशेषार्थः रक्ष रक्ष सुरः श्रेष्ठः रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
 भक्ताना मनस्यं कर्ता ज्ञाता भय भवार्यं वान् ॥ वरद त्वा वरं देहि
 वाञ्छितं वाञ्छितार्थद (एतेन मन्त्रेण पूर्णफल हिरण्य गन्धाक्षत
 पुष्पैः संयुक्त जलेन अर्घ्यं मेकं दद्यात् ।) अनेन सफलार्थेण फलदोस्तु
 सदा नम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री विष्णु लक्ष्मीनारायण (अतन्त)
 देवताभ्यो नमः विशेषार्थं समर्पयामि ॥ प्रार्थना—कृच कुच चुबु कामे
 पाणिषु व्या-तेषु प्रथम जलनि पुत्री सङ्गमेऽनग्न धाम्नि, प्रथि
 तनि विडनीवी बन्धनी मोंक्षणार्थं चतुरधिक कराशः, पातुवरच
 ऋपाणिः ॥ यद्विम्ब मम्बर मणि यदपांश्रति नक्तं निपिञ्चति यदग्नि

कालिका साच पार्वती ॥ शाकभरी स्तुवन्ध्यायञ्ज पन्स पूजयत्रमन्
 ॥ १० ॥ अक्षय मरुते शीघ्र मन्न पाना मृतं जलम् ॥ भीमाऽपि नीज
 यणां सा दंष्ट्रा दशन भासुरा ॥ १८ ॥ विशान्ज लोचना नारी शृत्तभीन
 पयोवय ॥ चन्द्र हासं च डमरुं शिरः पात्रं च विध्रती ॥ १६ ॥ एक
 वीरा काल रात्रिः संयोक्ता कामदा स्तुता ॥ तेजा मण्डल दुधुर्षा त्रामरी
 चित्र कान्ति भृत् ॥ २० ॥ चित्रं ध्रमर संकाशामहामारीविगीयते ॥
 इत्येता पूर्वो देव्या व्याख्याता चमुधाधिप ॥ जगन्मानु रचडिकाया-
 कीर्तिताः कामधेनवः ॥ इदं रहस्य परमं न वाच्यं कस्य चिरःया ॥ २२ ॥
 व्याख्यानं दिव्य मूर्तिना मधीप्य वहितः स्वयम् ॥ पतस्यास्त्वं प्रसादेन
 सप्रमान्यो भविष्यसि ॥ २३ ॥ सर्वं रूप मयो देवी सर्वं देवी मयं
 जगत् ॥ अतोहं विरय रूपां तां नमानि परमे श्वरीम् ॥ २४ ॥ इति
 मूर्ति गृहस्यं समाप्तम् ॥ श्री जगद्गवार्पणमस्तु ॥

श्री पार्वती पूजनम्

सा च दमंगे यस्य य. धत्त मरुकात् व्यापिनी विधिरिति यष्णु धर्मा
 क्रोमंश्रह व्यापिनीप्राद्या ॥ पूर्वामिमुखोभूत्वा ऽऽ चम्य दीपं ऽऽ गत्य
 मंटर्यं कुर्यात् ॥ ॐ अग्रेतामुक्तागोत्रासुह नाभो अहं वन तारिक
 वापिह-नानिह-नातक-दूरी करण रात्रु पीर मिद् मर्षादि भवनिशाण
 प्रनरापम पेगत पूष्पाण्ड भूव प्रेय प्रंप्रपान-शाकिन्यादि क्रीतन-

जोत्सानिश्रासु हिम धाम्नि चयन्मयूखः पूषापुराण पुरुषः स
 नमो ऽस्तु तस्यै ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवान्विष्णु लक्ष्मी
 नारायण (अनन्त) देवताभ्यो नमः प्रार्थना समर्पयामि ॥ (इयं प्रार्थना
 कृतास्ति) ॥ राक्ष भ्रामणम्—राक्ष मध्येस्थितं तोयं भ्रामितं केशवो
 परि । अङ्ग लम्पं मनुष्याणां ब्रह्म हत्यां व्यपोइति ॥ एवं राक्षो
 दकेनस्वशरीरं मार्जयेत् ॥ अथ ग्रन्थि पूजनम्—ॐ श्रियै नमः । मोहिन्यै
 नमः पद्मिन्यै नमः ॥ महावलयै नमः । अजायै नमः । ऽङ्ग रायै
 नमः । वरदायै नमः । शुभायै नमः ॥ जयायै नमः । त्रिजयायै नमः ॥
 जयन्त्यै नमः । पापनाशिन्यै नमः । विश्वरूपायै नमः । सर्वमङ्गलायै
 नमः । इति ग्रन्थि सम्पूज्यः ॥ अथाङ्ग पूजा ॥—मत्स्यस्यायनमः पादौ
 पूजयामि ॥ कूर्माय नमः गुह्यौ पूजयामि नमः । वराहाय नमः जानुनी
 पूजयामि नमः । नार सिंहाय नमः । ऊरु पूजयामि नमः वामनाय नमः
 कर्ति पू० ॥ रामाय नमः उदरपूज० ॥ श्री रामाय नमः हृदयं पू० ॥ कृष्णाय
 नमः सुखं पू० । सहस्र सिरसे नमः शिरः पू० । श्रीमद्नन्ताय-

मृत्यु सन्निपात-राज यक्ष-विषय जग-ज्वराति सारादि-दुग्ध-दुर्योगिनी-
 दुः स्वप्नादि-पीडानिवृत्ति पुत्र मित्र-भृत्यगजास्व-क्षेत्र धन-धान्य
 रत्नादि-सम्पद् भोगान्तर- गन्धर्वाप्सरोगण-संगीतादि-जात-मञ्जरी
 मानादि-शोभिन्-विमाना रोहण-पूर्वकं भगवतः श्री मद् ज्योतिर्लिङ्ग
 स्वरूपिणः सदाशिवस्य परम सायुज्य-भुक्ति कामा श्री पार्वती देवता
 प्रोक्तयेयेभि र्यथा मिलितोप चारै स्तद् ब्रताङ्ग भूत देवता यारच पूजन महं
 करिष्ये । [आ सूर्याय अथ स्वस्थानो ब्रह्मं कर्तुं तद्भक्त्येन जगत्साक्षिणे
 श्रीसूर्यायपपोर्धः समर्पयामि ।] वामे अर्घ्यस्थापनम् ॥ दक्षिणे
 राक्षस्थापनं च ॥ नमोस्त्व नन्तायेति दीपं सम्पूज्य गणानां त्वेति
 पणपतिं सम्पूजयेत् ॥ अथ कलश पूजा ॥ भूर गीति भूमिशोधनम् ॥
 धान्यननसीविधान्यम् ॥ आजिघ्रेति अत्रणं कलशं स्वेथाप्य वरुणस्यो-
 सम्भनमिति निर्मल तीर्थादि जलं प्रक्षिप्य वा ओपवीरिति सर्वोपधीः ॥
 हिरण्यगर्भेति पञ्चरत्नाणि । या फलिनीरिति फलम् ओपधीयः समितिय-
 वान् । गन्ध द्वारा निति चन्दनम् ॥ काण्डारकाण्डादिति दूर्वा ॥ स्योना
 पृथिवीति ऋच मृदः ॥ अस्त्येवेति पञ्चपल्लवैस्तन्मुखं मान्छायवृद्धस्पत
 इति वस्त्र युग्मेन कलशं वेष्टयित्वा तत्वायामीति वरुण मा वा ऽ पूजयेत् ॥
 ततः कलरोगङ्गादीरच ॥ सर्वे समुद्राः सत्त्विस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
 आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षय कारकाः ष इति ॥ मन्त्रेणवाहयेत् ॥
 ततः कलशाभिमन्त्रणम् ॥ कलशास्य मुखेविष्णुः कण्ठेऋशः समाश्रत ॥

नमः-सर्गाङ्ग पू० इत्यङ्गम् सम्पूज्य ॥ अथा वरणापूजा-अनन्तस्य
दक्षिण पार्श्वे रमायै नमः ॥ वामपार्श्वे भूम्यै नमः । इति प्रथमा
वरणम् ॥ आवरण देवता मा वाह्य इत्थं प्रक्षाल्य ॥ गन्ध पुष्प
तर्जनी मध्यमा ङ्गुष्ठे धृत्वा मध्ये शंखोदकं गृहीत्वामन्त्रान्ते शंखोदकं
भूमौ निक्षिप्य पुष्पे देवो परिनिक्षिपेत् ॥ दशाब्धे ? त्राहि संसार
लक्ष्मेशो शरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणार्चनम् ॥
इति मन्त्र मुञ्चार्थं जलं त्यक्त्वा पुष्पं देवो परि न्यसेत् ॥ एवमेव
ऽपि ॥ १ ॥ पूर्वादि क्रमेण वृद्धोल्काय नमः । मङ्गोल्काय नमः ।
शतोल्काय नमः । सहस्रोल्काय नमः ॥ दशाब्धे ? त्राहि संसार लक्ष्मेशो
शरणागतम् भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीया वरणार्चनम् इति ॥ २ ॥ तथैववा-
सुदेवाय नमः । सङ्कर्याय नमः । प्रणम्याय नमः । अनिरुद्धाय- नमः ॥
दशान्तोत्राहि संसार लक्ष्मेशो शरणागतम् । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं त्रिविधवर-
णार्चनम् ॥ ३ ॥ प्राच्याम्-केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः ।
गोविन्दाय नमः । गधु सुदनाय नमः । त्रिविक्रमाय नमः । यामनाय नमः ।
श्री धराय नमः । हृषी केशाय नमः । पद्म नाभाय नमः । दामोदराय नमः ।
दशान्तोत्राहि संसार लक्ष्मेशो शरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं

मूत्रे त्वस्य स्थितो ब्रह्मामन्त्रेमानुगत्याः स्मृताः-॥ कुर्वीतु सागराः सर्वे सख-
द्वापा वसुन्धरा ॥ ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदो सामवेदोऽथथर्वणः ॥ अङ्गेषु
सहितः सर्वे कलशान्तु समाधिताः ॥ कलशोदेवद्वार पूजा । ॐ गणपतये
नमः ॥ ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ ॐ नन्दिते नमः ॥
ॐ महाकालाय नमः ॥ ॐ शृङ्गलै नमः ॥ ॐ त्रिनायकाय नमः ॥ ॐ
स्कन्दाय नमः ॥ ॐ चण्डाय नमः ॥ ॐ दिव्ये नमः ॥ इति मन्त्रै-
षाद्यादीनि समर्पयेत् ॥ ततः तुन्दशाम्बाभिः कलशसुप्तमाच्छाद्यपूजयेत् ।
इति शिष्टम् ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ महेश्वरा-
य नमः ॥ ॐ गङ्गायै नमः ॥ ॐ धमुनायै नमः ॥ ॐ सरस्वत्यै
नमः ॥ गरुडायै नमः ॥ ॐ ज्ञान्द्वयै नमः ॥ ॐ तर्कदायै नमः ॥ सप्त
सागरैभ्यो नमः ॥ ॐ नारपयद्वयै दिग्भूतार्पिभ्यो नमः ॥ ॐ आदि यादि
नक्षत्रैभ्यो नमः ॥ ॐ अश्वत्थाम शष्टनिरत्नो विभ्यो नमः ॥ अश्विभ्यो
नक्षत्रैभ्यो नमः ॥ विष्णुभ्यो नमः ॥ सप्तविंशतिर्योगेभ्यो नमः ॥ मेधादि द्वादश
राशिभ्यो नमः ॥ मृत्युञ्जयाय महेश्वरी सतिवाय नमः ॥ सम्पूर्णं कलशाय
नमः ॥ इति मन्त्रैः पाशादीनिरसेन सूत्रैरेतं पुष्पं समर्पयेत् ॥ सर्वो
गणेश पूजा । ॐ गणपतये नमः ॥ इत्येवराय नमः । एक दन्ताय
नमः । मूषक उरुताय नमः ॥ जम्बोदराय नमः । गजवक्राय नमः ॥

चतुर्था वारुणार्चनम् ॥ ४ ॥ पूर्वोदि क्रमेण । मत्स्याय नमः । क्रमाय
 नमः । वराहाय नमः । नारसिंहाय नमः । वामनाय नमः । परसु
 रामाय नमः । श्री रामाय नमः । कुण्डलाय नमः । वीरुधाय नमः । कल्के
 नमः । अनन्ताय नमः । विश्वरूपिणे नमः । दयाव्ये प्राहि संसार
 लक्ष्मेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥
 पूर्वोदि क्रमेण—अनन्ताय नमः । दक्षिणत्वा ब्रह्मणे नमः । पश्चिमायां वायवे
 नमः । उत्तरस्यां मीशानाय नमः । आग्नेयां वारुण्ये नमः । नैऋत्यां
 गायत्र्यै नमः ॥ वायव्यां भारत्ये नमः । ऐशान्यां गिरिजायै नमः ।
 अग्नेगण्डाय नमः । वामे सुपुण्याय नमः । दयाव्ये । प्राहि संसार
 लक्ष्मेशो सरणागतम् । भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमा वरणा
 र्चनम् ॥ ६ ॥ पूर्वोदि क्रमेण—इन्द्राय नमः । अमन्ये नमः । यमाय नमः । सिद्धि त्रये
 नमः । वरुणाय नमः । सोमाय नमः । ईशानाय नमः । दयाव्ये । प्राहि
 संसार लक्ष्मेशो सरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमा वरणा
 र्चनम् ॥ ७ ॥ आग्नेयां शोषाय नमः । नैऋत्यादिषु नमः । वायव्यां
 विषये नमः । ऐशान्याप्रजापतये नमः । दयाव्ये ! प्राहिसंसार लक्ष्मेशो
 सरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमा वरणा र्चनम् ॥ ८ ॥ अग्नेया

शुद्धस्वाय नमः । सिद्धि त्रिनामकाय नमः । पार्वती नन्दाय नमः ।
 मनोरथ दायिने नमः ॥ इति मन्त्रैः रक्त सूत्रं रक्तपुष्पं च समर्पयेत् ।
 ततो गोश्याम पूजा ॐ नन्दायै नमः । सुभद्रायै नमः । सुमन्तसे नमः ।
 सुशीलाय नमः । सुभगव्यै नमः । पञ्चगोमाथ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः कृपिल-
 सूत्रं कृपिल पुष्पं च समर्पयेत् ॥ ततः कौमारीपूजा ॥ ॐ ब्रह्मण्यै
 नमः ॥ माहेस्वर्यै नमः ॥ कौमार्यै नमः ॥ वैष्णव्यै नमः ॥ वाराह्यै नमः ॥
 इन्द्रायै नमः ॥ चासुरहायै नमः ॥ महालक्ष्म्यै नमः ॥ शक्ति हस्तायै
 नमः ॥ मयूरा सनायै नमः ॥ रक्त कौचनार्यै नमः ॥ पराशक्त्यै नमः ॥
 इमाषी मूर्त्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि रक्त सूत्रं रक्त पुष्पञ्च
 समर्पयेत् ॥ ततो मोहिनी पूजा ॥ ॐ सर्गा जनमोहिन्यै नमः ॥ जगन्मोहि
 न्यै नमः सत्रे मोहिन्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनिपीठ मूर्धापीठ पुष्पञ्च
 समर्पयेत् ॥ ततोऽष्टचिरञ्जीवि पूजा ॥ ॐ अस्तत्पाम्ने नमः ॥ वल्यै
 नमः ॥ व्यासाय नमः ॥ हनुमन्ते नमः ॥ विभीषणाय नमः ॥ ह्यो-
 धार्याय नमः ॥ परशु रामाय नमः ॥ भार्गवदेवाय नमः ॥ उमापतये नमः ॥
 इति मन्त्रैः पाद्यादीनि रक्त सूत्रं रक्त पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः पद्म
 रत्न पूजा ॥ जगद्गर्भविपिठानेन पद्म रत्न निर्वाय ॥ सिन्दूर मलक
 त्वा पूजयेदिति सिध्दा ॥ तदापतये नमः ॥ यदुकाय नमः ॥

गणपतये नमः । नैऋत्यां रुष्यमातृभ्यो नमः । वायव्यां दुर्गायै नमः ।
 ऐशान्यां क्षेत्राधिपतये नमः । द्याव्ये ! त्राहिसंसारलक्ष्मणेशो सरण्यागतम् ।
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमा वरणार्चनम् ॥ ६ ॥ मध्ये ब्रह्मणे ॥—
 भारुणाय नमः । शोणाय नमः । सर्वव्यापिते नमः । ईश्वराय नमः ।
 विश्वरूपाय नमः । महाकायाय नमः । सृष्टि कत्रे नमः । कृष्णाय
 नमः । हरये नमः । शिवाय नमः । स्थिति कारकाय नमः । अन्तकाय
 नमः ॥ द्याव्ये ! त्राहि संसारलक्ष्मणेशो सरण्यागतम् । भक्त्या समर्पये
 तुभ्यं दशमा वरणार्चनम् ॥ १० ॥ शौर्ये नमः । वैकुण्ठाय नमः ।
 महारुणाय नमः । पुरुषोत्तमाय नमः । अजाय नमः । पद्मनाभाय नमः ।
 मंगलाय नमः । हृषीकेशाय नमः । वरदाय नमः । मधुसूदनाय नमः ।
 प्रच्युताय नमः । अनन्ताय नमः । गोविन्दाय नमः । विजयाय नमः ।
 अपराजिताय नमः । कृष्णाय नमः । द्याव्ये ! त्राहि संसारात् लक्ष्मणेशो
 सरण्यागतम् भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशा वरणार्चनम् ॥ ११ ॥
 अनन्ताय नमः । कपिलाय नमः । शोणाय नमः । मङ्गलपाय नमः ॥
 हलायुजाय नमः । वारुणाय नमः । शीरपाण्ये नमः । चलाभद्राय नमः ॥
 द्याव्ये ! त्राहि नसारान् । लक्ष्मणेशो सरण्यागतम् । भक्त्या समर्पये

योगिनीभ्यो नमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ पतत्स्थानाधिपतये नमः अस्मि-
 ताङ्गाद्यष्ट भैरवेभ्यो नमः ॥ वृकोदर क्षेत्रपालाय नमः ॥ रक्तकेश क्षेत्र-
 पालाय नमः ॥ लम्बोदर क्षेत्रपालाय नमः ॥ सर्वा क्षेत्रपालेभ्यो नमः ॥
 सर्वा पिशाचेभ्यो नमः ॥ सर्वा भूतेभ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः प्रागादीनि
 कृष्ण सूत्रं कृष्ण पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः सूर्यादि पूजा ॥ ॐ सूर्याय
 नमः ॥ सदा शिवाय नमः ॥ गृहलक्ष्मै नमः ॥ इष्ट देवताय नमः ॥
 नागेश्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि पञ्चपर्यं सूत्रं पञ्च वर्षं
 पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततो देवाग्ने सनकादि पूजा ॥—ॐ सनकादि
 ऋषिभ्यो नमः ॥ ऋषिपुत्रेभ्यो नमः ॥ दिव्याश्रमेभ्यो नमः ॥ इति
 मन्त्रैः पाद्यादीनि श्वेत सूत्रं म्येवपुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततो देवाग्ने
 गोमयोद्भव ब्राह्मण्यं वृद्ध ब्राह्मण्य पूजा ॥ ॐ दिव्यरूपायै नमः ॥
 दिव्याभयरायै नमः ॥ देवमहिम्न्यै नमः ॥ सुभूषायै नमः ॥ जटिलायै
 नमः ॥ वधिरायै नमः ॥ अति वृद्धायै नमः ॥ कुम्भायै नमः ॥ अति-
 दीर्घायै नमः ॥ इति मन्त्रैः पाद्यादीनि श्वेत सूत्रं श्वेत पुष्पञ्च समर्प-
 येत् ॥ पुनस्तत्रैव नवरात्र पूजा—ॐ नवरात्राय नमः ॥ मातृपत्सजाय
 नमः मुञ्जनि पियाय नमः ॥ पुष्पिण्याय नमः ॥ सुमन्त्रये नमः ॥ प्रियं
 पद्माय नमः ॥ इति मन्त्रैः प्रागादीनि श्वेत पुष्पञ्च समर्पयेत् ॥ ततः

तुभ्य द्वादशा वरणाचनम् ॥ १२ ॥ लीलाधि शायिने नमः । अच्युताय
 नमः । भूषाधाराय नमः । लोकनाथाय नमः । फणमणि विभूषणाय-
 नमः । सहस्रमूर्ध्ने नमः । सहस्राक्षिणे नमः ॥ दयाब्धे ! त्रिपि
 संसारात् । लक्ष्मेशो सरणा गतम् । भक्त्या समपये
 त्वम्यं त्रयोदशा वरणाचनम् ॥ ३ ॥ केशवादि चतुर्विं ति
 नामभिः ॥ केशवाय नमः केशिदायनमः । हरये नमः ।
 कामदेवाय नमः । कामपालाय नमः । काम्याय नमः । कान्ताय नमः ।
 कृतागमाय नमः । अनिर्देश्याय नमः । वपुषे नमः । विष्णु वीराय
 नमः । अनन्ताय नमः । धनञ्जयाय नमः । ब्रह्म-याय नमः । ब्रह्म
 कृद् ब्रह्मायै नमः । ब्रह्म २ विवर्धनायै नमः । ब्रह्म विद् ब्राह्मणायै
 नमः । ब्रह्मो ब्रह्मज्ञायै नमः । ब्राह्मण प्रियायै नमः । महा-कमोमहा
 कर्मायै नमः । महा तेजायै नमः । महोमहायै नमः । महा क्रतु
 महायन्त्रायै नमः । महा यज्ञो महा हृदये नमः ॥ २४ ॥ दयाब्धे !
 वादि सप्तार सप्तान्नांसरणा गतम् । भक्त्या समपये तुभ्यं चतुर्दशा
 वरणाचनम् ॥ इति मन्त्र मुञ्चार्य जलं त्यक्त्वा पुष्पं देवी परि
 न्यमेत् ॥ अथपत्र पूजा ॥—कृष्णाय नमः । पलास पत्रं समर्पयामि ॥
 विष्णवे नमः श्रीन्दुम्बर पत्रं समर्पयामि ॥ हरये नमः आस्वस्थपत्रं
 समर्पयामि ॥ शम्भवे नमः भृङ्गराज पत्रं समर्पयामि ॥ ब्रह्मणे ।

पापिनी पूजा कृत द्वांश रोहणां पापिनी कुण्डे निगमनां पूजयामिति
 शिशुचाट ॥ नरराजपद्मै नमः ॥ पापमूर्त्यै नमः ॥ कुशीलायै
 नमः ॥ कुमा पिण्यै नमः ॥ धर्मद्वैपिय्यै नमः । इति मन्त्रैः पाण्डीनि
 कृष्ण मूर्धं कृष्ण पुष्पाञ्च समर्पयन् ॥ ततो देवाग्ने अक्षरः पूजा ॥
 ॐ ऊरुर्यै नमः ॥ मेनकायै नमः ॥ रम्भायै नमः ॥ चन्द्र रेखायै
 नमः ॥ तिलोत्तमायै नमः ॥ वपुष्मत्यै नमः ॥ कान्ति मत्यै नमः ॥
 लीलाारत्यै नमः । उत्पन्नवर्यै नमः ॥ पूताच्यै नमः ॥ चन्द्रवदन्यै
 नमः ॥ धर्मशत्यै नमः ॥ चक्रोरायै नमः ॥ इति मन्त्रैः पापविनि
 पीन मूर्धं पीत पुष्पञ्च समर्पयन् ॥ ततोभार वाहपत्रा ॥—ॐ धर्म
 शोभाय नमः । धर्म कमल्यै नमः ॥ धर्म पत्रयै नमः ॥ धर्म रताय-
 नमः ॥ इति रवेत मूर्धं रयेत पुष्पञ्च समर्पयन् ॥ ततः नाग नदी-
 पूजा ॥ सत्य समुद्रेभ्यो नमः ॥ अष्ट नाग राजेभ्यो नमः ॥ नदी-
 भ्यो नमः ॥ इति मन्त्रैः इति मूर्धं इतिपुष्पञ्च समर्पयन् ॥ ततः
 चित्रिजादि पूजा ॥—ॐ अक्षरराग्ये नमः ॥ चन्द्रयै नमः । व्यासाय
 नमः ॥ इन्द्राय नमः ॥ विभीषणाय नमः ॥ शृग पाशाय नमः ॥

नमः । जटा धार पत्रं समर्पयामि ॥ भास्करवदनमः अशोकपत्रं
समर्पयामि ॥ शैलाय नमः कपिलपत्रं समर्पयामि ॥ सर्वव्यापिने
नमः बट पत्रं समर्पयामि ॥ ईश्वराय नमः आम्रपत्रं समर्पयामि ॥
विध्वलपिण्डे नमः कदली पत्रं समर्पयामि ॥ महाकालाय नम अपामार्ग
पत्रं समर्पयामि ॥ सृष्टि कर्त्रे नमः काशीर पत्रं समर्पयामि ॥ स्थिति
कर्त्रे नमः पुत्रागपत्रं समर्पयामि ॥ अन्तःकाय नमः नागवल्ली पत्रं
समर्पयामि ॥ अबपुष्प पूजा—अनन्ताय नमः पद्म पुष्पं समर्पयामि ।
विष्णवे नमः ज्ञानि पुष्पं समर्पयामि ॥ अक्षय्याय नमः कद्धार पुष्पं
समर्पयामि । सहस्रजिते नमः केतकी पुष्पं समर्पयामि ॥ अतन्त्रे
रूपिणेनमः खलुलपुष्पं समर्पयामि । इष्टाय नमः शतपुष्पं समर्पयामि विशिष्टाय
नमः पुत्रागपुष्पं समर्पयामि । शिष्टेष्टाय नमः कर्बोरपुष्पं समर्पयामि । शिव-
रिडने नमः धत्तूरपुष्पं समर्पयामि ॥ विश्ववाह्वेनमः मल्लिका पुष्पं समर्प-
यामि । मदी धराय नमः मालती पुष्पं समर्पयामि । उच्युताय

परशुरामाय नमः ॥ मार्कण्डेयाय नमः ॥ प्रजापतये नमः ॥ इति मन्त्रैः
रवेन सूर्यं श्वेत पुष्पं च समर्पयेत् ॥ ॐ अरवत्याम द्यरिचरंजीविनः सु
प्रतिष्ठिताः सन्तो वरदाः भवन्तु इति मन्त्रेण लात्राः क्षिपेत् ॥ ततः सिन्दूर
भाण्डे पूजा ॥—शार्वर्धेनमः ॥ गौर्ये नमः ॥ सौभाग्य वृद्धि कर्त्रे
नमः ॥ इति रक्त सूरं रक्त पुष्पं च समर्पयेत् ॥ शिवपूजा ॥
महेश्वराय नमः ॥ ईश्वराय नमः ॥ सदा शिवाय नमः ॥
इति श्वेत सूरं श्वेत पुष्पं च समर्पयेत् ॥ अब मूल देवता पूजा ॥
ध्यानम् ।—मन्दार माला कुलिता लकायै कपाल माला हृत शैलराय ॥
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ॐ
सहस्र शीर्षत्या वाहनम् । पुरुष पत्येत्या सनम् ॥ ॐ आघार
शक्तये अनन्ताय नमः ॥ रुद्राय नमः ॥ नारायणाय नमः ॥
पद्माय नमः ॥ पूर्य्यो नमः ॥ कर्णिकार्ये नमः ॥ केशरिष्यो नमः ॥
गुराय नमः । सिदाय नमः ॥ इति मन्त्रैः पञ्चादीनि समर्पयेत् ॥
पञ्चानानस्येति पाद्यम् ॥ त्रिपादूर्ध्वेत्थव्यम् ॥ ततो त्रिराडित्या चमनम् ॥
पयः पूषिष्यां० इति धावण० पूगमि मिष्टे चमधुव्याता० अयाधे रस-
मित्यादिभिः पञ्चामृतम् ॥ आपो अम्माप्रिति शुद्धे रसं स्नानम् ॥
प्रकृतं पुरुष स्वस्वाम्ना शक्ति शिराम्यामिदं मनुष्यै समर्पयामिति
मधुपर्कम् ॥ शुद्धं च इति रसनम् । तन्माधुशारगारं मूकः संसृ-
मिति रक्त सूरं रवेत मूष्यम् ॥ तन्मा देव्या इति रङ्गी-
पीठम् ॥ इति शैवे नि सिन्दूरं देवी शैराय नमः । शिवाय

नमः-काशीं वार पुष्पं समर्पयामि । अन्तकाय नमः कदली पुष्पं
समर्पयामि ॥ अथा अष्टोत्तर सत नामभिः पूजयेत् ।
अनन्ताय नमः । अच्युताय नमः । अद्रुत कर्मणे नमः ।
अष्टित त्रिक्रमाय नमः । अपरा जिताय नमः । अस्त्रण्डाय नमः ।
अग्नि नमः । अग्नि वपुषे नमः । अदृश्याय नमः । अत्रि पुत्राय
नमः । अनन्तकुन्दाय नमः । अनाशिने नमः । अदनीलाय नमः ।
अहर्हाय नमः । अष्टमूर्तये नमः । अनिरुद्धाय नमः । अनिविधाय नमः ।
अचलचलाय नमः । शब्दातिगाय नमः । अचल रूपाय नमः । अरिल
दाय नमः अव्यक्ताय नमः । अनुरूपाय नमः । अभये कराय नमः ।
अनुताय नमः । अवपुषे नमः । अयोनिजाय नमः । अरविन्द्राय नमः ।
अदान वज्रिताय नमः । अधोक्षजाय नमः । अदिति पुत्राय नमः ।
अभ्युत्थापतिपूर्व जाय नमः । अपस्मार नाशिने नमः । अव्ययाय नमः ।
अनादये नमः । अपमेयाय नमः । अघशत्रवे नमः । अनन्तरिचिन्ताय नमः ।
अनाश्वराय नमः । अजाय नमः । अघोराय नमः । अनादि
निधनाय नमः । अमर प्रभवे नमः । आभाडाय नमः । अकराय नमः ।
अनुत्तमाय नमः । अरूपाय नमः । अह्ने नमः । अमोघाधि पुत्रे नमः ।
अजाय नमः । अक्षयाय नमः । असृताय नमः । अघोर वीर्याय नमः ।
अव्यङ्गाय नमः । अविष्णाय नमः । अतिन्द्रिययाय नमः । अग्नि

इति मन्त्राभ्यामदर्शं चामरं व्यञ्जनानि ॥ त यज्ञ मिति
चन्दनम् ॥ अक्षय मीत्यं चूता ॥ वत्सुरुपमिति पुष्पाणि ॥
ततः पुष्पम् ॥ मात्स्रोचित यथा पुष्पं परव वरुणः सुगन्धिभिः ॥ विचित्र
प्रथिता माला-गृह्यात्वा परमेश्वरी ॥ ततो विल्व पत्रम् ॥ पद्मान्तु
सदृशस्य सप्तदत्तस्य यत्फलम् ॥ तत्फलं लभते पत्रं दत्त्वा विल्वस्य
शोभनम् ॥ वत्सुम् ॥ एक पत्रं पुष्पेणायः पूजयति शङ्करम् ॥ सर्वपाप
विर्निगुक्त शिवशोभं मदीयते ॥ दूर्वा ॥-दूर्वाङ्कुरं यस्तु शम्भो-पूजा काले-
प्रेयन्द्रति ॥ ताकज शतगुण्य सदा प्राप्नोति मानवः ॥ कमलम् नमः
शाम्बाय इति मन्त्रेण नील-कमलम् ॥ देवो द्वारेति मन्त्रेण ज्ञाति
पुष्पम् ॥ नमः शम्बायेति मन्त्रेण च दमन पुष्पम् ॥ क-दुर्षं भस्मस
जात पवित्रं दमन शुभम्-गुर्दीव श्री महेशानो भक्त्या दत्तं मया शिवो ।
सदृशसूत्रम् ॥ कार्पास निर्मितं सूत्रं पत्रिजं सु-मतोहरम् ॥ सर्वपाप
विनाशाय शिवेशाभ्यां नमो नमः नमस्ते त्रैव देवेश सुरामुर नमस्तुव ! ॥
नमस्ते जगतामहः पार्वति ! वरदायिनि ॥ इति मन्त्रेणाष्ट वार सद-
माङ्कर कुन्द पुष्प पार्वती साहाय्य शङ्कराय नमः ॥ शम्भवे गिरिजा

वेजसे नमः । अमितये नमः । अष्टमूर्तये नमः । अतिलायनमः । अक्षय
 नमः । अक्षोरणीयसेनमः । अशोकायनमः । अरविन्दादायनमः । अधिप्याय
 नमः । अमितनयनाय नमः । अरख्यवासिने नमः । अप्रपत्तायनमः । अनन्त-
 रूपायनमः । अनलायनमः । अनिमिषायनमः । अक्षरूपायनमः । अप्रमदस्यायनमः ।
 अप्रमितायनमः । अनन्त कायनमः । अचिन्त्यायनमः । अपरनिधयेनमः । अतिमुन्द-
 रायनमः । अमरप्रियायनमः । अष्टसिद्धिदायनमः । अरविन्दप्रियामनमः । अरि-
 न्दोद्भवाय नमः । अनयायनमः । अर्थायनमः । अक्षोभ्यायनमः । अवि-
 ध्वते नमः । अनेक मूर्तये नमः । अनेक ब्रह्माण्डपतये नमः । अनन्त
 शयनाय नमः । अमराविपतये नमः । अनाधाराय नमः । अनन्त
 तारुणे नमः । अनन्तश्रिये नमः । अक्षराय नमः । अमायाय नमः । आश्रम
 स्थानायनमः । आश्रमा तीर्थायनमः । अन्नदायनमः । आत्मयोनये नमः ।
 अवती पतये नमः । अवतीधराय नमः । अनादये नमः । आदित्याय
 नमः । अमृताय नमः । अष्टवर्ग प्रदाय नमः । अव्यक्ताय नमः ।
 अनन्ताय नमः । इत्यष्टोत्तर शतनाम पूजा ॥ अथ धूपम्—दशार्क्ष
 गुग्गुलोद्भूतं चन्दनागद संयुतम् ॥ सर्वेषा उत्तम तूप गृहाण सुर पूजि-
 तम् । यत्पुरुष मिति धूमम् ॥ दीपम्—साज्यं चवर्ति संयुक्तं बह्विना
 योनिर्तं मया । दीप । गृहाण देवेश ! त्रीलोक्यविमिरापहम् ॥ ब्राह्मणोस्य
 मुस्र भासीत् इति दीपम् ॥ नैवेद्यं—अन्नं चतुर्विधं स्वादुपयो दधि
 धृत्युर्धम् ॥ नाना व्यञ्जन शोभाह्वयं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ चन्द्रमा
 ममस इति नैवेद्यम् ॥ नैवेद्य मध्ये पानीयम् । उत्तरापोपणार्थं ते, दक्षि
 तोयं सुषाक्षितम् । गृहाण सुमुखो भूत्वा अनन्ताय नमो नमः । उत्त-

सहिताय नमः । महेश्वराय उमासहिताय नमः । ॐ महादेवाय गौरी
 सहिताय नमः । ॐ स्थाणुरे विशालाक्षी सहिताय नमः ॥ ॐ शिवाय
 श्री मुखी सहिताय नमः । पशुपतये नाराय णी सहिताय नमः उमाय
 मायवी सहिताय नमः ॐ शुभ सत्वाय श्री सहिताय नमः । ईश्वराय
 मङ्गल सहिताय नमः ॥ रुद्रायस्त्रिका सहिताय नमः ॥ वृषध्वजाय महिषो
 सीरताय नमः ॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥ सर्वाण्यै नमः ॥ ॐ अन्विकार्यै
 नमः ॥ मधुभूतदमन्यै नमः ॥ स्वस्थानीपरमेस्वर्यै नमः ॥ इति मन्त्रैः
 पाद्यादानि समपयेत् ॥ ब्राह्मण्यो रयेति धूपम् ॥ चन्द्रमा मनस इति दीपम् ।
 नाभ्या अस्सोदिति नैवेद्यम् ॥ पुनराचमनं वास्तुलादि त्र्यम् निवेदयेत् ॥
 दिरपय गर्भेतिद्रव्यम् ॥ दानि दानि च पाणानि जन्मान्तर कृतानि च ॥
 दानि २ प्रणयन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ इति प्रदक्षिणं । अग्निदेवति
 नोपन्नम् ॥ अथ कपूरम् ॥ सूर्येन्दु तारका वङ्गि वैजः पुञ्जविराडितम् ॥

रापोपणम् ॥ सुख प्रक्षालनम्—इस्त प्रक्षालनम् । करोद्धर्तनं कंदेवमया
 दत्तं हि भक्तिः ॥ चारु चन्द्रप्रम दिव्यं गृहाण जगदीश्वर ! ॥ इति
 करोद्धर्तनम् ॥ फलम् इदं फल मया देव ! स्थापितं पुरतस्त्वव ॥ तेनयेस
 फला वाप्तिमवेन्नमनिज्जन्मनि ॥ ताम्बूलम्—पूगी फल महादिव्यं
 नागवल्गु दलैर्युतम् ॥—रूपं रैला समायुक्तं ताम्बूलमिति गृह्यताम् ॥
 ॐ हिरण्यं गर्भेति हृदिषाम् ॥ यानि फानि चपापानि जन्मान्तर कृतानि
 च ॥ तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ नाभ्या आसीदिति
 प्रदक्षिणाम् ॥ नमस्कारम्—नमस्ते भगवन्भूयो नमस्ते शरणीश्वर ! ॥
 नमस्ते सर्वं देवेश ! नमस्ते मधुसूदन ! ॥ सप्ताध्यासन्— इति नमस्का-
 रात् ॥ मन्त्रं पुष्पम्—नमस्ते देव देवेश ! नमस्ते गरुडभङ्ग ! ॥ नमस्ते
 कमला कान्त ! अनन्ताय नमो नमः ॥ यज्ञेन यज्ञमय जं० इति मन्त्र-
 पुष्पं यः प्रार्थना—अनन्ताय नमस्तुभ्यं सहस्र शिखरे नमः नमोस्तुपद्म-
 नाभाय नागानां पतये नमः ॥ अनन्त कामदः कामा ननन्तो मे
 प्रयच्छतु ॥ अनन्तो दोर रूपेण पुन पौत्रान्प्रवर्षतु ॥ इति सप्ताध्यं
 दोरकं गृहीत्वा—अथ दोरकं बन्धन मन्त्रः ॥—अनन्त संसार महासमुद्र
 समं समन्वृ द्रव्यासुदेव ! ॥ अनन्त रूपे विनि योजयस्व ह्यनन्त सूत्राय
 नमो नमस्ते ॥ वञ्चीयात् ॥ जीर्णदोरं ममु देवं विसृजेहं स्वदाहया ॥ इति
 विसृजेत् ॥

अथ वायनमन्त्रः ।—गृहाणेद् द्विज क्षेत्रं वायनं दक्षिणां
 युतम् ॥ त्वत्प्रसादाद्दं देवं ? मुच्येयं कर्म बन्धनात् ॥ प्रति गृहं

दीपं देवेश ! गृहाण परमेश्वरः ! ॥ अथ पुष्पाञ्जलिः ॥—नमोस्तुते
 उमादेवि स्वस्थानि परमेश्वरि ॥ त्रैलोक्य जननि ! नित्ये सत्वानां
 पाप हारिणि ॥ विपुराहन महादेव ! भक्तवत्सल ! विश्व-
 कृत् ! ॥ नमस्करोमि देवेश ब्रह्मापध बन्धित ! ॥ इति नमस्कारः ॥
 अन्यथा शरणं नस्ति युवां वैशरणं मम ॥ तस्मात्काहण्य भावेनरत्तां
 परमेश्वरो ॥ विसर्जनम् ॥ आवाहनं न जानामिति ॥ पुनः सूर्यापंम् ॥—
 स्वस्थानी ब्रह्मण्य सम्पूर्ण फलावाप्तये जगत्साक्षिणे श्री सूर्याय इदमर्थं
 समर्पयामि नमः ॥ अथ दक्षिणा संकल्पः ॥—अथेह अनेक जन्मकृत
 पाप क्षयार्थं साम्बस्तरिक श्री पार्वतो (स्वस्थानी) माय प्रत पूजा
 साङ्गचा मिद्धर्यं मिमां दक्षिणां गात्र दण्डं श्री सूर्यं दैवतं रजतं वा
 सौम्यं यथा नाम गोपामेत्यादि ॥

इति पद्म पुराणोक्तः माय युक्त पौर्णमास्यां स्वस्थानी प्रत पूजा विधिः-
 समाप्तः ॥ ले० इमारी गायत्री देवीनां चार्पणं कृतम् ॥

द्विज श्रेष्ठ ? अनन्तफल दायक ! ॥ पक्वराज फल संयुक्तं
 दक्षिणां घृतं मं युतम् ॥ वायनं द्विज त्रयाय दाश्यामि त्रत पूर्तये ॥
 अथ जीर्णं दोरकं दानं मन्त्रः—अनन्तः प्रति गृह्णाति अनन्तो वै
 ददाति चः अनन्तस्तारको भान्या मनन्तायनमो नमः । इति
 दद्यात् । ततो यथा शक्तिं प्राह्वयान् भोजयेत् ॥ अनेन कृतपूजनेन
 धी-भगवान् विष्णु लक्ष्मी नारायण (अनन्त) देवताप्रियताम् न
 मम ॥ मन्त्रं पुष्पं, ताना सुगन्धं पुष्पाणि यथा कालोद्भवानिच ।
 पुष्पाञ्जलिः शुभा देया देवता प्रीतये सदा ॥ इति ॥
 आर्ति—कृष्णापारा वारं कलि मलपरि हारम्, कद्रुं सुत शयितारं
 करधृत कङ्कहारम् । धनपट लाभ शरीर कमलोद्भववितरम् । कलये-मुष्णु
 मुदारं कमलाभवारम् । विस्वनिहारं नाय ? निहारम् भवपारम् ॥

देवी प्र० होम द्रव्यम् ॥

नवा वृत्ति युतां सर्वां कामा निंश्रान्वा प्रयुयात् ॥ अथ प्रयोगा
 वक्ष्यते साधकाभीष्टसिद्धिदाः ॥ नव लक्ष जपेनास्य रुद्ररूपो नरो
 भवेत् । मल्लिका मालवी पुष्पं हंसा द्वागीश तामियात् ॥ करवीरं
 जंपा पुष्पं हंसा न्मोहयते जगत् । चन्द्र (कपूर) कुंकुम
 कस्तूरी होमान् कामाधि-कोभवेत् ॥ संपकैः पाटलैश्चिर्वं वशमानयते
 ऽचिरान् । लाजा होमोरास्य दायी मधुनोपद्रव क्षयः ॥ निशि
 षड्भाग पलै हंमो रिपु सैन्य विनाश कृत् । दध्यास्य दुग्धमधुभि-
 क्रमाद्धो माद माप्नुयात् ॥ आरोग्यं संपदं प्राप्तं धर्मशर्करं वासु-
 गम् ॥ कमलार्धनं संपत्तिं द्वाडिमै राजवश्यं ताम् ॥ चित्रियामातु
 लिंगेस्तु वैश्या नारंगजैः फलेः । शूद्राः कुर्माड संभूतै र्यश्याः भ्यु-
 रचिता द्वतैः ॥ पनसानां लक्ष होमा द्वश्यास्त्यु रथक वतिनः ।
 द्राक्षा फले रिष्ट सिद्धि रंभाभि मंत्रिणो वशाः ॥ नारिकं लेस्तु
 संपत्तिं स्वितैः सर्वेष्ट सिद्धयः । गुग्गुलेदुः ख नाशः स्यात् सर्वेष्टं
 शर्करागुदेः ॥ पायसै धन धान्यासि तं बंधुकेः प्राणितो वशाः ।
 पक्वैश्चूतफले होमा लक्षमात्रा द्वशवशाः ॥ लषणैरा जका युक्तै हंमा-
 इष्ट विनाशनः । कपूरं होमा लभते वाक् पतिश्वं नरो ऽचिरान् ॥
 करं फल होमेन भूतप्रेतादयो वशाः । विष्णुः स्या दनुजा लक्ष्मी
 रिचुद्वैः मुष्णाप्ययः ॥ घृतं होमादीप्तिरवाप्तिः शान्तिः स्यान्निल
 तदुलेः । किं वृत्तेन-देवैरा सर्वेष्ट साधिता गृणाम् ॥ ५२ ॥ मन्त्रे
 वृत्तं त्रिके भेदा यथांतर नियो जनान् । पद्मो ध्येन गदिता

रतो दक पान विधि ।

ॐ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ ॐ इति मन्त्रः ॥ दिशा न्यास माह ॥—दिशा
 न्यासमहा देवि कथया मितया नये । ॐ कारं विन्यसेद्भूते ऊर्ध्वतः पापनाश-
 नम् ॥ १ ॥ हूँ कारं पूर्वं दिग्भगे वह्नौ हूँ कारं मेव च । हूँ कारं धर्मराजे
 च । हूँ कारं नेत्रे नथाः ॥ परिचमे चैव हूँ कारं हूँ कारं
 वायु के तथा ॥ हूँ कारं उत्तरे चैव हूँ कारं स्त्रीशं दैवते ॥ ३ ॥
 ॐ कारं तु अथ श्चैव दिङ् न्यासं तत्र कारयेत् । दिङ् न से च
 कृते देवि कुरुङ् न्यासं विच क्षणः ॥ ४ ॥ अङ्ग न्यासं यथा कुर्या
 तथा च शृणु पात्रैवि—ॐ कारं विन्यसे न्मूर्ध्नि हूँ कारं नेत्रयो
 स्तथा ॥ ५ ॥ हूँ कारं वक्त्र मध्ये तु हूँ कारं कंठ देशतः । हूँ
 कारं स्कन्धयोर्देशे हूँ कारं हृदये तथा ॥ ६ ॥ हूँ कारं गुह्य
 देशे तु हूँ कारं जंघयो स्तथा । हूँ कारं सर्वासंघोच ॐ कारं
 पादयोस्तथा ॥ ७ ॥ अथ कर न्यासः । देह न्यासे कृते देविकर
 न्यासं तु कारयेत् । वामाङ्गुष्ठे न्यसेद् भूते ॐ कारं तु त्रि दैवतम्
 ॥ ८ ॥ हूँ कारं वह्नि बीजं च तर्जनीयां तु न्यसे तथा । मध्यमायान्तु
 हूँ कारं पवित्रा यां न्यसे च हूँ ॥ ९ ॥ कनिष्ठा यां च हूँ कारं
 द्यां गुष्ठे त्रि दैवतम् । तर्जनीया देवि हूँ कारं हूँ कारं मध्यत-
 स्तथा ॥ १० ॥ हूँ कारं च पवित्रा यां कनिष्ठायां तमे वह्नि ॥ इत्थं
 न्यासे कृते देवि सर्व सिद्धि भवेत्ततः ॥ इति न्यासविधिः ॥ अथ
 प्राशन विधिः ॥—तत्पिबेद्भक्ति संयुक्तो मन्यैव हित चेतसा । दक्षिणे
 नेत्रे हस्तेन त्रीन् वारांश्च सुरे श्वरी । ईशानाभि मुखो भूत्वा पिबेद्
 वामेन पाणिना दक्षिणे न ततः पीत्वा पिबेत्त चृपभो यथा ॥
 भूमिमागत्य जानुभ्यां हस्त युग्म प्रसार्य च । ईषन्मात्रं च वाराश्रीं
 त्रिवास्फोटं तु कारयेत् । श्रद्धं ब्रह्मा स्मरह विष्णु र्हं रुद्रो
 महेशः कर स्फोटं ततः कृत्वा वदेद् वै सायको त्तमः ॥ इति
 रेतोदक प्राशनविधिः ॥ गुं शुक्रभ्यो नमः पूजयेत् ॥ ॐ प्रमन्यक
 मिति प्रार्थयेत् ॥

प्रथं गौत्र भीतितः ॥ ५३ ॥ भेदा नाह-सर्वेष्ट सिद्धेश्च मुख्ये
 पंच काम राज विद्या ॥ यथा-हसकल पर्लक्ष्मी हसकल पर्लक्ष्मी
 सहस्र पर्लक्ष्मी हसकल पर्लक्ष्मी सहस्र पर्लक्ष्मी हस-
 कल पर्लक्ष्मी ॥ पतरकोपेरो द्वयं कृत् द्वयंकाम राजीयम् ॥

अथाऽभिपेक विधिः ।

अश्वत्थपल्लवैः वा आम्रपल्लवैः ब्राह्मण. वरुण जल यजमान शरीरे । अभिपिञ्चनं कुट्यात् ॥ सुरास्त्वामभिपिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणी विभुः । प्रशुम्नश्चानि रुद्रश्च भवन्तु विजयाय तं । आम्बरद्वलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निश्च्यति स्तथा । वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहित. शेषो दिक्पाला पातु ते सरा । कीर्तिलक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः उद्धा क्रियानति । बुद्धिलज्जा वप. शान्तिर्माया निद्रा च भावनाः । एतास्त्वामभिपिञ्चन्तु देवपत्न्यस्त्वमागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवितार्कजाः । महास्त्वामभिपिञ्चन्तु राहुकेतुश्चतर्पिताः देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च । देवपत्न्यो द्रमा नागाद्वैत्याश्चाप्सरसोगणाः । अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो वाहनानि च । औपधानि च रत्नानि कालस्य वयवाश्चयं । सरित सागरा. शैलास्तीर्थानिजलदानदाः । एतास्त्वामभिपिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये । यथाविधि कलाभ्यासविधानमथ कथ्यते । निवृत्तिम् जानुपय्यन्तं न्यसेत्पादतलाकलाम् । जायादि नामिपय्यन्तं प्रतिष्ठा विन्यसे ततः । नाम्यादि कण्ठपर्यन्तततो विद्या प्रिन्यमेत् । कण्ठाललाटपर्यन्तं तत. शान्तिकलां न्यसेत् । कलाटात् ब्रह्मरध्वाते शक्त्या शीता ततो न्यसेत् ॥ इति अभिपेकम् ॥

अथ आशीर्वादमन्त्राः

॥ हरिः ॐ पृथिव्याऽअहमुदन्तरिक्षमाकृहन्तरिक्षादिवमारुडम् । द्वौ माकस्य पृष्ठात्स्वर्गोऽऽ रगा महम् ॥ १ ॥ स्वर्ग्यन्तोनापेक्षन्तऽआहगांश्च रोहन्ति रोदसी । यज्ञ येष्विवरवतोधारऽ सोऽध्विर्तनिरै ॥ ३ ॥ अग्ने ष्वेहि ष्वेहि प्रथमो देवयताऽवजुर्देवा नामुत मर्त्यानाम् । इयत्तमाणम्युगुभिऽ सजोपाऽ स्वर्ग्यन्तु यजमानाऽ स्वसित ॥ ३ ॥ योधा मे । ऽअस्यव्यचसोपविष्टुत्समहिष्टुत्स्यप्रसुतस्यस्रधावऽ । पीपतिस्त्वोऽथनुत्स्यो गृणाति वन्द्याकष्ट्रे ताम्य वन्देऽअग्ने ॥ ४ ॥ सजोधि । सूरिम्मधवाऽव सुपते व्यसुतायन् । पुत्रोद्धवस्मद्वृषे पा ६ सिधिरश्चकर्मणो स्वाहा । ५ । एनास्वा । दित्यारुद्राधसवऽ समिन्धनाम्पुनश्चन्द्राणो व्रसुनीधवसैऽ पूतेन सन्तान् वर्ययार मर्याऽ सन्तु यजमानस्य

कामा ऽ ॥ ६ ॥ यथेमाव्वाच कल्पयाणी मा वदानि जनेभ्यऽ । ब्रह्मरा-
जन्त्या भ्या ॐ शुद्राय चार्थाय च स्वाय चारणाय च । पियो देवा-
नान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमय-म्मेकाम ऽ समृद्धयता मुप मादो
नमतु ॥ ७ ॥ स्वस्ति नऽऽ इन्द्रो वृद्धश्रवा ऽ स्वस्ति न ऽ पूषा विश्व-
वेदाऽ । स्वस्ति न स्तारुह्योऽअरिष्टनेमिऽ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्हिवतु
॥ ८ ॥ शतं भवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रिय वीर्यमात्म-
न्धत्ते ॥ इत्याशीर्वादमन्त्राः ॥

ग्रंथकर्तुं वंशाष्टकम्

ग्रामे च शोणितपुर नाम ध्येये, वभूय कश्चिन्नृज वंश दीपः ।
श्री देवि दीन स्तनय स्तदीपो, भवानि दीनो यजु वाजपेयः १ ॥
तस्य पुत्रा त्रयो भूवन्दातारामोगुणान्वितः ।

राम चन्द्रामिध र्चैकस्तृतीयोविदुषांप्रियः ॥ २ ॥

नारायणदत्त शास्त्री विद्यालय प्रवर्तकः ॥

श्रीदाताराम तनयो सम्भाषा देवि दीपकः ॥ ३ ॥

पुरोहितोस्ति श्री केदारे नेपाल देश वासिनाम् ॥

लालमोहरिया प्रसिद्धया वीविदितो दिधि देवना ॥ ४ ॥

विचक्षणो नीति गुणै विरचनाथ इवापरः ॥

कर्मकाण्डरतो धीमाब्द्धीमान् विनय वारिधिः ॥ ५ ॥

तेनेयं रुचिता तीर्थविधान चन्द्रिका नृषाम् ॥

श्री देव्याचनं विधौ नवरात्र विधानम् ॥ ६ ॥

ज्ञात्वायां कृत कृत्या वाजायन्ते भुवि मानवाः ॥

गत्वा तीर्थे पिएड दानं विधि घटपर्णादिकम् ॥ ७ ॥

गृह नीत्य प्रकृत्या देवी पूजा च मुक्तिदा ॥

पितृणा मात्मनोर्थे वा सर्गेषामुप कारिका ॥ ८ ॥

(इति भागपुर थाला ग्रामस्थो भोलादत्त निवेदकः)

ग्रन्थ समाप्ता

मन्त्रा गां पठने विधान मखिलं जानन्ति यस्माद् बुधाः ।
तत्सर्वं सुविचार्य शास्त्र निचयं श्री कर्म ठानां मुदे ॥
श्रुत्वा ह्येव तमं सुरास्त्र विहित लोको प्रकार चमम् ।
ग्रन्थोऽयं प्रकटी कृतो निजधिया श्री विश्वनाथैर्महान् ॥ १ ॥

द्वय सदस्य नवाधिक वत्सरे त्वसित के मधु मासि अमावसी ।
कृति स्थित्वा ममापि सु पूजिता, पशुपतेश्च विशेषत आशिषा ॥२॥

इति अखिल महर्षि प्रणीता नेक ग्रन्थ सम्मता सर्व साधारण जना

ह्लादिनी तीर्थ विधान पद्धतिः समाप्ता

(लौकिके पाप नाशाय वैदिके स्वर्ग मास्तु यात् ॥) इति ॥ सम ॥

महता प्रयत्नेन इमा विरच्या विदुषा ममे-

प्रकाशते त्रुटिस्तु तत्र दर्शभि विद्भिः

शोधनीयेति कामयेत ग्रन्थकारः ॥

श्रीकेदारनाथो जयति ॥

शुभमस्तु ॥

प्रकाशक—

ग्रन्थ स० विश्वनाथ शर्मा लालमोहरिया

पता—

पं० विश्वनाथ नेत्रप्रसाद शर्मा लालमोहरिया

शंकरपुर पो० गुप्त काशी

गदवाल उधर प्राग

